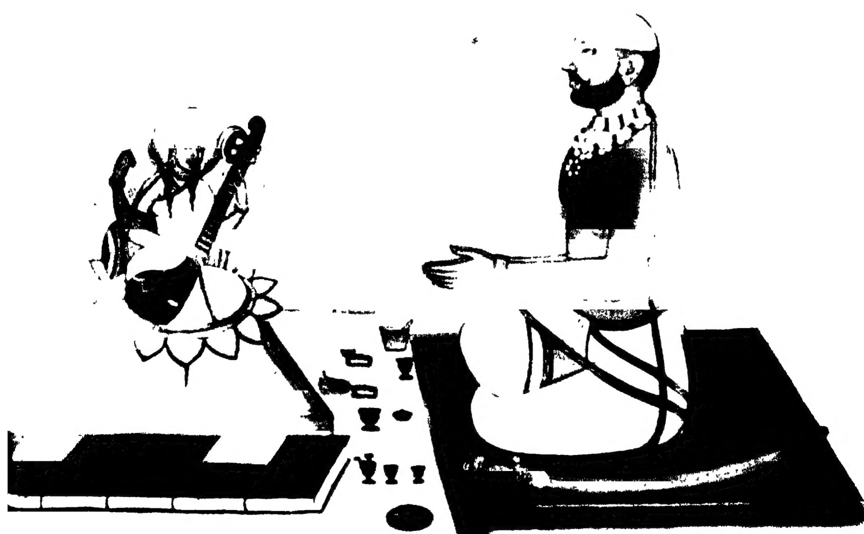
सूर्यमल्ल मीसण द्वारा प्रणीत

वंश भास्कर

संपादक : चन्द्र प्रकाश देवल



४

वंश भास्कर

(महाचम्पू)

सूर्यमल्ल मीसण द्वारा प्रणीत

वंश भास्कर

(महाचम्पू)

चौथा - खंड
(पाँचवीं - राशि)

अर्थ प्रबोधनी टीका
एवं संपादन
चन्द्र प्रकाश देवल



साहित्य अकादेमी

वंश भास्कर
चतुर्थ राशि
अनुक्रमणिका

।।श्रीगणेशायनमः।।

अथ पञ्चम राशिः प्रारम्भ

ॐ नमः पुराणपुरुषोत्तमाय गिरीश गिरिजा गणपति गिरा गुरु भ्यो। वसुधेश्वर वंशवारिजवार्धि क्षात्रधर्मखनि श्रुतशूरश्मश्रुलोमाञ्चक करुणास्पदीकृतकातरकलाप यथातथ राजन्याचारचीयमान मृधाश्वमेध-दीक्षादक्षीकरणकुशल कलिकालोदन्तोद्दीपक शौर्यशुश्रूषुमिलिन्दमाल-तीमरन्द कविकलरवसहकार रसनवक निधिनरवाहन कोविदकाश्यपी-कमनकीर्तिनौकैवर्त्तक प्रबन्धेशभास्कराभिधे श्रूयतां सुधा रससहोदरा-स्वादसूरिभिः सामाजिकैः सह रणरमणीरसिकरावराजेन्द्ररामहरे पंचमो राशिः ।।१ ।।

पुराण पुरुषोत्तम (विष्णु भगवान), महादेव, पार्वती, गणेश, सरस्वती और अपने गुरु को प्रणाम कर मैं (ग्रंथकर्ता) वंश भास्कर की पाँचवी राशि आरंभ करता हूँ। चहुवान वंश रूपी कमल को बढ़ाने वाला (सूर्य), क्षत्रिय धर्म की खान, सुनने से वीरों की मूँछों को रोमांचित (खड़ी) करने वाला, कायरों के समूह पर करुणा करने वाला, राजाओं के यथार्थ आचार को जताने वाला, युद्ध रूपी अश्वमेध की दीक्षा देने में कुशल, कलिकाल के वृत्तान्त को प्रकाशित करने वाला, वीरता को सुनने की इच्छा वाले भ्रमरों के लिए मालती का पुष्परस, कवि रूपी कोयलों का आम्रवृक्ष, नव रस रूपी नव निधियों का कुबेर, पंडितों की भूमि और मनोहर कीर्ति रूपी नौका का कर्णधार (खेवटिया) ऐसे प्रबंधों के स्वामी वंशभास्कर नामक ग्रंथ में अमृतरस के सहोदर (सदृश) काव्य का स्वाद लेने में पंडित, सभासदों के साथ, हे रण (युद्ध) रूपी कामिनी के रसिक रावराजेन्द्र रामसिंह! यह पंचम राशि सुनिए।

चूलिका पैशाची भाषा

पथ्यागाथा

ब्रजदेशीय प्राकृतं पैशाचिकबहुलं मरुदेशीयाप्राकृत मपभ्रंशबहुल मितिसर्वत्र बोध्यम्।

ब्रजदेशीय प्राकृत भाषा में पैशाची भाषा का आधिक्य है और मरुदेशीय प्राकृत भाषा में अपभ्रंश भाषा की उपस्थिति अधिक पाई जाएगी। अतः पाठकों को सर्वत्र यही समझना चाहिए।

प्रायो ब्रजदेशीय प्राकृत मिश्रित भाषा

षट्पात्

देवसिंह नृप दुसह हेलि हड्डुन अन्वय हुव।
बंबावद गढ बिलसि धरनि चहुं ओर जित्ति धुव।
अद्ध अवनि निज अप्पि समर कुमरहिं बुंदिय सह।
कुमर पट्टधर कज्ज अद्ध रक्खिय नय आग्रह।
बहुबेर भंजि शत्रुन बहुन बहु अपुब्ब जस बित्थरिय।
बय चरम पाइ व्है भव बिरत क्रम निवास सुरपुर करिय॥४॥[१]

हाड़ा वंश का सूर्य वह राजा देवसिंह दुस्सह वीर था उसने बंबावद गढ़ पर राज्य करते हुए अपने राज्य के चारों ओर की भूमि को दबाया और उसे अपने अधिकार में किया। इस राजा ने अपने पुत्र कुमार समरसिंह को बूँदी सहित अपना आधा राज्य दिया और नीति के आग्रह से आधा राज्य अपने पाटवी कुमार को दिया। इस राजा ने कई बार युद्ध लड़े और उनमें शत्रुओं को हरा कर उन्हें दंडित किया। अपनी वृद्धावस्था में जगत से विरक्त हो कर उसने अन्ततः स्वर्गलोक में निवास किया।

दोहा

पुत्रहिं दै आसिख प्रथित, हड्डुन पति पन होन।
समरसिंह जननी सती, गौड़ि कियउ सह गोन॥५॥
देवसिंह गृहं हुव उदित, बारह सुत बरबीर।
जे बारह आदित्य जिम, धाम प्रकासक धीर॥६॥

पति के देहावसान पर अपने पुत्र को प्रसिद्ध हाड़ाओं का स्वामी होने की आशीष दे कर समरसिंह की माता गौड़ रानी सती हुई। राजा देवसिंह के बारह पुत्र हुए जो बारह आदित्यों की तरह अपने यश को प्रकाशित करने वाले हुए।

षट्पात्

हुव अग्रज हरराज अनुज तस हत्थ प्रबलअति।
अपर नाम याकोहि कहत हप्प हु मागध कति।

१. ग्रंथकार सूर्यमल्ल छन्द संख्या २ एवं ३ को पैशाची भाषा के पथ्या गाथा छन्द में निबद्ध करना चाहते रहे होंगे। मूल पाण्डुलिपि में जगह छोड़ दी गई पर बाद में ऐसा हो न सका इसलिए छन्द संख्या १ से सीधी ४ आ गई और इसी से मयूख आरंभ हो रहा है। -सं.

सूर तदनु भटसूर तास अभिधा भोज हु तिम।
बहुरि बग्घ बलि बाल यह हि कृष्णहुद्वि नाम इम।
तस अनुज नाम चाहड़ अतुल समरसिंह पुनि सुजस प्रिय।
मोत्कल बहोरि याको अपर कर्मचंद्र नामहु कहिय॥७॥

हाड़ा राजा देवसिंह का सबसे बड़ा पुत्र हरराज और उससे छोटा हत्थ था इसका दूसरा नाम हप्प (हापा) भी बतलाते हैं। तीसरा पुत्र सूर हुआ जो अपने नाम के अनुरूप शूरवीर था इसका अवर नाम बहीभाट भोज भी बतलाते हैं इसके बाद चौथा पुत्र बग्घ और पाँचवा बाल हुआ जिसका दूसरा नाम कृष्ण था। इससे छोटे का नाम चाहड़ था और सातवाँ पुत्र समरसिंह हुआ जिसे अपना यश बहुत प्रिय था। आठवें पुत्र का नाम मोत्कल जिसका अवर नाम कर्मचन्द भी कहा जाता है।

दोहा

जैत्रमल्ल पुनि जाहिकी, अभिधा सौंड हु आस।
अनुज तास गोविंद अरु, कुंभपाल तिम तास॥८॥

सालिवाहन हु लघु सबन, क्रम सह देव कुमार।
जे जिन जिन रानिन जनें, प्रभु सुहु सुनहु प्रकार॥९॥

पहिले पंच रु जैत्र पुनि, सुत रट्ठोरि प्रसूत।
जद्दोंनि हु चउ सुत जनें, पहिलो चाहड़ पूत॥१०॥

पुनि मोत्कल गोबिंद पटु, अनुज कुंभ अभिधान।
समरसिंह अंतिम सहित, दुव सुव गौड़ि निदान॥११॥

राजा के नवें पुत्र का नाम जैत्रमल था और इसी का अवर नाम सौंड भी था। इससे छोटा गोविन्द और ग्यारहवाँ पुत्र कुंभपाल हुआ। सबसे छोटे अर्थात् बारहवें पुत्र का नाम सालिवाहन था। ये क्रमशः राजा देवसिंह के बारह पुत्र हुए। हे राजा रामसिंह! अब मैं यह बता रहा हूँ कि कौन सा पुत्र किस रानी से उत्पन्न था। पहले वाले पाँच और जैत्रमल ये छह पुत्र राठौड़ रानी से उत्पन्न थे। यादव वंशीय रानी से जो चार पुत्र हुए वे चाहड़, मोत्कल, गोविन्द और कुंभपाल थे जबकि गौड़ वंशीय रानी से दो पुत्र समरसिंह और सालिवाहन हुए।

षट्पात्

हुव अधीस हरराज बिसद जसथर बंबावद।
सम बुंदिय नृप समर हुव सु लहि अद्ध राज्य हद।
हरराजा ऽनुज हत्थ सूर उपयम दुव सद्धिय।
क्रमसह प्रथम किसोर कुमरि प्रतिहारि पाइ प्रिय।
रट्ठोरि मानकुमरि हु वहुरि तहं सुर्जन पहिली तनय।
रट्ठोरि प्रसव गजसिंह अरु भीम उभय सुत बीतभय॥१२॥

हाड़ा राजा देवसिंह के देहावसान के बाद हरराज जो पाटवी था बंबावद का राजा बना और बूँदी सहित राज्य के आधे भाग का स्वामी समरसिंह हुआ। हरराज के छोटे भाई वीर हत्थ ने दो विवाह किए। पहली रानी प्रतिहार वंशीय किशोर कुंवरी और दूसरी रानी राठौड़ कुल की मान कुंवरी थी। इनमें से कुमार सुर्जन पहली रानी की कोख से उत्पन्न था। राठौड़ वंशीय रानी मानकुंवरी के गर्भ से दो निर्भय वीर पुत्र गजसिंह और भीमसिंह जन्मे।

दोहा

हत्थ तनय इम तीन हुव, बढि जिन्ह संतति बीर।
हड्डुन तीजो भेद हुव, हत्थाउत्त गहीर॥१३॥
नव अप्रज पत्ते निधन, भट सूरादिक भ्रात।
क्रम बढि तीनन केहि कुल, उदित कित्ति अवदात॥१४॥
बंबावदगढ़ पति बिदित, हरराज हु नरनाह।
क्रमसह बसु बुट्ठत करे, बनि दुल्लह छ विवाह॥१५॥

हाड़ा राजा हरराज के छोटे भाई हत्थ के तीन पुत्र हुए जिनकी आगे संतति बढ़ी। इसी के वंशजों से हाड़ाओं में तीसरा भेद हत्थावत के नाम से प्रसिद्ध हुआ। राजा के अन्य भाइयों में से सूर आदि नौ भाई तो निःसंतान मरे। वंश तीन भाइयों का ही चला जिसने आगे जाकर जगत में अपनी उज्जवल कीर्ति प्रसारित की। बंबावद गढ़ के राजा हरराज ने अपने हाथों से दान के लिए धन की वृष्टि करते हुए छह विवाह किए।

सौराष्ट्री दोहा

अक्खयराज सुता सु, कृष्णकुमरि सीसोदनिय।
कुम्म द्वारकादासु, सुता अमृतकुमरि हु सतिय॥१६॥

सर्वप्रथम राजा ने सिसोदिया अक्ख्यराज की पुत्री कृष्णा कुँवरी को अपनी रानी बनाया। उसके बाद कंछवाहा द्वारकादास की कन्या अमृत कुँवरी को अपनी दूसरी रानी बनाया।

पादाकुलकम्

पुनि ब्रजकुमरि नाम प्रामारिय, रामसाहि तनया निज नारिय।
जिम अनंद जद्दव तनुजाइय, पटु पट्टिमदेवी पुनि पाइय॥१७॥

चतुर नाम भाउल्लदेवि चहि, लोनकरन रट्ठोर सुता लहि।
धर्मसाहि तोमर धरनीधरन, पुर गुग्गैर अधीस महामन॥१८॥

रुचिर सुता तस छट्ठी रानिय, अनुपमकुमरि ब्याहि नृप आनिय।
धरनीधव हरराज पुत्रधुव, हुतरन अरिन करन द्वादस हुव॥१९॥

इन उपरोक्त दो रानियों के अतिरिक्त प्रमार रामशाह की पुत्री ब्रजकुँवरी से तीसरा विवाह किया। चौथा विवाह राजा हरराज ने यादव आनंद की चतुर बेटी पट्टिम देवी से किया और राठौड़ लूणकरण की पुत्री भावल देवी के साथ विवाह रचा कर उसे अपनी पाँचवी रानी बनाया। गुग्गेर के तंवर राजा महामना धर्मशाह की सुन्दर गुणवान कन्या अनुपम कुँवरी को पूरे विधि-विधान से विवाहपूर्वक अपनी छठी रानी बनाया। इन रानियों के गर्भ से हाड़ा राजा हरराज को युद्ध में अपने शत्रुओं को होमने वाले बारह वीर पुत्र हुए।

षट्पात्

हल्लुव लल्लुव लोहराज हम्मीर जिताहव।
रनपटुअक्षयराज धीर बलराज कित्तिधव।

स्याम बहुरि सुरतान जोध हरदोल नाम जिम।
लवनकरन रोपाल अनुज द्योपाल प्रथित इम।

पहिली तनूज हल्लुव प्रबल तिम लल्लुव हम्मीर त्रय।
बल रु हरदोल रोपाल बलि तीनं हि हुव दूजी तनय॥२०॥

हल्लुव, लल्लुव, लोहराज और हम्मीर जैसे चार युद्ध जीतने वाले वीर, रण में दक्ष अक्षयराज, कीर्ति का स्वामी धीर गंभीर बलराज, श्याम, सुरतान, हरदोल, लूणकरण, रोपाल और द्योपाल ये कुल बारह प्रसिद्ध पुत्र राजा हरराज के हुए इनमें से पहली रानी कृष्ण कुँवरी की कोख से हल्लुव, लल्लुव, और हमीर ये तीन पुत्र जन्में। दूसरी रानी अमृत कुँवरी बलराज, हरदोल और रोपाल इन तीनों भाइयों की माँ बनी।

दोहा

लोहराज द्योपाल लघु, जुग प्रामारिय जात।
स्याम की रु सुरतान की, महित जद्दविय मात॥२१॥

लवनकरन रट्ठोरि लहि, ससुता हुव हितसंग।
तिम पायउ सुत तोमरिय, अक्षयराज अभंग॥२२॥

हल्लुव कुल अबलग रहाय, इनमें बिधि अनुसार।
लोहराज कुल समयलग, बढि नट्ठो खयबार॥२३॥

कोई मागध इम कहत, बरनि प्रमा बिनु बात।
लोहराज कुल अब लगहु, गिनहु देस गुजरात॥२४॥

हड्डुन चोथो भेद लहि, हल्लू संतति हड्डु।
हल्लूपोते बिदित हुव, बुंदिय रहि सब बड्डु॥२५॥

सप्तम देव नरेस सुत, समरसिंह इत सूर।
राज्य अद्ध निज करि रहिय, पुर बुंदिय बल पुर॥२६॥

लोहराज और द्योपाल ये दोनों प्रमार रानी से उत्पन्न थे जबकि श्याम एवं सुरतान की पूजनीय मां यादव रानी थी। लूणकरण राठौड़ रानी से जन्मा। इसी तरह अक्षयराज तंवर रानी से उत्पन्न हुआ। हल्लुव का कुल तो वर्तमान तक विद्यमान है विधाता की कृपा से पर लोहराज का वंश कुछ समय तक चला उसके बाद समाप्त हो गया। कई बही भाट ऐसा भी कहते हैं लेकिन वे कहते बिना किसी प्रमाण के आधार पर है कि लोहराज का वंश अभी भी विद्यमान है और उसके वंशज गुजरात में हैं। हाड़ाओं में चौथा भेद इसी हल्लु की संतानों से चला जो हल्लुपोते हाड़ा के उपटंक वाले कहलाए। इनमें से पाटवी तो बूँदी में रहे। राजा देवसिंह के सातवें बेटे समरसिंह को अपने पिता ने बूँदी सहित पूरे राज्य का आधा भाग दिया था वे बूँदी पर कायम हुए।

लै चम्मलि पर अद्रिलग, अवनि रही खिल एह।
बंबावद सन अधिक बढि, गज्जत हुव निजगेह ॥२७॥

बुधपुरपति चालुक बिदित, नृपति मनोहर नाम।
हृदयराम अंगज लहिय, दुहिता गुन उद्दाम ॥२८॥

जन मागध अभिधान जिहिं, कहत सुजानकुमारि।
समरसिंह किन्नो सु पहु, निज महिषी यह नारि ॥२९॥

पुनि चंद्राउत रामपुर, सूरज भानु नरेस।
मंजु कनी तस हरकुमरि, अपर बिबाह्यो एस ॥३०॥

कछवाही सुंदरकुमरि, बलि नरनाह बिबाहि।
उपयम किन्नें तीन इम, बितरन बिबिध निबाहि ॥३१॥

समरसिंह के च्यार सुत, प्रथम कुमर नरपाल।
अपर नाम नप्प हु यहहि, हुव तदनुज हरपाल ॥३२॥

अपरनाम हप्प हु यह रु, जैत्रसिंह लघु जास।
तदनुज डुंगरसिंह तिम, इम प्रबीर चउ आस ॥३३॥

चम्बल नदी से लगा कर अरावली पहाड़ तक की पूरी भूमि बूँदी के अधिकार में आई। बंबावद के अधिकार में इससे कम क्षेत्र आया। बुधपुर के स्वामी चालुक्यराज मनोहर के पुत्र हृदयराम के एक पुत्री ने जन्म लिया जो अनन्य गुणवती थी। मागध जन जिसका नाम सुजान कुँवरी बताते हैं। इस सुजान कुँवरी से विवाह कर समर सिंह ने उसे अपनी रानी बनाया। इसके अतिरिक्त रायपुर के चन्द्रावत राजा सूरजभान की सुन्दर कन्या हर कुँवरी से समरसिंह ने दूसरा विवाह रचाया। इसी प्रकार राजा समरसिंह ने तीसरा विवाह कछवाहा वंशीय सुन्दर कुँवरी से किया। राजा ने ये तीन विवाह पूरी धूमधाम और विधि-विधान से किये और विवाहोत्सव के अवसर पर मुक्त हाथों से दान दिया। राजा समरसिंह के चार पुत्र हुए जिनमें से प्रथम नरपाल हुआ। जिसका दूसरा नाम नप्प (नापा) भी कहा जाता है। इससे छोटा हरपाल जिसका नाम हप्प (हापा) भी प्रचलित है। तीसरा जैत्रसिंह और चौथा डूंगर सिंह था। ये चारों वीर योद्धा थे।

पहिले दुव पहिली प्रसव, जिम चंद्राउति जात।
तीजो अरु चोथो तनय, कछवाही ज कहात॥३४॥

याहि समय रनथंभ अग, दुसह अलाउद्दीन।
लग्गो सुनि जिततित मुलक, निपज्यो डमर नवीन॥३५॥

याही तैं नृप सीम इत, परतट चम्मलि प्रांत।
भिल्लन मंडिय लूट भय, सु न परोक्ष हुव सांत॥३६॥

राजा समरसिंह के चारों पुत्रों में से दो बड़े वाले जुड़वाँ पुत्र रानी चन्द्रावती के प्रथम प्रसव से उत्पन्न थे और जैत्रसिंह तथा डूंगरसिंह कछवाहा रानी की कोख से जन्मे थे। इसी समय में रणथंभौर दुर्ग पर दुस्सह आक्रांत अलाउद्दीन का आक्रमण सुन कर सभी जगह नया उपद्रव फैला। इसी उपद्रव के चलते बूँदी की सीमा में चम्बल नदी के उधर के किनारे के प्रान्त में भीलों ने लूट खसोट शुरु की जो प्रत्यक्ष रूप से शान्त नहीं हुई।

षट्पात्

समरसिंह नरनाह तबहि चम्मलि द्रुत उत्तरि।
चंड बिरचि चतुरंग सबर त्रिसहंस रन संहरि।
किय निर्भय केथोनि सीसवालिय बड़ोद सह।
रहलावनि राम्मगढ़ मउ संगोद दयो मह।
रच्छक अजेय तंहं रक्खिकैं महि अधीस पच्छो मुरत।
पुनि सबर रुक्कि चम्मलि पुलिन आनि जुरे खिल अंकुरत॥३७॥

तब राजा समरसिंह ने शीघ्र ही सेना सहित चम्बल के पार उतर कर भयंकर युद्ध किया जिसमें राजा की सेना ने तीन हजार भीलों को मौत के घाट उतार दिया। इस प्रकार राजा ने उत्पात वाले क्षेत्र के केथोनी, सीसवाली, बड़ोद, रामगढ़, रहनावली, मउ, सांगोद, आदि गाँवों के पुरवासियों को भीलों की लूट से निर्भय कर सुखी किया। अपने कुछ योद्धाओं को इस क्षेत्र के रक्षक नियुक्त कर राजा समरसिंह वापस अपनी राजधानी के लिए रवाना हुआ पर रास्ते में चम्बल नदी के किनारों पर सज्जित हो कर शेष भील आ इकट्ठे हुए जो राजा से मोर्चा लेने को उद्यत थे।

दोहा

पिक्खि अलप परिकर नृपहिं, इम खिल भिल्लन आइ।
कोटा जंहं तंहं जंग किय, नदि चम्मलि नियराइ॥३८॥

बुदींसन पृतना बहुरि, पहुंचि महीपति पास।
किय निर्भय हय बीच करि, नवसत भिल्लन नास॥३९॥

कोटा जंहं पल्ली स्व करि, कौटिक नाम किरात।
रहतो सो भजिगो दरित, गहन दुरावन गात॥४०॥

संभरके भट तीनसत, खंड खंड हुव खेत।
पुरबुंदिय इम समर पहु, आयो बिजय उपेत॥४१॥

बुंदिय सप्तम बरस बय, प्रथित पितासन पाइ।
समर समर मारे समर, अतिधृति समबय आय॥४२॥

इकट्ठे हुए भीलों ने जब देखा कि राजा के साथ थोड़े परिकर और योद्धा हैं तो उन्होंने अभी जहाँ कोटा शहर अवस्थित है उस स्थान पर चम्बल नदी के तट पर राजा से युद्ध करने के लिए मोर्चा लिया। इसी समय बूँदी की ओर से राजा की सेना आ पहुँची तब राजा ने अपने घोड़े उनके बीच डाल कर नौ सौ भीलों का नाश किया। इसी स्थान अर्थात् कोटा वाली जगह पर बसे पाल (छोटा गाँव, भीलों की बस्ती को भी पाल कहते हैं) को राजा ने जीता। यह पाल कोट्या नामक भील के नाम से कहलाता था। वह कोट्या भील तो मरने से डर कर बिना भिड़े वहाँ से भाग कर वन में जा छिपा। इस भिड़ंत में चहुवान (हाड़ा) राजा के तीन सौ योद्धा कट कर टुकड़े-टुकड़े हो कर गिरे पर तब भी राजा समरसिंह विजयी हो कर अपनी राजधानी बूँदी आया। मात्र सात बरस की वय में समरसिंह ने अपने पिता से बूँदी प्राप्त की और उन्नीस वर्ष की अवस्था में समर (समरसिंह) ने समर (युद्ध) में समर (भीलों, संबर) को मारा।

किन्न कुमर हरपाल हित, पुरजज्जाउर पेस।
जैत्रसिंह हित जयथल हिं, लग्गो दैन इलेस॥४३॥

जैत्र कहिय तुमसों जनक, जहं भिल्लन किय जंग।
तंहं में चम्मलि पारतट, दब्बों खल रचि द्रंग॥४४॥

सुपहु किन्नं स्वीकार सुहि, जैत्र तबहि तंहं जाइ।
मारि भिल्ल कौटिक प्रमुख, बलि कोटा बसवाइ॥४५॥

बय निज लहि सोलह बरस, पाइ सु भोग्य प्रदेस।
भिल्लन खिलन भजाइ भट, अडर रह्यो तंहं एस॥४६॥

इसके बाद राजा समरसिंह ने अपने पुत्र कुमार हरपाल को जोजावर नामक नगर देने का प्रस्ताव किया और जैत्रसिंह को जयथल देने की पेशकश की। इस पर जैत्रसिंह ने अर्ज की कि आप जैसे पिता ने जहाँ पर भीलों से युद्ध किया है उसी चम्बल नदी के उस पास मैं नगर बसा कर उन भील दुष्टों को सबक सिखाना चाहता हूँ। अपने पुत्र के ऐसा कहते ही पिता राजा ने तुरन्त उसके प्रस्ताव को मान लिया तब जैत्रसिंह ने कोट्या नामक भील को मार कर वहीं पर कोटा नामक नगर बसाया। इस समय कुमार जैत्रसिंह की उम्र मात्र सोलह वर्ष की थी पर उस वीर ने अपने इस पाए हुए प्रदेश पर अच्छी तरह हुकूमत करते हुए सारे भीलों को खदेड़ कर वहाँ से भगा दिया फिर अपनी भुजाओं के बल पर निर्भय हो कर रहा।

युग्मम्

सुत लघु डुंगरसिंह हित, अधिप खजूरिय अप्पि।
सत्रुनसिर प्रतप्यो समर, महि इम सुतन समप्पि॥४७॥

बूँदी के राजा समरसिंह ने अपने छोटे बेटे डूंगरसिंह को खजूरी नामक गाँव की जागीर प्रदान की और इस तरह समरसिंह ने अपने राज्य का भार अपने पुत्रों को सौंप कर स्वयं ने शत्रुओं के सिर पर राज किया।

सचरणगद्यम्

बुंदी के अधीस हड्डाधिराज समरसिंह को दूजो पुत्र हरपाल जज्जाउरपुर को स्वामी भयो ताके संतान तो समस्त ही हड्डुन में पंचम भेद पाइ हरपालपोते कहाये।

अरु कोटा के अधीस जैत्रसिंह के कुल के हड्डुन में छठ्ठो भेदपाइ जैताउत्त भये तिनमैं हीं पीछैं तीन पीढी के अनंतर खंधिल हू सूरता उदारता में बिसेसहू बढ्यो जाने बुंदी के संगर में मंडू के पातसाह के सोलह सामंत मारि सूरसज्जा पें सयन करि आपुनों नाम उबारयो तासों एही जैताउत्त खंधिलोत्त अैसोहू उपटंक पाइ ठाये।

डूंगरसिंह के अन्वय के खजूरी खेट के निवास करि हड्डुन में सप्तम भेद पाइ खजूरीके अैसो उपटंक कहावत भये।

अरु सर्वही सूर हित रन में सत्रुन को सोक सहावत बितरन मैं बित्त की बाहिनी बहावत स्वकीय सविता संभर संतान सविता कों सम्मद गहावत भये।।४८।।

इत कों यवनेन्द्र अलावुद्दीन रनस्तंभ को बिजय करि चंडासिराज हम्मीर के पुत्र रत्नसिंह को रानांलक्खन के सरन गयो जानि पीछो दिल्ली जाइ दूतन कों चित्रकूट पठाइ संभरराज के सूनु कों गहाइ दैबे की कहाई।

तामें रानां को प्रतिकूल जानि बिजय के लोभ लगि मेदपाट देश को लैबो बिचारि सीसोदराज के सम्मुह वर्षाकाल की बाहिनी की बिंडबक बडे बिस्तार की बाहिनी बहाई।

तहां कितनोंक कटक तो पातसाह के प्रस्थान के पहिलें ही पहुंचि मेवार में डमर मचावत भयो।

याही अवसर में अचानक जाइ निश्रेनीन की श्रेनी लगाइ हड्डाधिराज समरसिंह आपुनें अन्वय के परपुरुष मंडन के रचे मंडनगढ़ नाम दुर्ग मैं पैठि आपुनों अमल रचावत भयो।।४९।।

बूँदी के हाड़ा राजा समरसिंह का दूसरा पुत्र हरपाल जोजावर का स्वामी बना जिसकी संतानें सारे हाड़ाओं में हरपालपोते के उपटंक से प्रसिद्ध हुई। हाड़ाओं में यह पाँचवा भेद हुआ और कोटा के स्वामी जैत्रसिंह के वंशज जैतावत कहलाए। यह हाड़ाओं का छठा भेद जाना जाता है। इसी राजा की तीसरी पीढ़ी में खंधिल हुआ जो अपने शौर्य और उदारता के गुणों के कारण विख्यात हुआ। जिसने बूँदी के युद्ध में मांडू के बादशाह के सोलह सामन्तों को मारा और स्वयं भी वीरता से लड़ता हुआ रणभूमि में निःशेष हुआ। इस तरह अपने नाम को उज्ज्वल करने वाले इस वीर के नाम से उसके वंशज खंधिलोत के उपटंक वाले हुए।

डूंगरसिंह के वंशज खजूरी नामक खेड़ा में रहने के सबब हाडों में सातवें भेद वाले हो कर खूजरीके कहलाए। इस तरह सारे वीरों ने वीरता में शत्रु पक्ष को शोक देने और दान में धन की नदी बहाते हुए युद्ध के रसिक ये पुत्र अपने सूर्य पिता को हर्ष पहुँचाने वाले हुए। दूसरे अर्थों में ये सभी पुत्र

अपने पिता को अपनी वीरता, दानशीलता से यह गर्व दिलाने वाले हुए कि वे चहुवान के सक्षम पुत्र हैं।

इधर बादशाह अलाउद्दीन जब रणथंभोर को फतह कर दिल्ली आया और चहुवान राज हमीर का पुत्र रत्नसिंह चित्तौड़गढ़ के रावल गढ़लक्ष्मण सिंह की शरण में चला गया। बादशाह ने यह जान कर दिल्ली से चित्तौड़गढ़ अपने दूत भेज कर कहलवाया कि हे राजा! रत्नसिंह को आप मुझे सौंप दें अन्यथा अच्छा नहीं होगा पर चित्तौड़गढ़ के राणा को प्रतिकूल जान कर और विजय का लोभ मन में धरकर मेवाड़ देश को लेने का सोचा। यह सोचकर बादशाह अलाउद्दीन ने सिसोदिया राजा पर पावस ऋतु की निर्बाध बहती नदी का अनुकरण करने वाली बड़े आकार की अपनी सेना को चलाया अर्थात् भेजा। बहुत सारी सेना ने तो बादशाह के रवाना होने से पूर्व ही मेवाड़ में पहुँच कर वहाँ उपद्रव मचाना शुरू किया। यह एक अच्छा अवसर देख कर अचानक हाड़ा राजा समरसिंह ने मांडलगढ़ आ सीढ़ियों की पंक्तियाँ लगा कर अपने ही वंश के पूर्वज मंडन द्वारा बनाए गए दुर्ग में घुस कर अपना अधिकार कर लिया।

दोहा

पहिले यह गढ करि कपट, नागपाल नरनाह।
रान लयो नृप रेंन सों, रक्खी रंच न राह ॥५०॥

सु अब रान लक्खन समय, संभर नृप समरेस।
गिनि स्वकीय पच्छो गहिय, बलि कछु प्रांत बिसेस ॥५१॥

धर गत लक्खन पट्टधर, सुनि कुमार अरिसीह।
पठई कहि अैसे परब, लुप्पी तुम हित लीह ॥५२॥

हड्डु कहिय तुमलों न हम, लयो कपटरचि लेस।
पैठि दुग्ग खग्गन प्रहरि, अपनायउ नय एस ॥५३॥

सुनि चिंतिय अरिसिंह तब, इत रन करन प्रयान।
जानि नियत आवत जवन, रोक्यो कुमरहिं रान ॥५४॥

इक हि अलावुद्दीन इत, कहुं गत बिपिन सिकार।
तत्थहि पहुंचि भतीज तस, सुलैमान गहि सार ॥५५॥

दै प्रहार मूर्छित दसा, जिहिं काका मृत जानि।
पुर दिल्लिय निर्भय प्रविसि, आधिपत्य लिय आनि।।५६।।

पूर्व में इसी मांडलगढ़ दुर्ग को राजा नागपाल ने वहाँ के स्वामी राणा रत्नसिंह से छीन लिया था और उसके लिए कोई विकल्प नहीं छोड़ा था। उसी दुर्ग को राणा गढ़लक्ष्मणसिंह के समय में चहुवान नृप समरसिंह ने इसे अपना समझ कर वापस ले लिया। हाँ, इसमें अतिरेक यह था कि समरसिंह ने दुर्ग के साथ कुछ अतिरिक्त भूमि भी अपने अधिकार में कर ली। अपनी भूमि को इस प्रकार गई हुई देख कर राणा के पाटवी कुमार अरिसिंह ने कहला भेजा कि हे राजा समरसिंह! अब क्या करें? ऐसे कठिन समय में आपने स्नेह की सीमा का भी उल्लंघन किया है। इस पर हाड़ा राजा समरसिंह ने प्रत्युत्तर में कहलवाया कि हे कुमार! मैंने इस दुर्ग को छल-कपट द्वारा तुम्हारी तरह नहीं लिया हैं। मैंने तलवार के प्रहारों के साथ गढ़ में प्रवेश कर इसे पूरा नीतिपूर्वक लिया है। यह सुनते ही कुमार अरिसिंह ने तुरन्त युद्ध करने की सोच कर मांडलगढ़ जाना चाहा पर राणा लक्ष्मणसिंह ने उसे यह कह कर रोक दिया कि यह सही समय नहीं! देखते नहीं यवन शत्रु सिर पर चढ़ा आ रहा है। इसी समय अलाउद्दीन एक दिन अकेला शिकार खेलने के लिए वन में गया था। वहाँ पहुँच कर उसी के भतीजे सुलेमान ने उस पर अवसर देख कर तलवार से प्रहार किया। इस प्रहार से बादशाह मूर्च्छित हो कर गिर पड़ा और सुलेमान ने सोचा कि वह मर गया है अतः उसने वहाँ से आते ही दिल्ली पर निर्भय हो कर आधिपत्य कर लिया।

प्रायो मरुदेशीय प्राकृत मिश्रित भाषा

सचरणगद्यम्

इण ही समय राणां लक्खण रो पट्टप कुमार अरिसिंह आखेट में रमतां कोई ग्राम रा परिसर में एक चंदाणा जाति रा हळखड़ रजपूत री पुत्री नूं बळ में अतुल जाणि प्रसभ पूर्वक परणियो।

अरु केही दिन उठै ही रहि चंदाणी कुमराणी नूं आधान सहित पिउहर ही मेल्हि आयो पछैं जिण प्रसव रै समय हम्मीर नाम कुमार जणियो।

सोतो बाळक थको आपरी माता समेत पिता पितामह रा बुलावण रो अवसर न जाणि नानां रै घर ही रहै।

अर अठी चित्रकूट चंडासिराज हम्मीर रा पुत्र रत्नसिंह नूं सरणें राखि राणा लक्खणसिंह रो मन आपरै आथाण आवता अलावुद्दीन रा अनीक नूं चंड चंद्रहास चखावण री चहै॥५७॥

इधर मेवाड़ में भी इसी समय राणा लक्ष्मणसिंह का पाटवी कुमार अरिसिंह आखेट के लिए वन में गया। वहाँ शिकार का पीछा करते हुए उसने एक गाँव के पास वाली भूमि पर एक चंदाणा राजपूत जो हल चलाने वाला किसान था की बेटी को देखा। उसे देख कर अरिसिंह ने सोचा कि यह कन्या अपने बल में अतुलनीय है इससे होने वाली संतान भी वीर और बल वाली होगी। बस, यही सोच कर कुमार ने उससे हठपूर्वक विवाह कर लिया। इसके बाद कई दिन उसी के गाँव में रहकर अपनी कुँवरानी को गर्भवती अवस्था में उसके पीहर में ही छोड़ आया फिर उस कुँवरानी के गर्भ के समय पर कुमार हमीर का जन्म हुआ। यह बालक हमीर अपनी माता सहित वहीं अपने ननिहाल में प्रतीक्षा करता रहा कि शीघ्र ही उसके पिता अथवा दादा उसे अपने पास बुलवा लेंगे। इधर चित्तौड़गढ़ में चहुवान राजा हम्मीर के पुत्र रत्नसिंह को अपनी शरण में रख कर राणा लक्ष्मण सिंह अपने स्थान पर चल कर आते शत्रु को और उसकी सेना को अपनी तलवार का करिश्मा दिखाने की प्रतीक्षा में था।

प्रायो ब्रजदेशीय प्राकृत मिश्रित भाषा

दोहा

भूप भरोसा के भटन, इत मंडनगढ अप्पि।
आयो बुंदिय रन असह, थिर जय जस जग थप्पि॥५८॥

पुब्बहि नृप बुंदीपुरी, बिस्तरसह बसवाइ।
रक्खी अरि आहव, उचित, गुरु प्राकार लगाइ॥४९॥

कुमर नप्प कै हुव कुमर, बुंदियपुर इहिं बेर।
जग जंपत हम्मीर जिहिं, कहि आकर गुन केर॥६०॥

साह गमन चित्तोर सुनि, समरसिंह नरनाह।
सज्जे बुंदिय दुर्गसह, सत्रहसहंस सिपाह॥६१॥

मंडनगढ़ पुनि मुक्कलिय, सहंससत्त दल सज्जि।
रुपि अप्पन बुंदिय रह्यो, गिरि मइंदगति गज्जि॥६२॥

उधर हाड़ा राजा समरसिंह ने अपने विश्वासपात्र योद्धाओं को मांडलगढ़ दुर्ग की रखवाली का जिम्मा सौंपा और अपनी विजयरूपी स्थाई कीर्ति जग में स्थापित कर पुनः अपनी राजधानी बूँदी आया। यहाँ आ कर राजा ने अपनी राजधानी बूँदी को नए सिरे से वापस बसाया जिसमें अपने शत्रुओं से रक्षा के लिए एक बड़ी शहरपनाह (कोट) बनवाई। इसी समय में बूँदी के राजकुमार नप्प (नापा) के पुत्र जन्मा। जगत ने गुणों की खान कह कर जिसे हम्मीर नाम से बुलाना उचित समझा अर्थात् उसका नाम हमीर रखा। बादशाह का आक्रमण चित्तौड़गढ़ पर होना सुन कर राजा समरसिंह ने अपने बूँदी दुर्ग में अपनी सत्रह हजार की संख्या वाली सेना को सज्जित किया। इसके बाद उसने अपनी सात हजार सिपाहियों वाली सेना को सज्जित कर मांडलगढ़ भेजा और स्वयं राजा बूँदी में पर्वतों को अपनी गर्जना से गुंजायमान करते सिंह की तरह रहा।

पठयो दिल्लिय पुब्ब ही, कन्ह सचिव कायत्थ।
साह सु इत पाटव समय, पहुंच्यो बासवपत्थ॥६३॥

जियत सादि सतपंच जुत, देखि अलावुद्दीन।
सब मुरि प्रकृति भतीजसन, हुव याके।ह अधीन॥६४॥

कीलि भतीजहिं कुलकरन, तस संगिन सिरतोरि।
पट्ट अलावुद्दीन पहु, बैठो अभय बहोरि॥६५॥

पुब्बहि कछु दल पिल्लयो, महि लुट्टन मेवार।
चित्तोरहिं जित्तन चढ्यो, अब अप्पहिं कलिकार॥६६॥

लक्खैरिय दर लंघि कैं, अप्पन सीमा आत।
उहां सालिवाहन अनुज, भेज्यो सम्मुह भ्रात॥६७॥

गज इक नाम सु घनगरज, तिम चउ खास तुरंग।
उपदा में पठये इते, सोदर अप्पन संग॥६८॥

अति ढिग आवत अप्प हू, पेय खाद्य करि पेस।
गुनआश्रय गहि साह सन, आयो मिलि पटु एस॥६९॥

इधर उसने जो अपने मंत्री कान्ह कायस्थ को दिल्ली में बादशाह के

पास भेजा था वह बादशाह की नैरोग्यता के समय दिल्ली पहुँचा था। बाद में अलाउद्दीन को जीवित और पाँच सौ सवारों के साथ देख कर दिल्ली में एक सुलेमान को छोड़कर शेष वजीर आदि राज्य के सारे अंग अलाउद्दीन के अधीन हो कर उसके संग हो गए। तब अलाउद्दीन ने अपने भतीजे को मात्र कैद कर लिया उसे अपने कुल का जान कर मारा नहीं पर उसके सारे साथियों के सिर काटकर वह वापस शाही तख्त पर बैठा और फिर से बादशाह हुआ। बादशाह ने पूर्व में ही मेवाड़ की भूमि लूटने के लिए अपनी थोड़ी सेना भेज रखी थी पर चित्तौड़गढ़ को फतह करने के लिए आप रणोत्सुक हो अब रवाना हुआ। बादशाह ने जब अपनी सीमा पार कर लाखेरी के पास बूँदी की सीमा में प्रवेश किया। वहाँ हाड़ा राजा समरसिंह ने अपने छोटे भाई सालिवाहन को बादशाह की अगवानी के लिए भेजा। राजा ने अपना एक घनगरज नामक हाथी और चार अच्छी नस्ल के घोड़े उपहार स्वरूप अपने छोटे भाई के साथ नजराने के लिए भेजे। बादशाह जब आगे बढ़ता हुआ बूँदी के समीप पहुँचा तो राजा समरसिंह भी खाने-पीने की सामग्री के साथ अगवानी के लिए सामने आया। इस प्रकार नीति के छठे गुण (आश्रय गुण) के सहारे वह चतुर राजा बादशाह से मिल आया।

पुर खीनां दर लंघि पुनि, जात अग्ग जवनेस।
बुंदिय मित बंबावदहु, उपदा किन्न असेस॥७०॥

याही मित चंद्राउतन, सुन्यो उपायन सोर।
पहुंचि चमूं जवनेस पुनि, चुनि बिंटिय चित्तोर॥७१॥

भूप कतिक सहचर भये, नियति नम्र मिलि मग्ग।
संग कतिन दिय भ्रात सुत, इक रहि रान उदग्ग॥७२॥

बसु दृग गुन भू मित बरस, बिक्रम नृप सक बेर।
जवनराज चित्तोर जंहं, घोर जोर दिय घेर॥७३॥

खीनापुर नामक नगर के दर्रे को लाँघ कर जब बादशाह अलाउद्दीन आगे बढ़ा तो वहाँ बूँदी की तरह बंबावदा के राजा ने भी नजराना पेश किया। इसी तरह जब रामपुरा के चन्द्रावत ने सभी द्वारा पेश किये गये नजराने की बात सुनी तो उसने भी नजराना पेश किया। इस प्रकार कितने ही राजा अपने नियमों को शिथिल कर मार्ग में बादशाह के साथ हो गए और कई राजाओं ने

अपने छोटे भाइयों अथवा पुत्रों को बादशाह के साथ भेजा। इस समय अपने हठ की उच्चता वाला मात्र एक ही राजा नजर आता था वह चित्तौड़गढ़ का राणा ही था। विक्रम संवत् के तेरह सौ अठाइसवें वर्ष में यवनराज अलाउद्दीन ने चित्तौड़गढ़ को जा घेरा।

इतिश्री वंश भास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे पंचम राशौ वीतिहोत्र-चण्डासि वंशवर्णनबीजहड्डाधिराडस्थिपाल वंश्यानुवंश्य विहितव्याख्या-नावसरव्याहार्यहड्डाधिराजदेवसिंह चरमसमयसहितबुंदीशसमरसिंह चरित्रे प्रेष्ठागौड़ी पुत्रसमरसिंहार्थबुंदीयुक्तदत्ताऽर्द्धराज्यहड्डाधिराजदेवसिंह तनुत्यजन स्वौरससुतार्थ समर्पित हड्डुहेलित्वतृतीय राज्ञीगौड़ी सहगमन नामान्तरख्यातिसहितदेवसिंह जनितद्वादश पुत्रोद्देशन प्रतिपुत्रतत्तन्मा-तृनिश्चयन प्राप्तबंबावदाधिपत्यहरराजा ऽनुजहत्थ प्रातिहारी राष्ट्रकूटी पत्नीद्वय परिणयन तदौरससुर्जना दिपुत्रय संततिहड्डुकुलतृतीय भेदहत्था-वुत्तो पटङ्कप्रापण भटशूरा दिभ्रातृनवक निस्सन्ततिसमापन हड्डाधिराजहर-राज शैर्षोद्दी प्रमुखपत्नीषट् कपरिणयन हल्लू प्रमुखसर्वराज्ञीपुत्रद्वादशक प्रकटन तदन्तस्तृतीय लोहराज वंशभविष्यत्समाप्तिसूचन ज्येष्टहल्लू जननहल्लूपौत्रो पटङ्कितड्डुकुलचतुर्थ भावभेदप्रवृत्तिद्योतन प्राप्ताऽर्द्धराज्य-कृतबुन्दीस्कन्धावारसमाक्रान्त चर्मण्वतीपारप्रान्तप्राप्तपितृ मातृ प्रसाद-मुख्यीभावहड्डाधिराज समरसिंह चालुकीसुज्ञानकुमारी प्रमुखराज्ञीत्रयो पयमन प्रत्येकराज्ञभौरसनरपाला दितत्पुत्रचतुष्क समुद्भवन।

इतिश्री वंश भास्कर महाचम्पू की पाँचवी राशि में अग्निवंशी चहुवान वंश वर्णन के कारण हड्डाधिराज अस्थिपाल के वंश और वंश की शाखाओं की कथा के वचनों में हड्डाधिराज देवसिंह के अन्त समय सहित बूंदी के पति समरसिंह के चरित्र में प्यारी गौड़ रानी के पुत्र समरसिंह के अर्थ बूंदी सहित आधा राज्य देकर हड्डाधिराज देवसिंह का शरीर छोड़ना, अपने औरस पुत्र के अर्थ हाड़ा क्षत्रियों का सूरजपन देकर तीसरी रानी गौड़ी का सती होना, नामान्तर की प्रसिद्धि सहित देवसिंह के बारह पुत्रों का कथन, प्रत्येक पुत्र की उनकी माताओं का निश्चय करना, बंबावदा का राजा होकर हरराज के छोटे भाई हत्थ का प्रतिहारी और राठौड़ी दो स्त्रियों से विवाह करना, उसके औरस सुर्जन आदि तीन पुत्रों की संतान का हाड़ाओं के कुल में तीसरा भेद हत्थाउत्त पदवी पाना, भटसूर आदि नव भाइयों का निस्संतान मरना, हड्डाधिराज

हरराज का सिसोदिनी आदि छह स्त्रियों से विवाह करना, सब रानियों के हल्लू आदि बारह पुत्र प्रकट होना, उनमें से तीसरे लोहराज के वंश की भविष्यत् काल में समाप्ति की सूचना करना, बड़े हल्लू के जन्म से हल्लूपोते की पदवी वाले हाडों के कुल के चौथे भेद की सूचना करना, आधा राज्य पाकर बूंदी को राजधानी बनाकर चामल (चम्बल) नदी के पार के प्रांत को लेकर माता-पिता की प्रसन्नता से मुख्यभाव को प्राप्त करके हड्डाधिराज समरसिंह का सोलंकिनी सुजान कुमारी आदि तीन रानियों से विवाह करना, प्रत्येक रानी के उदर से नरपाल आदि उसके चार पुत्रों का जन्म होना।

रणस्तम्भरण-समयश्रुतपरतटप्रान्तभिल्लोपद्रवहड्डाधिराजसमरसिंह शवरसहस्त्रत्रय व्यापादन कृतनिर्भयपरतटप्रान्तकेथोण्यादिपुरन्यस्तरक्षक-प्रत्यागच्छन्नरेन्द्रपुनर्युध्यमानभिल्लशतनवक संहरण नृपसुभटशतत्रय शूरशय्याशयन हड्डेन्द्रविध्वस्तपल्लीककौटिकनामपुलिन्दपलायन प्राप्तजज्जावुर कोटा खर्जूरी कराजकुमारहरपाल जैत्रसिंह डुंगरसिंह भाविवंशहरपालपौत्र जैत्रावुत्त खर्जूरीको पटङ्कत्रय प्राप्तिसूचन।

रणस्तम्भ के युद्ध समय में चम्बल नदी के पार के देश में भीलों का उपद्रव सुन कर हड्डाधिराज समरसिंह का तीन हजार भीलों को मारना, नदी के पार के प्रान्त को निर्भय करके केथूनी आदि पुरों में रक्षक स्थापन करके वापस आते हुए राजा से फिर युद्ध करने वाले नौ सौ भीलों को मारना, राजा के तीन सौ सुभटों का मारा जाना, हड्डेन्द्र की विनाश की हुई पाल से कोट्या नामक भील का भागना, जज्जाउर, कोटा, खजूरी पाकर राजकुमार हरपाल, जैत्रसिंह, डूंगरसिंह के आगे होने वाले वंश का हरपालपोता, जैताउत, खजूरीका इन तीन पदवियों को पाने की सूचना करना।

यवनराडलावुद्दीन चित्रकूटराजराणालक्ष्मण सिंहपार्श्वहाम्मी-रिरत्नसिंह मार्गण शीर्षोद्दराजतदनङ्गीकरण प्रतिश्रुतशरणा गतत्राण-राणाराष्ट्रजिगीषुप्रतिष्ठासुम्लेच्छराजप्रेरितसेन्यान्तरमेदपाटदेशड-मरविस्तरण प्राप्तावसरहड्डाधिराजसमरसिंह मण्डनगढ़नामदुर्गसमाक्रमण राणाश्रुतगतदुर्ग-हड्डेन्द्रयुयुत्सुस्वकीय पट्टपकुमाराऽरिसिंहनिवारण मृगयागतप्रहरण-प्रहारितैकाकि स्वपितृव्यक दिल्लीशालावुद्दीन मूढदशानिश्चितपरा-सुत्वतद्भ्रातृ जसुलैमानदिल्लीसमाक्रमण।

बादशाह अलाउद्दीन का चित्तौड़ के राजा राणा लक्ष्मणसिंह के पास से

हम्मीर के पुत्र रत्नसिंह को माँगना, उससे सिसोदिया राजा का अस्वीकार करना, यह सुनकर शरणागत की रक्षा करने वाले राणा के राज्य को जीतने की इच्छा वाले गौरव से म्लेच्छराज की भेजी हुई सेना का मेवाड़ में उपद्रव करना, समय पाकर हड्डाधिराज समरसिंह का मांडलगढ़ नामक गढ़ लेना, गढ़ को गया हुआ सुनकर हड्डेन्द्र से युद्ध करने की इच्छा वाले पाटवी कुमार अरिसिंह को राणा का रोकना, शिकार में गये हुए अकेले अपने काका अलाउद्दीन को शस्त्र से प्रहार कर मूर्छित दशा में मरा हुआ जान कर उसके भतीजे सुलेमान का दिल्ली लेना।

तत्समयमृगव्यर-ममाणकुमाराऽरिसिंहक्षात्रबन्धुचन्द्राणीपरिणयन तत्पितृगृहन्यस्तसभ्रूणकुमार चित्रकूटागमन तदनन्तरपितृपस्त्यस्थ-कुमारपत्नीचन्दाणीहम्मीरनामकुमारमारप्रसवन मण्डनगढस्थापित-विश्वस्तरक्षकहड्डादिराजप्राक्कालप्रकृतिविस्तारितबसतिबुन्दीपुरागमन श्रुतयवनेन्द्रागमपुनर्मण्डनगढप्रस्थापितसप्तसहस्त्र सुभटसज्जीकरण तत्प्राक्कालस्वकीय सचिवकृष्णनामकायस्थयवनेन्द्रानुमोदनार्थदिल्ली-प्रेषण समयप्राप्तपाटवदिल्लीसमागतरुद्धसलेमानविध्वस्ततत्सङ्गिज-नपुनः प्राप्तपट्टयवनराडलावुद्दीन चित्रकूटविजयप्रस्थान हड्डाधिरा जस्व-सीमागतम्लेच्छराजसमीपगज हयो पायनसहितस्वकीयसोदराऽनुजशा-लिवाहन प्रस्थापन निकटसमागतखाद्य पेया दिसन्मानितयवनेन्द्र-सभास्वयंसम्मिलन पुनः प्रस्थितदिल्लीशबुन्दी समानबम्बावद रामपुरो पदाप्रापण शरणिसमागतराजतासेवकीभावसमादान विस्तृतबरू-थयवनेन्द्रचित्रकूटवेष्टनशकसूचन प्रथमो मयूखः ॥१॥ आदितः सप्तचत्वारिंशदुत्तरशततमः ॥१४८॥

उसी समय में शिकार खेलते हुए कुमर अरिसिंह का क्षत्रिय वंश के चन्दानी से विवाह करना, गर्भ के बालक सहित उस गर्भिणी को उसके पिता के घर में रखकर कुमार का चित्तौड़ आना, पीछे से पिता के घर में रही हुई कुमरानी चन्दानी का हम्मीर नामक कुमार को जन्म देना, मांडलगढ़ में भरोसे के रक्षक रख कर हड्डाधिराज का पहले समय में शिल्पविद्या से विस्तार पूर्वक बसाई हुई बूंदी में आना, बादशाह का आना सुन कर मांडलगढ़ में सात हजार सेना रख कर नरेन्द्र का बूंदी के गढ़ में सत्रह हजार सुभटों को सज्जित करना, उससे पहले समय में अपने मंत्री कृष्ण नामक कायस्थ को बादशाह

की प्रसन्नता के लिए दिल्ली भेजना, नीरोगता का समय पाकर अथवा कुछ समय से नीरोगता पाकर दिल्ली में आकर सुलेमान को कैद कर उसके साथियों को मारकर अलाउद्दीन का फिर से पाट बैठना, चित्तौड़ को विजय करने के प्रस्थान में हड्डाधिराज का अपनी सीमा में आये हुए म्लेच्छराज के पास अपने सगे छोटे भाई शालिवाहन के साथ एक हाथी और चार घोड़े सहित नजराना भेजना, समीप आये हुए खान पानादि से सम्मानित किये हुए बादशाह की सभा में स्वयं समरसिंह का मिलना, फिर गमन किये हुए बादशाह को बूंदी की बराबर बंबावद और रामपुरा वालों का नजराना देना, मार्ग में आये हुए राजाओं का सेवकभाव ग्रहण करना, बड़ी सेना से बादशाह का चित्तौड़ को घेरने के संवत् की सूचना करने का प्रथम मयूख समाप्त हुआ। और आदि से १४७ मयूख हुए।

प्रायो ब्रजदेशीय प्राकृत मिश्रित भाषा

दोहा

दुसह अलावुद्दीन सों, लक्खन नृप जस लाह।
इक्क मुररि गढ अंकुर्‌यो, रक्खी अज्जन राह ॥१॥

दुस्सह शत्रु बादशाह अलाउद्दीन से चित्तौड़गढ़ का राणा लक्ष्मणसिंह यह सोच कर कि इससे यश की प्राप्ति होगी, भिड़ने को तत्पर हुआ। वह मात्र एक अकेला ऐसा वीर निकला जो आर्यों की रक्षार्थ मोर्चा ले कर अपने गढ़ में खड़ा हुआ।

गीतिका

बल थाह वर्जित साह यों नरनाह लक्खन बिंटयो।
भुव छाइ जोजन दुग्ग जो गरदाइ फोजन भिंटयो।
परिबेस मध्य दिनेस लों मनुजेस रान प्रकास भो।
लनवोद कों चउ कोद लै जनु द्वीप जंबुव भासभो ॥२॥
बपु ढंकि कंदर बासुकी कि अगेस मंदर आवर्‌यो।
कि मनों बराटक बीच बाटक कंज केसरनें कर्‌यो।
रिपु वृत्त दुर्ग नरेन्द्र को इम केन्द्र सन्निभ व्है रह्यो।
दुहुं ओर घोर सजोर व्है दगि सोर भूतल कों दह्यो ॥३॥

मिलि दाव दुस्सह ताव दै अरराव नालिन को मच्यो।
तिहिं बार झार फुलिंग फार प्रसार में गिरि जो तच्यो।
लगि चक्क ढक्कन यों झलक्कन धूम संकुल व्है लस्यो।
बहु बिज्जु मिश्रित अभ्र जाति अदभ्र कानन पें बस्यो ॥४॥

इधर बादशाह ने अपनी असंख्य (अथाह) सेना की सहायता से राणा को आ घेरा। उसने अपनी सेना से गढ़ के पास का लगभग एक योजन क्षेत्र आछन्न कर दिया इसके बाद परिवेश (कुण्डलाकार उत्पात सूचक सूर्य चंद्र के रश्मि मंडल को परिवेश कहते हैं) में सूर्य की तरह वह मनुष्यों का पति महाराणा प्रकाशित हुआ। जिससे चारों दिशाओं में मानों जंबू द्वीप शोभायमान हो गया। मानों वासुकि नाग ने पर्वतराज मंदराचल की कंदराओं को ढाँपते हुए आबद्ध किया हो। जैसे कमल की डोडी को उसी की पुंकेसर ने मध्य में कर लिया हो। इस तरह शाही सेना ने चित्तौड़गढ़ के दुर्ग को अपनी परिधि के केन्द्र में ले लिया। तब दोनों ओर से घमासान युद्ध आरंभ हुआ। बारूद के धमाकों से पृथ्वीतल जलने लगा। दोनों ओर से तोपों की नालों से निकलती ज्वाला ताप उगलने लगी और तोपों की अरराट गूँज उठी। इस समय अग्निकणों के समूह के प्रसार से पर्वत धू-धू जल उठा। सेना ने उसे ढक्कन की तरह ढक लिया पर धुंआ उठ कर इस तरह आकाश में छा गया मानों बहुत सारी बिजलियों वाला कोई बड़ा मेघ वन पर छाया हो।

बढि बज्र बैर नसात नैरन फैर फैरन पें बनैं।
चहुं ओर यों सुनि सोर संकिय भार ज्यों तरकैं चनैं।
धकि बन्हि बित्थर पत्थ पत्थर भू थरत्थर व्है धुकी।
झर बुड्डती घनमाललों फनमाल आलुक की झुकी ॥५॥
जिम साह चाह सिपाह गोलन दुग्ग दोलन जोरिदै।
तिम रान के भट तोप जालन मिच्छ ढालन तोरिदै।
सह अर्थ भो वह चित्रकूटहु सोन धूम कृसानु सों।
भुव अंधकार अपार कै रज बाद मंडिय भानु सों ॥६॥

वज्र के समान गोले बढ़-बढ़ कर नगरों का नाश करने लगे और यह प्रक्रिया तोपों के प्रत्येक धमाके के साथ बढ़ने लगी। चारों दिशाओं में मानो किसी भाड़ में चने तड़कने लगे हों उस जैसी ध्वनि पसरने लगी। अग्नि के

जलने से और उसके फैलने से पत्थरों के मार्ग वाली पृथ्वी काँपती हुई तपने लगी। बरसात की झड़ी लगते समय जिस तरह मेघमाला नीचे झुक आती है उसी तरह शेषनाग के फण झुक गए। शाही सेना के सिपाही अपने बादशाह की चाहत के अनुकूल तोपों से गोलों का प्रहार कर गढ़ को झूला बनाने लगे और राणा के योद्धा प्रत्युत्तर में अपनी तोपों के प्रहार से शत्रु सेना के निशानों (ध्वजों) को ढहाने लगे। कुछ भी कहें चित्तौड़गढ़ का दुर्ग रक्त, धुएं और अग्नि से आश्चर्यजनक ढंग से आच्छन्न हो गया। उड़ती हुई रज ने आकाश को ढक कर मानो सूर्य से हठ ठानी हो कि मैं तुम्हारा प्रकाश नीचे पृथ्वी तल तक नहीं जाने दूँगी।

गढ़लग्गि गोलन अट्ट गोपुर कोट कंगुर के गिरैं।
बल लग्गि बारन बाजि बीरन बुत्थि कोसन लों किरैं।
इत सौध गोख लदाव मंडप थंभ छत्रिय उल्लटैं।
उत केणिका अपटी बितान रू तल्प ज्वालन में अटैं।।७।।
पवि बाज गाज दराज तोपन गब्भ गब्भिनि के परै।
अह रत्ति तत्ति निबान आवटि नीर सीढिन उत्तरै।
लहि धूम नैनन गैन अेनन अंधता चिर लो लगैं।
जरिकैं अनेकन पच्छ केकन पुच्छ चंगन लों जगैं।।८।।

तोपों के गोले लगने से गढ़ की दीवार, कोट, कंगुरे गिरने लगे। इसके अतिरिक्त गोलों से हाथी, घोड़े और वीरों के अवयव उड़ कर कोसों दूर बिखरने लगे। इधर दुर्ग में गोलों के प्रहार से महल, झरोखे, लदाव, मंडप, खंभे और छत्रियाँ उलटने लगी अर्थात् टूटने लगे और उधर शाही सेना के डेरे, कनातें, शामियाने और शयनिकाएँ उड़ने लगीं। वज्र के समान छूटती तोपों की तेज गर्जना से गर्भवती महिलाओं के गर्भ गिरने लगे। रात-दिन जलते गोलों की गर्मी से कुएँ बावड़ी और तालाबों का पानी उबल कर सीढ़ियाँ उतरने लगा अर्थात् छीज कर कम होने लगा। चलती तोपों के धुएँ से आकाश और घर भर गए। इनके अतिरिक्त मनुष्यों की आँखों में भर जाने से दिखना कम हो गया अर्थात् पूरा क्षेत्र अंधकारमय हो गया। तोपों की पसरती ज्वाला से कई उड़ते पाखी अपने पंख जला कर पतंगों की तरह जलने लगे।

रन कौतुकीन विमान जे कछु उच्च धूमित व्है रहैं।
चित चित्र चंडमरीचि त्यों रजके अभाव हिकों चहै।
कटिजात हत्थिन सुंडि पन्नगपात अध्वर ज्यों करैं।
अग तें मयूर उडान ज्यों द्विप पिट्ठि केतन उत्तरैं॥९॥
इम अंधकार प्रसार लोलक अग्गि गोलक उल्लसें।
हरिचक्र की कि अलोक के तम गाढ रंचक भा हसें।
किमु अक्क अंबुद चक्क अंतर अग्गि प्रेतन की कुहू।
सननंकि जावत पिक्खि भावत नां समा उपमा सुहू॥१०॥
डगमग्गि सैलन सृंग फैलन लोक गैलन में डरैं।
बुध बीर जाल त्रिकाल साधक काल आन्हिक बीसरें।
अतिगाज जात दरारि भूतल पक्क दारिम ओप लैं।
तंहं थान नामहि जो लख्यो सहि जो निरंतर तोप लैं॥११॥

युद्ध देखने के उत्सुक देवता अपने विमानों से कुछ देख नहीं पा रहे थे क्योंकि रजकणों से आकाश आच्छादित हो गया। सूर्य भी मनोमन यह इच्छा करता है कि कुछ रजकण कम पड़े तो नीचे चल रहे युद्ध का नजारा अच्छी तरह देख सके। घमासान युद्ध में हाथियों की सूण्डें कट कर उछलती हुई यों गिर रही हैं मानो राजा जन्मेजय के सर्पयज्ञ में आ आकर सर्प गिरते थे। पहाड़ से उड़ कर मोर जिस तरह नीचे उतरते हैं उस प्रकार हाथियों की पीठ पर स्थापित ध्वजदंडों से ध्वजाएँ उड़ कर नीचे गिर रही है। घने अन्धकार के प्रसार में कभी कभी तोपों के चपल गोले यों लग रहे हैं मानों विष्णु भगवान के चक्र की चमक अतलादिक लोकों में स्थित घोर अंधकार पर स्मित स्मित मुस्करा रही हो। इन तोपों से प्रज्वलित अग्नि सेना के मध्य ऐसी नजर आ रही है जैसे मेघों के बीच सूर्य हो अथवा नष्ट चन्द्र अमावस्या की रात्रि में प्रेतों की अग्नि दिखाई देती हो। अंधेरे में बढ़ती तोपों की नालों से निकली अग्नि के लिए कोई उपयुक्त उपमा नहीं मिल रही। पर्वतों के शिखर डिगमिग होने लगे और उन्हें देख कर मार्ग में चलते पथिक डरने लगे। तोपों के धमाकों और घमासान के चलते तीनों समय संध्या वंदन करने वाले बुद्धिमान पंडितों के समूह अपना संध्याकर्म तक बिसरने लगे। तोपों की गड़गड़ाहट से दहल कर काँपती धरती में फटकर दरारें ें पड़ रही हैं जैसे पका हुआ अनार फटता हो। युद्ध भूमि में जहाँ कहीं नाम मात्र का स्थान नजर आता है उसे तोपें तुरन्त मिटाने लगी।

गुरुता परक्खन के चरक्खन चक्क चक्खन भू ग्रसैं।
नर बैल हल्लन जे हमल्लन नाग टल्लन निक्खसैं।
रन मिच्छ बादिक अन्नआदिक दुग्ग मग्गन रोध कैं।
बनि रान के भट मेटि कंटक आत घात प्रबोध कैं॥१२॥

चहि हल्ल के प्रतिमल्ल बाहिर के निसैंनिन दै चढैं।
बल बाहु बिस्मय खट्टिकैं तिन्ह कट्टि अंदर के बढै।
कहुं सोर दट्टन दै सुरुंग सु जानि अट्टन के हुलैं।
तंहं तैल तोयन पिल्लि कैं भय मेटि तद्धव तेहु लैं॥१३॥

अपनी गुरुत्वाकर्षण शक्ति की परीक्षा करने के लिए धरती रथों के पहियों को चखती हुई निगलने लगी है अर्थात् रथ के जो चक्र धरती में धंसते हैं उन्हें निकलने के लिए मनुष्यों और बैलों के सामूहिक प्रयासों से उपजा हल्ला नाकाफी हो रहा है अर्थात् बैलों को जोत कर उन्हें जोर से हाँकने के हल्ले से भी धरती में धंसे चक्र नहीं निकल पा रहे हैं और उन्हें निकालने के लिए हाथियों के टल्लों (जोर की टक्करों) की आवश्यकता पड़ रही है। युद्ध में संलग्न सेना के लिए खाद्य सामग्री लाए जाने वाले मार्गों को रोक कर शाही सेना के सिपाही व्यवधान उपस्थित कर रहे हैं और महाराणा के वीर योद्धा घात लगा कर ऐसे शत्रुओं को नष्ट कर रहे हैं। शाही सेना के सिपाही धावा करने की मंशा से दुर्ग की प्राचीर पर सीढ़ियाँ लगा कर उसे फाँदने का यत्न करते हैं और प्रत्युत्तर में दुर्ग के भीतर महाराणा के वीर अपने बाहुबल के सहारे अपने ऐसे शत्रुओं को काट कर बाहर की ओर बढ़ने का प्रयत्न कर रहे हैं। दुर्ग की दीवार के पास बारुद लगा कर सुरंगें बना कर शत्रु सेना के योद्धा ऊपर आने का जतन करते हैं और उनके इस प्रयास को महाराणा के स्वामीभक्त सिपाही उन पर उबलता हुआ तेल और पानी फेंक कर असफल करने लगे।

कहुं खग्ग तिच्छन घात मिच्छन आत कंगुर कट्टि दै।
बृक थाप कीस कलाप कों बिटपी कि आवत बट्टिदै।
कति कुद्दि कंगुर आत पज्जन ब्रात अज्जन द्वै करैं।
किमु भ्रात दोउन लोभमज्जन भाग सज्जन लै करैं॥१४॥

द्रुत दुर्ग अंतर साह के बढि जात के भट दूर लों।
हुत खग्ग पावक मज्झ कैं पहुँचात भट वे हूर लों।
कति दट्टि बत्थन मिच्छ मत्थन कट्टि फैंकत कोटसों।
चल बाल दै किमु दोट पिल्लत गोट गैंदन चोट सों॥१५॥

कहीं दुर्ग के कंगूरों पर चढ़ने में सफल हुए यवन सेना के सिपाहियों पर महाराणा की सेना के योद्धा अपनी तीखी तलवारों के प्रहार कर ऐसे काट गिराते हैं मानों बघेरा वृक्ष पर चढ़ते हुए बन्दरों पर अपनी हत्थल का प्रहार कर गिरा रहा हो। दुर्ग की बुर्ज पर कूद कर चढ़ आते म्लेच्छ सिपाहियों को आर्य सिपाही दो-दो टुकड़े कर वापस गिरा रहे हैं मानो दो भाई अपने सज्जन पिता द्वारा अर्जित सम्पत्ति के बराबर भाग करते हों। कुछ शत्रु सेना के सिपाही जो चकमा दे कर दुर्ग में प्रवेश पा जाते हैं उन्हें महाराणा के वीर अपनी खड्ग रूपी अग्नि में होम कर तुरन्त हूरों (अप्सराओं) तक पहुँचा रहे हैं। कई वीर शाही सेना के म्लेच्छों को अपनी बगल में दबाकर उनके मस्तक काट किले के बाहर फेंक रहे हैं मानों चंचल बालक गेंद पर चोट कर उसे उछाल कर दूर फेंक रहे हों।

कति मोरछे तजि मिच्छ दै अधिरोहिनी चढते कटैं।
अरि लंक के गढजात रक्खस घात कें कपि उल्लटैं।
बहु घट्ट गोलन बट्ट व्है तंहं टट्ट अट्ट नये बनैं।
भिलिकैं दुयां भर भै तनैं मिलिकैं परस्पर जै भनैं॥१६॥
भट साहके बढि खातिका बिच तूल के बुरके भरैं।[१]
जिनकी तुपक्कन जेहि प्रत्युत रान इच्छक व्है जरैं।
अह रत्ति मिच्छ अली अली कहि आनि दुग्गहि आवरैं।
सह रत्ति रान सिपाह संचय पानि पुग्गत संहरैं॥१७॥

शाही सेना के सिपाही अपना मोर्चा छोड़ कर सीढ़ियों के सहारे दुर्ग की प्राचीर पर चढ़ते हुए काट गिराये जा रहे हैं जैसे कि लंका के शत्रु वानर गढ़ पर चढ़ते समय राक्षसों के प्रहारों से उल्टा हो कर गिरते थे। तोपों के

टिप्पणी : १ यहाँ पाठकों को जानकारी के लिए यह बता देना आवश्यक समझता हूँ कि चित्तौड़गढ़ दुर्ग के चारों ओर परिखा (खाई) नहीं है पर कवि ने अपने वर्णन की रूढिवश ऐसा बताया है। तथ्य रूप में गलत है पर काव्यरूढि की दृष्टि से क्षम्य है। - संपादक

गोलों से जगह-जगह घाटियों पर बने मार्गों के नए उपमार्ग बन रहे हैं। दोनों ओर के योद्धा आपस में भिड़ कर भय का संचार कर रहे हैं और मिल कर समूह में जयघोष कर रहे हैं। शाही सेना के वीर रूई से भरे बोरे डाल कर दुर्ग की परिखा को पाटने का प्रयत्न करते हैं पर यवनों की तोपों की अग्नि से जल कर महाराणा के पक्ष का कार्य आसान कर देते हैं मानों वे बोरे अपनी इच्छा से महाराणा की सहायता कर रहे हों। इस प्रकार रात-दिन म्लेच्छ 'अली-अली' का उच्चारण करते हुए नित्य गढ़ को घेरते हैं पर वे रात तक महाराणा के पक्ष वाले वीरों के हाथों नाश को प्राप्त होते हैं।

सिलगाइ सोर कुतून डारत केक मिच्छन सूल्य व्है।
गुरु ग्राव गेरन घाव केकन मृत्यु बिक्रय मूल्य व्है।
कति दोहरी तिहरी क्रिया नट निंदि आवत कोटतैं।
उन्ह रीझि दै गढ के बली बसु डारि साहस ओट तैं॥१८॥

जरि बस्त्र स्त्रावक देव व्है कति मिच्छ बैठत जीव दै।
गढ के प्रबीर तिन्हैं सिराहन चच्छु चाहन ग्रीव दै।
उफनाइ साहस साह यों गरदाइ दुर्गहिं अंकुर्‌यो।
जिम मन्त्रि कें महिमान रानहु खान पान किलै जुर्‌यो॥१९॥

गढ़ के भीतर से सिपाही बारूद के पीपे जला कर ऊपर से डालते हैं जिससे शाही सेना के कई योद्धा भुन कर कबाब हुए जाते हैं। बड़े- बड़े पत्थर ऊपर से गिरा कर शत्रु सेना के सिपाहियों को वे भगा-भगा कर मार रहे हैं। कितने कई योद्धा दुर्ग के ऊपर से नट की तरह दोहरी तिहरी कुलाचें भर कर नीचे आते हैं। ऐसे वीरों पर गढ़ के भीतर वाले अग्नि बरसाते हैं मानों उनके करतव से प्रसन्न हो कर उन्हें रीझ (पुरस्कार) दे रहे हों। इससे शत्रु सेना के सिपाहियों के पहने हुए वस्त्र जल जाते हैं और वे जैनों के देवता पार्श्वनाथ की तरह दिगम्बर (नग्न) हो मरते जाते हैं। ऐसे लोगों का तमाशा देखने के लिए गढ़ की प्राचीर से राणा के वीर अपनी गर्दन निकालते हैं मानों वे इस रूप की प्रशंसा करना चाहते हों। इस तरह हठपूर्वक बादशाह अलाउद्दीन चित्तौड़गढ़ के किले को घेर कर खड़ा हुआ और महाराणा ने भी बिना निमंत्रण के आए इस मेहमान को देख कर अपने किले में उसकी आवभगत को ऐसी खाद्य सामग्री एकत्रित की।

षट्पात्

राजकुमर अरिसिंह बीर कोउक वह बल्लन।
हिंगुलु नाम सु हड्डु हुलसि इतिमुख अति हल्लन।
कढि कढि जामिनि काल बिरचि सौप्तिक बहुबारन।
सेना मथि सहसाहि हनत हुव जवन हजारन।
लग्गे सिपाह जिम जिम लुपन तिम तिम साहस साह तकि।
नवनव अनीक रक्खत नियत सनै सनै ढिग हुव सरकि॥२०॥

इधर राजकुमार अरिसिंह और रणथंभोर की रक्षा करने गई महाराणा की सेना का सेनापति बल्लन (जिसके बारे में इससे अधिक ज्ञात नहीं) के साथ हिंगलु नामक हाड़ा वीर आदि ने मिलकर रातों को धावे करना आरंभ किया। इस प्रकार की युद्ध प्रणाली (छापा मार) अपना कर इन वीरों ने शाही सेना के हजारों यवनो को मारा। बादशाह ने जब यह देखा कि दिन-प्रतिदिन उसकी सेना के सिपाही लुप्त होने लगे हैं तो उसने अपने साहस को भी उसी अनुपात में बढ़ाया और उसके लिए अपनी सेना की नई-नई टुकड़ियाँ बना कर उन्हें तैनात किया। इस तरकीब से शाही सेना ने धीरे-धीरे आगे बढ़ते हुए किले के पास पहुँचने की अपनी मंजिल तय की।

दोहा

समय समय मिच्छन प्रसरि, द्रहबट्टन करि देस।
पिहित बहत अन्नादि पथ, अटकिय प्रहत असेस॥२१॥

श्रीलग्राम पुर लुट्टि सब, जिन रचि प्रलय प्रजारि।
आढ्यजनन कारा अटकि, दिय दुकाल भयकारि॥२२॥

बित्तत लखि अन्नादि बल, प्रजा रुदन दुख पाइ।
भट मंत्रिन रानहिं भनिय, रतन देहु पकराइ॥२३॥

आनन इम छन्निय अरज, रान न मंन्निय रंच।
सरनग संटै भुव रु सिर, चिंतिय दैन प्रपंच॥२४॥

उधर समय-समय पर यवनों ने इधर-उधर फैल कर देश (मेवाड़ प्रदेश) को बरबाद करना शुरू किया। वे महाराणा की सेना के लिए गुप्त रास्तों से जाती कुमुक और खाद्य सामग्री को लूटने लगे। उन रास्तों को

रोकने लगे। धनाढ्य लोगों की बस्तियाँ, समृद्धिशाली पुर, नगर को लूटना शुरू कर उन्होंने प्रलय की सी हालत बना दी। कई धनाढ्य व्यक्तियों को पकड़ कर यवन बंदी बनाने लगे जिससे शेष प्रदेश में दुष्काल जैसी स्थिति पैदा हो गई। अन्न सहित अन्य खाद्य सामग्री की कमी हो जाने पर मेवाड़ की प्रजा दु:खी हो गई। लोग अपनी खाद्य सामग्री को खत्म होता देख कर विलाप करने लगे। अपने मुल्क की यह दुर्दशा देख कर अमात्यों, सामन्तों आदि ने महाराणा से निवेदन किया कि अब अच्छा यह रहेगा कि हम रत्नसिह को बादशाह को सौप दें। दूसरे लोगों ने भी राणा को यही गुप्त सलाह दी पर उन्होंने किसी की नहीं सुनी। महाराणा ने ऐसी राय पर तनिक भी ध्यान न दे कर कहा कि शरणागत (रत्नसिंह) के बदले में हम भूमि और अपने सिर देने को तैयार हैं पर उसे नहीं सौंपेंगे।

षट्पात्

अंगज तेरह अनुज अट्ठ निज तिम दुव नत्तिय।
बल्लन बलि वह बुल्लि घिरन यह गति जिहिं घत्तिय।
हिंगुलु नाम सु हड्डु भ्रात जामात महाभट।
इम स्वकीय भट अखिल बिरचि एकत्र मंत्रवट।
सूचिय न दैहिं हम्मीर सुत घनरस हम दिय सिर घरन।
बदि यह रु सज्ज रक्खन बिरुद लक्खन हुव बाहिर लरन॥२५॥

महाराणा लक्ष्मण सिंह के तेरह पुत्रों, आठ छोटे भाइयों और दो पौत्रों के साथ बल्लन ने मंत्रणा की। इन लोगों में उसके भाई का दामाद हाड़ा हिंगलु भी सम्मिलित हुआ। सभी ने एक मत से यह तय किया कि हम राजा हमीर के पुत्र रत्नसिंह को हरगिज नहीं देंगे। हाँ, इस पवित्र कार्य के लिए हम अपने घर और मस्तक को पानी देते हैं अर्थात् उसके बदले में हमें हमारा सिर और घर दोनों देना स्वीकार है। मंत्रणा के ऐसे बोल, बोल कर अपने सभी वीरों के साथ राणा लक्ष्मण सिंह अपने विरुद की रक्षार्थ युद्ध को सन्नद्ध हो कर दुर्ग से बाहर निकला।

दोहा

भनत किते हम्मीर भव, दियउ कड्डि कहुं दूर।
किते रान सकुटुंब के, संग जंग मृत शूर॥२६॥

अज्जन लक्खन सहित इम, मिच्छन लक्खन मारि।
बीरसयन सुत्तो बिदित, रानां लक्खन रारि॥२७॥

अंगज बारह बसु अनुज, पौत्र उभय लहि पास।
साह निकट लक्खन सुपहु, रमत पर्‍यो रन रास॥२८॥

जिहिं रन पोढे बिदित जग, असिय च्यारिनृप अज्ज।
अवनि लोभ गिनि रान इम, लुप्पी नन कुललज्ज॥२९॥

लक्खन को इकपुत्र लघु, अजयसिंह अति बीर।
बहुन मारि लहि छत बच्च्यो, धनी हुकम बहि धीर॥३०॥

कट्टा पुर चित्तोर करि, स्वान बिडान समेत।
चढ्यो निरंकुस साह चहि, इम गढ बिजय उपेत॥३१॥

कुछ लोग ऐसा भी कहते हैं कि चहुवान राज हमीर के पुत्र रत्नसिंह को पहले दुर्ग मे दूर तक सुरक्षित निकाल दिया था पर इसी संदर्भ में कुछ लोगों का मत है कि नहीं रत्नसिंह वहाँ से निकला नहीं था अपितु महाराणा के कुटुम्बियों के साथ ही इस युद्ध में लड़ कर वीरगति को प्राप्त हुआ। लाखों आर्यों के साथ इस युद्ध में शाही सेना के असंख्य यवनों को मौत के घाट उतार कर वह राणा गढ़लक्ष्मणसिंह स्वयं वीरशय्या पर सोया अर्थात् युद्ध में वीरता के साथ लड़ता हुआ काम आया। अपने बारह पुत्रों, आठ छोटे भाइयों और अपने दोनों पौत्रों को अपने साथ ले कर वह वीर राणा लक्ष्मणसिंह युद्धभूमि में अपनी तलवार से रण रास करता हुआ कट कर भूमि पर गिरा। यह जग विदित है कि अब तक यहाँ की रणभूमि में वीर शय्या पर चौरासी आर्य राजा सोये। उन्हीं की तरह भूमि के लोभी इस राजा लक्ष्मणसिंह ने भी अपनी कुल मर्यादा को नहीं छोड़ा और अपनी वंश परंपरा के अनुकूल वह रण भूमि में निःशेष हुआ। इस राणा लक्ष्मणसिंह का एक छोटा पुत्र अजयसिंह भी पूरी वीरता के साथ शाही सेना के विरुद्ध संग्राम में जूझा। उसने शत्रु सेना के कई योद्धाओं को मारा और युद्ध में स्वयं ने भी कई घाव खाए पर वह अपने स्वामी की आज्ञा मानने वाला धैर्यवान कुमार बच गया। शाही सेना ने इस तरह पूरे चित्तौड़ नगर को काट डाला यहाँ तक कि वहाँ उसने कुत्ते बिल्लियों को भी नहीं छोड़ा। तब जा कर कहीं वह निरंकुश बादशाह विजय के गर्व के साथ चित्तौड़गढ़ पर चढ़ा।

षट्पात्

चवत किते चित्तोर दुग्ग नृप सयन स्वप्न दिय।
अक्खिय सुनहु अधीस सोन मिच्छन बहु सिंचिय।
अज्जन लोहित अलप बह्यो मोसिर कछु बिप्लव।
होतो अद्ध हु हाइ ततो रहतो निकेत तव।
जावतो गेह मिच्छन जदपि अति सत्वर घर आवतो।
जात न रह्यो ब उत जातहों सेवक जनन सुहावतो॥३२॥

कुछ लोगों का यह भी कहना है (विशेषत: कवियों का) कि चित्तौड़गढ़ दुर्ग ने महाराणा लक्ष्मण सिंह (कदाचित इनके नाम के साथ गढ़ शब्द का संलग्न होना इसी वृत्तान्त का सूचक लगता है यथा गढ़लक्ष्मण सिंह) को स्वप्न में आकर कहा कि हे राजा! मैं कहता हूँ उसे ध्यान से सुन कि मैं अब तक यवनों अथवा विजातीय रक्त से अधिक सींचा गया हूँ। मुझ पर अब तक युद्ध में आर्यों का रक्त उतना नहीं गिरा है। यदि पूरे रक्त से अनुपात में आधा रक्त भी तुम्हारा अर्थात् आर्यों का गिरता तो मैं शर्तिया तुम्हारे अधिकार में रहता अर्थात् तुम्हारे घर रहता। यदि मैं यवनों के अधिकार में चला भी जाता तो शीघ्र ही वापस तुम लोगों के आधिपत्य में आता। अब तक चूंकि यह अनुपात नहीं सध पाया इसलिए अब मैं विजातीय अर्थात् म्लेच्छों के अधिकार में जा रहा हूँ।

रान कहिय जिम रहहु कहहु सुहि जतन कृपा गति।
कहिय दुर्ग जग कहत चमूंसन अधिक चमूंपति।
सुत भ्राता तव सकल पाइ क्रम सह नृपता पद।
मरत तोहि यह मरहिं मोहि दै रुधिरपान मद।
तुम बढहु कुणप मिच्छन तबहि रान मुदित तव घर रहों।
पोखत बिसेस सुहि होत प्रिय कछु भोजक न प्रिय कहों॥३३॥

यह सुन कर महाराणा ने पूछा कि हे दुर्ग! अब हम लोगों के क्या करने से तुम हमारे रह सकते हो? इस पर किले ने प्रत्युत्तर दिया कि यह संसार सेना से भी अधिक सेनापति की सराहना करता है अर्थात् वह सेना से सदैव अधिक महत्वपूर्ण माना जाता है। आगे तुम्हारे भाई और पुत्र क्रमश:

राजा बनेंगे ऐसा नियम है पर तुम्हारे मरते ही तुम्हारे साथ मारे जा कर ये अपना रक्त दे कर मुझे रक्तपान करवाएँगे इससे यवनों की अपेक्षा तुम्हारे मुर्दे बढ़ेंगे और यह नियम है कि जो बलिदान देते हैं वही उनमें रहते हैं। वे ही हम दुर्गों को प्रिय होते हैं और इसीलिए हम ऐसे वीरों के घर में अर्थात् उनके आधिपत्य में रहते हैं।

दोहा

जवन बली लै हैं जदपि, अैहैं तदपि इतैंहि।
यह दुर्गन गति आदितैं, जे बलि देत जितैहिं॥३४॥

हम दुर्ग यद्यपि यवनों की बलि लेंगे पर लौट कर हम फिर भी वापस तुम्हारे आधिपत्य में ही आएँगे। हम दुर्गों का सदा से ही यह नियम है कि जो पक्ष अधिक बलिदान देता है हम उसी के होते हैं अर्थात् वही हमारा विजेता होता है।

षट्पात्

सुनि दुर्गोदित स्वप्न रान प्रातहि परिखद रचि।
कहिय एह सब करहु बहुरि इक तंतु रहहु बचि।
हो सुतसुत हम्मीर पिहित मातुलगृह पोतहि।
सो सुमिरन बिनु सुद्धि हुव न मंत्रन यह होतहि।
यातैं तनूज नत्तिय अनुज संबोधिय इक जियन सब।
अखिलन बचैंन इम उच्चरि कुलज रहैं तजि तात कब॥३५॥

महाराणा लक्ष्मणसिंह ने रात्रि को देखे अपने स्वप्न में दुर्ग की कही बात को ध्यान में रख कर प्रातः उठते ही अपना राज दरबार लगाया। राज दरबार में उन्होंने अपने सामन्तों और कुटुम्बियों से कहा कि दुर्ग को रखने की यही शर्त है कि मात्र एक आध हमारे उत्तराधिकारी को छोड़ कर हम सभी अपना बलिदान दें। महाराणा के पुत्र अरिसिंह का पुत्र कुमार हम्मीर अभी बाल्यावस्था में और अपने मामा के घर था। वह इस मंत्रणा के समय राजसभा में उपस्थित किसी को याद नहीं आया इसीलिए महाराणा ने अपने छोटे भाइयों, पुत्रों आदि को संबोधित करते हुए कहा कि तुम से कोई एक बच जाए! इस पर उपस्थित महाराणा के सारे कुटुम्बियों ने प्रत्युत्तर में कि

किया कि कोई भी कुलवान पुरुष अपने पिता को छोड़ कर पीछे (जीवित) कैसे रह सकता है अर्थात् नहीं रह सकता।

निखिल निहोरत नृपहिं तनय लघु अजयसिंह तब।
किय बिन्नति कर जोरि यहहि प्रभु इष्ट ततो अब।
मैं कुपुत्र यह मन्नि स्वामि सासन चढाइ सिर।
रनसन मारत मरत कढों खिल आयु रहैं किर।
यह मन्नि खुल्लि रानहु अरर कढ्ढि असह घमसान करि।
बंगरिन हीन बीबिन बहुन बिरचि गयो दिवनारि बरि॥३६॥

महाराणा लक्ष्मणसिंह ने सभी से एक-एक कर यही कहा कि कोई एक शेष रह जाए। इस पर उनके छोटे पुत्र अजयसिंह ने तब खड़े हो कर अपने हाथ जोड़ते हुए कहा कि हे स्वामी! यदि आपका यही निर्देश हैं तो मैं कुपुत्र आपकी आज्ञा को शिरोधार्य करता हूँ। यदि युद्ध में मार काट करते हुए मेरी आयु थोड़ी भी शेष होगी तो मैं वादा करता हूँ कि निश्चय ही वहाँ से निकल आऊँगा। अपने पुत्र की यह बात सुनते ही महाराणा ने तुरन्त किले के दरवाजे खोलने का आदेश दिया और सारे के सारे वीर शाही सेना से घमासान करने के लिए बाहर आ कर शत्रुओं पर टूट पड़े। महाराणा ने पूरी वीरता के साथ लड़ते हुए कई शत्रु यवनों की स्त्रियों को वैधव्य दिया और अन्तत: वे स्वयं अप्सरा द्वारा वरण किए गए अर्थात् युद्धभूमि में काम आए।

इम कुमार अरिसिंह आदि बारह नृपअंगज।
पाइ पाइ नृपपट्ट गये लरि नाक ढाहि गंज।
उभयप्पौत्र बसु अनुज इमहि रचिरचि अति आहव।
गये त्रिदिव अरिगंजि धीर बनि समय धराधव।
हड्डु सु प्रबीर हिंगुलु बहुरि पर प्रानन पीवत पर्यो।
बल्लन समेत बीरन बहुन कलह काय तिलतिल कर्यो॥३७॥

राजा की ही तरह उसके अरिसिंह सहित बारह पुत्र बारी-बारी से राजा पद के लिए पाटवी का पद पाते हुए और युद्ध में हाथियों को गिराते हुए अन्तत: स्वर्गलोक को गए। यही नहीं महाराणा के दोनों पौत्र और आठ छोटे भाइयों ने अपनी-अपनी तरह से घमासान किया और वीरतापूर्वक शत्रु संहार करते हुए स्वर्गलोक की राह ली। उनके साथ वह हाड़ा वीर हिंगलु भी

शत्रुओं के प्राण सोखते हुए रणभूमि में नि:शेष हुआ। यही नहीं बल्लन और उसके सारे साथी पूरी बहादुरी के साथ शत्रु सेना से भिड़ते हुए कट कर टुकड़े-टुकड़े हो युद्ध क्षेत्र में बिखर गए।

दोहा

लक्खन को वह पुत्र लघु, अजयसिंह अभिधान।
बहु हनि निकस्यो आयुबल, बहु छत लहि बलवान॥३८॥

रक्खि धरम जिहिं रन रहे, इम रानां तेईस।
जवनराज लहि दुलभ जय, सजव चढ्यो गढ सीस॥३९।

हे पौत्र न केते कहत हो पिहित सु हम्मीर।
इम रानां इकबीस ही, बिदित परे रन बीर॥४०॥

मही अनल गुन चंद्र मित, जंहं बिक्रम सक जात।
कतल दुर्ग चित्तोर करि, लिय जवनेस लुभात॥४१॥

बरस तीन रन रचि बिकृति, सिंचि रान निज सोन।
गढसंटै दै असुगये, तदपि रह्यों तबतो न॥४२॥

महाराणा लक्ष्मणसिंह का छोटा कुमार जिसका नाम अजयसिंह था उसने भी युद्ध में पूरी मारकाट मचाई। अपने कई शत्रुओं को मारता हुआ स्वयं जख्मी हो कर अपने शेष आयुर्बल के सहारे रणभूमि से निकल भागा। इस तरह कुल महाराणा के तेबीस कुटुम्बी अपने क्षात्र धर्म का निर्वाह करते हुए रणभूमि में काम आए और यवनराज अलाउद्दीन दुर्लभ विजय पा कर तत्काल गढ़ पर चढ़ा। कुछ लोग कहते हैं कि पौत्र शेष था क्योंकि कुमार हमीर तो अपने ननिहाल में था। इस तरह महाराणा के इक्कीस परिवारजन युद्ध में मारे गए। एक पुत्र अजय सिंह और एक पौत्र हमीर को छोड़ कर कोई शेष जीवित नहीं रहा। विक्रमी संवत के तेरह सौ इकतीसवें वर्ष के व्यतीत होते इस युद्ध में महाराणा सहित ये सारे वीर काम आए। इस प्रकार चित्तौड़गढ़ के दुर्ग को ढहा (कत्ल) कर अर्थात् फतह कर बादशाह ने अपने आधिपत्य में लिया। तीन वर्ष तक लम्बे चले इस युद्ध में राणा ने अपने सहित तेबीस (इक्कीस) परिजनों के रक्त से इस दुर्ग की भूमि को सींचा। दुर्ग के बदले में महाराणा ने अपने प्राण दिये पर फिर भी दुर्भाग्य कि दुर्ग उनके नहीं रहा।

मनोहरम्

घायन त्रि हायन लों संतत समर मंडि,
राखि रनथंभराज सोंपन स़माह्यों नां।
साह्यो हठ बप्पबंस बिरुद बढावन कों,
रावन कों रीढा दै सिटावन कों साह्यो नां।
जात जान्यों जनन पै मन न मुरात जान्यों,
ब्रतहि निबाह्यों अपकीरति बिबाह्यो नां।
देखो रान लक्खन अलावुद्दीन अंतक कों,
अैन दैन चाह्यों पर रैंन दैन चाह्यों नां॥४३॥

रणथंभोर के राजा हम्मीर के पुत्र राजा रत्नसिंह को अपनी शरण में आने के बाद यवनेश अलाउद्दीन को सौंपना उचित नहीं समझा यद्यपि इसके लिए महाराणा को निरन्तर तीन वर्ष तक शाही सेना से लोहा लेना पड़ा। बापा रावल के वंशज महाराणा लक्ष्मणसिंह ने अपनी कीर्ति को अक्षुण्ण रखने के लिए अपने हठ में रावण को भी पीछे छोड़ने में लज्जा नहीं समझी। अपने सामने अपने वंश को समाप्त होते देखा फिर भी उस वीर ने अपने वचन से मन को नहीं मोड़ा। उसने अपने वचन को निभाया और जीवन के लिए अपयश को नहीं अपनाया। देखिये यह महाराणा लक्ष्मणसिंह भी कैसा अजीब मनुष्य था कि जिसने अलाउद्दीन रूपी यमराज को अपना पूरा घर देना स्वीकार कर लिया अर्थात् सारे परिजनों का जीवन देना स्वीकार किया पर अपने शरणागत एक रत्नसिंह को देना स्वीकार नहीं किया।

इतिश्री बंशभास्करे महामचम्पूके पूवार्यणे पञ्चम राशौ वीतिहोत्र-चण्डासि वीज्यवर्णनबीजहड्डाधिराडस्थिपाल वंश्यानुवंश्यविहितव्या-ख्यानाऽवसरव्याहार्यबुन्दीनरेन्द्रसमरसिंह समयचरित्रे वेष्टितचित्रकूटदुर्ग-म्लेच्छराडलावुद्दीन बर्षत्रय नालीयन्त्रमहारणरचन राणालक्ष्मणसिंहपट्ट-पकुमारारिसिंह हड्डुहिंगुलु क्षत्रियान्तरबह्ना ऽऽदिबहिरागतदुर्गवीरवृन्द-बहुवारसौप्तिकसमाघातयवनेन्द्रसैन्यसंहरण म्लेच्छराजप्रगुणीकृतनव्यन व्यभटवर्गविरचितमेदपाटविप्लवदुर्भिक्षप्रवर्तन श्रुतप्रजापूत्कारज्ञातरुद्धा ऽन्नादिमार्गदरितदुर्गजनहाम्मीरिरत्नसिंह प्रत्यर्पणार्थराणाविज्ञापन

प्रतिश्रुतशरणागतत्राणसुतद्वादशक सोदराष्टक पौत्रजकुटक हड्डुहिंगुलु क्षत्रि-यान्तरबल्लन समुपेत राणालक्ष्मणसिंह शूरशय्याशयन हाम्मिरिरत्नसिंह निस्सरण मरण संशयसूचन तत्सङ्ग्रामयवनेन्द्रानुगतचतुरशीति प्रमितार्य-पृथ्वीपतिप्राणप्रहाण शस्त्रशीर्णशरीरस्वायुर्बल परीक्षितप्राणनसर्वानुज-राणापुत्राऽजयसिंह निष्कसन श्वबिडाला दिसमेतप्रघातितप्राणिवर्गयवनेन्द्र-चित्रकूटदुर्गसमाक्रमण मतान्तरकथितत्रयोविंशत्ये कविंशत्य न्यतरसङ्ख्या सम्मितराणामरणप्रकारप्रबोधन यवनराडलावुद्दीन सराष्ट्र चित्रकूटदुर्ग-समादान समयसंवत्सूचनं द्वितीयों मयूखः ॥ आदितोऽष्टचत्वारिंशदुत्तर-शततमः ॥१४९ ॥

श्री वंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण की पंचम राशि में अग्निवंशी चहुवान के वंश में उत्पन्न होने वालों के कारण हड्डाधिराज अस्थिपाल के वंश और वंश की शाखाओं की कथा बनाने के समय के वचनों में बूंदी नरेन्द्र समरसिंह के चरित्र में बादशाह अलाउद्दीन का चित्तौड़ को घेर कर तीन वर्ष पर्यन्त तोपों से महायुद्ध करना, राणा लक्ष्मणसिंह के पाटवी कुमार अरिसिंह, हिंगुलु नामक हाड़ा और बल्लन नामक किसी क्षत्रिय आदि वीरों के समूह का बाहर निकल कर बहुत बार रतिवाह देकर यवनेन्द्र की सेना का संहार करना, बादशाह का गुणवान् नवीन नवीन वीरों को रखकर मेवाड़ में युद्ध और दुर्भिक्ष की स्थिति पैदा करना, प्रजा की पुकार सुन कर अन्न आदि सामग्री के मार्ग रुक जाने से डर कर गढ़ के लोगों का हम्मीर पुत्र रत्नसिंह को सौप देने की अर्ज करना, वह सुनकर शरणागत की रक्षा के अर्थ बारह पुत्र, आठ भाई, दो पोते, हिंगुलु हाड़ा और बल्लन नामक किसी क्षत्रिय सहित राणा लक्ष्मणसिंह का काम आना, हम्मीरसिंह के पुत्र रत्नसिंह के निकलने अथवा मरने के संदेह की सूचना करना, उस संग्राम में यवनेन्द्र के साथ चौरासी राजाओं के प्राणों का जाना, शस्त्रों से कटे हुए शरीर से आयुर्बल और जीवन की रक्षा करके राणा के सबसे छोटे पुत्र अजयसिंह का निकलना, कुत्ते-बिल्ली आदि सहित सभी प्राणियों को मारकर बादशाह का चित्तौड़ लेना, दूसरों के मत से कहे हुए तेईस और दूसरी संख्या से इक्कीस के प्रमाण में राणाओं के मरने का ज्ञान कराना, बादशाह अलाउद्दीन का राज्य सहित चित्तौड़ लेने के संवत् की सूचना करने का दूसरा मयूख समाप्त हुआ। और आदि से १४९ मयूख हुए।

प्रायो ब्रजदेशीय प्राकृत मिश्रित भाषा

दोहा

मंडि अमल मेवार में, चढि इम गढ चित्तोर।
साह रह्यो तंहं कति समय, जगहिं जनावत जोर॥१॥

रान सचिव जे तंहं रहे, वे बनि साह अधीन।
पानि जोरि बुल्ले पिसुन, हुव जय कछु भुवहीन॥२॥

तकि तकि हड्डुन छिद्रतम, अनुसरि कपट असेस।
रैंन बंग इत रान के, दब्बि लये बहु देस॥३॥

बलि इन लुट्टुन बाहिनी, पिल्ली ज्यानपनाह।
जब मंडनगढ़ लै सज्यो, समरसिंह हे साह॥४॥

हजरत दिल्ली जात ही, बिक्खत छिद्र बहोरि।
देस धनी के दब्बिहैं, छम दै हैं कब छोरि॥५॥

चित्तौड़गढ़ दुर्ग के फतह हो जाने के बाद मेवाड़ प्रदेश पर बादशाह अलाउद्दीन का आधिपत्य हो गया। अपने अधिकार में आए इस क्षेत्र पर यहीं रह कर कुछ दिन हुकूमत करते हुए बादशाह ने अपने बल का प्रदर्शन किया। इस समय में जो महाराणा लक्ष्मणसिंह के अमात्य एवं मंत्री थे वे सभी शाही शासन के मातहत बन गए। इन चुगलखोर सचिवों ने हाथ जोड़ कर बादशाह को अर्ज किया कि यद्यपि हमारी जीत हुई है फिर भी सारी जमीन पर हमारा अधिकार नहीं हुआ क्योंकि हमारे पड़ोसी इन हाड़ाओं ने अवसर देख कर छल-कपट से महाराणा के समय में उनसे रैन और बंग क्षेत्र को छीन लिया था। फिर जब शाही सेना इधर चित्तौड़गढ़ पर आक्रमण करने को बढ़ी तब इसे अच्छा मौका मान कर हाड़ा राजा समरसिंह ने हे बादशाह! मांडलगढ़ के दुर्ग को अपनी सेना के बल पर हड़प लिया। हे यवनेश! अब आप दिल्ली के लिए प्रस्थान कर रहे हैं। आपके जाते ही ये हाड़ा अवसर की ताक में रहेंगे। जरा सी भी असावधानी देखी कि हे मालिक! ये आपकी भूमि को हथिया लेंगे। ये हाड़ा बरजोर हैं, समर्थ हैं ये भला हमारी भूमि हड़पने से कब बाज आएँगे। ये नहीं छोड़ेंगे।

षट्पात्

सुनि पिल्लिय खिजि साह दूत बुंदिय बंबावद।
कहि पठई तुम कुमति हट्टु तजि देहु रानहद।
सु सुनि मंत्र थित समरसिंह हरराज उभै हुव।
भट मंत्रिन तंहं भनिय भूप तजि देहु रान भुव।
लखि देसकाल समुचित चलन राजनीति अनुसार रहि।
साध्यहु न पंच गुन संधिमुख गुन आश्रय इक लेहु गहि ॥६॥

अपने सचिवों द्वारा कान भरे जाने पर बादशाह अलाउद्दीन ने तुरन्त शाही दूत बूँदी और बंबावद भेजे और कहलवाया कि हाड़ाओ! तुम्हें अपनी ऐसी कुमतिपूर्ण चेष्टाओं को छोड़ देना चाहिए और तुरन्त राणा की हड़पी हुई भूमि हमें वापस कर देनी चाहिए। शाही दूतों की बात सुनते ही राजा समरसिंह और हरराज दोनों ने मिल कर मंत्रणा की कि हमें अब क्या करना चाहिए? इसी समय उनके मंत्री और सामन्तों ने राय दी कि हे राजा! हमें महाराणा की दबाई हुई भूमि को छोड़ देना चाहिए। हमें देश काल की राजनीति को समझ कर उसके अनुरूप व्यवहार करना चाहिए। हे राजा! संधि आदि पाँच गुण इस समय साध्य नहीं है इसलिए एक बचे हुए छठे गुण (आश्रय) को बरतना चाहिए।

भूप समर तंहं भनिय इक्क मंडनगढ़ अप्पन।
पै अग्रज तर पुहवि बहु सु हुव रान बडप्पन।
वह दैबों किम उचित लई नृप रैंन बंग लरि।
जो दैबो तब जाहि रहित ह्वैबो नृपता करि।
मंडन महीप पहिले समय राज्य कियउ यह दुर्ग रचि।
करि छल सु रान लिन्नों कुहक सो हम दब्बिय समय सचि ॥७॥

इस पर बूँदी के राजा समरसिंह ने कहा कि हाँ, मांडलगढ़ उन्हें वापस दिया जा सकता है कि तभी उनके बड़े भाई बंबावद के राजा हरराज ने कहा कि हमारे पूर्वजों की ली हुई भूमि को दे कर राणा के बड़प्पन का विस्तार हम क्यों करें? राजा बंग देव और रत्नसिंह ने जिसे लड़ कर जीता है उस मांडलगढ़ को वापस करना उचित नहीं क्योंकि फिर हमारी नृपता कहाँ

रहेगी? फिर मांडलगढ़ दुर्ग भी हमारे पूर्वजों का था उन्होंने वहाँ राज्य करते हुए इस दुर्ग का निर्माण करवाया था उसे महाराणा ने छल-कपट के सहारे बिना हक हमसे छीन लिया था। उसे यदि हमने समय देख कर वापस ले लिया तो इसमें क्या बुराई की बात हुई? हमारा था सो हमने लिया।

दोहा

नागपाल जब गढ गहिय, रचि बंबावद रैंन।
देस इतर तस तब द्रुतहि, दब्बे प्रतिफल दैन॥८॥
नृप बंग हु पीछे सु नय, दब्बि लये कति देस।
सुनत न्याय इम साह तो, आसेरहु दै एस॥९॥

चहुवान नरेश नागपाल ने जब इस क्षेत्र पर अधिकार कर बंबावद का गढ़ बनवाया था तभी उसने शीघ्र ही आसपास के दूसरे देशों का क्षेत्र भी हथिया लिया था। यह अर्जित की गई भूमि राजा को तभी से प्रतिफल देने लगी थी। राजा नागपाल के बाद उसके वंशज हाड़ा राजा बंगदेव ने भी अपने राज्य के प्रसार की नीति अपना कर फिर कई क्षेत्रों को दबा लिया था। ये सारी बातें कह कर उन्होंने बादशाह के दूतों से कहा कि यदि ये सारी बातें अन्याय की हैं तो हमारा निवेदन है कि बादशाह न्याय करे और आसेरगढ़ जो पहले हम चहुवानों का था उसे हमें लौटा दे।

षट्पात्

बंबावद बस बिदित रान जनपद अनेक रहि।
अग्रज को ईसत्व रंच बिगरैं न टेक रहि।
तो तो आश्रय तक्कि दुर्ग मंडन तजि दैहैं।
नतो जियन फल नांहिं देस मरनहिं भजि दैहैं।
चिर तें रहेहु मंगन चहत हाकिम साह अपुब्ब हुव।
सोंपहु हमेंहु मेवार सब चित्तोरहु चहुवान भुव॥१०॥

बंबावद राज्य के आधिपत्य के अंतर्गत महाराणा के कई जनपद रहे हैं और हैं। बूँदी के राजा समरसिंह ने कहा कि मेरे बड़े भाई की प्रभुता वाले ढाँचे पर आँच न आए। हम इसका ध्यान रखेंगे। हम बादशाह का आश्रय ताक कर मांडलगढ़ दुर्ग क्यों छोड़ दें? हम इसके लिए जीवित रहने के फल

की आशा न कर मृत्युफल की आशा रखेंगे अर्थात् अपना देश तो मर कर ही देंगे। आप तो अपूर्व बादशाह हो कर भी अपने माँगने की माँग नहीं छोड़ते। आपकी तरह यदि माँग लेने से मिल जाता हो तो यह लो हम भी आपसे माँगते हैं कि आप मेवाड़ की पूरी भूमि और चित्तौड़गढ़ का दुर्ग चहुवानों के हाथों में सौंप दें।

भट सचिवन तंहं भनिय नृपति अपनीहि निवेरहु।
यह मंडनगढ अप्पि साह सासन हित हेरहु।
व्है हरराज सहाय हाय बुंदिय जिन हारहु।
जिहिं चित्तोर अजेय पाइ किय बिजय प्रसारहु।
मन्नहु भलो न रहिबो मुररि अग्रज भीर बिचारि अब।
जवनेस जोर जानहु जबर सहज अज्ज किय जेर सब॥११॥

राजा समरसिंह की बात सुन कर उसे उसके सामन्तों और अमात्यों ने राय दी कि हे राजा! हमें तो अपनी समस्या का समाधान कराना चाहिए। इसके लिए यह मांडलगढ़ दे कर हमें बादशाह के शासन की सहायता से अपने हित को देखना चाहिए। आप इस तरह राजा हरराज के सहायक हो कर कहीं अपनी बूँदी नहीं खो दें। जिस बादशाह ने चित्तौड़गढ़ जैसे अजेय दुर्ग को जीत कर अपनी विजय प्रदर्शित की है उसको देखते हुए मान जाने में ही हमारी भलाई है। बड़े भाई के सहायक हो कर उससे विमुख होने में खतरे हैं। आप से यवनेश अलाउद्दीन का सैन्य बल कौन सा छिपा है? उसने अपने बल से सहज ही में सारे आर्य राजाओं को मातहत बना लिया है।

मंत्र सु तदपि न मन्नि भूप बिन्नति लिखि भेजिय।
हम मंडनगढ़ हान किय रु सासन प्रमान किय।
अमल तत्थ करि अप्प हमहिं सेवक गिनि तुट्ठहु।
अग्रज भुव अपनाइ रीति लुप्पि रु जिन रुट्ठहु।
रानांहु पुब्ब नृप रैंन सों लिय मंडनगढ़ पट्ट लहि।
ताकीहु अवनि तब दब्बि तिहिं राज्य कियउ सम न्याय रहि॥१२॥

अपने सामन्तों और सचिवों द्वारा दी गइ राय को नहीं मानते हुए राजा समरसिंह ने बादशाह को विनयपूर्वक पत्र लिख भेजा। हे बादशाह! चलिये

हमने मांडलगढ़ का अपना अधिकार छोड़ा और आपके निर्देश की पालना की। अब आप वहाँ अपना अधिकार कर हमें अपना मातहत मान कर हम पर तुष्टमान होइए। आप मेरे बड़े भाई द्वारा दी गई भूमि को अपनाएँ और नीति छोड़ कर रुष्ट न हों। महाराणा ने पहले रत्नसिंह से मांडलगढ़ का दुर्ग लिया था और उसकी जमीन भी दबा ली थी और उस भूमि पर उन्होंने नीतिपूर्वक राज्य भी किया।

निज जन सबन निबाह करत अप्पहु करुना करि।
हमहु कहुंक बस हुकम आयु कट्टहिं भय अनुसरि।
बुल्ले इम लिखि बार स्वीय मंडनगढ़ तैं सब।
सो रु अरज सुनि साह कहिय परभुम्मि रहैं कब।
अग्रज नृपत्व जो इष्ट तव तो गत रानप्रदेस तजि।
भूपहि रहो बन निज भुग्गि भुव सेस हमहु मंगैं न सजि॥१३॥

हे बादशाह! अपने लोगों से सभी निबाहते हैं। अत: अब आप भी करुणा विचारें। हम भी आपके हुक्म बजाते हुए आपका भय मान कर अपनी आयु के शेष दिन इतमीनान से काट लेंगे। हम आपका मांडलगढ़ आपको अभी से सौंपते हैं पर एक निवेदन के साथ कि हम भी अब पराई भूमि पर कैसे रहेंगे? मेरे बड़े भाई ने भी आपकी इच्छानुसार महाराणा के प्रदेश की भूमि पर अपने अधिकार को छोड़ दिया है। अब आपसे निवेदन है कि हम लोग राजा बने रहें और अपनी भूमि को भोगते रहें बस, इससे अधिक हमें कुछ नहीं चाहिए। हाँ, हम वादा करते हैं कि भविष्य में हम हमारी भूमि से अतिरिक्त भूमि लेने के लिए कहीं युद्ध नहीं करेंगे।

दोहा

मंडनगढ़ किन्नों अमल, जंपि यह रु जवनेस।
सेना पुनि हरराज सिर, पिल्लिय तास प्रदेस॥१४॥

मंडनगढ़ दिन्नों समुझि, चविय साह मन मांहिं।
हरराज हु दैहैं दरित, जुज्झन क्यों हम जांहिं॥१५॥

यह बिचारि करि दल अधिप, निजभटरुस्तुम नाम।
सेना वह हरराज सिर, पिल्ली बिजय प्रकाम॥१६॥

दिल्ली जावन अप्प दिग, बिजई उचित बिचारि।
चित्रकूटगढ़ त्रान चहि, किय प्रबंध हितकारि॥१७॥

मांडलगढ़ पर अपना आधिपत्य जमा कर यवनेश ने कहा कि अब हमें राजा हरराज के राज्य पर सेना भेजनी चाहिए और उसका प्रदेश हड़प लेना चाहिए। बादशाह ने मन ही मन सोचा कि मांडलगढ़ तो उन्होंने सीधी मति से दे ही दिया है। हरराज अब इसी तरह डर कर अपने प्रदेश को छोड़ देगा। वहाँ मेरे जाने की क्या जरूरत है? यह विचार कर बादशाह अलाउद्दीन ने अपने रुस्तम नामक सामन्त को बुलवाया और कहा कि तुम तुरन्त अपनी सेना को सज्जित कर राजा हरराज पर विजय प्राप्त करने के लिए आक्रमण करो। यह आदेश दे कर बादशाह ने दिल्ली की ओर दिग्विजय करने की इच्छा से प्रयाण किया। इससे पहले उसने चित्तौड़गढ़ की रक्षा के लिए उचित प्रबन्ध कर अपने आदमियों को सेना के एक दल के साथ तैनात किया।

अहमदखान पठान अरु, प्रथित अज्ज प्रामार।
स्वर्णगिरे चहुवान सह, रक्खे गढ रखवार॥१८॥

करि प्रसाद तिन प्रति कहिय, तुम हत्थन चित्तोर।
मेवारहिं रक्खहु मुदित, जिततित दब्बहु जोर॥१९॥

इन बस करि चित्तोर इम, बंबावद बल पिल्लि।
पत्तो दिल्लय साह पुनि, क्रमत अज्ज अहि किल्लि॥२०॥

साह कटक हरराज सिर, लै रुस्तुम बहलीम।
प्रस्थित सुनि बुंदियपतिहु, सत्वर पत्तो सीम॥२१॥

हरराज हु अनुज हिं कहिय, हमरी होहि सु होहि।
अप्प लाल बुंदिय अधिप, सत्थ न खोवहु सोहि॥२२॥

इस कार्य के लिए बादशाह ने अपने विश्वासपात्र पठान अहमदखान के साथ प्रसिद्ध अर्जुन परमार को रखा। इन दोनों के साथ सारे सोनगिरा चहुवानों को उनकी सहायता और दुर्ग की रक्षा के लिए तैनात किया फिर उनसे कहा कि चित्तौड़गढ़ को सकुशल (सुरक्षित) रखना। इस पर कोई जबरन जोर जमाने का प्रयत्न करे तो उनका दमन करना। मैं अब चित्तौड़गढ़ को अमानत की तरह तुम्हारे हाथों में सौंपता हूँ। इस प्रकार का उचित प्रबन्ध

चित्तौड़गढ़ के लिए कर बादशाह ने अपनी सेना बंबावद पर भेजी। आर्य रूपी सर्प को इस तरह कीलित कर बादशाह अलाउद्दीन वापस दिल्ली पहुँचा। शाही कटक ले कर बंबावद पर आक्रमण करने के लिए जब रुस्तम और बहलीम खान रवाना हुए तो यह समाचार सुन कर बूँदी पति हाड़ा राजा समरसिंह भी तुरन्त अपनी सेना के साथ अपने राज्य की सीमा पर रवाना हुआ। यह देख कर बंबावद के राजा हरराज ने अपने छोटे भाई से कहा कि हमारी तो जो दशा होगी वह देखी जाएगी पर मेरे प्रिय भाई! तुम हमारे साथ क्यों बूँदी का आधिपत्य खोने को तत्पर हो रहे हों ? तुम अपने राज्य को दाँव पर मत लगाओ।

षट्पात्

सिव हरि चंडिय सोंह अप्प सह जनक सोंह अति।
रुठ्ठि दियउ हरराज तुठ्ठि मरनहिं गिनैन तति।
पानि जोरि पय प्रनमि हानि निश्चित कहि हड्डुन।
कहिय मरहु गहि कलह अप्प सानुज असि अड्डुन।
जीवत दु घांहिं प्रभुता रु जस धोइ स्वसहिं धमनीं धमत।
प्रसभहि गह्यो सु जवनेस प्रभु सो न जतन पुब्बहु समत॥२३॥

यह सुन कर समरसिंह ने कहा कि मैं महादेव, विष्णु भगवान, देवी चामुंडा की शपथ उठा कर और साथ ही आप सहित, पिता की शपथ उठा कर कहता हूँ कि मैं यह जानता हूँ कि हरराज पर क्रोध कर कोई कुछ नहीं ले सकता क्योंकि वह तुष्ट हो कर सहज ही अपने प्राण देने में विलम्ब नहीं करता। समरसिंह ने हाथ जोड़ कर अपने बड़े भाई के चरणों में प्रणाम करते हुए आगे कहा कि इसमें हाड़ाओं की हानि होना निश्चित है पर आपका यह छोटा भाई तलवार उठाकर युद्ध में घमासान करते हुए मरेगा क्योंकि जीवित रह जाने की दशा में जब तक प्रभुता और कीर्ति रूपी दोनों जीवसाक्षिणी नाड़ियाँ चलती हैं तब तक लुहार की धौंकनी के समान श्वास लेते हुए सूखना पड़ेगा। यह जो उस बादशाह ने हठपूर्वक निर्णय लिया है वह हे स्वामी! बिना यत्न किए नहीं मिटने वाला है।

समरसिंह इम अक्खि जिट्ठ नासीर भयउ जब।
निश्चित मरन निहारि तुमुल हरराज रचिय तब।
पुर मंडन ढिग परत खान रुस्तुम उद्धत खल।
इन सौप्तिक दिय असह बहुल बड्डिय मिच्छन बल।
कलविंक निकर बिच डैल क्रम प्रबल जाइ निधरक परिय।
पिक्खहु महीप अग्रज प्रथम कलि अपुब्ब समर सु करिय॥२४॥

इतना कह कर हाड़ा समरसिंह ने जब ज्येष्ठ माह के सूर्य का रूप लिया तो यह देख कर कि मरना अब निश्चित है राजा हरराज ने भी भीषण संग्राम रचा। मांडलगढ़ की ओर दुष्ट रुस्तम खां को गर्व से बढ़ते देख रात्रि धावा कर म्लेच्छों की बड़ी सेना पर समरसिंह बेधड़क हो कर इस प्रकार टूट पड़ा जिस तरह चिड़ियों के समूह पर फेंका हुआ ढेला जा गिरता है। इस तरह बड़े भाई बंबावद के राजा ने देखा कि समरसिंह ने निडर हो कर किस प्रकार का अपूर्व युद्ध किया।

रुस्तुमखान सु रत्ति आत दल हड्ड अचानक।
बचि जिमतिम टरि बिकल तरजि खिलभट रनतानक।
मुरि सम्मुह पयमंडि धप्पि बुट्टिय धाराधर।
भ्राता दुहुन सु भिंटि कियउ निज बल काराधर।
भजि पुनि कितेहि अंत्यज सुभट सुनि रुस्तुम पकरयो सजव।
एकत्थ मिलि रु जुज्झिय असह दहन हड्ड बन घोर दव॥२५॥

रुस्तम खान को दल-बल सहित अपनी तरफ बढ़ते देख कर रात्रि के समय अचानक हाड़ाओं के दल ने धावा बोला। स्वयं को जैसे तैसे बचा कर इस दल के युद्ध फैलाने वाले सारे हाड़ा योद्धाओं ने कुपित हो कर यवन सेना के सम्मुख अपने पैर जमा कर मोर्चा लिया और तलवारों के प्रहारों की घनघोर वृष्टि की। दोनों भाइयों ने पूरी वीरतापूर्वक भिड़ंत कर अपने साहस के बल पर रुस्तम खान को बंदी बना कर कैद कर लिया अर्थात बंदी बना लिया। अपने सेनानायक के इस तरह पकड़े जाने की खबर सुनते ही एक बार तो यवन सेना के सिपाही भाग खड़े हुए पर थोड़ी देर बाद वापस एकत्रित हो कर सारे यवन सेना के योद्धा, हाड़ाओं रूपी वन को जला कर भस्म करने हेतु असह अग्नि की तरह भभके।

कवच दारि असि कढत तंति सब्बन गति तिच्छन।
मारत अज्जन मिच्छ मींडि अज्ज हु तिम मिच्छन।
गजन सुंडि कटि गिरत खंध बाजिन बपु खुल्लत।
फुल्लत घातन फांक हक्कि ब्रातन भट हुल्लत।
गातन दु ओर तृन मित गिनत मात न बीर उफान मन।
लज्ज रु सनेह भ्रातन लखहु रंच भुलात न कुलहि रन॥२६॥

दोनों दलों की ओर से चलती तीखी तलवारें अपने शत्रुओं के कवचों को काट कर यों निकलने लगीं जैसे साबुन को काट कर तांत अथवा धागा निकलता है। म्लेच्छ आर्यों को काटने लगे और आर्य अपने प्रहारों से यवनों को मसल कर मारने लगे। हाथियों की सूंडें कट कर घोड़ों के कंधों पर गिर-गिर कर उनकी शोभा बढ़ाने लगीं। वीर योद्धाओं के घाव लगने से शरीर पर पड़ी फांकें फूल कर रक्त उगलने लगीं पर फिर भी वीरों के दल ललकारते हुए आगे ही आगे बढ़ने लगे। दोनों ओर के वीर अपने शरीर को तृणवत् गिनने लगे और वीर रस का उफान उनके मन में नहीं समाने जितना बढ़ गया। बूँदी और बंबावद के दोनों राजा भाइयों के स्नेह और लज्जा को देखो कि वे युद्ध में अपने कुल की रीति को तनिक भी विस्मृत नहीं करते हैं।

दोहा

भान न इत उत को भयो, समय रत्ति संग्राम।
मांहिं मांहिं कटि बहु मरत, इत उत जुरि उद्दाम॥२७॥

रात्रि का समय होने के कारण दोनों पक्षों के वीरों को अपने पराए का थोड़ा-सा भी भान नहीं रहा इस कारण आपस में ही कई लड़ते हुए कट गए। इस उद्दाम युद्ध में इधर और उधर वाले दोनों पक्षों के कई वीर मारे गए।

षट्पात्

रुस्तुम कों सुनि रुद्ध भीत आलोचि साह भय।
सहंस बीस दल समिटि जवन मुररे मंडत जय।
उदित इते बिच अक्क पार निज चक्क प्रकासन।
कलि पिक्खन बलि कुतुक बिघ्नतम निघ्न बिनासन।
गन घूक चकित डरि दुरिगये भये प्रफुल्लित कोक भट।
मुख कंज बिकसि जुग्गिनि मिलिग बीर करत हुव बीरबट॥२८॥

अपने दल नायक रुस्तम खान के बंदी बनाए जाने की खबर सुनते ही शाही दल में अपने बादशाह के नाराज होने का भय व्याप्त हो गया। डरते हुए (कि वापस जाने पर बादशाह द्वारा दी जाने वाली मौत से डर कर) बीस हजार की संख्या वाला शाही दल विजय हासिल करने को मुड़ा। इसी बीच पराई और अपनी सेना को प्रकाशित करने वाला सूर्य उदय हुआ। अंधकार रूपी बड़े विघ्न का विनाश करने और युद्ध देखने का उत्सुक सूर्य चमकता हुआ निकला जिससे उल्लू आदि प्रकाश से डरने वाले जीव छिप गए पर चकवा पक्षी और वीर योद्धा सूर्य के प्रकाश को देख कर प्रफुल्लित हुए। वीरों के मुख और कमल विकसित हुए। योगिनियाँ और बावन भैरव वीर मिल कर वीरों के लिए वीरता वाला मार्ग प्रशस्त करने लगे।

जंहं उद्दत इक जवन द्विरद आरूढ आइ द्रुत।
हनिय भूप हरराज अंग सर पर सर अद्भुत।
गज हुं जाइ नृप गहिय हड्डु हनि तस आरोहक।
कुंजर सुंडिय कट्टि मोरि दिन्नों परमोहक।
तस दंतघात घुम्मत तुमुल होत उदित छ घटिय मिहिर।
इक मिच्छ कियउ दै असि अलग सय समेत हरराज सिर॥२९॥

इसी समय एक उद्धत यवन हाथी पर आरूढ़ हो कर द्रुत गति से बढ़ा और उसने राजा हरराज के शरीर पर अद्भुत गति से तीर पर तीर चला कर उसे घायल कर दिया। इसी अवस्था में हाड़ा राजा ने खीझ कर हाथी को पकड़ लिया और उस पर सवार को मार गिराया फिर हाथी की सूंड को अपनी तलवार के प्रहार से, शत्रुओं को मूर्छा प्रदान करने वाले, राजा हरराज ने काट गिराया। इसी हाथी ने अपने दांतों के प्रहार से युद्धभूमि में राजा को चक्कर खिला दिए। सूर्योदय की छह घड़ी बाद एक यवन वीर ने अपनी तलवार के जोरदार प्रहार से राजा हरराज का हाथ सहित सिर धड़ से काट कर अलग कर दिया।

रारि गिरत हरराज लज्जि यह अनिय लरक्किय।
जिम मिच्छहु अति जोर सोर घन अग्ग सरक्किय।
रुस्तुम तिन वह रुद्ध लरत मरत हु छुराइ लिय।
इतरहु खट नृप अनुज हत्थ मुख मारि हाइ लिय।

नृप समरसिंह दूजी अनिय हेति अनल अरि करत हुत।
दल सेस संग तस हुव दरित जपि नृप हत छ अनुजन जुत॥३०॥

अपने स्वामी का सिर कट कर गिरते ही राजा हरराज की सेना डर कर भाग खड़ी हुई। इसे देख कर यवन सेना जोश में आ कर और अधिक भड़की जैसे आग लगने पर बारूद। उसने मरते मारते लड़ भिड़ कर अपने दल नायक रुस्तमखान को छुड़ा लिया। और राजा के छह भाइयों को जिनमें हत्थ आदि थे मार गिराया। इसी समय राजा समरसिंह जो दूसरी सेना का सेनापति था अपने शस्त्र रूपी अग्नि में शत्रुओं को होमते हुए आगे आया। इसी समय शेष अर्थात् दूसरी सेना ने डर कर उसके साथ होते हुए राजा समरसिंह को सूचना दी कि छह भाइयों सहित राजा हरराज मारे गए हैं।

एहु अनिय दुव अरिन इक्क बनि तब जय आसय।
सैन्यप रुस्तुम सहित गग्जि गरदाइ पास गय।
नृप समर हु निज नियति आयु पूरन तब अहरि।
अब्बन बीच उठाइ कतल किय खल अचिज्ज करि।
रुस्तुम समेत हनि दै रसिक पलचारन लोहित पलल।
समरेस पत्त बीरन सुगति बीर न भुल्लिय बिरुद बल॥३१॥

इसके बाद दोनों भाइयों की सेना विजय प्राप्त करने की इच्छा से एक हो गई। इसी समय राजा समरसिंह ने इस संयुक्त दल के साथ आगे बढ़ कर रुस्तम खान को घेर लिया और राजा समरसिंह ने मृत्यु को ही अपनी नियति समझ कर अपने घोड़े को बढ़ा कर आश्चर्यजनक कार्य करते हुए रुस्तमखान को उसके रक्षकों सहित मार गिराया। उस रणरसिक ने अपने शत्रु को काट कर मांसभक्षी जीवों को रुधिर और मांस उपलब्ध कराया। यह कृत्य संपन्न कर वह वीर समरसिंह वीरगति को प्राप्त हुआ पर वह वीर अन्त समय तक अपने यश और बल को नहीं भूला।

दोहा

सुत्तो जिम रन भुव समर, रीति वहहु नृप राम।
सुनहु पारि रुस्तुम सहित, किय अपुब्ब जिहिं काम॥३२॥

हे राजा रामसिंह! उस वीर हाड़ा समरसिंह ने रणभूमि में सदा के लिए सोने से पहले एक अपूर्व काम किया कि उसने मरने से पहले यवन सेनापति

रुस्तमखान को काट गिराया।

षट्पात्

रारि गिरत हरराज अनुज खट सहित अचानक।
इतके सेस अनीक नृपहि पिक्ख्यो बल तानक।
समरसिंह जंहं सज्ज प्रधन मंडत बुंदियपति।
इक्क सु लखि अवलंब गये तंहं कहि अग्रजगति।
मिच्छन अनीहु दुव इक्क मिलि सस्त्र बरसि रुस्तुम सहित।
हक्कारि नृपहिं ढिग आत हुव जय जुज्झन उद्दत अहित॥३३॥

युद्ध में अपने छह भाइयों सहित राजा हरराज भी युद्ध में अचानक कट कर गिरा इसे जब उसकी युद्ध फैलाने वाली सेना ने देखा तो वह किंकर्तव्य विमूढ़ हो गई पर तुरन्त ही उसने जब बूँदी के स्वामी हाड़ा राजा समरसिंह को पूरी वीरता के साथ लड़ते हुए देखा जो अब युद्ध को एक आधार मान कर शेष सेना के साथ अपने बड़े भाई की तरह लड़ने में संलग्न हो गया था। दोनों राजाओं की सेना एक हो गई और रुस्तम खान सहित शत्रु सेना पर शस्त्र चलाने लगी। हाड़ा राजाओं की सेना ने जब समरसिंह को ललकार कर युद्ध करते हुए देखा तो पूरी सेना जयघोष करती हुई फिर से नये जोश के साथ शत्रु सेना से भिड़ने लगी।

सोलंखिय नृप सुभट करन संकर अभिधा करि।
इन दोउन बढि अग्ग लियउ बहलीम निकट लरि।
इक के असि आयात टोप कट्टिय अति अद्भुत।
अपर तोत्र लगि असह सत्रु कछु भिदिय बक्र जुत।
रोसन रहीम जंहं जवन जुग रुस्तुमखान सहाय रचि।
दल मथत मारि चालुक दु हुंन बढिय अग्ग बल आयु बचि॥३४॥

दो वीर सोलंकी योद्धा करण और शंकर ने आगे बढ़ कर बहलीम खान को जा घेरा। इनमें से एक की तलवार के प्रहार से शत्रु यवन का शिरस्त्राण कट गया कि तभी दूसरे ने अपना भाला पूरे जोर से शत्रु पर चलाया जो बहलीमखान के शरीर के पार हो गया। इसके बाद वे आगे बढ़े जहाँ रोशनखान और रहीमखान जैसे यवन योद्धा नजर आए जो रुस्तम खान की

सहायता करने में लगे थे। अपनी सेना का मंथन करते देख दोनों चालुक्यों ने उन्हें काट डाला फिर अपने बल और शेष आयु के सहारे वे आगे जा कर युद्ध करने लगे।

भूप सुभट भगवंतसिंह भट्टिय अग्रेसर।
द्वै जवनन जुग हनि रु तक्कि रुस्तुम ढिग सत्वर।
इक्क खानआकबत नाम मिच्छहिं हनि निर्भय।
कुंजर तास जकाइ गज्जि तोमर भ्रमात गय।
बारन बढाइ रुस्तुम तबहि कलह रुप्पि अद्भुत करिय।
कट्टिय हरोल अरु सर निकर भट्टिय कनपट्टिय भरिय॥३५॥

इधर भाटी योद्धा राजा भगवंतसिंह अग्रिम पंक्ति में लड़ते हुए आगे बढ़ा। वहाँ उसने दो यवनों को मौत के घाट उतार कर तुरन्त रुस्तमखान को जा लिया। वहाँ उसने एक म्लेच्छ वीर आकबत खान को निर्भय हो कर मारा फिर उसके हाथी को ढहा कर अपना भाला घुमाता हुआ वह आगे बढ़ा ही था कि सामने रुस्तमखान से भिड़ंत हुई। रुस्तमखान ने वहाँ अपना घोड़ा बढ़ा कर अद्‌भुत वीरता के साथ वार करते हुए अपना युद्ध कौशल दिखाया। उसने हरावल को (अग्रिम पंक्ति) भेदते हुए अपने बाणों के समूह से भाटी भगवंतसिंह की कनपटी को बेध डाला अर्थात् वीर भाटी की पूरी कनपटी को अपने तीरों से भर दिया।

भट्टिय परतहि भूप तरल डपटाइ तुरंगम।
तकि रुस्तुम उर तोत्र दियउ कढि पार गयउ दम।
तिमहनि हैदर कुतब खुरम फीरोज बहादुर।
पीवत जवनन प्रान धरिय नृप समर समरधुर।
इक मिच्छ नाम मोमिन उहां दपटि खग्ग आघात दिय।
सिर सिवहिं अप्पि बुंदिय सुपहु लग्गत जिहिं सुरलोक लिय॥३६॥

भाटी वीर को इस तरह मर कर रणभूमि में गिरते देख राजा समरसिंह ने अपने घोड़े को पूरी चपलता से बढ़ाया और रुस्तमखान के हृदय स्थल पर निशाना ताक कर पूरी ताकत से अपना भाला मारा। भाला उसके शरीर से आरपार हो गया और तत्काल रुस्तमखान के प्राण पखेरू उड़ गए। यवन दलनायक को इस तरह मार कर राजा समरसिंह ने हैदर, कुतुब, खुर्रम,

फीरोज और बहादुरखान जैसे यवन योद्धाओं के प्राणों का हरण कर युद्ध का धुरा धारण किया अर्थात् प्रमुख योद्धा बन कर पूरे युद्ध का भार अपने कंधों पर लिया। तभी एक म्लेच्छ मोमिन खान ने दौड़ कर अपनी तलवार का एक भरपूर प्रहार समरसिंह पर किया जिससे उस वीर समरसिंह ने अपना मस्तक महादेव को सौंप दिया और इस प्रकार बूँदी का राजा स्वर्गलोक की राह पकड़ कर परलोक गया।

काका सिंहन केर तनय घुग्घुल प्रबीर तंहं।
नृपमारक लखि निकट कट्टि द्वै किय मोमिन कंहं।
मीरन सम्मन खुरम आदि बानैत बीस अरि।
संहरि घुग्घुल सह बसिय सुरपुर अच्छरि बरि।
बारह हजार डरि मिच्छ बल दुव भ्रातन परि अयुत दल।
भजि खिल अनीक आवत भये बंबावद बुंदिय बिकल॥३७॥

हाड़ा राजा समरसिंह को मारते देख उसके चाचा सिंहन के वीर पुत्र घुग्घुल ने अपना घोड़ा बढ़ाया और तुरन्त ही नृपहन्ता मोमिनखान के पास जा कर अपनी तलवार से उसको दो भागों में बराबर बाँट दिया। इसके बाद मीर, सम्मन और खुर्रम खान आदि बीस शत्रु योद्धाओं का संहार कर उस वीर घुग्घुल ने स्वर्गलोक की अप्सरा को जा वरा अर्थात् मारा गया। दोनों हाड़ा राजाओं के युद्ध में काम आ जाने के बाद यवन सेना के बारह हजार की संख्या वाले दल से डर कर हाड़ा सेना के दस हजार सिपाही वहाँ से भाग छूटे और उन्होंने व्याकुल हो कर अन्ततः बंबावद और बूँदी का मार्ग लिया।

दोहा

ताही रन मुक्कल तनय, काका मोहन केर।
अट्ठ जवन हनि उब्बरयो, बहि अट्ठ हि छत बेर॥३८॥
सम निज राज्यहिं दै सलिल, निरखहु राम नरेस।
अग्रज भार बटाइ इम, समर परयो समरेस॥३९॥

इसी युद्ध में राजा समरसिंह के काका मोहनसिंह के पुत्र मोकल ने बड़ी बहादुरी के साथ लड़ते हुए आठ यवन योद्धाओं को मार गिराया और स्वयं अपनी देह पर आठ बड़े घाव खा कर बच गया। हे राजा रामसिंह! आप देखें कि अपने बड़े भाई का भार बँटाते हुए बंबावद के बराबर वाले अपने

राज्य बूँदी को जलांजलि दे अर्थात् गँवा कर वह वीर राजा समरसिंह समर भूमि में निःशेष हुआ।

ही सब ठाम समान यह, राजन घर कुल रीति।
सोहि मिटत आये सरकि, जवन अंधर्मिन जीति ॥४० ॥

तदपि रही चित्तोर अरु, बुंदिय पुर यह बात।
औरनतें बढिकैं अधिक, जग जस अबहु न जात ॥४१ ॥

हे राजा रामसिंह! वैसे तो यह सारे राजघरानों के कुल की रीति रही है और वह भी समान रूप से कि युद्ध से पलायन और समर्पण नहीं किया जाए पर अपनी इस कुल मर्यादा का लोप कर अन्य राजा पीछे सरक आए इसलिए विधर्मी यवनों की हर जगह जीत हुई। यद्यपि चित्तौड़गढ़ और बूँदी पुर ने अपना अलग उदाहरण पेश किया अर्थात् उन्होंने अपनी कुल मर्यादा को निभाते हुए युद्ध से विमुख हो कर पलायन नहीं किया। दूसरे राजकुलों से बढ़ कर होने के कारण इन दोनों कुलों का यश संसार में फैला और अब तक विद्यमान है।

षट्पात्

इम बंबावद अत्थ भ्रात नव परिग जात भुव।
हड्डुननृप हरराज हत्थ पुनि अनुज सत्थ हुव।
बहुरि भोज तिम बग्ध बाल चाहड़ उद्धत बल।
समरसिंह बुंदीस सहित गोबिंद खंडि खल।
नृप देव तनय ए अट्ठ अरु सिंहन सुत घुग्घुल सहित।
नव भ्रात परिग करि जस नियत इम आहव संहरि अहित ॥४२ ॥

इस तरह बंबावद के युद्ध में राजा सहित नौ भाई काम आए। हाड़ा राजा हरराज और उससे छोटा भाई हत्थ मारे गए। इनके अतिरिक्त भोज, बाघ, बाल और चाहड़ चारों भाई वीर योद्धाओं की तरह लड़ कर वीरगति को प्राप्त हुए। बूंदी के राजा समरसिंह और उसके छोटे भाई गोविन्द को भी दुष्टों ने मार गिराया। इस तरह राजा देवसिंह के आठ पुत्र और उनके भाई सिंहन का बेटा घुग्घुल ये सभी नौ भाई अपने शत्रुओं से युद्ध में वीरता के साथ टक्कर लेते हुए रणभूमि में गिरे। उन्होंने इस तरह युद्ध में मर कर

निश्चय ही कीर्ति पाई।

दोहा

बल खिल मिच्छन लहि बिजय, जिततित अमल जमाइ।
रान मुलक जो दबि रह्यो, अखिल लयो अपनाइ॥४३॥
अवसर लखि इतरहु अरिन, दब्बे निज निज देस।
पहु हल्लुव बस परगनां, उब्बरि खट अवसेस॥४४॥

शेष रही शाही सेना ने विजय प्राप्त की और यहाँ-वहाँ अपना अधिकार जमाया। इस प्रकार महाराणा का जितना भी क्षेत्र हाड़ाओं ने दबाया था उसे आजाद करवा कर म्लेच्छों ने पूरा अपने अधिकार में लिया। हाड़ाओं को कमजोर देख कर उनके दूसरे शत्रुओं ने भी अपनी-अपनी भूमि वापस हथिया ली। इस तरह राजा हल्लुव के अधिकार में शेष तो मात्र छह परगने रहे।

षट्पात्

बंबावदगढ बिदित बहुरि बेगम बिंझोलिय।
भैंसरोर रैंनगढ सहित पत्तन सिंघोलिय।
इन प्रभुता लहि अधिप बन्यों हल्लुव बंबावद।
बय लहि तेरह बरस हड्डु रक्खनि स्वधर्म हद।
हुव सज्ज तदपि मिच्छन हनन बहु परिकर रक्ख्यो बरजि।
नृपराम लखहु कुलरीति निज लरत मरत रहत न लरजि॥४५॥

राजा हल्लुव के आधिपत्य वाले परगनों में बंबावद गढ़, बेगम, बिंझोलि, भैंसरोड़, रैनगढ़ और सिंघोली ये छह थे। इन क्षेत्रों की प्रभुता ले कर हल्लुव बंबावद का राजा बना। हाड़ाओं के कुल धर्म की रक्षा करने वाले इस राजा की उम्र इस समय मात्र तेरह वर्ष की थी। राजा हल्लुव ने तब भी म्लेच्छों को मारने के लिए अपनी सेना सज्जित की पर उसके परिजनों ने बहुत समझा कर उसे ऐसा करने से रोका। हे राजा रामसिंह! आप अपने कुल की इस रीति को देखें कि इसकी मर्यादा की रक्षा करने को आपके स्वजन हमेशा लड़ते और मरते ही रहे हैं।

दोहा

समरसिंह नृप जनम सक, त्रि नव अर्क मित तत्थ।
बुंदिय हायन सप्त बय, पाई संगर पत्थ॥४६॥

रवि गुन भू मित सक रच्यो, निखिल किरातन नास।
किन्नों ख नयन त्रि ससि क्रम, बुंदी बिस्तर बास॥४७॥

सकरस दृगगुन ससि समय, पिक्खि उचित बय भूप।
पुत्रन हित बंटिय पुहवि, रचि बिभाग अनुरूप॥४८॥

मुनि दृग गुन ससि सक प्रमिति, जंहं मंडनगढ जित्ति।
गंजि लयो चिरतें गयो, करि उदार जग कित्ति॥४९॥

जैत्रसिंह समरेस सुत, या ही समय अधीन।
कौटिक भिल्ल बिनास करि, कोटा नवपुर कीन॥५०॥

हे राजा रामसिंह! राजा समरसिंह का जन्म विक्रमी संवत् के वर्ष बारह सौ तिरानवे में हुआ। युद्ध मार्ग के रसिक इस राजा ने मात्र सात वर्ष की उम्र में बूँदी को प्राप्त किया। विक्रमी संवत् के वर्ष तेरह सौ बारह में समरसिंह ने उपद्रवी भीलों का नाश किया और विक्रमी संवत् के वर्ष तेरह सौ बीस में अपनी राजधानी बूँदी नगर को सुव्यवस्थित विस्तार दे कर इसे बसाया। विक्रमी संवत् तेरह सौ छब्बीस के वर्ष में अपने पुत्रों को वयस्क जान कर राजा समरसिंह ने अपनी भूमि को उनमें बाँटा और अपनी राज्य व्यवस्था को सुदृढ़ बनाने के लिए अलग-अलग विभागों की रचना की। विक्रमी संवत् के वर्ष तेरह सौ सत्ताईस में मांडलगढ़ को फतह किया। पूर्व में अपने अधीन रहे इस दुर्ग को बीच में चित्तौड़गढ़ के महाराणा ने ले लिया था उसे वापस अपने अधिकार में लें कर राजा समरसिंह ने अपनी कीर्ति को संसार में प्रसारित किया। इसी समय में राजा समरसिंह के पुत्र कुमार जैत्र सिंह ने कोट्या नामक भील को मार कर उसी के गाँव की जगह पर नया कोटा नगर बसाया।

लयो मुहूरत इष्ट लखि, तिथि माधव सित तीज।
कोटा बसन प्रवृत्ति किय, बड्ढि किरातन बीज॥५१॥

रचि हरराज सहाय रन, संहरि जवन असेस।
सक रद गुन ससि सुक्र सित, स्वर्ग गयउ समरेस॥५२॥

समरसिंह रन मृत सुनत, सजि बिचित्र शृंगार।
तीन हि रानिन सत्थ तब, छिप्र कियु बपु छार॥५३॥

पहिली दूजी पंचमी, इम हरराज उपेत।
काय तीन रानिन कियउ, हुत पावक पति हेत॥५४॥

हत्थादिक घुग्घुल सहित, सत्त हि बंधुन संग।
जाया पुनि निज निज जरी, इक इक प्रेम उमंग॥५५॥
बरस दोय जुतबीस बय, इत लहि नियति अधीन।
नरपाल सु बुंदिय नृपति, हुव नृपतागुन हीन॥५६॥

पंडितों से कुमार जैत्रसिंह ने अच्छा मुहूर्त निकलवा कर इसी वर्ष के माह के वैशाख माह के शुक्ल पक्ष की तृतीया के दिन कोटा नगर को बसाना आरंभ किया। और भीलों को जड़ सहित उखाड़ फेंका। राजा समरसिंह ने अपने बड़े भाई की सहायता करने के लिए बंबावद के राजा हरराज के पक्ष में युद्ध लड़ा। इस भीषण युद्ध में यवनों का संहार करते हुए विक्रमी संवत् के वर्ष तरह सौ बत्तीस के ज्येष्ठ माह के शुक्ल पक्ष में स्वर्गारोहण किया। बूँदी के हाड़ा राजा समरसिंह के इस तरह बंबावद के युद्ध में मरने की खबर सुन कर उसकी तीनों रानियों ने विचित्र (तरह-तरह से) श्रृंगार किया और अपने पति के साथ सहगमन करने को शीघ्र ही अपने शरीर को अग्नि में भस्म किया। इसी प्रकार मृत राजा हरराज के साथ उसकी पहली, दूसरी और पाँचवी इन तीन रानियों ने अपनी-अपनी देह को अग्नि में होम दिया। युद्ध में वीरगति को प्राप्त हत्थ सहित राजा के छह भाइयों और एक चचेरे भाई घुग्घुल के साथ उनकी स्त्रियाँ भी पतिप्रेम की उमंग में अपने-अपने पति के साथ सती हुई। राजा समरसिंह की मृत्यु के बाद अपनी बाईस वर्ष की उम्र में बूँदी के राजसिंहासन पर नरपाल बैठा। भाग्य बल से प्राप्त नृपता के बावजूद वह नरपाल राजा के गुणों से रहित था।

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे पंचम राशौ वीतिहोत्र-चण्डासि बीज्यवर्णनवीजहड्डाधिराडस्थिपाल वंश्यानुवंश्यविहित-व्याख्यानाऽवसरव्याहार्यबम्बावदेश बुन्दीश हरराज समरसिंह भ्रातृयुग चरित्रे समाराधितयवनेन्द्रराणासचिववर्गबुन्दी बम्बावद पैशून्यप्रवर्त्तन यवनेन्द्रानुमतत्यक्तमण्डनदुर्गनरेन्द्रसमरसिंह स्वाग्रजहरराज सहायस्वीकरण मण्डनदुर्गन्यस्तस्वरक्षकयवनेन्द्रहरराजा ऽऽधीनराणादेशप्रत्याक्रमणा-र्थरुस्तुम दण्डनायकपृतनाप्रेषण यवनाहमद क्षत्रियप्रामारान्तर चाहुवाण-सौवर्णगिर वशीकृतचित्रकूटदुर्गयवनेन्द्रदिल्लीगमन श्रुतज्येष्ठभ्रातृदेशो-जिहीर्षुबहलीमम्लेच्छरुस्तुमा ऽभिषेणनस्वाग्रजवारणप्रतिकूलबुन्दीन्द्रपुर-मण्डलसमीपसौसिकरणरच भ्रातृद्वय प्रद्रुतप्रत्यागतप्रत्यनीकपतिरुस्तुम

निग्रहण सन्तमसमूढसैन्यद्वय परस्परस्व पर पक्षसंहरण सूर्योदयसमय-निर्धारितस्व पर पक्षविंशतिसहस्र यवनाभिषेणान यवनान्तरगजगृहीत-प्रतिहततदारोहकतद्दंतबिद्धहड्डाधिराजहरराज तदग्रजकरकर्तन कबन्धी-कृततदन्ताघातघूर्णितहरराज निपातितहत्था ऽऽदितदनुजषट्क यवना-न्तरस्वसैन्यसहायसेनापतिरुस्तुम मोचन सैन्यद्वय द्वैधी भावहानानन्तर-पुरोगबुन्दीन्द्रसामन्तकर्ण शङ्कर चालुक्यद्वय रुस्तुमा ऽङ्गखङ्ग कुन्त प्रहरण नृपसुभटभट्टिभगवत्सिंह तच्चालुक्यद्वय मारकरोशन रहीमा ऽऽकबत यवनत्रय निपातन।

श्री वंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण की पंचम राशि में अग्निवंशी चहुवान के वंशजों के वर्णन के कारण हड्डाधिराज अस्थिपाल के वंश और वंश की शाखाओं की कथा बनाने के समय के वचनों में बंबावदा के पति हरराज और बूंदी के पति समरसिंह दोनों भ्राताओं के चरित्र में आराधन किये हुए बादशाह से राणा के सचिवों का बूंदी और बंबावदा की चुगली करना, यवनेन्द्र के मतानुसार मांडलगढ़ छोड़ कर राजा समरसिंह का अपने बड़े भाई हरराज की सहायता स्वीकार करना, मांडलगढ़ में अपने रक्षक रख कर बादशाह का हरराज के आधिपत्य वाला राणा का देश वापस लेने के लिए सेनापति रुस्तम के साथ सेना भेजना, यवन अहमद, कोई प्रमार क्षत्रिय और सोनगिरा चहुवान इन के वश में चित्तौड़ का गढ़ करके बादशाह का दिल्ली जाना, अपने बड़े भाई के देश को जीतने की इच्छा वाले बहलीम और रुस्तम म्लेच्छों की युद्धयात्रा सुनकर बड़े भाई के मना करने के प्रतिकूल होकर बूंदी के राजा का मांडलगढ़ के समीप रतिवाह युद्ध करना, भागकर पीछे मुड़े हुए सेनापति रुस्तम को दोनों भाइयों का कैद करना, अन्धकार से मूढ दोनों सैन्यों का परस्पर अपने और शत्रु के पक्ष को मारना, सूर्य उदय होने के समय अपना और पराया पक्ष देखकर बीस हजार यवनों का सन्मुख होना, यवनों में से हाथी को पकड़, उसके सवार को मार कर उस हाथी के दांत की चोट से घायल होकर हड्डाधिराज हरराज का उस हाथी की सूंड को काटना, हाथी के दाँत की चोट से घूमते हुए हरराज को कबन्ध करके (मस्तक काटकर) हत्थ आदि उसके छह छोटे भाइयों को मारकर दूसरे यजनों का सेना की सहायता से रुस्तम को छुड़ाना, अपनी दोनों सेना के द्वैधीभाव की हानि के आगे होकर बूंदी के उमराव करण और शंकर दोनों सोलंकियों का उन दोनों

सोलंकियों को मारने वाले रोशन, रहीम और आकबत इन तीनों यवनों को मारना।

नरेन्द्रसमरसिंह स्वसुभटभट्टिभगवत्सिंह मारकगजारु-ढरुस्तुम सहितहैदर कुतब बुरम फीरोज बहादुर नाममुख्ययवनषट्क संहरण मोमिन नामम्लेच्छमहावीरम हीपमस्तकपृथक्करण हतनृपमारक-मोमिन समेतयवनवीरविंशति कबुन्दीन्द्रबन्धुपितृव्यकसिंहण सूनुघुग्घुल शूरशय्याशयन द्वादशसहस्त्र मितम्लेच्छ सैन्य दशसहस्त्र मितार्थ सैन्य तनुत्यजन निपातितप्रवीरयवनाष्टक सोढपरप्रहरणप्रहाराष्टक नृपपितृव्य-कमोहन पुत्रमोत्कल स्वायुर्बलजीवन घुग्घुल समेतहरराज समरसिंहाऽऽदिवीरतल्पसुप्तभ्रातृन वक निर्धारण प्राप्तविजयावशिष्टम्लेच्छसैन्य-समेतशत्रुवर्ण स्वस्वोद्देश्यबम्बावददुर्गवशवर्तिदेशसमाक्रमण प्राप्तखिल-प्रदेश षट्क प्रभुत्वत्रयोदश वर्षवयस्कस्वपरिकरवारितयुयुत्सुहड्डाधि-राजहल्लू बम्बावदाधिपत्यधारण नरेन्द्र समरसिंह जन्म बुन्दीप्राप्ति शवरशातन बुन्दीवसतिविस्तारण तनयत्रि कार्थवसुधाविभाजन मण्डनगढ समाक्रमण शूरशय्याशयन शकसूचन जैत्रसिंह कोटापुरनिर्माण शक मास पक्ष तिथि निश्चय भ्रातृनवक सह गामिनीनिजनिजपत्नीसङ्ख्या समभिधान द्वाविंशति वर्ष वयस्कनरेन्द्रनरपाल बुन्दीपुराधिपत्यप्रापणं तृतीयो मयूखः ॥३॥ आदित एकोनपञ्चाशदुत्तरशततमः ॥१४९॥

राजा समरसिंह का अपने उमराव भाटी भगवंतसिंह को मारने वाले हाथी पर चढ़े हुए रुस्तम सहित हैदर-कुतुब-बुरहीम-बहादुर नामक मुख्य छह यवनों को मारना, मोमिन नामक म्लेच्छ का बड़े वीर राजा के मस्तक को दूर करना, राजा को मारने वाले मोमिन सहित वीर यवनों को मार कर बूंदी का राजा के काका सिंहण के पुत्र भाई घुग्घुल का काम आना, बारह हजार म्लेच्छ सेना और दस हजार आर्य सेना का मारा जाना, आठ वीर यवनों को मारकर शत्रुओं के शस्त्रों के आठ बड़े प्रहार सह कर राजा के काका मोहन के पुत्र मोकल का अपनी आयु के बल से जीना, घुग्घुल सहित हरराज और समरसिंह आदि नव भाइयों के काम आने का निर्धारण करना, विजय पाकर बाकी के म्लेच्छ सेना सहित शत्रुवर्ग का अ े प्रयोजन से बंबावद गढ का वशवर्ति देश लेना, बाकी के छह देश लेकर तेरह वर्ष की अवस्था में अपनी परगह से मना किये हुए युद्ध की इच्छा वाले हड्डाधिराज हल्लू का

बंबावद का आधिपत्य लेना, नरेन्द्र समरसिंह का जन्म, बूंदी पाना, भीलों को मारना बूंदी की बस्ती को फैलाना, तीनों पुत्रों के लिये भूमि का बंट करना, मांडलगढ़ लेना और काम आना इनकी सूचना करना, जैत्रसिंह के कोटा नगर बसाने के संवत्, मास, पक्ष और तिथि का निश्चय करना, नव भाइयों के साथ अपनी अपनी स्त्रियों के सती होने की संख्या कहना, बाईस वर्ष की अवस्था में राजा नरपाल का बूंदी पुर के अधिपति होने का तीसरा मयूख समाप्त हुआ। और आदि से एक सौ पचास मयूख समाप्त हुए।

प्रायो ब्रजदेशीय प्राकृत मिश्रित भाषा

दोहा

भूपति पुरबुंदिय भयउ, प्रभुता लहि नरपाल।
सिंह प्रतिभ शूरत्व सह, बुद्धिसत्व जह बाल॥१॥

नेत नाम पुर पति नृपति, कृष्णसाहि कछवाह।
सुत तस मोहनसाहि नें, सुनि कहुं प्रकट सिराह॥२॥

निज तनया जो नाम करि, कहियत सरसकुमारि।
नप्प हिं सो ब्याहिय निपुन, पहिलें सुमह प्रसारि॥३॥

जैसलमेर नरेस के, बंधु वर्ग बिच बीर।
भट्टी कन्हड़ देव भो, सिवसरपुरप सधीर॥४॥

अभिधा करि तस अंगजा, सूरजकुमरि सुजान।
वह दूजै बुंदिय अधिप, ब्याहिय उचित बिधान॥५॥

बूँदी नगर (राज्य) के राजा बन कर नरपाल ने प्रभुता पाई। यह राजा नरपाल शौर्य में तो सिंह के सदृश था पर बुद्धिबल के मापदंड से निरा बालक और त्यागने योग्य था। नेतपुर नामक नगर के स्वामी कछवाहा राजा कृष्णशाह के पुत्र मोहनशाह ने इस राजा की भीतरी बुराइयाँ तो सुनी नहीं थी पर प्रकट की प्रशंसा सुनी। इससे प्रभावित हो कर उसने अपनी पुत्री सरसकुमारी का विवाह राजा नरपाल से करवा दिया। इसी तरह जैसलमेर नरेश के बांधवों में एक भाटी कन्हड़देव था जो शिवसरपुर का स्वामी था। इस कन्हड़देव की पुत्री जिसका नाम सूरज कुंवरी था जो बहुत गुणवती थी को पूरे विधि-विधान सहित बूँदी नरेश नरपाल से ब्याही। यह राजा की दूसरी रानी थी।

षट्पात्

इक्क दिवस नृप नप्प अनुज हप्प सु अच्छोटन।
मिलत पितृव्यक जैत्रमल्ल संजुत बढिगो बन।
जज्जाउर सन जाइ प्रथित टोडापुर पब्बय।
गिरिस पुज्जि गोकरन रह्यो गिरि घेरि बडे रय।
टोडा नरेस किल्हन तनय रोपाल हु मृगया रमत।
तंहं आय सीम निज कोल त्रय पिक्खे हड्डुन हत्थ हत।।६।।

एक दिन राजा नरपाल अपने छोटे भाई हरपाल (हप्प) के साथ आखेट के लिए वन में गया। वहीं रास्ते में काका जैत्रसिंह मिल गए वे भी शिकार में साथ हो लिये। जोजावर के पास अवस्थित प्रसिद्ध टोडा पुर के पास वाले पहाड़ पर पहुँचे। वहाँ पहुँच कर सभी ने गोकर्णेश्वर महादेव की पूजा की उसके बाद पूरे वेग से पहाड़ को घेरा। इसी समय उसी वन में टोडा के राजा किल्हन का पुत्र रोपाल भी शिकार खेलने के लिए वहीं आ निकला। कुमार रोपाल ने अपने राज्य की सीमा पर हाड़ाओं के हाथों मारे गए तीन मृत सूअर देखे।

रुष्ट तबहि रोपाल कहिय हमरे समीप क्रमि।
करि पालित किटि कदन खून किय सु किम रहैं खमि।
जो बल तो द्रुत जुरहु न तो सूकरतजि नट्ठहु।
सुनत एह हुव सज्ज लरन काका भतीज लहु।
बिनु हयन पिक्खि चालुक बलहिं हड्डुन सत्थहु बिनु हयन।
रिपुघात जैत्रमल्ल सु परिग जदपि लह्यो चालुक जय न।।७।।

यह देखते ही कुमार रोपाल ने कुपित हो कर कहा कि आप ने हमारी सीमा के पास आ कर हमारे पाले हुए सूअरों को मार डाला है इसे हम कैसे सहन करें? यदि आपको अपने बल का इतना गुमान है तो आओ, हम से भिड़ो अन्यथा इन सूअरों को यहीं छोड़ कर भाग जाओ। यह सुनते ही काका (जैत्रसिंह) और भतीजा हरपाल लड़ने के लिए शीघ्र ही सज्जित हुए। चालुक्य कुमार रोपाल ने उन्हें बिना घोड़ों के देख कर अपने बल का प्रदर्शन किया। शत्रु पर घात लगा कर चालुक्यों ने जैत्र ।सह को मार गिराया यद्यपि यह कोई उनकी जीत नहीं थी।

दोहा

गुटिका लग्गिय सोंट सिर, चालुक कर तें चंड।
तीन सुभट इक हय तदपि, खंडि करे बहु खंड॥८॥

चालुक्य के हाथ से चली गोली सीधी जैत्रसिंह के सिर में लगी। इसके बाद हुई झड़प में तीन योद्धा और एक घोड़ा उनके हाथों खंड-खंड हो कर गिरे।

षट्पात्

बहि सिर गोलिय बिद्ध किद्ध इम जैत्रमल्ल कलि।
तीन सुभट इक तुरंग छेदि सुत्तो रन रस छलि।
काका मरत कुबैन बुल्लि हरपाल स्व बीरन।
सहसा परि अरिसत्थ दयो करि बिकल बिदारन।
सत्तरि गिराइ चालुक सुभट जो चालुक भट सट्ठि जुत।
रोपालनाम जीवनरसिक दिय भजाई हरपाल द्रुत॥९॥

इस झगड़े में चली गोली से बिंधे हुए जैत्र सिंह ने युद्ध रचा और सामने वाले पक्ष के तीन योद्धाओं और एक घोड़े को मार कर वह रणरसिक जैत्रसिंह मर गया। अपने काका को इस प्रकार मरते देख हरपाल ने अपने साथ आए वीरों को कुवचन सुनाए और शत्रु पक्ष पर टूट पड़ा और चालुक्य दल को व्याकुल कर उनका नाश करने लगा। इस तरह उसने चालुक्य दल के सत्तर वीरों को मार गिराया। शेष रहे चालुक्य दल के साठ योद्धाओं के साथ जीवन के रसिक कुमार रोपाल को शीघ्र ही वहाँ से हरपाल ने भगा दिया।

दोहा

करि प्रद्रुत रोपाल कंहं, जैत्रमल्ल धरि ज्वाल।
सूकर तीन हं संग लै, पुर आयउ हरपाल॥१०॥

टोडा के चालुक्य कुमार रोपाल को वहाँ से भगा कर हरपाल ने अपने चाचा जैत्रसिंह का दाह संस्कार किया फिर वह वीर तीनों मारे हुए सूअरों को साथ ले कर अपने नगर में आया।

षट्पात्

इम जज्जाउर आत भूप सुनतहि अमर्षभरि।
पुर तरज्यो नरपाल अनुज हरपाल अनादरि।

काका सहज कटाइ कहिय जीवत आयो किम।
पुनि टोडापुर पत्र त्वरित पठयो सकोप तिम।
इम लिखिय पितृव्यक बैर अब लैहैं हम रन बिजय लहि।
चालुकहु सुनत हुव अति चकित कन्यादैन उपाय कहि॥११॥

जोजावर के निकट पहुँचने पर जब राजा ने पूरा वृत्तान्त सुना तो वह कुपित हो कर अपने छोटे भाई हरपाल को तिरस्कार भरे शब्दों में फटकारने लगा। राजा नरपाल ने कहा कि हे हरपाल! तू अपने काका को इतनी सहजता से मरवा कर स्वयं जीवित कैसे चला आया? इसके बाद राजा ने एक उलाहना भरा पत्र लिखवा कर टोडा के राजा को भेजा जिसमें लिखा कि हम अपने चाचा का वैर लेने के लिए युद्ध करेंगे और उसमें विजय प्राप्त करेंगे। चालुक्य राजा पत्र सुनते ही चकित रह गया। तब उसने इस वैर को धोने की गरज से अपनी कन्या देने का प्रस्ताव किया।

दोहा

रम्य बहिनि रोपाल की, किल्हन की कन्या सु।
अहिजनकुमरि समाख्य वह, अप्पी नप्पहिं आसु॥१२॥

टोडा के चालुक्य राजा किल्हन की पुत्री और कुमार रोपाल की सुन्दर बहन जिसका नाम अहिजन कुंवरी था का राजा नरपाल के साथ शीघ्र ही विवाह कर दिया गया।

षट्पात्

नाम अपर नारंगदेवि जाकोहि बदत जन।
तीजी रानिय ताहि परनि किय नप्प बीरपन।
बुंदिय आवत बिपिन तरुन कट्टत लखि खत्तिय।
चपल कुठारन चलत प्रीति भूपति हिय पत्तिय।
ततकाल गिरत वह छिन्नतरु जानिय जो ए रनजुरैं।
कट्टि तो अरिन सहमूल कुल बिजयकरैं जस बिप्फुरैं॥१३॥

इस चालुक्य कुमारी अहिजन कुँवरी का अवर नाम लोग नारंग देवी भी बताते हैं। यह राजा नरपाल की तीसरी रानी बनी। वहाँ से वापस अपनी राजधानी बूँदी को लौटते समय रास्ते में राजा ने कुछ बढ़इयों को वन में पेड़ काटते हुए देखा। उनकी कुठार चलाने की चपलता को देख कर राजा मन ही

मन उन पर प्रसन्न हुआ। राजा ने उनके कुल्हाड़ा चलाने के हस्त कौशल से जब फटाफट पेड़ों को कट कर गिरते देखा तो उसने सोचा कि यदि ये युद्ध में जुटें तो ये योद्धा शत्रुओं को जड़मूल से काट कर शीघ्र ही विजय प्राप्त कर सकेंगे और इससे हमारी कीर्ति का प्रसार होगा।

दोहा

तरुतच्छक सतपंच तब, रक्खिय नप्प नरेस।
भट मंत्रिन बरजत भनिय, उचित बिचारहि एस ॥१४॥

लजि दुलही सोलंखिनी, सु सुनि थकी समुझाइ।
नैंकनमन्त्री नप्प नृप, प्रचुर मूढपन पाइ ॥१५॥

सजातीय जितितित सकल, लगे हसन सहलोक।
तच्छक सतपंचक तदपि, आयउ रक्खि स्वओक ॥१६॥

यह सोच कर राजा नरपाल ने तत्काल पाँच सौ बढ़इयों को अपनी सेना में नौकर रखा। उसके सामन्तों और सचिवों ने राजा से ऐसा नहीं करने का बहुत निवेदन किया पर व्यर्थ, राजा ने अपने सोचे अनुसार ही निर्णय लिया। राजा की नई दुल्हन ने लजाते-लजाते कई बार इस कार्य को करने से मना किया। वह अपने पति को समझाते-समझाते थक गई पर राजा ने उसकी एक न सुनी। इस तरह उस मूर्ख राजा ने किसी की बात नहीं मानी। यह सुन कर राजा के सजातीय बंधुओं ने उसकी खिल्ली उड़ाई पर इससे क्या, राजा तो उन्हें नौकर रख कर ही घर आया।

षट्पात्

सुनि यह बुन्दिय सोर समय खिच्चिय महेस लहि।
रहलावनि रामगढ़ मऊ इत्यादि दब्बि महि।
मंगरोल रचि अमल बढ्यो चम्मलि लग बैरिय।
दहिया गौड़ हु दुहुन लये करउर लक्खैरिय।
ततकाल कुजस बढिगो तदपि रन खत्तिन पुच्छत रह्यो।
तिन सठन मिलहिं अवसर तबहि कुल ममूल कट्टहिं कह्यो ॥१७॥

पाँच सौ बढ़ई सेना में नौकर रखे गए। बूँदी के ये समाचार जब खीची महेश ने सुने तो उसने तुरन्त ही रहलावनी, रामगढ़ और मऊ इत्यादि बूँदी के

क्षेत्रों को दबा लिया फिर मांगरोल तक अपना अधिकार कर वह चम्बल नदी के तट तक बढ़ आया। उधर से दहिया और गौड़ दोनों ने करउर और लाखेरी का क्षेत्र हथिया लिया। इससे राजा की अपकीर्ति चारों ओर फैल गई पर राजा नरपाल तो अपने बढ़ई सिपाहियों से युद्ध करने के लिए पूछता रहा और वे मूर्ख बढ़ई कहते रहे कि हे राजा! उचित अवसर आने दें। हम उन्हें जड़मूल से काट डालेंगे।

दोहा

तोमर दुल्लहराय तिम, जाहि समय लहि जोर।
आक्रमि लिय केथोनि इम, अरि हुव सब सबओर॥१८॥

उचित अवसर आया देख कर इसी समय तंवर दुल्लहराय ने अपने बल का प्रदर्शन करते हुए आक्रमण कर केथांनी का क्षेत्र हड़प लिया। इस तरह बूँदी के सभी ओर के राजा शत्रु हो गए और उनका जोर बढ़ा।

षट्पात्

समय इक्क मधु मास तीज उज्जल उच्छव तंहं।
बुन्दियपुर हुव बिदित जानि नप्प हु प्रमत्त जंहं।
महिप डोड प्रामार सेरगढ़ को जनि जोरिय।
सठ हरराजसु सज्जि गज्जि लैगो गुनगोरिय।
चित्रसो रह्यो नारिन निकर सभा थित सु नरपाल सुनि।
लगि संग मुर्‌यो कछु दूर लग पहुंच्यो डोड स्वदुर्ग पुनि॥१९॥

बूँदी में इसी वर्ष चैत्र माह के शुक्ल पक्ष की तृतीया को गणगौर के पर्व का उत्सव हुआ। गर्व से भरे राजा ने इसे बड़े पैमाने पर आयोजित करने का आदेश दिया जिससे कि सारे बूँदीवासियों को इसकी खबर हो जाए। इसी अवसर पर शेरगढ़ का डोड वंशीय परमार राजा हरराज आया और बाखबर कर बलात गवर (गौरी माता) का अपहरण कर ले गया। नगर की सारी स्त्रियाँ जो गवर पूजने आई थीं वे चित्रलिखित सी देखती रह गईं। इसकी खबर जब अपने राज दरबार में बैठे राजा नरपाल ने सुनी तो उसने अपने कुछ सिपाहियों के साथ परमार हरराज का पीछा किया तब तक तो हरराज परमार अपने दुर्ग में सकुशल पहुँच चुका था।

बुंदिय तदनु सबेग आय दूतन यह अक्खिय।
पाइ आत रवि पर्व सुकृत अवसर श्रुति सक्खिय।
गंगाद्वारहिं गोन कल्लिह महेस करि।
जैहैं अप्पहु जत्थ सत्थ आबहु अरि संहरि।
सुहि कहिय रंक खत्तिन.सुलभ मूढ नृपहु तिन्ह मंत्र चढि।
प्रतिकूल निवारक परिकरहिं बेग उतहि लै गो सु बढि॥२०॥

इस घटना को जब दूतों ने शीघ्र ही बूँदी में आकर कहा कि सूर्य ग्रहण के अवसर पर जो पुण्य करने का समय है और जिसकी ताईद वेद भी करते हैं खीची महेश कल ही गंगा द्वार (गंगा के एक घाट का नाम है) की यात्रा के लिए गया है। हम भी वहाँ जाएँ तो शीघ्र ही शत्रु को मार कर वापस आ जाएंगे। इस आशय की राय अपने बढ़ई सिपाहियों से ले कर वह मूर्ख राजा भी गंगा यात्रा के लिए रवाना हुआ। यद्यपि इस कृत्य के लिए राजा के परिकरों ने मना किया पर वह नहीं माना और शीघ्र ही उधर जाने के लिए बढ़ा।

हुव दुव मिजल महेस अग्ग पिट्ठिसु तस अप्पन।
इहिं क्रम उभय अनीक पत्त धन द्विजन समप्पन।
दिन चउ गंगाद्वार रहे अंतर दु कोस रचि।
इतरहु भूप अनेक·जुरिग जहं जहं स्व इष्ट जचि।
रविपर्व समय निज कर्मरत जानि महेसहिं नप्प जंहं।
लघु जाइ बेढि मंडिय कलह तिहिं प्रत्युत किय चित्र तंहं॥२१॥

खीची राजा महेश से यह राजा मात्र दो मंजिल पीछे था। इसी क्रम से चलते हुए दोनों राजा अपने-अपने दल सहित ब्राह्मणों को दान दक्षिणा देने के लिए गंगा तीर्थ पर पहुँचे। दोनों ने दो कोस के अन्तर पर अपने डेरे किए और चार दिन तक वहाँ रुके। उनकी जहाँ इच्छा थी वहीं जम कर रहे। सूर्यग्रहण के समय महेशदास खीची को अपने काम में संलग्न जान कर नरपाल ने उचित अवसर समझ शीघ्र जा कर उसे घेर लिया और युद्ध आरंभ किया। महेशदास खीची ने अचानक यह तमाशा देख कर उल्टा आश्चर्य किया।

खिच्चिय नृप तब खिज्जि सज्जि सायुध हुव सत्वर।
समयोचित कृतसर्ब गिनिसु सहसा रन गत्वर।

निज दल जुत हय नक्खि मंडि हड्डोदधि मंथन।
किय बिहस्त अरिकटक पत्त मतिगति जिहिं पंथन।
भिरतहि बराक खत्तिय भजत हाहा जितितित हास्य हुव।
रहिगो दिदृक्षु न सक्यो निरखि भानुहु ग्रस्त सु रंगभुव॥२२॥

खीची राजा ने तब कुपित हो कर अपने शस्त्र उठाए और समय की माँग के अनुसार युद्ध करने को गया। उसने अपने साथियों सहित अपने घोड़े बढ़ा कर हाड़ाओं रूपी समुद्र का मंथन करते हुए उन्हें व्याकुल कर डाला। उसने आते ही इस तरह भीषण युद्ध आरंभ किया कि शत्रु सेना के योद्धाओं को जिधर मार्ग मिला वे उधर भाग निकले। भिड़ंत होते ही वे कुल्हाड़ा चलाने वाले वीर बढ़ाई सिर पर पाँव रख कर भागे जिन्हें देख कर चारों ओर हंसी के फव्वारे छूटे। युद्ध निरखने की इच्छा वाला सूर्य कुछ भी नहीं निरख सका। वहाँ रणभमि में ग्रहण से ग्रसित सूर्य के देखने को कुछ नहीं था।

दोहा

भज्जत खत्तिय निज भटहु, मग लग्गिय मन मोरि।
पहिलें जिन बरज्यो नृपहिं, नवभट करत निहोरि॥२३॥
भग्गो नप्प हु दल भजत, व्याकुल लपन बिगारि।
जानी नहिं मतिमंद जिहिं, रजपूतन बल रारि॥२४॥

अपने उन बढ़ई योद्धाओं को जिधर मार्ग मिला उसी ओर भागते देखा तो राजा मन मसोस कर रह गया। वह और करता भी क्या क्योंकि ऐसे वीरों को अपनी सेना में भर्ती करते समय सभी ने मना किया था। अपने दल को बेभान भागते निरख राजा नरपाल भी व्याकुल हो अपना मुँह सिकोड़ता वहाँ से भागा। उस मूर्ख ने यह नहीं जाना कि युद्ध हमेशा राजपूतों के बल पर लड़ा जाता है बढ़इयों के आसरे नहीं।

निसाणी

मारन कज्ज महेस की पृतना जब पत्ती।
कालीरसनासी कढी कोसन मन कत्ती।
बट उब्बट तक्की तबहि आवन आढत्ती।
कोउ न रक्खहु नप्प क्रम खोवन भुव खत्ती॥२५॥

सहसा जातहु सम्मुहे अरि पिक्खि इकट्ठे।
रंक पलाये रारि तैं मरिबे सन मट्ठे।
भट कोबिदपन के भये ठांठां जग ठट्ठे।
सज्जे खत्तिय सूर तो नरपाल हु नट्ठे॥२६॥

अपने शत्रुओं को मारने के लिए खीची महेशदास की सेना जब पहुँची और काली के रस अर्थात् रक्त का नाश करने वाली (बहाने वाली) कई तलवारें जब म्यानों से निकलीं तो नरपाल की तथाकथित बहादुर सेना की उबड़-खाबड़ रास्तों से बेरोकटोक घर भाग जाने की गति बढ़ी। भविष्य में कदाचित कोई राजा नरपाल की तरह ऐसी कीर्तिनाशक बढ़इयों की सेना नहीं रखेगा। सामने आते शत्रु को देखते ही सारे इकट्ठे हो कर वे रंक युद्ध भूमि से भागे क्योंकि वे मरने में माठे (कृपण) थे। उन वीरों की इस भागने की कला को देख कर जगत में जगह-जगह हँसी हुई। जब वे शूरवीर बढ़ई भागे तो राजा नरपाल का भी भागना लाजिम था सो वह भी भागा।

दोहा

पछितायो टोडापतिहु, पाटव सु करि प्रमान।
जो नप्प हिं इम जानतो, करतो कर कन्या न॥२७॥

हाड़ाओं की सेना का यह पलायन देख कर टोडा का राजा खीची महेशदास मन ही मन बहुत पछताया। हाय! यदि मैं पहले यह जानता कि वह मंदबुद्धि कायर नरपाल ऐसा है तो मैं अपनी बेटी का हाथ उसके हाथ में हरगिज नहीं देता।

षट्पात्

इम बिगारि मुख अप्प आइ बुंदिय लज्जित अति।
रक्खिय पुनि रजपूत मन्नि आदर तिन्ह सम्मति।
रत्ति चरत सैरिभिन पिक्खि इक दिन मृगयापथ।
पटु तिन्ह चारक पकरि अक्खि चोरहि लायो अथ।
तुमरी हि प्रजा हम कहिय तिन्ह रहत पुट्ट पसु चरि रजनि।
निस तबहि भटन इच्छित नृपति भयो जिमावत उचित भनि॥२८॥

खिसियाया हुआ अपना सा मुँह ले कर राजा नरपाल वापस बूँदी लौटा

तो उसने आते ही अपनी सेना में फिर से राजपूतों को रखा और उनकी दी हुई मंत्रणा को भी आदर सहित सुनने लगा। एक दिन वह शिकार खेलने गया जहाँ मार्ग में मध्य रात्रि के समय भैंसों को चरते देखा। उसने झट से उन्हें चराने वाले चरवाहों को पकड़ लिया और उन्हें चोर गिन कर बंदी बना अपने साथ बूँदी लाया। चरवाहों ने प्रात:काल हाथ जोड़ कर निवेदन किया कि हे राजा! हम आपकी गरीब प्रजा हैं। आपकी भूमि पर अपने पशु नहीं चराएँगे तो हमारा गुजारा कैसे होगा हे राजा! फिर भैंसों को यों रात्रि के अन्तिम प्रहर में चराने से वे हष्ट पुष्ट रहती हैं। सारे जानवरों का यही कायदा है वे इस समय चर कर ताजा रहते हैं। चरवाहों की यह बात सुनते ही उस (मूर्ख) राजा ने अपने सिपाहियों को भी रात्रि के अंतिमम प्रहर में इच्छा भोजन कराने के आदेश दिए जिससे कि वे बलशाली बन सकें।

दोहा

जिहिं ताजो निजनाम जग, किय फुट पसर सु काल।
सिसु जिम इम जोजो सुनें, मन्नें सुसु महिपाल॥२९॥

हल्लू लघुबय जदपि हो, बंबावद बसुधेस।
तदपि उपालंभन तरजि, दिय नप्प हिं उपदेस॥३०॥

ऐसा था राजा नरपाल जिसने अपने नाम से भोजन का यह तीसरा समय 'पसर काल' के नाम से प्रसिद्ध किया। वह अपनी समझ और बुद्धि में निरा बालक था। उसे जो भी कुछ कहता वह तुरन्त उसकी बात मान लेता। बंबावद का राजा हल्लू यद्यपि उससे उम्र में काफी छोटा था फिर भी उसने अपने बड़े भाई नरपाल को कठोर वचनों से कई बार उपालंभ दिये। अर्थात् कम अनुभव वाला हो कर भी उसने इस राजा को कई बार समझाया पर व्यर्थ, राजा तो वैसा ही रहा।

नप्प अनुज हप्प सु रमनि, जुग परन्यो पटजोरि।
रामकुमरि सीसोदनी, राजकुमरि रट्ठोरि॥३१॥

जैत्र हु किय जुग ब्याह जंहं, उमाकुमरि अभिधान।
सो तोमर दुल्लहसुता, ब्याह्यो प्रथम बिधान॥३२॥

परतटपुर जानें प्रथम, थिर दब्बिय केथोनि।
यातें गिनि भू बैर इहिं, दिय दुहिता रन छोनि॥३३॥

अक्खयसिंह सुताहु इम, समकुल पथ लखि सीर।
कछवाही आभाकुमरि, परन्यों अपर प्रबीर॥३४॥
रोक्यो नप्प सु डुंगर हु, आयो तदपि उमाहि।
करउरपति दहिया कनी, स्यामा को कर साहि॥३५॥
सहि न सक्यो नरपाल इन, अनुजन के अपराध।
लग्यो चढन रिपु संधिलखि, बिरचन दोउ न बाध॥३६॥

राजा नरपाल के छोटे भाई हरपाल ने विधि-विधानपूर्वक दो विवाह किये। एक सिसोदिया वंश की राजकुमारी से और दूसरा राठौड़ कुल की राजकुमारी से। उससे छोटे भाई जैत्रसिंह ने भी दो विवाह किये। पहला विवाह उसने तंवर दुल्लहराय की पुत्री उमा कुंवरी से किया। पूर्व में चम्बल नदी के पास वाले नगर परतटपुर के स्वामी ने हाड़ाओं के राज्य से कैथोनी को हड़प लिया था। उसने यह सोच कर कि हाड़ाओं से हड़पी भूमि के कारण वैर है उसे साफ करने के लिए उत्तम यह रहेगा कि मैं अपनी पुत्री उन्हें दे दूँ। कछवाहा अक्षयसिंह ने अपनी कन्या के लिए यह सोचकर कि सम्बन्ध बराबरी वाले कुल में हमेशा से होते आए हैं। अपनी बेटी आभाकुंवरी के लिए जैत्रसिंह को उपयुक्त वर जान कर विवाह करवा दिया। राजा नरपाल ने अपने तीसरे भाई डूंगरसिंह को करउर नगर के स्वामी के यहाँ विवाह करने से मना किया पर तब भी डूंगरसिंह ने अपने शत्रु जिसने करउर नगर हाड़ाओं से छीना था ऐसे दहिया की कन्या श्यामा से पाणिग्रहण किया। राजा नरपाल को यह सहन नहीं हुआ कि उसके दो भाइयों ने हाड़ा कुल के शत्रुओं के यहाँ उसके मना करने पर भी विवाह कर लिये। उसने यह सोच कर कि मेरे भाइयों ने हमारे शत्रु के साथ इस प्रकार संधि की है उनको उनके अपराध के लिए दण्ड देना चाहिए, उन पर चढ़ाई करने का निश्चय किया।

षट्पात्

खत्तिन रक्खत खिज्जि भटन बरज्यो जिन भूपहिं।
किय तिनकों संकोच रक्खि आदर अनुरूपहिं।
कनी देत तिन कहिय अरिहि लाघव अंकूरिय।
सुनि इम न गयो समि सु खमि सु कोटा खज्जूरिय।

परन्यों चतुष्क हल्लू नृपहु प्रथम गौड़ सोपुर नृपति।
कन्या दई सु अभिधान करि अमृत कुमरि सुकुमार अति॥३७॥

खातियों (बढ़इयों) को अपनी सेना में भर्ती करते समय खीझ कर जिन स्वजनों ने राजा नरपाल को ऐसा न करने की राय दी थी। उन्हीं सामन्तों ने राजा नरपाल से जब कहा कि अपने ही भाइयों से ऐसा बर्ताव नहीं करना चाहिए तब उसने उनकी सलाह मान कर भाइयों को दण्ड नहीं दिया। सामन्तों ने कहा कि अपने छोटे भाइयों की बात छोड़ कर थोड़ी उधर अपनी नजर डालो जहाँ आपके शत्रु उद्धत हो कर खड़े हैं। उन्हें दंड दें तो अच्छा रहेगा पर राजा यह सुन कर भी शत्रुओं के सामने लड़ने नहीं गया और अपने खजूरी के क्षेत्र को शत्रु द्वारा हड़पते हुए देखता रहा। वह शान्त रहा। उसने यह सहन कर लिया। बंबावद के राजा हल्लू ने चार विवाह किये। पहला विवाह उसने सोपुर के गौड़ राजा की पुत्री अमृत कुंवरी से किया जो अत्यधिक सुन्दर थी।

दोहा

जिम द्योसा जसराज की, कन्या निधि गुनकेर।
कछवाही नरबदकुमरि, ब्याहिय दूजी बेर॥३८॥

तीजैं चम्मलि पार तट, यहहु जैत्र जिम जाइ।
तोमर दुल्लह लघु सुता, परन्यों गौरव पाइ॥३९॥

नाम जास कैसरि कुमरि पुर केथोनि पधारि।
जो लहि साली जैत्र की, आयो कुल अनुकारि॥४०॥

तिनसों रुट्ठों नप्प तउ, किय जो तिन हितकाम।
संतति कहि कहिहै सु पै, अग्र किरन अभिराम॥४१॥

राजा हल्लू ने अपना दूसरा विवाह दौसा के कछवाहा वंशीय राजा जसराज की बेटी से किया। कछवाहा वंश की यह कुमारी नरबद कुँवरी गुणों की खान थी। राजा हल्लू ने तीसरा विवाह चम्बल नदी के उस पार परतटपुर में किया। जहाँ पहले जैत्रसिंह ने तंवर राजा दुल्लहराय की पुत्री से शादी की थी। इसी राजा की छोटी बेटी को राजा हल्लू ने अपनी तीसरी रानी बनाया। यह विवाह उसने अपने ही भाई जैत्रसिंह की साली केसर कुंवरी से कैथून नगर में जा कर किया। अपने भाई जैत्रसिंह को जब इस तंवर दुल्लहराय के

यहाँ शादी करते देखा तो राजा नरपाल खफा हुआ। हे राजा रामसिंह! मैं उनकी संतति का विस्तृत विवरण इसी ग्रंथ के अगले मयूख में लिखूँगा।

तनय तीन नरपाल नृप, पाये गुनन गरीय।
तंहं अग्रज हम्मीर तस, हम्म हु नाम द्वितीय॥४२॥

नवरंग सु मध्यम अनुज, लघु थिरराज लसात।
पहिलो कछवाही प्रसव, जुग भटियानी जात॥४३॥

नवरंग हिं दिय लाडपुर, जाको कुल जसजुत्त।
हड्डुन अष्टम भेद हुव, पट्टु नवरंगपउत्त॥४४॥

थिरराज हिं दिय अनथड़ा, अन्वय तास उदार।
जो थिरराजपउत्त जग, कहियत नवम प्रकार॥४५॥

पुत्रन दिन्नी सिसुपनहि, बंटि पुहवि बुंदीस।
सुनहु पंच हल्लू सुतन, अभिधा अब नरईस॥४६॥

अमृतकुमरि औरस उभय, चंच कुंभ पटुपूत।
बाम भोज अरु नयन त्रय, नरबदकुमरि प्रसूत॥४७॥

बूँदी के हाड़ा राजा नरपाल के तीन पुत्र हुए। गुण गंभीर इन पुत्रों में सबसे बड़ा हम्मीर था जिसका दूसरा नाम हम्म भी प्रसिद्ध है। दूसरा पुत्र नवरंग और सबसे छोटा थिरराज था। राजा को पहला पुत्र हम्मीर अपनी कछवाहा रानी की कोख से उत्पन्न हुआ, शेष दोनों छोटे पुत्र नवरंग और थिरराज भाटी रानी से थे। राजा ने अपने दूसरे बेटे नवरंग को लाडपुरा दिया जिसके वंशजों से हाड़ा कुल में आठवाँ भेद हुआ जो नवरंगपोता कहलाए। थिरराज को राजा ने अनथड़ा की जागीर दी जिसके वंशज सभी थिरराजपोता के उपटंक वाले हुए। अपने पुत्रों को राजा ने उनके शैशवकाल में ही जागीरें बाँट दी थी। हे राजा रामसिंह! अब मैं बंबावद के राजा हल्लू की पाँच संतानों के नाम बताता हूँ उन्हें आप सुनें। रानी अमृत कुंवरी की कोख से चंच और कुंभ ये दो पुत्र जन्में। बाम भोज और नयन नामक ये तीन बेटे नरवद कुंवरी से थे।

हड्डुन भेद चतुर्थ हुव, हल्लू पौत्र कहात।
इन नामन जुरि ते अखिल, प्रथित उत्त पद पात॥४८॥

पहिलें पीछैं कथनक्रम, उचित समय अनुसार।
जानिलेहु नृपराम जिम, इम पटु सभ्य उदार॥४९॥

हाड़ा शाखा में चौथा भेद हल्लूपोता के नाम से प्रसिद्ध हुआ। हे राजा रामसिंह! वंशजों में नया भेद जिस राजा के नाम से चलता है उनके नाम के अन्त में उत पद लगता है जैसे चंचाउत, कुंभाउत आदि। मैंने अपने कथन के पहले और बाद में का क्रम नहीं निभाया है पर आप समयानुसार शुद्ध करने के बाद ही इसका आशय ग्रहण करें।

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे पञ्चम राशौ वीतिहोत्र-चण्डासि बीज्यवर्णनबीजहड्डाधिराडस्थिपाल वंश्यानुवंश्यविहित-व्याख्यानवसरव्याहार्यबुन्दीनरेशनरपाल चरित्रे प्राप्तराज्यनरपाल कौर्मी भट्टिनी पत्नीद्वय परिणयन गोकर्णगिरिमृगयारसिकव्यापादितवराहत्रय समरसिंह ऽनुजजैत्रमल्ल नरपाला ऽनजहरपाल सहितस्वसीममृगव्यमच्छरि-चालुकरोपालरणरचन गुटिकाबिद्धमूर्द्धनिपातितैक हयप्रतिभटत्रय जैत्रमल्ल वीरशय्याशयन नाशितशत्रुसप्तति कप्रद्रावितप्रतिपक्षसपोत्रित्रिक हरपाल प्रत्यागमन तर्जितानुज मार्गितपितृव्यकवैर नरपाल तृतीय पत्नीचालुकी पाणिपीडन प्रत्यागच्छन्नरेन्द्रवारकप्रातिकूल्यपूर्वकसुमटीकृतपञ्चशत वर्द्धकिवृन्दरक्षण विज्ञाततद्बालिशत्वसगोत्रखिच्चि महेशरहलावणिपुर-प्रमुखप्रदेशचतुष्क समाक्रमण दभिक गौड़ तोमर त्रय यथासंख्यपुरकरवुर लक्खैरी केथोणि समादान।

श्री वंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण की पंचम राशि में अग्निवंशी चहुवान के वंशजों के वर्णन के कारण हड्डाधिराज अस्थिपाल के वंश और वंश की शाखाओं की कथा बताने के समय के वचनों में बूंदी नरेश नरपाल के चरित्र में राज्य पाकर नरपाल का कछवाही और भटियानी दो स्त्रियों से विवाह करना, गोकर्णेश्वर महादेव के पर्वत में शिकार के रसिक तीन सूअरों को मारकर समरसिंह के अनुज जैत्रमल्ल और नरपाल के अनुज हरपाल सहित शिकार खेलने वाले चहुवानों से सोलंकी रोपाल का युद्ध रचना, गोली से मस्तक बिद्ध होकर एक घोड़े और तीन शत्रुओं को मारकर जैत्रमल्ल का काम आना, सत्तर शत्रुओं को मारकर शत्रुओं के भागने पर तीनों सूअरों सहित हरपाल का वापस आना, छोटे भाई को धमकाकर काका का बैर माँगने पर नरपाल का तीसरी स्त्री सोलंकिनी .से विवाह करना, वापस आकर नरेन्द्र का मना करने पर प्रतिकूल होकर पाँच सौ खातियों को सुभट बनाकर रखना, उस की मूर्खता जानकर उसी गोत्रवाले (चहुवान) खीची महेशदास

का रहलावणपुर आदि चार प्रदेशों को लेना, दहिया, गौड़, तोमर इन तीनों का यथा संख्या से करवुर, लाखैरी, केथोन लेना।

सेरगढ़दुर्गमहीपडोडप्रामारहरराजसबलात्कारबुन्दीपुरगुणगौरी-समाहरण तदनुद्रुताऽप्राप्तपरपक्षप्रधननरपाल निन्दाप्रादुर्भवन दूतप्रमुख-ज्ञातखिच्चि महेशगंगाद्वारगमनतत्पृष्टप्रस्थितनरपाल प्राप्तशत्रूद्दिष्ट-तीर्थदिनचतुष्क समयसमवस्थान पञ्चम दिनसोपल्लवसूर्यस-मयसूचितसाध्यसाधनपाटवप्रमत्तपरिपन्थिप्रतारण तत्कालसज्जसैन्यप्रत्यु-त्पन्नप्रज्ञाहड्डोदधिमन्मथमन्दरमहेशत्रस्तवर्द्धकिव्रातविपलायन दृष्टानिष्ट-कातरीकृतस्वान्तप्रद्रुतस्वपरिकरपश्चात्तापितचर्मश्वशुर्यकान्दिशीकबुन्द्या-गतनरपाल पुनःक्षत्रभटसमर्जन लालिकीपालशिक्षितरात्रिभटभोज नोपहास्यप्रादुर्भावितततृतीय निजनामान्तरनप्पार्थ हल्लूपालम्भन।

सेरगढ़ के महीप डोडशाखा के प्रमार हरराज का बलपूर्वक बूंदी पुरी की गणगौर का हरण, जिसके पीछे दौड़ कर प्राप्त नहीं होने से शत्रुओं में नरपाल की युद्ध विषयक निन्दा होना, दूत आदि से खीची महेशदास का गंगाद्वार जाना जानकर उसकी पीठ पर गमन करके शत्रु के तीर्थस्थान पर प्राप्त होकर चार दिन पर्यन्त वहाँ रहना, पाँचवें दिन सूर्यग्रहण के समय कहे हुए साधने योग्य कार्यों के साधन में चतुर ऐसे गाफिल शत्रुओं की ताड़ना करना, तुरन्त सेना सज्जित कर उस बुद्धिमान से उत्पन्न हुए हाड़ों के समुद्र रूपी ज्ञान को मथनेवाले मन्दराचल रूप महेश से डरकर खातियों के समूह का भागना, अपनी परगह का नाश और मन के कायरपन से भागे हुए देख कर खेद पाये हुए बाकी के अपने वीरों सहित भयद्रुत बूंदी में आये हुए नरपाल का फिर क्षत्रिय वीरों को इकट्ठा करना, भैसों के पालन करने वालों (ग्वालों) की शिक्षा से वीरों को अपने नाम से तीसरा भोजन कराने से उपहास्य होकर नरपाल के अर्थ हल्लू का उपालम्भ देना।

नप्पा ऽनुजहप्प शैर्षोद्दी राष्ट्रकूटी द्वितीयाद्वयोपयमन तदनुजजैत्रसिंह तोमरी कौर्मीपत्नीद्वय परिणयन नप्प निवारिततदनुजडुङ्गरसिंह समाक्रान्तकर्बुर-शत्रुसुतादाभिकी पाणिपीड़न स्वीयसुभटसङ्घजैत्रसिंह डुङ्गरसिंह जिघांसुनप्प निवारण हड्डाधिराजहल्लू गौडी कौर्मी तोमरी राष्ट्रकूटी पत्नीचतुष्क पाणिग्रहण नरपाल तनयहम्मा ऽपर नामहम्मीर नवरङ्ग स्थिरराज त्रय प्राकट्यपूर्वकतत्तन्मातृनिश्चयन यथासंख्य-

प्राप्तलाडपुरा ऽनथड़ा ऽऽख्य स्थाननवरङ्ग स्थिरराज भाविसन्तान-नवरङ्गपौत्र स्थिरराजपौत्रो पटङ्किहड्डुकुलाष्टम नवम भेदप्रख्यापन स्वस्वजनन्यवधारणसहितचञ्च बामा ऽऽदिभाविहल्लू पुत्रपञ्चक सन्ततिहड्डुकुलचतुर्थ भेदहल्लूपौत्र पञ्च प्रकारप्राप्तिप्रकटनं चतुर्थो मयूखः ॥४॥ आदितः पञ्चाशदुत्तरशततमः ॥१५०॥

नरपाल के छोटे भाई हरपाल का सीसोदिनी और दूसरी राठौड़ी दोनों से विवाह करना, उसके छोटे भाई जैत्रसिंह का तोमरी और कछवाही दो स्त्रियों से विवाह करना, नरपाल के मना करने पर छोटे भाई डूंगरसिंह का करउर जाकर दहिया जाति के शत्रु की पुत्री से विवाह करना, अपने सुभटों के समूह का जैत्रसिंह और डूंगरसिंह को मारने से नरपाल को रोकना, हड्डाधिराज हल्लू का गौड़ी, कछवाही, तोमरी और राष्ट्रकूटी चार स्त्रियों से विवाह करना, नरपाल के पुत्र हम्मा दूसरे नाम से हम्मीर, नवरंग और थिरराज तीनों का प्रकट होना और उनकी माताओं का निश्चय करना, यथासंख्या से लाडपुरा और अनथड़ा नामक स्थान पाना और नवरंग और थिरराज के आगे होने वाले संतान का नवरंगपोता और स्थिरराजपोता पदवी से हाड़ों के कुल में अष्टम और नवम भेद होने की सूचना करना, अपनी अपनी माता के धारण करने सहित चंच और बाम आदि आगे होने वाले हल्लू के पाँच पुत्रों के वंश का हाड़ाओं के कुल में चतुर्थ भेद हल्लूपोते को पाँच प्रकार की प्राप्ति प्रकट करने का चौथा मयूख समाप्त हुआ। और आदि से एक सौ पचास मयूख हुए।

प्रायो ब्रजदेशीय प्राकृत मिश्रित भाषा

दोहा

रक्खन खत्तिय भजन रन, पसर चरावन पिक्खि।
बटिग सीम आक्रमि बहुत, सत्रुभाव नव सिक्खि ॥१॥

युद्ध क्षेत्र से भाग जाने वाले बढ़इयों को अपनी सेना में रखने वाला यह नृप अपने आदमियों को 'पसर' चरवाने वाले के रूप में देखा गया। इसके समय में बूँदी की सीमा का अतिक्रमण क ने वाले कई शत्रुओ ने इसकी थोड़ी-थोड़ी भूमि दबाई पर यह नए ढंग से शत्रुभाव रखने वाला राजा हुआ अर्थात् इस नए ढंग में उसका शत्रु शत्रु नहीं था।

षट्पात्

दहिया तोमर द्वै हु भये दब्बत बुंदिय भुव।
इनके गृह उपयाम हड्ड तीनन अभीष्ट हुव।
जैत्र रु डूंगर जुगल बहुरि हल्लू हु बिबाहिय।
यातैं तिन प्रति अहित नप्प बुंदीस निबाहिय।
हल्लू रु जैत्र तब इम कहिय बैरिन की कन्या बिबहि।
आवैं सु स्वकुल गौरव गिनत कहहुन लाघव मंतु कहि॥२॥

तंवर और दहिया दोनों ऐसे प्रबल प्रतिपक्षी के रूप में उभरे कि उन्होंने बूँदी की भूमि हड़प ली। इन्हीं दोनों शत्रुओं के यहाँ हाड़ाओं ने तीन विवाह किए और इस तरह वे उनके प्रिय हो गए। जैत्रसिंह और डूंगरसिंह इन दोनों भाइयों ने तो विवाह किये ही थे। इनके साथ बंबावद के राजा हल्लू ने भी कर लिया। शत्रुओं के साथ शादी व्यवहार करने का यह कार्य बूँदी के राजा नरपाल के मन को नहीं भाया अर्थात् उसे अपने भाइयों का यह कृत्य अच्छा नहीं लगा। इस पर राजा हल्लू और जैत्रसिंह ने कहा कि शत्रु की कन्या से विवाह करने में क्या बुराई है? उन्होंने कन्या दे कर हमारा बड़प्पन ही बढ़ाया है इसे राजा को अपराध की संज्ञा नहीं देनी चाहिए।

पादाकुलकम्

जो तुम अरि जामाता जानत, परपक्षी इम भुल्लि प्रमानत।
आवहु तो पहिली मति उज्झत, जुरि पिक्खहु भ्राता कित जुज्झत॥३॥
तरुतज्छक जित नप्प भयो तिम, अप्पन गिनहु हमहिं स्त्रीजित इम।
भट रु सचिव पुज्जे तब भूपति, उन अक्खिय इतही सनेह अति॥४॥
तब नरपाल सज्जि दल सत्वर, प्रथम चढ्यो खिच्चिय महेस पर।
कोटापुर हि प्रपात जाय किय, द्रुत तंहं बंधु जुग हि उपदादिय॥५॥
जैत्रसिंह तत्थ हि हो जानत, तिहिं स्वागत किय अति व्यय तानत।
अक्खिय प्रान धन रु बसुधा यह, सबहि स्वामि आयत्त कित्ति सह॥६॥
कोटा गत हल्लू हु सुनत क्रमि, नृपहु अग्रजहिं आइ मिल्यो नमि।
लघुबय राज्य पिक्खि नृप मद लिय, एकासन बैठन नन इच्छिय॥७॥
भटन कहिय प्रभु की हि लैन भुव, हल्लू से पट्टप सहाय हुव।
अधिक राज्य दर्प न इम आनहु, पुहवी तुमहु गईसु प्रमानहु॥८॥

हे राजा! शत्रु के जामाता जानने मात्र से आप हमें भी शत्रु तुल्य समझ रहे हैं। यह आपकी भूल है। अपनी इस भ्रमित मति को छोड़ युद्ध कर देखो तो आपको स्पष्ट पता पड़ जाएगा कि भाई किसकी ओर से लड़ते हैं। हे राजा! बढ़ई योद्धाओं ने जिस तरह आपको जीत रखा है उस तरह आप हमको विजित मत समझो। इस पर राजा ने तुरन्त अपने सामन्तों और सचिवों से मंत्रणा की और जब उसने पूछा तो उन्होंने भी स्नेहपूर्वक यही बात कही। तब राजा ने तुरन्त अपनी सेना को सज्जित किया और सबसे पहले खीची महेशदास पर चढ़ाई की। सेना सहित पहला पड़ाव कोटा में जा कर किया जहाँ राजा नरपाल को उसके बांधवों ने नजराने में उपहार भेंट किये। जैत्रसिंह भी वहीं था जब उसे सेना सहित राजा के आने के समाचार मिले तो उसने राजा के स्वागत की धूमधाम में खूब पैसा खर्च किया। इसके बाद कहा कि हे स्वामी! मेरी भूमि, धन और प्राण सभी आपके आधीन है। इधर राजा हल्लू भी बंबावदे से चल कर कोटा पहुँचा और वहाँ आकर अपने बड़े भाई राजा से पूरी विनम्रता के साथ मिला और स्वयं की उम्र और राज्य को छोटा जानकर राजा नरपाल के साथ एक ही आसन पर बैठने की उसने इच्छा नहीं की। इसके बाद राजा के सामन्तों ने राजा हल्लू से कहा कि हमारे स्वामी की हड़प की हुई भूमि को वापस लेने में आपको अपने पाटवी की सहायता करनी चाहिए। आपके राज्याधीन अधिक भूमि है उसका दर्प न करते हुए आपको हाड़ाओं की भूमि ही गई है ऐसा मानना चाहिए।

हल्लू जनक बिहित उत होई, खमि तुम जनक अनंतर खोई।
दलि हरराज साह उत दब्बिय, चुच्छन इत तुमरी अब चब्बिय॥९॥

अक्खिय स्वीय काका मुक्कल यह, एकासन बैठन किय अग्ग्रह।
नृपहिं पितृव्यक निट्ठि निहोरिय, जानु नप्प हल्लू जब जोरिय॥१०॥

हल्लू कहिय पुब्ब हमरे हित, समर समर सोये हित संचित।
भुग्गत हम बय अल्प अल्प भुव, हित बस लोभ ग्रसेहि सत्थ हुव॥११॥

द्रुत जानत हमरी लै देहो, प्रधनकर्म हमरी जो पैहो।
सुनि ऐसीहु न नप्प सिटायो, यह जानी भटबनि इत आयो॥१२॥

सबन छिपी न रही मति सोहू, जानत हुव कोबिद जो जोहू।
भोजन समय हु इम इहिं भूपति, मन्त्री यह किम उचित मंदमति॥१३॥

तबहु तरजि मुक्कल हठ तानत, बैठारयो इक थान बखानत।
गहि कर गाढ जैत्रसिंह हु जिम, इक्क थाल जिम्मन लिन्नो इम॥१४॥

हे राजा हल्लू! तुम्हारे पिता तक तो यह भूमि तुम लोगों के अधिकार में ही थी। इसे तो तुमने अपने पिता की मृत्यु के बाद खोया है। इस भूमि को हरराज ने बादशाह से झगड़ कर हासिल किया था इसे चबैने के रूप में तो इन तुच्छ लोगों ने अब चबाई है। ऐसा कह कर उनके चाचा मोकल ने दोनों राजाओं नरपाल और हल्लू से एक ही आसन पर बैठने का आग्रह किया। काका यह देख कर हर्षित हुए जब उन्होंने देखा कि दोनों राजा अपने घुटने जोड़ कर एक ही आसन पर बैठ गए। बाद में राजा हल्लू ने कहा कि हम लोगों का हित सोचकर ही राजा समरसिंह समरभूमि में सोये थे अर्थात् मारे गए थे। हम लोग तो कम उम्र के होने से कम भूमि पर राज्य कर रहे हैं अब हमें लोभ छोड़ कर साथ हो जाना चाहिए। जो हमारी भूमि है उसे हम शीघ्र ही ले कर रहेंगे इसके लिए युद्ध में अब आप हमारी वीरता का प्रदर्शन देखना। पर यह सुन कर भी राजा नरपाल लज्जित नहीं हुआ। राजा हल्लू ने आगे कहा कि उपरोक्त बात को सोच कर ही मैं अपनी सेना सहित यहाँ आया हूँ। राजा हल्लू के इस व्यवहार के बाद सभी चतुर पंडितों से यह बात छिपी न रही कि भविष्य में क्या होगा। इस राजा नरपाल ने भोजन के समय इस बात को कैसे मान लिया क्योंकि उस मंदमति से यह उम्मीद नहीं थी कि वह जैत्रसिंह के साथ भोजन करने को तैयार हो जाएगा पर उसने कोई आनाकानी नहीं की। काका मोकल ने जब आग्रहपूर्वक जबरन हाथ पकड़ कर जैत्रसिंह को साथ बिठाया तो सभी ने एक साथ एक ही थाली में भोजन किया।

अक्खिय दोउ न असन अनन्तर, तरुतच्छक जिम किन्न सुभटतर।
जैसे अप्प हमहि जिन जानहु, पानि स्वकीयन जुद्ध प्रमानहु॥१५॥
किय नृप तव इन जुत प्रयान किर, स्व भुवलैन पहिलें महेस सिर।
दूतन अक्खिय द्रंग पल्हायथ, परिकर अल्पसु आत निकट पथ॥१६॥

भोजन करने के बाद हल्लू और जैत्रसिंह दोनों ने कहा कि हे राजा! अब तक आपने उन बढ़ई वीरों को ही योद्धा गिना है। आप उनकी तरह हमें मत गिनना। अपने लोगों के हाथों का कौशल तो अब युद्ध में देखना। अपनी

भूमि को वापस अर्जित करने के लिए सर्वप्रथम महेशदास खीची पर आक्रमण की सोच कर ये वीर चले। राह में पड़े नगर पलायथा के पास जब सेना पहुँची तो दूतों ने आ कर सूचना दी कि यहाँ अमला कम है अत: आवश्यक कार्यवाही की जा सकती है।

पज्झटिका

इहिं क्रम कोटासन सुनि सु अड्ड, हंकिय सायं तनय सय हड्ड।
नवसहंस दुहु न दल बल बिधान, पत्ते प्रधान तंहं बिधि प्रमान॥१७॥

पुर लुट्टि हल्लकरि अरर पारि, चहु अट्ट दुर्ग प्रविसे प्रचारि।
हो तंहं महेस बंधुव पहार, सम्मुह हुव गिनि धुव मरन सार॥१८॥

संहारत इतके भटन सूर, पहुंच्योहि नप्प ढिग दप्पपूर।
असि झारिय भूपति अंस आइ, करि फलक दियसु मुक्कल चुकाइ॥१९॥

दूजी सिर ।दन्नी सिर कराल, कटि पग्ग गई अंगुल कपाल।
हल्लू तब जुज्झत अग्ग होइ, दै असि पहार किय खंड दोइ॥२०॥

सतइक्क परे इतके सिपाह, उतके मृत सत्तरि रंगराह।
पुर इम सु पल्हायथ प्रथम पाइ, सत अट्ठ सुभट तंहं धरि सहाइ॥२१॥

पुनि दल जयरंजित किय प्रयान, आयो तंहं खिच्चिय खग उडान।
दल इक्कअयुत सज्जित दुरुह, जिततित पटैत बढि भटन जूह॥२२॥

इस तरह कोटा नगर से आड़े अंवले मार्ग से संध्यासमय में अपने हाथों शत्रुओं के लिए अंधकार पूर्ण स्थितियाँ बनाते हुए हाड़ाओं की सेना बढ़ी। दोनों दलों में कुल योद्धाओं की संख्या नौ हजार की थी। ऐसे दलबल के साथ वे वहाँ पहुँचे। जाते ही उन्होंने नगर के दुर्ग के कपाट तोड़ कर चारों ओर से किले में प्रवेश किया। वहाँ पर आगे महेशदास का भाई पहाड़सिंह मौजूद था उसने मन में मरने का निश्चय कर सेना का सामना किया। वह हाड़ाओं के योद्धाओं को निढाल करते हुए दर्प से भरा तत्काल राजा नरपाल के पास पहुँचा और आते ही अपनी तलवार से एक प्रहार राजा के कंधे पर किया उसे पास ही लड़ रहे वीर मोकल ने अपनी ढाल पर झेल लिया। फिर अपनी तलवार से उसकी पगड़ी और सिर पर प्रहार किया जिससे उसकी तलवार शत्रु की पगड़ी को काट कर कपाल तक उतर गई। इसी बीच रण क्षेत्र में जूझते हुए हल्लू ने अपना घोड़ा बढ़ाया। पास पहुँच कर हल्लू ने

अपनी तलवार के जोरदार प्रहार से शत्रु पहाड़सिंह के दो टुकड़े कर दिये। इस झड़प में हाड़ाओं के सौ योद्धा मारे गए और सामने वाले पक्ष के सत्तर वीर रणभूमि में कट कर गिरे। इस प्रकार पलायथा नगर को अपने अधिकार में कर हाड़ाओं ने अपनी सेना के आठ सौ सिपाही इसकी रक्षार्थ तैनात किये। अपनी विजय से प्रसन्न हाड़ा सेना ने आगे प्रयाण किया कि वह खीची महेशदास पक्षी की उड़ान के वेग से सामना करने को आ उपस्थित हुआ। उसके साथ दस हजार की संख्या वाली दुर्द्धर्ष वीरों की फौज थी। दोनों सेनाओं के समूह आपस में भिड़ पड़े।

छत अल्प नृपहिं तउ सिबिर छंडि, हड्डे हुव सम्मुह मृधहिं मंडि।
कुलपट्टप हल्लू बिजय काम, नृप नप्प अनुज हरपाल नाम॥२३॥
जिहिं अनुज जैत्रसिंह हु सजोर, मुक्कुल पुनि काका भटन मोर।
हो मुक्कल यह अरि ग्रसनहार, देवा ऽनुज मोहन सुत उदार॥२४॥
हनि अट्ठ अट्ठ छत लहि गहीर, बचिगो जु साहदल समर बीर।
जिहिं कानि जैत्र हल्लू सुसंध, इक थाल निट्ठि लिय नप्प अंध॥२५॥
पुनि भूप अंस अरि असि प्रहार, हड्डुनअरि टारिय जिहिं उदार।
सो नृप पितृव्य मुक्कल सधीर, बलबिच चतुर्थ यह मुख्य बीर॥२६॥

यद्यपि राजा नरपाल को छोटा सा घाव लगा था पर दूसरे हाड़ा योद्धा उन्हें शिविर में आराम करने को छोड़ गए थे। महेशदास की सेना के सम्मुख जा कर इन हाड़ा वीरों ने घमासान युद्ध छेड़ा। वंश में पाटवी राजा हल्लू ने और राजा नरपाल के छोटे भाई हरपाल ने विजय प्राप्ति के लिए लड़ना आरंभ किया। इनके साथ बलशाली जैत्रसिंह और वीरों के मुकुट चाचा मोकल भी आ डटे। यह काका मोकल बूँदी के राजा देवसिंह का छोटा भाई और मोहनसिंह का पुत्र था। जिसने शत्रु पक्ष के आठ सुभटों को मार गिराया और स्वयं ने भी अपने शरीर पर आठ घाव खाए जो शाही सेना से लड़ते हुए बच गया था। जिस शंका के निवारण हेतु जैत्रसिंह और हल्लू ने प्रतिज्ञा की थी उन्हें उस मतिअंध राजा नरपाल ने बमुश्किल तमाम अपनी थाली में बिठा कर साथ भोजन करवाया। फिर स्वयं राजा के कंधे पर हुए शत्रु के प्रहार को अपनी ढाल पर झेल कर टाला था वह वीर राजा का चाचा मोकल ही था जिसकी गिनती चार बलशाली योद्धाओं में होती थी।

चउ हड्डुन पिल्लिय बल बकारि, हल्लिय महेस उतसन हकारि।
हरराज सेरगढ अधिप हंकि, आयउ महेस उपकार अंकि॥२७॥

मिलि दल उत दो उन अयुत मान, नवसहंस इतहु दो उन निदान।
मचि तुमुल चित्र बढि असिनमार, रुक्किय रवि कौतुक बहुप्रकार॥२८॥

मुक्कल तंहं अरिभट त्रिदस मारि, सोयो समरंगन जस प्रसारि।
खिच्चिय महेस को सचिव खंडि, हरपाल छकिय बपु छत बिहंडि॥२९॥

अतिमोह थकत हरपाल अंग, अरिदल बढ्यो सु धरि जयउमंग।
धीर रु हरि खिच्चिय हनि धक्यो सु, छत अधिक जैत्रसिंह हु छक्यो सु॥

हाड़ा वीर हल्लू, जैत्रसिंह, हरपाल और मोकल चारों ही पूरी ताकत से शत्रु विध्वंस के लिए खीची सेना पर पिल पड़े। उधर से महेशदास ने आगे बढ़ते हुए ललकार की। शेरगढ़ का राजा हरराज जो महेशदास की सहायता के लिए आया था उसने भी मोर्चा लिया। उधर से दोनों राजाओं की सेना मिल कर दस हजार की संख्या वाली थी तो उधर भी बूँदी और बंबावद की दोनों सेनाएँ मिल कर संख्या में नौ हजार थी। दोनों ओर से हुए भयंकर युद्ध में तलवारें आश्चर्यजनक ढंग से चलने लगीं। इस कौतुक को देखने के लिए सूर्य स्वयं ठहर गया। चाचा मोकल अपने सामने पड़े शत्रु सेना के तेरह योद्धाओं को मार अपनी कीर्ति प्रसारित कर स्वयं रणांगन में सोया। महेशदास खीची के मंत्री को मार कर हरपाल ने अपने शरीर पर कई घाव खाए। जब वह मूर्च्छित हो कर रणभूमि में गिरा तो शत्रुपक्ष विजय का उत्साह ले कर आगे बढ़ आया। इधर धीरसिंह और हरिसिंह को मारने में जैत्रसिंह भी अत्यधिक घायल हो गया।

बढि तंहं नृप हल्लू भीमबेस, मूर्छित मतंग थित किय महेस।
छत बिकल झुकत खिच्चिय सछोह, आयो हरराज सु रचत रोह॥३१॥

सरदुव तस हल्लू सहि बिसेस, पहु हनिय खग्ग अरिसिर प्रदेस।
कटि टोप द्वि तिल पैठत कृपान, भीलुक सुडोड भजिगो बिभान॥३२॥

यह देख कर राजा हल्लू स्वयं रौद्र रूप धर कर बढ़ा और उसने जा कर हाथी पर चढ़े हुए महेशदास खीची को घायल कर मूर्च्छितावस्था में हाथी से नीचे पटका। घाव से व्याकुल हो कर खीची को इस तरह गिरते देख कर कुपित हो हरराज अपने शत्रुओं के मार्ग में अवरोधक बन कर आ डटा।

इसके चलाए दो तीरों को अपने शरीर पर झेलता हुआ हाड़ा वीर हल्लू आगे आया और उसने अपनी तलवार का एक भरपूर वार शत्रु पर किया। जिससे हरराज का शिरस्त्राण कट गया और तलवार दो तिल (नाप विशेष) गहरी उसके कपाल में घुस गई। इस प्रहार से तिलमिला कर वह कायरों की तरह बेभान हो कर वहाँ से भाग छूटा।

दल भजत डोड बनि ब्यग्र दंद, मूर्छित महेस लै भजिग मंद।
इतकेहु मुख्य छकि छत अपार, हल्लू हि रह्यो रन करनहार॥३३॥
रनखेत खरो यह धवल धीर, बजवाइ बिजय आनक प्रबीर।
हरपाल जैत्र छतमूढ हेरि, निज सिबिर सबन लायो निबेरि॥३४॥
किय काका मुक्कल दाह कर्म, नप्प हिं जय अप्पिय कछु सुनर्म।
सत अट्ठ गिरे इतके सिपाह, उतकेहि इते लहि वाहवाह॥३५॥

हरराज डोड के भागते ही उसकी सेना भी व्याकुल हो कर वहाँ से भाग छूटी। इसी प्रकार अपने स्वामी महेशदास को मूर्च्छितावस्था में ले कर दूसार दल भी भागा। इधर के पक्ष से कई घावों से छका हुआ एक मात्र वीर हल्लू ही युद्ध करने वाला रह गया। उसी धवल कीर्ति वाले वीर ने विजय के नगाड़े बजवाए। इसके बाद उसने घावों से मूर्च्छित हुए हरपाल और जैत्रसिंह को रणभूमि में ढूंढ़वाया और उन्हें ले कर अपने शिविर में आया। बाद में उसने अपने हाथों अपने चाचा मोकल का दाहकर्म किया। फिर उसने हंसी के साथ (नरपाल युद्ध में नहीं गया था इस बात की खिल्ली उड़ाने के अंदाज में) राजा को जा कर कहा कि आपकी विजय हुई है। इस युद्ध में इस पक्ष के आठ सौ वीर योद्धा मारे गए और लगभग इतने ही शत्रुपक्ष के वीर युद्ध में काम आये।

बिद्रुत बल खिच्चि न प्रहत बिक्खि, अपरहु किय हल्लुव समय इक्खि।
कोटापठाइ घायल कितेक, अल्पछत नप्प लै संग एक॥३६॥
चढिकैं निस हल्लुव चाहुवान, लिय जाइ सीसवाली सुथान।
खिच्चिय भट हे तिन्ह कछु खपाइ, दिय नप्प आन तत्थहु फिराइ॥३७॥
धरि तंहं सतबारह सुभट धीर, पत्ते पुनि कोटा दुव प्रबीर।
किय न्हान हप्प.जैत्र हु जितैंक, अवनीस रहे दुव तंहं इतैंक॥३८॥

खीचियों की पलायन कर भागती हुई और घायल सेना को देख कर राजा हल्लू ने और भी आवश्यक कार्य निबटाए। उसने अपने कई घायलों को उपचार के लिए कोटा नगर में भेजा फिर हल्की सी चोट से घायल राजा नरपाल को साथ ले एक रात को हल्लू चहुवान सीसवाली नामक स्थान पर आया। पीछे शेष रहे कुछ खीची योद्धाओं को मार कर उसने राजा नरपाल की आन दुहाई (विजयाज्ञा) की मुनादी करवाई। अपनी सेना के बारह सौ सिपाहियों को पीछे अपनी जीती हुई भूमि का रखवाला नियुक्त कर अन्ततः वे दोनों वीर कोटा नगर पहुँचे। जब तक हरपाल और जैत्रसिंह दोनों पूरी तरह स्वस्थ न हो गए तब तक दोनों राजा वहीं ठहरे।

जंपिय पुनि हल्लू करन जोरि, हमसों भई सु किन्नी निहोरि।
भुव इम लैदैहो तुमहु भ्रात, जानहिं तब प्रत्युपकार जात॥३९॥

इमकहि बंबावद पत्त अप्प, निज पुर इतआयउ भूप नप्प।
इक समय श्रावनिक तीज तत्त, पुरटोडा पाहुन नप्प पत्त॥४०॥

तब पिुहर हो रानी तृतीय, गिनितास प्रेम बंधन गरीय।
आसार अमित जलपूर जास, बाजिबल तरि सु तटिनी बनास॥४१॥

आगम निसीथ असवार एक, टोडापुर पहुंच्यो निबहि टेक।
सोलंखिन जातहि मह प्रसारि, कतिदिन तंहं रक्खिय प्रसभकारि॥४२॥

बर्द्धापन बादन नटन गान, मचि बिबिध कुतूहल तान मान।
इकदिन गिरि निज्झर गय असेस, नानाविध क्रीड़त दुव नरेस॥४३॥

दोनों भाइयों के नैरोग्यता का स्नान करने पर अर्थात् स्वस्थ हो जाने पर राजा हल्लू ने हाथ जोड़ कर पूरी विनम्रता के साथ राजा नरपाल से निवेदन किया कि हे राजा। अब आपने हमारा कार्य देखा कि हम आपके लिए लड़े हैं। हे भाई! अब हमारी ली हुई भूमि को आप वापस हमें कर दें। हम उसे आपका प्रत्युपकार मान कर स्वीकार करेंगे। इतना कह कर राजा हल्लू अपनी राजधानी बंबावद को आया और उधर नरपाल भी अपने नगर को लौटा। एक बार सावन माह की तृतीया के दिन राजा नरपाल टोडापुर में मेहमान हो कर आया। उस समय उसकी तीसरी रानी भी पीहर में अपने पिता के घर थी। उसके स्नेह को याद कर राजा वहाँ जाने से अपने आप को रोक न सका और राह में पड़ती बनास जो बाढ़ के कारण तट तोड़ती बह

रही थी में अपना घोड़ा झोंक दिया। घोड़े के आसरे बनास नदी को पार कर वह घुड़सवार की तरह आधी रात के समय टोडा नगर में पहुँचा। उसे देख कर उसकी सोलंकी रानी ने उत्सव मनाया फिर बहुत हठ मनुहार के साथ कई दिनों राजा को वहीं रखा। उसके आगमन पर मनाये गए इस उत्सव में रानी ने वाद्य यंत्र बजाने वाले, गायकों और नृत्यांगनाओं के सहारे विविध मनोरंजन का उपक्रम आयोजित करवाया। इसी बीच एक दिन दोनों राजा पास के पहाड़ पर अवस्थित झरने पर गए और वहाँ दोनों राजाओं ने स्नान किया और कई प्रकार की जलक्रीड़ा की।

किल्हन तब गोहो तजि स्वकाय, रोपाल हुतो चालुक्कराय।
सो स्वीय कुमर नरपाल सत्थ, जामिपहित बर्द्धन पत्त जत्थ॥४४॥

पल अन्न सिद्ध हुव चउ प्रकार, अहिफेन भंगि मादक अपार।
बारुनि प्रसंग चालुक बहैं न, नृपकरि सु पान किय रत्तनैंन॥४५॥

थिर इक्क सिला गिरि कटक थान, सम रुचिर दिग्घ आयत समान।
बुंदी पहुँचावन तिहिं बिचारि, हड्डुलिय उड्ड सकट न हकारि॥४६॥

टोडा के राजा किल्हन का तब तक स्वर्गवास हो चुका था और अपने पिता के राज्यासन पर चालुक्य कुमार रोपाल बैठ कर राजा बन गया था। इसलिए राजा रोपाल भी अपने पुत्र नरपाल के साथ अपने बहनोई बूँदी के राजा नरपाल की सेवा में उपस्थित था। उसने अपने प्रिय अतिथि बहनोई के लिए मांस सहित चार प्रकार के अन्नों से तरह-तरह के व्यंजन बनवाए। अफीम, भांग आदि नशे की वस्तुएँ भी वहाँ उपलब्ध थी। यद्यपि सोलंकी मद्यपान नहीं करते हैं पर राजा रोपाल ने अच्छी शराबों की भी व्यवस्था की थी। राजा नरपाल ने अत्यधिक मद्यपान से अपने नैन रतनारे कर लिये अर्थात् अच्छे नशे में हो गया। तभी पहाड़ पर स्थिर पड़ी एक शिला पर राजा नरपाल की नजर पड़ी। वह पत्थर की चट्टान आयताकार थी। अपनी लंबाई, चौड़ाई और ऊँचाई में वह समान थी। राजा ने उसे देखते ही विचार किया कि ऐसी शिला तो बूँदी में होनी चाहिए। वह सोचते ही हाड़ा राजा ने हठपूर्वक ओड (एक जाति विशेष जिसके सदस्य मिट्टी एवं पत्थरों की ढुलाई करते हैं) श्रमिकों को वहाँ बुलवाया और उन्हें आदेश किया कि गाड़ियों में भर कर इसे तुरन्त बूँदी पहुँचाया जाए।

दोहा

बुंदिसहिं बरज्यो बहुन, उपल न दुर्लभ आहि।
सालक अनुमत लहि सुपहु, तदपि पठावहु ताहि ॥४७॥

वहाँ उपस्थित अन्य लोगों ने बूँदी के अधिपति को ऐसा करने से रोका और कहा कि यह पत्थर कोई दुर्लभ पत्थर नहीं है कि इसके लिए जिद की जाए पर यदि यह आपको पसंद आ गया है तो इसके लिए विधिवत् यहाँ के स्वामी अर्थात् चालुक्यराज से इसकी इजाजत ली जानी चाहिए।

षट्पात्

मद्यबिबस महिपाल भनिय यह सुनत कोप भरि।
कातर चालुक कतिक देत दुहिता जु बैर डरि।
रोपाल सु सहि रहिय तदपि नरपाल पुत्र तस,
सह भट ग्राव समीप जाइ ठढ्यो बिरोध बस।
बुल्ल्यो सु लये जात न बिखम इम रजपूतन के उपल।
बल जोहु करहु कैसी बनत कंकहु नन चक्खहिं कुपल ॥४८॥

यह सुनते ही अत्यधिक मद्यपान से विवश राजा उल्टा कुपित हो गया और कहने लगा कि इन चालुक्यों से क्या पूछना जो हमें किसी वैर से डर कर अपनी कन्या ब्याहते हैं। रोपाल ने तो अपने बहनोई का कहा जैसे-तैसे सुन लिया और धैर्य बनाए रखा पर उसके पुत्र कुमार नरपाल से यह (व्यंग्योक्ति) सहन नहीं हुई। वह कुमार अपने साथियों के साथ पहाड़ पर जा कर उस शिला के पास खड़े हो कर विरोध जताते कहने लगा कि इस तरह राजपूतों के आधिपत्य वाले क्षेत्र के पत्थर नहीं ले जाये जा सकते। अर्थात् बिना राजा की आज्ञा के नहीं ले जाए जा सकते। इस पर भी यदि कोई अपना बल आजमा कर बलात् इसे हाथ भी लगाएगा तो उस आदमी के खराब मांस पर गिद्ध पक्षी भी अपनी चोंच मारते हुए डरेंगे। अर्थात् वे भी उस कायर का मांस नहीं खा सकेंगे।

दोहा

करखि खग्ग हड्डहु क्रमत, बहुन गह्यो धरि बत्थ।
मेटत हुव रिस मध्य रहि, सांत्वन करन समत्थ ॥४९॥

रत्ति वहहि बुंदीस रहि, रस बिच बिरस रचाइ।
लै निजरानिय प्रात लघु, आलय प्रबिस्यो आइ॥५०॥

कति मासन अंतर कढत, मन सुहि अनख प्रमानि।
सज्जि कटक खनक रु सकट, उपल सु कड्ड्यो आनि॥५१॥

यह सुनते ही क्रोधित हाड़ा राजा ने अपनी तलवार निकाल ली और कुमार की ओर बढ़ा कि तभी वहाँ उपस्थित कई लोगों ने राजा को बाँहों में भर कर रोक लिया फिर उनसे अपने गुस्से के ठंडा करने का निवेदन करने लगे। बात आई गई हुई। बूँदी के राजा नरपाल ने इस रंग में भंग पड़े वातावरण के बावजूद अपना रात्रि विश्राम वहीं किया फिर प्रात: होते ही अपनी रानी को साथ ले कर वह शीघ्र ही अपने नगर आया। कुछ मास का समय शांति से व्यतीत करने के बाद राजा इस घटना को याद कर मन में क्रोध बसाए हुए अपने दल के साथ रवाना हुआ और पत्थर खोदने वाले श्रमिक और बैलगाड़ियाँ अपने साथ लिये हुए वह सीधा उस शिला के स्थान पर पहुँचा।

षट्पात्

सज्जि गयउ यह सुनत धाव बानि बढात थकि,
रह्यो खिजत रोपाल तदपि नरपाल क्रोध तकि।
मचत अचानक तुमुल रुक्कि पिक्खन लग्गो रवि,
इम भुसुंड उतरत्त परत अद्रिन मनोंकि पबि।
कंकट सिरस्क बाहुल कटत मुंड अटत बिकराल मुख,
सिंहिकासूनु मानहु सतन रवि निश्चल लखि ग्रसन रुख॥५२॥

जब बूँदी के राजा के दल बल सहित आगमन को टोडापुर में चालुक्यों ने सुना तो वे तुरन्त अपने चपल गति वाले घोड़ों को ऐड़ लगा कर पहाड़ की ओर बढ़े। राजा रोपाल ने खीझ कर अपने पुत्र कुमार नरपाल को वहाँ जाने से रोकने की चेष्टा की पर वह कुपित कुमार नहीं रुका। दोनों दलों में भयंकर भिड़ंत हुई जिसे देखने को सूर्य ठहर गया। प्रहारों में दाँतों सहित हाथियों के सिर कट कर गिरने लगे मानो पर्वत पर वज्र गिरा हो। योद्धाओं के कवच, शिरस्त्राण, दस्ताने आदि तलवारों के प्रहारों से कटने लगे। दोनों ओर के वीरों के आश्चर्य में फटे हुए मुख वाले मस्तक गिरने लगे। यह शत्रु

चालुक्य कुमार हाड़ाओं की सेना को देख कर उनसे भिड़ने यों बढ़ा जैसे राहु सशरीर हो कर युद्ध देखने को ठहरे सूर्य को ग्रसने के लिए बढ़ रहा हो।

अरि चालुक लखि आत सेन सम्मुह हुव हड्डुन,
नप्प अनुज डूंगर सु अग्ग भो गहि असि अड्डुन।
सांवल बिजय सुमेरु हेरि चालुक चतुष्क हनि।
स्वबपु पाइ छत सत्त पर्‍यो जीवत प्रबीर मनि।
नरपाल नक्खि तरलित तुरग सजव मिल्यो नरपाल सन,
पहिलैं लाइ दोउ न प्रदर सुरपथ किय छादित सघन॥५३॥

अपने शत्रु को इस प्रकार अपनी सेना पर झपटते देख कर राजा नरपाल का छोटा भाई डूंगरसिंह उसके मार्ग में अवरोध खड़ा करने को अपनी तलवार के साथ आगे बढ़ा पर व्यर्थ उस चालुक्य कुमार नरपाल ने डूंगरसिंह, सावंलसिंह, विजयसिंह और सुमेरसिंह इन चारों चहुवान वीरों को मार गिराया। इस भिड़ंत में उस वीर ने अपनी देह पर सात गहरे घाव खाये पर जीवित बच गया। यह देख कर राजा नरपाल ने अपने घोड़े को चपल गति से बढ़ाया और सीधा चालुक्य कुमार नरपाल के पास पहुँचा। दोनों योद्धाओं ने सर्वप्रथम तो धनुष चला कर पूरे आकाशमार्ग को अपने तीरों से आच्छादित कर दिया।

मारिय इक्क महीप प्रदर चालुक कनपट्टिय।
नृप भुज सत्रु निसंक दुसह चालुक दुव दट्टिय।
तजि कमान तरवारि झारि अरि कर नृप झारिय।
अरिहु सद्धि उपकार प्रास नृपबदन प्रहारिय।
चालुकी जदपि बरज्यो चतुर बालन साहस तदपि बहि।
जग किय अपुब्ब नरपाल जस सिल संटै रनखेत रहि॥५४॥

हाड़ा राजा ने एक तीर चालुक्य कुमार की कनपटी पर मारा। इसके जवाब में चालुक्य कुमार ने दो तीर खींच कर राजा के दोनों हाथों पर मारे। इस बीच हाड़ा राजा ने धनुष छोड़ कर तलवार उठाई और उसका एक प्रहार अपने शत्रु के हाथ पर किया। शत्रु कुमार ने भी पलट कर अपना भाला राजा के मुख पर मारा। चतुर चालुक्य कुमार ने पहले अपने फफा राजा को लडने

से मना किया पर वह मूर्ख हठ कर बढ़ा और इस प्रकार उस राजा नरपाल ने एक पत्थर के लिए रणभूमि में नि:शेष हो कर जगत में अपना यश फैलाया।

दोहा

सालक को अपसब्य सय, बढ्ढिय रन बुन्दीस।
बचिगो सो निज आयु बल, सल्ल जदपि सर सीस॥५५॥

लग्गो तोमर नृप लपन, प्रखर कढ्यो गल पार।
पारि तदपि नव अरि पर्‍यो, दिष्टहि फलत उदार॥५६॥

परसुराम वह पानि लै, चालुक को चहुवान।
पत्तो बुन्दिय करि पिहित, सूचन बिहित समान॥५७॥

बूँदी के हाड़ा राजा ने युद्धभूमि में बढ़ कर अपने साले के पुत्र का दाहिना हाथ ले लिया अर्थात् काट डाला पर फिर भी वह चालुक्य कुमार शेष आर्युबल के सहारे जीवित रह गया। यही नहीं उसकी कनपटी में धंसा तीर का टुकड़ा था पर वह वीर बच गया लेकिन चालुक्य कुमार का मारा हुआ भाला जो राजा के मुँह में लगा वह गले तक चीरता हुआ आरपार निकल गया। राजा ने अपने नौ शत्रु योद्धाओं को इस युद्ध में मारा पर उसका दुर्भाग्य फला कि वह रणभूमि में गिर कर नि:शेष हुआ। चालुक्य कुमार नरपाल का कटा हुआ हाथ चहुवान परसुराम ले कर बूँदी पहुँचा पर उसने सारी सूचनाएँ गुप्त रखीं अर्थात् कोई समाचार नहीं सुनाए।

षट्पात्

भूपदेह अरु भ्रात डारि सिबिका वह डुंगर।
आये बुन्दिय अनुग क उर जाठर कुट्टत कर।
जिम वह चालुक जान डारि उतके टोडा गय।
किय खिल फोजन कलह रुप्पि दुव जाम बडेरय।
नरपाल जात रोपाल नृप तरजि ताहि मोर्‍यो मरन।
हडुन कृपान करहीन व्है नन जीवहु अक्खिय नरन॥५८॥

राजा की मृत देह उसके छोटे भाई डूंगरसिंह के शव के साथ एक पालकी में डालकर सेवक लोग अपनी छाती, माथा (मस्तक) और पेट को

अपने ही हाथों कूटते हुए अर्थात् शोक प्रकट करते बूँदी लाए। इसी तरह उधर के लोग अपने कुमार को यान (पालकी) में डालकर टोडा नगर को गए। शेष रही दोनों ओर की सेना ने अपने पाँव रोपकर आपस में युद्ध किया। जब कुमार की पालकी टोडा पहुँची तो राजा रोपाल ने अपने पुत्र को क्रोधित हो कर घर में घुसने से वापस मोड़ दिया और कहा हाड़ाओं की तलवार से हाथ विहीन हो कर आने से अच्छा है जा मर! वैसे भी इस हालत में अब तेरे अधिक जीवन की आशा व्यर्थ है।

तजि सिबिका चढि तुरग जनक तर्जित चालुक जंहं।
बिनु श्रद्धाहु बहोरि कढ्यो गहि रदन कुसा कंहं।
निजदल मिलत निहोरि जदपि रोक्यो निज जोधन।
जनक बिडारन ज्वलित रंच मन्निय अवरोध न।
इम सब्य करहि असिगहि अनखि हड्डुन घन बल बीच हुव।
अरि जु॰ गिराइ नरपाल वह भिरि इम सुत्तो रंगभुव ॥५९॥

अपने पिता के मुँह से ऐसे बोल सुनते ही रोष से भरा चालुक्य कुमार पालकी छोड़ कर तुरन्त घोड़े पर सवार हुआ। यद्यपि अब उसके शरीर में अधिक ताकत शेष नहीं बची थी फिर भी अपने दातों में घोड़े की लगाम पकड़ कर वहाँ से रवाना हुआ। उसे राह में लौटती हुई उसकी सेना के कई योद्धाओं ने रोकना चाहा पर अपने पिता द्वारा घर से निकाल दिये जाने की आग में जलता हुआ वह कुमार रुका नहीं। उसने अपने शेष रहे बाएँ हाथ में तलवार पकड़ी और अपने घोड़े को दौड़ाता हुआ हाड़ाओं की जाती हुई सेना के समूह पर टूट पड़ा। चालुक्य कुमार ने अपनी इस घायल हालत में ही दो शत्रुओं को काट गिराया और लड़ते हुए ही वह वीर रणभूमि में वीर शय्या पर सोया अर्थात् लड़ते हुए मारा गया।

सोलंखी जयसिंह पंच, बुंदियभट पारिय।
इतके गौड़ अमान त्रि हय रिपु च्यारि प्रहारिय।
इक हल्लू चहुवान डोहि अर्णव चालुकदल।
अनघोरापति एह बद्दि अरि नवक महाबल।
सेसन मुराइ लहि जय सुजस सहयाचल आयो सदन।
उतकेहु दाहि नरपाल इम पहुँचे टोडा बिमनपन ॥६०॥

चालुक्य जयसिंह ने भी इस युद्ध में शत्रु पक्ष के पाँच योद्धाओं को मार गिराया और इधर के पक्ष के अमानसिंह गौड़ ने शत्रु दल के तीन घोड़े और चार वीरों को मौत के घाट उतारा। एक चहुवान हल्लू ने अवश्य चालुक्य सेना रूपी समुद्र को मथ डाला। चहुवान राजा ने युद्ध में बढ़ कर अपने नौ शत्रुओं का संहार किया। इसके बाद हल्लू अपनी शेष बची समर्थ सेना के साथ असमर्थ घायलों को ले कर बूँदी नगर आया। उधर चालुक्य कुमार का दाह संस्कार कर चालुक्यों के सेवक उदास मन से (उनमने) टोडा नगर में आए।

दोहा

बुंदिय नृपबपु आत इत, बीरी बिरचि सुबास।
सहगामिनि सोलंखिनिय, किय कछु नर्म प्रकास॥६१॥

असुचि सब्य अपसब्य इक, प्रिय तुम द्विमुख प्रसिद्ध।
लाऊं अब कैसे लपन, बीरी सौरभ बिद्ध॥६२॥

अपने पति और बूँदी के हाड़ा राजा नरपाल का मृत शरीर जब राजधानी में आया तो सोलंकी रानी ने अपने पति के साथ सहगमन करने के लिए स्नान किया फिर शृंगार किया और मंद मुस्कराहट के साथ सुगंधित मसालों वाला एक पान का बीड़ा बनाया। फिर परशुराम चहुवान के हाथ में एक कटा हुआ दाहिना हाथ निरखकर रानी सोलंकी ने कहा कि हे प्यारे पतिदेव! तुम्हारे मात्र बाँया हाथ बचा है पर वह तो अशुद्ध गिना जाता है। अब मैं आपके मुँह तक पहुँचाने के लिए आपके इस हाथ को पान का बीड़ा कैसे सौंपूँ। फिर अभी आपके दो मुख हैं (यहाँ द्विमुख शब्द में श्लेष है अर्थात् एक भाले के प्रहार से गले में बना हुआ मुँह है और दूसरा आपका मुख, भला किस मुँह में बीड़ा रखूँ? श्लेष में दूसरा अर्थ यह हो सकता है कि द्विमुख का एक अर्थ झूठा अथवा दो बातें कहने वाला होता है। यहाँ व्यंग्य से यह अर्थ निकलता है कि हे नाथ! तुम सदैव कहा करते थे कि मैं शत्रु को मारकर मरूँगा पर मरे अकेले ही। इससे दोमुखे हुए) अब किस मुख में बीड़ा दूँ?

कर सु डारि संभर कहिय, यह भतीज कर आंहिं।
यातैं स्वामिनि धरि अपर, मन्यागत मुख मांहिं॥६३॥

कर दक्खिन चालुक्य को, इम रानिय मुख अग्ग।
परसुराम अवसर पटकि, लहिय वाह सिसुलग्ग॥६४॥

अनघोरापति के अनुज, परसुराम के पानि।
रीझि हार बितरन लगी, तिहिं न लयो हठ तानि॥६५॥

इसी समय परशुराम चहुवान ने रानी के समक्ष वह कटा हुआ हाथ डालते हुए कहा कि यह तो आपके भतीजे का कटा हुआ हाथ है। अर्थात् वह शत्रु भी अब मरे समान ही है। इस अर्थ में यह समझ लें कि आपका पति शत्रु को मार कर मरा है। इसलिए हे स्वामिनी! आप अपने पति के गले में बने दूसरे मुख में यह सुगंधित बीड़ा रखें। अर्थात् यह वीरता से बना मुख है यही पान खाने का अधिकारी है। चालुक्य कुमार का दायाँ कटा हाथ इस तरह रानी के आगे डाल कर परशुराम ने उस कुमार के लिए वाहवाही सुनी। अनघोरा के स्वामी हल्लू के छोटे भाई परशुराम से यह सुन कर रानी उसके हाथ में जब अपना हार पुरस्कार स्वरूप देने लगी तो परशुराम ने हठपूर्वक उसे स्वीकार नहीं किया।

रानी पठयो दूत द्रुत, बदि इम बिरूद बिगोइ।
जीवहु रे नरपाल जिन, हड्डुन अंकित होइ॥६६॥

सुनि पुनि आये निजनसन, कलह सु आयो काम।
चिता ज्वलित प्रमुदित चढी, रक्खि सुजस अभिराम॥६७॥

तत्पश्चात रानी ने अपना एक दूत शीघ्र ही टोडा नगर को भेज कर कहलवाया कि अपने विरुद को बिगाड़कर हे नरपाल! अब तू अपने शरीर पर हाड़ओं द्वारा बनाए गए इस स्थाई चिह्न के साथ जीना। पर वहाँ से आए रानी के दूत ने जब यह समाचार सुनाया कि चालुक्य कुमार नरपाल युद्ध में लड़ते हुए काम आया। यह सुन कर सोलंकी रानी हँसती हुई चिता पर चढ़ी और इस प्रकार जगत में उसने अपना सुयश फैलाया।

तात कुमति लज्जित तदनु, बिद्या नय रन बीर।
बुंदिय पंद्रह बरस बय, हुव अधिपति हम्मीर॥६८॥

सक ख इन्दु गुन भू समय, पायो भव नरपाल।
सो त्रि बेद गुन ससि समय, सुत्तो रन रिपुसाल॥६९॥

अपने पिता के अक्खड़ और जिद्दी स्वभाव से हुए उनके हश्र पर लज्जित हो कर विद्या, नीति और रणक्षेत्र में वीर वह राजकुमार हम्मीर अपनी

पन्द्रह वर्ष की आयु में बूँदी का राजा बना। विक्रमी संवत् के वर्ष तेरह सौ दस में जन्म पाए हुए बूँदी के हाड़ा राजा नरपाल ने विक्रमी संवत् के वर्ष तेरह सौ तैंतालीस में रणभूमि में अपना शरीर गँवाया। अपने शत्रुओं का दुश्मन वह तैंतीस वर्ष तक जी कर स्वर्गलोक को गया।

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे पञ्चम राशौवीतिहोत्र-चण्डासि बीज्यवर्णनबीजहड्डाधिराडस्थिपाल बीज्यानुबीज्यविहितव्या-ख्यानावसरव्याहार्यबुन्दीनरेन्द्रनरपाल चरित्रे नरपाल स्वसीमाक्रामक-शत्रुद्रभिक तोमर कन्याविवोढस्वानुजजैत्र डुङ्गर हल्लू त्रिका सूयन तत्प्रत्यु-पालब्धभ्रातृव्यप्रतिभटभ्रातृपरीक्षितुकामनरपाल कोटाऽऽगमन सस्वागत-निवेदितोपायनजैत्रसिंह स्वाग्रजार्थ सर्वस्वनिवेदन देवानुजमोहन सुत मोत्कलकोटागत नरपालहल्लू युग सप्रसभैकासनोपवेशन तथैवसजैत्र हल्लू नरपाल त्रिक सहभोजन।

श्री वंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण की पंचम राशि में अग्निवंशी चहुवान वंशवर्णन के कारण हड्डाधिराज अस्थिपाल के वंश और अनुवंश की कथा बताने के अवसर के वचनों में बूंदी नरेश नरपाल के चरित्र में नरपाल का अपनी सीमा दबाने वाले शत्रु दहिया और तोमरों की कन्याएँ, विवाहने से अपने छोटे भाई जैत्रसिंह, डूंगरसिंह, हल्लू इन तीनों की असूया करना, भाइयों के प्रति उपालम्भ देने पर भातृत्व की शत्रुओं में परीक्षा करने का उनसे उत्तर पाकर नरपाल का कोटे आना, आये हुए का आदर और नजराना करके जैत्रसिंह का बड़े भाई के अर्थ सर्वस्व निवेदन करना, देवसिंह के छोटे भाई मोहन के पुत्र मोकल का कोटा में गये हुए हल्लू और नरपाल दोनों को हठपूर्वक एक गद्दी पर बिठाना, इसी प्रकार जैत्रसिंह, हल्लू और नरपाल, तीनों को शामिल भोजन कराना।

खिच्चि महेशदासोद्देशाऽभिषेणयन्नरपाल सरणिसमागतपलायथपुर समाक्रमण मोत्कलं वञ्चितैका ऽऽघातदुर्गपतिखिच्चि खड्ग प्रहार बुन्दीश शीर्ष शिरोभाग आग भेदसामर्ष हल्लू प्रहाटनिपातनानन्तरस्व पर परासुसङ्ख्यासूचन जितस्थानरक्षार्थ-न्यस्तसुभटशताऽष्टक पूर्वर्त्तितशिविरस्थापितबुन्दीश क्षतोपचारसानीक-प्रस्थितहल्लू हरपाल

जैत्रसिंह मोत्कल हड्डुचतुष्क समभ्यागतसायुत सैन्यखिच्चि महेस डोडहरराज समायोधन शातित्रयोदश शत्रु हड्डुमोत्कलसिंह शूरलोक-समारोहण निपातितखिच्चिसचिवहड्डुहरपाल संहृतखिच्चिधीरसिंह हरिसिंह हड्डुजैत्रसिंह भ्रातृयुगदुस्सहलोहमोहमिलन प्रहरणबंचन प्रहरण प्रगल्भहल्लू प्रहारपीलुपातितमूढमहेश प्रेक्षणप्रकुपिताऽभियाताऽभियातिडोहरराज पृशत्कजकुट पूजितहारराजिस्वकरवालाङ्कितशिरश्चर्मप्रामारप्रद्रावण तदीक्षणत्रस्तव्याप्ययानसमाहितस्वामिकखिच्चि चमूपराचीन पलायन संस्कारितमृतपितृव्यकमोत्कल कोटाप्रस्थापितसक्षतसमस्तनृपार्थ-निवेदितसनर्मजयरत्ननिर्णीतरव पर परासुसङ्ख्यबुन्दीशसहितदत्त-सौप्तिकहल्लू शीर्षपालिकापुरनरपाल वशीकरण तदूद्रङ्गस्थापितद्वादशशत सुभटप्रत्यागतकोटाविहापितकियद्दिनप्रतिनिन्दितरणबिधुरोह्लाघी भूतहप्य जैत्र जकुट हल्लू नरपाल स्वस्वपुरागमन।

खीची महेशदास के उद्देश्य से नरपाल की युद्धयात्रा के मार्ग में आये हुए पलायथा पुर को लेना, एक आघात से मोकल का राजा को बचाना, और दुर्गपति खीची पहाड़सिंह के प्रहार से बूंदीश की पगड़ी और मस्तक के भाग के कटने से क्रोधयुक्त हल्लू का पहाड़सिंह को मारने के बाद अपने और पराये मुरदों की संख्या की सूचना करना, विजय किए हुए स्थान की रक्षा करने के लिए रखे हुए आठ सौ वीरों को प्रवर्तन करके डेरों में स्थित बूंदीश के घाव का इलाज कराकर फौज सहित प्रस्थान करके हल्लू, हरपाल, जैत्र सिंह और मोकल, इन चारों हाड़ों का सन्मुख आये हुए दस हजार सेना के सहित खिच्ची महेशदास और डोड हरराज से युद्ध करना, तेरह शत्रुओं को मारकर मोकलसिंह का वीर लोक को जाना, खीची के मंत्री को मारकर हाड़ा हरपाल और खिच्ची धीरसिंह और हरिसिंह को मारकर हाड़ा जैत्रसिंह, इन दोनों भाइयों का दुस्सह शस्त्रों से मूर्छित होना, शस्त्र से ताड़ना किये हुए और शस्त्र चलाने में प्रौढ़ ऐसे हल्लू के प्रहार से हाथी से गिराये हुए मूर्छित महेशदास को देखकर क्रोध युक्त आये हुए शत्रु डोड हरराज के दो बाणों से पूजित होकर हल्लू का खड्ग के अंतिम प्रहार से हरराज के मस्तक को चिह्नित करके प्रामार हरराज को भगाना, उसको देखकर सेना का व्याकुल होकर मूर्छित स्वामी खीची महेशदास को यान में बैठाकर विमुख होकर

भागना, मरे हुए काका मोकल का अग्निसंस्कार करके सब घायलों को कोटा भेजकर राजा को हँसी के साथ जय रूपी रत्न निवेदन करके युद्ध में अपने और पराये मुर्दों का निर्णय करके बूंदीश सहित रतिवाह देकर हल्लू का सीसवाली नगर को फिर से नरपाल के अधीन करना, उस नगर में बारह सौ सुभट रखकर वापस कोटा में आकर कई दिन बिताकर युद्ध में व्याकुल नरपाल की निन्दा करने वाले हरपाल और जैत्रसिंह दोनों के आराम होने पर हल्लू और नरपाल का अपने-अपने नगरों में आना।

तदनन्तरपितृपस्त्यप्रस्थापिततृतीय द्वितीय कृच्छ्रोत्तीर्णप्रावृडासारप्रवृद्धवाशिष्ठी-पात्रश्रावणीतृतीया प्राघुणकनरपाल टोडाख्यपुरप्रविशन प्रापितनाना-विनोदप्रमोदसानुमन्निर्झरसमीपश्यालकसम्पादितनानाभोज्य-भोक्ष्य माणकापिशायनविक्षिप्तबुद्धितिरस्कृतश्वाशुर्यवर्गनरपाल स्वपुरप्रेषणा-र्थतत्रत्यैक शिलानिष्कासननिमित्तखनक शकट समाकारण जनकजामि-जानिदुर्वाक्य विवृद्धमन्युवारकपितृप्रतीपकोशाकृष्टकरवालस्वपरिकरसमेतचालुककुमारनरपालशिलाखनकसंरोधन मध्यस्थानुनीतप्रत्याकारप्रत्याहितकृपाण दुर्मनोन्युषितैक रात्रचालुकीसमुपेत-दुराराध्यनरपाल बुन्द्यागमन सामान्तरसमयसज्जखनक शकट सैन्य पुनः प्रतिगतनरपाल शिलानिष्कासनश्रवणसामर्षपितृप्रतिकूलपुनरागत-चालुक्यकुमारसमायोधन शकलितचालुक्यचतुष्क सोढप्रहारसत्त्वकाऽसमर्थसायुर्बलनृपाऽनुजंडुङ्गरसिंह प्रधनाऽजिरपतन।

इसके बाद पिता के घर में ठहरी हुई तीसरी रानी के स्नेह से द्वितीय वर्षाऋतु में जलधारा से बढ़ी हुई बनास नदी को कष्ट से उतर कर श्रावण की तीज पर नरपाल का पाहुना होकर टोडापुर में जाना, अपनी इच्छा के अनुसार नाना प्रकार के विनोद और प्रमोद प्राप्त होकर पर्वत के झरने के समीप साले के सम्पादन किये हुए नाना प्रकार के भोज्य भोजन करने पर मद्य से बिगड़ी हुई बुद्धिवाले ससुरे की परगह को तिरस्कार करके नरपाल का अपने नगर भेजने के लिये वहाँ पर स्थित एक शिला को निकालने के लिये बेलदार और गाड़ियों को बुलाना, पिता के मना करने के विरुद्ध बहिन के पति के दुर्वाक्यों से क्रोध बढ़कर म्यान से खड्ग निकाल कर परगह सहित सोलंकी कुमार नरपाल का शिला खोदने वालों को रोकना, मध्यस्थ लोगों की प्रार्थना करने

से खड्ग को म्यान में करके उदास मन से एक रात्रि वहीं निवास करके सोलंकिनी सहित कठिनाई से आराधना करने योग्य नरपाल का बूँदी आना, कई महीनों बाद बेलदार, गाड़ियाँ और सेना सज्जित कर वापस जाकर नरपाल का शिला निकालना सुनकर क्रोध सहित पिता के विरुद्ध फिर आये हुए सोलंकी कुमार का युद्ध करना, चार सोलंकियों का भेदन करके बड़े सात प्रहारों से असमर्थ आयुर्बल सहित राजा के छोटे भाई डूंगरसिंह का युद्धभूमि में गिरना।

प्रासप्रत्यनीकपत्रवाहयुग प्रहारबुन्दीशनिशितनिस्त्रिंशचालुक्य-दक्षिणकरकर्त्तन शङ्खसोढैक कलम्बचालुक्यकुमारतोमरविद्धवदन कृकनिपातिताभियातिनवक बुन्दीशमहानिद्रालभन बुन्दीप्रस्थापितस्वामिसङ्कर टोडागमिताऽसमर्थकुमार सैन्यद्वय संयोधन पितृप्रतियामित स्वैकहस्तसंहृतद्विड्द्वय कुमारनरपालबुन्दीगतिग्रहण पर पक्षीयचालुक्यजयसिंह बुन्दीशसुभटपंचक संहरण हड्डपक्षीयगौड़ामानसिंह रिपुचतुष्क वाजित्रिक विध्वंसन निपातितारिनवक प्रतिगमितप्रत्यनीकसमर्थासमर्थस्वामिसैन्य समेतचाहुवाणहल्लूबुन्द्याव्रजन सहगमनसमयसनर्मस्वस्वामिमन्या-वेधमुखबीटकबितितीर्षुसमुचितकरमृगयमाणराज्ञीचालुकीपुरश्चाहुवाण-परशुरामस्वीमततद्भ्रातृजदक्षिणदोर्दर्शन भ्रातृजसंग्राममरणश्रवण-ससम्मदसमाश्लिष्टस्वामिसंहननराज्ञीचालुकी पावकप्रविशन पंचदश वर्षवयस्कहड्डाधिराजहम्मीर पितृपट्टसमादान नरपाल जन्म मरण समयसम्वत्समासंख्यानं पंचमो मयूखः ॥५॥ आदितो द्वापंचाशदुत्तरैक-शततमः ॥१५२॥

शत्रु के दो बाणों के प्रहारों को प्राप्त करके बूँदीश का तीखे खड्ग के प्रहार से सोलंकी के दाहिने हाथ को काटना, ललाट की हड्डी में एक बाण सहन करके सोलंकी कुमार का बूँदी के राजा के मुख और गर्दन को भाले से बेधना और नौ शत्रुओं को मारकर बूंदीश का काम आना, स्वामी की देह को बूंदी भेजने और असमर्थ कुमार के टोडा गये बाहर दोनों सेनाओं का युद्ध करना, पिता के बाहर भेजने पर एक हाथ से दो शत्रुओं का संहार करके कुमार नरपाल का बूंदीश की गति को प्राप्त होना अर्थात् काम आना, शत्रु

सोलंकी जयसिंह का बूंदी के पाँच सुभटों को मारना, हाड़ों के पक्षवाले गौड़ अमानसिंह का चार शत्रु और तीन घोड़ों को मारना, नौ शत्रुओं को मार कर पीछी फिरी हुई समर्थ और असमर्थ स्वामी की सेना सहित चहुवान हल्लू का बूंदी आना, सती होने के समय मस्करी (परिहास) से अपने स्वामी के गर्दन में बेधन किये हुए मुख में बीड़ा देने की इच्छा से दाहिने हाथ को ढूंढ़ती हुई रानी सोलंकिनी के आगे चहुवान परशुराम का अपने विचार से उस रानी के भतीजे का दहिना हाथ दिखाना, भतीजे का युद्ध में मरना सुनकर हर्ष सहित स्वामी के शरीर का आश्लेष (मिलाप) करके सोलंकिनी रानी का अग्नि में प्रवेश करना, पन्द्रह वर्ष की अवस्था वाले हड्डाधिराज हम्मीर का पिता का पाट लेना, नरपाल के जन्म और मरण समय के सम्बत् की संख्या सूचन करने का पाँचवाँ मयूख समाप्त हुआ। और आदि से एक सौ बावन मयूख हुए।

प्रायो ब्रजदेशीय प्राकृत मिश्रित भाषा

दोहा

गहि पहिलें चित्तौड़गढ़, तंहं रहि मास कितेक।
सोनगिरे प्रामार स्वक, त्रायक रक्खि तितेक ॥१॥
पिल्लि कटक हरराज पर, अप्पसु दिल्लिय आइ।
साह भयो अतिबल असह, अग्जन रज्ज उठाइ ॥२॥

जब बादशाह अलाउद्दीन ने चित्तौड़गढ़ को अपने आधिपत्य में लिया तब कुछ मास उसने वहाँ व्यतीत किये। उसके बाद वह अपने अधिकार क्षेत्र का उचित प्रबन्ध कर दिल्ली वापस लौट गया। उसने चित्तौड़गढ़ की रक्षा के लिए सोनगिरा चहुवान और प्रामारों को तैनात किया। दिल्ली जा कर उसने बाद में राजा हरराज पर अपनी सेना भेजी। इस तरह बादशाह धीरे-धीरे असह्य बल वाला हो गया और तब उसने आर्य राज्यों को जीतना शुरु किया।

षट्पात्

पच्छिम उत्तर पुब्ब दियउ दुद्धर पठाइ दल।
सूबा निजनिज सीम बंधि तिन किय प्रबंध बल।
दक्खिन आयत देखि सुभट बिस्वस्त बंधु सजि।
सहसतीस मित सूर प्रबल पठये भावित भजि।

चतुरंग लंघि रेवा चलत अरे समुह आपाच्य इन।
हुव प्रधन कल्पसो घोर व्है अब बचन न किम बाच्यइन[1] ॥३॥

बादशाह अलाउद्दीन ने पश्चिम, उत्तर और पूर्व दिशा में सैन्य अभियान चलाने के लिए अपने बड़े-बड़े दल भेजे। जीते हुए राज्यों की सीमा का निर्धारण कर उसने वहाँ आवश्यक प्रबंध के साथ सुरक्षा के लिए अपने थाने बनाए। इसके बाद उसने दक्षिण दिशा वाले क्षेत्र को विस्तृत समझ अपने विश्वासपात्र बांधवों के साथ तीस हजार की जंगी फौज भेजी। यह चतुरंगिनी सेना जब नर्बदा नदी को पार कर उधर पहुँची तो दक्षिण प्रदेश के राजाओं ने सोचा कि अब तो प्रलंयकारी युद्ध होगा। इसमें यदि हम बच गए तो भी अधम यवन का आधिपत्य सहन करना होगा। इससे बेहतर है कि हम अपनी जान की बाजी युद्ध लड़ने में ही लगा लें।

दोहा

अग्गहु लिय तुरकन अवनि, दक्खिन कछुक दबाइ।
सुतो सही सब लखि समय, प्रधन पराजय पाइ ॥४॥

रनथंभ रु चित्तोर लै, मिच्छ सु अब जयमत्त।
बाढन लग्गो सीम बहु, पिक्खत नृपन प्रमत्त[2] ॥५॥

दक्खिन पहुँचत साह दल, नव भुव लेत निहारि।
मेकलजा परतट मिले, रचि उत के नृप रारि ॥६॥

पूर्व में भी कुछ तुर्कों ने दक्षिण प्रदेश के राज्यों की कुछ भूमि को हड़पा था जब दक्षिण के कुछ राजाओं की युद्ध में पराजय हो गई थी। लगता है वैसा ही कठिन समय अब फिर आ उपस्थित हुआ है। रणथंभोर और चित्तौड़गढ़ जैसे अभेद्य और अजेय दुर्गों को भी इस म्लेच्छ ने जीत लिया। इस विजय से यह और अधिक मदोन्मत हो उठा। वह बेधड़क हो कई राजाओं की राज्य सीमा को तोड़ने लगा। यहाँ के राजाओं को आलस्य से भरे देख उसका उत्साह बढ़ता ही जा रहा है। दक्षिण दिशा में बढ़ती शाही सेना ने जब यहाँ की नई भूमि को देखा तो उसे हड़पने की इच्छा हुई पर नर्मदा नदी के तट को पार करते ही उसे रण करने को उत्सुक स्थानीय राजाओं की सेना तैयार मिली।

टिप्पणी १. छंद संख्या ३ में आपाच्य इन और बाच्यइन में अन्त्यानुप्रास है।
२. छंद संख्या ५ में यमत और प्रमत्त के कारण अन्त्यानुप्रास है। -सं.

पादाकुलकम्

बिजयनगर बीजापुर बीडर, भागनैर आसेर भूपबर।
कुंड रु बदर धामिनी पहुकति, प्रतिष्ठान नासिक पुण्यापति॥७॥

इत्यादिक लघु गुरु नृप इक्कत, सीमा खिलहु जात करि सम्मत।
संगर रचतभये मिच्छन सन, मारत मरत धरत अग्गहि मन॥८॥

इक्क न जदपि मुर्यो अवनीपति, कहियत तदपि बलिष्ट कालगति।
बीडर भागनगर बीजापुर, धामिनि कुंड भूप धारकधुर॥९॥

ए नृप पंच काम रनआये, स्व स्व देस अवसेस सिधाये।
भूप मरे तिनकीहु दब्बि भुव, हठी जवन तिहिं काल असह हुव॥१०॥

विजयनगर, बीजापुर, बीदर, भागनैर, आसेर के राजा एकत्र हुए। उनके अतिरिक्त कुंड, बदर, धामिनी, प्रतिष्ठानपुर, नासिक के कई पुण्यवान राजा वहाँ आए। यहाँ छोटे बड़े सभी राजा अपने-अपने राज्य की सीमा की चिन्ता करते हुए एकमत हुए। सभी ने कहा कि मिल कर यवनों से युद्ध किया जाए। मरेंगे-मारेंगे पर उन्हें आगे नहीं आने देंगे यह सोच कर सभी शाही यवन सेना से भिड़ पड़े। इस युद्ध में एक भी राजा ने पीठ नहीं दिखाई पर फिर भी समय की गति बलवान कही गई है क्योंकि इस युद्ध में जब बीदर, भागनगर, बीजापुर, धामिनीपुर और कुंड के राजा काम आँए। इस प्रकार इन पाँच बलवान राजाओं के मरते ही शेष राजा वहाँ से भाग कर अपनी-अपनी राजधानी में चले गए। जो पाँच राजा मारे गए उनकी भूमि यवन सेना ने अपने अधिकार में कर ली। इस तरह यवनों का असह्य हठ सफल हो गया।

सचरणगद्यम्

जा सेना के सरदार पहिले पातसाह जलालुद्दीन हूँ सों बिसेस बढाइ बैराट प्रमुख के ही दुर्ग लैं कैं दक्खिन में अलावुद्दी न को दुस्सह प्रताप दिखावत भये।

ऐसें च्यारि ही दिसा में पहिले अधिकारिन कों प्रतारि आपुनें थानां जमाइ सर्बही नरेसनसों दिल्ली आज्ञा के अधीन रहि बो लिखावत भये।

दक्खिन में गई जा सेना के सरदारन बीजापुर भागनगर बैराट इन तीन ही दुर्गन में आपुनों निवास राखि अलावुद्दीन को अमोघ आदेस प्रवृत्त कीनों।

अरु इन ही नें प्रारब्ध के प्राबल्य करि जिततित आपुनों जोर जमाइ साह को सीघ्र मरिबो हू सुनि आपही उतके अधीस व्है रहे तिननैं नवीन अवनी के अर्जन सों उपराम न लीनों॥११॥

शाही यवन सेना के जिन सरदारों (नायकों) ने बादशाह जलालुद्दीन के समय से ही अधिक सीमा बढ़ा कर वैराट आदि दुर्गों पर फतह कर दक्षिण में बादशाह अलाउद्दीन का आधिपत्य जमाया और उसके दुस्सह प्रताप का डंका बजवाया। दक्षिण की तरह चारों दिशाओं में पूर्व के अधिकारियों को निकाल कर अपने थाने स्थापित किए और इस तरह सारे राजाओं से दिल्लीश्वर बादशाह की आज्ञा के मातहत रहने के इकरार लिखवाए। दक्षिण में जो सेना गई थी उसके नायकों ने बीजापुर, भागनगर, और वैराट इन तीनों दुर्गों में अपना निवास बनाया और वे बादशाह की अमोघ आज्ञा का पालन सभी से कराने लगे। उन नायकों ने अपनी भाग्य की प्रबलता के कारण जहाँ जहाँ अपना जोर जमा कर बादशाह का राज्य जमाया था वे सभी बादशाह के मरने की खबर सुनते ही उन दुर्गों के खुद स्वामी बन बैठे। फिर भी उन्होंने अपने राज्य की सीमा बढ़ाने के लिए नई-नई भूमि को जीतना नहीं छोड़ा। वे अपनी इस भूमिका से निवृत नहीं हुए।

दोहा

साह जाइ चित्तोरसन, दिल्लिय चउ हि दिसान।
पठये दल तिन किय प्रथम, हाकिमजन गन हान॥१२॥

गोचर कबहुन कालगति, कछु प्रबंध इम कीन।
याहि बरस तजि एह गो, देह अलावुद्दीन॥१३॥

देखहु कुतबुद्दीन सों, इत दस साहहि आप।
साह अलावुद्दीन सम, पायउ किहिं न प्रताप॥१४॥

मिच्छन में हु न धर्ममति, हनि इक इक प्रभु होइ।
हनि गोरिन खलजी हुव रु, खलजिन तुग़लक खोई॥१५॥

दिल्ली के बादशाह ने चित्तौड़गढ़ जा कर उस पर विजय प्राप्त की पर

उसके बाद वह अपने किसी विजय अभियान में स्वयं नहीं गया। उसने अपने दल भेजे। उसमें जिन्हें नायक बना कर भेजा था उन्ही हाकिम लोगों ने बादशाह को हानि पहुँचाई। काल की गति को कौन देख समझ पाया उसने ऐसा प्रबन्ध किया कि इसी वर्ष अलाउद्दीन ने अपनी देह को त्याग दिया अर्थात् कालवश मारा गया। हे राजा रामसिंह! कुतुबुद्दीन से लगा कर लगातार कुल दस बादशाह हुए पर आप देखें कि उनमें से कोई अलाउद्दीन जितना प्रतापी नहीं हुआ अर्थात् यह बादशाह अलाउद्दीन सब से अधिक प्रतापी हुआ। आप देखें कि म्लेच्छों में धर्माचरण की मति नहीं पाई जाती। वे एक दूसरे को मार कर ही स्वामी बनते रहे। जैसे गौरी को मार कर खिलजी बना और खिलजी की सल्तनत को तुगलक ने हथियाया। ये आपस में ही एक-एक को मार कर शासक बने।

सचरणगद्यम्

जैसें दिल्ली के दसम पातसाह आपनें काका निजधर्म के निधान महासज्जन खलजी जलालुद्दीन कों बिस्वातघात सों मारि ताही को भतीज यह अलावुद्दीन उग्र सासन के अनुसार दिल्ली को अधीस भयो।

तैसें ही पहिले कारा में डारे याके भतीज सुलैमान के काहू दास नें चित्रकूट तोरि पीछें आगमन के अनंतर वाही अब्द में यह अलावुद्दीन हू मारि लयो।

ता पीछें बारहों पातसाह ऊमर भयो सोहू थोरे ही मासन में गत होई वाही अलावुद्दीन को मूढ अंगज मुबारिक साह भयो सोहू अल्प ही अब्द में आपुनें काहू दास के कर सों हन्यों गयो ऐसें अनेक अघन करि बिक्रम के सक की गज गुन गुन गोत्रा सम्मित समा में खलजीन के घरानें सोंहू दिल्ली की अधीसता छूट गई।

सो यथार्थ न्यायकारक सुसील दया के निधान तीजी कौम के तुगलक चतुर्दस में पातसाह गयासुद्दीन के अधीन भई॥१६॥

जिस प्रकार दिल्ली के दसवें बादशाह ने अपने चाचा को जो अपने धर्म को मानने वाला बड़ा सज्जन पुरुष खिलजी जलालुद्दीन था को विश्वासघात पूर्वक मारा और उसी का भतीजा यह अलाउद्दीन अपने निर्मम आदेशों के अनुसार दिल्ली का स्वामी बना। इसी प्रकार इसी के एक भतीजे सुलेमान

को इसने कारागार में बंदी बना कर रखा था उसके किसी दास ने चित्तौड़गढ़ को जीत कर वापस दिल्ली आने पर इसी वर्ष में बादशाह अलाउद्दीन को मार डाला। इसके बाद दिल्ली का बारहवाँ बादशाह ऊमर बना जो थोड़े ही महीनों बाद मर गया और उसकी जगह पर उसी अलाउद्दीन का मूढ पुत्र मुबारिक दिल्ली का तेरहवाँ बादशाह बना। यह भी कुछ ही वर्षों में अपने ही किसी दास के हाथों मारा गया। ऐसे अनेक पापपूर्ण कृत्यों के कारण विक्रमी संवत् के वर्ष तेरह सौ अड़तीस में खिलजी घराने से दिल्ली की सल्तनत छूट गई। इसके बाद दिल्ली यथार्थ में न्याय करने वाले, सुशील, दयावान पर अलग कौम के तुगलक गयासुद्दीन के आधीन हुई। तुगलक दिल्ली के चौदहवें बादशाह हुए।

तारीख फिरिस्ता दिक यावनी के पुस्तकन में तो त्रयोदसम पातसाह कुत्बुद्दीना ऽपरनाम मुबारिकसाह खलजी के अनंतर इनही के कुटुंब को खुसरोखान नाम चउदहों पातसाह अधिक लिख्यो परंतु आपुनें ग्रंथन में न जान्यौं।

अरु या समय के सासक सर्ब सामग्री संपन्न बड़े बुद्धिमान सत्यवादी साहब लोकन हू भारतवर्षीय इतिहास भूगोलदर्पण भूगोलबिचार जुगराफिया प्रमुख केही पुस्तक बनाये तिनहू मैं खलजी मुबारिकसाह तुगलक गयासुद्दीन इन दोउन के अंतर में खुसरोखान पातसाह अधिक न मान्यों।

ऐसैं सूचित सक समा के समय चउदहों पातसाह तुगलक गयासुद्दीन दिल्ली के तखत बैठि आपुनें धर्म नीति के आगमन के अनुसार आर्यावर्त में अमोघ आदेश करत रह्यो। अरु राज्य के कार्य पहिलैं सों बिगरे दीसे तिनकों सुधारि उपथाकरि परखे भरोसा के अधिकारी ऐसे प्रवृत्त किये जिन आगे न्याय कों आदि लेकैं समस्त व्यवहारन में सबको ही पक्षापात टरत रह्यो॥१७॥

हे राजा रामसिंह! लेकिन फारसी भाषा में लिखी इतिहास की पुस्तक 'तारीख फिरिस्ता' में तो तेरहवाँ बादशाह कुतुबुद्दीन जिसका अवर नाम मुबारिकशाह खिलजी था लिखा है और उसके बाद इसी कुटुम्ब के खुसरोखान का चौदहवाँ बादशाह होना लिखा है पर ऐसा हमारे ग्रंथों में नहीं देखने में

आया। इस समय के शासक सर्व सामग्री से युक्त, बड़े बुद्धिमान, सत्यवादी हैं इन अंग्रेज लोगों ने भी *भारतवर्ष संबंधी इतिहास, भूगोल दर्पण, भूगोल विचार, जुगराफिया,* आदि कई ग्रंथ लिखे हैं। इन ग्रंथों में खिलजी मुबारिकशाह को तेरहवाँ और गयासुद्दीन तुगलक को चौदहवाँ बादशाह लिखा है। इन दोनों के बाद खुसरोखान को अपने ग्रंथों में बादशाह नहीं माना। ऐसे सूचित समय में चौदहवें बादशाह के रूप में तुगलक गयासुद्दीन दिल्ली के तख्त पर बैठा। उसने बादशाह हो कर अपने धर्म और नीति के शास्त्रों अर्थात् कुरान वगैरह के अनुसार आर्यावर्त में अपना एकछत्र शासन किया। उसने जहाँ-जहाँ भी अपने राज्य के कार्य बिगड़े हुए देखे उन्हें सुधारा और अच्छी तरह परख कर अपने विश्वासपात्र अधिकारी, वजीर आदि नियुक्त किए जिन्होंने न्यायपूर्वक राज्य के सभी व्यवहारों में पक्षपात को मिटाया।

दोहा

सदय गंभीर रु न्याय सम, साह गयासुद्दीन।
कति गढ जीरन सु दृढकरि, कति नूतन गढ कीन॥१८॥

पथ भय देसन मेटि पहु, अभय करे सब ओक।
लै बहुधन बिहरन लगे, लहु सोदागर लोक॥१९॥

पुरबुंदिय हम्मीर पहु, पाटव सब इत पाइ।
जई जनक हेतुक कुजस, दिय जस अग्ग दबाइ॥२०॥

गंभीर व्यक्तित्व के धनी, दयावान और न्यायप्रिय बादशाह गयासुद्दीन तुगलक ने पुराने दुर्गों को फिर से दृढ़ बनाया और उनके साथ ही साथ नये दुर्ग भी बनवाए। पूरे देश में राहगीरों के भय को मिटा कर उसने सारे घरों को अर्थात् यहाँ के निवासियों को अभय किया। उसके राज्य में बड़े-बड़े साहूकार अपने व्यापार के लिए बड़ी-बड़ी रकम ले कर बेखटके इधर उधर जाने लगे। इधर बूँदीपुर के स्वामी हाड़ा राजा हम्मीर ने अपनी पूरी चतुराई से अपने पिता के कारण हुए अपयश को अपने यश के आगे दबा दिया अर्थात् भुला दिया।

सचरणगद्यम्

एगारहैं पातसाह खलजी अलावुद्दीन के पीछैं तो जितितितही जोर पाइ इलाके इलाके में आप आपके इलाके के अधीस मानि अनेक सूबेन

के सरदारन च्यारि ही दिसा में दिल्ली सों मुररि पातसाही पर डमर डास्यो।

अरु दक्खिन के हाकिमन मालव को सूबा मंडूपुर सों लगाइ कर्णाट को सूबा भिन्न करि बीजापुर की हाकिमी सों निबास्यो।

आपुनें आपु नें सूबा के बसबर्त्ती समीप के नरेसन सों दिल्ली को भागधेय बलात्कार करि परोक्ष ही लैन लगे।

अरु अनेक भूपन कों बुलाइ स्वपक्षपाती करिबे कों बिना ही व्यय जस जानि प्रतीपन के देस दैन लगे॥२१॥

ग्यारहवें बादशाह खिलजी अलाउद्दीन की मृत्यु के बाद यहाँ-वहाँ नियुक्त सुबेदारों ने अपने-अपने क्षेत्र पर स्वयं का अधिकार जमा लिया। खुद मुख्तियार हो कर अपने आपको उस क्षेत्र का स्वामी गिनते हुए चारों दिशाओं के सुबेदार दिल्ली से विमुख हो गए और मनमाने ढंग से लूट खसोट करने लगे। और दक्षिण के हाकिमों ने मालवे प्रान्त के सूबों मांडू से लगा कर कर्नाटक के सूबे अलग-अलग कर दिये फिर बीजापुर को हाकिमी से निकाला। वे सभी हाकिम अपने-अपने सूबे के पास वाले राजाओं से दिल्ली का कर बलात् और परोक्ष ही लेने लगे। यही नहीं कई राजाओं को बुला कर वे उन्हें अपने पक्ष में करने के लिए अपने शत्रुओं के देश जागीर में देने लगे। वे बिना गाँठ का कुछ भी खर्च किये इस प्रकार यश भी प्राप्त करने लगे।

इतकों बुंदी को अधीस हड्डाधिराज हम्मीर मंडपपुर के प्रतिहार नरेस रोपाल की भावती नाम पुत्री को पानिग्रहन करत भयो।

अरु दहिया रु गौड़ द्वै ही सत्रुन को सातन करि करउर लक्खैरी द्वै ही द्रंगन में आपुनों अनीक धरत भयो।

खिच्चि महेसराज सों तीन जुद्धजीति मऊ रहलावनि प्रमुख पिता के गुमाये प्रांत स्वकीय बसबर्त्ती करि ओर हू ओर ओरतें अछूती अवनी दाबि सीमा के समीपी सत्रुन के सदन सूते बैर जगाये।

अरु केथोनि के तोमर सासना के अनुसार जानि बूँदी के सेवक करि चरन लगाये॥२२॥

इधर बूँदी के स्वामी हाड़ा राजा हम्मीर ने मंडोवर के प्रतिहार राजा रोपाल की भावती नामक पुत्री से विवाह संपन्न किया। उसने दहिया और

गौड़ दोनों ही अपने शत्रुओं का नाश कर करउर और लाखेरी दोनों ही नगरों में अपनी सेना को तैनात किया। खीची महेशदास से लगातार तीन युद्ध जीत कर मऊ, रहलावनी आदि अपने पिता के समय में खोए हुए क्षेत्रों को फिर से स्वयं के अधिकार में कर लिया। इसके अतिरिक्त उसने इधर-उधर से अपने राज्य के विस्तार के लिए नई भूमि भी जीती। अपने राज्य की सीमा के करीबी शत्रुओं के घरों में उसने भूले हुए वैर जगाए अर्थात् अपने सीमावर्ती शासकों से अपने सारे पुराने वैर लिये। उसने केथोनी के तंवर को अपनी आज्ञा के अधीन कर उसे बूँदी का मातहत बनाया और अपने चरणों में झुकाया।

षट्पात्

नगर सेरगढ नाह डोड हरराज बृद्ध बय।
बिरचिय चरमबिबाह मरत मतिमंद जरामय।
जनन गौड़ जिहिं जनन रहि सु कतिदिन तंहं रानिय।
सुनत भई बुंदीस सुजस पुनि पाप प्रमानिय।
पठयो पलास लिखि इम पिहित धरिधक पूरब बैर धुव।
लै जाहु हम्म बैरिन लखत हमहु डोड गुनगौरि हुव॥२३॥

शेरगढ़ नगर का स्वामी डोड वंशीय राजा हरराज जो उम्र से वृद्ध था उस मतिमंद ने अपना अंतिम विवाह बुढ़ापे में किया। गौड़ वंश में जन्मी वह रानी कई दिनों तक तो शेरगढ़ में रही। इस बेमेल विवाह से उकताई रानी के मन में पाप उठा जब उसने बूँदी के राजा का सुयश सुना। इस गौड़ रानी ने चुपके से एक पत्र लिख कर हठपूर्वक गुप्त रीति से अपने राज्य के शत्रु के पास भिजवाया। इसने पत्र में लिखा कि मैं इस डोड वंश की गणगौर हूँ। हे हम्मीर! आप यहाँ आकर अपने शत्रु के देखते मेरा हरण करें।

दोहा

पहुं बंचि सु दल जदपि पटु, तदपि बैर हठ तानि।
मंजु नगर निज जित मऊ, अह निबस्यो बहु आनि॥२४॥

माघ तपस्य दु मास रहि, जंपिय मन नय जोरि।
दिन जिहिं लैगो ताहि दिन, गहों जियत गुनगोरि॥२५॥

राजा हम्मीर ने पत्र पढ़ा तो लाख चतुर होते हुए भी उसने अपने वैर

को हठपूर्वक याद किया और अपने जीते हुए सुन्दर नगर मऊ में आया। यहाँ पहुँच कर राजा ने कुछ दिन आराम के साथ निवास किया। उसने मार्गसिर और फाल्गुन दो मास तक यहाँ रह कर मन ही मन में नीतिपूर्वक योजना बनाई। राजा ने अपनी योजना के अंतर्गत यह तय किया कि जिस दिन वह डोड बूँदी की गणगौर को जबरन उठा कर ले गया था उसी दिन शत्रु के घर की जीवित गणगौर का हरण करना है। इसलिए राजा इसी दिन की प्रतीक्षा करने लगा।

षट्पात्

मऊ इम सु हम्मीर रह्यो सुहि समय निहारत।
मधुसित तीज मिलाप चढ्यो दल अतुल प्रचारत।
बाहिर उपबन बिरचि गोठि भोजन चसकन गहि।
हुव प्रमत्त हरराज चित्त अरिजन अभाव चहि।
[illegible]सु त्रि जाम दिन रहि गहन सेनअयुत सह लखि समय।
तंहं जाइ मारि रच्छक तिय सु हसि गहि लिन्नी पिट्ठि हय॥२६॥

हाड़ा राजा हम्मीर इस तरह मऊ नगर में रह कर उस दिन की प्रतीक्षा करने लगा और उसी दिन अर्थात् चैत्र माह के शुक्ल पक्ष की तृतीया तिथि के दिन अपनी सेना को फैलाता हुआ शेरगढ़ पर चला। उधर राजा हरराज ने नगर के बाहर वाले एक उपवन में गोठ का आयोजन किया जिसमें शराब की चुस्कियाँ (मद्यपान) ले कर प्रमत्त राजा अपने चित्त में मेरा कोई शत्रु ही नहीं ऐसा सोच रहा था। तब राजा हम्मीर ने तीन घड़ी दिन रहते अपनी दस हजार की संख्या वाली जंगी सेना के साथ उचित अवसर देख कर धावा बोला। राजा ने वहाँ पहुँच कर दुर्ग के रक्षकों का काम तमाम कर हँसते-हँसते गौड़ रानी को उठा कर अपने घोड़े की पीठ पर चढ़ा लिया।

दोहा

सुभटन अक्खिय भूपसन, द्विगुनित करि दहतेहि।
बिसते कछुक बिलंबि तो, गुनगोरिहु गहतेहि॥२७॥

यह देख कर हाड़ा राजा के सामन्तों ने अभिवादन में दोहरे हो कर निवेदन किया कि हे स्वामी! यह क्या? आपने दुर्ग में प्रवेश किया और अविलम्ब गणगौर को ले कर चल दिये। इससे यह कार्य तो चोरी जैसा

कहलाएगा।

षट्पात्

हड्डुअधिप हम्मीर स्वीय सुभटन सुबैन सुनि,
सह बल गौड़ि समेत पत्त जंहं डोड तत्थ पुनि।
गदिय तुज्झ गुनगोरि जियत अब हम लै जावत,
नहिं खत्तिय तव निलय संढ किम तदपि सिटावत।
सुनि तेहु छोरि पंतिन चसक हेतिन अभिमुख मिलत हुव,
कबलों सु राम भूपति कहूँ भिरत बनी जिम रंगभुव॥२८॥

हाड़ा राजा हम्मीर ने अपने सामन्तों की यह बात सुन कर तुरन्त वापस अपने घोड़े को मोड़ा और वह वहाँ पहुँच जहाँ पर डोड राजा हरराज था। उसे देखते ही हाड़ा हम्मीर ने कहा कि हे हरराज! देख मैं तेरी जीवित गणगोर (रानी) को उठा कर बलात् ले जा रहा हूँ। तेरे घर में तो बढ़ई सेना नहीं (बूँदी के पूर्व राजा की तरह) है फिर हे नपुंसक! तू क्यों लज्जित हो रहा है? यहाँ पंक्ति से उठ कर मद्य की चुस्कियाँ लेना छोड़ कर अपने शस्त्रों से हमारा सामना क्यों नहीं करता? हे राजा रामसिंह! अब मैं आपसे क्या कहूँ ऐसी स्थिति में कैसा युद्ध हुआ होगा। फिर भी युद्धभूमि में जैसी भिड़ंत हुई वह बताता हूँ।

नृप उप्पर हय नक्खि जात हरराज मत्त जंहं।
छकि आसव मदछोह तुरग झंपत गिरयोसु तंहं।
ताही दल के तुरग दारि खुरघात जानु दिय।
दासन दिन्नों द्रुतहि हयन फटिजाइ नतो हिय।
बिनु स्वामि लरे डोडहु बहुत पै बुंदिय बिधि जोर पर।
हरराज तियसु हम्मीर हठि नीति लंघि आनिय नयर॥२९॥

बूँदी के हाड़ा राजा हम्मीर ने अपना घोड़ा उठा कर वहाँ डाला जहाँ शेरगढ़ का हरराज मदमत्त जा रहा था। वह तो घोड़े को इस तरह अपने उपर आता देख कर शराब के नशे में जहाँ था वहीं गुड़ गया और उसी के दल के बढ़ते घोड़ों की खुरघात से घायल हो गया अर्थात् अपने ही पक्ष के घोड़ों के घुटनों के आघात से घायल हो गया। यह देखते ही हरराज के सेवकों ने तुरन्त

दौड़ कर उसे घोड़ों से दूर लिया अन्यथा उसका कलेजा फट जाता। अपने स्वामी के नायकत्व की अनुपस्थिति में डोड क्षत्रिय लड़े भी पर बूँदी के पक्ष में सैन्य बल अधिक था इसलिए कितनी देर टक्कर लेते। इस तरह शेरगढ़ के राजा हरराज की गौड़ रानी को हठपूर्वक नीति की मर्यादा लांघ कर हम्मीर अपने नगर में ले आया।

दोहा

निपुन निहारहु राम नृप, ग्राम्य प्रसभ मन मानि।
अनुचित किय हम्मीर यह, ऊढा रानिय आनि॥३०॥

रनहि बिचारत मरि रह्यो, रूजा जरठ हरराज।
काहू नन सम्मत कह्यो, करत हम्म यह काज॥३१॥

गिनि संटैं गुनगोरि कैं, हम आनी कहि हम्म।
अनपत्रप बिलसे अखिल, कमन भोग रुचि कम्म॥३२॥

हे राजा रामसिंह! आप देखें कि यद्यपि बूँदी का राजा हम्मीर चतुर था, नीति में भी पारंगत था पर एक गँवार आदमी की तरह हठ कर उसने अनुचित कर्म किया कि वह एक ब्याहता रानी को जबरन उठा लाया। उधर वह रोगी और बूढ़ा राजा हरराज युद्ध करने की मन में सोचता ही रह गया और मर गया। राजा हम्मीर के इस अकृत्य को किसी ने भी अच्छा नहीं कहा। उल्टा जब कुछ लोगों ने उलाहना दिया तो उसके प्रत्युत्तर में राजा ने कहा कि हमने अपनी गणगोर ले जाने की एवज में उसकी रानी का बलात् हरण किया है। इसके बाद उस निर्लज्ज राजा ने उस गौड़ रानी के साथ सारे सुन्दर भोग भोग कर अपनी इच्छा के अनुसार आचरण किया।

हम्म अनुज नवरंग हुव बिरचत तीन बिबाह।
राजकुमरि सोलंखिनी, लही प्रथम बिधिलाह॥३३॥

तोमर कुल भव भावती, नामसु दूजी नारि।
प्रामारी तीजी प्रिया, कहत किसोर कुमारि॥३४॥

तासअनुज थिरराज तिम, पाये उपयम पंच।
चालुकजा चउ रुकमिनी, पाहेली सुगुन प्रपंच॥३५॥

हाड़ा राजा हम्मीर के छोटे भाई नवरंग ने तीन विवाह रचाए। सोलंकी

वंश की राजकुमारी से उसने विधि-विधान पूर्वक अपना पहला विवाह किया। दूसरा विवाह उसने तंवर कुल की भावती नामक कन्या से किया। प्रामार वंश की उसकी तीसरी पत्नी थी जिसका नाम किशोर कुमारी थी। नवरंग से छोटे भाई थिरराज ने कुल पाँच विवाह किये। इनमें चार तो चालुक्य वंशी थी और उसकी पहली स्त्री रुक्मणी तो बहुत गुणवंती थी।

षट्पात्

अमृतकुमरि आनंदकुमरि अक्खयकुमारि इम।
चालुक कुलभव च्यारि नारि थिरराज लही जिम।
कोकसमाख्य गुहिल्लपुत्र पुत्री राजकुमरि।
चतुर प्रिया यह चरम ब्याह पंचम आनीबरि।
हुव दुव तनूज हम्मीर कै तनया इक इम तोक त्रय।
बरसिंह कुमर अग्रज बहुरि लालसिंह लघु बीतभय॥३६॥

रुक्मणी के अतिरिक्त अमृत कुंवरी, आनन्द कुंवरी और अक्षय कुंवरी ये चारों ही चालुक्य वंश में जन्मी कन्याएँ थीं जिनसे थिरराज ने विवाह रचाया। इनके अलावा कोयला नामक गुहिल वंश की राजकुमारी से अपना अंतिम पाँचवा विवाह रचा कर उस चतुरप्रिया को अपनी पत्नी बनाया। राजा हम्मीर के दो पुत्र और एक पुत्री इस तरह तीन संतानें हुई। इनमें बड़ा पुत्र तो बरसिंह था और उससें छोटा निर्भय वीर लालसिंह नामक था।

दोहा

लघु अनुजा इनकी ललित, कुमरी चंद्रकुमारि।
प्रतिहारी औरस प्रजा, यह त्रिक कुल अनुकारि॥३७॥

सुपहु बिबाही यह सुता, चंद्रकुमरि गजचाल।
मल्लिनाथ के कुमर कों, जास नाम जगमाल॥३८॥

लालसिंह लघु पुत्र हित, दिय गैनोलिय द्रंग।
तासह त्रिक हुव दुव तनुज, इक तनुजा सुभ अंग॥३९॥

जैत्रसिंह नवब्रह्म जुग, लाल सुतन के नाम।
हड्डुन लालाउत्त हुव, दसम भेद उद्दाम॥४०॥

दसम भेद के भेद दुव, जैताउत्त जथाहि।
कहियत पुनि नवब्रह्म के, निजनिज तोक तथाहि॥४१॥

इन दोनों की छोटी बहन चन्द्रकुँवरी थी। ये तीनों बेटे-बेटी प्रतिहार वंशीय रानी की कोख से जन्मे। राजा हम्मीर ने हाथी जैसी चाल वाली अपनी बेटी चन्द्रकुँवरी का विवाह महेवा नगर के राठौड़ राजा मल्लिनाथ के राजकुमार से किया जिसका नाम जगमाल था। राजा हम्मीर ने अपने छोटे बेटे लालसिंह को गैणोली नामक नगर की जागीर दी। इस लालसिंह के भी तीन संतानें हुई। जिनमें से दो बेटे और एक सुंदर बेटी थी। लालसिंह के बड़े पुत्र का नाम जैत्रसिंह और छोटे का नवब्रह्म था। इसी लालसिंह के वंशजों से हाड़ा जाति में दसवाँ भेद हुआ। इस दसवें भेद के भी आगे और दो भेद हुए। जो क्रमशः अपने पिता के नाम से जेताउत और नवब्रह्मका कहलाए।

सुखां नाम सीसोदनी, जाठर यह त्रिक जात।
कृष्णकुमरि नवब्रह्म की, अनुजा गुन अवदात॥४२॥
पीछें यह कन्या प्रथित, लालसिंह हित चाहि।
दई रान हम्मीर के, खित्तल कुमर हिं व्याहि॥४३॥
बारू चारन बैर गिनि, तदनु सु खित्तल ताम।
लरि गैंनोली अब्द लग, क्रम नृप आयो काम॥४४॥
पहिलैं इमहि प्रसंग परि, आवत भावि उदंतं।
महाप्रबंधन रीति मत, समुझहु उचित सुमंत॥४५॥

लालसिंह की सिसोदिया पत्नी सुखा के गर्भ से तीन संतानें जन्मीं। इनमें दो पुत्र जैत्रसिंह और नवब्रह्म और इनकी एक छोटी बहन थी कृष्ण कुँवरी जो अत्यन्त सुन्दर और गुणवंती थी। बाद में लालसिंह ने अपनी इस प्रसिद्ध पुत्री कृष्णा कुँवरी का विवाह चित्तौड़गढ़ के महाराणा हम्मीरसिंह के राजकुमार क्षेत्रसिंह (खेता) के साथ किया था। बारु नामक सोदा बारहठ के वैर लेने के निमित यही क्षेत्रसिंह गैणोली के युद्ध में वर्षों बाद काम आया। यह प्रसंग पहले आ गया पर मुझे आगे घटित वृत्तान्त में कहना है और चूँकि बड़े ग्रंथों के नियमानुसार ही मैं (ग्रंथकर्ता सूर्यमल मीसण) ऐसा कर रहा हूँ इसलिए सुविज्ञ पाठक इसे उचित ढंग से समझ लें।

षट्पात्

महीरमन हम्मीर बप्प निज बैर बहोरन।
गय टोडापुर गज्जि सज्जि सेनहिं जय जोरन।
तंहं रोपाल तनूज नाम सत्तल चालुक नृप।
जित्यो जुरि बरजोर सबिल जिम आखु सरीसृप।
चउ जाम अमल टोडा बिरचि पुनि सत्तल हित अप्पि पहु।
करि टोंक बिजय हरखात कुल बिदित किन्न जग कित्ति बहु॥४६॥

हाड़ा राजा हम्मीर ने अपने पिता की हत्या का वैर लेने की सोच कर अपनी सेना को सज्जित किया और सीधा टोडापुर पर गर्जना करता हुआ दल बल सहित पहुँचा। वहाँ उस समय चालुक्य राज रोपाल का पुत्र सातल राजा था। उससे भिड़ कर हाड़ा राजा ने अपने बाहुबल से ऐसी विजय प्राप्त की जैसी बिल सहित चूहे का नाश कर सर्प प्राप्त करता है। चार प्रहर तक पूरे टोडा नगर पर अपनी विजयाज्ञा चला कर हाड़ा राजा हम्मीर ने टोडा नगर वापस सात्तल को दे दिया और इसके बाद टोंक को जीत कर उसने कुल को हर्षित करते हुए अपना यश चारों दिशाओं में प्रसारित किया।

हड्डुअधिप हम्मीर बीर हम्मीर रान बलि।
हम्मीर हि प्रतिहार हड्डु हल्लू हु कर्णकलि।
मल्लीनाथ कबंध अधिप कछवाह उद्धरन।
सत्तल चालुक गंगसेन प्रामार बिदितपन।
तुगलक इतेंसु दिल्ली तखत धरत गयासुद्दीन धुव।
नृपराम चरित इनके निखिल हिय धारहु समकाल हुव॥४७॥

बूँदी का हाड़ा राजा हम्मीरसिंह और चित्तौड़गढ़ के महाराणा हम्मीर सिंह सहित तीसरा प्रतिहार हम्मीर सिंह ये सभी एक ही समय में हुए। इनके अतिरिक्त कलियुग का कर्ण बंबावद का हाड़ा राजा हल्लू, मल्लिनाथ राठौड़, कछवाहा उद्धरन, चालुक्य सातल, गंगसेन परमार और दिल्ली के तख्त पर बैठा बादशाह गयासुद्दीन तुगलक हे राजा रामसिंह! ये सभी समकालीन थे। इनमें से जिनके चरित्रों को मैंने (ग्रंथकर्ता सूर्यमल मीसण) कहा है उनका आप स्मरण रखें।

इतकों दिल्ली के अधीस यवनेद्र तुगलक गयासुद्दीन की प्रीति आपुनी ओर देखि सब ही विद्या बिसारद जन साह को आश्रय ले सुखसों रहन लगे तिनही में कोऊ पुंजराज नाम बनिक सचिव हो जानें व्याकरन बिषय के सारस्वत नाम ग्रंथ पर टीका पुंजराजी बनाई जाके उद्योत करि सूत्रन की संगति मिलाइबे में अल्पावस्था अर्भकन के अंतर के अंधकार बीति गये।

अरु याही समय में केही सूबेन के अधीस अलावुद्दीन के अंत के अनंतर दिल्ली सों फिरे हे तेहू स्वस्व सीमा कों बिसेस बढाई केही बेर पातसाही फोजन कों जीति गये।

इतकों बूँदी के अधीस हड्डाधिराज हम्मीर को पट्टप राजकुमार बरसिंह पत्नि को त्रित्य बिबाहत भयो।

तिनमें पहिली कुमरानी तो चित्तोर के अधीस सीसोद रानां लक्खन के लघु पुत्र अजयसिंह की सुता प्रभावती नाम दूजी रानी खुसहालसिंह कछवाह की कन्या अहिजनकुमरि नाम तीजी अनुपमसिंह प्रमार की पुत्री छत्रकुमरि नाम इन तीन ही तरुनिन के साथ प्रीति रीति निबाहत भयो॥४८॥

उधर दिल्ली के स्वामी बादशाह गयासुद्दीन तुगलक का स्नेह अपनी ओर बढ़ा हुआ देख कर सभी विद्वान जो विद्या विशारद थे बादशाह के आश्रय में आकर सुखपूर्वक रहने लगे। अर्थात् यवनेश तुगलक का विद्यानुरागी पा कर कई विद्वजन उसके आश्रय में गए। इन विद्वानों में एक कोई पुंजराज नामक बनिया था जो बादशाह का सचिव था। उसने व्याकरण विषय के *सारस्वत* नामक ग्रंथ की *पुंजराजी टीका* लिखी। इस ग्रंथ के सूत्रों की ऐसी टीका उपलब्ध होने से छोटे बालक जो व्याकरण का अध्ययन करना चाहते थे उनको व्याकरण का ज्ञान सुलभ हो गया। इस टीका की सहायता से उनके अज्ञान का अंधकार दूर हो गया। इसी समय में कई सूबों के हाकिम जो अलाउद्दीन की मृत्यु के बाद खुद मुख्तियार हो कर दिल्ली से विमुख हो गए थे। उन्होंने अपने-अपने क्षेत्र की सीमा को खूब बढ़ाया और कई बार दिल्ली की शाही सेना को भी उन्होंने पराजित किया। उधर इसी समय में बूँदी के

हाड़ा राजा हम्मीर के पाटवी पुत्र राजकुमार बरसिंह ने तीन विवाह रचाए। इनमें से पहला विवाह चित्तौड़गढ़ के सिसोदिया राणा लाखन के छोटे बेटे अजयसिंह की पुत्री प्रभावती से किया। दूसरा विवाह उसने कछवाहा खुसाल सिंह की कन्या अहिजन (अैजन) कुंवरी से किया। राजकुमार ने अपना तीसरा विवाह प्रमार अनुपमसिंह की पुत्री छत्र कुंवरी के साथ संपन्न किया। इन तीनों पत्नियों के साथ पूरी प्रीत निभाते हुए राजकुमार ने विवाहित पुरुष की तरह गृहस्थ की रीति निभाई।

इतिवंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे पंचम राशौ बीतिहोत्र चण्डासि बीज्यवर्णनबीजहड्डाधिराडस्थिपाल वंश्यानुवंश्य विहितव्याख्यानव-सरव्याहार्यबुन्दीनरेन्द्रहम्मीर चरित्रे चित्रकूटन्यस्तरक्षक प्रेषितहरराज युयुत्सुसैन्य दिल्ली गतविरचितप्रतिदिक् सैन्यसीमाविजयप्रबन्ध यवनराडलावुद्दीन दक्षिणदिग्जिगीषुत्रिंशत्सहस्त्र पृतनाप्रस्थापन रेवाऽपर-तटप्राप्तत्पृतनापतिसम्मुखागत योत्स्यमानदाक्षिणात्यमहीपमण्ड लमुख्य-बीडर भागनगर बीजापुर धामिनी कुण्ड नृपपञ्चक निपातन नष्टौजस्क-विजयनगरा ऽऽसेर बदर प्रतिष्ठान नासिक पुण्या दिपृथ्वीशस्वस्वपस्त्य-पलायन समाक्रान्तमृतनृपस्थापनपञ्चक परास्तप्राक्तनयवनेन्द्रप्रधान-कृतबीजापुर भागनगर वैराड वसतिकश्रुतस्वस्वामिमरणास्वतंत्रदक्षिण-जेतृयवनाऽग्रेसरतत्प्रान्तस्ववशीकरण कुतबुद्दीनादिजलालुद्दीना ऽवधि-भूतपूर्वदिल्लीशयवनदशका ऽपेक्षाप्रथितप्रतापप्रा बल्यैकादशाऽलाउद्दीन दिल्लीगमनाऽब्दान्तरमरणसूचन।

श्री वंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण की पंचम राशि में अग्निवंशी चहुवान वंशवर्णन के कारण हड्डाधिराज अस्थिपाल के वंश और वंश की शाखाओं की कथा बताने के समय के वचनों में बूँदी नरेन्द्र हम्मीरसिंह के चरित्र में चित्तौड़ पर रक्षक रखकर हरराज पर युद्ध के लिए सेना भेजकर दिल्ली में जाकर प्रत्येक दिशा में सेना भेजकर विजय का प्रबन्ध करके बादशाह अलाउद्दीन का दक्षिण दिशा को जीतने की इच्छा से तीस हजार सेना भेजना, नर्मदा नदी के परले किनारे पहुँचने पर उस सेना के सेनापति से युद्ध करने को सन्मुख आये हुए दक्षिण दिशा के राजाओं के समूह में मुख्य वीदर, भागनगर, बीजापुर, धामिनी, कुण्ड इन पाँच नगरों के राजाओं का मारा जाना, प्रताप नष्ट होकर विजयनगर आसेर बदर प्रतिष्ठानपुर नासिक पुण्या आदि

नगर के राजाओं का अपने अपने घर भागना, पहले हारे हुए पाँचों मृतक राजाओं के स्थान लेकर बादशाह के प्रधान का बीजापुर भागनगर और वैराट में निवास करते हुए अपने स्वामी का मरना सुनकर दक्षिण को विजय करने वाले यवनों के अग्रेसर उस प्रधान का स्वतंत्रतापूर्वक उस प्रान्त को वश में करना, कुतबुद्दीन से लेकर जलालुद्दीन तक पहले हुए दिल्ली के दस बादशाहों की अपेक्षा प्रसिद्ध प्रताप वाले प्रबल ग्यारहवें बादशाह अलाउद्दीन का दिल्ली जाने के एक वर्ष बाद मरने की सूचना करना।

तदनन्तरोमर मुबारिक दिल्लीशद्वय समाप्तिसमनन्त रचतुर्दश यवनेन्द्रतुगलकगयासुद्दीन दिल्लीपट्टप्रापण कथितपुस्तकादिप्रमाण-पुरस्सरयवनेशगणनासङ्गतैक पातसाहखुसरोखाना ऽधिक्यनिरसन चतुर्दश दिल्लीशयवनेन्द्रतुगलक गयासुद्दीन राजरीतिपाटवप्रकटन मृतपूर्वेकादशालावुद्दीनानन्तर प्रतिभटी भूतदिल्लीशदिकसचिवगण-स्वस्वसीमासामीप्यराजन्यकभागधेयसमाधान मण्डूपुरस्थापितमाल-वनियोज्यत्व बीजापुरवियोजितकर्णाटपारवश्ययवनेन्द्रीभूतदक्षिण-दिक्सचिवसंघनिकटवर्त्यनेकनृपगणस्वकीयसेवकीकरण बूँदी नरेन्द्र-हड्डाधिराजहम्मीर मण्डपपुरमहीपप्रतिहार रोपालपुत्रीभावती पाणिपीडन दभिक गौड दमनप्रत्युद्धत करउर लक्खैरी पूर्जकुट प्रतिवामितरणत्रय पराजितखिच्चिमहेशराजनिगीर्णपूर्वमऊ रहलावणि प्रमुखपुरप्रान्तचतुष्क हड्डाधिराज हम्मीर सढौकन सारल्य तुष्टिप्रति ग्राहितकेथोनिपुरमृष्ट-मन्तुतोमरस्वकीयसेवकीकरण पराजित प्रामारडोडहरराजतिरस्कृतौचित्य-हम्मीर गुणगौरिविनिमयार्घीकृततदूढराज्ञीगौडीसप्रसभलुन्धानयन हम्मीरा ऽनुजनवरङ्ग चालुकीराजकुमार्या दिपत्नीत्रय परिणयन तदनुजस्थिरराज चालुकीरुक्मिण्या दिप्रियापञ्चक पाणिपीडन हड्डाधिराजहम्मीरौ रसकुमारबरसिंह लालसिंह कुमारीचन्द्रकुमरि तोकत्रय समुद्भवन।

इसके बाद उमर और मुबारिकशाह दो बादशाहों के मरने के बाद चौदहवें बादशाह तुगलक गयासुद्दीन का दिल्ली का तख्त लेना, कहे हुए पुस्तक आदि के प्रमाणों से बादशाहों की गणना करने में एक बादशाह खुशरोखान का नाम अधिक और क्षेपक होना, चौदहवें बादशाह तुगलक गयासुद्दीन का राजनीति में चतुर होना प्रकट करना, पहले मरे हुए ग्यारहवें बादशाह अलाउद्दीन के बाद सूबेदारों के समूह का शत्रु होकर अपनी-अपनी

सीमा के समीप के राजाओं से खिराज लेना, मालवे को मांडू से मिलाकर बीजापुर के सूबे को कर्णाट की अधीनता से जुदा करके बादशाह के दक्षिण दिशा के सूबेदारों का समीप वाले अनेक राजाओं को सेवक बनाना, बूँदी के नरेन्द्र हड्डाधिराज हम्मीर का मंडोवर के राजा पड़िहार रोपाल की पुत्री भावती से विवाह करना, दहिया और गौड़ों का नाश करके करउर और लक्खैरी दोनों पुरों को लेकर शत्रुओं को तीन युद्धों में पराजित करके खीची महेशदास के पहले के निगले हुए (दबाये हुए) मऊ और रहलावण आदि पुर और चार प्रान्तों का हड्डाधिराज हम्मीर का सरलता से प्रसन्नतापूर्वक लेकर केथोणपुर के तोमर का दोष मिटा कर उसको अपना सेवक बनाना, प्रामार को पराजित करके डोड हरराज का उचित तिरस्कार करके हम्मीर का गुणगौरी के पलटे की कीमत में उसकी विवाहिता रानी गौड़ी को हठपूर्वक बूँदी लाना, हम्मीर के छोटे भाई नवरंग का सोलंकिनी आदि तीन स्त्रियों से विवाह करना, उसके छोटे भाई स्थिरराज का सोलंकिनी रुक्मिणी आदि पाँच स्त्रियों से विवाह करना, हड्डाधिराज हम्मीरसिंह के औरस कुमार बरसिंह लालसिंह और कन्या चन्द्रकुमारी तीन बालकों का जन्म होना।

तत्तनयाराष्ट्रकूटमहीपमल्लिनाथराजकुमार जगमालभाविपाणिग्रहणभणन लालसिंहौ रसजैत्रसिंह नवब्रह्म कृष्णकुमारी तुक्त्रय प्रादुर्भवन समातृनिश्चयप्राप्तजैत्रावुत्त नवब्रह्मको पटङ्किहड्डुकुलभाविदशम भेदलालावुत्तप्राधुर्भावसूचन्न परिणीतलालसिंह कन्याकृष्णकुमारी कबारुचारणवैरबालकीभूत राणाहम्मीर कुमारक्षेत्रलगेणोलीद्रङ्गभाविरणमरणख्यापन जनकवैरबालकहड्डाधिराजहम्मीर प्रणतरौपालिकचालुकसप्तलार्थस्वविक्रमविजितटोडापुरप्रत्यर्पण टोङ्कपुरविजेतृहड्डुशहम्मीर हल्लू शैर्षोद्दहम्मीर प्रातिहारहम्मीर राष्ट्रकूटमल्लिनाथ कूर्मोद्धरण चालुकसप्तल प्रामारगङ्गसेन दिल्लीशयवनेन्द्र तुगलक गयासुद्दीन सामकालीन्यसूचन प्रबुद्धजन प्रसन्नदिल्लीशगयासुद्दीन सचिववणिक् पुञ्जराजसुगमशब्दसाधकसारस्वतसूत्रटीकानिर्माण प्राक्प्रतिभटीभूतदिक्शासकदिल्लीशसचिवयवनगणबहुकृत्वोदिल्लीसैन्यपराजयन बूँदीनेरन्द्रहड्डाधिराज हम्मीर पट्टपराजकुमारबरसिंह शैर्षोद्दी कौर्मी प्रामारी पत्नीत्रय भाविपाणिपीडन सूचनं पष्ठो मयूखः ॥६॥ आदितस्त्रिपञ्चाशदुत्तरैकशततमः ॥१५३॥

उसकी पुत्री का राठौड़ मल्लिनाथ के पुत्र जगमाल के साथ आगे होने

वाले विवाह का कहना, लालसिंह के औरस पुत्र जैत्रसिंह, नवब्रह्म और कन्या कृष्णकुमारी तीन बालकों का जन्म होना, उनका माताओं सहित निश्चय करके जैताउत्त नवब्रह्मका इस पदवी से हाड़ों के कुल में आगे होने वाले दसवें भेद लालाउत्त के प्रकट होने की सूचना करना, लालसिंह की कन्या कृष्णकुमारी को विवाह करके बारू चारण का वैर लेने में राणा हम्मीर सिंह के पुत्र क्षेत्रसिंह का गैणोली नगर में आगे होने वाले युद्ध में मारे जाने की सूचना करना, पिता का वैर लेने वाले हड्डाधिराज हम्मीरसिंह का नम्र होने वाले सोलंकी रोपाल के पुत्र सातल के अर्थ अपने पराक्रम से विजय किये हुए टोडापुर को वापस देना, टोंकपुर के विजय करने वाले हाड़ा हम्मीरसिंह, सिसोदिया हम्मीरसिंह पड़िहार हम्मीरसिंह राठौड़ मल्लिनाथ कछवाहा, उद्धरण, सोलंखी, सातल, प्रामार, गङ्गसेन, दिल्ली के पति बादशाह तुगलक गयासुद्दीन इन सबका एक समय में होने की सूचना करना, पंडितों से प्रसन्न होने वाले दिल्ली के बादशाह गयासुद्दीन के सचिव बनिया पुंजराज का सारस्वत के सूत्रों पर शब्द साधन में सुगम टीका बनाना, पहले से शत्रु बने हुए सूबेदारों का बादशाह के सचिव और यवनों की सेना को बहुत बार पराजित करना, बूँदी नरेन्द्र हड्डाधिराज हम्मीर के पाटवी राजकुमार बरसिंह का सिसोदिनी कछवाही और प्रामारी इन तीन स्त्रियों से आगे होने वाले विवाहों की सूचना करने का छठा मयूख समाप्त हुआ। और आदि से एक सौ तिरपन मयूख हुए।

प्रायो ब्रजदेशीय प्राकृत मिश्रित भाषा

दोहा

लक्खनरान तनूज लघु, अजयसिंह जय आस।
अधिक पाइ छत झारि असि, गो करि बहुन बिनास ॥१॥

जातैं ढिग रु प्रतीच्य जग, गूढवार भुव गात।
कैलपुर सु जिहिं आक्रम्यों, पुरबासिन हित पात ॥२॥

साह अमल मेवार सब, स्वामि अहित साह्योहि।
तदपि कैलपुर जनन वह, अजयसिंह चाह्योहि ॥३॥

चित्तौड़गढ़ के महाराणा लाखन के छोटे पुत्र अजयसिंह ने विजय प्राप्ति की उम्मीद से पूर्व में हुए युद्ध में ऐसी तलवार चलाई कि उससे कई शत्रुओं का नाश हो गया। वीरतापूर्वक लड़ते हुए स्वयं अजयसिंह ने भी

अपने शरीर पर कई घाव खाए पर वह जीवित बच गया। युद्ध में घायल अजयसिंह निरोग हो कर मेवाड़ के पश्चिम प्रांत में गौडवाड़ की सीमा पर चला गया और वहीं रहने लगा। उसने वहाँ रहते हुए केलवाड़ा नगर पर आक्रमण कर उसे छुड़ाया क्योंकि वहाँ की प्रजा अजयसिंह को बहुत चाहती थी। इस समय पूरे मेवाड़ प्रांत पर बादशाह का आधिपत्य था और वे सभी महाराणा का अहित करने पर तुले थे पर केलवाड़ा की सारी प्रजा अजयसिंह को चाहती थी इसलिए उसके पक्ष में थी।

पादाकुलकम्

जो प्रामार संभर जवनन जुरि, कोउक गोप तंत्र किय अंकुरि।
गूढवार हाकिम वह गोपहु, बस तस हे ऐसे लघु पुर बहु ॥४॥
पत्ति पचीस तास तंहं पाये, अजयसिंह तिन्ह आय उडाये।
पुर गिरि बन दुर्गम यह पायउ, बसि तंहं जनपद डमर बढायउ॥५॥
चित्रकूट लग लूट प्रचारिय, मिच्छहु अजयसिंह बहु मारिय।
सोदा तंहं बारू संबोधिय, भुल्लि भतीज रानपद रोधिय॥६॥
अग्रजसुत चंदानी औरस, बसत बाल मातुलगृह परबस।
व्है तस भीर उचित जन जोरहिं, तिहिं नृप करि लैबो चित्तोरहिं॥७॥

चित्तौड़गढ़ फतह हो जाने के बाद बादशाह अलाउद्दीन ने इस दुर्ग की रक्षा करने के लिए जिनको तैनात किया उनमें प्रामार और सोनगिरे चहुवान थे। इन्होंने वहाँ रह रहे यवनों के साथ मिल कर केलवाड़ा नगर को एक गोप नामक व्यक्ति अथवा ग्वाले को खड़ा कर अर्थात् उम्मीदवार बना कर उसे दे दिया। इससे वह गोप गौड़वाड़ क्षेत्र का हाकिम हो गया। इसके अधिकार में छोटे बड़े कई गाँव थे। गोप ने वहाँ के निवासियों में से पच्चीस आदमियों को अपने पैदल सैनिक बना कर तैनात किया। इन्हें अजयसिंह ने आ कर मार डाला फिर तो उस पहाड़ी वनों वाले दुर्गम क्षेत्र में बसने वाले गाँवों में अजयसिंह ने लूटपाट मचाई। उसने अपनी लूटपाट की सीमा को चित्तौड़गढ़ तक बढ़ा लिया और इस प्रक्रिया में अजयसिंह ने कई यवनों का संहार किया। सोदा शाखा के चारण बारू ने एक बार उसे संबोधित करते हुए कहा कि भतीजे (बड़े भाई अरिसिंह के पुत्र और चित्तौड़गढ़ की गद्दी के अधिकारी) को भूल कर आपने राणा पद को रोक रखा है। बड़े भाई का औरस पुत्र जो

खरवड़ चंदाणा जाति की क्षत्रिय रानी की कोख से उत्पन्न है और इन दिनों अपने मामा के घर पर पल रहा है। आप उसके पक्ष में लोगों की राय बनवाइये ताकि उसे चित्तौड़गढ़ का राजा बनाया जा सके जो वास्तव में उस राजगद्दी का अधिकारी है।

षट्पात्

बारू चारन बचन सुधासम अजयसिंह सुनि।
जान्यों जियत भतीज बंस तंतुव पट्टप पुनि।
तस मातुलगृह तबहि बेग पठयो सुहि बारूव।
सजव जाइ सोदासु उचित अनुचित इक्खत हुव।
मातुलह खेत मक्किय पकत अनल सिद्धकृतमास इस।
पायोसु सुभट सचिवन सिसुन करि पंतिन बंटत कणिस॥८॥

बारू चारण के ये मीठे और सारगर्भित वचन सुन कर अजयसिंह ने जाना कि भतीजा जीवित है जो हमारे वंश का एक मात्र तंतु है और वह भी पाटवी है। तब अजयसिंह ने तुरंत इसी बारू सोदा (चारण) को कहा कि आप उसके मामा के गाँव जाकर देखें कि वह बालक हम्मीर चित्तौड़गढ़ का राज्य करने काबिल है कि नहीं है? जब बारू चारण वहाँ पहुँचा उस समय बालक हम्मीर अपने मामा के खेत पर था। आश्विन मास होने से मक्का के भुट्टे पकने का समय था। इस बालक हम्मीर ने अपने साथी बालकों को अपना सामन्त और मंत्री बना कर एक पंक्ति में बिठा रखा था और वह स्वयं उनमें सिके हुए भुट्टे बाँट रहा था।

बारू जातहि बिक्खि यहहु बैठारि सआदर।
विदित समी तरबूज बिबिध त्रपुसिन समेत बर।
पृथुकन स्वागत प्रेरि पूरि पृथुकन पत्रावलि।
किय तर्पित नति कमन बुल्लि रोचकफल बलिबलि।
जल सुद्ध सबन संसद जुरत हितकरि प्राघुन हिय हरिय।
अरिसिंह तनुज हम्मीर इम चंदानीभव उच्चरिय॥९॥

बारू ने वहाँ पहुँचते ही देखा कि उस बालक हमीर ने सभी बच्चों को आदर सहित बिठाया फिर उसने सफेद किंकर, तरबूज और ककड़ी परोसी

पर अलग-अलग बालक के लिए अलग-अलग पत्तल पर सभी तरह की खाद्य वस्तुएँ करीने से परोसी और वह पूरी विनम्रता पूर्वक तब तक परोसता रहा जब तक सारे बालक तृप्त नहीं हो गए। इसके बाद मनुहार करते हुए सभी को शुद्ध जल उपलब्ध कराया। यही नहीं उसने अपनी इस बाल संसद में आए हुए मेहमानों का दिल भी प्रसन्न किया। इसके बाद महाराणा अरिसिंह के चंदाणा जाति की स्त्री से उत्पन्न औरस पुत्र ने मेहमानों से पूछा।

दोहा

कित सों आवन बास कित, कित जावन किहिं काम।
बीसरि मग दुर्गम बिपिन, आये हुव अभिराम॥१०॥

आप कहाँ से पधारे हैं ? आप कहाँ के निवासी है ? आगे कहाँ जाना है ? और किस कार्य से जाना है, कहीं आप रास्ता भूल कर इस दुर्गम जंगल में तो नहीं आ गए ?

षट्पात्

बारू अक्खिय बीर रान लक्खन स्वधर्मरत।
चित्रकूटपति चतुर मन्त्रि कुलबिरुद सूरिमत।
रक्खि सरन रतनेस बिदित बसु असु कुल बोरिय।
सबसु अनुज रवि सूनु अप्प हुव हुत जिम होरिय।
ससुत अरिसिंह बरज्यो सबन तदपि सरन जन त्रान तकि।
सकुटुंब गो सु देवनसदन अजयसिंह रहि जियत जकि॥११॥

इस पर बारू ने प्रत्युत्तर दिया कि हे कुमार! चित्तौड़गढ़ के चतुर महाराणा लाखन जिन्होंने अपने धर्म की राह नहीं छोड़ी और जिनका विरुद वीरता और विद्वता से भरा है। जिन्होंने राजा रत्नसिंह को अपनी शरण में रखने के बदले अपना धन और यहाँ तक कि प्राणों का भी उत्सर्ग किया। यह बात सारा संसार जानता है। उन्होंने वचन की मर्यादा को पालने के लिए अपने कुल को दाँव पर लगाया और आठ भाई, बारह पुत्रों सहित वे स्वयं होली की ज्वाला में हवन की तरह होम हो गए। उनके पुत्र अरिसिंह ने सभी को बहुत रोका, मना किया पर उस राजा ने अपनी शरण में आए हुए की रक्षा करने के निमित्त अपने पूरे कुटुम्ब को होम दिया। वे सभी स्वर्गलोक को गए पर हाँ, युद्ध भूमि में घायल हो कर गिरा हुआ अजयसिंह अवश्य जीवित बच गया।

दोहा

बारू तिनको बारहठ, दुर्भग मैं सोदाहु।
भीरु स्वामि सहचर न भो, जियत रह्यो कहि जाहु॥१२॥

अग्गजात कछुकम्म इत, भो आवन मग भुल्लि।
मगबोधक सिसु तुम मिलत, पायो प्रमद प्रफुल्लि॥१३॥

सोदा के इम बचन सुनि, मुदित उट्ठि हम्मीर।
जानत हो निज जन्म जिम, बत्थन भिंट्यो बीर॥१४॥

बाबा कहि गौरव बिहित, बर आसन बैठारि।
बुल्ल्यो जो कछु बोध बिनु, हुव सु छमहु हित हारि॥१५॥

ऐसे महाराणा का मैं दुर्भाग्य शाली बारहठ हूँ। बारू सोदा हूँ जो कायर अपने स्वामी के साथ नहीं जा सका अर्थात् नहीं मर कर अभी तक जीवित हूँ। मैं किसी कार्यवश आगे जा रहा था पर रास्ता भूल जाने से मेरा इधर आना हुआ पर रास्ता बताने वाले तुम्हारे जैसे बालक से मिल कर सचमुच प्रसन्नता हुई। बारू सोदा के ये वचन सुनते ही हम्मीर हर्ष से भर कर उठ खड़ा हुआ और बारहठ बारू से बाँह पसार कर मिला जैसे वह जन्म से ही बड़ों की इज्जत करना जानता हो। उसने बारू सोदा को बाबा का संबोधन दे कर पूरे आदर के साथ उच्च आसन पर बिठाया फिर कहने लगा कि मुझ अबोध बालक से बोलने में कुछ गलती हुई हो तो क्षमा करें।

षट्पात्

जानत होइ अजान बचन ऐसे सुनि बारुव।
जंपिय तैं सिसु जन्म धरिय खत्रिय बंसहि धुव।
तदपि नाम कुल जाति कहहु प्रसरन निज कित्तिय।
बाल बयहु तैं बीर ज्वलित जस करि जग जित्तिय।
बनि मूढ सोहु प्रति बारहठ जो पुच्छी सु अजान जिम।
चित्तोर टारि सब हुव चवत अप्प सुनहु मम मूल इम॥१६॥

बारू जानते हुए भी अनजान बन कर बोला कि तुम्हारे वचन सुन कर

तो मुझे यह आभास होता है कि तुम किसी उच्च क्षत्रिय वंश में जन्में लगते हो। फिर भी तुम मुझे अपना नाम, कुल और जाति बताओ जिससे मैं खुल कर तुम्हारी तारीफ कर सकूं। बारू बारहठ ने मन में सोचा कि यह बालक आगे जा कर अपनी वीरता से अवश्य जग जीतेगा पर वह जानबूझ कर मूढ बना रहा जैसे वह जो कुछ पूछ रहा है उसे नहीं जानता हो। बालक ने सगर्व उत्तर दिया कि यहाँ सारे लोग यह कहते हैं कि चित्तौड़गढ़ के अतिरिक्त मेरा मूल स्थान नहीं हो सकता।

पादाकुलकम्

देस एह बन गिरि करि दुर्गम, मितमित इत भुव बपन मनोरम।
हल बाहक इत जे रजपूतहु, बपन मिलैं न तिनहु बसुधा बहु॥१७॥

यह देश वन और पर्वतों के कारण दुर्गम है। इस कारण से यहाँ यद्यपि खेती योग्य भूमि थोड़ी है पर बीज बोने के लिए उम्दा है। यहाँ के निवासी जितने भी राजपूत हल चलाने वाले किसान हैं उन्हें अपनी खेती करने के लिए यहाँ पर्याप्त भूमि उपलब्ध नहीं है।

दोहा

निज निज खेतन के निकट, अप्पन अप्पन अैन।
रचि इतके·कर्षुक रहत, च्यारि हु बरन अचैन॥१८॥
निकटहि यह भासत निलय, स्वक मातुलगृह सोहि।
इहां कहत हुव आगमन, कबहु राजसुत कोहि॥१९॥
अरिसिंहहि तस नाम अरु, तातहु लक्खन तास।
मातुलकुल अरु जननि मम, जानत भेदहु जास॥२०॥

यहाँ के ये निवासी अपने-अपने खेत के निकट ही अपना घर बना कर रहते हैं। कृषि का कार्य करने वाले चारों वर्ण के लोगों का यही हाल है। सभी को अपने खेत पर ही रहना पड़ता है। हे बाबा! यहाँ से वह जो घर नजर आ रहा है मेरे मामा का वही घर है। कहते हैं पूर्व में कोई राजपुत्र यहाँ आया था। उस आगन्तुक का नाम अरिसिंह बतलाया जाता है वह किसी लाखन का पुत्र था। मेरे ननिहाल वाले और मेरी माँ इस पूरे वाकये का भेद जानती है।

षट्पात्

अरिसिंह सु यंहं आत बिक्खि जननी मम अति बल।
रहि कतिदिन तिहिं परनि द्रुतहि गो सुनि सत्रन दल।
बीज रूप सों प्रबिसि जहाँ चंदानी जाठर।
प्रसवकाल गति पाइ तनुज मैं हुव दरिद्रतर।
सो अब बिताइ पंच छ समा भो इतो रु सुहि जन्म भुव।
रजमूढ अबहु जानत रहत धारक मम कुल यहहि धुव॥२१॥

अरिसिंह कही से घूमता हुआ यहाँ आ निकला था और उसकी नजर मेरी माँ पर पड़ी जो अत्यन्त ताकतवर थी। वह यहीं ठहर गया। उसने मेरी माँ से विवाह कर लिया और कई दिन यहाँ बिताने के बाद जब सुना कि शत्रु सेना आई है तो वह यहाँ से चला गया। मैं बीज रूप अर्थात् वीर्य रूप में चंदाना क्षत्रिय के वंश में जन्मी अपनी माँ के गर्भ में था। जब मेरी माँ का प्रसव काल आया उस समय हम बहुत गरीब थे। मैं अब पाँच छह वर्ष का हो गया हूँ और मैंने यही सुना है कि यही मेरी जन्मभूमि है। मैं अपने दुःखों के कारण अब तक यही जानता रहा हूँ कि यही मेरा कुल भी है।

दोहा

केवल जानों मातृकुल, इतर न बोध्य उदंत।
जानत व्हैहैं जनक को, सदनहु जननि सुमंत॥२२॥

हे बाबा! इस तरह मैं केवल अपने मातृकुल को ही जानता हूँ इसके अतिरिक्त और कुछ नहीं जानता। रहा सवाल मेरे पिता के कुल का तो उसे मेरी माँ जो बुद्धिमान है वह अवश्य जानती होगी।

षट्पात्

सोदासु सुनि प्रसन्न धाइ हम्मीर अंकधरि।
अक्खिय तुमहि अधीस कुलहि रक्खन अल्पन करि।
रक्खि सरन नृपरतन मुररि भवदीय पितामह।
चित्रकूट अधिराज रान लक्खन अतिआग्रह।
तव तात कुमर अरिसिंह जुत सुत बारह सोदर बसु न।
सुरलोक गयउ पालत सरन उज्झि जवन संगर असुन॥२३॥

बारू चारण इस बालक से ऐसी बातें सुन कर अत्यन्त प्रसन्न हुआ और उसने बालक हम्मीर को अपनी गोद में भर लिया और कहा कि तुम राजा कुल के हो। तुम ही अब उस कुल के रखवाले हो। तुम्हारे दादा ने राजा रत्नसिंह (रणथंभोर के चहुवान राजा) को अपनी शरण में रखा था। वे चित्तौड़गढ़ के स्वामी महाराणा लक्ष्मण सिंह (लाखन) थे जिन्होंने आग्रह पूर्वक उसे शरण दी थी और इसी शरण देने के कारण तुम्हारे पिता अरिसिंह सहित उनके बारह पुत्र और आठ भाई स्वर्गलोक को गए। उन सभी ने शरण में आये की रक्षार्थ यवनों से हुए युद्ध में अपने प्राण गँवाए।

दोहा

तनय बच्यो लघु तेरहम अजयसिंह अभिधान।
काका जो तव कैलपुर, रहि रु कहावत रान॥२४॥

लुट्टत पुरचित्तोर लग, तोहि न जानत तात।
कहँ कुमर अरिसिंह कै, बिदित हुती मम बात॥२५॥

अजयसिंह मोसों अबहि, जियत तोहि पति जानि।
भूप मान तजि भट भयो, महत भाग्यफल मानि॥२६॥

उस युद्ध में महाराणा का सबसे छोटा तेरहवाँ पुत्र जो अजयसिंह नामक था वही घायलावस्था में जीवित बचा। वह अजयसिंह तुम्हारा काका है और जो इन दिनों केलवाड़ा में रह कर महाराणा कहलाता है। उसने अपनी लूटपाट का दायरा चित्तौड़गढ़ तक बढ़ा रखा है। वह भी यह बात नहीं जानता। एक मात्र मैं ही ऐसा हूँ जो यह बात जानता हूँ क्योंकि मुझे राजकुमार अरिसिंह ने स्वयं बताई थी। मेरे कहने से अब अजयसिंह भी तुम्हें अपना स्वामी मानता है। वह तो स्वयं वर्तमान महाराणा होने का मान छोड़ कर तुम्हारा सामंत बनने को तत्पर है और यह भी मात्र अपने भाग्यबल को मान कर।

षट्पात

इम हम्मीरसिंह उचित बिक्खि चारन तिहिं बारुव।
अजयसिंह कंहं आनि दये तत्थहि मिलाइ दुव।
मातुलकुल समुझाइ अनुग काका अजिह्मउर।
भ्रातबहु रु भतीज प्रनत लैगो सु कैलपुर।

सब नय सिखाइ सहृदय सिसुहिं करि व्यय पृतना प्रचुर किय।
जिहिं हनि प्रमार संभर जवन लहि अवसर चित्तोर लिय॥२७॥

इस तरह बारू ने जब पूरी परख कर ली कि हाँ, यह बालक ही हम्मीर है तो वह उसे साथ ले कर अजयसिंह के पास गया और वहाँ काका-भतीजा दोनों का मिलाप करवाया। इसके बाद बालक हम्मीर के मामा के कुटुम्बियों को समझाया कि वह सरल चित्त वाला काका अजयसिंह अब इसे स्वामी मान कर उसका सामन्त होने के लिए तैयार हो गया है। जब उसके मामा के घर के लोग सहमत हो गए तो काका अजयसिंह अपने भतीजे और उसकी माँ (अर्थात् अपनी भाभी) को केलवाड़ा ले गया। उसने उन्हें वहाँ रख कर हम्मीर को नीति आदि की शिक्षा दी और धीरे-धीरे पैसा खर्च कर अपनी एक सेना खड़ी की जिसकी सहायता से चित्तौड़गढ़ में बादशाह द्वारा रखे ग‍ए रक्षकों यथा प्रमारों, चहुवानों और यवनों से अवसर देख कर चित्तौड़गढ़ वापस ले लिया।

दोहा

सूर भतीजहिं प्रभु समुझि, दै गद्दी रु उदास।
भवतजि भाव बिरक्त भजि, अप्प लह्यो अबिनास॥२८॥

नृपतिराम पिक्खहु नियत, कलि मज्झहु कृत कर्म।
अजयसिंह सीसोद सम, होत अबहु ध्रुव धर्म॥२९॥

जनमें ताके तोक जुग, पहिलो सज्जन पुत्त।
अनुजा तास प्रभावती जो कन्यागुन जुत्त॥३०॥

अजयसिंह तनुजात वह, सज्जन हुव बुध सूर।
दैन लगो हम्मीर इहिं, पटा उचित बसुपूर॥३१॥

जदपि रान हम्मीर हठ, करि थक्किय बिधि कोरि।
पटा लक्ख रुप्पय प्रमित, न लयो तदपि निहोरि॥३२॥

बीर सु तजि मेवार बलि, दक्खिन स्वबल दिखाइ!
जित्ति सितारा नैर जंहं, तप्यो बैभव पाइ॥३३॥

याही के कुलके अबहु, हुते सितारा हंत।
पै अब गौरन प्रबलपन, स्वत्वहिं छोरि सुसंत॥३४॥

इसके बाद अजयसिंह ने अपने भतीजे के प्रभुत्व को मान कर राजगद्दी पर बिठाया और स्वयं संसार से विरक्त हो मोक्ष को प्राप्त हुआ। हे राजा रामसिंह! आप नियति का चमत्कार देखिये कि कलियुग में भी सतयुग जैसा कार्य हुआ। सिसोदिया अजयसिंह जैसा व्यक्ति भी हुआ जो अपने स्वामीधर्म को निबाहने वाला हुआ और जो अपने धर्म पर अटल रहा। इस अजयसिंह के दो संतानें हुई। इनमें से बड़ा पुत्र था जिसका नाम सज्जन सिंह और उससे छोटी पुत्री जिसका नाम प्रभावती था। उसकी पुत्री अत्यंत सुन्दर और गुणवती थी। अजयसिंह का पुत्र सज्जन सिंह भी पंडित और गुणवान था। उसे जब महाराणा हम्मीर काफी समृद्ध जागीर का पट्टा देने लगे तो उसने इनकार कर दिया। महाराणा ने सारे प्रयत्न किये उसे समझाने के पर व्यर्थ। यहाँ तक कि महाराणा ने उसे लाख रुपयों वाली जागीर देनी चाही तब भी उसने लेना स्वीकार नहीं किया। वह वीर तो मेवाड़ प्रदेश को हमेशा के लिए छोड़ कर दक्षिण दिशा में अपने बल का प्रदर्शन करने चला गया और वहाँ अपने बाहुबल से सितारा नामक नगर को जीत कर उसे अपनी राजधानी बनाया। एक अर्से तक उसने वहाँ सुखपूर्वक राज्य किया। उसके वंशज सितारा में अब तक विद्यमान थे पर खेद की बात यह कि अंग्रेजों ने उन श्रेष्ठ जनों से उनका अधिकार छीन लिया।

सचरणगद्यम्

जा सज्जनसिंह की अनुजा प्रभावती नाम रानां हम्मीर नें स्वकीय सोदर्य स्वसा के समान सत्कार सहित बित्तको बिसेस व्यय बिस्तारि अत्यंत उद्धव करि बूँदी के अधीस हड्डाधिराज हम्मीर के पट्टप राजकुमार बरसिंह को बिबाहि दई।

अरु पितामह लक्खन के समान स्वकीय सीमा में सासन कों सफल करि दिल्ली के दर्प को दाहिबे की चर्या लई।

क्षत्र बंधुन को भानेज हो तथापि नीति पराक्रम द्वै ही पदार्थ असाधारन अपनाई आर्यावर्त्त के अधीसन में अग्रगण्य आर्यधर्म को आलंबन अद्वितीय भयो।

अरु याही रानां हम्मीर कै खित्तलनाम कुमार जन्म लीनों सोहू पिता की शिक्षा के प्रमान बाल्यबय में ही आर्यधर्म के आधार ऐसे

आपुने अन्वय के अनुकूल आगम पढि गयो ॥३५॥

इस सज्जनसिंह की छोटी बहन प्रभावती को महाराणा हम्मीरसिंह ने सदा ही अपनी सगी सहोदरा (बहन) के समान समझा। महाराणा ने खूब धन खर्च कर पूरी धूमधाम से बड़े उत्सव के साथ इसे बूँदी के स्वामी हाड़ा राजा हम्मीरसिंह के पाटवी राजकुमार बरसिंह से ब्याही। इसके साथ ही महाराणा हम्मीरसिंह ने अपने दादा राणा लक्ष्मणसिंह की तरह अपने राज्य का कुशल प्रबन्ध किया और दिल्ली (बादशाह) के दर्प को चूर करने का कार्यक्रम बनाया। यह महाराणा यद्यपि हल्के माने जाने वाले क्षत्रियों का भानजा था पर नीति और पराक्रम दोनों में असाधारण था इसलिए वह पूरे आर्यावर्त के राजाओं में आर्य धर्म का आधार सुरक्षित रखने में अद्वितीय होने से एक अग्रगण्य राजा माना गया। इसी महाराणा हम्मीर के क्षेत्रसिंह (खेता) नामक पुत्र जन्मा जिसने अपने पिता से पाए संस्कार और शिक्षा के सहारे अपनी बाल्यावस्था में ही अपने वंश की परंपरा के अनुसार आर्य धर्म के आधारभूत शास्त्रों का अध्ययन सम्पूर्ण कर लिया।

प्रायो मरुदेशीय प्राकृत मिश्रित भाषा

सचरणगद्यम्

इण बातैर अनंतर ही एक समय चीतोड़ मैं कमठांणां रो काम चालतां कोई धातूरी एक मूर्त्ति च्यारि हाथ धारण कीधां भूतळ मांहिं थी नीसरी।

जिकण रो भाव बिचारण रे काज राणैं हम्मीर आपरी सभा में मंगाई परिकर रा लोका नूं प्रत्येक पूछि परीक्षा करी।

जिकण मूर्ति रै एक हाथ नीचो दूजो हाथ ऊंचो तीजो बीच में तिरछो रहियो।

अर चोथो हाथ कंठ रै लागो देखि आप आपरी उपलब्धि रै अनुसार सारां ही जुदो जुदो भाव कहियो ॥३६॥

इस घटना के अनंतर एक बार चित्तौड़गढ़ में किसी निर्माण कार्य के चलते खुदाई में एक धातु निर्मित पुतली निकली। इस मूर्ति के चार हाथ थे जो लंबे समय तक जमीन में दबी हुई थी। इस मूर्ति के चार हाथ होने के अभिप्राय को जानने के निमित्त महाराणा ने इस मूर्ति को अपने राजदरबार में

मँगवाया और बारी बारी से अपने सामन्तों, सचिवों और दरबारियों से इसका अभिप्राय पूछा। वे सभी की परीक्षा ले रहे थे। उस मूर्ति का एक हाथ नीचे ओर दूसरा हाथ ऊपर की तरफ, तीसरा हाथ बीच में तिरछा बना हुआ और चौथा हाथ मूर्ति के कंठ से लगा हुआ था। सभी उपस्थित राजदरबारियों ने अलग-अलग भाव वाली बातें उस मूर्ति को देख कर कही।

जठै सारी ही सभा नूं सुणाई सोदै चारण बारू कही या मूर्ति तो राणा हम्मीर रो अद्वितीय उदार बीरपणों दिखावण रै काज पाताळ लोक थी भूलोक मैं आई।

अरु सक्ति रो स्वरूप धारण करि समग्र ही संसार रा स्वांत में एक ही चीतोड़ रा अधीस री अधिकता जणाई।

नीचो हाथ करि सातूं ही अतलादिक तलालोकां में राणा जिसड़ा दूजा उदार बीर रो अभाव जतावै।

अर ऊंचो हाथ करि भुवरादिक छै ही उर्द्धलोकां में इणरा प्रति भट रो अनादर बतावै॥३७॥

सबसे अन्त में बारू सोदा चारण ने पूरी राजसभा को संबोधित करते हुए कहा कि सभासदो! यह पुतली तो महाराणा हम्मीर की अद्वितीय उदारता और वीरता का बखान करने के लिए पाताललोक से सीधी पृथ्वीलोक में आई है। यह शक्ति का रूप धर कर पूरे संसार के मन में बसी हुई एकमात्र महाराणा की बड़ाई को अभिव्यक्त कर रही है। नीचे वाले हाथ से अर्थात् नीचे की ओर इंगित करते हुए हाथ से वह बता रही है कि अतल आदि नीचे के सातों ही लोकों में महाराणा जैसे उदार और वीर व्यक्ति का अभाव है। इसी तरह ऊपर वाले हाथ से अर्थात् ऊपर की ओर इंगित करते हुए हाथ से यह कह रही है कि ऊपर के छहों ऊर्द्धलोकों में महाराणा के शत्रु का कोई आदर नहीं है।

तीजो हाथ बीच में राखि इण ही महीमंडल रै माथै राणा जिसो दूजो रजपूत राणी जणिया न कहै।

अर इणमें झूठो होई तो चोथो कर कंठ लगाइ आपरो सीस उतारण रूप सपथ रो स्वीकार चहै।

सोदा रो इसड़ो विदग्धता रो बचन सुणतां ही सारी ही सभा

वाहवाह कीधो।

अर राणे हम्मीर इण ऊहा री रीझ पर आपरा पोलिपात्र बारू नूं सासणां रा सप्तक समेत बारह लाख राजतीमुद्रा रो बिभव दीधो ॥३८॥

तीसरा हाथ बीच में रख कर यह इंगित कर रही है कि इस पृथ्वी पर महाराणा हम्मीर जैसा रानी से उत्पन्न कोई राजा नहीं है और यदि इन तीनों बातों में कुछ भी झूठ हो तो चौथे हाथ को अपने कंठ से लगा कर कह रही है कि शपथपूर्वक इस कंठ की ठौर से काट कर मेरा सिर उतार लिया जाए। सोदा बारू का यह विद्वतापूर्ण वचन सुन कर राजसभा में उपस्थित सभी सभासदों ने वाह-वाह की। महाराणा हम्मीर ने भी कवि की इस तर्कना पर रीझ कर बारह लाख रजत मुद्राओं के साथ सात गाँवों की जागीर प्रदान की और बारू को अपना पोलपात्र बारहठ बनाया।

अठी इण समय रै आगै हाड़ा राव हम्मीर रा भावी बृद्धबय में दिल्ली रा पद्रहां अधीस जवनेस मुहम्मदसाह री पातसाही में इणरा पिता पहिला पातसाह गयासुद्दीन रो बणायो पंजाब रो सूबादार नवाब रहीमअली आपरा बाहुबळ थी पातसाह बणि दिल्ली जिसड़ी दुलही नूं बरण रै काज आयो।

अरु मुहम्मदसाह केही आर्य म्लेच्छ सुभटां रा समूह सज्जीभूत करि चतुरंगिणी चमू नूं प्रचारि साम्हों चलायो।

सस्त्रपात रा प्रारंभ में ही सूबापति रहीमअली रा बीरां रा बाहुबल थी दिल्ली रो कातर कटक पलायमान थियौ॥

जठै मुहम्मदसाह रा मतंगज नूं मुड़ाइ कर्णाटराज रै कुमार प्रामार नरसिंहदेव कालंजर राज रै कुमार पंडिया चाहुवाण चाचिकदेव घोड़ा उठाइ दो ही राजकुमारां मुहम्मदसाह रै देखतां रहीमअली रौ अनीक समस्त ही जाइ त्रस्त कियौ ॥३९॥

उधर इस समय के थोड़े अंतराल बाद हाड़ा राजा हम्मीर की वृद्धावस्था में दिल्ली के पन्द्रहवें स्वामी बादशाह मुहम्मद शाह की बादशाही में इसके पिता गयासुद्दीन तुगलक द्वारा पूर्व में नियुक्त पंजाब के सूबेदार रहीम अली ने अपने बाहुबल के सहारे स्वयं को बादशाह घोषित करते हुए घोषणा की कि मैं दिल्ली रूपी दुल्हन को ब्याहने आ रहा हूँ। इस का पता पड़ते ही मुहम्मद

शाह ने कई आर्य राजाओं और यवन सामन्तों की सेना को एकत्रित कर पूरी चतुरंगिनी को सज्जित कर उसका मुकाबला करने सामने भेजी। युद्ध के आरंभ में शस्त्राघात होते ही सूबापति रहीमअली के योद्धाओं के बाहुबल के आगे दिल्ली की कायर शाही सेना पलायन कर गई।

जहाँ मुहम्मदशाह के हाथी को वापस मुड़वा कर कर्णाटराज के राजकुमार नृसिंहदेव प्रमार और कालंजर राज के राजकुमार चाचिकदेव चहुवान दोनों ने अपने घोड़े बढ़ाये और मुहम्मदशाह की नजरों के आगे रहीमअली की सारी सेना को भयग्रस्त बना डाला।

प्रामार रा प्रहरणां रा प्रहार पाइ पीलू री पीठिहुँ परासुहोई पड़ता रहीमअली रौ मस्तक तौ चाहुवाण चाचिकदेव काटि लीधौ।

अर नरसिंहदेव नूं छिन्न-भिन्न होइ पड़तो देखि केही जवना नूं परेतपति री पुरी रा पाहुणा करि उही उत्तमंग आणि मुहम्मदसाह रे उपायन कीधौ।

अर कहियो नरसिंहदेव रा सस्त्राँ रा सन्निपात हूँ प्राणहीण होई पड़ता रहीमअली रौ मस्तक तौ आपरा विजय में एक प्रमाण पेखावण रै काज मैं ही काटि आणियौ।

अर नरसिंहदेव तो घणां म्लेच्छा रा मस्तक महीतल रौ मंडण करि लोहछक पाइ पड़तो दीठो परंतु मैं तो जिकण रौ जीणो मरणो न जाणियौ ॥४० ॥

प्रमार नृसिंहदेव के शस्त्रों के प्रहारों से हाथी की पीठ पर से रहीमअली प्राणहीन हो कर नीचे गिरा और नीचे गिरते हुए रहीमअली का सिर चहुवान चाचिकदेव ने काट लिया फिर नृसिंहदेव को छिन्न-छिन्न (अंगभंग हो कर) हो कर रणभूमि में गिरते निहार कर कई यवनों को यमराज की नगरी के मेहमान बनाते हुए चाचिकदेव ने रहीमअली का काटा हुआ मस्तक लाकर मुहम्मदशाह को भेंट किया और कहा कि नृसिंहदेव के प्रहारों से प्राणहीन होकर गिरते हुए रहीमअली का यह मस्तक तो मैंने इस आशय से काटा कि मैं आपकी विजय को प्रदर्शित करने में प्रमाणस्वरूप यह पेश कर सकूं। प्रामार नृसिंहदेव को बहुत सारे यवों के सिर काट कर जमीन पर गिराते हुए

स्वयं को घावों से छके हुए गिरते हुए मैंने देखा पर यह नहीं कह सकता कि वह जीवित है अथवा मर गया।

चाचकदेव री सूचना सूं प्रामार रा पराक्रम री समता में सिराही मुहम्मदसाह इ खेत सम्हाळियौ।

अर सैकड़ाँ मृतक म्लेच्छों रा मंडल रै बीच कर्णाट राज रौ कुमार नरसिंहदेव घणां घावाँ करि घायल पड़ियो थको भी चेतना समेत भाष्ठियों।

सिबिका में उठाइ आणताँ नरसिंहेदव कहियो सत्रु रौ सिर तौ चाचक उडायो तिणरा सत्कार रै समय म्हारो आदर खटावै नहीं।

जठै चाचिक कहियो मैं तो बिजय में केवल प्रमाण पावण रै कान या कीधी जिणथी ओर री ऊँठी कीर्ति रो भोगणों बीतिहोत्र बसुधेस्वर। रा बंस नूं कोई काळ में भी भावै नहीं॥४१॥

चाचिकदेव की इस सूचना के आधार पर मुहम्मदशाह ने प्रमार कुमार के पराक्रम की सराहना करते हुए रणभूमि में जा कर उस स्थान को खोज निकाला जहाँ सैकड़ां मृत म्लेच्छों के घेरे के मध्य कर्णाटराज का कुमार नृसिंहदेव अनेक घाव खाये पड़ा था। पर अभी उसके शरीर में जान थी।

पालकी में लिटा कर लाते समय नृसिंहदेव बोला कि शत्रु का मस्तक तो चाचिकदेव ने काटा है। यह उसके स्वागतकरने का समय है ऐसे में भला मुझे यह आदर क्यों दिया जा रहा है? यह न्यायोक्त नहीं। तब चाचिकदेव ने प्रत्युनर में कहा कि मैंने तो वह फकत विजय के प्रमाण हेतु किया। किसी अन्य की झूठी कीर्ति को यों भोगना अग्निवंशी चहुवानों को किसी भी सूरत में नहीं सुहाता।

इण रीति परस्पर में प्रसंसा करता नरसिंहदेव चाचिकदेव दो ही राजकुमार नूं दिल्ली आइ महुम्मदसाह चामर छत्रदिक समान सत्कार रै साथ केछी लाख रुपियां रौ राज दीधौ।

अर पुरुष परीक्षा में विद्यापति मिश्र भी याँ दोही सत्यवीरां रा सुजस रौ प्रकास कीधो।

जिण समय विक्रम रा सक री गगन गज गुण गोत्रा (१३००)

सम्मित समा में चउद्दहों दिल्लीस गयासुद्दीन कोई प्रासाद रा पड़ता पटळ रै हेठे आइ मरियो तरैं इणरो पुत्र तुगलक अलिफखान पंद्रहों पातसाह हुवो जिकण ही रपरो मुहम्मदसाह इसड़ो दूजो नाम पायो।

अर इणरा ही सम में एक हुसैन नाम जवन आपरा ही स्वामी कोई गणकराज विप्र रा बचन रै अनुसार मालवदेस रै पार रा समस्त दक्खिण री पातसाही पाइ दूजो नाम करि अलाबुद्दीन कहायो ॥४२॥

इस प्रकार परस्पर एक दूसरे की सराहना करते दोनों राजकुमारों को तब मुहम्मदशाह दिल्ली लाया और यहाँ उस बादशाह ने चँवर, छत्र के सम्मान के साथ दोनों को लाखों रुपयों की आमदनी वाली जागीर प्रदान की। विद्यापति मिश्र जैसे कवि ने भी अपने ग्रंथ पुरुष परीक्षा में चाचिकदेव और नृसिंहदेव दोनों यथार्थ वीरों के सुयश को प्रकाशित किया है।

विक्रम संवत् के वर्ष अठारह सौ तीस के समय में जब दिल्ली का चौहदवाँ बादशाह गयासुद्दीन किसी गिरते हुए महल के मलबे के नीचे दब कर मर गया तब उसका पुत्र अलिफखान तुगलक दिल्ली का पन्द्रहवाँ बादशाह बना सिने अपना नाम बदल कर मुहम्मदशाह रखा। इसी काल में एक हुसैन नाम यवन ने किसी ब्राह्मण ज्योतिषी की भविष्यवाणी के अनुसार मालवा प्रांत के आगे के पूरे दक्षिण भूभाग को जीत कर बादशाही प्राप्त की जो अपने अल्लाउद्दीन के दूसरे नाम से प्रसिद्ध हुआ।

दोहा

अठी कँकर जगमाल इम, इणही समय महीप।
साहसुतान्लै सांधिया, दल पैला कुलदीप ॥४३॥

हे राजा रामसिंह! यही वह काल था जब कुँवर जगमाल गुजरात के बादशाह (मुहम्मद बेगड़ा) की पुत्री का बलात् अपहरण कर ले गया और

टिप्पणी : राजपूताना में यह बात प्रसिद्ध रही है कि जगमाल ने गुजरातो बादशाह मुहम्मद बेगड़ा को पुत्री गींदोल्नी को जबरन पकड़ कर उसे अपनी पासवान बनाया। अव्वल तो यह नाम गींदोल्नी जैसा नाम यावनी प्रतीत नहीं होता दूसरा कुछ लोगों का मत है कि गींदोल्नी बादशाह के एक सरदार नवाब अब्दुल्लाह की पुत्री थी. इस में से चाहे जो सत्य हो पर इतना अवश्य है कि लोक में यह खूब प्रचलित आख्यान है और गणगौर के पर्व पर इस आशय के लोकगीत यहाँ की महिलाएं अवश्य गाती हैं। संपादक

ऐसा करने में उसने पूरी विरता के साथ शत्रुदल का सामना किया।

सो उदंत अब मूळ सह, सप्तम किरण प्रसंग
भाखीजै रचियो भड़ां, जिम मेहवपुर जंग॥४४॥

हे राजा रामसिंह! मैंने मूल सहित इस वृत्तान्त को अपने ग्रंथ के सातवें मयूख में थोड़ा सा कहा है पर अगले आठवें मयूख में विस्तारपूर्वक बादशाह मुहम्मद बेग की सेना को बुलाकर महेवापुर के योद्धाओं द्वारा किये गए भीषण संग्राम का वर्णन करूँगा।

इतिश्रीवंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे पंचम राशौ बीतिहोत्र चंडासि वंशवर्णनबीजहड्डाधिराडस्थिपाल बीज्यानुबीज्यविहितव्याख्यानवेला-व्याहार्यबुन्दीनरेन्द्रहम्मीर तत्कुमारबरसिंह समयसामीप्यसङ्गतस्वपितृव्यका-ऽजयसिंह सहित राणा हम्मीर चरित्रे पूर्वरणो द्धताऽसुकाऽजयसिंह गूढबाट देशप्राच्यप्रान्तस्थध्वस्ततत्रत्यपारिपान्थिकसत्कृतस्वपक्षपात्तिवसतिककदल-पुरनामनगरसमाक्रमण निपातितानेकयवन त्रासितलुण्टितमेदपाटप्रदेश समात्तराणापदा ऽजयसिंहार्थ चारण बारुतदग्रजाङ्गजहम्मीरमातुलगृहविद्य-मानत्वज्ञापन तत्प्रेषितबारूसुभटसचिवीकृतसवयस्कबालवृन्दमाता-महक्षेत्रनिष्पन्नोपाधान्यपृथुकविभाजकसमात्ततत्समाजस्वामित्वशूरशिशु-हम्मीरनिरीक्षण सस्वागतभोजितप्रश्नोत्तेरानश्चितान्योन्यस्वरूपबारूसमा नीताऽजयसिंह हम्मीर सम्मेलन कदलपुरानीतसप्रज प्रजावती कप्रच्छन्न-वृद्धबलप्रहतप्रद्रावितप्रामारादिप्रतीपाऽजयसिंह सुशिक्षितनृपत्वोचित-भ्रातृजहम्मीरार्थचित्रकूटसमाक्रमण।

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण की पंचम राशि में अग्निवंशी चहुवान वंशवर्णन के कारण हड्डाधिराज अस्थिपाल के वंश और वंश की शाखाओं की कथा बताने के समय के वचनों में बूँदी नरेन्द्र हम्मीर और उसके कुमार बरसिंह के समय की समीपता में होने वाले काका अजयसिंह सहित राणा हम्मीरसिंह के चरित्र में पहले के युद्ध में अपने प्राण को बचाकर अजयसिंह का गौडवाड़ देश के पश्चिम प्रान्त में स्थित वहाँ वाले शत्रुओं का नाश करके अपने पक्षपात वाले लोगों से पूजित होकर कैलवाड़ा नामक नगर को लेना, अनेक यवनों को मार और मेवाड़ देश को लूटकर राणा पद को ग्रहण किये हुए अजयसिंह के अर्थ चारण रू का अजयसिंह के बड़े भाई (अरिसिंह) के पुत्र हम्मीरसिंह का मामा के घर में विद्यमान होने की सूचना

करना, उसके भेजे हुए बारू का अपनी अवस्था वाले बालकों के समूह को उमराव और मंत्री आदि बनाकर अपने नाना के खेत पर पके हुए (भुने हुए) मक्का के फलों को बालकों को बाँटते और उस समाज के स्वामित्व को ग्रहण किये हुए शूर बालक हम्मीरसिंह को देखना, आये हुए का आदर करके प्रश्नोत्तर से परस्पर के स्वरूप को निश्चय करके बारू का अजयसिंह को लाकर हम्मीर से मिलाना, कैलवाड़ा पुर में संतान सहित बड़े भाई की स्त्री को प्रच्छन्न रखकर बड़ी सेना से प्रामार आदि शत्रुओं को मारकर और भगाकर अजयसिंह का नृपत्व के उचित श्रेष्ठ रीति से शिक्षा पाये हुए भतीजे हम्मीरसिंह के अर्थ चित्तौड़गढ़ को लेना।

मेदपाटप्रभूकृतहम्मीरविरक्तपितृव्यकाऽजयसिंह बोगचर्यावपुर्विहान तिरस्कृतराणाहम्मीरार्पितमुद्रालक्ष प्रमिताऽऽय पट्टत्यक्तमेदपाटा-ऽजयसिंहसूनुसज्जनसिंह सितारापुरस्कन्धावारदक्षिणदिक्कि यत्प्राच्य-प्रान्तराज्यसमासादन राणातद्भगिनीप्रभावती बुन्दीशकुमारवरसिंहा र्थवितरण प्रथितनयपराक्रमा निरुद्धशासनचित्रकूटाधिराज हम्मीर सुनुकुमार क्षेत्रलशैशवसमुचितशिक्षण प्रासादपीठभूखननप्रादुर्भूतपाणि-चतुष्क वद्धातुपुत्रिका भावसंभावकसौतेयबार्वर्थसशासनसप्तक द्वादशलक्ष द्रम्मवसुवितरण दिल्लीशमुहुम्मद सामन्तप्रामारराजकुमार नरसिंह देव परासुपातितप्रतिभटरहीमशिरः कर्तकचाहुवाणराज कुमारचाचिकदेव स्वामिपुरोयथातथ्यकथन तत्तदसाधारण शौर्य सत्य प्रभावप्रसन्न यव-नेन्द्रनरसिंह चाचिक बहुलक्ष्यरौप्यक राज्यसमसत्करण सूचित संवत्समय-दिल्लीशगयासुद्दीन प्रासादपटलपातप्रमापणानन्तरतत्पुत्राऽलफखाना ऽपरनामतुगलक्मुहम्मद पंचदशपातसाहीभवन तत्समय स्फुटीकृत-स्वनामालावुद्दीन यवनान्तरहुसैन स्वस्वामिगण कविप्रवचनाऽनुसार-दक्षिणदिक्यवनेन्द्रताप्रापण मेहवपुरमहीप कार्मध्वजमल्लिनाथ राजकुमार जगमाल गौर्जरधरेशयवनेन्द्रमुहुम्मदबेगदुहितृगिंदुल्लीहरण समाहूत-तत्सैन्यकरण वृत्तान्तविस्तरवक्ष्यमाणात्वविख्यापन सप्तमो मयूखः ॥७॥ आदितश्चतुः पञ्चाशदुत्तरैकशततमः ॥१५८॥

हम्मीरसिंह को मेवाड़ देश का स्वामी बनाकर विरक्त होकर काका अजयसिंह का योगचर्या से शरीर छोड़ना, राणा हम्मीर सिंह के दिये हुए लाख रुपये की आमद के पट्टे को और मेवाड़ देश को छोड़कर अजयसिंह

के पुत्र सज्जनसिंह का सतारा नगर को राजधानी बनाकर दक्षिण दिशा में कितने ही दक्षिण के राज्यों को लेना, उसकी बहन प्रभावती को महाराणा का बूँदीश के कुमार बरसिंह के अर्थ देना, नीति और पराक्रम में प्रसिद्ध और जिसकी आज्ञा कभी नहीं रुकती ऐसे चित्तौड़ के राजा महाराणा हम्मीरसिंह का अपने पुत्र क्षेत्रसिंह को बालकपन में उचित शिक्षा देना, महल की नींव खोदने में निकली हुई चार हाथ वाली धातु की पुतली के भाव के कहने से चारण बारू के अर्थ सात सांसण और बारह लाख रुपयों का धन देना, दिल्ली के बादशाह मुहम्मद के उमराव प्रामार राजकुमार नरसिंहदेव के मारकर गिराये हुए शत्रु रहीम का मस्तक काटकर चहुवान राजकुमार चाचिकदेव का स्वामी के आगे सत्य कथन करना, उनकी असाधारण वीरता से और सत्य कथन के प्रभाव से प्रसन्न होकर बादशाह का नरसिंह औग चाचिक को बहुत लक्ष रुपयों के राज्य देकर बराबर सत्कार करना, कहे हुए सम्वत् में दिल्लीश गयासुद्दीन का महल की छत पड़ने से मरने के बाद उसके पुत्र अलफखान और दूसरे नाम से तुगलक मुहम्मद का पन्द्रहवाँ बादशाह होना, उस समय में अपना नाम अलाउद्दीन प्रसिद्ध करके यवनों में से हुसैन नामक यवन का अपने स्वामी ज्योतिषी ब्राह्मण के कहने के अनुसार दक्षिण दिशा में बादशाह होना, महेवापुर के राजा राठौड़ मल्लिनाथ के राजकुमार जगमाल का गुजरात की धरा के पति बादशाह मुहम्मद बेग की पुत्री गींदोली को हरना, उसकी सेना को बुलाकर रण के वृत्तान्त को विस्तार से कहने की इच्छा प्रकट करने का सातवाँ मयूख समाप्त हुआ। और आदि से एक सौ चौवन मयूख हुए।

प्रायो मरुदेशीय प्राकृत मिश्रित भाषा

दोहा

तीडाउत सळखा तणें, मल्लीनाथ महीप।
जैतमाल बीरम जथा, तीन तनुज कुळदीप॥१॥

राव तीडा के पुत्र सलखा के अपने कुल को प्रकाशित करने वाले राजा मल्लीनाथ जैतमाल और बीरमदेव ये तीन पुत्र हुए।

सचरणगद्यम

पहिली दिल्ली रा अधीस एकादसमां पातसाह खलजी अलावुद्दीन रा समय रै समीप मेहवनगर राष्ट्रकूट राजा सलख रै मल्लिनाथ जैत्रमल्ल

वीरमदेव ए तीन पुत्र हुवा।

तिकां में जैत्रमल्ल नूं सुमियाणों बीरमदेव नूं खेड़ नामक स्थान बैठण नें देर दोही छोटा कुमारां नूं कीधा जुंवा।

सळख रै अनंतर बडो कुमार मल्लिनाथ मेहवानगर रो महीप थियो।

अर जिकण रै बीराधिबीर उधारा आंटां रो लेणहार जगमाल नाम कुमार जन्म लियो ॥२ ॥

पूर्व में दिल्ली के ग्यारहवें बादशाह खिलजी अलाउद्दीन के समय के आसपास महेवानगर के राठौड़ राजा सलखा के तीन पुत्र क्रमशः मल्लीनाथ, जैत्रमल्ल (जैतमाल) और बीरमदेव हुए। राजा सलख ने अपने छोटे पुत्रों जैतमाल को सुमियाणा और बीरमदेव को खेड़ नामक गाँवों की जागीर (बैठक में) दे कर दोनों कुमारों को अलग कर दिया। राजा सलख की मृत्यु के बाद बड़ा राजकुमार मल्लीनाथ महेवानगर का अधिपति हुआ। राजा मल्लीनाथ के एक वीरशिरोमणि (वीरों का वीर), बैर उधार लेने वाला, जगमाल नामक पुत्र जन्मा।

जिकण कुमार पहिलै बिबाह बुंदी रा अधीस हड्डाधिराज हम्मीर री चंद्रकुमरि नाम पुत्री रो पाणिग्रहण कीधो।

अर कुमरपणें ही अनेक आहव जीति केही बैरियां रा व्रात दक्षिण दिसा रा लोकपाळ.री पुरी रै पंथ लगाई धरा रो धन धूपटतै आडबाहरू हुवो तिको ही मारि दीधो।

एकण समय दिल्ली रा प्रतीप गुजरात रा जवनेस मुहुम्मदबेगड़ साहरै आश्रित पंजाब रा सिंधु देस में भाडंगनैर रा जोइया मुसलमान हूँता जिको हरामखोर होइ प्रमाद रा औसर में साह री घोड़ी समाधि तरवारि बिजयनाळ समेत केही सुबर्ण रा पात्रादिक संभार लूटि आपरा देसनूं प्रयाण कियो।

अर पाछली वाहर रो जोर जाणि दलै नाम जोइयां रै मालिक लूट री सामग्री समेत दाहिणें मारग टळि राठोड़ां नूं सहायक जाणि आधो वित्त बांटणों करि मल्लीनाथ महीप रै मेहवैनगर आइ विश्राम लियो ॥३ ॥

कुमार जगमाल ने अपना पहला विवाह तो बूँदी के स्वामी हाड़ा राजा

हम्मीर की पुत्री राजकुमारी चंद्र कुँवरी के साथ पूरे विधि-विधान सहित रचाया। इस कुमार ने राजकुमार रहते ही कई युद्धों में जीत हासिल कर शत्रुओं के समूहों को दक्षिण दिशा के लोकपाल अर्थात् यमराज की पुरी के रास्ते पर चलाया। जिस किसी ने भी धरा के धन को उड़ाते हुए स्वयं की हद लाँघी अर्थात् आपे से बाहर हुआ उसे इस कुमार ने जीवित नहीं रखा। एक बार दिल्ली के बादशाह के शत्रु और गुजरात के अधिपति यवनेश मुहम्मद बेगड़ा शाह के मातहत सेवक जो पंजाब प्रांत के सिंध प्रदेश में भाडंगनगर के जोइया मुसलमान थे उन्होंने हरामखोरी कर, दर्प में चूर हो कर शाह की समाधि नामक घोड़ी और विजयनाल नामक तलवार सहित स्वर्ण के घड़ों में भरी सामग्री आदि लूट ली। वे ये लूट का माल ले कर अपने देश जाने को निकले।

अपने पीछे आने वाली बेगड़ा शाह की सेना का अंदेशा जान कर इन जोइयों के दल के नायक दला जोइया ने लूट की सामग्री के साथ दाहिनी ओर जाने वाला मार्ग यह सोच कर पकड़ा कि राठौड़ उनकी सहायता करेंगे। इसके लिए उन्होंने लूट का धन आधा-आधा बाँटना तय किया था। इस मार्ग से चल कर जोइयों का दल राजा मल्लीनाथ की राजधानी महेवानगर पहुँचा। उन्होंने वहाँ पहुँच कर विश्राम किया।

जठै घोड़ी तरवारि दो ही रत्न दुर्लभ जाणि स्वामी रा हरामखोर दंड रै उचित कहि कुमार जगमाल बंट थी बिसेस लैण री बिचारी।

सो जाणि राउळ मल्लीनाथ पुत्र रै छानैं जोइया नूं काढि दीधा तिकांहू बित्त रो बिभाग लैण री भी न धारी।

वाहरू बणिया जगमाल नूं पीठि लागो जाणि जोइये दलै बीरम देव कनैं खेड़ जाइ तिकण रो सहाय पायो।

अर पीठि लागै जगमाल खेड़ रै घेरो लगाइ आपरा काका हूँ दला नूं पकड़ाइ देण रो हुकम लगायो॥४॥

महेवानगर में कुमार जगमाल ने लूट के माल के बँटवारे में अपने मालिक को धोखा देने वाले हरामखोर जोइयों को दंड देने के लिए समाधि घोड़ी, विजयनाल तलवार और दुर्लभ रत्न अपने हिस्से से इतर लेने की सोची। इस योजना की खबर जब रावल राजा मल्लीनाथ को हुई तो उसने

अपने बेटे से छिपा कर जोइयों को वहाँ से चुपचाप सुरक्षित भगा दिया और अपने हिस्से का माल (धन) भी नहीं लिया। इस घटना का पता चलते ही कुमार जगमाल ने उनका पीछा किया। जोइयों के नायक दला ने कुमार जगमाल को अपने पीछे लगा जान कर वीरमदेव के गाँव खेड़ में जा कर उसने वीरमदेव से सहायता माँगी। पीछा करते कुमार ने जा कर खेड़ को घेर लिया और अपने काका वीरमदेव को यह हुक्म दिया कि वह तुरन्त दला जोइया को बंदी बनाने में मदद करे।

साहस रै साथ जगमाल रो जोर जाणि घोड़ी समाधि बीरमदेव नूं देर तिकण रै सहाय छानें कढि लूट री सामग्री समेत दलो भाडंगनैर पूगो।

इण अपराध रै ऊपर काका नूं काढि खेड़ में आपरो अमल करि दिसादिसा रा दोयणां री मही दाबि लीधी जिकण समय कुमार रो प्रताप अर्क रे आभास ऊगो।

बीरमदेव आपरी जोड़ायत चावोड़ी समेत देवराज गोगराज जयसिंह विजयराज च्यारि ही बाळकां नूँ सेत्रावा ग्राम रा ठाकुर मांगळिया रजपूत राणिंगदेव रै आश्रित राखि तिकण री पुत्री रो पाणिग्रहण करि नवोढा नूं लेर भाडंगनैर गयो।

अर जोइयो दलो आपरा उपकारक रै अर्थ आधो ग्राम अर्पण करि बडा सत्कार रै साथ बिश्राम देर जिम जिम ताणियो तिमतिम ही नयो ॥५॥

जब दला जोइया को इस बात का इल्म हुआ कि वह वीर कुमार आ पहुँचा है और उसके बल के आगे टिक नहीं पाएँगे तो उसने वीरमदेव को वह समाधि नामक घोड़ी दे कर कहा कि इसके बदले में मेरी सहायता करो। वीरमदेव ने भी दला जोइया को लूट के माल सहित गुप्त मार्ग से सुरक्षित निकाल दिया। दला जोइया लूट के माल के साथ अपने गाँव भांडगनैर पहुँचा। कुमार जगमाल ने इस अपराध के कारण अपने काका को खेड़ से निकाल बाहर किया और खेड़ पर अपना आधिपत्य जमा कर आस-पास के दुश्मनों की भूमि को भी छीन लिया। यह एक ऐसा समय था जैसे कि कुमार के प्रताप का सूर्य उदय हुआ हो। वीरमदेव अपनी चावड़ा वंश की पत्नी को साथ ले कर देवराज, गोगराज, जयसिंह, विजयराज अपने इन चारों पुत्रों

सहित सेतरावा गाँव के मांगलिया कुल के ठाकुर राणिंगदे के यहाँ आ गया। उसने ठाकुर की शरण ली फिर ठाकुर की पुत्री से विवाह रचा कर अपनी नवोढा पत्नी के साथ भांडगनैर आ गया। वीरमदेव को आया देख और यह सोच कर कि उसकी जागीर छूट गई दला जोइया ने अपने भाडंगनैर की जागीर का आधा हिस्सा वीरमदेव को अर्पण किया और पूरे आदर सत्कार के साथ अपने यहाँ ठहराया। यही नहीं वीरमदेव ने इस दला जोइया को जितना जितना दबाया वह उतना ही दबता गया अर्थात् पूर्ण रूपेण समर्पण कर दिया।

दोहा

तठै जनम चूंडा तणों, हुवो घणों मह होइ।
उद्धतपण बीरम उठै, बहियो हेत बुडोइ॥६॥

अठी कुमर जगमाल ऊ, बरियो अपर विवाह।
पूरबभव भड़ प्रेत री, रुचिर सुता कुळराह॥७॥

वीरमदेव को यहाँ भाडंगनेर में अपनी मांगलिया वंश की नवोढा पत्नी की कोख से चूंडा नामक पुत्र की प्राप्ति हुई। इस अवसर पर वीरमदेव ने बहुत बड़ा उत्सव किया। निरकुंश हो कर बीरम ने अपने हर्ष का इजहार किया। उधर कुमार जगमाल ने भी अपना दूसरा विवाह किसी पूर्व जन्म में योद्धा रहे प्रेत की सन्दर कन्या के साथ संपन्न किया।

सचरणगद्यम्

पहली एक धाड़वी रजपूत धारातीर्थ में पड़ियो तोभी कोईक कारण रै प्रभाव आपरा साथ समेत प्रेत हुवो जिकण रै पाछैं प्रजा में एक पुत्री रही।

तिकण नूं जगमाल रै अर्थ देर कन्यादान रो सुकृत आपरै उपदा करण री पूर्वजन्म री पत्नी रा स्वप्न में कही।

तिकण भी आपरो बारहठ भेजि प्रेत नूं पुत्री रो पुण्यमिलण री जणाई विवाहण रै काज जगमाल नूं बुलायो।

अर सप्तपदी रे अनंतर दान रो उदक जामाता पाणि में लेर पिसाचराज रै काज स्वर्ग रो द्वार खुलायो॥८॥

पूर्व में एक वीर राजपूत लुटेरा तलवार की तीखी धारों से कट-कट कर मरा वह किसी कारण से (अपनी पुत्री से अधिक स्नेह के कारण) अपने साथियों सहित प्रेत योनि को प्राप्त हुआ। उसके एक पुत्री थी जो पीछे शेष रही। इस प्रेत ने अपने पूर्व जन्म की पत्नी के स्वप्न में जा कर यह राय दी कि तू अपनी पुत्री का हाथ कुमार जगमाल के हाथ में देना। स्वप्न में अपने स्वर्गीय पति के इस प्रस्ताव को कार्यान्वित करने के लिए अपने बारहठ को कुमार जगमाल के पास भेजा। वह जा कर स्वर्गवासी आत्मा की इच्छा बता कर विवाह के लिए कुमार को बुला लाया। फिर विवाह के लिए लग्नमंडप में सात फेरे लेने के बाद कन्यादान का पानी जामाता कुमार ने अपने हाथ में ले कर उसे अपने श्वसुर पिशाच के लिए छोड़ा। जिससे प्रेत के लिए स्वर्ग का द्वार खुला।

तिकण रै अनंतर कुमार जगमाल पूर्वानुराग जाणि अहमदाबाद रा अधीस मरुबाणी मैं बाच्य इसड़ा बेगड़ा मुहुम्मदसाह री अंगजा क्रीड़ा रै ब्याज आराम में आई तिकण नूं लेर रजपूती रै उफाण मेहवै आई आपरो दुर्ग संगर रै काज सज्ज कीधो।

अर जवन जातीय जाया आपरै उचित न हूँती तो भी पातसाह री पुत्री जाणि स्वकीय साहस नूं सफळ होण रो अवसर दीधो। राजा मल्लिनाथ तो पहली ही पुत्र नूं जुवराज भाव देर प्रपंच हूँ उदासीन एकांत में रहियो। अर जगमाल मस्तक रा भार नूं महागरिष्ट मानि अद्रि रै ऊपर दव लगाइ धारातीर्थ रै उछाह इसड़ी अनेक बातां रो अवलंब गहियो ॥९॥

जिण रीति बंबावदा रै अधीस हड्डाधिराज हालू सूरसज्जा सोवण रो साधन संपादन करतै बाणवै वर्ष रो वय बांसै बाळियो अर अनेक आंटां रा अवमर्द आसंगिया तो भी प्रधन में पुद्‌गल रै पैला रो प्रहार भी न पायो।

अर सामोर बारहठ लोहठ री पाघ रै आंटै मंडोउर रा नरेस पड़िहार हम्मीर नूं गंजि राणा लाखा रो पण बिगड़ाइ जठै तठै जिम तिम मरण मंडियो परंतु आपरै आगार ही अवसाण आयो।

इण रीति अनेक धूंकळ करि भुजां री कंडूया भागी न जाणि जगमाल कुमार अहमदाबाद रा अधीस नूं पांहुणों नूतियो।

जरैं साह भी सैंतीस हजार सेना भेजी जिकण रा समुद्र में मेहवा रो मान बहित्र रै बिधान बूंतियो ॥१०॥

तदनन्तर कुमार जगमाल ने पूर्वानुराग (मिलने से पहले रूप अथवा गुण की तारीफ सुनने से जो प्रीत उत्पन्न हो उसे पूर्वानुराग कहते हैं) से अहमदाबाद के स्वामी, मारवाड़ी में कहा जाए तो ऐसे बेगड़ा, मुहम्मदशाह की पुत्री जो खेलने के बहाने बाग में आई हुई थी उसका हरण कर राजपूती के उफान में अपने नगर महेवा आ गया और युद्ध के लिए अपने दुर्ग में आवश्यक तैयारियाँ करने लगा। यों तो वह यवन पुत्री धर्माचारण की दृष्टि से उसकी पत्नी नहीं हो सकती थी तब भी बादशाह की पुत्री जान कर उसे अपने माहौल में ढलने का अवसर दिया। राजा मल्लीनाथ तो पहले ही अपने पुत्र को युवराज भार सौंप कर राजकाज के प्रपंचों से उदासीन हो कर एकान्तवास के लिए चला गया और जगमाल ने अपने मस्तक पर बहुत बड़ा भार मानते हुए पर्वत पर जा कर आग लगा कर (पर्वत पर लगाई आग बुझती नहीं इसलिए मिटाने से न मिटे ऐसे द्वेष के लिए यह उपमा प्रयुक्त हुई है अर्थात् वह न मिटे ऐसा बैर आगे होकर लेता था।) तलवारों की धारों के तीर्थ में नहाने के उछाह में ऐसी अनेक बातों का सहारा लेने लगा अर्थात् युद्ध का कोई बहाना ढूँढ़ने लगा।

जिस प्रकार बंबावद के स्वामी हाड़ा राजा हल्लू ने वीर शय्या पर सोने के अवसर इकट्ठे करते हुए अपने बयानवे वर्ष की उम्र बिताई पर युद्ध में स्वयं के शरीर पर शत्रु का मर्मान्तक प्रहार नहीं पाया। उसने सामोर (चारण) लोहठ की पगड़ी के बदले में मंडोवर के पड़िहार राजा हम्मीर को हरा कर महाराणा लाखन का प्रण व्यर्थ किया। हल्लू ने यहाँ-वहाँ जैसे-तैसे हो युद्ध में लड़ते हुए मरना चाहा पर उसे मृत्यु अपने स्वयं के घर में आई। उसी प्रकार जगमाल ने अपने और कई उधार के युद्ध लड़े तब भी अपने बाहुओं की खाज (खुजली) नहीं मिटती देखी तो (अर्थात् वीरता से लड़ने की तमन्ना पूरी नहीं होती देख) उसने अहमदाबाद के स्वामी को युद्ध क्षेत्र में मेहमान बनकर आने का निमंत्रण दिया। तब मुहम्मदशाह बेगड़ा ने भी अपनी सैंतीस हजार सैनिकों वाली सेना भेजी। इस भारी सेना रूपी समुद्र में महेवानगर की शान रूपी नाव हिचकोले खाने लगी।

प्रायो ब्रजदेशीय प्राकृत मिश्रित भाषा

दोहा

ही थिय गुज्जरसाह की, पै रट्ठोर प्रबीर।
जाहि आनि बुल्ले जवन, धारा चक्खन धीर॥११॥

वह गुजरात के शाह मोहम्मद बेगड़ा की बेटी थी पर राठौड़ वीर जगमाल ने उसका अपहरण कर यवन सेना को बुलाया ताकि तलवारों की धारों का आस्वाद योद्धा चख सकें।

षट्पात्

सेन सहंस सैंतीस लुब्भि मेहव पुर लग्गिय।
सावन आगम समय ज्वाल तोपन घन जग्गिय।
कुमरी चन्द्रकुमारि हुती बुंदिय निज पिउहर।
तंहं आवन दिन तीज बचन सह सोंह दयो बर।
जिम पक्ख असित बित्तत सजव तक्कत सोक कुमार तिम।
बिनु गयें प्रिया पावक बिसत कलह गये सुधरै सु किम॥१२॥

सैंतीस हजार की भारी संख्या वाली सेना घटा की तरह महेवापुर पर छा गई। सावन मास के आगमन समय में घनी ज्वालाओं वाली तोपें दर्गी। कुमार जगमाल की पहली पत्नी अपने पिता के घर बूँदी में थी उससे कुमार ने श्रावण माह की तृतीया पर बूँदी आने का कोल वचन शपथ पूर्वक कर रखा था कि तीज का उत्सव साथ मनाएँगे। इधर सावन माह का कृष्ण पक्ष ज्यों-ज्यों बीतता था त्यों त्यों कुमार का शोक भी बढ़ा जा रहा था। यदि दिये गए समय पर बूँदी नहीं पहुँचा तो मेरी प्रिया अग्नि में प्रवेश कर जल मरेगी और यदि उसकी सोच कर वहाँ जाता हूँ तो (पीछे से) युद्ध कैसे सुधरेगा?

भटन नर्मजुत भनिय सोक आरूढ स्वामि सन।
अद्रिगिरत सिर ओडि दबे पुब्बहि किम दुर्मन।
कुमर बिहसि तब कहिय मरन मन्नों न अमंगल।
पै मैं रहत प्रिया न जात जातहि धर जंगल।
बुंदिय पठात भो यह बचन मृत जानहु तीज न मिलन।
सुमिरि सु चउत्थि हड्डिय सतिय काय हाय रक्खहिं किलन॥१३॥

इस चिंता में डूबे अपने स्वामी कुमार जगमाल से सामन्तों ने मसखरी के अंदाज में कहा कि हे कुमार! गिरते हुए पहाड़ को अपने सिर पर थामने से पहले ही आप उदास (दुमने) क्यों हो गए? इस पर कुमार ने हँसते हुए प्रत्युत्तर दिया कि नहीं! मैं मरने को अमंगल नहीं गिनता पर मुझे एक दुश्चिंता खाए जा रही है कि मैं रहता हूँ तो मेरी प्रिया नहीं रहेगी अर्थात् मेरे यहाँ रहने पर वह मर जाएगी और जाता हूँ तो मेरे जाने पर मारवाड़ चली जाएगी क्योंकि मैं पहले बूँदी में अपना यह वचन पहुँचा चुका हूँ कि सावन की तीज पर यदि आ कर प्रिये! तुझसे नहीं मिला तो समझना कि मैं मर गया हूँ। मेरे इस वादे को याद कर शर्तिया हाड़ा वंश की वह सती कुंवरानी (चंद्रकुंवरी) सावन की चतुर्थी तिथि को अपनी काया भस्म कर लेगी। ऐसे में अब मैं क्या करूँ? मुझे यह चिन्ता सताए जा रही है।

दाधिम भट्टिय दभिक कुम्म संभर जावल कुल।
डब्भिय सोढे डोड चउ हि प्रामार स संखुल।
मंकुवान मांगलिक गौड़ सैंगर तिम गोहिल।
बग्गरि बारर बिंद हल्ल सीसोद समोहिल।
इंदे सगोत्र कुक्खर उभय चापोत्कट चालुक चतुर।
गज्जिय कबंध बडगुज्जर हु धारक इक इक जुद्ध धुर॥१४॥

क्षत्रियों में भाटी, दाधिम, दहिया, कछवाहा, चहुवान, जावल जैसे कुल वाले और डाभी, सोढा, डोड और सांखला इन चारों प्रामार कुल में हुए। इनके अतिरिक्त झाला, मांगलिया, गौड, सैंगर, गोहिल, बग्गड़, बारड़, बिंद, हल्ल, सिसोदिया, मोहिल, ईंदा और इनके सगोत्र कुक्खर दोनों, चावड़ा, चालुक्य, गाजी, राठौड़, बड़गुज्जर जैसे क्षत्रिय कुलों में एक-एक योद्धा ऐसे हुए जो पुरे युद्ध का भार उठाने वाले थे।

इत्यादिक भट अडर सुनि सु जगमाल उक्त सब।
बुल्लिय हम इत बहुत अप्प इष्टहिं सद्धहु अब।
पटा अप्पि बसु पृथुल लाड जिहिं लोभ लडाये।
दैन सु बदला दैव निठ्ठि ए दिन निरखाये।
पहु जाहु निकसि बुंदिय पिहित पीछैं हम रन भीमपन।
जगमाल आन पामर जवन गंजि भुजन ठिल्लैं गजन॥१५॥

ऐसे कुलोत्पन्न निर्भय क्षत्रियों ने कुमार जगमाल की बात सुन कर कहा कि हे कुमार! यहाँ हम इतने सारे हैं आप तो अपनी इच्छानुसार आचरण करें। आपने हमें जागीरों के पट्टे और धन दे कर सभी तरह के लाड लड़ाए हैं। आपके अहसानों का कर्ज उतारने को बमुश्किल तमाम ये दिन आया है। आसन्न युद्ध कीं चिन्ता छोड़ यदि आपका मन करे तो बूँदी के लिए प्रयाण करना। पीछे हम हैं ना, आप निश्चिंत रहें। हम से जो बन पड़ेगा वह युद्ध में करेंगे। हे कुमार जगमाल! हम अपनी भुजाओं में शत्रु के हाथियों को पीछे ठेलने का हौंसला रखते हैं फिर यह नीच यवन की सेना कौन बड़ी बात है।

इक्क तुरग आरूढ कुमर यह सुनि निसीथ कढि।
जल थल लंघत जात बट्ट रोकिय बनास बढि।
जेरबंध रचि रहित अंस थप्पलि हय हंकिय।
तरत बारतट तरुन साख लग्गत पय संकिय।
निजकर सम्हारि रोधक नियत द्रुमसिर बंधि रुमाल दिय।
तिहिं टारिनैं सु इक कोस तरि बुंदिय निठ्ठि निसीथ लिय॥१६॥

अपने सामन्तों से ऐसी हौंसला अफजाई पा कर आधी रात के समय कुमार ने अपना घोड़ा सज्जित करवाया और उस पर आरूढ़ हो तेज गति से चल पड़ा। आगे बूँदी के रास्ते में भारी वर्षा के कारण जल-थल एक हो गए और बीच में पड़ने वाली बनास नदी अपने तटों को काटती हुई तेज बह रही थी। घोड़े का जेरबंध अपने हाथों खोल कर कुमार ने घोड़े के कंधे पर थाप दी अर्थात् घोड़े को हाँक दिया। पानी में तैर कर बढ़ने पर पानी में डूबी पेड़ों की जड़ें पाँवों से टकराने लगीं। अपने हाथ से टटोल कर कुमार ने पानी के भीतर की अड़चनों को महसूस किया फिर इस तरह अवरोधकों से भरे रास्ते को चीह्नने के लिए एक पेड़ के सिंर पर अपना रूमाल बाँध दिया। फिर उस दिशा में बढ़ने से बचते हुए दूसरी ओर तैर कर लगभग एक कोस की दूरी पार कर किनारे लगा और बूँदी पहुँचने तक उसे आधी रात ढल गई।

दोहा

उपबन विष्णुबिलास अब, रुचिर जन्थ नृपराम।
आत तत्थ जगमाल इक, किय धनु दुष्कर काम॥१७॥

हे राजा रामसिंह! जिस जगह वर्तमान में विष्णुविलास नामक सुन्दर

बाग है वहाँ पहुँचते-पहुँचते कुमार ने अपने धनुष से एक दुष्कर कार्य संपन्न किया।

षट्पात्

दोलादिक कौतुकन इतसु बुंदिय बिताइ अह।
कुमरी चंद्रकुमारि मंडि शृंगार बडेमह।
जामिनि जावत जाम बिमन पतिपंथ बिलोकन।
गैंडागढके गोख रही तक्कत हित रोकन।
लहि नियतिजोग निद्रा लगत जन दासिन प्रासाद जंहं।
सिर निज लगाइ प्रग्रीव सिर तंद्रा बस हुव सोहु तंहं॥१८॥

श्रावण मास के अवसर पर बाँधे जाने वाले झूलों पर झूलने के कुतूहल में चंद्रकुंवरी का पूरा दिन बीता। सांझ ढलने पर कुमारी चंद्रकुँवरी ने बड़े उछाह के साथ शृंगार किया। आभूषण पहने, मेंहदी लगाई। फिर रात्रि के एक प्रहर बीतने तक उदास सी अपने पति का रास्ता देखती रही। वह गैंडा गढ़ के झरोखे से अपने प्रियतम की प्रतीक्षा में निमग्न थी कि भाग्य योग से निद्रावश उसकी आँखे भारी हुई और उस समय सारी दासियाँ महल में थी। चंद्र कुँवरी ने झरोखे पर अपना मस्तक लगाया और वहीं सो रही अर्थात् उसे नींद आ गई।

कछु कारन गिरि कटक बरन सौधन सक्यो न बनि।
अटत सिंह तंहं आइ ताहि गहिगो सु झंप तनि।
उघत जामिक अधम हम्म तनुजा सु लभ्य हुव।
लहंगे करि अवलग्न भिदी दड्ढा न छुई भुव।
द्विरदारि लंघि मंडूकदर क्रमत अग्ग सम्मुह कुमर।
जगमाल आत सिंजित सुनि सु आनिय चित्त अचिज्ज अर॥१९॥

किसी कारणवश पर्वत के शिखर पर बने इस महल के चारों ओर निर्माण के समय कोट नहीं बन पाया था। वहाँ आसपास चारों ओर घना जंगल था। इस जंगल से एक शेर आया और उसने कूद कर झरोखे में सोती कुँवरी को मुँह में पकड़ लिया। शेर उसे ले कर जंगल में चला इस समय महल के सारे पहरेदार ऊँघ रहे थे और शेर को आसानी से राजा हम्मीर की पुत्री खाने के लिए उपलब्ध हो गई। परन्तु भारी लहंगे के कारण कुँवरी की देह पर शेर की डाढें ज्यादा गहरी नहीं लगी और मुँह में उठाए हुए होने की

दशा में कुंवरी को जमीन की रगड़ भी नहीं लगी। सिंह उसी तरह मुँह में कुँवरी को पकड़े मण्डूकदरा (स्थान विशेष) को लाँघ कर उसी राह पर आगे बढ़ा सामने जिस राह से कुमार जगमाल आ रहा था। कुमार ने जब आभूषणों की रुनझुन का शब्द रात के इस समय सुना तो वह आश्चर्यचकित हो गया।

तत मेघन सन तमस निबिड़ सावन निसीथ लहि।
तंहं कबंध मग टारि रुक्कि हय बिटपि ओट रहि।
आत निकट हनि ऐंचि प्रदर श्रुति पिट्ठि प्रहारिय।
कढत पार करि गज्ज डाच कुमरी भुव डारिय।
उडि कछुक उद्ध दिय छोरि असु हड्डी इत ठड्ढी सु हुव।
पुच्छिय कुमार ढिग जाइ पटु तत्थ्य कहहु इम कौन तुव॥२०॥

श्रावण मास की मेघाछन्न आधी रात के अंधेरे में जब कुमार ने यह कौतुक देखा तो वह राह से थोड़ा हट कर एक पेड़ की ओट में खड़ा हो गया। सिंह को अपने निकट आते देख कर वहीं से अपने धनुष की प्रत्यंचा चढ़ा कर उसने एक शब्द भेदी बाण कान तक खींच कर शेर की पीठ में मारा। तीखा तीर शेर की पीठ फोड़ कर पार हो गया और गर्जना करते शेर का मुँह खुला जिससे कुँवरी भूमि पर गिर पड़ी। शेर ने एक हल्की उछाल भर कर प्राण त्याग दिये और वह हाड़ी कुँवरी भी खड़ी हो गई तब कुमार जगमाल ने अंधेरे में उस स्त्री के पास जा कर पूछा कि हे चतुर नार! सत्य बता तू कौन है?

पति स्वर संसय परत कहिय पहिलैं स्ववृत्त कहि।
जंपिय जब जगमाल लाभ प्रिय तब कुमार लहि।
अप्पन कहिय उदंत पंथ प्रभु कों निस पिक्खन।
गिरिनितंब गृह गोख आत निद्रा लगि इक्खन।
मृगराज झंपि लै मोहि मुख आयो तुम लिय तास असु।
धव मुदित सुनिसु हय पिट्ठिधरि बिकस्यो हिय जिम रंक बसु॥

अपने पति के स्वर को पहचान कर संशय में पड़ी कुँवरी ने कहा नहीं, पहले आप अपने समाचार कहें। तब कुमार जगमाल ने अपनी प्रिया को जीवन का लाभ ले कर सारे समाचार कहे। इसके बाद कुँवरी ने अपना

वृत्तान्त सुनाया कि किस तरह हे स्वामी! मैं आपकी प्रतीक्षा में आपकी राह निहार रही थी कि पर्वत शिखर पर बने महल के झरोखे में बैठे बैठे मेरी आँख लग गई। उसी समय इस सिंह ने उछाल भर कर मुझे मुँह में पकड़ लिया जिसके अभी आपने प्राण हरे हैं। यह सुन कर पति ने प्रसन्न हो कर अपनी प्रियतमा को घोड़े की पीठ पर बिठाया। इस मिलन से कुमार का हृदय इस प्रकार खिल उठा जिस प्रकार किसी रंक का मन धन मिलने पर खिल उठता है।

दोहा

कुमरी मग आई कहत, सुनि मेहव दल साह।
दये न आवन में त्रि दल, नहि किम मन्नें नाह॥२२॥

जंपिय कुमरहु नर्मजुत, लोनें मुह मुह लाइ।
दल पठयें किम देखते, अद्रिमहल सिर आइ॥२३॥

उभय करत संलाप इम, पतनिय ढंक पधारि।
धात्रीगृह प्रच्छन्न धरि, कहि यह तुम्ह कुमारि॥२४॥

बपु कछु केसरि रद बिसे, उनको कहि उपचार।
कहि रजनी प्रकट न करन, द्रुत आयउ नृपद्वार॥२५॥

रास्ते में वार्तालाप के चलते कुँवरी ने बात ही बात में पूछा कि हे नाथ! जब मैंने यहाँ सुना कि महेवानगर पर गुजरात के शाह की सेना चढ़ आई है तब मैंने आपको तीन पत्र लिखे कि आप सावन की तीज पर मत आना पर आपने मेरे प्रस्ताव को क्यों नहीं माना? प्रत्युत्तर में कुमार जगमाल ने अपनी प्रियतमा के सलोने मुँह से अपना मुँह सटा कर कहा कि हे प्रिये! यदि आपके पत्र से वहीं ठहर जाता तो आज पर्वत शिखर पर बने महल के झरोखे में बैठने वाली अपनी प्रियतमा को कैसे देख पाता। दोनों पति-पत्नी इस तरह प्रेम से संवाद करते हुए आगे बढ़े। वहाँ कुमार ने अपनी पत्नी को ढंक कर (ओढ़ा कर) धाय मां के घर गुप्त रूप से पहुँचाते हुए कहा कि इसे संभालो, यह तुम्हारी राजकुमारी चन्द्रकुँवरी है। इसकी देह पर सिंह की डाढ की खरोंचें लग गई हैं पहले इसका उचित उपचार कर इसे निरोग बनाओ।

रात्रि में यह कह कर कि इस बात को गुप्त ही रखना, कुमार जगमाल वहाँ से चल कर राजप्रासाद के मुख्य द्वार पर आया।

षट्पात्

सुनत हरख बढि सहर जग्गि परिकर नृप जग्गिय।
सहकुमार बरसिंह लाड जनजन मन लग्गिय।
सुनि अंतहपुर सखिन जानि गैंडागढ जाकंहं।
नगतट चढि नाजरन जनसु सब सुप्त लखे जंहं।
तिनकों जगाई अक्खिय तरजि लगि नृजान डोढिय रह्यो।
कुमरिहिं जगाई लैकैं चलहु आयउ कुमरहु उम्मह्यो ॥२६॥

जामाता कुमार जगमाल को द्वार पर आया निरख द्वारपाल और राजा के सेवकों ने राजा को जगा कर यह शुभ समाचार सुनाए। राजा के जामाता के आगमन की खबर से राजप्रासाद सहित पूरे बूँदी नगर में हर्ष की लहर छा गई। कुमार के इस शुभ आगमन से राजकुमार वरसिंह और उसके सेवकों ने भी हर्ष मनाया। यह खबर जब रनिवास में पहुँची तो कुँवरी की सखियों ने सोचा कि यह खुशखबरी गैंडागढ़ जा कर कुँवरी को सुनाई जानी चाहिए। रनिवास के प्रहरी नाजरों के साथ सखियाँ जब पर्वत के शिखर पर बने महल में पहुँची तो उन्होंने महल के सारे रक्षकों को सोये हुए देखा। उन्हें जगा कर पहले डांट लगाई कि इस तरह सो क्यों रहे हो? फिर कहा कि पालकी जनाना ड्योढी से लगी पड़ी है, तुरन्त राजुकमारी को जगा कर इसमें बिठा कर ले चलो क्योंकि कुंवर सा. (जामाता) पधारे हैं।

दोहा

जाइ झरोखा दासिजन, बिछोनां हि खिल बिक्खि।
कुक्के सब नहि नहिं कहि रु, सिर उर कुट्टन सिक्खि ॥२७॥

गैंडागढ़ के महल के भीतर जा कर दासियों ने जब झरोखे को देखा तो वहाँ उन्हें मात्र बिछौना ही नजर आया। कुँवरी नजर नहीं आई। सारी दासियाँ नहीं, नहीं, यह नहीं हो सकता, कह कर शोक में अपनी छाती और सिर पीटने लगी।

षट्पात्

प्रासादन यंहं पहुंचि बत्त अति सोक बढारिय।
हुव घरघर हाकार रुवत छन्नहि नर नारिय।
अप्फप जाइ नृप अद्रिसौध परिसर सब सोधिय।
अल्लीभुव लखि अंघ्रि सबन हेतु सु संबोधिय।
जामिक जितेक हे तत्थ जिन कट्टि नक्क कढ्ढुन कहिय।
कहि तब उदंत अखिलहि कुमर गूढ कहुंक यह हठ गहिय॥२८॥

राजकुमारी के नहीं होने की बात जब राजप्रासाद में पहुँची तो सभी ओर शोक छा गया। नगर के घर-घर में हाहाकार मच गया। सभी नर-नारी रोने लगे। स्वयं राजा चल कर उस पहाड़ पर बने महल में गया और आसपास के क्षेत्र में राजकुमारी को ढुंढवाया फिर झरोखे के नीचे वाली भूमि को थोड़ा गीला देखा और पास ही में सिंह के पाँवों के चिह्न मंडे हुए नजर आए तो राजा ने सारे सेवकों को वहाँ बुलाया और उन्हें वह दिखलाते हुए कहा देखो यह सिंह की कारगुजारी है। फिर राजा ने इस समय जितने भी प्रहरी वहाँ थे उनके नाक कटवा कर वहाँ से निकाल दिया। इसके बाद कुमार जगमाल ने पूरा वृत्तान्त कह सुनाया पर आधी बात हठपूर्वक गूढ रखी।

दोहा

तिय धावरपिय सेन किय, जाइ बिदित करि जाहि।
धात्री सहित नृजान धरि, आनी महल उमाहि॥२९॥

कछु दिन उचित प्रयोग करि, आयें पाटव एह।
दूजी आवत तीज दिन, मिले उभय रसमेह॥३०॥

मिलन रत्ति प्रातहि गमन, कुमरी सुनि करजोरि।
बुल्ली निस सोलह बसे, बसहु इती हि बहोरि॥३१॥

कुमर कहिय निस पंच कहि, आयो स्वभटन अत्थ।
पटु आतहि तुम पावतो, तिम रहिजातो तत्थ॥३२॥

पै अप्पन न मिले प्रिया, अब तुम हुव उल्लाघ।
यातैं मिलि करनों उतहु, अरिन को हु अति आघ॥३३॥

इसके थोड़े समय बाद धाय माँ ने अपने पति से संकेत में कहा कि अब कुँवरी को प्रकट करने का समय आ गया है। इसलिए तुम उसे ले जाओ। तब वह धाय माँ सहित राजकुमारी चंद्रकुँवरी को पालकी में बिठा कर महल में लाया। थोड़े दिनों तक राजकुमारी की चिकित्सा चली। वह थोड़े ही समय में एकदम स्वस्थ हो गई। फिर अगली तृतीया अर्थात बड़ी तीज के दिन कुमार जगमाल और चंद्रकुँवरी दोनों पूरी प्रीति से रसपूर्वक मिले। इस मिलन यामिनी के बीतते ही अगली सुबह कुमार जगमाल ने जाने की रजा माँगी जिसे सुन कर राजकुमारी चंद्रकुँवरी ने हाथ जोड़ कर निवेदन किया कि आपने यहाँ सोलह रात्रियाँ बिताई हैं अब अर्ज है कि सोलह दिन आप यहाँ और ठहरें। इस पर कुमार ने प्रत्युत्तर दिया कि प्रिये! मैं अपने सामन्तों से मात्र पाँच दिन की मोहलत ले कर आया था तुम्हें यहाँ आते ही स्वस्थ पाता तो थोड़ा रुक भी जाता। हम तुम नहीं मिल सके प्रिय! अब तुम पूर्ण रूपेण स्वस्थ हुई हो पर मुझे अपने नगर जा कर बिन बुलाये आए शत्रु मेहमानों का स्वागत भी करना है।

कुमरि कहिय जे स्वसुरजन, किम ते अरि कुमरेस।
रक्खहु तिन महिमानि रचि, बांधव जानि बिसेस ॥३४॥

कह्यो कुमर तव किंकरी, चरनन लालन चाहि।
जो आनी जवनेंद्रजा इहिं मिस मरन उमाहि ॥३५॥

मरनहि जो दृढ स्वामिमत, ज्वलन हमहिं दैजाहु।
तनकरिसो बिधिबस तदपि, मनकरि जदपि उमाहु ॥३६॥

इम उत्तर पृच्छा उचित, कुमरिहिं बोधि कुमार।
रक्खि तंहं रु पुनि त्रि निस रहि, इक्कल हुव असवार ॥३७॥

यह सुन कर चंद्रकुंवरी ने कहा हे नाथ! ये जो तुम्हारे श्वसुर और साले लोग हैं वे तुम्हारे शत्रु हैं क्या? वे भी संबंधी है उन्हें भी अपना मान कर उनकी मेहमानी का भी आदर करो। कुमार ने इस प्रस्ताव को यह कह कर नहीं माना कि प्रिये! तुम्हारी जो वह दासी है ना, वह भी मेरी सेवा करने को उतावली हो रही होगी। मैंने बादशाह की उस पुत्री का मात्र मरने की इच्छा से ही अपहरण किया है। चंद्रकुँवरी ने सुनते ही प्रतिवाद करते हुए कहा हे स्वामी! यदि आपने मरने का दृढ़ विचार कर ही लिया है तो आप हमें भी

अग्नि को समर्पित कर जाएँ। यह शरीर तो विधाता के वश में है पर उछाहपूर्वक मेरे मन में जो आ रहा है उसे आप पूरा कर जाएँ। इस तरह सवाल जवाब कर चंद्र कुँवरी ने कुमार जगमाल को समझा बूझा कर तीन दिन और तीन रातों तक और अपने यहाँ रोका। चौथे दिन वह कुमार घोड़े पर सवार हो कर अन्ततः अपने नगर के लिए चल ही पड़ा।

संग दये रच्छक स्वसुर, लग बनास तिन्ह लाइ।
बंध्यो तरुसिर जो बसन, दक सीमा सु दिखाई॥३८॥
तिनहिं मोरि पहुंच्यो तिमहिं, मेहवपुर जगमाल।
बर्द्धापन तोपन बन्यों, बिस्मय रिपुन बिसाल॥३९॥
कारन पुच्छि बिचार किय, अज्जहु निधनक अज्ज।
अन्नादिक रोके अखिल, करि घन जतन कुकज्ज॥४०॥

कुमार जगमाल को सकुशल पहुँचाने के लिए उसके श्वसुर ने अपने रक्षक [illegible] भेजे जिन्हें बनास नदी के तट पर पहुँचने के बाद कुमार ने तट पर खड़े पेड़ से बंधा हुआ अपना रूमाल दिखाते हुए कहा कि जिस दिन मैं आया उस दिन बनास यहाँ यहाँ तक बह रही थी। इसके बाद कुमार ने हाड़ा राजा के सेवकों से कहा कि अब आप लोग यहीं से मुड़ जाएँ, आगे आने की आवश्यकता नहीं। वहाँ से कुमार अकेला ही महेवापुर पहुँचा। उसने वहाँ आ कर देखा तो क्या देखता है कि तोपों की संख्या भी अच्छी खासी है और शत्रुओं का सैन्य दल भी विशाल है। कुमार को थोड़ा विस्मय अवश्य हुआ। नगर में जाते ही जब कुमार ने सुना कि निर्धन लोग बहुत दुःखी हैं तो उसने इसका कारण अपने सामन्तों से पूछा। उन्होंने बताया कि यवन सेना ने बाहर से आने वाली रसद सामग्री को रोक दिया है और यह कुकर्म उन्होंने पूरे जतन के साथ किया है।

बहुत हुतो सब बस्तुबल, कुमर तदपि किय मंत्र।
तोप तृप्त कढि अब करैं, संगर असिन स्वतंत्र॥४१॥

यद्यपि गढ़ में आवश्यक खाद्य सामग्री थी फिर भी कुमार ने अपने सामन्तों सभासदों के साथ मंत्रणा की कि अब और अधिक प्रतीक्षा अच्छी नहीं युद्ध आरंभ कर देना चाहिए। वीर योद्धाओ! शत्रुओं की तोपों को और अधिक तृप्त मत होने दो। बढ़ो, और अपनी तलवार के सहारे स्वतंत्र युद्ध करो।

षट्पात्

इम बिचारि निस इक्क अरर खुलवाइ अचानक।
सहंसपंच भट सहित निकसि असि तुमुल प्रतानक।
जुट्टि कुमर जगमाल कुट्टि खल घान खलन किय।
बनिजकार व्यापार श्रेनि गोनिन जनु संचिय।
कटकेस उभय हाजी कुतब जिय बिछोरि किन्नों बिजय।
पंचहिसहंस मिच्छहु परिग भग्गिग खिल अज सिंह भय॥४२॥

ऐसा विचार कर एक रात्रि को अचानक अपने दुर्ग का दरवाजा खुलवा कर पाँच हजार सैनिकों सहित भयंकर युद्ध पसारने वाला कुमार निकला। दुर्ग से निकलते ही कुमार ने तुमुल मार काट मचाकर शत्रुओं को घायल कर उनका ढेर लगा दिया। मानों व्यापार करने वाले बनजारों ने धान के बोरों को श्रेणीबद्ध कर थड़ी लगाई हो। उसने शत्रु सेना के दोनों सेनापतियों हाजी और कुतुब को उनके प्राणों का विछोह दे कर विजय हासिल की। पाँच हजार यवन रणभूमि में गिरे और शेष सारी सेना सिंह के समक्ष काँपते बकरे की तरह भयभीत हो कर भाग खड़ी हुई।

पर भग्गत गहि पिट्ठि चल्यो कुमरहु तिन्ह चट्टत।
हट्टु बजत असि मनहु कूर खत्तिय तरु कट्टत।
सादिनबिनु हय सतन सतन बिनु हय चय सादिन।
लिय गहाइ जसलोभ बीर अप्पन प्रतिवादिन।
छिति पैंड पैंड सोनित छछक चलत लुत्थिलुत्थिन चढिग।
जगमाल अग्ग आकुल जवन प्रद्रव अति तद्दिन पढिग॥४३॥

भागती हुई शत्रु सेना का पीछा करते हुए कुमार उन्हें मार कर गिराने लगा। उसकी तलवार शत्रु योद्धाओं पर 'कट-कट' की ध्वनि के साथ ऐसे बजने लगी जैसे बढ़ई का कुल्हाड़ा पेड़ काटते समय बजता है। थोड़ी ही देर में सवार रहित सैंकड़ों घोड़े हो गए और सैंकड़ों सवार घोड़ों से रहित हो गए। शत्रुओं के समूह के समूह भागने लगे। उस वीर कुमार जगमाल ने अपने यश के लोभ में विजय के मांगलिक बाजे बजवाते हुए कई शत्रुओं को बंदी बना लिया। रणक्षेत्र की कदम-कदम भूमि रक्त से परिपूर्ण हो तृप्त हो गई

और राह में कटे हुए शत्रुओं के शव एक पर एक चढ़ गए। राठौड़ कुमार जगमाल के सामने जुड़ कर यवन लोगों ने उस दिन सिर्फ तेजतर भागने का पाठ ही सीखा।

तरुन पग्ग रहि कतिन कतिन सूथन फटि कंटन।
चिबुक लोम अति उरझि घनें रुक्कत गिरि घंटन।
करजोरत थकि कतिक पयन इन्ह कतिक जात परि।
पूरत बसन अपूत कतिक झूरत तोबा करि।
तुरकान मरत घायन परत सब छबीस सहंस रु त्रिसत।
साह को कटक अहमद सहर बनि फग्गुन तरु हुव बिसत॥४४॥

भागते हुए यवन शत्रुओं की सेना के कुछ योद्धाओं की पगड़ियाँ पीछे पेड़ों में उलझ कर रह गई। कई योद्धाओं के पाजामें काँटों में फँस कर फट गए। कई शत्रु अपनी डाढी के केश घाटी के कांटेदार पेड़ों में उलझने से रुक कर अपने बाल सुलझाने लगे। कुछ थक कर न दौड़ पाने के कारण हाथ जोड़ने लगे तो कुछ पाँव पड़ने लगे। शत्रु सेना के कई वीरों के वस्त्र मलमूत्र विसर्जन से अपवित्र हो गए। कुछ रो रो कर तोबा करने लगे। यवनों की इस सेना में मरते-गिरते शेष बचे कुल छब्बीस हजार तीन सौ सैनिक ही वापस लौटे। मुहम्मद शाह बेगड़ा का यह सैन्य दल फाल्गुन मास के पेड़ (इस माह में पलाश का पेड़ पत्रविहीन हो कर केसुला के लाल रंग से भर जाता है यहाँ सेना के रक्त सने होने का अभिप्राय है) की तरह निर्लज्ज हो कर जैसे तैसे अहमदाबाद में प्रविष्ट हुआ।

दोहा

सिबिर रहे उपहार सब, मुरि तब लुट्टि कुमार।
पुरमेहव मेहव प्रतिम, प्रबिस्यो सजय प्रसार॥४५॥

वापस लौटते हुए शत्रु सेना के शिविर में छूटे हुए सारे उपहारों (सामग्री) को लूटने के बाद महेवा नगर का मेघप (इन्द्र) सदृश वह वीर कुमार जगमाल फतह पा कर अपने नगर में आया।

कनी साह की कति कहत, यह पहिलें गृहआनि।
प्रेत पुब्बभव पुत्रि को, परन्यों बचन प्रमानि॥४६॥

जिन प्रेतन किन्नों सु जय, इम अनेक मत अैन।
जिम संभव तिम जानिये, कवि हठ कबहु करैन॥४७॥

कुछ लोगों का यह भी मानना है कि मुहम्मदशाह बेगड़ा की बेटी को कुमार पहले अपहृत कर लाया था और पूर्व जन्म के योद्धा प्रेत की पुत्री से बाद में विवाह किया था। कुछ लोगों का यह भी मत है कि कुमार ने प्रेतों के बल से विजय प्राप्त की। यहाँ कवि का (ग्रंथकर्ता सूर्यमल मीसण) का कोई हठपूर्वक आग्रह नहीं है पाठकों को जैसा रुचे वे इसे उसी क्रम में समझने को स्वतंत्र हैं।

सोवन जु चहैं रन सयन, सु न लै इतर सहाय।
सूरन की अद्‌भुत सरनि, क्रमें पथिक अक काय॥४८॥

प्रथन अनंतर निज प्रिया बुंदियपुर सन बुल्लि।
बय बिलास बिलसे बिबिध, खेलायित हित खुल्लि॥४९॥

जुव सुव हुव जगमाल कै, निज कुल धर्मनिधान।
पट्टप तंहं हड्डी प्रसव, भारमल्ल अभिधान॥५०॥

कवि कहता है जो वीर सोने के नाम पर सिर्फ वीर शय्या पर सोने को उतावला हो वह भला किसी दूसरे की सहायता क्या तकेगा? अर्थात् नहीं तकेगा। वीरता की इस संकरी गली का भी अजीब नियम है कि इसमें वह वीर अकेला ही जाता है अथवा समाता है। इस संग्राम के बाद कुमार जगमाल ने अपनी प्रिया को बूँदी से अपने सेवक भेज कर बुलवाया और उम्रपर्यन्त विविध भोग विलासों के खेल को उस खिलाड़ी ने खुल कर खेला। इस कुमार के दो पुत्र हुए जो स्वयं भी अपने कुल की मर्यादा को निभाने में पारंगत थे। इनमें से बड़ा पाटवी पुत्र भारमल (नामक) अपनी माँ हाड़ी रानी की कोख से निसृत था।

अनुज नाम रनमल्ल यह, गुन रन रचन गहीर।
प्रेत प्रथम भव पुत्रिका, औरस हुव अधिबीर॥५१॥

जाति प्रेतनी प्रेतजा, कति जड़ याहि कहंत।
असमय आयो याहिनैं, हन्यों कंत इम हंत॥५२॥

हल्लू बंबावद महिप, मेहव नृप जगमाल।
रन सोवन चहतहु घरहि, काय तजिय लहि काल॥५३॥

भारमल के छोटे भाई का नाम रणमल था जो युद्ध रचने की कला में निष्णात था। यह रणमल पिछले जन्म में उस प्रेत योद्धा की पुत्री के गर्भ से उत्पन्न था। कुछ मूर्ख लोगों का ऐसा भी कहना है कि कुमार की दूसरी पत्नी जो जाति से ही प्रेतनी थी (डायन थी) और प्रेत की पुत्री थी खेद की बात है कि उसी ने एक दिन अपने पति को असमय आया देख कर मार डाला। बंबावद के हाड़ा राजा हल्लू और महेवा नगर के कुमार जगमाल इन दोनों वीरों की बहुत इच्छा थी कि वे युद्ध करते हुए रणभूमि में वीरशय्या पर सोवें पर नियति का खेल देखिये कि दोनों को घर में ही मरना पड़ा। अर्थात उन्होंने रणभूमि में सोते हुए अपनी काया का परित्याग नहीं किया।

इति श्री वंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे पंचम राशौ बीतिहोत्र-चंडासि वंशवर्णननिमित्तहड्डाधिराडस्थिपाल बीज्यानुबीज्यबिहित-व्याख्यानावसरव्याहार्यबुन्दीशनरेशहम्मीर समयसमानाऽधिकरणकराष्ट्र-कूटराजकुमार जगमालचरित्रे दिल्लीशा ऽलावुद्दीन समयसमकालीन-मेहवपुरमहीपराष्ट्रकूटराजसल खौरसमल्लिनाथ जैत्रमल्ल बीरमदेव तनुजत्रयो द्भवन स्वानुजद्वया ऽर्थविभक्तसुमियाण खेड़ विभागप्राप्तपितृपट्ट मल्लि-नाथ जात कुमार बूँदीशहम्मीर पुत्रीपाणिग्रहण सूचन दिल्लीशपरि-पन्थिगौर्जरदेशाधिकारि यवनाश्रितसिन्धुदेशीय सपरिकरलुण्टितवडवा ऽसि रत्नसहितस्वामिवैभवप्रतिभीपलायि तदलाख्ययवनान्तरमेहवपुर-महीपमालवदेवा ऽपरनाममल्लिनाथसहायविश्रमण स्वपुत्रशृगालीशङ्कित-मल्लिनाथसहवित्तनिभृतनिष्कासितस्वसहायीभूतबीरमदेवार्थदत्तसमाधि-वडवकतदुत्सारितदलाख्ययवनस्वस्थानगमन तन्मन्तुमत्तत्परास्तप्रद्रावित-पितृव्यक कुमारजगमालखेड़नामतत्स्थानसमाक्रमण सेत्रावाख्यसंबसथ स्थापितससूनुचतुष्क स्वपत्नीचापोत्कटीक परिणीतसेत्रावेशमा ङ्गलिक-राणङ्गदेवपुत्रीकसनवोढबीरमदेव दलाख्ययवनस्थानभाडङ्ग नगरगमन।

इतिश्री वंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण की पंचम राशि में अग्निवंशी चहुवान वंशवर्णन के कारण हड्डाधिराज अस्थिपाल के वंश और अनुवंश की कथा बताने के समय के वचनों में बूँदी नरेश हम्मीर के समय के समान है

अधिकरण जिसका ऐसे राठौड़ कुमार जगमाल के चरित्र में दिल्ली के बादशाह अलाउद्दीन के समय में होने वाले महेवापुर के पति राठौड़ों के राजा सलखा के मल्लीनाथ, जैत्रमल्ल और बीरमदेव इन तीन औरस पुत्रों का होना, दोनों छोटे भाइयों के अर्थ सुमियाणा और खेड़ देकर पिता का पाट लेकर मल्लीनाथ के कुमर का बूँदी के पति हम्मीर की पुत्री से विवाह करने की सूचना करना, दिल्ली के बादशाह के शत्रु ऐसे गुजरात देश के अधिकारी वचन के आश्रित, और सिन्धुदेश में रहने वाले परगह युक्त, घोड़ी और खड्ग रूपी रत्न सहित स्वामी के वैभव को लूटकर भय से भगे हुए ऐसे दला नामक किसी यवन का महेवापुर के राजा मालदेव दूसरे नाम से मल्लीनाथ की रक्षा में विश्राम करना, अपने पुत्र की शंका से मल्लीनाथ का उस भय से भगे हुए दला को धन सहित गुप्त निकालना और अपने सहायक बीरमदेव के अर्थ समाधि नामक घोड़ी देकर निकाले हुए दला नामक यवन का अपने स्थान पर जाना, उसका अपराध करने से उससे हारकर भागे हुए काका के खेड़ नामक स्थान को कुमर जगमाल का लेना, सेत्रावा नामक ग्राम में चार पुत्र और चावड़ी स्त्री को रखकर सेत्रावा के पति मांगलिया राणङ्गदेव की पुत्री नवीन दुल्हन सहित बीरमदेव का दला नामक यवन के भाड़ङ्गनगर स्थान को जाना।

वनसमर्पितसोपायनस्वसीमार्द्धसादरसहवासितप्रत्युपकृतप्रतीप-बीरमदेव माङ्गलिक्यौ रससर्वांऽनुजचुण्डाख्यपंचम कुमारसमुद्भवन परिणीतप्रेतीभूतक्षत्रियान्तर पूर्वभवपुत्रीककुमारजगमालस्वगुण-गणग्लहसमादेयपूर्वानुरक्तवेलविहारव्याजबहिरागतयवनेन्द्रतुगलक मुहुम्मद सुताहरण तत्प्रेषितसप्तत्रिंशत्सहस्र सैन्यवैष्टितमेहवपुर-मध्यस्थनिर्भय योत्स्यमानकुमारजगमालप्राक्कालप्रस्थानप्रियाप्रस्था-पनकृतश्रावणीतृतीया सम्मिलनसमयसन्धा भ्रंशभाविहाङ्गीहेतिस्नान-सम्भावनादुर्मनीभवन स्वीकृतस्वसमानसंयोधनभटवर्ग निशीथ-निस्सारबुन्दीप्रस्थापिततुरङ्गजीर्णवाशिष्ठीवहवस्त्रबन्धुभूषिततद्वारि-वेलामर्यादनिशीथसमयसप्रसभप्राप्त प्राप्यपुरीपरिसरकुमारजगमालसिंह संहतितदग्रस्तस्वसहधर्मिणीसंरक्षण मिथः प्रत्यभिज्ञातपुरप्रविष्ट-कुमारपिहितप्रियाधात्रीधामस्थापन कुमारपरिमार्गणाप्राप्त कुमारी-कसंतप्तश्वशुरपरिजनप्राप्यस्ववीर्यत्रातप्रियाशुद्धिप्रकाशन पक्षो ल्लघमि-लितपत्नीपतिनानानर्मप्रश्नोत्तर परस्पर प्रबोधन।

अपकार करने पर भी उपकार करने वाले ऐसे यवन का नजराने सहित अपनी आधी सीमा देकर आदर सहित वास कराये हुए बीरमदेव के मांगलियाणी के पेट से सब से छोटे चूंडा नामक पाँचवें कुमार का जन्म होना, किसी क्षत्रिय के प्रेत होने से पहले जन्मी हुई पुत्री से विवाह करके कुमार जगमाल का अपने गुणगण से पण रूप से ग्रहण की हुई पूर्वानुराग से बाग में बिहार करने के बहाने से बाहर आई हुई बादशाह तुगलक मुहम्मद की सुता को हरना, उसकी भेजी हुई सैंतीस हजार सेना से घिरे हुए महेवापुर में निर्भय युद्ध करते हुए कुमर जगमाल का पहले समय में गई हुई और बूँदी में ठहरी हुई प्रिया से श्रावण की तीज के समय मिलने की प्रतिज्ञा भंग होने से हाडी के अग्नि में जल जाने की संभावना से उदास होना, अपने समान युद्ध करना उमरावों के स्वीकार करने पर आधी रात को निकलकर बूँदी को प्रस्थान करके घोड़े के बल से वसिष्ठ सम्बन्धिनी (बनास) नदी के प्रवाह की जल की लहर की सीमा के बोध कराने के लिये वस्त्र बाँध कर आधी रात के समय हठपूर्वक प्राप्त होने वाली (बूँदी) पुरी के समीप प्राप्त होकर जगमाल का सिंह को मारकर उससे ग्रहण की हुई अपनी विवाहिता स्त्री की रक्षा करना, परस्पर पहचान करके पुर में प्रवेश किये हुए कुमार का अपनी प्रिया को धाय के घर पर छिपा के रखना, कुमार के माँगने पर कुमरी के नहीं मिलने से श्वसुर के अनुचरों को तपाने पर अपने पराक्रम से रक्षा की हुई प्रिया की खबर प्रकट करना, एक पक्ष में नैरोग्य होने पर स्त्री और पति का अनेक हँसीपूर्वक प्रश्नोत्तर करके परस्पर समझाना।

विशेषातिवाहित्रि रात्रप्रतिगच्छत्कुमारश्वाशुर्यसार्थकौ तुकार्थ-बशिष्टीतटविटपिवस्त्रबन्धस्वतीर्णवारिवेलाविबोधन प्रतिप्रस्थापित-बुन्दीशवीरवृन्दप्रच्छन्नपुरप्रविष्टसाध्यावसरनिस्सृत कुमारसौसिकसमर-सेनापतिद्वय समेतविध्वस्तवैरिवाहिनीशेषविद्रावण लुण्टितशत्रुशिविरो-पहारप्रतिप्रविष्टस्वसद्मसमाहूतप्रियपत्नीकजगमालजातभारमल्ल रणमल्ल पुत्रद्वय प्रसूप्रविवेचन शूरशय्याशिशयिषुहड्डुहल्लू राष्ट्रकूटजगमाल स्वस्वसद्मसमयमरणसूचनमष्टमो मयूखः ॥८॥ आदितः पञ्चपञ्चाश-दुत्तरैकशततमः ॥१५५॥

तीन रात्रि विशेष रहकर वापस जाते हुए कुमर का सुसराल (सासरे) के लोकों के साथ को तमाशा दिखाने के लिये बनास के किनारे पर वृक्ष के

ऊपर बांधे हुए वस्त्र से अपनी तिरी हुई जल की लहर का बोध कराना, बूँदीश के वीरों को वापस भेज कर अपने पुर में चुपके प्रवेश करके समय साधकर बाहर निकलकर रतिवाह के युद्ध में दो सेनापतियों सहित शत्रुसेना का नाश करके बाकी की सेना को भगाना, शत्रुओं के डेरों की सामग्री लूटकर अपने घर में वापस प्रवेश करके अपनी प्यारी स्त्री को बुलाना और जगमाल के भारमल्ल और रणमल्ल दो पुत्रों के जन्म की सूचना करना, शूरशय्या में शयन करने की इच्छा वाले हाड़ा हल्लू और राठौड़ जगमाल दोनों का समय आने पर अपने अपने घर में ही मरने की सूचना करने का आठवाँ मयूख समाप्त हुआ। और आदि से एक सौ पचपन मयूख हुए।

प्रायो ब्रजदेशीय प्राकृत मिश्रित भाषा

दोहा

बरनहिं अब हल्लू बिहित, इच्छन मृति रन एक।
सुपहुराम धारहु श्रवन, टरैं जिम न कुलटेक ॥१॥

सक निधि ससि गुन भू समय, भीरुन होवन भीर।
हुव हल्लू हरराज के, बानां धारक बीर॥२॥

पिता पितृव्यक रनपरत, सक रद गुन ससि सोहि।
पावत हुव अधिराजपद, दै द्रोहिन दर द्रोहि॥३॥

हे राजा रामसिंह! आप सुनें, मैं अब उस राजा हल्लू का वर्णन करता हूँ जिसकी एकमात्र इच्छा यह थी कि मैं रणभूमि में युद्ध लड़ते हुए मारा जाऊँ। इससे मेरे कुल की मर्यादा का पालन भी हो जाएगा। विक्रम संवत् तेरह सौ उन्नीस के वर्ष में जब चारों और कायरों की भीड़ पैदा हो रही थी उस समय राजा हरराज के घर इस वीर बालक ने शरीर धारण किया अर्थात् जन्म लिया। इस बालक हल्लू के पिता और काका दोनों विक्रम संवत् तेरह सौ बत्तीस के वर्ष में हुए युद्ध में मारे गए। इसके बाद स्वयं ने राजा का पद पा कर अपने शत्रुओं पर क्रोध कर उनमें भय का संचार किया।

षट्पात्

जनक पट्ट लहि जुगल सिंह ऊढ रु पंचक सिख।
क्रम्यों अरिनसिर कुप्पि बम्यों आसु कि वासुकि बिख।

जननि तीन जब जरिय बैरबालन तब बुल्लिय।
सत्यकरन तिहिं सिसुहि त्वरित चल्लिय असि तुल्लिय।
जबतो निवारि परिकर जनन हत्थिय गति मोरयो हठन।
इम निलय निट्ठि हायन उभय, रह्यो सु चिंतित वैर रन॥४॥

अपने पिता से राजगद्दी और पंचक (पाँच पेच वाली पगड़ी) प्राप्त करने के बाद अपने शत्रुओं पर कोप कर यह राजा इस प्रकार चला जिस प्रकार कुपित हो कर वासुकि नाग अपना विष उगलता है। अपनी तीन माताओं को पिता के साथ सती होते देख कर वीर हल्लू अपने पिता का वैर लेने को उतावला हो गया। उसने अपने पिता का वैर लेने की बात कही और यही नहीं अपने मुँह से कही बात को सत्य सिद्ध करने के लिए बाल्यावस्था में ही तलवार उठा ली। उस समय तो परिवार के परिजनों ने इसे बहुत कठिनाईपूर्वक जैसे तैसे रोका पर यह वीर हाड़ा राजा हल्लू अपने पूरे जीवन में मात्र दो वर्ष ही घर पर रहा। शेष आयु तो उसने वैर लेने के लिए युद्ध करने में ही लगा दी।

दोहा

भाखिय हल्लू निज भटन, सु हो समय सुभ सेन।
जब तो स्वगढन पर जई, हे पर प्रबिसे हेन॥५॥
सिसुलखि सो हाहा समय, दिय तुम टारि दुराप।
बट अंकुर जिम अहित बढि, अब मुव जटित अमाप॥६॥

अपने सामन्त योद्धाओं को एकत्रित कर राजा हल्लू ने कहा कि यह शुभ समय है कि हम अपनी सेना सज्जित करें। उस समय (पूर्व में जब मेरी शैशवावस्था थी) तो अपनी भूमि और दुर्गों पर शत्रुओं की बन आई थी। वे पराये हमारी भूमि में प्रवेश कर गए। हाँ! कितने खेद की बात है कि मुझे बालक जान कर आपने मुझ पर आने वाली आफतों को न्योता न दे कर उन्हें टाला। इसका नतीजा यह हुआ कि छोटे से बीज वाला शत्रु रूपी वह वृक्ष बड़े विस्तार वाला हो गया और उसने अब हमारी बहुत सारी भूमि को आच्छादित कर दिया है।

षट्पात

निज बीरन इम नृपति उपालंभत पछितावत।
पुर बिंझोलिय प्रथम आइ रजगुन उफनावत।
सुर्जन तंहं हत्थ सुत पिक्खि अवहित किल्लापति।
तिहिं तुरंग गज ग्राम अप्पि सादर किय उन्नति।
रतनगढ आइ मातुल रतन बहु मन्निय पुब्बव बितरि।
पुनि आइ नृपति सिंहोलिपुर कछु दिन रहिय मुकाम करि॥७॥

अपने योद्धाओं को इस प्रकार उपालंभ देते हुए अपने पश्चाताप को प्रकट किया और सर्व प्रथम बिंझोली आ कर अपने पराक्रम का प्रदर्शन करते हुए वहाँ हत्थ के पुत्र सुर्जन को एक सावधान दुर्गपति के रूप में देख कर उसे हाथी घोड़े और जागीर प्रदान की। अपने मातहत का मनोबल बढ़ाने के लिए उसकी उन्नति चाही। यहाँ से चल कर राजा रतनगढ़ पहुँचा तब वहाँ मामा रत्नसिंह ने पूरे आदर के साथ सत्कार किया और राजा ने भी खुले हाथों दान दिया। इसके बाद राजा हल्लू सिंहोली आया और वहाँ कुछ दिन ठहर कर विश्राम किया।

दोहा

किल्लापति सुहु तुष्ट किय, हल्लू नरपुरुहूत।
गत निज दुर्गन गंजिबे, देखन पठये दूत॥८॥

जीरनपति नृप जैत्र को, प्रथम प्रमाद सु पाइ।
हिंगुलाजगढ लेत हुव, महाप्रघात मचाइ॥९॥

इमहि भानुपुर ईस कों, तृन गिनि दब्बत देस।
खेड़ीपुर संहरि खलन, निज बस किन्न नरेस॥१०॥

दसपुर नृप को दब्बयो, जिम पत्तन जिन्नोद।
दुर्ग त्रितय रहि अब्द दुव, किय संकित चहुं कोद॥११॥

पहुंच्यो लरि खिल गढन पैं, मिले न बिधि बल मूर।
बंबावद आयो बहुरि, सत्रह सम बय सूर॥१२॥

अपने सारे गढ़पतियों को पुरस्कारों आदि से तुष्ट कर हाड़ा राजा हल्लू ने अपने गये हुए अर्थात् शत्रुओं द्वारा विजित दुर्गों को वापस लेने के

सबब से सभी तरफ अपने दूत भेजे। (राजा ने उनसे कहा कि यह देख कर आओ कि कौन से दुर्ग को लेने की संभावना है)। जीरन के स्वामी राजा जैत्रसिंह के बारे में खबर पाकर कि वह प्रमाद की अवस्था में है अर्थात् वहाँ गफलत है। राजा ने हिंगलाजगढ़ को सर्वप्रथम वापस अपने अधिकार में लिया और इसके लिए उसने भीषण संग्राम किया। इसी तरह भानुपुर (भानपुरा) के स्वामी को तृणवत गिनते हुए उसके देश को जीत कर अपने आधिपत्य में लिया। इसी तरह खेड़ीपुर के शत्रुओं का संहार कर उसकी भूमि भी हथिया ली। विजययात्रा के अगले पड़ाव में दशपुर (मंदसोर) के राजा से उसके राज्य का हिस्सा जिन्नोदपुर का क्षेत्र हड़प लिया। फिर दो वर्ष तक त्रितय (तितरोद) के दुर्ग में रह कर राजा ने चारों दिशाओं में अपना भय फैलाया। शेष बचे गढ़ों पर भी अपनी लड़ाई रचा कर राजा आगे बढ़ा पर भाग्यबल से उसे कोई वापस मोड़ने वाला नहीं मिला और इस तरह वह मात्र सत्रह वर्ष की आयु में विजेता की तरह अपनी राजधानी बंबावद लौटा।

षट्पात्

हल्लू नृपति बिबाह प्रथम सद्धन गय सोपुर।
रक्खिय गृह रखवार भ्रात सुर्ज्जन असंक उर।
सो काका हत्थ सुत समा छ बडो हल्लू सन।
लल्लू पुनि तिम लोहराज जुग अनुज महामन।
जीरन अधीस प्रामार जो जैत्र जुरिग लखि छिद्र जब।
भानुपुर भूप खिच्चिय परत तकि बिरोध हुव संग तब॥१३॥

राजा हल्लू अपना प्रथम विवाह रचाने के लिए सोपुर गया पर पीछे बंबावद के दुर्ग पर अपने भाई सुर्जन को छोड़ कर गया। उसने ऐसे निर्भय कलेजे वाले वीर को अपने घर की रखवाली सौंपी जो उसके काका हत्थ का पुत्र था और राजा से उम्र में छह वर्ष बड़ा था। उसके साथ दो भाइयों को भी रखा जिनमें एक लल्लू था और दूसरा उसका छोटा भाई बड़े दिल वाला लोहराज था। जीरन के स्वामी प्रामार राजा जैत्रसिंह ने यह उचित अवसर देखा कि राजा बंबावद में नहीं है। और भानुपुर (भानपुरा) के राजा ने भी देखा कि आगे शून्य है तो वह भी अपने शत्रु से बदला लेने का अच्छा मौक पा कर जैत्रसिंह के साथ हो गया।

इन बंबावद आइ ताप तोपन दोउ न दिय।
पहु हल्लुव द्रुत परनि कुंच सुनत हि सम्मुह किय।
सुर्जन लल्लुव सज्जि उभय झेले जोलों अरि।
भ्रात जैत्र के भवन धनसु ऊढा कोटा धरि।
सादिन सहस्त्रपंचक सहित सजव आइ रजनी समय।
पविरूप भूप हल्लुव पर्यो अरि गिरि भेदन हंकि हय॥१४॥

इस तरह इन दोनों ने बंबावद आ कर अपनी तोपों का डर दिखाया। इसकी खबर पाते ही राजा हल्लू ने भी जल्दी ही पाणिग्रहण की रस्म निबटाई और उसने शत्रु का सामना करने के लिए अपनी राजधानी की ओर कूच किया। इतने समय तक पीछे से सुर्जन और लल्लू जैसे वीरों ने शत्रु को झेला। उधर राजा हल्लू ने अपनी नवविवाहिता रानी को कोटा में अपने भाई जैत्रसिंह के घर छोड़ा और स्वयं पाँच हजार सवारों सहित शीघ्र ही रात्रि समय में बंबावद पहुँचा। अपने घोड़े बढ़ाते हुए राजा हल्लू आते ही शत्रु रूपी पर्वत पर वज्र की तरह टूट पड़ा।

दोहा

रहे सहंस दुव खेत रन, मिलि खिच्चवी रु प्रमार।
भरतसेन अरु जैत्र भजि, गय सहि घाय अगार॥१५॥

इस भिड़ंत में खीची और प्रमार दोनों के पक्ष वाली सेना के दो हजार सैनिक रणभूमि में खेत रहे अर्थात् मारे गए। वे भरतसेन और जैत्रसिंह दोनों अपने शरीर पर घावों का भंडार ले कर अर्थात् कई घाव खा कर युद्धक्षेत्र से भाग खड़े हुए।

षट्पात्

बलि कोटासन बुल्लि गौड़ि दुलही अंचल गहि।
महिला सह जयमत्त दुर्ग प्रबिस्यो अहि तन दहि।
कंकन मोचि सक्यो न बहुरि जीरनपति दुर्बल।
रान अनुग बनि रंक द्रुतहि लायो तदीय दल।
संभरनरेस कंकनसहित अभिमुख झेलि धपाइ असि।
हम्मीर कटक जैत्रहिं हनि रु किय प्रद्रुत बिरुदन बिकसि॥१६॥

बंबावद के इस युद्ध को जीतने के बाद राजा हल्लू ने कोटा अपने सेवक भेज कर नवविवाहिता गौड़ वंशीय रानी को बुलवाया फिर उससे गठजोड़ा (अंचलग्रंथी) जोड़ कर अपने शत्रुओं को मारने वाला विजय के गर्व से गर्वोन्मत दूल्हा दुर्ग में प्रविष्ट हुआ। वह जीरन का राजा जैत्रसिंह तो इस दूल्हे का कंकन (कांकण डोरड़ा, विवाह के अवसर पर दूल्हे-दुल्हन की कलाई पर बाँधा जाने वाला धागा) भी नहीं तोड़ पाया। इसके बाद तो वह हाड़ा हल्लू का मातहत सेवक बन कर रहा और उसने अपनी सेना को भी स्वामी की आज्ञा में तैनात रखा। सांभर नरेश अर्थात् चहुवान राजा हल्लू ने हाथ के कंकन बँधे हुए ही शत्रु को सम्मुख ले कर अपनी तलवारों के प्रहार से धपा (छका) कर भेजा। राजा हम्मीर के शत्रु जैत्रसिंह को मार कर इस सपूत हल्लू ने जग में अपनी कीर्ति प्रसारित की।

दोहा

प्रधन अट्ठ किय चढिप्रथम, हुव जदपिन तंहं हारि।
तदपि लह्यो दुर्ग न त्रिक हि, यह स्वदिष्ट अनुसारि ॥१७॥

परनि आत नव सु प्रधन, जित्यो द्वि नृप भजाइ।
अब दसम हु यह आंगम्यों, खल जीरनपति खाइ ॥१८॥

इस वीर हाड़ा राजा हल्लू ने आगे हो कर (पहले चढ़ाई कर) आठ युद्ध लड़े पर एक में भी मात नहीं खाई। उसने अपने भाग्य बल से तीन दुर्गों को अपने अधिकार में किया। विवाह से लौट कर आते हुए तो इस राजा ने अपने नौवें युद्ध में दोनों शत्रुओं को भगा कर विजय पाई और दसवें युद्ध में यह राजा जीरन के स्वामी जैत्रसिंह को खा गया अर्थात् उसे मार डाला।

षट्पात्

ब्याह त्रितय किय बहुरि हड्ड हल्लुव जस जोरन।
तंहं तृतीय तोमरिय बैर बुंदिय महि मोरन।
नृप बुंदियपति नप्प भार चढि पुनि प्रबीरपथ।
खिच्चि पहारहि खंडि पुरसु लिय जित्ति पल्हायथ।
जित्तिय महेस हरराज जुग हल्लुव पहु रन बारहम।
तेरहम सीसवालिय सहर किय बुंदियबस जित्ति क्रम ॥१९॥

यश अर्जित करने वाले हाड़ा राजा हल्लू ने कुल तीन विवाह किये। इसी तरह तीसरा वैर बूँदी की भूमि को हड़पने वाले से लिया। इस वीर ने बूँदी के राजा नरपाल के साथ जुड़ कर खीची पहाड़सिंह को मार कर उसका पलायथा नामक नगर अधिकार में किया। यह राजा हल्लू का ग्यारहवाँ युद्ध था। इसके बाद महेशदास और हरराज को उसने अपने बारहवें युद्ध में हराया। तेरहवाँ युद्ध सीसवाली शहर को बूँदी के अधीन बनाने के अर्थ जीता।

दोहा

जीरननृप इत जैत्र सुव, सुंदरदास सनाम।
पुनिहु रान हम्मीर प्रति, किय विन्नति जयकाम॥२०॥

उधर जीरन के राजा जैत्रसिंह का पुत्र जिसका नाम सुन्दरदास था ने महाराणा हम्मीर की सेवा में चित्तौड़गढ़ उपस्थित हो कर निवेदन किया कि आप मेरी विजय करवाएँ।

षट्पात्

सुनि हल्लुव तिन्ह संधि पत्र चित्तोर पठायउ।
मंडनगढ नृप नागपाल पहिलें छलि पायउ।
तबहि रैन इत आइ बिरचि बैठन बंबावद।
लियउ अठानां लरत जिमहि तुमरो गढ जावद।
लिय बंगदेव सुहि बैर लखि पुरमंडल केथोलियपुर।
तुमसों छुटे न तबके गये लये जवन पृतना प्रचुर॥२१॥

जब बंबावद के राजा हल्लू ने इस मेलजोल का समाचार सुना तो उसने महाराणा को पत्र लिख कर भेजा कि पूर्व में जब राजा नागपाल ने छल कपट से मांडलगढ़ लिया था तो रत्नसिंह ने यहाँ आ कर बंबावद का राज्य बनाया और यहाँ रहा। उसने लड़ कर अठाना का क्षेत्र लिया और उसी तरह आपका जावद क्षेत्र लिया। इसी तरह राजा बंगदेव ने अपना वैर जान कर मांडलपुर और कैथोली नामक नगर लिया। हे महाराणा! आपसे तो अपने तब के गए क्षेत्र भी वापस नहीं लिये गए जो यवनों की भारी सेना ने छीने थे।

दोहा

तिनकों बिलसन लोभ तकि, सुंदर को किय संग।
सु न रक्खहु अप्पहु समुझि, उरग डंक्क जिम अंग॥२२।

दसपुर जीरन भानुपुर, चोथो गढ चित्तोर।
मंडनगढ़ इक दै मही, इन की लिय हम ओर॥२३॥

मिच्छन रन हरराज मृत, जावत मुख गत जत्थ।
तुमरे ए गढ हे न तब, तुट्टिय तुम कुल तत्थ॥२४॥

मंडनगढ़ तुम मूल सों, लाभ अधिक गिनि लेहु।
साहहिं दिय काका समर, इतकी रक्खन एहु॥२५॥

अब आप अपने उन गए हुए क्षेत्रों को भोगने का लोभ सोच कर जो इस सुन्दरदास का साथ कर रहे हो यह उचित नहीं। जिस प्रकार सर्प अपना कोई डंक अपने शरीर पर नहीं रखता उसी प्रकार आपको भी इस डंक (सुंदरदास) को अपने पास नहीं फटकने देना चाहिए। मंदसोर, जीरन, भानुपुर और चौथा चित्तौड़गढ़ ये सारे आप रखें। हमें तो उनके बदले में हमारा मांड़लगढ़ वापस कर दें। यवनों के साथ हुए युद्ध में जब राजा हरराज मरा तभी ये जावद आदि क्षेत्र हमारे अधिकार से गए थे। आपके भी अधिकार में तब ये गढ़ कहाँ थे? आप गलत तथ्यों के भरोसे हैं। रहा सवाल मांडलगढ़ का तो वह गढ़ तो हमारे काका समरसिंह को बादशाह ने रखवाली के लिए सौंपा था। आपने तो मांडलगढ़ में मूल पूँजी से अधिक ब्याज का लाभ उठाया है।

गढ चउ पीछे गहन की, हो पुनि रक्खत होंस।
क्यों जीरनपति मेल करि, दुरित भरहु निस द्योंस॥२६॥

अजयसिंह चित्तोर यह, तुमहिं दयो बलतानि।
तस जामाता की हि तुम, करहु हमहिं तजि कानि॥२७॥

मंडनगढ़ यौतक मिसहि, दाय उचित हो दैन।
अरु न दयो तो रहहु वह, रंच मदीय रहैन॥२८॥

हे महाराणा! मैं अपने बाहुबल के सहारे चारों गढ़ों को वापस लेने का हौंसला रखता हूँ फिर आप व्यर्थ ही उस जीरन के स्वामी सुन्दरदास से मित्रता गाँठ कर रात-दिन पापों के संचय में क्यों संलग्न रहते हैं? आपको भी

यह चित्तौड़गढ़ का राज्य आपके काका अजयसिंह द्वारा प्रदत्त है क्योंकि उसी वीर ने अपनी भुजाओं के बल पर इसे अर्जित किया था। आप यदि मेरा ख्याल नहीं करते तो कोई बात नहीं पर कम से कम आपको अपने काका अजयसिंह के दामाद की मर्यादा का ध्यान अवश्य रखना चाहिए। आपको यह सोच कर कि आप मांडलगढ़ का किला मुझे दहेज में दे रहे हैं मुझे दे देना चाहिए था। नहीं दिया, तो चलो आपके रहा, पर इस बात से आगाह किये देता हूँ कि मेरी रंचमात्र भी भूमि आपके अधिकार में नहीं रह सकेगी क्योंकि हे महाराणा! मैं रहने नहीं दूंगा।

षट्पात्

इम हल्लुव दल इक्खि रान अतिमान रिसायउ।
सुंदर नृप के संग पुनिहु बल प्रचुर पठायउ।
तात पितृव्यक तनुज बिंझ सिंहन उभै रु बलि।
तनुज सु खित्तल त्रय हि करे बलपति जित्तन कलि।
पुनि भरतसेन खिच्चिय पहुजु सुहु प्रबोधि पठयो सहित।
बुंदीस हम्म सुनत सु सबल आयउ हल्लुव भीर इत॥२९॥

राजा हल्लू का ऐसा पत्र पढ़ कर चित्तौड़गढ़ के महाराणा अत्यंत कुपित हुए। परिणामस्वरूप उन्होंने राजा सुन्दरदास की सहायता करने के लिए अपनी बड़ी सेना भेजी। यही नहीं सेना के साथ अपने काका के दोनों वीर पुत्र बिंझ और सिंहन को भेजा। अपने पुत्र कुमार क्षेत्रसिंह (खेता) सहित तीन बलवान योद्धाओं को युद्ध जीतने के निमित्त भेजा। इन लोगों के अतिरिक्त खीची राजा भरतसेन भी सिखावे में आ कर इनके साथ हो गया। ये सारे मिल कर आए तो यह सुन कर बूँदी का स्वामी हम्मीर भी राजा हल्लू के पक्ष में लड़ने आया।

दोहा

काका की नृप भीर करि, हुव नासीर सु हम्म।
जदपि रान बरज्यो बहुत, करन तदपि कुल कम्म॥३०॥

अपने काका राजा हल्लू का पक्ष ले कर हम्मीर युद्ध लड़ने को अग्रणी हुआ। उसे राणा ने बहुत मना किया पर उसने अपने कुल के कर्म की

मर्यादा का पालन किया।

षट्पात्

वाहवाह कहि उभय कटक मिलतहि हय हंकिय।
ख बढि मेह जिम खेह किरन बिकिरन रवि ढंकिय।
सहसा चलि संकुलित बान असि कुंत बरच्छिय।
अंग छिन्न उच्छलत मनहु बिनु दक अक मच्छिय।
गिरिजा गिरीस बिहरत सगन गगन मगन अच्छरि गहिय।
इभमुखी प्रमुख चउसट्ठि इम अति अभीष्ट गिनि उम्महिय॥३१॥

दोनों ओर की सेनाएँ आमने-सामने होते ही वाह-वाह की ध्वनि के साथ दोनों ओर के घोड़े बढ़े। जिनके पोड़ों (खुरों) से उड़ी हुई रज (खेह) ने मेघों की तरह आसमान छा दिया जिससे सूर्य की किरणें नहीं फैल सकी। अचानक बाण, भाले बर्छियाँ और तलवारें चलने लगी। अंग कट-कट कर यों उछलने लगे जैसे बिना पानी के दुःखी मछली उछलती है। रणभूमि में महादेव, पार्वती अपने गणों सहित विहार करने लगे। आकाश में अप्सराओं ने युद्ध देख कर हर्ष मनाया। इसी प्रकार चौंसठ योगिनियाँ भी युद्धारंभ को अपने लिए इच्छित कार्य गिन कर मगन हुईं।

बाजि दपटि बुंदीस गंजि बिंझ रु सिंहन गय।
कासू प्रहरि कराल हनिय खित्तल कुमार हय।
भरतसेन भूपाल हम्म भुज खग्ग प्रहारिय।
बाहुल कटि कछु बिसत झपटि हड्डुहु असि झारिय।
भानुपुर पहु सु खिच्चिय भरत पुहवि खंड दुव हुव पर्‌यो।
हय चढि द्वितीय आयो हनन कुमर सु पै घायल कर्‌यो॥३२॥

अपने घोड़े को दौड़ा कर बूँदी के स्वामी ने बिंझ और सिंहन के हाथियों को मार डाला और अपनी बरछी का प्रहार कर कुमार क्षेत्रसिंह का घोड़ा काट गिराया। इसी समय भरतसेन खीची ने राजा हम्मीर की बाहु पर तलवार मारी इससे उनके हाथ पर बंधा बाहुल (बाहुत्राण) कट गया और तलवार थोड़ी हाथ के भीतर तक उतर गई। इस पर कुपित हो झपट कर

हाड़ा राजा ने प्रत्युत्तर में अपनी तलवार का वार किया जिससे भानुपुर का खीची राजा भरतसेन दो टुकड़े हो कर भूमि पर गिर पड़ा। घोड़े पर चढ़ कर कुमार क्षेत्रसिंह आक्रामक हो कर बढ़ा पर वह भी घाव खा कर घायल हुआ।

बडगुज्जर बलराम रानभट बान कान रहि।
छुट्ट्यो नृप पर छुधित गयो गल भेदि त्वरा गहि।
इहिं छत लखि अलसात हनत जीरनबल हल्लुव।
आयउ बग्ग उठाय सहित सोदर लघु लल्लुव।
सुरजन पुरोग त्रिक हत्थ सुत जीरन दल अटक्यो जुरत।
हल्लुव भतीज अबलंब हुव इत मेवारन आहुरत॥३३॥

इधर महाराणा की सेना के योद्धा बड़गुज्जर बलराम ने अपने धनुष पर एक बाण चढ़ा कर उसे कान तक खींच कर मारा। यह प्राणों का भूखा तीर सीधा जा कर राजा को लगा और गले की चमड़ी के पार निकल गया। इस घाव से तिलमिला उठे राजा हल्लू ने जीरन की सेना को नष्ट करना शुरू किया। इसी समय अपने भाई की सहायता करने को अपना घोड़ा बढ़ा कर लल्लू वहाँ पहुँचा। हमेशा युद्ध में अग्रणी रहने वाला सुर्जन भी वहाँ आया। हाड़ा हत्थ के तीनों पुत्र एक साथ जीरन के दल पर टूट पड़े। राजा हल्लू के भतीजे ने अपनी ओर से युद्ध में सहायता देते हुए मेवाड़ (चित्तौड़गढ़) की सेना से जा टक्कर ली।

खित्तल हम्म दु खिन्न गये सिबिरन सिबिकागन।
बेधक वह बलराम हन्यों लल्लुव खग्गाहत।
सिंहन तिहिं सीसोद रान काका इन्ह रोकिय।
दपट्यो तुरग अदब्भ अब्भ अच्छरि अवलोकिय।
हरराज तनय हम्मीर अरु लोहराज करि लौह छक।
हल्लू नरिंद उप्पर हठिय आयउ असि चक्खन चसक॥३४॥

कुमार क्षेत्रसिंह (खेता) और हम्मीर दोनों युद्ध में घायल होने के कारण पालकी में बैठ कर अपने शिविर में आए। राजा हल्लू को तीर मार कर बेधने वाले बलराम बड़गुज्जर को लल्लू ने अपनी तलवार के प्रहार से

काट कर रणभूमि में गिराया और उसके बाद सिंहन सहित सिसोदिया राणा के दोनों चाचाओं को आगे बढ़ने से रोकने के लिए उसने अपने घोड़े को तेज दौड़ाया जिसे ऊपर आकाश से अप्सरा ने देखा। हरराज के पुत्र हम्मीर और लोहराज दोनों ने घायल कर उन्हें रणभूमि में गिराया जो राजा हल्लू पर हठ करके उसकी तलवार का स्वाद चखाने को आगे बढ़े थे।

सिंहन असि नृप सीस टोप तिरछी परि तुट्टिय।
नृप के खग्ग निपात छिन्न तससिर बपु छुट्टिय।
बेग सुनत यह बिंझ अंस नृप कै झारिय असि।
टरि करि बाहुल टूक सोहु तुट्टिय बिधिबस बसि।
हल्लुव बनात कौतुक बिहसि सहज कट्टिलिय बिंझ सिर।
बुंदीस अनुज नवरंग बलि हनिय हलू कलिकर्ण किर॥३५॥

इसी बीच सिंहन ने लपक कर अपनी तलवार का एक जोरदार प्रहार राजा हल्लू पर किया जिससे उसका शिरस्त्राण तिरछा कट कर गिर पड़ा पर प्रत्युत्तर में वापस राजा की तलवार चली जो इसके सिर को धड़ से अलग कर गई। जब सिंहन के मरने का सुना तो बिंझ ने तेज गति से आगे आ कर राजा के कंधे पर अपनी तलवार का प्रहार किया जिससे राजा का बाहुत्राण कट कर टुकड़े-टुकड़े हो गया पर राजा का हाथ भाग्यवश बच गया। राजा हल्लू ने तुरन्त अपने इस आसन्न शत्रु बिंझ का कौतुक रच कर हँसते हुए सहज ही में सिर काट डाला। इसी समय बूँदी के स्वामी के छोटे भाई नवरंग ने हूल वंश के कलिकर्ण नामक क्षत्रिय को झट से मार गिराया।

बिंझ रु सिंहन बीर परत खित्तल छत पावत।
मेवारन दल मुरिग छिप्र हड्डुन भय छावत।
बिनुनृप खिच्चिय बलहु भीत अबलगरहि भग्गिग।
इम हल्लू करवाल व्याल पीवत असु बग्गिग।
सुर्जन हु भ्रात गज भीम सह जीरन दल हनि किन्न जय।
मेवार द्रवत प्रामार मुरि सबन अग्ग भग्ग सु सभय॥३६॥

बिंझ और सिंहन दोनों वीर योद्धाओं के मारे जाने और कुमार क्षेत्रसिंह के घायल होते ही मेवाड़ की सेना हाड़ा योद्धाओं से भयभीत हो कर रणभूमि

से भागने लगी। उधर बिना स्वामी के खीची सेना भी जो अब तक लड़ रही थी डर कर भाग खड़ी हुई। इस प्रकार राजा हल्लू के खड्ग रूपी सर्प ने शत्रुओं के प्राणों को पी लिया। सुर्जन के भाई गज और भीम ने सारी जीरन की सेना को मार कर विजय प्राप्त की। मेवाड़ की सेना के भागते ही प्रामार भी भयभीत हो कर भागने वालों में सबसे आगे था।

दोहा

हल्लू जिति चउद्दहम, रन लगि पिट्ठि रिसात।
पुरमंडल बिच कुद्दि पहु, अमलकिन्न उफनात ॥३७॥

निज थांनां धरि तंहं निडर, पंद्रहम सु जय पाइ।
कति दिन रक्खिय हम्म कंहं, इम बंबावद आइ ॥३८॥

करि साधन बैद्यन कथित, हुव नीरुज हम्मीर।
पहु भतीज तब प्रेसयो, बुंदीपत्तन बीर ॥३९॥

इस तरह हाड़ा राजा हल्लू ने कुपित हो शत्रुओं के पीछे लग कर अपना यह चौदहवाँ युद्ध जीता। इसके बाद मांडलपुर पर आक्रमण कर राजा ने अपने आधिपत्य में कर लिया। जीतने के बाद राजा हल्लू ने अपना थाना वहाँ स्थापित किया जिससे जीती हुई भूमि सुरक्षित रहे। इस प्रकार बंबावद के स्वामी हल्लू हाड़ा ने अपना पन्द्रहवाँ युद्ध जीता। इसके बाद विजित राजा अपनी राजधानी बंबावद को लौटा। उसने कई दिन हम्मीर को अपने यहाँ रखा फिर वैद्यों के बताये अनुसार साधन करने से जब घायल हम्मीर एकदम स्वस्थ हो गया तो राजा ने अपने इस वीर भतीजे को बूँदी नगर भेजा।

षट्पात्

महिप रान हम्मीर स्वबल हड्डुन जित्यो सुनि।
कृत घायल निज कुमर परे रन दुव काका पुनि।
बडगुज्जर बलराम हूल कलिकर्ण प्रान हरि।
पुरमंडल गय पैठि कछु न चित्तोर कान करि।
इत्यादि मंतु पिक्खि सु असह अहिमेचक गति ऊससिय।
हल्लू हि हेतु सबको समुझि चढन चाहि कटिपट कसिय ॥४०॥

महाराणा हम्मीर ने जब सुना कि हाड़ाओं ने अपने बाहुबल के सहारे युद्ध जीत लिया है और यह भी कि इस युद्ध में उन्होंने कुमार क्षेत्रसिंह को घायल कर दिया और दो काकाओं को मार गिराया। जब उन्हें खबर पड़ी कि बड़गुज्जर बलराम, हूल कलिकर्ण जैसे उनके विश्वासपात्र वीर योद्धा मारे गए। और यह भी कि हाड़ाओं ने चित्तौड़गढ़ की शंका नहीं मानी और वे सीधे मांडलगढ़ में जा प्रविष्ट हुए हैं। इस तरह के सारे कृत्यों को राणा ने अपने प्रति असह्य अपराध माना और वे काले सर्प की तरह फुफकार उठे। इन सारे कार्यों का कारण एक वह हाड़ा हल्लू है यह निष्कर्ष निकाल कर हाड़ाओं पर आक्रमण करने के लिए महाराणा ने कमर कसी।

दसपुर जीरन स्वदल दै रु तिनकेहु बुल्लि दल।
बाहिर सिबिर बनाइ मिजल किय इक्क महाबल।
सेना त्रेपन सहंस सज्जि हंकत सीसोदहिं।
सुनि बुंदियपति सजव बिरचि संबंधि बिनोदहिं।
पंचम मुकाम हम्म सु पहुंचि कहि में खित्तल खित्री किय।
औरको नत्थि अपराध यह हनहु मोहि धकि बैर किय॥४१॥

आक्रमण करने की योजना बनाने में सर्वप्रथम महाराणा हम्मीर ने पत्र लिख कर मंदसोर और जीरन से सेना बुलवाई और प्रयाण किया। महाबली ने शिविर बनवा कर पहला पड़ाव किया इस समय इस सिसोदिया राजा की सेना में सैनिकों की संख्या तिरपन हजार थी। सेना के चित्तौड़गढ़ से प्रयाण के समाचार जब बूँदी पहुँचे तो बूँदी के स्वामी ने शीघ्र ही अपना मानस बनाया कि स्नेह प्रीत से मामले को सुलझा लेना चाहिए अन्यथा अमला भारी है। मेवाड़ी सेना के पाँचवें पड़ाव के मुकाम पर अग्रिम रूप से पहुँच कर हाड़ा हम्मीरसिंह ने कहा कि हे महाराणा! कुमार क्षेत्रसिंह मेरे हाथ से घायल हुए हैं। इनमें दूसरे लोगों का कोई अपराध नहीं। आप मेरे अपराध की सजा मुझे दीजिए। मुझे अपना शुत्र समझकर दंड दीजिए।

इम जंपत नृप इक्क पत्त जब रान पटालय।
सोहु सुनत द्रुतु दोरि गिनत अद्भुत सम्मुह गय।
मिलि बत्थन हित मानि आनि बैठिय इक आसन।
उपालंभन दुहं ओर भयउ निर्मित संभासन।

सीसोद कहिय लिय साह सन जावत आदि प्रदेस जब।
कोनसो बैर हल्लू कहत इनकों चहत छुटान अब॥४२॥

ऐसा कहते हुए हाड़ा राजा हम्मीर सिंह अकेला ही महाराणा के शिविर में गया ऐसी अद्भुत बातें सुन कर महाराणा के भले सामन्त राजा की अगुवाई के लिए सामने आये। शिविर में दोनों राजा बाँह पसार कर मिले और स्नेहपूर्वक दोनों अधिपति एक ही आसन पर बैठे। इसके बाद दोनों ओर से उपालंभ भरे संभाषण हुए। संवाद शुरु करते हुए महाराणा ने कहा कि हमने जावद आदि का क्षेत्र तो बादशाही सेना से लिया था फिर राजा हल्लू यह क्यों कहता है कि मैं जावद आदि क्षेत्र को राणा के अधिकार से छुड़वा कर अब अपना वैर लूँगा।

बुंदियपति तब बदिय मेलि खिच्चिय प्रामारन।
अप्पहु भेजि अनीक कियउ अनुचित बिनु कारन।
करि कटकेस कुमार बिंझ सिंहन काका बलि।
हल्लू सन अरि होइ कियउ हित मेंहु अहित कलि।
जिहिं नप्प भीरकरि त्रि रन जय किय बुंदिय बस दुर्ग दुव।
इहिं लाज मेंहु सज्जित उतहि हितबस काका भीर हुव॥४३॥

इस पर बूंदी के राजा ने कहा कि हे महाराणा! खीची और प्रामार को आपने भेजा। यही नहीं आपने उनके साथ अपनी सेना भेज कर बिना ही किसी बात के अकारण अनुचित कार्य किया। आपने कुमार क्षेत्रसिंह को सेनापति बना कर भेजा और साथ में बिंझ, सिंहन और अपने काका भेजे। खामखाह राजा हल्लू के साथ शत्रुता मोल ले कर हित में अहित कर युद्ध किया। पूर्व राजा नरपाल ने अपनी सेना के बल पर तीन युद्धों में विजय पा कर दो दुर्ग बूँदी के अधिकार में किये थे। इसी लाज के कारण कि मेरे पूर्वजों के अधिकार की रक्षा हो, मैं भी सेना सहित सज्जित हो कर अपने काका राजा हल्लू के पक्ष में लड़ने गया।

दोहा

मोहि जदपि बरज्यो तुमहु, आयो तदपि उतैंहिं।
कछु छत लग्गिय कुमर कैं, सो पै मम सयसैंहि॥४४॥

रान कहिय तुम खित्तल रु बडगुज्जर तुम बिद्ध।
सो दोउन लिन्नी समुझि, समता नय रन सिद्ध॥४५॥

हल्लू मम काका हनैं, बिंझ रु सिंहन बीर।
पुरमंडल किय अमल पुनि, सु किम बनें समसीर॥४६॥

बूँदी के हाड़ा राजा हम्मीरसिंह ने आगे कहा कि मुझे आपने मना करवाया था फिर भी मैं वहाँ पहुँचा और यह भी सत्य है कि मेरे हाथों ही कुमार क्षेत्रसिंह को घाव लगे। इसलिए में कसूरवार हूँ। तब महाराणा हम्मीर सिंह ने कहा कि तुमने क्षेत्रसिंह से तथा तुम से बड़गुज्जर बलराम ने भिड़ंत ली। दोनों के आक्रमण की समता समझ में आती है क्योंकि रण की नीति यही बताती है पर राजा हल्लू ने मेरे दो काका मारे। उनके साथ सिंहन और बिंझ को मारा। यही नहीं मांडलपुर पर जा अधिकार किया। अब तुम ही बताओ कि ऐसे व्यक्ति से भला बराबर का मिलाप (समझौता) कैसे हो सकता है?

जैत्र भरत सुत एहु जिम, बिन्नति रचत बहोरि।
बालन निज निज बैर कों, सो पायन सयजोरि॥४७॥

महाराणा ने आगे कहा कि जैत्रसिंह और भरतसेन का पुत्र सुन्दरदास दोनों मेरे पास आए और आ कर मुझ से विनती की कि वे अपना अपना वैर हल्लू से लेना चाहते हैं इसलिए उन्होंने हाथ पाँव जोड़ कर मुझसे सहायता देने की कही। तब मैं क्या करता?

षट्पात्

पहु अक्खिय रान प्रति सुनहु जिम मिटत बैर सब।
सुत मम लाल सुता सु अप्पकुमर हिं दिन्नी अब।
बैर सु इम बीसरहु मन्त्रि सुलभहि पुरमंडल।
हम रोकत हल्लू हि बेग लेहु सु पठाइ बल।
रोचक तुम्हैंहु यहरीति तो करहु मेल बाधक कवन।
मिलि मांहिं मांहिं अप्पन मरत जत्थ तत्थ हसिहैं जवन॥४८॥

महाराणा का उलाहना सुन कर बूँदी के राजा ने कहा कि हे महाराणा! अब मैं वह बात आपसे निवेदन करता हूँ जिससे यह वैर मिट सकता है।

यदि आप स्वीकार करें तो मैंने अपने बेटे लालसिंह की पुत्री को आज आपके कुमार क्षेत्रसिंह को दी। इससे अब आप वैर को भुला दें और मांडलगढ़ आपको सुलभ हो जाएगा। मैं राजा हल्लू को मना लूँगा। वे शीघ्र ही अपनी सेना मांडलगढ़ दुर्ग से हटा लेंगे। आपको मेरा यह प्रस्ताव पसन्द आ गया हो तो आइये हम आपस में राजीनामा (समझौता) करें। हमारे मेलजोल में तब भला दूसरा कोई बाधक क्या बनेगा। हम लोग इस तरह आपस में ही लड़ते-भिड़ते रहे तो निश्चय ही यवन लोग हँसते हुए हमारा मजा देखेंगे।

सुनि प्रसन्न सीसोद लाभ नृप कथित मन्त्रि लिय।
नव कुंकुम करि नृपहु कुमर खित्तल तिलकित किय।
समय सु ब्याहहु बदि रु मुरत आयउ पुरमंडल।
हल्लू कंहं कछु कज्ज बोधि लैगो स्वसंग बल।
लखि यह बिलंब पुरमंडलहु रान अमल तोलों रचिय।
दसपुर चमू रु जीरन दल सु दुर्मन निलय पठाइ दिय॥४९॥

हाड़ा राजा के प्रस्ताव को सुन कर चित्तौड़गढ़ के महाराणा हम्मीर सिंह प्रसन्न हुए। उन्होंने राजा के इस लाभ भरे प्रस्ताव को स्वीकार कर लिया। तब नये कुमकुम का तिलक हाड़ा राजा ने मेवाड़ के कुमार क्षेत्रसिंह के ललाट पर लगाया और सगाई पक्की की। हाड़ा राजा ने आगे निवेदन किया कि भविष्य में उचित समय देख कर विवाह की रस्म निभा दी जाएगी और इतना कह कर वह मांडलगढ़ आ गया। इस समय राजा हल्लू वहाँ से कहीं अपनी सेना सहित गया हुआ था। उसे वापस लौटने में विलम्ब होता देख महाराणा ने अपना अधिकार मांडलगढ़ दुर्ग पर किया। इस तरह यह देख कर कि अब युद्ध टल गया है महाराणा ने उदास मन से मंदसौर की सेना और जीरन की फौज को अपने अपने ठिकाने पर जाने को कहा।

दोहा

बुंदिय रहि कति अब्द बलि, हडुनृप सु हम्मीर।
बिरत भयो ब्यवहार सों, बसुमति भुग्गत बीर॥५०॥
बय बिताइ पैंसठि बरस, बिधिजुत उदित बिबेक।
कासीबास बिचार करि, किय खिल उचित अनेक॥५१॥

निज भद्रासन कुमर निज, बरसिंह हिं बैठारि।
नियत बस्यो बारानसी, ध्रुव स्वरूप दृढ धारि।।५२।।

बरस पच्यासी भुग्गि बय, पीछैं अवसिति पाइ।
कासी ही तनु त्याग किय, सत्य स्वरूप समाइ।।५३।।

इसके बाद हाड़ा राजा हम्मीरसिंह ने अपनी वय के कुछ वर्ष बूँदी पर शासन करते हुए बिताये फिर वह इस राजकाज और जागीर को भोगने से विरक्त हो गया। उसने अपनी पैंसठ वर्ष की उम्र बिताने के बाद विवेकपूर्ण ज्ञान उत्पन्न कर काशीवास करने का विचार किया और इसके लिए आवश्यक व्यवस्था की। बूँदी के राज सिंहासन पर अपने राजकुमार वरसिंह को बिठा कर राजा ने निश्चल हो कर काशी में जा कर निवास किया। वहाँ रहते हुए राजा हम्मीर सिंह ने कुल पचासी वर्ष की आयु भोगने के बाद अन्त समय पाया। राजा वाराणसी में ही अपने शरीर का त्याग कर सत्य स्वरूप ईश्वर से एकमेक हुआ।

सक बसु दृग गुन ससि समय, भव पायउ इहिं भूप।
गुन श्रुति गुन भू पर गह्यो, राज्यासन अनुरूप।।५४।।

बन्हि नंद गुन ससि बरस, पुत्रहिं अप्पि नृपत्व।
पुरकासी त्रि कु चउ कु पर, तनु तजि गो मिलि तत्व।।५५।।

बय पचीस जावत बरस, पट्ट पंचसिख पाइ।
हड्डु नृपति बरसिंह हुव, बुंदिय सुनय बढाइ।।५६।।

विक्रम संवत् के वर्ष तेरह सौ अट्ठाईस में राजा हम्मीरसिंह ने जन्म लिया था और वर्ष तेरह सौ तैंतालीस में बूँदी का राजसिंहासन पा कर राजा बना। इस राजा ने विक्रम संवत् के वर्ष तेरह सौ तिरानवें में अपने पुत्र को राजसिंहासन सौंपा और वर्ष चौदह सौ तेरह में काशी में अपनी देह का त्याग कर पंचतत्व में विलीन हुआ। अपनी पच्चीस वर्ष की आयु पूरी कर राज्यसिंहासन पा हाड़ाओं में श्रेष्ठ राजकुमार वरसिंह बूँदी राज्य का राजा बना जिसने अपनी अच्छी नीति से इस राज्य का विस्तार किया।

इति श्री बंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे पंचम राशौ बीतिहोत्र चण्डासि बीज्यवर्णनबीजहड्डाधिराडस्थिपाल वंश्यानुवंश्यविहित-विवरणवेलाव्याहार्यबुन्दीशहड्डुनरेन्द्रहम्मीर समयसङ्गतबम्बावदेशहड्डु-नरेन्द्र

हल्लू चरित्रे तज्जन्म राज्य शकप्राप्तिसूचन भटवर्गत्रयोदश वर्षवयस्कव-मृवैर विवालयिशुहल्लू सप्रसभप्रतिमोटन जितनृपत्रय रणाऽष्टक पंचदश वर्षवयस्कहल्लू हिंगुलाजगढादिगतदुर्गत्रय समाक्रमण सप्तदश समावस्थ-परिणीतगौड़ी कप्रत्यागतहल्लू बम्बावदवेष्टकखिच्चि प्रमार प्रत्यनीक-प्रद्रावण दशम रणद्रावितसहायकराणासैन्यजीरणपुरपृथ्वीशप्रामारजैत्र-निपातन पुनः प्रणीतपाणिपीड़नत्रय नरपाल सहायजितरणत्रय पल्हायथ-खिच्चि डोडारिनृपद्वय हल्लू पल्हायथ सीसवाली पुरद्वय बुंदीवशीकरण तद्वर्जनप्रतीपराणाहम्मीरस्वसहाययुयुत्सु जीरणपतिसार्थस्वपुत्र पितृव्यक त्रयप्रधानपृतनापृथनार्थप्रेषण स्वपितृव्यकसहायसक्षतीकृतक्षेत्रल-कुमारबुन्दीनरेन्द्र हम्मीर सपाणिपीडस्वपाणित्रकर्त्तकभानुपुरभूपभरतसेन-भ्रंशन।

श्री वंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण की पंचम राशि में अग्निवंशी चहुवान वंशवर्णन के कारण हड्डाधिराज अस्थिपाल के वंश और वंश की शाखाओं की कथा बताने के समय के वचनों में बूँदीश नरेन्द्र हम्मीरसिंह के समय के साथ बंबावदा के हाड़ों के नरेन्द्र हल्लू के चरित्र में उसके जन्म और राज पाने के संवत् की सूचना करना, तेरह वर्ष की अवस्था वाले और पिता का वैर लेने की इच्छा वाले हल्लू का उमरावों के समूह का हठ पूर्वक पीछा करना, तीन राजा और आठ युद्धों को जीतकर पन्द्रह वर्ष की अवस्था वाले हल्लू का हिंगलाजगढ़ आदि गये हुए तीन गढ़ों को लेना, सत्रह वर्ष की अवस्था में गौड़ी को विवाह कर लौटते हुए हल्लू का बंबावदा को घेरने वाले खीची और प्रमार शत्रुओं को भगाना, दशमयुद्ध में राणा की सहायक सेना को भगाकर जीरणपुर के राजा प्रामार जैत्रसिंह को मारना, फिर तीन विवाह करके नरपाल के सहाय होकर तीन युद्ध विजय करके पल्हायथा के खीची और डोड दोनों शत्रु राजाओं को जीतकर हल्लू का पल्हायथा और सीसवाली दोनों पुरों को बूँदी के वश में करना, उसके मना करने के विरुद्ध राणा हम्मीरसिंह का अपनी सहायता से युद्ध करने की इच्छा वाले जीरण के पति के साथ अपने एक पुत्र और दो काका इन तीनों को सेनापति करके युद्ध के अर्थ सेना भेजना, अपने काका के सहाय कुमार क्षेत्रसिंह को घायल करके बूँदी के राजा हम्मीर का अपने बाहुत्राण को काट कर बाहु को पीड़ा पहुँचाने वाले भानुपुर के राजा भरतसेन को मारना।

वीक्षितबलरामबिद्धबुन्दीशसहायलल्लू वृहद्गुर्जरबलराम विध्वंसन

हल्लू स्वानुजलोहराज हम्मीर प्रहारकसिंहण विन्ध्यराज शीर्षोद्दनिषूदन नवरंग राणाभटहूलकलिकर्णकर्तन जितैतच्चतुर्दश युद्धप्रदावितशत्रु-सैन्यत्रय पंचदश प्रधनप्रधानपराक्रमप्राप्तपुरमण्डलाख्यराणापत्तन-प्रत्यागतहल्लू प्रापितपाटवहम्मीर बुंदीप्रस्थापन तदनन्तरवैरविस्मारक-स्वपौत्रसिम्प्रदानीकृत क्षेत्रलकुमारनिस्सारितहल्लू सैन्यशून्यीकृतपुर-मण्डलहड्डाधिराजहम्मीर दशपुर जीरण सैन्यसमेतहल्लू कुलनिर्बीजी-कर्तुकामप्रस्थितराणाहम्मीरप्रतिस्थापन बुन्द्यागतवीतवयस्कगद्दिकोप-वेशितबरसिंह कृतकाशिनिवासभाविसमयप्राप्तावसानहड्डेशहम्मीर जन्म राज्य प्राप्तिराज्यत्याग तनुत्याग संबत्सूचनं नवमो मयूखः ॥९॥ आदित-ष्षट्पञ्चाशदुत्तरैकशततमः ॥१५६॥

बलराम द्वारा बूँदी क राजा को घायल किया हुआ देखकर उसके सहायक होकर हल्लू का बड़गूजर बलराम को मारना, हल्लू और अपने छोटे भाई लोहराज का हम्मीर पर प्रहार करने वाले सीसोदिया सिंहण और विन्ध्यराज को मारना, नवरंग का राणा के भट हूल कलिकर्ण को मारना, उस चौदहवें युद्ध में शत्रुओं को जीतकर तीन सेनाओं को भगाकर पन्द्रहवें युद्ध में अपने पराक्रम की प्रधानता से राणा के मांडल नामक पुर को लेकर लौटे हुए हल्लू का नैरोग्य होने पर हम्मीर (हामा) को बूँदी भेजना इसके बाद वैर मिटाने के लिये अपनी पोती कुँवर क्षेत्रसिंह को देकर हल्लू को सेना सहित निकाल कर मांडल नगर को खाली करके हड्डाधिराज हम्मीर का मंदसोर और जीरण की सेना सहित हल्लू के कुल को निर्बीज करने की कामना वाले प्रयाण किये हुए राणा हम्मीरसिंह को वापस लौटाना, बूँदी में आकर अवस्था बीतने पर वरसिंह को गद्दी बैठाकर काशीनिवास करके आगे आने वाले समय में मृत्यु पाने वाले हड्डेश हम्मीर के जन्म, राज्य प्राप्ति, राज्य त्याग और शरीर त्याग करने के सम्वत् की सूचना करने का नौवाँ मयूख समाप्त हुअ और आदि से एक सौ छप्पन मयूख समाप्त हुए।

प्रायो ब्रजदेशीय प्राकृत मिश्रित भाषा

दोहा

हल्लू समर चउद्दहम, पृतना त्रय जय पाइ।
अक्षत लखि बपु अप्पनों, घन रिपुजन गन घाइ॥१॥

रन रन इम अक्षत रहत, बार्द्धक आवत बिक्खि।
मनचिंतिय धारा मरन, समर कुमावन सिक्खि॥२॥

बंबावद के हाड़ा राजा हल्लू ने अपने इस चौदहवें युद्ध में तीन तीन सेनाओं को परास्त कर विजय पाई। उसने बहुत सारे शत्रुओं के शरीर पर घने घाव लगाये पर यह देख कर उसे विचार आया कि उसकी देह पर एक भी घाव नहीं लगा। युद्ध पर युद्ध करने के बाद भी अक्षत शरीर के साथ जब इसने देखा कि बुढापा शनैः शनैः करीब आ रहा है और उसकी अपनी धारा तीर्थ में मरने की इच्छा पूरी नहीं हुई। उसने संग्राम रचाना सीखा ही इसलिए था कि रणभूमि में वीर शय्या पर सोने की उसकी आरजू पूरी होगी।

युग्मम्

बैर पराये लैन बदि, जिततित जुज्झन जाइ।
निज नियति निंदत भयो, अक्षत बपु गृह आइ॥३॥

वह वीर हाड़ा अपने ही नहीं पराये वैर लेने को भी सदा उत्सुक रहता था और इसके लिए यहाँ वहाँ जा कर उसने युद्ध भी कई लड़े पर उसने अपने भाग्य को सदा इस बात के लिए कोसा कि प्रत्येक युद्ध के बाद उसे अक्षत काया ले कर घर आना पड़ा।

षट्पात्

गिरिधर नृप गुग्गैर जत्थ हरराज बिबाहिय।
सो तोमर धनसाहि सूनु जासन असि साहिय।
नरउर के कुम्म नृप लुपत सीमा साहस लगि।
आयउ सहबल अतुल ज्वलन अंतर प्रकोप जगि।
हल्लू नरिंद सुनतहि हरखि बिनुहिं निमंत्रन पच्छ बनि।
तोमर सहाय कुम्महिं तरजि, हुव बिजई प्रतिपच्छ हनि॥४॥

गुग्गैर के राजा गिरधर जिनके यहाँ हाड़ा राजा हरराज ने विवाह किया था। इसी कुल के वंशज तंवर धनशाह के पुत्र की सहायता के लिए राजा हल्लू ने तलवार उठाई। जब नरवर के कछवाहा राजा ने गुग्गैर का सीमावर्ती कुछ क्षेत्र जबरन अपने अधिकार में कर लिया तो यह देख कर वह तंवर कुमार अपने अंतस में क्रोध की ज्वाला धधकाता हुआ अपनी सेना को

सज्जित कर मुकाबला करने गया। राजा हल्लू ने जब यह सुना तो वह बिना बुलाये ही उसके पक्ष में सहायक हो कर लड़ने जा पहुँचा। तंवर की ओर से कछवाहा राजा को ललकार कर हल्लू ने उसकी सेना को हरा कर विजय हासिल की।

पहिलें बंग नृपाल गंजि चाचिक कृपान गहि।
भैंसरोरगढ़ गहिय द्रोहपावक रैंन हिं दहिं।
रैंन तनय हरि नाम अमर चाचिक हरि अंगज।
सो प्रसभी इहिं समय सद्धि इक निसफल संगज।
सत सुभट भिल्ल भट दुवसतन दिय निश्रेनिय गढ दुलभ।
रोपाल तत्थ हल्लू अनुज लये समुह सूचन समुह ॥५॥

पूर्व में राजा बंगदेव हाड़ा ने तलवार उठा कर चाचिक को पराजित किया और द्राह रूपी अग्नि में रत्नसिंह को भस्म कर भैंसरोड़गढ़ पर अधिकार किया था। इस चाचिक राजा रत्नसिंह का पुत्र हरिसिंह था और हरिसिंह के अमर नामक पुत्र हुआ। इस हठी अमर चाचिक ने अवसर ताक कर एक साथी के साथ यह असफल प्रयास किया कि भैंसरोड़गढ़ के दुर्ग पर सीढ़ियाँ लगा कर अपने सौ योद्धाओं के संग दो सौ भील वीर ले कर चढ़ाई की और इस गढ़ पर कब्जा करना चाहा। लेकिन हाड़ा रोपाल ने इस शत्रु समूह को अपने सम्मुख किया अर्थात् वह वीर सामने जा कर लड़ा। इस युद्ध के प्रयास में अपने कई योद्धाओं को कटवा कर अमरसिंह को भागना पड़ा और राजा हल्लू के छोटे भाई रोपाल ने विजय हासिल की अर्थात् उसका यह प्रयास असफल कर दिया।

दोहा

कलि कटाइ रजपूत कति, ससमर अमर भज्यो सु।
सावधान छुवतहि समुह, जय रोपाल भज्योसु ॥६॥

निंबड़िपति सालक अमर, तिहिं जुत तस सुधि रक्खि।
हल्लू इम रन सत्रहम, चाचिककुल गय चक्खि ॥७॥

जब झल्लन जीनोद लिय, जुज्झिय दसपुर जाइ।
उहां भयो न जय न अजय, इमहु मिलत बिधिआइ ॥८॥

तब नींबड़ी नगर के राजा ने अपने साले चाचिक अमरसिंह के पक्ष में हो कर सहायता देने के सबब युद्ध किया पर राजा हल्लू ने अपने इस सत्रहवें युद्ध में चाचिक कुल का नाश कर दिया अर्थात् दोनों साले बहनोई को मार गिराया। राजा हल्लू का अठारहवाँ युद्ध वह था जिसमें झालाओं ने जीनोद लेने के लिए मंदसौर जाकर लड़ाई की और वह जा पहुँचा। उसने युद्ध दोनों के विरुद्ध लड़ा पर भाग्ययोग से किसी की हार जीत नहीं हुई।

हो दहिया हरि नैनवा, भूप अरिहु तस भीर।
जित्ति उदासीन हि लयो, पद्म नगर नृप बीर ॥९ ॥

बुंदियपति हम्मीर तब, पठयो इम लिखि पत्र।
काका तुम अरिभीर किय, अनुचित दोष अमत्र ॥१० ॥

पद्मसेन दाहिम सुपहु, नगर नगर निर्दोष।
तिहिं अरि करि हरि हित तक्यो, पन्नग भरि पयपोष ॥११ ॥

हाड़ा राजा हल्लू ने अपने उन्नीसवें युद्ध में अपने ही शत्रु नैणवा नगर के राजा दहिया हरिसिंह के पक्ष में हो कर उसके शत्रु नगर नामक पुर के राजा दाहिया पद्मसेन को परास्त किया। इस पर बूँदी के स्वामी हाड़ा राजा हम्मीर ने अपने चाचा राजा हल्लू को उलाहना भरा पत्र लिखा कि आपने हमारे शत्रु के पक्ष में हो कर युद्ध किया यह तो आपने कोई अच्छा कार्य नहीं किया। आपने उस नगर नामक पुर के राजा दहिया पद्मसेन जो बेचारा निर्दोष था को तो आपने नया शत्रु बनाया और उसके शत्रु हरिसिंह का हित पोषण किया। यह आपका कृत्य ठीक साँप को दूध पिलाने जैसा है।

षट्पात्

सुनि यह हल्लुव सुपहु पत्र बुंदिय इम पिल्लिय।
इते बरस हम आजि खेल चाहत जिय खिल्लिय।
चउद्दहम रन चंड पिक्खि आवत पलितावलि।
असु छंडन आग्रहहि बंधि तिम हय नक्खिय बलि।
पिक्खहु भतीज नियतिय प्रबल इक्क हुछत अंगन सफल।
तरवारि धार तुट्टन तिमहि बंधिय हम हठि मंत्रबल ॥१२ ॥

बूँदी के राजा हम्मीर के पत्र के जवाब में राजा हल्लू ने लिख भेजा कि

इतने वर्षों तक हम युद्ध में सक्रिय भाग इसलिए लेते रहे कि कदाचित हमें वीर शय्या पर सोने का अवसर मिले। चौदहवें संग्राम के समय हमने देखा कि हमारे सिर पर सफेद बाल झलकने लगे हैं। तब तो हमने मन में प्राण त्याग करने का और अधिक पक्का निश्चय कर लिया इसीलिए हम हर युद्ध में बलपूर्वक अपना घोड़ा झोंकते रहे। पर हे भतीजे! नियति की प्रबलता देख कि अब तक के सारे युद्धों में सक्रिय रूप से लड़ने के बावजूद हमारे शरीर को एक भी घाव नहीं लगा। तलवार की धार से कट कर मरने का हमारा प्रबल हठ ही इसका कारण है और कुछ कारण मत समझना।

दोहा

दैन भीर यातें दु बल, लज्जत जावत लाल।
तुमहिं रुची जु न तो तुमहु, क्रमहु निबल अरि काल॥१३॥

हम्म कहिय जो यह गहिय, संधा निबल सहाय।
निबल भतीज हु सबल सन, आप करहु जय आय॥१४॥

किसी की जहाँ लज्जा जा रही हो ऐसे निर्बल के पक्ष में खड़ा होने की हमारी आदत है। यदि हमारी आदत तुम्हें नापसन्द हो तो तुम निर्बलों के शत्रु बन कर उनका काल बनने को स्वतंत्र हो। इस पर राजा हम्मीर ने कहा कि यदि आपने निर्बलों के सहायक होने की प्रतिज्ञा ही कर ली है तो आप अपने इस निर्बल भतीजे की सबल से रक्षा करते हुए विजय दिलवाना।

षट्पात्

जंपिय हल्लुव जुज्झि समर काका अग्रज सह।
हम गृह हित हुव हुतहि मिच्छ पावक महंत मह।
पुनि मम सिसुपन पुहवि गई बंबावद के बस।
बुंदी की बिगरी न तदपि हम हुव बर्द्धक तस।
रिपु गिनत नप्प स्वसुरहिं तजि रु जुग दिवाड़ गढ करि त्रि जय।
आयो रु बहुरि लखिहों इमहिं ऐहौं तो लखिहों न अय॥१५॥

राजा हल्लू ने कहा कि समरांगण में जूझते हुए हमारे काका समरसिंह और अन्य अग्रजों ने हमारे घर के हित के लिए पूरे उत्साह के साथ म्लेच्छ रूपी अग्नि में स्वयं को होम डाला। फिर मेरे शैशवकाल में बंबावद के

अधिकार वाली भूमि ही गई। बूँदी की अब तक नहीं बिगड़ने दी क्योंकि हमारे जैसे उसके वर्द्धक (बढ़ाने वाले) थे। हमारे श्वसुर को राजा नरपाल शत्रु गिनते थे इसलिए हमने उसका पक्ष लेना छोड़ कर युद्धों में तीन बार विजय हासिल करवाई और दो दुर्ग बूँदी को दिलवाये। अब इस वृद्धावस्था में भी तुमसे कहता हूँ कि यदि कोई चढ़ कर आया तो मैं शुभ अशुभ को नहीं देखूँगा अर्थात् आ कर अवश्य ही उसे मारूँगा।

दोहा

इमहि तुमारो जो अरिहु, लखिहों निर्बल लाल।
तो अैहों द्रुत भीर तस, कटि असिलों बनि काल॥१६॥

पर हे भतीजे! इसी तरह यदि तुम्हारा भी कोई शत्रु बना और यदि वह निर्बल हुआ तो मैं उसके पक्ष में हो कर उसकी सहायता को तलवार उठा कर कमर कसूँगा।

षट्पात्

ऊनबिंस इम बिजित तुमुल सद्धि रु तदनंतर।
अप्प बारहम अनुज बैर बालिय बसुधाबर।
देव कुमर जब द्रंग लुंचि मोहिल पट्टनि लिय।
सल्ह मनोहर सूनु आइ लक्खन आराधिय।
रक्ख्यो सु रान बग्घोर दै सुत तदीय अब इहिं समय।
हम्मीरराव करि दुर्गपति मंडनगढ रक्ख्यो मलय॥१७॥

उन्नीसवाँ युद्ध राजा हल्लू ने इस प्रकार जीता कि उसने अपने बारहवें भाई को मारने वाले से वैर लिया। पूर्व में जब कुमार देव हाड़ा ने मोहिलों से उनके नगर खोस लिए और उनसे पाटण ले लिया तब वे दोनों सल्ह और मनोहर मोहिल वहाँ से चल कर चित्तौड़गढ़ महाराणा लक्ष्मण सिंह (लाखन) की सेवा में आ उपस्थित हुए। महाराणा ने उनके पुत्र को उसी समय बागोर की जागीर दे कर अपना मातहत बनाया। बाद में इस मोहिल मलयसिंह को महाराणा ने मांडलगढ़ की सुरक्षा पर तैनात किया।

हल्लू सन बारहम लघु सु घोपाल काल लहि।
अच्छोटन रस अटत पत्त मंडन गढ पासहि।
मलयसिंह मोहिल सु स्वल्प परिकर हड्डुहिं सुनि।
अग्ग बैर सुधि आनि च्यारिसत सबस मुख्य चुनि।
क्रम तजि स्वबेस परिचायक रु भिल्ल निभ सु दुर्गम भिर्यो।
लघुभ्रात यहहु घोपाल लरि खट घटिका धारन खिर्यो॥१८॥

हाड़ा राजा हल्लू का बारहवाँ छोटा भाई घोपाल एक बार अपने कालवश शिकार खेलते हुए मांडलगढ़ के पास के क्षेत्र में जा निकला। मलयसिंह मोहिल ने जब यह सुना कि अभी हाड़ा घोपाल के साथ उसके सैनिक सेवक कम संख्या में हैं और यह भी कि वह हमारे वन क्षेत्र में है तो उसने अपने पूर्वजों का वैर लेने की ठानी। उसने चार सौ भीलों को सज्जित कर अपने साथ लिया और अपना भी वेष बदल कर भीलों जैसा कर लिया फिर वह जा कर वन में हाड़ा घोपाल से भिड़ा। राजा हल्लू का यह छोटा भाई छह घड़ी तक बराबर शत्रुओं से मुकाबला करता रहा पर अन्तत: उनके हाथों मारा गया।

दोहा

हन्यों किरातन किरि हनत, पर सीमा घोपाल।
बत्त मुधा यह किय बिदित, सुनि हल्लू नटसाल॥१९॥
कोपत नृप भिल्लन कहिय, जाइ पिहित करजोरि।
मारक सठ मोहिल मलय, हम सिर धरत निहोरि॥२०॥
अन्न संग घुन घरट इम, जिन हम पीसे जांहिं।
भंजहु तिहिं बग्घोर भिरि, मरैं न मंडन मांहिं॥२१॥

पराई सीमा में सूअर को मारते हुए घोपाल को भीलों ने मार डाला इस तरह की झूठी बात प्रचारित की गई क्योंकि सभी को राजा हल्लू जैसे नटसाल (नहीं निकले ऐसा कांटा) से डर लगता था। कुपित हो कर जब राजा हल्लू ने भीलों को धमकाया तो उन्होंने हाथ जोड़ कर गुप्त रहस्य प्रकट कर दिया कि असली मारने वाला तो वह मूर्ख मोहिल मलयसिंह है। हम पर तो जबरन यह तोहमत मढ़ी गई है। धान के साथ जिस तरह घुन भी पीसा

जाता है उसी तरह हम भी पीसे जाएँगे। आप अब यदि उसे मारना चाहते हैं तो इसके लिए बाघोर नगर का स्थान उपयुक्त रहेगा क्योंकि वह मांडलगढ़ में बहुत सुरक्षित है।

षट्पात्

भिल्लन प्रति नृप भनिय आत मंतु न तुम ओरहु।
तो बग्गोरहिं ताहि देखि हम ढिग द्रुत दोरहु।
स्वमरन भिल्लन समुझि मलय मग्गहि दिखाइ दिय।
संभर झपटि सिचान कुणप मोहिल कपोत किय।
अजमेर नृपति सजि गौड़ इत लुट्टन पन मारोट लिय।
ता कंहं बचाय हरराज सुत कलि इकबीसम बिजय किय॥२२॥

राजा हल्लू ने तब भीलों से कहा कि मैं समझ गया कि यह अपराध तुम लोगों ने नहीं किया है पर यदि तुम सचमुच चाहते हो कि इसका इल्जाम तुम्हारे पर न आए तो इसके लिए तुम्हें मेरा एक काम करना पड़ेगा। वह यह कि जब भी मोहिल मलयसिंह बाघोर आए उसकी खबर तुम दौड़ कर शीघ्र ही मुझ तक पहुँचाओगे। भीलों ने अपने मरने के डर को समझ कर एक दिन मलयसिंह को रास्ते में जाते हुए दिखा दिया। चहुवान (हाड़ा) हल्लू उस पर बाज पक्षी की तरह झपट पड़ा और उस मोहिल को मरा हुआ कबूतर बना दिया। इसी समय अजमेर का गौड़ राजा सज्जित हो कर मारोठ को हड़पने के लिए जा रहा था। राजा हल्लू ने मारोठ पुर की रक्षा के लिए उनके पक्ष में हो कर युद्ध लड़ा और विजय पाई। यह राजा हल्लू का इक्कीसवाँ युद्ध था।

दोहा

प्रबल जदपि अजमेरपति, लैन चही लघु लैहि।
सो मारोट न धसि सक्यो, हल्लू बिजय यहैहि॥२३॥

यद्यपि अजमेर का अधीस गौड़ बहुत प्रबल था उसने मारोठ को शीघ्र ही लेना चाहा पर वह मारोठ में प्रवेश भी नहीं कर सका। राजा हल्लू ने उसको रोका ही नहीं बल्कि उसे परास्त कर भगा दिया और विजय पाई।

हडुन को कुल बारहठ, हुव पहिलें हरसूर।
स्यामदास हुव तास सुत, पाटव गुन रन पूर॥२४॥

समरसिंह बुंदिय सुपहु, सो आदर कवि स्याम।
पुज्जि चरन किय भेंट पुनि, गिनि सासन खट ग्राम ॥२५॥

पुरी बरोदा परगनां, काछोला जसकाम।
दोडुंदा हरिनां बिदित, रोसुंदा अभिराम ॥२६॥

चंपखेट नामक रुचिर, अरु गिंडोली अप्पि।
अप्प चढायउ स्याम इभ, थिरि स्वअंस पय थप्पि ॥२७॥

हाड़ा कुल का बारहठ (चारण) पूर्व में हरसूर सामोर था। इस हरसूर के श्यामदास नामक पुत्र हुआ जो गुणों में पूरा था (बूंदी राज्य की स्थापना में किए गए हरसूर सामोर के सहयोग के उपलक्ष्य में) अर्थात् गुणवान और युद्ध में पूरा अर्थात् वीर था। बूँदी के राजा समरसिंह ने इसी श्यामदास को बहुत आदर दिया। इस कवि के पाँवों की पूजा कर राजा ने उसे छह गाँवों की जागीर प्रदान की। बरोदापुर (बड़ोद) के परगने का काछोला गाँव सांसण में अपनी कीर्ति की वृद्धि के लिए दिया। दूसरा गाँव दोडुंदा, तीसरा हरिनां (हरणां, जो ग्रंथकर्ता सूर्यमल का अपना गाँव था) चौथा सुन्दर गाँव रोसुंदा, पाँचवा चंपाखेड़ा और छठा गिंडोली ये सभी राजा ने सांसण स्वरूप प्रदान किये। यही नहीं अपने बारहठ को आदर देने की दृष्टि से स्वयं के कंधे पर कवि का पाँव रखवा कर उसे हाथी पर सवार करवाया।

षट्पात्

स्याम तनय सामोर सुकवि लोहठ अभिधा सह।
हल्लू जय चउदसम बिरुद बरनिय महंतमह।
सु निज काव्य सुनि सत्य अट्ठ निबसथ नृप अप्पिय।
अयुत दम्म आभरन सगय हय सिचय समप्पिय।
पुनि कहिय अप्प लोहठ निपुन करहु इक्क उपकार कवि।
चिर तें चहंत हम रन मरन छतहु तदपि लगि दै न छवि ॥२८॥

इस श्यामदास सामोर का पुत्र लोहठ नामक सुकवि था। उसने राजा हल्लू के चौदहवें युद्ध को फतह करने के अवसर पर बड़े उत्साह से राजा के विरुद का बखान किया। इस अवसर पर रचे गये लोहठ सामोर के सत्य काव्य को सुन कर आठ गाँवों की जागीर राजा ने पुरस्कार में दी। इन गाँवों की जागीर के अतिरिक्त राजा ने दस हजार रुपये, आभूषण, हाथी, घोड़ा और

वस्त्र आदि प्रदान कर राजा ने लोहठ सामोर से कहा कि तुम इतने योग्य और चतुर व्यक्ति हो! सुकवि! तुम क्या मेरा एक उपकार कर सकोगे? हम बहुत समय से रणभूमि में मरने की इच्छा पाले हुए हैं पर हमारी देह को अब तक एक घाव भी नहीं लगा।

दोहा

यातें तुम चहि हित अटहु, धरनि पग्घ मम धारि।
रुट्ठावहु करि नृपन रिपु, अनत याहि उच्चारि॥२९॥
कवि यहसुनि हल्लू कथित, लोहठ बिचरन लग्गि।
बिक्खत हुव भूपन बहुन, असह लगावन अग्गि॥३०॥

इसलिए मैंने एक तरकीब सोची है कि तुम मेरी यह पगड़ी लो। इसे धारण करो और पृथ्वी पर सभी ठौर जाओ। कहीं पर किसी राजा के सामने अपना सिर मत झुकाना। इस पर कोई पूछे तो कहना मेरे सिर पर अनम्र पगड़ी है। फिर जो कोई राजा इसकी अवहेलना करे तो उसे युद्ध करने की चुनौती दे आना। अपने स्वामी से यह बात सुन कर लोहठ सामोर उस पगड़ी को पहन कर सभी ओर विचरण करने लगा। इसे देख कर कई राजा जल भुन कर राख हो गए। कई राजाओं के अन्तस में अग्नि प्रज्वलित होती पर किसी ने पगड़ी की अवहेलना कर उसे झुकाने की हिम्मत नहीं की।

षट्पात्

मंडोउर जिहिं समय राज्य धारत अधर्म रत।
हम्मीर सु प्रतिहार महा महिपन निलज्ज मत।
हुव बुंदिय हम्मीर सु पहु ताको यह सालक।
बिदित कुमर बरसिंह को सु मातुल मुख कालक।
इक बिप्र द्विरागम करि उहां लै जावत तिय अति ललित।
लंपट बिनक्क प्रतिहार लखि जुहु छिन्निय दर्पक ज्वलित॥३१॥

मंडोवर पर उस समय अधर्म की राह पर चलने वाला राजा राज करता था। वह प्रतिहार राजा हम्मीर बड़ा निर्लज्ज और घमण्डी था। बूँदी के राजा हम्मीर का वह साला था और कुमार वरसिंह का वह काले मुँह वाला प्रतिहार मामा लगता था। एक बार उसके राज्य का निवासी एक ब्रा॰॰॰

अपना गौना करवा कर अपनी सुन्दर विवाहिता को ले कर अपने घर जा रहा था कि इस नकटे लंपट प्रतिहार की नजर उस ब्राह्मण की जोरू पर पड़ी। कामदेव के उत्ताप में जलते प्रतिहार राजा ने उस ब्राह्मण से वह स्त्री बलात् छीन ली।

दिन दस लंघित द्विजहि नदिय पामर जब नारिय।
आय बिफल अजमेर पुनि सु चित्तोर पुकारिय।
ईडर दसपुर इम अवंति नरउर पट्टनि अरु।
दिल्लिय लग करि दोर मलिन किन्नें मरुप रु मरु।
भेरि न निनाद डिंडिम भनित तस पुकार न सुनिय तबहि।
पुनि आइ कुपित मंडपपुरसु द्विज मृत हुव इम देह दहि॥३२॥

दस दिन गुजर जाने के बाद भी जब उस नीच राजा ने ब्राह्मण को उसकी ब्याहता नहीं लौटाई तब उस व्याकुल ब्राह्मण ने जाकर अजमेर के राजा के सामने गुहार लगाई पर सफल न हुआ। उस असफल ब्राह्मण ने तब जा कर चित्तौड़गढ़ में सहायता की पुकार लगाई पर व्यर्थ। इस तरह उसने क्रमशः ईडर, मन्दसौर, उज्जैन, नरवर, पाटण के राजाओं से यहाँ तक कि दिल्ली जा कर भी गुहार की और इससे पूरी दुनियाँ में मारवाड़ देश और मरुपति के यश को मलिन किया। नक्कारखाने में तूती की आवाज की तरह उस बेचारे ब्राह्मण की आवाज कहीं नहीं सुनी गई तब वह उदास सा वापस मंडोवर आया और कुपित हो कर राजा के कृत्य के विरोध में अपनी देह को अग्नि के समर्पित कर जल मरा।

दोहा

कुप्ति अनेक अकज्ज करि, मद्यपानजुत मूढ।
हुव जननी गोजुग सहित, इमसु अग्गि आरूढ॥३३॥
उन दिवसन लोहठ अटत, पुर मंडोउर पत्त।
अल्प अहन के अंतरहि, तिहिं बुल्ल्यो कवि तत्त॥३४॥

इस तरह के कई अकर्म उस मूढ़ राजा ने मद्यपान के नशे में संपन्न किये। इन कुकर्मों के कारण ही वह ब्राह्मण अपनी माँ और दो गायों के साथ आग में जल मरा। उन्हीं दिनों में कवि लोहठ सामोर घूमता फिरता मंडोवर

नगर में जा पहुँचा। थोड़े ही दिनों के बाद राजा द्वारा कवि को वहाँ उसके दरबार में तत्काल हाजिर होने को कहा गया अर्थात् बुलाया गया।

षट्पात्

कवि करि हल्लुव कथित कहिय दिय पट धावक कंहं।
पटन मेंहु इक पग्घ प्रनत होवत सु न मो पंहं।
पग्घैं इतर परंतु बिदित हल्लु सिर की बहु।
सुर द्विज कवि बिनु सबन प्रनति न करैं जोपै पहु।
धुव कल्हि पग्घ अैहें सु धरि अैहों अरु मिलिहें उभय।
जानतो त्वरा तो मैं जबहु देतो पग्घ न बिदित दय॥३५॥

बुलावे के प्रत्युत्तर में कवि लोहठ सामोर ने कहलवाया (जैसा राजा हल्लू ने करने को कहा था अर्थात् राजाओं को उकसाने का उसी के अनुसार कर्म करते हुए) कि मेरे कुछ वस्त्र थे उन्हें मैंने धोबी को धुलने के लिए दे डाले। वस्त्रों में एक पगड़ी भी थी। उसे पहनने के बाद मुझसे किसी के समक्ष झुका नहीं जाता। पगड़ियाँ तो और भी बहुत है जगत में पर मेरे सिर पर राजा हल्लू की पहनी हुई पगड़ी है जो देवता, ब्राह्मण और चारणों के अतिरिक्त कहीं नहीं झुकती किसी राजा के सामने भी नहीं। कल मैं निश्चय ही दरबार में हाजिर हो जाऊँगा क्योंकि कल तक मेरे वस्त्र और पगड़ी धुल कर आ जाएंगे। हाँ, रहा सवाल तत्काल आने का तो इस बाबत निवेदन है कि यदि मैं पहले ऐसी त्वरा भरा कार्य जान जाता तो अपने वस्त्र धोबी को धुलने नहीं देता और पगड़ी भी नहीं देता।

दोहा

तुम किन्नी द्रुत ताहि तो, मंतु छमहु महिपाल।
लै वह पग्घ रु कल्हि लहु, अैहों धरि उत्ताल॥३६॥

जाचक मैं भूपति जनन, सो आऊं न समाज।
यामैं हल्लुव पग्घ अरि, अपुट दिखावत आज॥३७॥

हल्लू सब पट देत हम, नदई पग्ग निहारि।
अक्खिय क्यों न मिली यहै, पटगन मुख्य पुकारि॥३८॥

हल्लू अक्खिय ब्रत हमहिं, आहव मरन उमाहि।
पग्घ न मम होवत प्रनत, यह साहस दृढ आहि॥३९॥

बुल्ल्यो मैं पग्घै बहुत, न बहुत तोहु नरेस।
नमिहों थारत ओर निज, अनत पग्ग करि एस॥४०॥

तबहि रीझि हरराज सुत, बसन सकल बहु बेर।
पग्घन जुत दिन्नें प्रथित, जे होत न कहु जेर॥४१॥

हे राजा! आपने मुझे शीघ्र बुलवाया पर मेरा अपराध क्षमा हो। मैं कल शीघ्र ही उस पगड़ी को पहन कर उतावला सा हाजिर हो जाऊँगा। मैं स्वयं राजाओं का याचक हूँ सो क्यों नहीं किसी दरबार में जाऊं अर्थात् अवश्य आऊँ पर करूँ क्या राजा हल्लू की दी हुई पगड़ी ने दुश्मनी निभाई। मैं बिना पगड़ी आऊँ तो अपना शुमार मूर्खों में करवा बैठूँगा। मुझे राजा हल्लू ने एक अवसर पर सारे वस्त्राभूषण प्रदान किये पर उन वस्त्रों में पगड़ी मुझे दिखाई नहीं दी। इस पर मैंने निवेदन किया कि सिरोपाव में तो पगड़ी मुख्य वस्त्र होती है वह नहीं है। आपने पगड़ी क्यों नहीं प्रदान की? इस पर राजा ने प्रत्युत्तर दिया कि मेरा यह व्रत है कि रणभूमि में युद्ध करते मारा जाऊँ और इसी कारण से यह मेरा हठ है कि मेरी पगड़ी किसी के सामने नहीं झुकती। इस पर मैंने अर्ज किया कि हे राजा! जगत में पगड़ियाँ बहुत है और राजा भी कई सारे हैं। यदि मैं किसी राजा के आगे झुकूँगा तो अपनी पगड़ी पहन कर ऐसा करूँगा पर आप निश्चित रहे आप द्वारा दी गई अनम्र पगड़ी पहन कर किसी के सामने नहीं झुकूँगा। इस पर रीझ कर हरराज के पुत्र राजा हल्लू ने सारे वस्त्र अर्थात् पूरा सिरोपाव प्रदान किया। उन्होंने अपनी प्रसिद्ध पाँच पेचवाली पगड़ी भी प्रदान की जो किसी के सामने नहीं झुकती।

षट्पात्

कर्ण करि सु कवि कथित कुहक हम्मीर कहाई।
हल्लू पग्घहि धरहु आहु रक्खहिं अधिकाई।
प्रथम सु कवि तिम पूज्य पग्घ हल्लुव धृत धरि पुनि।
न नमहु मिलहु निसंक सुजस हट्टुन रक्ख्यो सुनि।
जंपत यहैसु परिकर जनन बरज्यो कहि हित हेरि बलि।
नन करहु पग्घ अपमान नृप कवि तो बुल्लहु टारि कलि॥४२॥

सुकवि लोहठ सामोर की कहलाई हुई सारी बातें राजा ने सुनी फिर

उस जालसाज प्रतिहार राजा हम्मीर ने कहलवाया कि हे कवि! आप कल उस हाड़ा हल्लू द्वारा प्रदत पगड़ी पहन कर ही आएँ और अपनी अधिकाई रखें। कवि ने सर्वप्रथम राजा हल्लू द्वारा पहनी हुई उस पगड़ी की पूजा की और मन ही मन निश्चय कर बोला कि राजा से निर्भय हो कर बिना झुके ही मिलूँगा और हाड़ाओं के सुयश की रक्षा करूँगा। उसका ऐसा कहा सुन कर उसके आत्मीय लोगों ने उसे ऐसा नहीं करने को कहा इससे आपका अहित हो सकता है। इस पर कवि लोहठ ने कहा कि यदि राजा पगड़ी का अपमान नहीं करेगा तो मैं युद्ध होना भी बचा लूँगा।

दोहा

तुम करिहो अपमान तो, सो हल्लू दृढ़संध।
जीरनपति से भंजि जिहिं, गंजे गढ बलबंध॥४३॥

जानत सत्रुहु निबल जो, भिरन होत तस भीर।
बैर पराये लेत बढि, धरि लै सु न सुनिधीर॥४४॥

भगिनी जेठी भावती, बुंदीनृपति बिबाहि।
भाम हम्म तुमरे भये, ते भजिहैं रिपुताहि॥४५॥

तुमसों द्रुत सालत्व तजि, हल्लू सहचर व्हैहि।
इक्कलही हल्लू यहै, लरि जित्ति रु भुव लैहि॥४६॥

दूसरे दिन राजसभा में जाकर सामोर लोहठ ने कहा हे राजा! यदि तुम उसकी पगड़ी का अपमान करोगे तो यह भी सोच लो वह वीर हाड़ा राजा हल्लू दृढ़ प्रतिज्ञ है। अपनी बात पर दृढ़ रहने वाला है उसने जीरन के अधीस जैसे को युद्ध में हराया और यही नहीं उसने कई बलवान राजाओं के गढ़ों को ढहाया है। वह दो पक्षों में से जो निर्बल पक्ष हो उसका सहायक हो कर युद्ध लड़ता है। वह तो पराये के वैर भी आगे बढ़ कर लेता है। वह सुन कर धीरज नहीं धारण करता तुरन्त ही अधैर्यवान हो जाता है। आपने अपनी बड़ी बहन भावती कुँवरी को बूँदीपति से ब्याह रखा है इस रिश्ते से तुम्हारे बहनोई हाड़ा राजा हम्मीर भी शत्रुता धारण करेंगे। यह अच्छी तरह सोच लो। वे तुरन्त ही तुम्हारे सालत्व (साले वाले संबंध) का त्याग कर राजा हल्लू के सहचर (साथी) होंगे पर उन तक जाने की नौबत ही नहीं आएगी। वह राजा हल्लू

अकेला ही पूर्ण रूपेण सक्षम है वह युद्ध जीत कर तुम्हारी भूमि को भी छीन लेगा।

तिनहिं कहिय हम्मीर तब, छिति मम हल्लू छुत्त।
जिकि व्है सु अप्पों द्विजन, व्हैन तदपि मम हुत्त॥४७॥

मो सों संकिय रानमुख, बिप्रपुकार पचाइ।
बंबावदपति बप्पुरो, आजि रचहिं किम आइ॥४८॥

कवि की ऐसी उत्तेजक बातें सुन कर प्रतिहार राजा हम्मीर ने कहा कि मेरी जितनी भी जमीन को वह हल्लू छुएगा अथवा उसकी छाया पड़ने से मेरी जितनी जमीन दूषित होगी उसे मैं यदि युद्ध में मारा नहीं जाऊँगा तो ब्राह्मणों को दान कर दूँगा। मुझसे सारे राजा लोग डरते हैं। मेरे भय से ही तो आर्यावर्त में किसी राजा ने उस ब्राह्मण की आर्त्तपुकार को नहीं सुना। उस बेचारे बंबावद के राजा की क्या औकात है कि वह आ कर मुझसे युद्ध करे।

षट्पात्

सुत को यह हठ सुनत नृपसु जननी हु निवारिय।
तदपि महाजड़ तत्थ हड्डु चारन हक्कारिय।
लिय जताइ पहिलेंहि मिलहु अनतहि हम मन्त्रिय।
मिलि लोहठ सन तिमहि कपट गौरव आदर किय।
बैठि रु तदीय जस काव्य बदि बिरदायउ प्रतिहार पहु।
सह कपट रीझि हम्मीर सठ ललित दिन्न सिरुपाव लहु॥४९॥

अपने बेटे प्रतिहार राजा हम्मीर का ऐसा हठ सुन कर उसकी माँ ने कहा कि मेरा बेटा यद्यपि जड़मति है फिर भी इसने हाड़ाओं के चारण को अपनी राजसभा में बुलाया। बुलाया तो उसे इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि अगला कह रहा है कि मैं झुक कर नमस्कार नहीं कर सकूँगा पर इसने लोहठ का कपट भरा आदर किया। लोहठ ने सभा में अपना स्थान ग्रहण करने के बाद प्रतिहार राजा के विरुद को बखानने वाला काव्य पढ़ा। इस पर कृत्रिम रीझ का प्रदर्शन करते हुए उसने शीघ्र ही एक नया सुन्दर सिरोपाव मँगवाया।

हत्थ जोरि प्रतिहार कहिय सबकै समान कवि।
धरहु ममहु परिधान जदपि सुलभ रु भजैं न छवि।

लोहठ सु सुनि सलज्ज कुड्य अंतर धारन किय।
पट उतारि पहिले रु दासनिजकर असेस दिय।
बैठो सु आइ परिखद तबहि सठ पिक्खन मिस दास सन।
मंगाइ पग्ग मंडल सिर सु कहिय खिज्झि बंधन कुजन ॥५०॥

सभा में उपस्थित सभी सभासदों के सामने प्रतिहार राजा ने खड़े हो कर हाथ जोड़ते हुए कहा कि हे कवि! ये मेरे द्वारा उपहार में दिये जा रहे वस्त्र ऐसे तो नहीं कि आपके शरीर पर फबें पर जैसे हैं हाजिर हैं। आप इन्हें पहन कर मेरा मान बढ़ाएँ। लोहठ कवि ने सुनते ही दीवार की ओट में जा कर राजा द्वारा प्रदत्त नये कपड़े पहने और अपने पुराने वाले वस्त्र खोल कर सेवक के हाथ में पकड़ाए। सभा में कवि के कपड़े देखने का बहाना बना कर राजा ने उस सेवक से कहा ये वस्त्र जरा इधर लाओ। सेवक जब ले कर गया तो उस मूर्ख ने झट से वह पगड़ी उठा कर कहा इसे कुत्ते के सिर पर बाँध दो।

दोहा

कोऊ तंहं सु सक्यो न करि, जम सम हड्डुन जानि।
कवि पिक्खत तब निज करन, किय सठ सुहि तजि कानि ॥५१॥
बुल्लि सभा निज बैन करि, स्वान सु गहि सय संधि।
अतिमद हल्लू पग्घ वह, बालिस तस दिय बंधि ॥५२॥

कोई भी राजा यह जुर्रत न कर सका था क्योंकि सभी को यमराज रूपी हाड़ा का भय था पर इस जड़मति ने सारी मर्यादा छोड़ कर वह कार्य अपने हाथों कर दिखाया। वह भी कवि के देखते हुए किया। सारी राजसभा देख सुन रही थी उस मूर्ख राजा ने अपने हाथ से कुत्ते को पकड़ा और दर्प से भरे हुए प्रतिहार ने राजा हल्लू की वह पगड़ी कुत्ते के सिर पर बाँध दी।

षट्पात्

लोहठ कवि यह लखत कड्ढि कट्टार निसित कर।
लग्गिय मरन अलुद्ध लियसु पकराइ खिज्जि खर।
कहिय कैद जो करहिं ततो यह बत्त दृष्ट तव।
कवन हड्डुसन कहहिं जाउ रुट्ठाइ बडेजव।

इम तजत तोहि जावहु अरहि कहि इम दियउ बिडारि कवि।
गृह तब यहैहु लंघित गयउ छलि ठग छिन्नें बनिक छवि।।५३।।

सुकवि लोहठ सामोर ने यह देखते ही कमर में बँधी अपनी तीखी कटार निकाली और वह निर्लोभी कवि स्वयं मरने लगा तभी उस गधे राजा ने उसे पकड़वा दिया। पकड़ने पर कहा कि, नहीं? इसे कैद करने पर जो इसने अभी अपनी आँखों से देखा है वह आँखों देखा हाल उन हाड़ाओं से कौन जा कर कहेगा इसके अलावा उन्हें शीघ्र ही कौन रुठवाएगा? इसलिए इसे छोड़ दो जिससे यह तुरन्त वहाँ जा कर इस वृत्तांत को कह सके। राजा के इतना कहते ही लोहठ सामोर को छोड़ दिया गया। वह वहाँ से सीधे अपने घर के लिए भूखा, प्यासा और उदास चल पड़ा। उसका हाल ऐसा था जैसे ठगों द्वारा ठगे जाने पर बनिये का हाल होता है।

दोहा

मंडपपुर बहुरिहु मरत, निजन दयो सु निवारि।
मैं जानत मरत न मुरत, नियत सती जिम नारि।।५४।।

अनसन लोहठ आत इम, सुनि अजमेर अधीस।
मिलि सम्मुह लावन लग्यो, सो न मुर्‌यो हठसीस।।५५।।

बेतन बस अनुचर बहुत, हे तिन मग्ग बिहाइ।
बंबावद छन्नें प्रबिसि, अप्प दुर्‌यो गृह आइ।।५६।।

आवन पुब्बहि नृप यहै, बिदित लई सुनि बत्त।
पै आयउ प्रच्छन्न कवि, जानिसक्यो सु न जत्त।।५७।।

लोहठ साभोर वहीं मंडोवर में ही अपने प्राण त्यागना चाहता था पर उसके हितैषियों ने उसे ऐसा करने से रोका। मैं (ग्रंथकर्ता सूर्यमल) जानता हूँ मेरी समझ में मरने वाला आदमी अपने मरने के निश्चय से मुँह नहीं मोड़ता जिस तरह सती होती स्त्री रोकने पर नहीं रुकती है। लोहठ सामोर के इस प्रकार भूखे और प्यासे वापस लौटने की खबर जब अजमेर के अधीस ने सुनी तो वह राजा कवि के सामने चल कर गया और उसके मिलने पर बहुत मनुहार की कि यहीं ठहर जाओ पर वह हठी सुकवि नहीं रुका। उसने अपने वेतनभोगी सेवकों को भी रास्ते में छोड़ दिया और आप स्वयं चुपके से

बंबावद पहुँच कर अपने घर में जा दुबका। इस लोहठ कवि के बंबावद लौटने से पूर्व ही राजा हल्लू ने इस घटना का वृत्तान्त सुन लिया था पर राजा को इस बात की खबर नहीं हुई कि कवि स्वयं प्रछन्न ढंग से वापस बंबावद लौट आया है।

इतिश्री वंश भास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे पंचम राशौ वीतिहोत्र चंडासि बीग्यवर्णनबीजहड्डाधिराडस्थिपाल वंश्याऽनु वंश्यविहित-व्याख्यानावसरव्याहार्यबुंदीशहम्मीर चरित्रसमानसमयकबम्बावदेशहार-राजिहल्लू चरित्रे जितचतुर्दश महारणसैन्यत्रय वीक्षितविक्षतवपुष्कबुद्ध-वार्द्धकागमप्रतिज्ञातरणमरणनिजजनकश्यालकगुग्गैराख्यनगरनरेन्द्रस्व-ल्पबलतोमरगिरिधरसहायीभूतहड्डाधिराजहल्लू षोडश समरनलपुर नरेन्द्रकूर्मपराजयन सप्तदश सङ्गरमहिषदुर्गरक्षकसानुजरोपाल पराजितत-दुर्गारुरुक्षुनिम्बड़ीनगरनृपश्यालकचाचि काऽमर सजामिप संहरण तदनन्तराऽष्टादश रणप्रत्याक्रान्तजित्रोदपुरदशपुरनरेन्द्रयोत्स्यमानहल्लू जया जया प्रापण तथैकोनविंशति तमसमाघातस्वसपत्नलोचनपुर-नरेशदभिकहरिसिंहसहायनगरनामनगरनृपदाधिमपद्मसेनपराजयन तत्कार-णबुन्दीन्द्रहम्मीरो पालब्धहल्लू प्रेषितप्रत्युत्तरस्वप्रतिज्ञाप्रख्यापन विंशतितम युद्धस्वानुजद्योपाल संहारकव्याघ्रपुरमण्डनदुर्गरक्षकराणासामन्तमोहि लमलयसिंहनिपातन तथैकविंशतितम संख्याजमेरपुरपा र्थिवगौड़प्रति-प्रस्थानप्रगल्भहल्लू मारोटपुररक्षण।

श्री वंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण की पाँचवीं राशि में अग्निवंशी चहुवान के कारण हड्डाधिराज अस्थिपाल के वंश और अनुवंश की कथा बनाने के समय के वचनों में बूँदीपति हम्मीर के चरित्र के समान समय वाले बंबावदा के पति हरराज के पुत्र हल्लू के चरित्र में चौदहवें बड़े युद्ध में तीन सेनाओं को जीत कर अपने शरीर को घाव रहित देख और बुढापे का आगम जान कर युद्ध में मरने के लिए अपने पिता के साले, थोड़े बलवाले, गुग्गैर नामक नगर के राजा तोमर गिरधर का सहायक होकर हड्डाधिराज हल्लू का सौलहवें युद्ध में नरउर के कछवाहे राजा की पराजय करना, सत्रहवें युद्ध में भैंसरोड़ गढ़ के रक्षक अपने छोटे भाई रोपाल से पराजित उस दुर्ग पर चढ़ने की इच्छा वाले नीम्बड़ी नगर के राजा के साला चाचिक अमरसिंह को बहनोई सहित मारना, फिर अठारहवें युद्ध में घेरे हुए जित्रोदपुर और मन्दसोर

पुर के राजाओं से युद्ध करने में हल्लू की जय अजय का प्राप्त न होना, तथा उन्नीसवें युद्ध में अपने शत्रु नैणवा पुर के राजा दहिया हरिसिंह की सहाय होकर नगर नामक नगर के राजा दाहिमा पद्मसेन की पराजय करना, इस कारण से बूँदी के राजा हम्मीर के उपालम्भ देने पर हल्लू का उत्तर भेजने में अपनी प्रतिज्ञा को प्रसिद्ध करना, बीसवें युद्ध में अपने छोटे भाई द्योपाल को मारने वाले महाराणा का उमराव बागोरपुर के मोहिल मलयसिंह जो मांडलगढ़ का किलेदार था को मारना, तथा इक्कीसवें युद्ध में अजमेर पुर के राजा गौड़ के प्रस्थान में प्रगल्भ हल्लू का मारोठ पुर की रक्षा करना।

पूर्व कालबुंदीनृपसमरसिंह पौराणिकहरसूर सूनुश्यामदासार्थ-ससिन्धुर गिण्डोली प्रभृतिग्रामषष्ठ वितरण विख्यापन वर्णितस्वचतुर्दश विजयविरुदश्यामदास सूनु लोहठा र्थमुद्रा भूषण गज हय वस्त्र सहितसगौरव ग्रामाऽष्टक समर्पण तदनंतरमृथमुमूर्षहल्लू राजक रिपूकरणनिमित्तशिक्षितस्वोष्णीषानमकविलोहठ प्रतिराजधानीप्रेषण मण्डपपुरपृथ्वीशप्रतिहारहम्मीरसमात्तस्वनववधूक-प्रतिराज्य पूत्कृतिमोघताविमनस्कपुनरागतपीतापेय खादिताखाद्य स्वसवित्रि सुरभियुग सहितविप्रविशेषवैश्वानरविशन स्वप्रसू परिकर प्रतिषेधप्रती-पमण्डपपुरराजस्वपुरसमागतकौ हक्यक्षांतभल्लू ष्णीषानमनभाव-प्रासभ्यप्रबोधितकविलोहठ स्वसमज्जयासमाकारण श्रुततत्प्रणीत-स्वकाव्यकैतवकलितप्रासन्यपरिथापितस्वदत्तसर्वपटहम्मीरवीक्षणव्याज-समानायिततदुत्तारितहल्लू दत्तपूर्वोष्णीषश्वानशिरोवेष्टन बलात्कारवारि-तमुमूर्षणनगरीनिस्सारितागच्छन्नुपेक्षिताऽजमेरनरेन्द्रनाहरलोहठप्रच्छन्न-बम्बावदविशनं दशमो मयूखः ॥१०॥ आदितस्सप्तपञ्चाशदुत्तरैकशत-तमः ॥१५७॥

पहले समय में बूँदी के राजा समरसिंह का चारण हरसूर के पुत्र श्यामदास सामोर के अर्थ हाथी सहित गींडोली आदि छह ग्राम देने की प्रसिद्धि करना, अपनी चौदहवीं विजय का यश वर्णन करने पर श्यामदास के पुत्र लोहठ के अर्थ रुपये, आभूषण, हाथी, घोड़े और वस्त्र सहित बड़प्पन के साथ आठ गाँव देना, बाद में युद्ध में मरने की इच्छा वाले हल्लू का राजाओं को शत्रु बनाने के निमित्त अपनी पगड़ी को अनमनीय होने की शिक्षा करके कवि लोहठ को राजधानियों में भेजना, मंडोउर पुर के राजा प्रतिहार हम्मीर

के अपनी नवीन स्त्री को छीन लेने से प्रत्येक राजाओं के आगे की हुई अपनी पुकार निष्फल होने से उदास होकर पीछा आकर नहीं पीने की वस्तु को पीकर और नहीं खाने की वस्तु को खाकर अपनी माता और दो गउओं सहित किसी ब्राह्मण का अग्नि में प्रवेश करना, अपनी माता और परगह के लोगों के मना करने से विरुद्ध मंडोउर के राजा का अपने नगर में आये हुए कपट रहित, हल्लू की पगड़ी को नहीं झुकाने का हठ प्रबोध कराने वाले कवि लोहठ को अपनी सभा में बुलाना, उस के बनाये हुए अपने काव्य को सुनकर छली हम्मीरसिंह का प्रसन्नता से दिये हुए अपने सरोपाव के वस्त्रों को पहनाकर उसकी उतारी हुई हल्लू की पहले दी हुई पगड़ी को देखने के बहाने से मंगाकर कुत्ते के मस्तक पर बांधना, मरने की इच्छा वाले लोहठ को बूलपूर्वक रोककर नगरी से निकलाये हुए लोहठ का अजमेर के राजा नाहर को छोड़कर चुपचाप बंबावदा में प्रवेश करने का दसवाँ मयूख समाप्त हुआ। और आदि से एक सौ सत्तावन मयूख हुए।

प्रायो ब्रजदेशीय प्राकत मिश्रित भाषा

दोहा

सुकवि सु जब आयो सुन्यों, अनसन जल आधार।
तबहि जाइ हल्लू तंहं रु, दिय बिस्वास उदार॥१॥
कहिय तज्यो क्यों अन्न कवि, कथित कियउ सब काम।
तुम पठये दृढमंत्रित तब, यहहि करन अभिराम॥२॥
अनत पग्घ सुनि कवि कहिय, लेतो लरन बुलाइ।
तुमहिं निंदतो बात बहु, होतो सागस हाइ॥३॥
पै नवपट पहिरायकैं, इक्खन मिस करि अग्घ।
पामर किय मंडल क पर, प्रभुसिर की वह पग्घ॥४॥

सुकवि लोहठ सामोर मंडोवर से लौट आया है और वह निराहार अनशन पर है। यह बात जब राजा हल्लू को विदित हुई तो वह कवि के घर गया और उसे ढाढ़स बँधाते हुए राजा ने पूछा कि क्या बात है? अन्न खाना क्यों छोड़ रखा है? जबकि तुम मेरे बताये सारे कार्य संपन्न कर आए हो फिर मैंने तुमसे पूरी (पक्की) मंत्रणा करने के बाद ही तुम्हें इस उत्तम कार्य के लिए भेजा था। इस पर कवि ने जवाब दिया कि यदि वह मूर्ख राजा अनम्र

पगड़ी का सुन लेता और मुझे लड़ने बुला लेता या फिर वह आपकी निंदा करता। दोनों बातों के लिए मैं आपका दोषी हो जाता। पर उसने तो मुझे नये वस्त्र पहनने के लिए प्रदान किये और आग्रह पूर्वक देखने के बहाने पगड़ी ले कर मेरे स्वामी के सिर पर बँधने वाली पगड़ी को एक कुत्ते के सिर पर बाँध दी।

नतो अनत सुनि पग्घ निज, कहतो हल्लुव कोन।
जो बल तो आवहु जुरन, हम रिपु सम्मुह होन॥५॥
गो पहिलें चित्तोरगढ़, रानहु तंहं पन रक्खि।
पग्घ नमत जो रजक पंहं, आवहु सुहि धरि अक्खि॥६॥
एह पंच दिन लखि रहिय, मैं तब कहिय महीस।
नमत पग्घ सो अब निकट, सभा उचित रहि सीस॥७॥

मैं तो यह सोच रहा था कि वह जड़मति राजा यह कहेगा कि ऐसी अनम्र पगड़ी पहनने वाला यह हल्लू कौन है ? यदि उसमें ताकत है तो आ कर हमसे लड़े। हम उसका मुकाबला करने में सक्षम है। मैं सबसे पहिले चित्तौड़गढ़ गया। वहाँ जब मैं महाराणा के समक्ष गया तो अपने प्रण का पालन करते हुए मैंने निवेदन किया कि हे महाराणा! झुकने वाली मेरी जो पगड़ी है वह तो धोबी के यहाँ धुलने को गई है। मैं उसी को पहन कर आपके समक्ष राजसभा में आऊँगा। इस प्रकार जब पाँच दिन व्यतीत हो गए तब मैंने महाराणा से अर्ज की कि अब वो झुकने वाली मेरी पगड़ी आ गई है सो मैं शीघ्र ही उसे पहन कर राजदरबार में हाजिर होऊँगा।

युग्मम्

है निदेस आऊं जबहिं, जानि रान हसि जोहु।
बुल्ल्यो अनत जु पग्घ बर, सयग दिखावहु सोहु॥८॥
नमन पग्घ धरि सीस निज, पग्घ यहहु करि पानि।
रान सभा जाइ रु कहिय, इक्खहु यह दिय आनि॥९॥
रान कहिय जड़ कवि सिरहिं, प्रनत करैं सबपग्घ।
जाकी पग्घ करैं न जिहिं, यह अ[illegible]ज्ज हितअग्घ॥१०॥

इस पर महारणा ने हँस कर कहा कि आपको यह निर्देश है मेरा कि

जब आप राजसभा में आओ तब वह श्रेष्ठ अनम्र पगड़ी ले कर जरूर आना। उसे आप अपने हाथ में रखना पर हमें दिखलाना अवश्य। मैंने वैसा ही किया अपनी झुकाई जा सकने वाली पगड़ी को मैंने सिर पर पहना और आप वाली पगड़ी को राजसभा में मैंने हाथ में लेकर आदर सहित दिखाया कि देखें, यह है वह अनम्र पगड़ी जो मुझे मेरे स्वामी ने प्रदान की है। इस पर महाराणा ने कहा कि यों तो कवि के सिर पर रहने वाली पगड़ी सब जगह झुकती है पर किसी की पगड़ी ऐसा नहीं करे यह आश्चर्य की बात है।

सहठ नमावत कवि सिरहिं, मूढ सु मोघ महीस।
पग्यहु को तब अनतपन, व्है जब हल्लू सीस॥११॥

जोरि त्रुटित नृप हम्म जब, कुमर कनी किय दैन।
अनतभाव गो कित उहां, अब जो धारत ऐन॥१२॥

बदि इम दै समुचित बिदा, मैं किय रान समाज।
इम अवंति अजमेर मुख, इक्खे कति अधिराज॥१३॥

जावत पट्टनि मैं जबहिं, पुर मंडोउर पत्त।
अनुचित तंहं प्रतिहार यह, रचिय बिप्र बध रत्त॥१४॥

अक्खिय अब हल्लू अवनि, जो मम छुवहिं जितीक।
सेवित रहिं बिप्रन सहज, सीमां करहिं समीक॥१५॥

महाराणा ने कहा कि यदि कोई मूढ़ हठपूर्वक पकड़ कर कवि का सिर झुका दे तो अनम्रता का हठ निरर्थक हो जाता है। असल में इस पगड़ी की सही अनम्रता तो तब है जब वह हल्लू के सिर पर पहनी हुई हो। पर इतना बताओ कविराज कि जब तुम्हारे बूंदी के हाड़ा राजा हम्मीर ने हमारे सामने हाथ जोड़ कर टूटी हुई बात को सुधारने के लिए अपनी कन्या देने का प्रस्ताव रखा था उस समय पगड़ी का अनम्रपन कहाँ गया था? जो वह अभी अपने घर में धारण करता है। इस प्रकार कह कर महाराणा ने मुझे विदा दी। इसके बाद मैं कई राजाओं के समाज में गया। मैं अपने प्रण सहित उज्जैन गया, अजमेर गया और इस तरह कई राजाओं से भेंट की पर जब में अनहिलपुर पट्टन को जाते हुए रास्ते में मंडोवर पहुँचा तो वहाँ के प्रतिहार राजा जो ब्राह्मण वध के पाप का धारक है ने अनुचित व्यवहार किया। उसने कहा कि अब वह हल्लू मेरी जितनी भूमि को छू कर अपवित्र करेगा मैं

उतनी भूमि को ब्राह्मणों में बाँट दूँगा अर्थात् उतनी पृथ्वी की सीमा का भोग ब्राह्मण करेंगे।

सौराष्ट्री दोहा

कवि कों असन कराइ, हल्लू अक्खिय सह सपथ।
जुद्ध मरहिं कै जाइ, कै मंडोउर निज करहिं॥१६॥

पूरी बात सुन कर राजा हल्लू ने अपने कवि को आग्रह पूर्वक भोजन करवाया अर्थात् उसका अनशन तुड़वाया और यह शपथ ली कि या तो मैं युद्ध में जा कर मर जाऊँगा या फिर मंडोवर को अपने आधिपत्य में कर दिखाऊँगा। दोनों में से एक बात होगी।

षट्पात्

जुत लोहठ यह जंपि आइ हल्लुव निज आलय।
भाखिय मम बय भटन मरन हुव समय मनोमय।
लहिहैं मृत दिवलाभ अमृत रहिहैं मंडोउर।
बंबावद भुव बिलसि धरहु अब पुत्र राज्यधुर।
कहि इम रु चंद्र जेठोकुमर चंच हु जिहिं मागध चवत।
दै ताहि राज्यगद्दिय बिदित मरन किन्न चहुवान मत॥१७॥

लोहठ सामोर से यह कह कर राजा हल्लू अपने घर आया। घर आ कर उसने कहा कि मेरी उम्र वाले योद्धा के लिए यह मरण समय है। सभी कुछ संयोग से मेरा मनवांछित हो रहा है। युद्ध मे मरने पर दिव्य लाभ होगा, स्वर्ग की प्राप्ति होगी और जीतने पर जीवित रह गया तो भोगने को मंडोवर का राज्य मिलेगा। बंबावद के राज्यसिंहासन पर अब अपने पुत्र को आसीन कर दूँगा। इतना कह कर राजा हल्लू ने सचमुच अपने बड़े राजकुमार चन्द्र को जिसका मागधजन (बहीभाट) दूसरा नाम चंच भी बताते हैं को राजगद्दी सौंप दी और स्वयं के लिए मरने की सोच कर तैयारी की।

दोहा

बय जुब्बन सुभटन बरजि, समच्छ बृद्ध सिपाह।
करि इक्कत रक्खन कहिय, चिन्ह मरन रनचाह॥१८॥

अजिरकुंड अक्खिय उनहु, रक्खहु घुसृन घुराइ।
जिहिं मरनों निज बस्त्र जुहि, अकथित बोरहिं आइ ॥१९॥

बरस तीस अतिगत बय सु, बोरहु पट यह बैन।
नृप को सुनि लघुबय भटन, उर हुव असह अचैन ॥२०॥

राजा हल्लू ने जवान योद्धाओं को तो रोका पर अपनी उम्र के सिपाहियों को एकत्रित कर पूछा कि क्या वे युद्ध में मरना चाहते हैं ? जिन्होंने हाँ कहा उनको अपनी सेना में रखा। राजा ने अपनी शस्त्रशाला (अखाड़े) के कुण्ड को केसर घुलवा कर तैयार करवाया और कहा कि जिसने सचमुच मरने की सोची है वह बिना कहे अपने कपड़े इस कुण्ड में रंगेगा। हाँ, इसमें यह ध्यान रखा जाए कि जिसकी उम्र तीस वर्ष से अधिक हो वही अपने कपड़े रंगे। राजा का यह निर्देश सुन कर जो छोटी वय वाले वीर योद्धा थे उनका मन कुंद हो गया और उनके मन में असह्य बेचैनी भर गई।

प्रायो मरुदेशीय प्राकृत मिश्रित भाषा

सचरणगद्यम्

आपरा अजेय बीरां रो इसड़ो अभीष्ट जाणि कुंकम रो कुंड घुळाइ हाड़ां रो अधीस हालू बासठि बर्ष रा बय में पहली आप रा वस्त्रां रै बोळ दिवाई उर्बसी रो बींद बणियो।

जिकण रै साथ तीस वर्ष बय थी विसेस हूंता जिकों पंच सत सुभटां केसर रा कुंड में बस्त्र बोळिया जठै हालू रा अनुज रोपाल री पत्नी आपरा कांत नूं इण रीति भणियो।

अबळा रै एक पति ही परमेश्वर कहीजै जिकां रो दरसण करि जी वीजै तिकां आप मरण ही आसंगियो तो मोनूं आपरै ही आगे काठां चढाई पधारो।

अर जीवण री आस व्हैतो मरणीक हुवा सत्यसंघ अग्रज रै साथ जावण री न धारो ॥२१॥

अपने अजेय वीरों की ऐसी इच्छा देख कर केसर घुले कुण्ड में हाड़ाओं के स्वामी हल्लू ने अपनी बासठ वर्ष की वय में सबसे पहले अपने कपड़े रंगवाए। इन केसरिया कपड़ों में वह साक्षात् अप्सरा के दूल्हे जैसा

लगता था। राजा के साथ ही तीस वर्ष से बड़ी आयु वाले लगभग पाँच सौ उद्भट वीरों ने केसर के कुण्ड में अपने कपड़े डुबोये। इसी समय हाड़ा हल्लू के छोटे भाई रोपाल की पत्नी ने अपने पति से कहा कि हे नाथ! अबला के लिए उसका एक पति ही परमेश्वर कहलाता है जिसको देख कर ही वह जीवित रहती है। ऐसे में यदि आपने मरना चुना है तो इससे पहले मुझे आप काठ की चिता पर चढाइये तब पधारिये और यदि जीने की इच्छा हो तो मृत्यु को चाहने वाले अपने सत्य प्रतिज्ञ संगी साथियों के दल के नायक अपने बड़े भाई से नहीं कह दें। यह कह दें कि नहीं मैं नहीं जा सकता।

आपरी अंगना रो इसड़ो अभिमत जाणि रोपाळ झाक रा सोढा दामां री दुहिता सुगुणा नाम इसड़ी आपरी पत्नी नूं आपरे आलय ही काठां चढाइ बम्बावदै आइ अग्रज रो साथ कीधो।

सो जाणि हालू नरेन्द्र भी पावक में पत्नी रो पहिली प्रवेश प्रमाण थी बिरुद्ध बिचारि आपरा अनुज नूं उपालम्भ दीधो।

कहियो रण रो मरण तो दैव रै अनुकूल हुवां होइ जिको नबणसी तो संसार नूं मुख दिखावण जिसड़ो रहसी नहीं।

अर बेद हूँ बहिर्गत बात बणाइ पतिब्रता पत्नी नूं पहली प्रज्वाळण री प्रसंसा कोई भी कहसी नहीं॥२२॥

अपनी जीवन संगिनी का ऐसा विचार जान कर रोपाल ने झाक गाँव के सोढा जाति के क्षत्रिय दामां की पुत्री सुगुना नामक अपनी पत्नी के लिए अपने घर में चिता तैयार कर दी। इस तरह अपनी पत्नी के जीवित ही जलने के बाद उसने बंबावद आ कर अपने भाई का साथ किया अर्थात् मरने को साथ हुआ। इस बात का जब राजा हल्लू को पता चला तो उसने इस तरह पति से पहले पत्नी के अग्निप्रवेश को शास्त्र विरुद्ध बता कर अपने छोटे भाई को इस बात का उपालंभ दिया। राजा ने रोपाल को उलाहना देते हुआ कहा कि तेरा युद्ध में मरना तो देवताओं की कृपा अनुकूल होने पर ही संभव होगा पर किन्हीं कारणों से यदि तेरा मरना न हो सका तो तू जगत में किसी को अपना मुँह दिखाने के योग्य भी नहीं रहेगा। तू ने यह कार्य वेदोक्त नियमों के अनुसार नहीं किया इसलिए एक पतिव्रता स्त्री को पति की मृत्यु से पूर्व इस तरह जलाने के तेरे कार्य की कोई प्रशंसा नहीं करेगा।

दोहा

नीचा तदि कीधा नयण, पाइ त्रपा रोपाळ।
इम सजियो हालू अनड़, कजियो रचण कराळ॥२३॥
बरस पचासां हेठ बय, बीसी सात प्रबीर।
अट्ठारह बीसी अधिक, धुर रण खंचण धीर॥२४॥
पट कुंकुम सतपंच ही, इमकरि गरक उदार।
हुवा बराती सेहरो, हालू रक्खणहार॥२५॥

हाड़ा राजा हल्लू के इस प्रकार कहने पर रोपाल को शर्म आई और उसने अपनी नजरें झुका लीं। इस तरह योद्धा हल्लू भीषण युद्ध रचने के लिए बंबावद से चला। पचास वर्ष से जिनकी आयु कम थी ऐसे उसके साथ एक सौ चालीस वीर थे और पचास वर्ष से अधिक आयु वाले तीन सौ साठ योद्धा ऐसे थे जो युद्ध का भार अपने कंधों पर ले सकते थे। केसरिया बाना किये हुए इस प्रकार कुल पाँच सौ योद्धाओं की इस बारात का दूल्हा स्वयं हाड़ा हल्लू था।

सचरणगद्यम्

प्रस्थान रै प्रथम बारहठ लोहठ नरेस नूं कहियो मंडोउर रै अधीस हम्मीर पढिहार आपणा चरण चंपै जतरी जमीं द्विजां नूं देणैं कही जिण कारण इसड़ै तोर चालियो तो पढिहार केही पीढियां थी धन्वधरा रो प्रांत पाइ प्रगल्भ बणि बैठा जिण थी आहव रो आरंभ उरैं ही पावसी।

अर मंडोउर रो राजमार्ग में पूंगां प्राण पुद्‌गळां रै बियोग बणैं तो द्विजां रै अर्थ दुर्जन रा द्रंग रा दान मैं प्रसभपूर्बक प्रभु रो ही पुण्य खटावसी॥२६॥

इस सेना के प्रस्थान से पूर्व बारहठ लोहठ ने राजा से कहा कि मंडोवर के अधीश पड़िहार हम्मीर ने जो यह बात कही कि जहाँ जिस भूमि पर हल्लू के चरण पड़ेंगे मैं उसे ब्राह्मणों को दे दूँगा। पड़िहार के इस कथन और बर्ताव का मूल कारण मात्र यह है कि कई पीढ़ियों से मारवाड़ का देश प्राप्त होने से घमण्ड आ गया इसलिए युद्ध का आरंभ अर्थात् मुठभेड़ पहले ही (राज्य की सीमा में प्रवेश लेते ही) हो जाएगी इसकी संभावना है।

मंडोवर के राजमार्ग पर पहुँचकर यदि आपके प्राण और शरीर का वियोग बने अर्थात् आप मारे जाएँ तो अच्छी बात होगी क्योंकि उस दुर्जन पड़िहार द्वारा ब्राह्मणों को दिये गए नगर गाँवों के दान से आपका हठ मुख्य कारण होगा इसलिए आप पुण्य के भागी होंगे।

हालू कहियो मंडोउर पूगियां भी द्रंग रो देबो तो इंदु रा आदान अर्थ ऊंचो कर कीधा सावक रा संकल्प रै समान मोघ जाणों।

अर बिप्र बळियो तिणरी लज्जा रो लेस भी न पायो जिण थी घ्राणहीण पामर प्रतिहार रो प्राण मैं प्रियत्व ही प्रमाणों।

तोभी मंडोउर पूगि मरां तो रंक रै राज राखण मैं आपरो ही आसान रहै।

अरु मरुमही रो महीपपणों पाइ जीवता कुणप नूं सारो ही संसार हाडां रो दान लेणहार कहै॥२७॥

इस पर हाड़ा हल्लू ने कहा कि हमारे मंडोवर पहुँचने पर तो गाँव आदि का दान देने का उसका संकल्प उतना ही निरर्थक है जितना कि एक बालक अपने हाथ ऊँचे कर चाँद को लेने का संकल्प करे। अरे, उसे तो एक ब्राह्मण के जल मरने पर भी लज्जा नहीं आई इससे यह बात तय है कि उस नकटे नीच पड़िहार का अपने प्राणों से मोह है। हम मंडोवर जा कर मरे भी तो यह सोचते हैं कि राज उसी के रखेंगे इससे उस पर हमारा अहसान रहेगा और मारवाड़ का राज्यपद देने से संसार उस जीवित मुर्दे को हमेशा हाड़ाओं से दान लेने वाला कहेगा।

इसड़ो अमोघ उपाइ बिचारि कपट रै प्रपंच बाणियां री बरात बणाइ बाजियां रै बदलै रथ छकड़ा जुताइ किताक प्रबहणां मैं प्रहरण छिपाइ कुंकुम रा रंग में गरक दुकूल कीधा दूजी दिसारै मार्ग मंडोउर पूगिया।

अर राजद्वार जावतां ही सस्त्र समाहि मांहिं पैठा जठै पढिहार बंस रा प्रबीर भी आपरा अधीस नूं धिक्कार धारण कराइ मरणीक थिया।

पहली प्रतोली मैं पैठतां ही माहिंला चोक में हाड़ां पढिहारां रै अचाणक कोरड़ो लोह बाजियो।

परंतु उण समय जुद्ध जाणियां बिनां ढीला थका पढिहार हाजर हूंता तिकां दीपक में पतंग रै प्रमाण आपरो अंग धारातीर्थ में पवित्र कियो ॥२८ ॥

ऐसा अमोघ उपाय सोच कर छल कपट का प्रपंच रच कर राजा हल्लू ने अपने सारे साथियों के प्रयाण को ऐसा रूप दिया जिससे देखने वाले यह समझें कि यह कोई सेना नहीं बल्कि बनियों की बरात हो। राजा ने घोड़े नहीं लिये उनकी जगह रथ, गाड़ियाँ, छकड़े आदि सज्जित करवाए। राजा ने उन डोलियों के भीतर अपनी सेना के शस्त्र छिपा लिये और केसर के रंग में गर्क अपने वस्त्र के साथ आम रास्ते को छोड़ कर दूसरे मार्ग से हो कर वे मंडोवर पहुँचे। राजद्वार पर पहुँचते ही अपने अपने शस्त्र संभाल कर अन्दर घुसे। वहाँ आगे पड़िहार वंश के वीर भी अपने स्वामी को धिक्कारते हुए मरने मारने को तैयार हुए। पहले दरवाजे (प्रतोली) से आगे जाते ही भीतर के चौक में पड़िहारों और हाड़ाओं के मध्य मुठभेड़ हुई। तलवारें चलीं। परन्तु उस समय तक युद्ध की आशंका से अनजान पड़िहार जो वहाँ थे उन्होंने दीपक पर जलने वाले पतंगों की तरह अपने शरीर धारातीर्थ में पवित्र किया अर्थात् कट मरे।

संगर रा करणहार तो एकठा होइ मंत्रपूर्बक लड़ाई करता तो ठीक होती जिणथी गढ मांहिला पढिहार पाया जिके हाड़ां रा सस्त्र रूप अग्नि में अचाणक ही आवटियां।

अर मरणीक हुवा मच्छरीकां रा समूह बाट में आया सिपाहां में बाढता प्रच्छन्न प्रकोष्ट रै समीप थटिया।

आपरा अंगज मैं आई असाधारण आपदा ईखि मंडोउर रा महीप हम्मीर री माता बुंदी रा नरेस हम्मीर री सासू मंडोउर ही द्विजां नूं देण री जणाइ आपरा अप्रतिभ तनुज नूं तरजियो।

अर अंगज रै आगे डोढी पर आइ एक कपाट रै अंतर हालू नरेस नूं बुलाइ बैर धोवण रै काज इण रीति बरजियो ॥२९ ॥

युद्ध तो युद्ध की रीति से लड़ा जाता है। युद्ध करने के लिए पहले सारे इकट्ठे हो कर मंत्रणा कर कोई व्यूह रचना करते तब तो कोई बात भी होती।

वे सारे युद्ध से गाफिल पड़िहार जो गढ़ के भीतर थे वे सारे एक एक कर हाड़ाओं की शस्त्र रूपी अग्नि में अचानक जले और मरने को कटिबद्ध चहुवानों का यह समूह रास्ते में मिले सिपाहियों को मारता काटता जनानी ड्योढी के समीप आ इकट्ठा हुआ। अपने जनाने महल पर आई इस अचिंत्य असाधारण आपदा को देख कर मंडोवर के राजा हम्मीर पड़िहार की माँ ने जो बूँदी नरेश हाड़ा हम्मीर की सास थी ने ललकारते हुए अपने लज्जित पुत्र को कहा कि तू तो कहता था ना कि जहाँ जहाँ उस हाड़ा के पाँव पड़ेंगे मैं वह भूमि ब्राह्मणों को दान कर दूँगा। अब पूरा मंडोवर ही क्यों नहीं देता? फिर वह क्षत्राणी जनाने महल से ड्योढी पर आई। उसने एक ड्योढी का एक कपाट खुलवा कर राजा हल्लू को वहाँ बुलवाया फिर उससे मारकाट रोकने की कह कर किसी तरह वैर धोने (द्वंद्विता समाप्त करने) की तरकीब सुझाई।

म्हारा कुपुत्र री कीधी नूं न धारि एक आपरा ही बडप्पण नूं बिचारि बैर रै बदळै बेटी बिबाहि कुपुत्र नूं प्राण मोनूं मंडोउर री महीदान कीजै।

अर भावती सुता रा स्वसुर आप बिबाहिणि री प्रार्थनां रै प्रमाण बिबाहण री बात बिरुदां रा बिसेस निबाहण री निहारि अछूतो जस लीजै।

हालू कहियो पूरो बय पाइ संसार हूँ बिरक्त हुवा महीप बंस रै महामंगळ मानि मरण नूं चाहै तिके बिबाहण नूं न चाहै।

जिणथी हाड़ां रा समग्र ही पाँच सै सिपाह तिकां नूं बाढण काज आपरी समस्त ही सेना पेलीजै तो बिस्वंभर बिबाहिणि बिबाही बिहूँ संबंधियां रो बचन निबाहै॥३०॥

पड़िहार राजा की माँ ने अनुरोध किया कि हे राजा! आप मेरे इस कपूत की करतूत की ओर न देखें। आप तो अपने बड़प्पन को याद कर इस शत्रुता (वैर) के बदले मेरी बेटी लें (उससे विवाह करें) और मुझे मेरे कपूत के प्राण और मंडोवर की भूमि का दान करें। मेरी पुत्री भावती के आप ससुर हैं आप अपनी इस समधिन की प्रार्थना पर ध्यान दें विवाह के प्रस्ताव को स्वीकार कर अपने विरुद को निभाइये और यश अर्जित कीजिए। इस पर

राजा हल्लू ने कहा मैं वयोवृद्ध हूँ। अब संसार से विरक्त हो कर इसे अपने वंश का महामंगल मानते हुए मरना चाहता हूँ। ऐसा व्यक्ति विवाह क्यों करना चाहेगा अर्थात् नहीं चाहेगा। आप तो एक काम कीजिए कि हाड़ाओं के कुल पाँच सौ योद्धा हैं इन्हें काटने के लिए अपनी पूरी सेना भेज दीजिए तो परमेश्वर! आप समधिन और मुझ समधी दोनों की बात रख देगा अर्थात् युद्ध होने दें निर्णय परमेश्वर के हाथ है।

हे बिबाहिणि अजे भी आपरो अनीक मंत्र रा मेळ करि समग्र ही सज्ज होइ आवै तो म्हांरा मारण मैं समर्थ जाणों।

अर कपट करि गढ ही मैं अचाणक आइ पैठणों तो आपरा अंगज रो कूड़ापण दिखावण रै काज बेस बदलण मैं म्हारोपण कूड़ापण ही प्रामाणों।

जिणथी अब पड़िहारां रो समग्र ही सावधान साथ म्हांरो पण पूरण नूं पधारै तो मंडोउर राज रै ही रहियो।

इसड़ी कहि पाँचसै ही मरणीक सिपाहां समेत हाडै नरेस हालू आपरा रोकिया दुर्ग थी बारैं कढि चोगान में सज्ज होइ धारातीर्थ मैं मरण रो ही मनोरथ गहियो॥३१॥

हे समधिन! अब भी यदि आपकी सेना एकत्रित होकर अपनी व्यूह रचना के लिए मंत्रणा कर ले फिर सारी सेना सज्जित हो कर आए। तब भी मेरे वीर योद्धा उन्हें मारने में सक्षम हैं। रही बात इसकी कि मैं बिना सूचना कपटपूर्वक अचानक गढ़ में आ गया। इसका एक मात्र कारण आपके पुत्र का कूड़ा कथन ही जानें। मैं जानता हूँ इस तरह भेष बदल कर आने में मेरा भी अच्छा नहीं लगा अर्थात् मुझ पर भी कपट रचने का दोष लगा है। इससे अब पड़िहारों की पूरी सावधान सेना मेरी प्रतिज्ञा (युद्ध में मरने की) को पूर्ण करने आए तो यह मंडोवर का राज आपके ही रहा। इतना कह कर अपने पाँच सौ मरने को कटिबद्ध वीर योद्धाओं के साथ हाड़ा राजा हल्लू अपने घेरे हुए दुर्ग से बाहर निकला और खुले मैदान में अपनी सेना सहित सज्जित हो गया इस आशा में कि तलवार की धार से कट कर मरने की उसकी इच्छा पूर्ण होगी।

तिण समय पढिहार रा समग्र ही सुभट मंडपपुरपत्तन मैं हूँता तिके

गढ खाली हुवो जाणि मांहिं पैठा तिकां हूं प्रतिहार राज कहियो माता री नीति करि दुर्ग रै बारैं कढिया हाड़ां रो पण अब म्हारै साथ होई निबाहीजै।

अर राजनीति मैं सदा ही भूमि रा भोगणहारां नैं समय रै अनुसार छळबळ भी साहीजै॥

जठै हम्मीर री माता पुत्र नूं धिक्कार देर आपरो भटबर्ग प्रकोष्ट रै समीप बुलाइ कहियो हाड़ां रा पण मैं कपट न दीठो जिणथी बैर मैं बिबाहण रो बचन बिनय रै साथ करि काढियो।

तिकण नूं मारतां पहली म्हांरो मरणों बिचारि कुपुत्र रै परोक्ष ही हाड़ां नूं कीजै चमरी चाढियो॥३२॥

इस समय मंडोवर के अधीस पड़िहार के सारे योद्धा गढ़ में ही थे राजा ने जब देखा कि शत्रुओं ने गढ़ को खाली कर दिया है तब उसने अपने योद्धाओं को संबोधित करते हुए कहा कि मेरी माँ ने कूटनीति से काम लेकर उन्हें दुर्ग से निकाल दिया है अब आप लोग मेरे साथ आओ कि हम जा कर उन हाड़ाओं के प्रण को पूरा करें। अर्थात् उन्हें मारें! फिर राजनीति भी यही कहती है कि भूमि को भोगने वालों अर्थात् राजाओं को परिस्थिति और नाजुक समय देख कर छल-बल का सहारा लेना चाहिए। इसी समय पड़िहार राजा की माँ ने अपने पुत्र को धिक्कारते हुए सारे पड़िहार योद्धाओं के समूह को जनाना ड्योढी के पास बुला कर कहा कि मुझे हाड़ा के प्रण में तनिक भी झूठ और कपट का अंश नजर नहीं आया। इसलिए मैंने विवाह का प्रस्ताव पूरी विनम्रता के साथ उनके समक्ष रखा।

जठै रजपूतां राणी नूं कहियो आपरो आदेस टाळि कुपुत्र रो कहणों ही मांडि गढ छोडि गया हालू जिसड़ा नरेस नूं बचन हींण होइ मारणा रा आपरा रजपूतां नूं न जाणीजै।

अर ब्रह्महत्या रा बिलसणहार आपरा कुपुत्र नूं केड़ै करि म्हारा तो मन मैं स्वामी री सवित्री रो ही सासन समस्त रै सीस प्रणाणीजै।

इसड़ी कहि मंडोउरर रै एक उमराव सस्त्रहीण होइ हाड़ानरेस हालू कनें जाइ दो ही तरफ प्रमाण हुवो बचन बताइ अनेक उपाइ करि निबाहण री धारि बिबाहण री चही।

जठै हाडै कहियो ए कुंकम रा दुकूळ तो अच्छरीगणां रै उचित

जाणि कीधा जिण थी बिबाहण री बय ब्यतीत हुवो जाणि केवळ मरण रै ही मनोरथ आया तिकां रै बिबाह कीधां तो दो ही लोक मैं जस री रीति न रही॥३३॥

रानी माँ की बात सुन कर पड़िहार राजपूतों ने कहा कि हे माता! आपका कहना टाल कर हम आपके कपूत का कहना मान कर गढ़ छोड़ कर गये। हल्लू जैसे नरेश को अपने दिये वचन से पलट कर मारेंगे आप ऐसा सोचना ही मत। हम कदापि ऐसा नहीं करेंगे। फिर ब्रह्महत्या जैसा जघन्य पाप भोगने वाले आपके इस कपूत को नजर अन्दाज कर हम मन में अपने राजा की माता की आज्ञा को शिराधार्य करते हैं। ऐसा कह कर मंडोवर के एक सामन्त ने निशस्त्र हो हाड़ा राजा के पास जा कर दोनों पक्षों में जो बात तय हुई है उसे हर स्थिति में निभाने का निवेदन किया और कहा कि विवाह के लिए हाँ कहें तब हाड़ा राजा ने प्रत्युत्तर में कहा ये केसरिया बाना तो अप्सराओं के वरण के लिए किया है क्योंकि विवाह की उम्र तो हमारी बीत गई। अब तो मात्र एक मरने की इच्छा लिए यहाँ आया था। अब यहाँ विवाह करूँ तो दोनों ही लोकों (इहलोक और परलोक) में बदनामी होगी।

जिणथी जिताक बिबाहण रै उचित बय रा बीर म्हारै साथ आया तिकारै बिबाह बिलसण री होइ तो म्हारां बारहठ लोहठ रै पगां पड़ि भाई रोपाल नूं सारिखो साथी सूंपि इणां रै अंगीकृत करावीजै।

अर म्हारे तो धरा पै धराधवां रै धामधाम धारांधारां री धमचक देखि ओरठै भी पण री पूर्णता भरावीजै।

जठै इसड़ी सुणि बिहत्तर बर्ष रा बय में हाड़ा नरेस हालू रा बिबाहण री बात समय रा सासन करि अत्यंत ही असंभव जाणि पड़िहार रै सुभट पाछो जाइ मंडोउर रा महीप री माता प्रति कही हालू रा बिबाहण में तो आप सिंह रासि रा बृहस्पत रै संग ही लग्न जाणीजै।

अर एक सो चालीस सिपाह बिबाहण रै उचित दीठा तिकां रै स्वीकार करण रो भी मालिक रा बिबाह बिनां असंभव ही प्रमाणीजै।

इसड़ी सुणि हम्मीर री माता आपरा पुत्र नूं बारहठ लोहठ रै पगां लगाइ अंतेउर री डोढी बुलाई अंजळी उपेत अपराध मांगि कहियो म्हांरी अरजू हूं हाड़ा नरेस रै आपरा उचित भड़ां रो उपयम कराइ पाप रो बैर

धोवण री प्रतिश्रुत हुई परंतु सुहड़ां रै स्वीकार करावण मैं एक आपरो ही आश्रय लीधो जिणथी पुत्र नूं प्राण मों नूं मंडोउर रो राज दीजै।

अरु रोपाळ नूं न रुचै तो कहणों एक पत्नी रै एवज इच्छा रै प्रमाण उपयाम कीजै।

बारहठ पाछै आइ याही अरज कीधी सुणि दया रै दरियाव हालू नरेस सातबीसी सुभटां नूं पड़िहार री पौळि पाणिपीड़ण री स्वीकार कराई।

परंतु काली रा कळस सती रा नाळेर पति पहली प्रजळी प्रतिव्रता रा प्रियतम रोपाळ नूं न भाई॥३५॥

राजा ने आगे कहा कि एक बात हो सकती है वह यह कि विवाहयोग्य उम्र वाले जितने भी योद्धा मेरे साथ आए हैं उनकी यदि विवाह करने की इच्छा हो तो आप बारहठ लोहठ सामोर के पाँवों में गिर कर मेरे भाई रोपाल जैसे योग्य यार भी साथ हैं उन्हें शादी के लिए मनाइये। मुझे तो आप इस पृथ्वी पर ऐसा राजा बताएँ जिसकी धारातीर्थ की धमचक में मैं अपना रणभूमि में मरने का प्रण पूरा कर सकूँ। जब राजा हल्लू से ऐसा सुना तो उस भले सरदार ने समझ लिया कि बासठ वर्ष की आयु में यह हाड़ा राजा समय की नजाकत देखते हुए विवाह के लिए कतई राजी नहीं होगा। उसे विवाह होना एकदम असंभव लगा। तब उस पड़िहार ने वापस जाकर मंडोवर के राजा की माता के पास जा निवेदन किया कि विवाह हेतु राजा हल्लू की कुण्डली में सिंह राशि पर वृहस्पति आया हुआ है। (ऐसे लग्न विवाह का निषेध है) राजा के नाम में तो सिंहस्थ योग है अर्थात् नहीं हो सकता। राजा के साथ आए वीरों में से लगभग एक सौ चालीस ऐसे हैं जो विवाह के योग्य हैं पर उनका भी विवाह के लिए राजी होना इस बात पर निर्भरता करता है कि पहले उनका नायक हाड़ा राजा तैयार होता है कि नहीं। मुझे तो यह कार्य कठिन और लगभग असंभव लगता है।

पड़िहार राजा की माँ ने यह सुन कर अपने बेटे को ले जाकर लोहठ बारहठ के पाँव छूने को कहा फिर सुकवि को जनाना ड्योढी पर बुलवाया। वहाँ रानी माँ ने हाथ जोड़ कर क्षमा मांगी और कहा कि हमारे अनुरोध से हाड़ा नरेश के उचित विवाह योग्य योद्धाओं से पड़िहारों की बेटियों से

विवाह संपन्न करा कर शत्रुता खत्म करने के अनुबन्ध का प्रस्ताव हुआ था परन्तु हाड़ा राजा के वीर योद्धा से अब यह बात मनवाने में आपका एकमात्र सहारा है। कविराज! आप कृपा कर मेरे पुत्र के प्राण और मंडोवर का राज दिलवाइये। लेकिन यदि रोपाल फिर भी अड़ा रहे अपनी बात पर तो उसे समझाइये कि एक पत्नी के एवज (वह जो जल मरी) में अपनी इच्छा से विवाह करे।

लोहठ सामोर ने वहाँ से आ कर हाड़ा राजा हल्लू से यह निवेदन किया तो राजा ने अपने एक सौ चालीस सुभटों के पड़िहारों की प्रतोलि तोरण मारने की बात स्वीकार करते हुए इसकी इजाजत दी। पर पागल स्त्री के कलश (पागल स्त्री का कलश कब फूट जाए कोई नहीं बता सकता इस प्रकार वीर कहाँ मरे, कब मरे, कोई नहीं जानता इसलिए यह वीर योद्धा की उपमा है) सती के नारियल (उसे जलना ही पड़ता है उसी तरह जो वीर हठ पूर्वक मरे उसकी उपमा है।) पति से पहले जलमरी ऐसी प्रियतमा के प्रियतम रोपाल के मन में शादी की बात नहीं जँची।

दोहा

बूडो लाज समुद्र बिच, लखि अग्रज लंकाळ।
पाणि जोड़ि दै घण सपथ, पुणियो तदि रोपाळ॥३६॥

नारि सती बळती नहीं बिणु बय तो भी ब्याह।
करतो भ्रात न आपक्रम, राखे जस कुळ राह॥३७॥

तृणमुख अब लीधो तिकां, तो उचितां परिणाइ।
आप करीजै औरठै, पण पूरण इणपाइ॥३८॥

मोनूं अब मरियां मिळै, उचित सुजस आभोग।
कहो आपही गति कवण, जीवण मरण दु जोग॥३९॥

हेक हेक दै अब हुकम, पेलीजै पड़िहार।
काळ चहै हरि जेण कर, सोहि हणैं सिरदार॥४०॥

पुणियो नृप मरियां पछैं, ब्याहै ओर न बीर।
पण पूरण कीजै पछै, धरे इता दिन धीर॥४१॥

अपने बड़े भाई के समक्ष आए इस विवाह प्रस्ताव को सुनकर उस सिंह जैसे वीर दूसरे अर्थ में लंका के राजा रावण जैसे हठी वीर रोपाल को

लज्जा आ गई। रोपाल ने हाथ जोड़ कर शपथपूर्वक यह निवेदन किया हे अग्रज! यदि मेरी पहले वाली पतिव्रता पत्नी इस तरह जल कर नहीं मरती तब भी मैं अपनी उम्र को देखते हुए विवाह नहीं करता। मैं भी हे भाई! आपकी ही तरह अपने कुल की मर्यादा और यश की रक्षा करते हुए आपका अनुसरण करता अर्थात् मैं भी विवाह के प्रस्ताव को नहीं मानता। इन शत्रुओं ने भी अब अपने मुँह में तिनका ले लिया है अर्थात् समर्पण कर दिया है और अपनी कन्याओं से विवाह करने का प्रस्ताव किया है। अब आपका युद्ध में लड़ते हुए मरने का प्रण यहाँ तो पूरा नहीं हो सकता। इसके लिए अब आपको कोई अन्य जगह ढूँढनी पड़ेगी। मुझे तो अब मरने पर ही वांछित यश की पूर्णता मिलेगी। आपके भविष्य की आप जानें कि जीवन और मरण इन दोनों में से आपकी गति कहाँ है। इसलिए हे भाई! अब आप एक-एक कर पड़िहारों के योद्धाओं को बुलवाइये। मैं उनसे भिड़ूंगा। हम में से मृत्यु देवता जिसे चाहेगा उसे चुन लेगा अथवा वही दूसरे को मार लेगा। इस पर राजा ने कहा कि हे वीर! मरने के बाद कोई वीर योद्धा विवाह नहीं कर सकता इसलिए अपने प्रण को थोड़े दिनों बाद पूर्ण कर लेना। उससे पहले थोड़े दिनों के लिए धैर्य रख कर विवाह कर लो।

सचरणगद्यम्

इण रीति रो आदेस आपरा अनुज रै अंगीकृत कराइ हालू नरेस आपरा उचित बय रा सात बीसी सुभटां नूं संबंधियांसहित पड़िहारां री एक सो चाळीस कन्या परिणाइ राजा हम्मीर सहित सभा करि कहियो भाई रोपाळ रो पण पूरण करण नूं एक सिरदार पधारो।

अर जिकण रै मरियां ही मंगळ होइ तिकण रा बचावण में कोई भी जतन न धारो।

जरैं मरणों ही मानि अठीरा अठी जोवतां हम्मीर री सभा हूँ महराज पड़िहार ढाल तरवारि पकड़ि अखाड़ै आयो।

अर अठीहूँ खड्ग खेटक समाहि अछूती अणी रो बींद रोपाळ हरराजोत चलायो ॥४२॥

इस तरह का आदेश अपने छोटे भाई रोपाल को दे कर राजा हल्लू ने अपने साथियों में से एक सौ चालीस विवाह योग्य वय वाले वीरों से

पड़िहारों और उनके संबंधियों की एक सौ चालीस कन्याओं का विवाह संपन्न करवाया। इसके बाद पड़िहार राजा सहित राज दरबार लगवाया और इस सभा में राजा हल्लू ने कहा कि मेरे भाई रोपाल का प्रण पूरा करने के लिए आप में से कोई एक योद्धा आए। यह सुन कर पड़िहारों की सभा में सभी एक दूसरे की ओर ताकने लगे तब उनमें से एक योद्धा महराज पड़िहार ने अपनी ढाल तलवार संभाली और मरना निश्चय जान कर अखाड़े में आया और इधर से तत्काल ही अपनी तलवार पकड़े ढाल उठाए अछूती सेना का नायक हरराज हाड़ा का पुत्र रोपाल बढ़ा।

आप आपरो दाव देखि खड्ग रा बाईस ही मार्ग साधि हाडै पड़िहार दो ही महाबीरां आपस में अनेक वार कीधा।

अर आप आपरा पराक्रम रै प्रमाण दो ही नरेसां नूं अंचभो दिखाइ दो ही पटैतां प्रहार टाळि दीधा।

उण समय आपरो वार जाणि पड़िहार महराज रो पाँचो हाथ छूटो।

जिकण थी अचळ रा उपमान रोपाळ हरराजोत रो सीस शृंग रै समान तूटो ॥४३॥

अपना अपना दाँव ताक कर तलवार प्रहार के सभी प्रकार के बाईस ही वार दोनों योद्धाओं ने एक दूजे पर अनेक बार किये। दर्शकों में दोनों राजा में हल्लू और हम्मीर पड़िहार को आश्चर्यचकित करते हुए, दोनों योद्धाओं ने अपने अपने पराक्रम और युद्ध कौशल से एक दूसरे के प्रहारों से स्वयं को बचा लिया। फिर अचानक अपनी बारी आई जान कर पड़िहार महराज का एक सच्चा वार हुआ जिससे पहाड़ के शिखर की तरह हरराज के पुत्र हाड़ा रोपाल का मस्तक टूट गया अर्थात् कट कर गिरा।

सीस उडतां ही पड़िहार हसिया अर महराज मुरड़ि चालियो तिकण रै लार लागै रोपाळ रै रुंड खड्ग पटकि कटारी काढि सातवैं पैंडजावतां कटिबंध पकड़ि पड़िहार रा पिंड मैं सात घाव जड़िया।

सो च्यारि ऊभां तीन पड़ियां देर इणरीति दो ही बानैत एक ही काळ मैं खेतपड़िया।

लोहठ रा पुत्र हरिदास नूं बंबावदां हूं बुलाई पड़िहारां रा बारहठ

नांधू नगराज री पुत्री परिणाइ हालू पड़िहार राजा हम्मीर नूं मंडोउर देर पाघरा बैर पर आपरा एक बारहठ सात बीसी सुहड़ां रै काज एक सो इकताळीस कन्या लेर बंबावदै आयो।

अर आपरा अनड़पणा रै अनुसार मंडोउर आपरी बिबाहिणि नूं देण रो सुजस चोतर्फ ही चलायो॥४४॥

मस्तक के गिर पड़ने पर सारे पड़िहार हँसे और महराज मुड़ कर चला कि उसके पीछे लगे रोपाल के मस्तकविहीन धड़ ने तलवार पटक कर अपनी कमर से कटार निकाली और सातवें कदम तक जाते-जाते महराज का कमरबंध पकड़ कर एक पर एक इस तरह सात घाव दिये। इनमें से चार घाव पड़िहार के जब वह खड़ा था तब और तीन घाव उसके गिरने पर दिये। इस तरह दोनों योद्धा एक ही साथ अखाड़े में कट मरे। इसके बाद सुकवि लोहठ सामोर के पुत्र हरिदास को दूत भेज कर बंबावद से बुलवाया और आने पर पड़िहारों के बारहठ नांधू (नांदू) नगराज की पुत्री से विवाह करवाया। इस प्रकार हाड़ा राजा हल्लू पड़िहार राजा हम्मीर को वापस उसका मंडोवर दे कर और अपनी पगड़ी के अपमान के वैर में अपने एक बारहठ और एक सौ चालीस योद्धाओं के लिए एक सौ इकतालीस कन्याएँ ले कर वापस बंबावद लौटा। उसने अपने अनम्रपन को सिद्ध करते हुए अपनी समधिन को मंडोवर देने का सुयश प्राप्त किया और अपनी कीर्ति का प्रसार चारों दिशाओं में किया।

राठोड़ राव चूंडा बीरमदेवोत रै भाग जोर कीधो जिकणहूं हालू मंडोउर में आपरी आण फेरी नहीं।

अर ओर ही लेसी तो आपणैं आ इळा किण रीति छोडीजै इसड़ी बात महाउदार बिचार में हेरी नहीं।

आपरा बड़ा पुत्र चंद्रराज नूं राज दीधो जिणथी बंबावद आइ अवसाण पर्यंत उदासीन रहियो।

अर जुद्ध जाणियो जठै ही जाइ जाइ काम आवण रो प्रसभ गहियो॥४५॥

सोतो पछैं इण बात रै अनंतर बीस बर्ष बांसै बालियां केड़ै कोई भी कजियां में मर्म रो प्रहार भी न पायो जाणि बिक्रम रा चउदहसै एगारह

रै संबत बाणवैं बर्ष रो बय बिताइ हालू नरेस बार्द्धक में बिसेस जिवावणहार आपरा प्रारब्ध री गर्हणा करि बंबावद रै बारै ही जोगिणी नाम देवी नूं मस्तक चढाई अभीष्ट लोक पुगो सो तो उदंत अठै दूरभावी जाणीजै।

अर मंडोउर हूँ हालू आवियां केड़ै नरेस हम्मीर कासीबास कीधो जिण पछै बुंदी रो नरेस बरसिंह हुवो जिण रो भी अद्वितीय आतंक प्रमाणीजै।

जिण समय चीतोड़ रा अधिराज राणा हम्मीर रे खेतल नाम कुमार गैणोली रा अधीस हाड़ा लालसिंह री पुत्री नूं बिबाहण रै काज प्रयाण कीधो।

जिकण रै साथ राणां त्याग रा जस रो प्रकाश प्रसारण रै काज आपरा पोळिपात बारहठ बारू सहित बडा बडा सुभटां नूं सज्ज करि हाड़ां री आसंग में न आवै इसड़ो बरात रो बाणिक बणाइ दीधो ॥४६॥

उधर राठौड़ बीरमदेव के पुत्र राव चूंडा का भाग्य प्रबल था जिससे राजा हल्लू ने मंडोवर में अपनी विजयाज्ञा नहीं फिरवाई। (फतह का प्रचार नहीं किया) उस उदार राजा हल्लू ने अपने मन में यह बात नहीं आने दी कि इस मंडोवर की भूमि को वैसे ही कोई ओर तो लेगा ही इसलिए अपन ही रख लो। अन्यथा स्थितियाँ दूसरी होतीं।

अपने बड़े पुत्र चन्द्रराज हाड़ा को राज्य सौंप कर राजा हल्लू बंबावद में ही अन्त समय तक राजकाज से विरक्त रहा पर जहाँ से भी युद्ध होने की खबर पाई वहाँ वहाँ जा कर रणभूमि में मरने के अपने हठ को निभाना नहीं भूला। इस समय के अनन्तर अपनी उम्र के बीस वर्ष और गुजार देने के बाद भी किसी युद्ध में मर्मान्तक प्रहार नहीं मिलने के कारण विक्रम संवत् के वर्ष चौदह सौ ग्यारह में अपनी बानवें वर्ष की उम्र व्यतीत कर राजा हल्लू ने अपनी वृद्धावस्था में इतना लंबा जीवन देने वाले विधाता की निन्दा करते हुए बंबावद नगर के बाहर अवस्थित जोगणी देवी के स्थान पर अपना मस्तक काट कर चढ़ाया और अपने अभीष्ट लोक स्वर्ग में गया। हे राजा रामसिंह! यह वृतान्त तो आगे आने वाले समय में घटित होगा पर यहाँ जिक्र अवश्य कर दिया।

मंडोवर से हाड़ा राजा हल्लू के लौटने के बाद बूँदी के राजा हम्मीर हाड़ा ने काशी निवास किया। उसके बाद राजा हम्मीर का उत्तराधिकारी बरसिंह हुआ उसके शौर्य के भी कई चर्चे रहे। इसी समय में जब चित्तौड़गढ़ के राजा महाराणा हम्मीर का खेतसिंह (खेतल) नामक कुमार गैणोली के राजा लालसिंह हाड़ा की पुत्री से विवाह रचाने के लिए रवाना हुआ तो राणा ने इसके साथ त्याग (विवाह के अवसर पर दिया जाने वाला दान) के यश को प्रचारित करने के लिए अपने बारहठ बारू सहित अपने बड़े-बड़े सामन्तों को सज्जित कर हाड़ाओं की औकात से बाहर की मेहमाननवाजी हो जाए ऐसी बड़ी बारात बना कर साथ भेजी।

पहली बैर कुमावण रै काज हालू री पाघ लेर बारहठ लोहठ चित्तौड़ गयो जठै राणै हम्मीर कहियो हाडै हम्मीर आप रा पुत्र री पुत्री देर बचायो आपरे घरे अनड़पणों जणावै सो तो स्वप्पन रा संकल्प रै समान मोघ मानण मैं आवै।

अर पाँचा मरणीक सूरबीरां रा पण तो मांतगां पर पताका खुलाइ घर बैठा बैरियां नूं वकारै जठै ही सफळ हुवो खटावै।

पहली इसड़ा बचन रा बाण लगाया जिणथी एक सो पच्चीस तोपां साथ देर रण री सामग्री सूं सिलह में जड़िया बीर बरात मैं विदा कीधा।

अर मार्ग मैं कूटजुद्ध करण रा स्थान जाणिया जिके टळाइ दीधा ॥४७॥

पहले जब वैर कमाने के लिए राजा हल्लू की पगड़ी ले कर लोहठ सामोर चित्तौड़गढ़ गया था तब उसे राणा हम्मीर ने उलाहना देते हुए पूछा कि हे लोहठ ! बूँदी के हाड़ा राजा हम्मीर ने जब अपनी पोती का हाथ दे कर (विवाह का प्रस्ताव कर) जिस अनम्रपन की रक्षा की थी ऐसे अनम्रपन का संकल्प तो स्वप्न में भी विश्वासयोग्य नहीं हो सकता। सचमुच मरने को कटिबद्ध वीरों के अनम्रपन का प्रण तो हाथियों पर अपनी फहरती हुई ध्वजाओं के साथ घर बैठे हुए शत्रु को ललकारे तब मानने योग्य समझा जाता है। महाराणा ने ऐसे व्यंग्य बुझे तीर पहले चलाए थे इस बात को ध्यान में रख कर उन्होंने एक सौ पच्चीस तोपों के साथ रण की सामग्री दे कर बाराती

योद्धाओं को पूरी तरह सावधान कर भेजा। इस बारात ने मार्ग में अथोपे युद्ध के कई स्थान तलाशे पर किसी तरह उन्हें समझा बुझा कर उन कारणों को टलवाया गया।

दोहा

बणि दुल्लह खेतळ बणी, अठी राणा सुत एह।
गैणोली ब्याहण गयो, लालसुता बिधि लेह॥४८॥

चित्तौड़गढ़ से महाराणा का कुमार खेतसिंह दूल्हा बन कर गैणोली के हाड़ा राजा लालसिंह की पुत्री से पूरे विधि-विधान के साथ विवाह रचाने चला।

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे पंचम राशौ वीतिहोत्र-चण्डासि बीज्यवर्णनबीजहड्डाधिराडस्थिपाल वंश्यानुवंश्यविहितव्या-ख्यानावसरव्याहार्यबुन्दीनरेन्द्रहम्मीर समाचरितसमानसमयकबम्बावदेश-हारराजिहल्लु चरित्रे मण्डपपुर जिगीषासमर्थनसहितशपथहल्लू समाश्वा-सितसम्भोजितक विलोहठराणाहम्मीरादिमहीन्द्रमिलनभूतस्वोष्णीषप्रवृत्ति-प्रख्यापन ज्येष्ठसुत्तचन्द्रराजार्थदत्तराज्यनिश्चितरणमरणसुभटपंचशती समेतकौकुंमीकृतदुकूलविप्रवृन्दमण्डपपुरवितितीर्षुविहितबणिग्जन्यदेश-हल्लू प्रतिहारपुरप्रविशन, स्वमरणपूर्वदग्ध पत्नीकस्वाग्रजोपालब्धपृथमु-मूर्षुहारराजिहड्डुरोपाल हल्लू सहायीभवन, निपातितराज्यद्वाररक्षकविध्व-स्तान्तर्भटव्रातहल्लू समाश्वासननिवारणोद्युक्तप्रतिहारराजहम्मीरजननी तदुष्णीषवैरवालनार्थप्रत्येकसुभटकन्यासम्बन्धीस्वीकरण।

श्री वंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण की पंचम राशि में अग्निवंशी चहुवान वंशवर्णन के कारण हड्डाधिराज अस्थिपाल के वंश और वंश की शाखाओं की कथा बताने के समय के वचनों में बूँदी नरेन्द्र हम्मीर के समान श्रेष्ठ आचरण वाले और उसी के समय में होने वाले बम्बावदे के पति हरराज के पुत्र हल्लू के चरित्र में मंडोउरपुर को जीतने का निश्चय किये हुए ऐसे हल्लू से (शपथपूर्वक) आश्वासन देकर भोजन कराये हुए कवि लोहठ सामोर का महाराणा हम्मीरसिंह आदि राजाओं से मिल कर अपनी पगड़ी की प्रवृत्ति प्रसिद्ध करना, बड़े पुत्र चन्द्रराज को राज्य देकर युद्ध में मरना निश्चय करके पाँच सौ वीरों सहित वस्त्रों को केसर में रंग कर मंडोउरपुर को ब्राह्मणों

को देने की इच्छा करके बनियों की बरात के उद्देश्य से हल्लू का प्रतिहार के पुर में प्रवेश करना, अपने मरने से पहले अपनी स्त्री को जलाने के कारण अपने बड़े भाई से उपालम्भ पाये हुए और युद्ध में मरने की इच्छा वाले हरराज के पुत्र हाड़ा रोपाल का हल्लू का सहायक होना, राज्य द्वार के रक्षकों को मारकर भीतर वीरों के समूह को ध्वस्त करने पर हल्लू को समझाकर रोकने के लिए उद्योग करने वाली ऐसी प्रतिहारों के राजा हम्मीर सिंह की माता का उसकी पगड़ी का वैर देने के लिये प्रत्येक सुभट से प्रतिहार कन्या का सम्बन्ध करने को स्वीकार करना।

त्यक्त दुर्गबहिरागतहल्लू रणमरणसन्धासाफल्यसमर्थन प्रतिहार-पूजितप्रार्थितद्वारहठलोहठ हारराजिरोपाल प्रतिबोधितहल्लू द्वारहठहरिदासाऽधिकसमुचितवयोवीरविंशतिसप्तक विवाहन, खुरलीक्षमखलूरिका-खेलासमात्तखरखड्ग खेटक द्वं द्वसमायातसमुद्युक्तप्रतिहारमहराज प्रहारच्छिन्नमूर्द्धकोशकृष्टकट्टा रसप्तम पदसम्प्राप्तदत्तप्रहारसप्तक हारराजिरोपाल प्रतिहार महराज निपातन प्रत्यागतराज्योदासीनहल्लू सूचितभावि सम्वत्समयस्वमूर्द्धकालिकोपहारीकरण, कृतकाशीवास-हड्डाधिराजहम्मीर ज्येष्ठकुमारबरसिंह बुंदीपुराधिपत्य प्राप्तिपुनःसूचन, गैणोलीद्रङ्गाधिराजहाम्मीरिलालसिंह पुत्रीपरिणीषुराणाकुमारक्षेत्र-लनिष्कासिकाऽनुष्टान राणाना लीयन्त्रादिसमरसामग्रीसहितसज्जस्वीय-सामन्तसहायकनिर्भीकपरिणिनीषुपुत्रप्रस्थापनं मेकादशो मयूखः ॥११॥ आदितोऽष्टपञ्चाशदुत्तरैकशततमः ॥१५८॥

गढ़ छोड़कर बाहर आये हुए हल्लू का युद्ध में मरने की प्रतिज्ञा की सफलता का समर्थन करना, प्रतिहार से पूजा और प्रार्थना किये गये ऐसे बारहठ लोहठ सामोर का हरराज के पुत्र रोपाल को समझाना और हल्लू का बारहठ हरिदास सामोर सहित उचित अवस्था वाले सात बीसी अर्थात् एक सौ चालीस वीरों को विवाहना, शस्त्रविद्या और अखाड़े की क्रीड़ा में समर्थ तीक्ष्ण खड्ग और ढाल लिये हुए और द्वंदयुद्ध के आघात में उद्यत ऐसे हरराज के पुत्र रोपाल का प्रतिहार महराज को सात पैंड पर पकड़ कर सात प्रहार देकर मारना, अपने राज्य में वापस आकर उदासीन हल्लू का बताए हुए आगे आने वाले सम्वत् में अपने मस्तक को काली के भेंट करना, हड्डाधिराज हम्मीर के काशीवास करने पर उसके ज्येष्ठ कुमार बरसिंह के बूंदीपुर के

अधिपति होने की फिर सूचना करना, गैणोली नगर के पति हम्मीर के पुत्र लालसिंह की पुत्री को विवाहने की इच्छा वाले राणा के कुमर क्षेत्रसिंह का यात्रा करना, राणा का अपने उमरावों की सहायता से निर्भय विवाह करने की इच्छावाले अपने पुत्र को तोपें आदि युद्ध की सामग्री सहित सज्जित करके प्रस्थान कराने का ग्यारहवाँ मयूख समाप्त हुआ और आदि से एक सौ अठावन मयूख हुए।

प्रायो मरुदेशीय प्राकृत मिश्रित भाषा

दोहा

सगपण हामें संधियो, बीखे सो बय बात।
गैणोली खेतळ गयो, बर बणि बिदित बरात॥१॥

कीधा इण खेतलकंवर, आगै चउ उपयाम।
हो इणरै पहिली हुवो, नंदन लाखो नाम॥२॥

पोत रमैं सो पोतपण, बरस पंच मित बेस।
जिण सिसु रो खेतल जनक, आयो ब्याहण एस॥३॥

नीराजन मुख बिधि नियम, साधि लगन पळ साच।
कन्हकंवरि लाल सुकनी, आपी खेतल आच॥४॥

मंहडै दिन चोथै मचे, भूंजाई घणभांति।
जुड़ि संभर सीसोद जन, प्रसरे चोसर पांति॥५॥

बूँदी के राजा हम्मीर हाड़ा ने जो अपनी पोती की सगाई दोनों पक्षों का भला देख कर की थी। इसी सगाई के फलस्वरूप क्षेत्रसिंह (खेतल) गैणोली विवाह करने को अपनी सुन्दर बारात सजा कर गया। इस क्षेत्रसिंह ने इससे पहले चार विवाह कर रखे थे और इस समय तक उसके लाखन (लक्ष्मणसिंह) नामक एक पुत्र का जन्म भी हो गया था। घर पर बाल्यावस्था में खेलने वाले इस बालक की उम्र पाँच वर्ष की थी और इस बालक का पिता क्षेत्रसिंह यहाँ अपना ब्याह रचाने आया। लग्न समय की पालना करते हुए यथासमय बारात पहुँची। दूल्हे की आरती उतारने जैसे अनुष्ठान विधि-विधान पूर्वक पूरे कर लालसिंह हाड़ा की सुकन्या का हाथ क्षेत्रसिंह के हाथ में दिया गया। मांढे वालों ने अर्थात् हाड़ाओं ने चौथे दिन बड़ी गोठ का आयोजन किया जिसमें

उन्होंने भाँति-भाँति का भोजन बनवाया और इस गोठ में चारों ओर पंक्तिबद्ध सिसोदिया और हाड़ा बैठे।

षट्पात्

अतिब्यंजन पळ अन्न रचे जीमण बंछित रस।
आसव छकि आपान बणे जदुबंस जथा बस।
भणी रयण राणबड़ सबळ हाडां कुळ सरणो।
इण दुलही री ओट अनड़ हालू ऊबरणों।
सुणि इम बरात बिहसे सकळ जंपि अतुळ चीतोड़ जय।
बारहठ तेण बारू बळे पूळो दव दीधो प्रबय॥६॥

कई प्रकार के व्यंजनों सहित माँस और तरह-तरह के अन्नों से स्वादिष्ट भोजन बनाया गया। भोजन से पूर्व मद्यपान गोष्ठी में अच्छी-अच्छी शराब परोसी गई। यह मद्यपान की महफिल शराब की प्रचुरता के कारण यादवों की मद्यपान गोष्ठी जैसी बन गई। सारे लोग शराब पी कर मतवाले हो गए। तभी महाराणा के एक सामन्त रयण (रत्नसिंह) ने कहा कि सिसोदिया का घर इन हाड़ाओं की अक्षय शरणस्थली है। इस दुल्हन के बहाने उस अनम्र हाड़ा हल्लू का बचाव हो गया अर्थात् यह शादी नहीं हुई होती तो युद्ध होता। इस बात को सुन कर सारे बाराती हँसे और उन्होंने अतुलनीय चित्तौड़गढ़ की जय कहा। इस उत्तेजना भरे माहौल में महाराणा के बारहठ बारू ने अपनी बात इस तरह मिलाई जैसे जलती हुई आग में घास का गट्ठर (पूला) डाला हो।

भाखी इम बय भली मत्त बारू आसव मद।
अबकी चिरथी एह हुई चण्डासि बंस हद।
चित्रगढहि चहुवाण पृथा पीथल परणाई।
राउळ समर सहाय पुहवि साळै जिम पाइ।
निधि लीध खणे खाटूनगर बधियो सो चीतोड़ बळ।
इम लाल सुता सांटै अनड़ बाजै बचि हालू बिकळ॥७॥

बारहठ बारू ने भी नशे की पिनक में कह दिया कि यह कोई पहली बार ही नहीं हुआ है यह तो चिरकाल से चहुवान वंश के साथ होता आया है। पृथ्वीराज चहुवान ने भी अपनी बहन पृथा का विवाह चित्तौड़गढ़ इसी कारण

से किया था। फलस्वरूप रावल समरसिंह ने अपने साले पृथ्वीराज की सहायता करने के लिए युद्ध लड़ा। रावल के साले ने खाटू नगर के पास जमीन खोद कर समरसिंह के साथ जो धन प्राप्त किया उसी के सहारे विकास किया। यह सब चित्तौड़गढ़ की बदौलत ही संभव हुआ। इसी प्रकार आज हाड़ा राजा लालसिंह की पुत्री के विवाह के बदले में ही हाड़ा राजा हल्लू अपने आपको बचा पाया।

राण सुहड़ राठोड़ प्रथम तिण रयण प्रजाळी।
बारू धरि बारूद बळे भाखर चढि बाळी।
कीधो दुल्लह कंवर मिरा छकिये अनुमोदन।
बहियो भावी बिखम नरां रहियो सु बिनोद न।
जंपियो सुकवि लोहठ जरैं सुता जाइ आवै सगां।
कुनरेस किसो जिण बळ कहो भू भोगै पाछा पगां ॥८॥

महाराणा के सामन्त राठौड़ रयण (रत्नसिंह) ने जो चिनगारी उछाली उसमें बारहठ बारू ने अपनी ओर से बारूद डाल दिया। जब मय में छके हुए दूल्हे कुमार क्षेत्रसिंह ने इस बात का अनुमोदन किया तब तो मानो वह ज्वाला पर्वत पर चढ़ गई हो अर्थात् बात शनैः शनैः बढ़ती ही गई। इससे भविष्य विषम होते देख कर अर्थात् बात तनती हुई देख सरदारों की गोष्ठी में विनोद का वातावरण जाता रहा। इसी समय हाड़ाओं की ओर से लोहठ सामोर ने कहा कि जब पुत्री विदा हो कर जाएगी तब ये समधी भी चले जाएँगे पर उस खराब राजा का कैसा बल जो अपने पाँव पीछे दे कर भूमि का भोग करे।

पृथीराज री पुहवि समर राउळ राखी सो।
नरनर उर छानी न सुकवि ग्रंथां साखी सो।
तेज समरनृप तात गहे जदि छळि मंडलगढ।
बंबावद रैणगढ रैण रचिया रावणरढ।
उण ठाम तपे हाडो अनड़ पुर गढ लै आवद प्रमुख।
संताप पटकि चीतोड़सिर रहियो एकल बाघरुख ॥९॥

उसने आगे कहा कि पृथ्वीराज की भूमि को राणा समरसिंह ने रखा? यह बात तो बच्चा-बच्चा जानता है और ग्रंथों में भी इस बात के प्रमाण भरे

पड़े हैं कि किस तरह छल कपट से समरसिंह के पिता ने चहुवानों का मांडलगढ़ छीना था। रावण की तरह हठ पालने वाले चहुवान रत्नसिंह ने तब बंबावद और रैणगढ (रत्नगढ़) को अपने अधिकार में कर नये राज्य की स्थापना की। यहाँ राज करते हुए उसी अनम्र हाड़ा ने जावद का गढ़ और उस क्षेत्र के कई गाँव जबरन महाराणा से छीने थे। वह हाड़ा सिंह की तरह चित्तौड़गढ़ पर अपना आतंक फैलाते हुए जिया।

सो कुळबाट सम्हालि बळे नृप बंग महाबळ।
पुरमंडल मुख प्रांत खंडि लीधा आहड़ खळ।
अब हालू रण असह कंवर दुल्लह घायल करि।
जुगकाका हणि जेण धरा दाबी पाणिप धरि।
मोड़ियो राण हामैं सुमति करि सगपण सो हित कियो।
सीसोद नतो चीतोड़ सिर जाइ कवण उणरण जियो॥१०॥

इसी कुल मर्यादा की राह पर महाबली राजा बंगदेव आगे बढ़ा और उसने आहाड़ों (सिसोदियों) को मार कर अपना मांडलगढ़ का दुर्ग और उस क्षेत्र को स्वयं के बल से वापस अर्जित किया। इसके बाद वर्तमान में जीवित राजा हल्लू ने महाराणा के इसी दूल्हे पुत्र को घायल कर दो चाचाओं को मारा और अपने पराक्रम से महाराणा की भूमि को अपने अधिकार में किया। यह तो अभी थोड़े दिनों पूर्व ही की बात है जब बूँदी के स्वामी हम्मीर हाड़ा ने सुमतिपूर्वक इस सगाई का प्रस्ताव कर युद्ध को टाला अन्यथा चित्तौड़गढ़ पर जाकर सिसोदिया कैसे सुखपूर्वक जी लेते।

दोहा

आणी सो मुख बात अब, हालू बचण सहाय।
गड लखमण रै हींगळू, हुवो भीड़ तिम हाय॥११॥

काका अजय तणी कनी, प्रभावति करि पेस।
बूँदी नृप बरसिंह नूं, अपणायो नय एस॥१२॥

जाणो तो सगपण जुड़ै, समकुळ बळ अनुसार।
सुता जनक जै हीण सब, दो भी अधिक उदार॥१३॥

पृथीपाळ नृप परणियो, चाहुवाण चीतोड़।
उत्तम राउळ अंगजा, माथै धरि जस मोड़॥१४॥

सेनपाल तिण भूप सुत, किरणादीत कुमार।
सर सों तजियो मूंडि सिर, सीह पछाड़ि सिकार॥१५॥

लोहठ सामोर ने आगे कहा आपने भी अच्छी बात कही कि यह सगाई उस वीर हल्लू हाड़ा को बचाने के लिए की गई। आप लोग भूल रहे हैं जब महाराणा गढ़लक्ष्मण सिंह की रक्षा के लिए हिंगलू हाड़ा सहायक बना था। इसी के कारण काका अजयसिंह की कन्या प्रभावती को ब्याहना पड़ा था और नम्र हो कर बूँदी के राजा बरसिंह को दामाद बनाना पड़ा था। यदि आप जानते हो तो सगाई हमेशा दो बराबर की हैसियत वाले कुलों में ही होती है। वे कुल बल में भी समान होते हैं। बेटी के बाप यदि हीन होते हों तो दोनों ओर के हीन होते हैं। चहुवान राजा पृथ्वीपाल ने भी मेरी समझ में चित्तौड़गढ़ ही विवाह किया था। उसने भी दूल्हा बन कर माथे पर यश का मोड़ बांधा और वह चित्तौड़गढ़ के उत्तम रावल की पुत्री से ही ब्याहा था। तब क्या वे हीन हो गये थे? रही बल और वीरता की बात तो इसी राजा पृथ्वीपाल के पुत्र राजा सेनपाल ने आगे (पूर्व में) कुमार किरणादित्य के अपने धड़ से उसका मस्तक यों तोड़ लिया था जैसे सिंह अपने शिकार का सिर तोड़ता है।

कहणों जिण कुळ रो किसूं, बिरुद सुजस बाखाण।
ब्याह न होतो तो बळे, पूंचै लखता पाण॥१६॥

इस हाड़ा कुल की वीरता का क्या कहना मैं इनके विरुद का कितना बखान करूँ। क्या सुयश गिनाऊँ। यदि यह विवाह का अवसर नहीं होता तो आप लोग स्वयं इनके पोंचे का बल देखते अर्थात् आप इनके बल को परख कर हाथोंहाथ उसका मुलाहिजा कर लेते।

नृप हालू आयो नथी, सहि हायन ज्वर संग।
बुंदी नृप बरसिंह सो, आयो मिलण उमंग॥१७॥

जिण कुबैण सहियो जिको, रहियो बैठो राव।
लाल सु चुप अग्रज लखे, ऊफणियो अणमाव॥१८॥

इस विवाह के अवसर पर राजा हल्लू नहीं आ पाया था क्योंकि वह पिछले एक वर्ष से ज्वर से पीड़ित था। पर बूँदी का राजा बरसिंह मिलने की उमंग सहित आया। चित्तौड़गढ़ वालों के ऐसे कुवचन सुन कर भी राजा

लालसिंह चुपचाप बैठा रहा पर जब उसने यह देखा कि दूल्हे के अग्रज भी कुछ नहीं बोल कर मात्र तमाशा देख रहे हैं तो उसे तैश आ गया। वह क्रोध में उफनने लगा।

षट्पात्

लखि चुप अग्रज लाल जन्य मत सुहि दुल्लह जुत।
स्वसुता हल्लुव संटि दई सुनि सहि कही न द्रुत।
बारू जब बिप्फुरिय कहन संकल्प तबहि किय।
पै लोहठ निजपात्र लाल पहिलैं सु ओढि लिय।
कुल दुव समान ब्याहन कहे तदनंतर खिन कहन तकि।
संबोधि कवि सु बारू सहज कहिय लाल इम छोह छकि॥१९॥

हाड़ा राजा लालसिंह ने जब यह देखा कि बारात के बुजुर्ग कुछ नहीं कह रहे और दूल्हे का भी लगभग यही मत है जो बारात का है कि अपनी बेटी का हाथ हाड़ाओं ने इसलिए दिया कि युद्ध न हो और राजा हल्लू का बचाव हो जाए। पहले तो थोड़ी देर वह चुप हो कर सुनता रहा। जिस समय बारू बारहठ यह सब सुना रहा था राजा ने क्रोधित हो कर जवाब देना चाहा पर उससे पहले ही उसके पोलपात्र लोहठ सामोर ने आ कर बात को झेल लिया। जिस समय बारू ने यह कहा कि सगाई संबंध तो अपने बराबरी वाले कुल में ही शोभा देते हैं तो उससे रहा न गया।

बारू कुळगति बदहु गर्व न बदहु बालिस गति।
कविकुल सच्चहि कहत मन्त्रि तुम रीति सुपै मति।
चित्तोरहु तब चविय कढत प्रतिमा सु च्यारि कर।
कवन रानसन कहत सूर दायक अग्रेसर।
बरजन त्रि लोक कर त्रि क बिहित कर चोथो गलधरि गहत।
जो होइ अपर हम्मीर जिम मम कर मम सिर छेद मत॥२०॥

कुपित हो लालसिंह ने बारू को संबोधित करते हुए कहा कि हे बारू! चारण लोग सदैव सत्य कहते हैं। तुम्हें भी अपने कुल की रीति का पालन करते हुए सत्य कहना चाहिए। एक दर्प से भरे मूर्ख की तरह अनर्गल प्रलाप नहीं करना चाहिए। तुमने चित्तौड़गढ़ म किसी निर्माण के समय निकली चार हाथों वाली मूर्ति को देख कर क्या कहा था कि राणा के समान

वीर और दानी तीनों लोकों में नहीं है। और यह भी तुमने ही कहा था ना कि यह मूर्ति चौथा हाथ अपने गले पर रख कर कह रही है कि यदि कोई अन्य राजा राणा हम्मीर के समान मिल जाए तो मैं अपने हाथ से अपना सिर कलम कर लूँ।

जंपि रान गुन जुग हि मन्त्रि तुम सबन सिरोमनि।
सिर कट्टन दिय सपथ भार प्रतिमा जड़ पैं भनि।
छिति रजपूतन छाइ रचैं घरघर बितरन रन।
जिनमें बहु रान जिम बढ़त बहु जिम बिटपी बन।
श्रद्धा उपेत बढि रान सन जैहैं बहु हम सक्खि जंहं।
कट्टैन सीस प्रतिमा स्वकर तुमहु निबाहक बचन तंहं॥२१॥

तुमने महाराणा के ये दो गुण देख कर ही मान लिया कि वे सबके शिरोमणि हैं तुमने शपथपूर्वक उस जड़ प्रतिमा के सिर पर हाथ दे कर कहा था। तुम उस समय यह भूल गए कि यह पृथ्वी राजपूतों से भरी है। यहाँ घर-घर में वीर और दानी है। वन में जिस प्रकार एक से बढ़ कर एक पेड़ होते हैं वैसे ही इस संसार में राणा से भी बढ़ कर हो सकते हैं। पूरी श्रद्धा के साथ हम कहते हैं राणा से बढ़ कर हो जाएँगे तब तुम इस बात की साक्षी देना और उस मूर्ति के वचन को निबाहना क्योंकि वह मूर्ति अपने हाथ से अपना सिर नहीं काट सकती है।

बारू प्रत्यय बिदित लेहु ताको हमसों लहु।
इतहु सूरपंन अधिक पै सु सत्रुन सम्मुह पहु।
बितरन मित इत बढत प्रथित प्रत्यय तस पावहु।
अबहि सीस छिति इतर जोहि मंगहु ले जावहु।
मंगनहिं मत्थ जो हड्डु हम कट्टि न दैहैं तो कुलहिं।
लग्गहिं कलंक संबर्त्त लग तृन जाचक तुलना तुलहिं॥२२॥

हे बारू! हमने जो अभी कहा उसका प्रमाण हाथों हाथ लो। वीरता में भी हम बढ़ कर हैं पर इसका प्रदर्शन तो अच्छे बराबरी वाले शत्रु के समक्ष ही हो सकता है यहाँ नहीं। अब रही दान की बात तो इस संदर्भ में यह निवेदन है कि इसका प्रसिद्ध प्रमाण भी तुम्हें अभी मिल जाएगा। तुम अब चाहे सो माँगो। भूमि अर्थात् जागीर या अन्य कोई सामग्री तुम्हें अभी यहीं मिल जाएगी। तुम यदि मस्तक भी माँगों तो मैं हाड़ा अभी अपना मस्तक

काट कर तुम्हें सौंप दूँगा। यदि न दूँ तो मेरे कुल पर कलंक लगे और प्रलय काल तक याचक लोग मुझे तृण के समान समझें।

मस्तक अरु भुव मैंहु देत मंगहु इक वा दुव।
जामाता बिनु जुद्ध होहु तु हम दाता हुव।
अब मंगहु इक्क हु न होहु तो निजकुल बाहिर।
दै हैं न जु कहि दैन हमहु बाहिर कुलतें किर।
रानके रहहु जो बारहठ प्रधन दान तो अब परखि।
कै कट्टि सिरहिं रक्खहु कथित कै ओढहु तियपट करखि॥२३॥

मस्तक और भूमि में से जो आपकी इच्छा हो वह माँग कर देखो मैं देने को तैयार हूँ। अपने जामाता को टाल कर यदि युद्ध भी माँगोगे तो युद्ध में भी आप देखोगे कि दाता हम ही होंगे। अब इन सारे विकल्पों में से एक मांग कर देखो यदि मैं ना करूँ तो अपने समाज से च्युत हो जाऊँगा। अभी मैंने जो देने का कहा है वह यदि न दे पाऊँ तो हमें तुरन्त जाति बाहर कर देना। आप चित्तौड़गढ़ महाराणा के बारहठ हो असली युद्ध और दान की परख तो कर देखो। आपके माँगते ही अपना मस्तक न काट कर धर दूँ तो वचनहीन होकर अपनी पत्नी की साड़ी ओढ़ लूँगा अर्थात् घूँघट निकाल लूँगा।

दोहा

कै प्रतिमा सों उचित कहि, स्वकर कटावहु सीस।
नतो बिडारहिं संढ निभ कत्थन रान कवीस॥२४॥

बरज्यो नृप बरसिंह बहु, ए आसव जड़ अत्थ।
बारू पनबोरन बढिय, तदपि लाल धकि तत्थ॥२५॥

अग्रज सन किन्नी अरज, कहत न तुम तिय कानि।
कन्या कानि न मैं करत, पन ऋत अमृत प्रमानि॥२६॥

जामाता मैं तजत जंहं, कन्यादित करिबो न।
अक्खहिं बुधजन निंदि इम, लग्नढिगहिं लरिबो न॥२७॥

फिर तुम प्रतिमा से यह सही बात कह कर उससे अपना सिर कटवाना यदि पुतली ने मस्तक नहीं काटा तो हे महाराणा चित्तौड़गढ़ के कविराज! आपकी बातों को नपुंसक की भांति सत्वहीन समझ कर हम अपनी स्मृति से निकाल बाहर करेंगे। यह सुन कर बूँदी के हाड़ा राजा बरसिंह ने बहुत रोका

कि तुम अभी शराब के नशे में हो पर वह लालसिंह नहीं रुका। उसने बढ़ कर बारू से कहा कि यह मेरा प्रण है और मैं इसे पूरा करूँगा। इसके बाद उसने अग्रज से विनती की कि आप भी उधर के पक्ष की मत कहो। मेरे लिए कन्या के हित से अधिक महत्व की बात यह है कि प्रतिज्ञा अथवा कहे हुए को सत्य कर दिखाना अमृत के समान है। मुझे नहीं करना कन्यादान, नहीं देनी अपनी पुत्री और मैं अपने दामाद को भी त्याग सकता हूँ पर बुद्धिमान लोग क्या कहेंगे कि लग्न के समय लड़ाई की। मैं उनकी ओर से होने वाली मात्र इस निंदा से डर रहा हूँ।

षट्पात्

अग्रज मति इम अक्खि पुनि सु बुल्लिय बारूप्रति।
ससिर बिभव मम सकल मंगि लेहु ब प्रतीत मति।
हड्डु न जो दैहों न समरलैहों न रान सन।
तुम चारन तो तकहु परख दातार सूरपन।
लेहु कि न लेहु हमहिं सु हठ न रान बिकत्थन मोघ रचि।
रक्खिय अयोग्य प्रतिमा पर सु बक्कुहु सिर रहनों न बचि॥२८॥

अपने अग्रज से इतना कह कर वह बारहठ बारू से मुखातिब हुआ हे बारू! तू मेरे मस्तक सहित मेरा सारा वैभव माँग कर देख और विश्वास कर यदि हम हाड़ा तेरी माँगी वस्तु न दें अथवा तेरे महाराणा से लोहा न लें तो तुम चारण होने के नाते हमारी सारी परख कर लेना। यह सुन कर बारु ने भी सोचा कि लूँ अथवा नहीं लूँ अर्थात् माँगू कि न माँगू। क्या मैं कुछ माँग कर महाराणा का कथन झूठ नहीं कर डालूँगा। उन्होंने अपना बारहठ बना कर मुझे अयाची बनाया है माँगते ही उनकी बात निरर्थक हो जाएगी। अब तो लगता है तीसरा विकल्प ही एक रास्ता है। अब इस अयोग्य मूर्ति के सिर पर सिर कैसे बचे बारू सोच में पड़ गया।

दोहा

उट्ठि अतृप्तहि असन सन, रुट्ठि सु बर रु बरात।
सब निंदत आये सिबिर, बदत लाल यह बात॥२९॥

बारूव सोदा मद्य बस, अति लाघव आपन्न॥
रक्खि थाल पठयो स्वसिर, छेदि पटालय छिन्न॥३०॥

लाल निकिय सोकहु सुलखि, ओकहु असुहु अनेक।
बुझ्झिय जे चुक्कत बचन, उनकों हितगति एक ॥३१॥

इस संवाद से बारात और दूल्हा सारे भोजन के बीच से भूखे ही उठ गए और हाड़ा लालसिंह ने जो बात कही उससे रूठ कर अपने शिविर में आए। सारे उसकी बात का बुरा मान कर उसकी निंदा करने लगे। यहाँ आ कर बारू नामक सोदा बारहठ (महाराणा के चारण) ने शीघ्र ही आपदा का कारण स्वयं को मानते हुए गुप्त रीति से चुपके ही अपना सिर काट कर एक थाल में रखवाया और उसे मांढे के डेरे अर्थात् हाड़ाओं के पास भिजवा दिया। हाड़ा राजा लालसिंह के यहाँ उसे देख कर पूरे घर में उपस्थित लोगों ने कहा कि जो वचन बोलने में चुक जाते हैं उनकी एक यही गति होती है।

षट्पात्

सु सुनि भूप बरसिंह उपालंभहि अनुजहिं दिय।
खित्तल सुनतहिं खिज्जि स्वसुर मारन संधा लिय।
उज्झि मिलन आगमन स्वसुरगृह सनय असन सह।
मंडि बिबिध मोरछन दियउ रन हुकम दुराग्रह।
नासीर रक्खि तोपन निकर गैनोली दिय दल गरद।
बरसिंह नृपहु समुझाइ बहु हुव दुर्मन छोरी न हद ॥३२॥

बारू चारण के इस कृत्य का समाचार जब बूँदी के राजा बरसिंह ने सुना तो उसने अपने छोटे भाई को उलाहना दिया। उधर दूल्हे राजा क्षेत्रसिंह ने जब सुना तो उसने अपने श्वसुर को मारने की प्रतिज्ञा कर डाली और उसने ससुराल के लोगों से मिलना छोड़ दिया। आना-जाना भी छोड़ दिया यहाँ तक कि वहाँ जीमने जाने का भी बहिष्कार कर दिया। दुराग्रह से भरे कुमार क्षेत्रसिंह ने तुरन्त ही अपने साथियों से मोर्चा लेने की बात कही। आगे ही आगे तोपों का समूह रखा और उसके पीछे अपना दल रख कर शीघ्र ही महाराणा के दल ने गैणौली नगर को घेर लिया। हाड़ा राजा बरसिंह ने बीच बचाव करते हुए बहुत समझाया कि यह अच्छा नहीं है तब भी वह कुमार टस से मस नहीं हुआ।

उदासीन दल अप्प रक्खि तंहं कहिय धर्मरत।
जो न दुलहि लैजाइ मरन मारन इच्छैं मत।

उत दुल्लह इत अनुज बीर तो जुग हिं बचावहु।
इमकहि बुंदिय आत चविय बर तुमुल रचाव हु।
हड्डुहिं समत्थ तोपन हनहिं कुमरहिं इम सुभटन कहिय।
तोपन अलात लगिलगि तदनु दिसदिस पुर परिसर दहिय॥३३॥

बूँदी के राजा बरसिंह ने जब यह देखा कि समझाने का कोई असर नहीं है तो उसने अपने दल को वहीं रख कर कहा कि धर्माचरण के अनुसार दूल्हा अपनी दुल्हन को नहीं ले जाकर मरने मारने पर उतावला है। उधर दूल्हा और इधर छोटा भाई दोनों जिद पर अड़े हैं। अपने सैनिकों से कहा कि इन दोनों को छोड़ कर तुम बढिया युद्ध करना। इतना कह कर राजा तो बूँदी के लिए रवाना हो गया। उधर कुमार क्षेत्रसिंह ने अपने योद्धाओं से कहा कि इन सर्वसमर्थ बनते हाड़ाओं को मार कर मजा चखाओ। कुमार के इतना कहते ही तोपों पर अग्नि लगा कर उन्होंने नगर के समीप वाले सारे क्षेत्र को जला डाला।

रान बारहठ मरन सुनत अंतर अति सोचिय।
दल सुत प्रति लिखिदियउ कियउ खलहड्डु कुलोचिय।
तू जो है मम तनय बैर बारूभव बालहु।
तब आवहु चित्तोर लहैं चारनगति लाल हु।
कुमरहिं कहाइ इम निजकटक पठयो खिल गैनोलिपुर।
लाल हु रचाइ तोपन लरन परन मरन मंडिय प्रचुर॥३४॥

इधर चित्तौड़गढ़ के महाराणा ने जब अपने बारहठ के मरने की सुनी तो उन्होंने मन ही मन सारी बातें सोच कर अपने पुत्र कुमार क्षेत्रसिंह को पत्र लिखा कि दुष्ट हाड़ाओं ने अत्यन्त हेय कार्य किया है। अत: यदि तू मेरा पुत्र है तो बारू का वैर ले कर ही रहना। जो गति बारू की हुई (अर्थात् वह मर गया) वही गति उस हाड़ा लालसिंह की करने के बाद ही चित्तौड़गढ़ लौटना। अपने पुत्र को यह निर्देश भेज कर महाराणा ने अपनी सेना का एक दल सहायता के लिए गैणोली नगर के लिए रवाना किया। इधर हाड़ा लालसिंह ने भी तोपों के आगे अपने वीर झोंक कर शत्रुदल में प्रबल मारकाट मचाई।

दोहा

हल्लू नृप तिहिं काल हो, खट्वागत ज्वर खीन।
चवि नृपकृत सुतचंद्र सों, पठये स्वभट प्रवीन॥३५॥

बाहिर तैं सौप्तिक बिरचि, कट्टतहुव ते क्रुद्ध।
पुर तैं लाल बरातपर, जोर्‌यो तोपन जुद्ध॥३६॥

इम जुज्झत हुव अब्दइक, तजिय रान तनु जत्थ।
सुनि खित्तल व्है रान सब, जोधन बुल्लिय जत्थ॥३७॥

बिगर्‌यो तोपन पुरबरन, पग पग मग तिम पाइ।
कल्हि तुरंगन बीचकरि, हड्डुहिं लैहिं गहाइ॥३८॥

उधर बंबावद का राजा हाड़ा हल्लू उस समय ज्वर से दुर्बल हो कर चारपाई पर पड़ा था उसने जब इस युद्ध का सुना तो उसने तुरन्त राज्य भार सौंपे हुए अपने बेटे चन्द्र को बुला कर कहा कि तुम वहाँ सहायता के लिए जाओ और अपने योद्धाओं को साथ ले जाओ। कुमार चन्द्र ने वहाँ पहुँच कर बाहर से बारात रूपी शत्रु सेना पर रात्रि में अचानक धावे बोलना शुरू किया और गढ़ के भीतर से लालसिंह हाड़ा ने तोपों से मुकाबला शुरू किया। इस तरह लगातार लड़ते हुए एक वर्ष की अवधि व्यतीत हो गई। इसी दौरान महाराणा ने चित्तौड़गढ़ में अपना शरीर त्याग दिया। यह सुनते ही स्वयं महाराणा बनकर क्षेत्रसिंह ने अपने योद्धाओं को बुला कर कहा कि तोपों के प्रहारों से गैणोली के दुर्ग की शहर पनाह जगह-जगह से टूट गई है। अब वहाँ जगह-जगह पर भीतर प्रवेश करने के रास्ते बन गए हैं इन रास्तों से हम कल अपने सवार योद्धाओं को भीतर भेज कर हाड़ाओं को बंदी बना लेंगे।

षट्पात्

यह कुमंत्र आलोचि विखम रजनी सु बहाइय।
सुनत बरातिन सोंह कलित यह लाल कहाइय।
मम सम्मुह जामात आन देहु न पटु तुम अति।
क्यों हत्याबस करहु मरहु तुम टरहु प्रसभ मति।
दुज्झहु होत दिनकर उदय स्वसुर उक्त इम बचन सुनि।
सुभटन निवारि दै निज सपथ पन लिय लाल हिं हनन पुनि॥३९॥

शत्रु पक्ष की इस कुमंत्रणा का पता जब हाड़ा लालसिंह को लगा तो उसने अपनी रात्रि पूरे कष्ट में गुजारी और प्रातः होते ही उसने बरातियों (शत्रु पक्ष) से यह प्रसिद्ध बात कहलवाई कि बरातियो! तुम सभी लोग चतुर हो पर एक बात का ध्यान रखना कि मेरे दामाद को मेरे सामने मत पड़ने देना।

अपनी हठ बुद्धि से काम मत लेना और जहाँ तक बन पड़े मुझे इस हत्या के दोष से बचाना। उधर जब दूल्हे (क्षेत्रसिंह) ने सूर्योदय के समय अपने ससुर के कहलाए वचन सुने तो उसने अपने योद्धाओं से कहा कि तुम्हें मेरी सौगंध है उस लालसिंह को छोड़ देना और अब मैं शपथपूर्वक यह कह रहा हूँ कि उसे मैं स्वयं मारूँगा।

नृप बरसिंह हु नियत मरन तिनको बिचारि मन।
बूँदी सन चढि बहुरि उभय साधक हुव अप्पन।
प्रबदिय रानहिं प्रथम जई तुम न हम रहैं जिम।
हड्डुन हारि हकाइ ससुख प्रबिसहु अगार इम।
बारू कविंद बदलै बहुरि भर्म लहहु बपु तुल्य भर।
आसान करहु हड्डुन उपरि तो तुमत्तों हम चकित तर॥४०॥

उधर हाड़ा राजा बरसिंह ने मरने का मन में दृढ़ निश्चय कर बूँदी से प्रस्थान किया और दोनों पक्षों को अपना ही मानते हुए उनके हित को सोच कर महाराणा से कहा कि इस युद्ध में न तो आप और न हम विजयी हुए। आप हाड़ाओं को हराने की जिद छोड़ कर सुखपूर्वक अपने पर चित्तौड़गढ़ को पधारो। रहा सवाल बारू बारहठ के वैर का तो इसके लिए निवेदन है कि आप बारू बारहठ के वजन के बराबर हमसे सोना ग्रहण करें। ऐसा कर आप हम हाड़ाओं पर अहसान करेंगे? मेरा तो आपको यही मशवरा है।

सुनि मम बिन्नति सदय जाहु निजगृह दुलही जुत।
दुहिता बिच को दोस नारि तुमरी कुलीन नुत।
बरसिंह हिं इम बिदित खिग्जि बुझिय सठ खित्तल।
महिलाजित तुम मंद मैं न तिम नियत महाबल।
प्रभावति लत्त सहि तू सभय रहत तिम न कुलनृप रहैं।
बरसिंह नयन इतनी बदत दव जग्गिय जनु सब दहैं॥४१॥

उसने आगे कहा कि हे महाराणा! मेरी आपसे यही विनती है कि आप कृपा कर अपनी दुल्हन के साथ अपने घर जाएँ। इसमें उस कन्या का कोई दोष नहीं। वह आपके कुलीन घराने की बहू है। बूँदी के राजा बरसिंह से यह

विनम्र राय सुनते ही मूर्ख क्षेत्रसिंह कुपित हो कर कहने लगा कि मैं आपकी तरह महिलाओं द्वारा विजित (अर्थात् जोरु का गुलाम) मूर्ख नहीं हूँ। जिस प्रकार आप अपनी स्त्री प्रभावती की लात खा कर डरे हुए रहते हैं उस तरह हमारे कुल के राजा नहीं रहते। यह सुनते ही हाड़ा राजा बरसिंह की आँखों से आग बरसने लगी मानों यह अभी सभी कुछ जला कर खाक कर देगी।

बुंदियपति खिजि बदिय प्रथित तावक नृपत्वपन।
जनकमाइ जिम जाइ सीर हंकिय पटुतासन।
सिंचिय खेतन सलिल स्वकुल नारिन जीवन सम।
तास उदर तवतात हुव सु कुलता न भजैं हम।
इतनी सुनाइ रानहिं उचित भूप अनुज सत्थिय भयो।
आदित्य चढत घटिका उभय लरन चाव दुव दिस लयो ॥४२॥

क्रोधित स्वर में हाड़ा बरसिंह बोला कि आपके प्रसिद्ध नृपत्व को भी मैं बखूबी जानता हूँ। मुझ से कुछ पोशीदा नहीं। मैं यह भी जानता हूँ महाराणा! कि आपके पिता की माँ खेतों में हल चलाने में निष्णात थी। आपके कुल की प्रसिद्ध महारानी खेतों को पानी दिया करती थी उसकी ही कोख से आपके पिता ने जन्म लिया। आप मेरे सामने अपने कुल की उच्चता का बखान मत कीजिये। महाराणा क्षेत्रसिंह को इस तरह खरी-खरी सुना कर बूंदी का राजा बरसिंह भी अपने भाई लालसिंह का साथी हुआ अर्थात् उसके साथ हो गया। सूर्योदय के दो घड़ी बाद दोनों पक्षों की ओर से पूरे चाव के साथ युद्ध शुरू हुआ।

सह बरात सीसोद सप्ति नक्खिय पुर सम्मुह।
पानिप बीर न प्रसरि भयो भीरु न दुस्सह दुह।
लखि बरसिंह रु लाल दोर सत्रुन पुर दब्बन।
हल्लू भटगन सहित अभय हंकिय निज अब्बन।
बिच मितल बाढ खग्गन बजिग लालहि खित्तल आत लखि।
बलसोंहु अग्ग अभिमन्यु बिधि अंतिक तम बढिगो अनखि ॥४३॥

चित्तौड़गढ़ वाली सिसोदिया की बारात ने नगर की ओर अपने घोड़े बढ़ाए जिससे वीरों में पराक्रम का उद्भव हुआ और कायरों के मन को क्लेश

पहुँचा। हाड़ा बरसिंह और लालसिंह दोनों भाइयों ने जब देखा कि अपने नगर को हड़पने शत्रु बढ़े चले आ रहे हैं तो उन्होंने भी प्रत्युत्तर में मुकाबला करने के लिए राजा हल्लू की सेना सहित सामने अपने घोड़े बढ़ाए। दोनों सेनाओं का बीच में मिलन हुआ। दोनों ओर से तलवारें बजीं। इसी समय हाड़ा लालसिंह ने देखा कि वह कुमार क्षेत्रसिंह तो ठीक अभिमन्यु कुमार की तरह अपनी सेना से भी आगे अपनी ओर बढ़ा चला आ रहा है तो कुपित हो वह उसे रोकने के लिए बढ़ा।

दोहा

सेस अरिन बरसिंह किय, रोध जयद्रथ रीति।
बिरचि तुमुल झेले बिचहि, जन्य प्रबीरन जीति॥४४॥
रतनसिंह रट्ठोर अरु, संभर रूप सबेग।
दुलह सत्थ पहुँचे दुव हि, त्रय सय बग्जिय तेग॥४५॥
इतर बरातहिं रोकि इत, सह बंबावद सेन।
रचि बरसिंह हु सिंह रन, अखिल करे जिम एन॥४६॥

शेष सारे शत्रुदल को बरसिंह ने क्रोधित हो कर जयद्रथ की तरह आगे बढ़ने से रोका। उसने भीषण युद्ध करते हुए बारात की अगवानी तलवारों से की और सिसोदियों को परास्त करते हुए रोके रखा। इसी समय रत्नसिंह राठौड़ और चहुवान रूपसिंह दोनों दूल्हे के साथ हुए और वे तीनों अपनी तलवारों को पूरे वेग से चलाते हुए बढ़े। शेष सारी बरात को बरसिंह ने बंबावद की सेना की सहायता से रोके रखा। हाड़ा बरसिंह अभी इस समय साक्षात सिंह हो कर डटा और जैसे सिंह पूरे हरिणों के दल को रोक लेता है उसी तरह उसने भी शत्रुदल को रोक लिया।

षट्पात्

मिलि इम खित्तलकुमर लाल स्वसुरहिं समीप लिय।
रतनसिंह रट्ठोर लाल उर भल्ल दुसह दिय।
लाल तुपक कर लै सु रतन बिनु प्रान गिरायउ।
पिसि हय ऊंधोपरत रूप परलोक निरायउ।

लै कान अवधि पुंखन दुलह स्वसर स्वसुर हिय तकि हन्यों।
हय भाल लगि सु गल पार व्है बामक सय भेदक बन्यों॥४७॥

इस बीच हाडा लालसिंह को दूल्हे राजा क्षेत्रसिंह ने अपने समीप लिया और तभी साथ वाले योद्धा रत्नसिंह राठौड़ ने हाड़ा लालसिंह के सीने पर अपने भाले का दुस्सह प्रहार किया। इस प्रहार से संभल कर तपाक से हाड़ा राजा ने अपनी तलवार के एक ही वार से रत्नसिंह को प्राणविहीन कर रणभूमि में पटका। अपने अगले वार में रूपसिंह का घोड़ा काट कर चहुवान को जमीन पर उल्टा गिराया। रूपसिंह चहुवान ने भी चहुवान के वार से परलोक को अपने समीप लिया। अपने दोनों साथियों को इस तरह मरा हुआ देख कर दूल्हे क्षेत्रसिंह ने एक तीर को कान तक खींच कर अपने श्वसुर का निशाना ले कर चलाया। तीर सीधा हाड़ा लालसिंह के हाथ को भेदकर घोड़े के ललाट पर लगा और घोड़े के गले को चीरता हुआ निकल गया।

दोहा

परतपरत हय लाल पहु, छुट्टी संगि उछारि।
दुल्लह छत्तिय बेधि द्रुत, महिप रान लिय मारि॥४८॥

सुभट भूप बरसिंह को, रन दाहिम बलराम।
भट्टिय बीरम रानभट, कटि दुव आये काम॥४९॥

पंद्रहसत इत उत परे, समर हड्ड सीसोद।
लजि बरात चित्तोरलिय, विगरिय ब्याह बिनोद॥५०॥

खित्तलसुत वयबरस खट, नृपहुव लखपति नाम।
लिय पन बुंदिय लैनको, इहिं सिसुपन उद्दाम॥५१॥

बपु नरेस बरसिंह कैं, इत छ घाय लगि अंग।
लिय पाटव उपचार लहि, भायो नन रन भंग॥५२॥

घोड़े के जमीन पर मर कर गिरते-गिरते राजा लालसिंह के हाथ की बरछी छूटी जो सीधी दूल्हे राजा का सीना चीरती हुई पार निकल गई। राजा ने राणा को मार लिया। इसी बीच बूँदी के राजा बरसिंह को युद्ध में दाहिमा बलराम तथा बीरमदेव भाटी दोनों महाराणा के योद्धाओं ने रणभूमि में घायल कर गिराया और इस भिड़ंत में दोनों योद्धा काम आए। इस युद्ध में हाड़ाओं

और सिसोदियों के पन्द्रह सौ योद्धा मारे गए। दोनों पक्षों में यह नुकसान हुआ। फिर दूल्हे के मरने पर लज्जित हो कर बारात चित्तौड़गढ़ लौटी। इस तरह विवाह को विनोद ने बिगाड़ डाला। राणा क्षेत्रसिंह का पुत्र तब अपनी छह वर्ष की शिशुवय में मेवाड़ की राजगद्दी पर बैठा। इस लाखा नामक राणा ने अपनी बाल्यावस्था में ही प्रतिज्ञा की कि एक दिन बूँदी को ले कर रहूँगा अर्थात् अपने पिता का वैर हाड़ाओं से जरूर लूँगा। इधर बूँदी के हाड़ा राजा बरसिंह के शरीर पर इस युद्ध में छह गहरे घाव लगे पर उचित इलाज से वापस राजा ने नैरोग्यता पाई अर्थात् वह स्वस्थ हो गया और इस प्रकार बूँदी में भी रंग में भंग पड़ने से रह गया।

लाल स्वसुर जो जय लह्यो, सुगिनि पराजय सोहि।
मारक मैं जामात को, दुमन रह्यो इम द्रोहि ॥५३॥

कृष्णकुमरि जिहिं निज कनी, पावक करत प्रवेस।
आचर बर तीरथ अखिल लाल दहिय अघ लेस ॥५४॥

आखिर इस दामाद-सुसुर के युद्ध में ससुर लालसिंह की विजय हुई पर यह विजय उसके लिए पराजय से भी अधिक हेय थी। मैं अपने हाथों अपने ही दामाद को मारने वाला हुआ यह सोच सोच कर गैणोली का राजा अत्यधिक व्याकुल हुआ फिर कोढ में खाज का काम उसकी अपनी कन्या कृष्ण कुँवरी ने किया जब उसने अपने पति क्षेत्रसिंह के मरने पर अग्नि में प्रवेश किया। यह देख कर उस राजा ने अपने पापों का प्रायश्चित करने के लिए सारे तीर्थ स्थानों की यात्रा की।

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे पञ्चम राशौ वीतहोत्र-वसुधेश्वर हड्डाधिराडस्थिपाल वंश्यानुवंश्यव्याख्यानवेलाव्याहार्यस्वानु-जलालसिंह सहितबुन्दीनरेन्द्रबरसिंह चरित्रे प्रथमप्रणीतपाणिपीडनचतुष्क हायनपञ्चक पूर्वसमुद्भावितलक्षाऽभिधानस्वौरसीक पुत्रराणाकुमारक्षेत्र-लगैणोलीपुराधीशहड्डुलालसिंह पुत्रीपरिणयन चतुर्थ दिन सहजग्धिसमासी-नापानमदपरवशराणाभटराष्ट्रकूटरत्नसिंह हल्लू जीवननिमित्ततदुपयाम-समाख्यापन प्राक्तनतरडैड्डुरीपृथापरिणा यनप्रक्षिप्तगर्हणचारणबारू तत्समर्थन द्वय श्लाघोद्युक्तरूच्यकुमारक्षेत्रलजकुट जल्पितानुमोदन ज्ञाततू-ष्णीकबरसिंह लाल सौदर्यमल तत्प्रतोलीपात्रचारणलोहठपृथ्वीराज सैन्य-

पाल रत्नसिंह बड्डदेव हल्लू प्रभृतिस्वीयस्वामिसामर्थ्यसमुत्कर्षपुरस्सर-नानादृष्टांतदुर्धर्षकोटिवा क्यजन्यादिजनप्रसभापातितनिजनिन्दानिराकरण तदनन्तरस्वी कृततदधिकशौर्यौ दार्य लालसिंह राणाशौर्यौदार्य साम्या-भावप्रत्ययप्रक्षिप्तप्रतिमोपरिशीर्षशातनशपथबारूस्वककर्त नौचित्य-समर्थन।

श्री वंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण की पंचम राशि में अग्निवंशी चहुवान हड्डाधिराज अस्थिपाल के वंश और वंश की शाखाओं की कथा बताने के समय के वचनों में अपने छोटे भाई लालसिंह सहित बूंदीनरेन्द्र बरसिंह के चरित्र में प्रथम चरण विवाह करने पर और पहले जन्मे हुए पाँच वर्ष के लाखा नामक औरस पुत्र होने पर भी राणा के पुत्र क्षेत्रसिंह का गैणौली पुर के अधीश हाड़ा लालसिंह की पुत्री से विवाह करना, चौथे दिन भोजन पर बैठे हुए, मतवाल (मद्यपान गोष्टी) में मद्य के वशीभूत राणा के उमराव राठौड़ रत्नसिंह का हल्लू के जीवन में इस विवाह को मुख्य कारण जतलाना, प्राचीन डिड्डुर वंशवाली पृथा के विवाह से क्षेपक निन्दा को चारण बारू का पुष्ट करना, दोनों के प्रशंसा करने पर दुल्ह कुमार क्षेत्रसिंह का दोनों के कथन का अनुमोदन करना, वरसिंह और छोटे भाई लालसिंह को मौन धारण किये देखकर उनके पोलपात चारण लोहठ सामोर का पृथ्वीराज, सैन्यपाल, रत्नसिंह, बड़देव और हल्लू आदि अपने स्वामियों की सामर्थ्य की श्रेष्ठता को आगे करके अनेक दृष्टान्तों से दुर्द्धर्ष कोटि के वाक्यों से बारात के लोगों द्वारा हठ से की हुई अपनी निन्दा को दूर करना, इसके बाद उनकी उदारता को स्वीकार करके लालसिंह का राणा की वीरता और उदारता से बराबरी न करने की प्रतीति कराने वाली गड़ी हुई प्रतिमा के ऊपर मस्तक काटने की शपथ खाने वाले बारू के लिये अपना मस्तक काटने का समर्थन करना।

प्रत्युतप्रत्यवसानप्रतीपप्राप्तपृतनाप्रपातजन्यजन प्रच्छन्न चारण बारूकरकृत्तस्वशीर्षलालसिंहार्थप्रेषण श्रुतै तदुदन्तराणाहम्मीरबारू-वैरवालनवर्जितस्वसूनुसमागमसंरोधन हायनैक जीर्णज्वरर्ज्जरहल्लू प्रबोधितपुत्रचन्द्रराज प्रेषितभटसौप्तिकादिवहीरणजन्यजनव्यग्रीकरण कृतैकाब्द कलहप्रेष्यमुखप्रज्ञातपितृपरासुत्वप्राप्तचित्रकूटाधिपत्य-पुनरागत्यबुन्दीशबरसिंह प्रबोधप्रत्यनीकराणाक्षेत्रलश्वशुरशातनार्थ-गैणौलीद्रङ्गाभिमुखस्वसप्तिसैन्यसम्पातन बरसिंह संरुद्ध स्वसेनरत्न रूप सुभटद्वय सहितराणाक्षेत्रलशवसुरसहसंयो धन सोढरत्नैक रोपतुपक

तुरगन्युब्जापात संस्थापितर त्नं रूप जामातृजिम्हगविद्धमूर्द्धपतत्ससिस-ादिलालसिंह कासूकृतकालखञ्जजामातृक्षेत्रलसंहरण बुन्दीशसुभटदाधिमबलराम राणाप्रवीरभट्टिबीरमदेव परस्परप्रहारनिपातन सार्द्धसहस्त्र स्वपर सुभटशूरशय्याशयन ज्ञातलाल कासूलीढप्रभुप्राणम्लानमुखजन्यजन-विज्ञापितपोतत्वप्रति श्रुतबुन्दीविध्वंसक्षेत्रलकुमारलक्षपतिचित्र-कूटाधिपत्यप्रापण प्राप्तक्षतषट्‌क बुन्दीशवरसिंह पटूपचारपाटवप्रसाधन जामातृमरण सुतासहगमन संकुचितप्रायश्चित्तपरलालसिंह तीर्थाचरमणं द्वादशो मयूखः ॥१२॥ आदित एकोनषष्ट्युत्तरैकशततमः ॥१५९॥

भोजन करते समय ही उठकर सेना के पड़ाव में पहुँच कर बराती लोगों से चुपके चारण बारू का अपने हाथ से मस्तक काटकर लालसिंह के पास भेजना, यह वृत्तान्त सुनकर राणा हम्मीर का बारू के बैर को लिये बिना अपने पुत्र को वापिस आने से रोकना, एक वर्ष के जीर्णज्वर से दुर्बल हल्लू के समझाये हुए पुत्र चन्द्रराज के भेजे हुए वीरों का रतिवाह आदि युद्धों में बारात के लोगों को व्याकुल करना, एक वर्ष तक युद्ध करके दूतों द्वारा पिता का देहान्त सुन, चित्तौड़ का स्वामीत्व पाकर और फिर आकर बूंदीश बरसिंह के समझाने के विरुद्ध राणा क्षेत्रसिंह का अपने श्वसुर को मारने के अर्थ गैणौली नगर के सन्मुख अपनी घुड़सवार सेना को डालना, बरसिंह से अपनी सेना के रोके जाने पर रत्नसिंह और रूपसिंह दोनों सुभटों सहित राणा क्षेत्रसिंह का श्वसुर के साथ युद्ध करना, रत्नसिंह के एक बाण को सहकर बन्दूक से उसके मरे हुए घोड़े के अधोमुख गिरने से नीचे दबकर रूपसिंह के मरे बाद जमाई के बाण से बेधे हुए मस्तक वाले गिरते हुए घोड़े के सवार लालसिंह का बर्छी से कलेजा बेधकर जमाई को मारना, बूँदीश के उमराव दाहिमा बलराम और राणा के वीर भाटी वीरमदेव का परस्पर के प्रहारों से मारा जाना, अपने और पराये पन्द्रह सौ वीरों का काम आना, मलिन मुखवाले बारात के लोगों से लालसिंह की बर्छी से अपने स्वामी का प्राण जाना और बूँदी का नाश होना, सुनकर बालकपन में क्षेत्रसिंह के कुमर लाखा का चित्तौड़ का आधिपत्य लेना, छह घाव पाये हुए बुन्दी के पति बरसिंह का उत्तम इलाज कराने से नैरोग्य होना, जमाई के मरने से और बेटी के सती होने से लज्जित प्रायश्चित्त करने के लिए लालसिंह का तीर्थ यात्रा करने जाने का बारहवाँ मयूख समाप्त हुआ। और आदि से एक सौ उनसठ मयूख हुए।

प्रायो ब्रजदेशीय प्राकृत मिश्रित भाषा

दोहा

पीछैं खित्तल पट्टपति, रहिय लक्ख सिसु रान।
तक्क्यो जिहिं मृत तातको, नृप बरसिंह निदान ॥१॥

सबन कहिय बुंदीस जो बढि रोकें न बरात।
गैनोलीपति संगि करि, तो न मरैं तुम तात ॥२॥

मन्त्रि हड्डुनृप मंतु इम, लक्ख रान हठ लग्गि।
लिय पन बुंदिय लैन कों, जिहिं सिसपुन रिस जग्गि ॥३॥

कहिय दंतधावन करों, बुंदिय कल्हि बिगारि।
तो खित्तल मम तात है, नहिं असती तस नारि ॥४॥

चित्तौड़गढ़ के राणा खेतल (क्षेत्रसिंह) के युद्ध में मारे जाने के बाद उसका पुत्र कुमार लाखा शिशुवय में ही अपने पिता की जगह मेवाड़ का राजा बना। उसे जब पता चला कि मेरे पिता की मृत्यु का कारण बूँदी का हाड़ा राजा बरसिंह है। सभी लोगों ने उससे कहा कि यदि बूँदी का राजा बारात को नहीं रोकता उसे आगे बढ़ने देता तो कदाचित राणा अकेले नहीं होते और वे गैणोली के स्वामी हाड़ा लालसिंह की बरछी का शिकार होने से बच जाते। तुम्हारे पिता के मरने का मुख्य कारण यही रहा। यह सुन कर राणा लाखन ने बूँदी के हाड़ा राजा को अपना दोषी (अपराधी) माना और अपनी बाल्यावस्था के बावजूद कुपित हो कर हठ पकड़ा कि बूँदी को ले कर अपने कुसूरवारों को दंड दूँगा। उसने शपथपूर्वक कहा कि कल बूँदी को तहस-नहस करने के बाद ही दातुन करूँगा यदि ऐसा करूँ तो महाराणा खेतल का अंश समझना अन्यथा मेरी माँ पर असती होने का दोष लगे।

षट्पात्

पंचन यह पन जानि कहिय बुंदिय बहुकोसन।
हठी लरन पुनि हड्डु रचहु बय बस यह रोस न।
लंघि तदपि नृप लक्ख दुमन कढ्ढिय दूजो दिन।
तब किय कपट बितान बालबंचन मिलि मंत्रिन।

बुंदिय सदुर्ग कृत्रिम बिरचि भट बिच परिचय रहित भरि।
तिन कहिय सज्जि तोप रु तुपक बिनु गोलन बाहहु बिथरि।।५।।

महाराणा को ऐसी प्रतिज्ञा करते देख उनके सामन्तों ने राय दी कि इसमें इतनी त्वरा अच्छी नहीं। बूँदी बहुत दूर है। आपकी उम्र देखते हुए आपको युद्ध करने का हठ नहीं करना चाहिए पर महाराणा ने दूसरे दिन से ही उपवास (अनशन) करना आरंभ कर दिया। यह देख कर राज के कारकूनों और परिकरों ने मिल कर झूठमूठ के डेरे खड़े किये और बूँदी के दुर्ग की नकल का बनावटी दुर्ग बनाया। इस दुर्ग में उन्होंने अल्प परिचित प्रहरी भी खड़े कर दिये। वहाँ तोपें आदि खड़ी कर उसके प्रहरियों को यह निर्देश दे दिया कि उन्हें नकली युद्ध करना है इसलिए तोपें चलेंगी अवश्य पर उनमें गोले नहीं डाले जाएँगे। इन तोपों का निशाना भी दूर-दूर रखना है।

कतिन तत्थ यह कहिय बालनृप कुतुक बिधायक।
कोऊ आश्रित कहहु हड्डु तिहिं दुग्ग सहायक।
तनुजहिं दै जब तजिय राज्य हल्लुव मरिबे रन।
कुंभकरन तस कुमर मन्त्रि अग्रज अवनीमन।
अप्पबल भिन्न खट्टन इला रान पटा लहि तंहं रह्यो।
भ्रातन समान जिहिं भाग दिय चंद्रराज सोहु न चह्यो।।६।।

सभी लोगों ने वहाँ दुर्ग में तैनात प्रहरियों से यह कह दिया कि यह एक नकली युद्ध का अभ्यास है जो बालक राणा को बहलाने के लिए किया जाएगा। इसके बाद किसी हाड़ा की तलाश की गई जो इस दुर्ग का रक्षक बन कर नकली मुकाबला करे। थोड़े समय पूर्व जब बंबावद के राजा हल्लू ने अपने पुत्र को राज्य सौंपा और स्वयं रणभूमि में मरने की अपनी इच्छा से युद्ध में भाग लेने कहीं बाहर गए। तब उनका छोटा पुत्र कुंभकर्ण अपने अग्रज को इस भूमि का अधिकारी मान कर यहाँ से इतर भूमि जीतने की सोच कर चला और चित्तौड़गढ़ पहुँचा। जहाँ राणा ने उसे जागीर का पट्टा दिया क्योंकि उसके बड़े भाई राजा चन्द्रराज ने उसे अपनी जागीर में से हिस्सा नहीं देना चाहा था।

दोहा

हुव जु रान हम्मीर कै, सहआदर सामंत।
वीर सु गो न बरात बिच, असहन बिरस उदंत॥७॥

इत मृत हुव हम्मीर अरु, उत खित्तल बस आयु।
बित्तैं निज प्रारब्धबल, जंहं सुधाहु नन जायु॥८॥

रान लक्ख तब भट्ट रहि, लिय पन बुंदिय लैन।
कुम्भ हिं तंहं प्रतिभट करन, सीसोदन किय सैन॥९॥

कुंभकर्ण हाड़ा जो महाराणा हम्मीर का एक सम्माननीय सामंत था वह इस बारात में नहीं गया और असहनीय रस विदीर्ण करने वाले वृत्तान्त में हिस्सा लेने से बच गया था। इसी समय इधर चित्तौड़गढ़ में महाराणा हम्मीर और उधर गैणोली में कुमार क्षेत्रसिंह दोनों अपने प्रारब्धबल के ह्रास स्वरूप मारे गए। कोई औषधि अथवा अमृत उन्हें मरने से बचा न सके। अभी जब राणा लाखन ने युद्ध लड़ कर बूँदी नगर को अपने आधिपत्य में करने का प्रण किया और अनशन आरंभ कर दिया तो इस समस्या के निराकरण के लिए जो बूँदी का नकली दुर्ग बनाया गया उसमे प्रहरी की तरह राणा की सेना का मुकाबला करने को इसी कुंभकर्ण को रखा गया और उसे संकेत से सब कुछ बता दिया गया कि यह नकली भिड़ंत है।

षट्पात्

कुम्भकरन तंहं कहिय स्वीय संमत सीसोदन।
नृप सिसुत्व सब निरखि इष्ट सद्धहिं लहि ओदन।
हेतु नांहिं यंहं हड्डु नांहिं सीसोद निहारहु।
कृत्रिम बुंदिय कलह बिजय रूपि दै सु बिचारहु।
इक हड्डु मैंहु लिन्नों इहां हिंगुलु जिम आश्रय हरखि।
ध्वंसन अभीष्ट मम तो धरहु कृत्रिम बुंदिय करकरखि॥१०॥

कुंभकर्ण ने तब सिसोदिया राणा के सामन्तों से कहा कि मैं समझ गया हम सभी को राणा की बाल्यावस्था को देखते हुए वही करना चाहिए जिससे राणा भोजन ग्रहण कर अपना अनशन त्याग दे। यह कोई हाड़ाओं और सिसोदियों की लड़ाई का कारण नहीं है। इस कृत्रिम बूँदी के दुर्ग को

बनावटी युद्ध में शिकस्त दे कर राणा को विजय दिलवानी है। इस कृत्य में मैं भी एक पात्र हूँ जो हाड़ा हूँ इसलिए चुना गया हूँ। वैसे यहाँ हमारे पूर्वज हिंगलू ने भी महाराणा का आश्रय हर्ष के साथ ग्रहण किया था। यदि मेरा ही नाश अभीष्ट है तो मैं अपने हाथ खींच कर बूँदी के नकली दुर्ग को आगे कर दूँगा।

दोहा

सिसु लखि जो समुझाइबो, नृपको तो गहि नीति।
इतर भटन रक्खहु इहां, पालहु जो इत प्रीति॥११॥

यदि बाल राजा को समझाना ही है अर्थात् बहलाना ही है तो यही ठीक रहेगा पर यहाँ किसी अन्य योद्धा को रखें जो पूर्णरूपेण यहाँ की प्रीत से भरा हो अर्थात् इस तरह की प्रीति की रीति निभाए।

षट्पात्

सीसोदन नर्मसह प्रसभ बल कुंभ पठायउ।
सो कछु तोपनसहित अनखि कृत्रिम गढ़ आयउ।
गोले न दये गैल पटकि तोपन तब पैसे।
किय सम्मुह जयकरन अखिल संग्रह सजि अैसे।
सत्थ सों कह्यो तुपकन सबहि गोली दुव दुव गेरिकें।
इक रानटारि मांरहु अरिन हित बुंदिय जय हेरिकैं॥१२॥

सिसोदियों ने मसखरीपूर्वक हठ का प्रदर्शन करने वाले दल को कुंभकर्ण पर चढाई के लिए भेजा। यह दल क्रोध का नाटक करते हुए तोपों के साथ उस कृत्रिम दुर्ग पर चढ़ आया। फिर उन्होंने गोले नहीं डाल कर तोपों से खाली धमाके किये और पूरी सज्जित सेना को अपनी पूरी विजय के लिए आगे बढ़ाया। साथ वालों से कहा गया था कि वे अपनी बंदूकों में दो दो गोली डाल दें और एक राणा को टालते हुए बूँदी फतह करने के लिए अपने शत्रुओं का संहार करें।

दोहा

लरन संग पठवन लगे, इतरहु सुभट अनेक।
कुंभ बहुत मैंही कहि रु, आयो न लयो एक॥१३॥

राणा के सामन्तों ने जब अन्य दूसरे सैनिकों को इधर प्रतिपक्ष में तैनात करने के लिए भेजने का कहा तो कुंभकर्ण ने यह कहते हुए इनकार कर दिया कि उन्हें भेजने की क्या जरूरत है? इधर मैं अकेला ही बहुत हूँ।

षट्पात्

मन बिचारि दृढ मरन सत्थ कुंभ हु निज सज्जिग।
रुट्ठि चढत सिसु रान बंब आनक उत बज्जिग।
गोलन बिनु नालिगन चले सीसोद चलावत।
न गये जोलों निकट इतहु तोलों तिम आवत।
लहि ढिग बचाय सिसु लक्ख कों दहन तोप तुपकन दगिय।
ताम्रपन बिद्ध नर गज तुरग लोटि लुत्थि लुत्थिन लगिय॥१४॥

इधर कुंभकर्ण हाड़ा ने अपने मन ही मन इस युद्ध में भिड़ते हुए मरने का दृढ निश्चय किया। वह इसके लिए अच्छी तरह सज्जित हुआ। सामने से कुपित बालक राणा के ढोल नगाड़े बज उठे और साथ ही सिसोदियों की गोलेविहीन तोपें आग उगलने लगी। इधर से कोई उनके करीब नहीं गया जब तक वे चल कर दुर्ग के करीब नहीं आ गए। प्रतिपक्ष की ओर से भी राणा को बचाते हुए तोपें दहकीं और बन्दूकें चलीं। थोड़ी देर बाद रक्त जैसे लाल रंग से रंगे चतुर हाथी और घोड़ों का रणभूमि में ढेर लग गया।

दोहा

सोई होतहि इक सकल, सहंस चमूं इक संग।
गो भजिहू रहि रानगज, जुत खिल बल तजि जंग॥१५॥
कढि गढतैं सु हु असि करखि, पर्‌यो सुभट तसपिट्ठि।
सावधान सीसोद व्है, द्रुतहि मुरे धर दिट्ठि॥१६॥

यह होते ही अर्थात् इस नाटक के पूरा होते ही सारे के सारे एक हजार योद्धाओं का दल मुड़ कर जाने लगा। पीछे केवल राणा का हाथी रह गया शेष सारा दल युद्ध खत्म कर जा रहा था कि तभी दुर्ग में से अपनी तलवार उठा कर वह कुंभकर्ण जाती हुई सेना पर लपका। यह देख कर सिसोदियों का दल सचमुच में सावधान हो कर इस वीर हाड़ा से लोहा लेने के लिए वापस मुड़ा।

षट्पात्

किते कहत यंहं कुंभ काम आयउ तिलतिल कटि।

जंपहिं कति यह जानि रान जननी सिराह रटि।

स्वभट सूनु समुझाइ वीर यह कुंभ बचायउ।

रक्खत तदनु रह्यो न अनखि बंबाबद आयउ।

ज्वरखिन्न जनक हल्लू हु जिहिं अंस थप्पि लिय लाइउर।

नृपराम लखहु कुलरीति निज पहु हड्डुन पानिप प्रचुर॥१७॥

कुछ लोगों का कहना है कि इस बाद वाली मुठभेड़ में कुंभकर्ण हाड़ा तिल तिल हो कर कट मरा। कुछ लोगों की मान्यता है कि नहीं राणा की माता ने उसकी वीरता को सराहा और उसने अपने पुत्र और सामन्तों को रोक कर उस वीर कुंभकर्ण हाड़ा को बचा लिया। इसके बाद राणा लाखा ने लाख उसे रोकना चाहा पर नहीं रुका ओर रीस में (क्रोध में) भड़क कर वह सीधा बंबावद आ गया। वहाँ बंबावद में ज्वर से पीड़ित राजा हल्लू ने उसके कंधे थपथपाए अर्थात् शाबासी दी और अपने सीने से लगाया। हे राजा रामसिंह! आप तनिक अपने कुल की मर्यादा को निभाने वाले अपने पूर्वज हाड़ा राजाओं का प्रचुर पराक्रम तो निहारिये।

दोहा

कृत्रिम बुंदिय ढाहि किय, रुचि भोजन इत रान।

ति रठ्ठोरन अब उदय, पिक्खहु नियति प्रमान॥१८॥

उधर कृत्रिम बूँदी के दुर्ग को ढहा कर विजय के दर्प से भरे महाराणा लाखा ने अपना अनशन तोड़ कर भोजन किया। हे राजा रामसिंह! अब मैं इधर आपको राठौड़ों के उदय का वृत्तान्त सुनाता हूँ आप नियति का करिश्मा देखिये।

प्रायो मरुदेशीय प्राकृत मिश्रित भाषा

सचरणगद्यम्

पहली अठी खेड़ रो ठाकुर राठोड़ बीरमदेव सळखाउत भतीज जगमाल रो काढियो ग्राम सेत्रावा रा मांगलिया ठाकुर राणंगदेव रे बास

आपरी पूर्वपत्नी चावोड़ी सहित देवराज प्रमुख आपरा च्यारि ही पुत्रां नूं राखि तिकण री पुत्री नूं बिबाहि साथ लेर सिंधु देस रै अंतर्गत भाड़ंगनैर रा जोइयां रै जाई आश्रित रहियो।

सो उठारै अधीस दलै नाम जोइये आपरा वैभव समेत आधी अवनी देर आगै कीधो आपरा बचावण रो उपकार बिचारि बडा आदर रै साथ झेलियो तोभी महामूढ बारूणी रै बसीभूत अनेक उपद्रव मचाइ ऊबट ही बहियो।

उठै ही इणरै मांगळियांणी में पुत्र चूंडा रो जन्म हुवो जिकण री ही बधाई मैं जाणैं ढोलां रै आंटै जवनां री निमाजगाह रा फरास बढाइ कबरां रै माथै बाराह बिणासि दलारा धावड़ नूं मारि एक दुर्ग उपेत आधी हूँ अधिक इळा अपणाइ अपराध संग्रह में उधारि न राखी।

जरैं स्वामी रा सम्मत बिहूणां भी जोइया जिकण नूं मारण चलाया जठै जठै ही दलै उणरो कीधो उपकार चींताइ रोकियां केड़ै आपरो जामाता मारि लीधो तो भी सम्मस्त हूँ सहणी री भाखी॥१९॥

पहले खेड़ का ठाकुर राठौड़ बीरमदेव सलखाउत जो अपने भतीजे जगमाल द्वारा निर्वासित किया गया था सेत्रावा गाँव के मांगलिया ठाकुर राणंगदेव के घर अपनी चावड़ा वंश वाली पत्नी और अपने देवराज सहित चारों पुत्रों को छोड़ कर गया। बीरमदेव ने इसी राणंगदेव की पुत्री से विवाह किया और उसे अपने साथ ले कर वह सिंध प्रांत के गाँव भाडंगनेर में जोइयों के यहाँ आश्रित हो कर रहा। इस गाँव भाड़ंगनेर के ठाकुर दला नामक जोइया ने अपनी जागीर का आधा हिस्सा दे कर अपने धन में से भी आधा हिस्सा दिया। इस दला जोइया को बीरमदेव ने बचाया था इस उपकार के बदले में उसने बड़े आदर के साथ अपने यहाँ रखा पर वह बीरमदेव शराब के नशे में तरह-तरह के उपद्रव मचाता हुआ हमेशा सीधे रास्ते की बजाय बिना मार्ग ही चला। वहीं इसके अपनी मांगलिया वंश वाली पत्नी की कोख से चूण्डा नामक पुत्र का जन्म हुआ। अपने इस पुत्र के जन्म की बधाई में बीरमदेव ने यवनों की मसजिद के खिदमतगारों को मारा और उनकी कब्रों पर सूअर काट कर उत्पात मचाया। यही नहीं उसने दला जोइया के एक दूधमुँहे बच्चे की हत्या कर दुर्ग सहित आधी से अधिक भूमि अपने

अधिकार में जबरन कर ली। उसने वहाँ कुसूर कमाने में कोई कमी नहीं रखी।

इस तरह बीरमदेव के बढ़ते दोषों से कुपित हो कर कई जोइया अपने स्वामी के निर्देश बिना ही उसे मारने चले पर हर जगह दला जोइया ने अपने पर किये हुए उपकार को याद कर बीरमदेव को बचाया। तभी बीरमदेव ने दला जोइया के दामाद को मार डाला तब भी दला ने सभी से इस कृत्य को सहन करने के लिए कहा।

देऊ नाम दला री पुत्री रा पति रो प्राण लीधो जरैं तो जोइयां जमाई रो वैर वालण रै काज आपरा प्रभू रै प्रच्छन्न प्रहर रै प्रभात बीरमदेव नूं जाइ घेरि लियो।

जठै बढण बाढण नूं बुलावण रो बंब बाजियो सुणि मांगलियांणी मालिक रा माथा रो उसीसो हुवो आपरो बामेतर बाहू अवेरियो।

हाथ कढतां ही निद्रा निवारि सस्त्रादिक संगर री सामग्री में सज्ज होइ उण ही समय सळखाउत बीरमदेव समाधि बड़वा री पीठि आयो।

अर आपरी रजपूतां उपेत पाहुणां नूंतो मानण रो दुंदुभी दिवाइ वडे वेम साम्हों चलायो॥२०॥

बीरमदेव ने जब दला जोइया की देउ नामक पुत्री के पति को मार डाला तो जोइयों ने अपने जामाता का वैर लेने के लिए अपने स्वामी दला जोइया से चुपके प्रातः के प्रथम प्रहर में जा कर बीरमदेव को घेर लिया। जब बाहर मरने-मारने और लोगों को इकट्ठा करने का वाहरू ढोल बजा तो इसे सुन कर बीरमदेव की मांगलिया वंश की पत्नी ने अपना दाहिना हाथ जो तकिये की तरह अपने पति के सिर के नीचे दे रखा था खींचा। हाथ के सिर के नीचे से निकलते ही वह अपनी निद्रा का निवारण कर उठा। उठते ही अपने शस्त्र संभाले और पूरी तरह सज्जित हो कर वह सलखाउत बीरमदेव समाधि नामक घोड़ी की पीठ पर सवार हुआ। उसने अपना नगाड़ा बजवा कर राजपूतों सहित अन्य लोगों को भी अपना न्यौता भिजवाया और वह बड़े वेग से अपनी घोड़ी को ऐड़ मार कर जोइयों के समक्ष चल कर गया।

जिण समय राठोड़ चन्द्रहास चलावण में कुमीं न कीधी परंतु महापापां रा करणहार तो श्री परमेस्वर रा प्रपंच में जीती हूँ न जावै।

जिणथी स्वतंत्र संभव में एक आपरा आलय हूँ काढि देण रो

उपकार करि जिकण रा सीलणां में सहियो न जाइ इसड़ा अनेक अनर्थ कुमाइ मनमत्तै बहै तिकण रो अंत तो इसड़ो खटावै।

जिण कारण जुड़तां ही अनेकां माथै वार होइ संगर में सब ठाम आपरा अनीक रा उत्तमंग उडता जोइ जोइयां पहली आपरी सिखाई घोड़ी समाधि नूं गेहर रा ढोल रै नाच लगाइ अरि नूं आयत्त करि समीप लीधो।

अर धीरण हांसू अरड़कमल्ल जीवराज बीजा बैरियां नूं बाढ चखावता समीप जाइ जगमाल रै छानैं काढि देण रा एक उपकार माथै खमिया आपरा अनेक प्रत्युपकार चींताइ आवर्त प्रमुख अनेक अनुकरण रा नाच करती अर्वती नूं विश्राम रो बोल देर जोइये धीरण राठोड़ रै कंठ खड्ग रो आघात दीधो ॥२१॥

युद्ध के समय राठौड़ बीरमदेव ने अपनी तलवार चलाने में कोई कोताई नहीं बरती परंतु बड़े पापों के करने वाले तो परमेश्वर के संसार में जन्म सफल कर नहीं पाते अर्थात जीत नहीं पाते। जिसने (बीरमदेव) एक बार किसी को अपने घर से सुरक्षित निकाल देने का उपकार किया और इस उपकार के बदले में अनेक असह्य अनर्थ करता हुआ निरन्तर अपनी मनमर्जी करता रहे उसका अंत तो ऐसा होना ही था। युद्ध में जुड़ते ही जब अनेक साथियों के मस्तक कट कर रणभूमि में गिरते देखे तो जोइयों ने सर्वप्रथम अपनी सिखाई हुई घोड़ी (समाधि) को गहर नृत्य की धुन को ढोल पर बजा कर गोल गोल नृत्य करने को मजबूर किया फिर धीरे-धीरे बीरमदेव को अपने वश में करने को समीप लिया अर्थात् वे समीप गए। फिर वे धीरण, हांसू, अरड़कमल, जीवराज जैसे अन्य शत्रुओं को अपनी तलवारों की धार का मजा चखाते हुए जोइया उसके समीप लगे जिसने जगमाल से बचा कर चुपके से उन्हें निकाला था उसी एक उपकार के बदले में सहे हुए अपने एक एक अत्याचार को गिनवाते हुए गोल गोल एक ही घेरे में तरह तरह के नाच में घूमती हुई घोड़ी को एकदम रुकने का आदेश दे कर जोइया धीरण ने राठौड़ बीरमदेव के कंठ पर अपनी तलवार का भरपूर वार किया।

धीरण रा पाणि रा प्रहारण हूँ बीरमदेव रो मुंड अछंट उड़ि पड़ियो तो भी राठोड़ रो रुंड अनेक म्लेच्छां रा मुंड प्रेतां रा झुंड रै उपहार करि नीठि नीठि चेष्टा बिहूण थियो।

सो सुणतां ही तिणही अवसेस तमी रा अंधकार में मांगळियांणी

स्वकीय सुत चूंडा समेत आपरी बसी रो एक जाट ओठी पै साथ आयो तिकण रै बासंत बैठि बडै बेग देस रो मार्ग लियो।

देस मांहिं आवतां ही ओठी नूं सीख देर बिपत्ति रा महार्णव में मग्न मांगळियांणी पुत्र सहित बेस रो बिपर्यास करि कैराऊ ग्राम रा ठाकुर रोहड़िया बारहढ आल्हा रै बास जाइ रही।

अर थोड़ा दिनां में बडा विस्वास रै साथ महानस री मालिक होइ चारण री चाकरी में चित्त लगाइ चातुराई री रीझ चही॥२२॥

धीरण जोइया के हाथ के प्रबल प्रहार से अछंट (उत्तम प्रहार होने से दो टुकड़े हो कर तलवार के रक्त का छींटा भी न लगे उसे मरुभाषा (राजस्थानी) में अछंट कहते हैं) बीरमदेव का मस्तक कट कर दूर जा गिरा तब भी राठौड़ की धड़ (रुंड) ने अनेक म्लेच्छों के मुंड प्रेतों के झुंड को उपहार में दे डाले फिर बमुश्किल तमाम वह रुंड मतिहीन हुआ। यह सुनते ही कि बीरमदेव मारा गया उसकी मांगलिया वंश की ब्याहता (मांगलियाणी) अपने पुत्र चूंडा सहित अपनी बस्ती के एक जाट को उसके ऊँट के साथ बुला कर उस पर सवार हो तेज गति से अपने देश को रवाना हुई। अपने देश में पहुँचते ही ऊँट सवार जाट को रवाना किया और स्वयं विपदा के समुद्र में डूब गई। अब क्या करे? तब मांगलियाणी ने अपने पुत्र सहित स्वयं (पहिनावा) भेष बदल कर कालाऊ (कैराउ) नामक ग्राम के ठाकुर रोहड़िया शाखा के बारहठ (चारण) आल्हा के घर पर जा रही। उसने थोड़े दिनों तक पूरे आत्मविश्वास के साथ रसोई बनाने के कार्य में संलग्न हो कर चारण की चाकरी में चित्त लगाया और प्रतिदान में स्वामी की रीझ चाही।

अठी बीरमदेव नूं जवनां रा मारिया जाणि ग्राम सेत्रावा हूँ चलाई राठौड़ गोगै बीरमदेवोत आपरा बाप रा बाढणहार नूं बिसारि बिनांही अपराध भाजड़ में भीत संकट रै हेठै सपत्नीक सूता जोइया दला नूं जाइ हणियो।

सोभी आतताइ[१] नूं उवारि बाप रो बचावण हार बाढियो तो भी अद्वितीय वार हुवा सुणि किताक कवि लोकां तिकण रा ही प्रहाररो

टिप्पणी १. आतताइ अर्थात वधोद्यत (मारने वाला) के अतिरिक्त और भी छह प्रकार के माने जाते हैं जो इस श्लोक में स्पष्ट है।

अग्निदो गरदश्चैव शस्त्रपाणिर्धनापहः। क्षेत्र दारापहारी च षड़ेते ह्याततायिनः॥

प्रकर्षण भणियो।

जूड़ा जोड़ा पर्यंक पेषणी पात्र पुंज कटि करवाल पुहवी में पैठो तोभी मंतु बिहूण जनक रो मित्र मारण में म्हांरो तो मन आघात रो उत्कर्ष न मानैं।

पछै जिण नूं जिसड़ी दीसै सो आप आपरा अन्तहकरण में इसड़ी ही गदानैं॥२३॥

इधर बीरमदेव को यवनों द्वारा मार दिया गया यह सुन कर सेत्रावा गाँव से उसका पुत्र राठौड़ गोगा अपने पिता के हत्यारे को तो बिसर गया और उसकी जगह निरपराध और भागने से डरे हुए और अपनी पत्नी सहित एक बैलगाड़ी के नीचे सोये हुए दला जोइया को जा मारा। उसने असली अपराधी (आतताइ धीरण जोइया) को बचा कर अपने पिता के मित्र को ही मार लिया। कुछ भी हो गोगा की तलवार के प्रहार की श्रेष्ठता के कारण कई कवियों ने उसका बखान किया। बखान भी नहीं क्यों न हो जब बैलगाड़ी के जुए और स्त्री पुरुष दोनों के जोड़े सहित, चारपाई, चक्की और थाली के समूह सभी को एक ही झटके में काटती हुई उसकी तलवार पृथ्वी पर जा लगी। मेरा मन (ग्रंथकर्ता सूर्यमल मीसण) तो तब भी निरपराध और अपने पिता के मित्र के वध में प्रयुक्त इस प्रहार में कोई अधिकता नहीं देखता फिर जिसको जैसा लगे अपने अन्तकरण से वैसा बखानने के लिए स्वतंत्र है।

जिण केड़ै जोइयां री बरात आइ दला रो मरण सुणि तिकण नूं मट्टी देर बांसै लागि गोगा नूं मारग में ही जाइ लीधो।

अर आपस में चन्द्रहास चखाई दो ही तरफ रा प्रबीरां उठै ही देह रो त्याग कीधो।

अठी बारहठ आल्है किताक काळ में मांगळियांणी नूं बीरमदेव री जोड़ायत जाणि तिकण रा पुत्र चूंडा नूं द्वादस ग्रामां रा अधीस आपरा जजमान ईंदा पड़िहार री पुत्री बिबाही।

अर ईंदा हीं आपरा जमाई रै साथ होई पहली हाड़ा नरेस हालू रा जीतिया ब्रह्महत्या रा करणहार पड़िहार राजा हम्मीर नूं बुरै हवाल काढि राव चूंडा नूं मंडोउर रो महीप करि एकता निबाही॥२४॥

अपने नायक दला का मरना सुन कर जोइया एकत्र हो कर आए और उसकी मुर्दा देह को कब्र में खाक होने को सुपुर्द किया इसके बाद पीछा करते हुए उन्होंने गोगा राठौड़ को रास्ते में ही जा पकड़ा। दोनों दलों ने आपस में एक दूसरे को तलवारों की धार का स्वाद चखाया। इस भिड़ंत में कुछ योद्धा खेत रहे। इधर थोड़े समय के बाद अपनी रसोईदारिन की असलियत को आल्हा बारहठ ने पहचाना। जब उसे पता चला कि यह बीरमदेव राठौड़ की पत्नी और चूंडा उसका पुत्र है तो उसने बारह गाँवों के ठाकुर और अपने यजमान ईंदा पड़िहार की पुत्री से चूंडा का विवाह करवा दिया। फिर तो सारे ईंदा भी अपने दामाद (चूंडा) के साथ हो गए तब उन्होंने हाड़ा राजा हल्लू द्वारा विजित और ब्रह्महत्या के पाप के संवाहक पड़िहार राजा हम्मीर को बुरी तरह परास्त कर चूंडा को मंडोवर का राजा बनाया। ईंदाओं ने तब तक पूरी एकता निभाई।

जौर हम्मीर तो जैसलमेर रा भाटियां री सीमा में बारू टेकरे नाम नगर जाइ निवास कियो।

पछैं तिण रो ही बंस बघड़ाउतां रो बिध्वंस करि सोही हड्डाधिराज रो स्वसुर कुळ नागोध ऊंचाहेड़ा पर्यंत पूर्व रो प्रांत दाबि उठी ही प्रवर्त्त थियो।

इण रीति हम्मीर कढियां केडै राठोड़ राव चूंडो बीरमदेवोत मंडो उर नगर में आपरी राजथानी जमाइ रहियो।

गाधिपुर छूटां पछै इण समय सूं हीं फेर राठोड़ां प्रतिदिन बर्द्धमान राज पाइ चीतोड़ नरउर आमैर अजमेर पाटणि दसोर बंबावदा रै समान भूपभाव गहियो ॥२५॥

पड़िहार राजा हम्मीर वहाँ से भाग कर भाटियों के राज्य जैसलमेर की सीमा में बारू टेकरे नामक नगर में जा रहा। फिर इसी वंश के पड़िहार बगड़ावतों का विध्वंश कर हे राजा रामसिंह! आपके ससुर कुल के गाँव नागोध और ऊंचाहेड़ा पर्यन्त पूर्व का प्रान्त हथिया कर वहीं बस गये। इस प्रकार हम्मीर के बलात् निष्कासन के बाद राठौड़ राव चूंडा बीरमदेवोत (बीरमदेव का पुत्र) मंडोवर नगर को अपनी राजधानी बना कर वहाँ रहा। गाधिपुर (कन्नोज) छूटने के दिन से ही राठौड़ों ने अपना राज निरंन्तर बढ़ाया

और वे चित्तौड़गढ़, नरवर, आमेर, अजमेर, पाटण, मंदसोर, बंबावद की तरह राजा बन कर रहे।

दोहा

लीधो मंडोउर लड़े, इम चूंडै नृप एण।
पुत्र सता रणमल प्रमुख, जणिया चउदह जेण॥२६॥

राठौड़ राजा चूंडा ने इस प्रकार लड़ कर मंडोवर पर अपना आधिपत्य जमाया। इस राजा के कुल चौदह पुत्र हुए जिनमें सत्ता और रणमल्ल मुख्य थे।

सचरणगद्यम्

जिण समय अठी म्हांरा बंस रा बिरोचन मिश्रण चंडकोटि रा कुळ में प्रपितामह बिजैसूर मंडोउर थी आथमणी दिसा बाढमेर कोटड़ा कनैं बोघन्यायी भाद्रेच नाम नगर निवास करै जठै खड़ रो महादुकाळ पड़ियो जाणि आपरी बसी रा लोकां सहित छकड़ां मैं भार घलाइ सकुटुंब सिरोही जाळोर गुजरात रै कांकड़ संधै तृण नेपै देखि आइ रहिया।

जठै सरबहियां रा बारहठ बाटी समुद्रसिंह रा सांसण हूँता जिकण सुणतां ही मिलण नूं डेरै आय समता रा गिनायत जाणि प्रीति रा पेच में गाढा गहिया।

बाटी समुद्रसिंह आपरी सीमां में बसी रा लोकां सहित मीसणां रो गोळ दिवाइ गिनायतां नं आदर रै साथ राखिया।

अर जळ जीमण आखेट आदि विहार क्रीड़ा में सामिल रहि स्नेह रा उदर्क रा अनेक अमोघफळ चाखिया॥२७॥

इसी काल में मेरे (ग्रंथकर्ता सूर्यमल मीसण) वंश के विरोचन मिश्रण चंडकोटि के कुल में जन्मे प्रपितामह बिजैसूर मंडोवर से पश्चिम दिशा की ओर बाड़मेर कोटड़ा के पास बोगन्यायी भाद्रेच नामक नगर में जा रहे। पर वहाँ भीषण अकाल पड़ा देख कर अपनी बस्ती के लोगों सहित बैलगाड़ियों में अपना सामान लाद कर चले और वहाँ से चल कर जालोर, सिरोही और गुजरात की जहाँ सीमा मिलती है इस संधिस्थल पर उत्तम पैदावार की भूमि देख कर जा बसे। यहाँ पर सरवहिया क्षत्रियां के बारहठ बाटी शाखा के चारणों के सांसण (स्वतंत्र जागीर) के गाँव थे। उन्होंने जब यह सुना कि

बाड़मेर से चारण आए हैं तो वे इन्हें अपने बराबर के समधी गिन कर मिलने के लिए इनके डेरे पर आए। मिलने पर दोनों पक्षों में परस्पर प्रीति बढ़ी। तब समुद्रसिंह बाटी ने अपनी जागीर की सीमा में मीसण चारणों का उनके लोकों सहित डेरा लगवाया और सभी को पूरे सम्मान के साथ वहाँ रखा। खाली रखा ही नहीं बल्कि खानपान में और आखेट आदि में साथ रखते हुए स्नेह बढ़ाया और भाग्यबल से भविष्य में संबंध और प्रगाढ़ होने का मार्ग प्रशस्त किया।

सौराष्ट्री दोहा

हद समुद्र रो हेत, विजयसूर दीठां वळे।
स्व बहिणि देय समेत, बाटी नूं दीधी बिदित॥२८॥
बिजयसूर री बाम, आठ मासहूं दिन अधिक।
धार्यो गर्भ सुधाम, वणियो तदि भावी बिखम॥२९॥

इस तरह बाटी समुद्रसिंह को स्नेह का समुद्र जान कर बिजयसूर मीसण ने अपनी बहन का विवाह उसके साथ करना तय किया और आवश्यकतानुसार दहेज दे कर अपनी बहन बाटी से ब्याही। इधर बिजयसूर मीसण की पत्नी को आठ माह का गर्भ था तब अच्छे समय ने पलटा खाया और भविष्य में विषम समय आया।

षट्पात्

एक समय आखेट वळे साळा बहणोई।
आवे हणि सस एक प्रीति मनुहारि पजोई।
सो ले जावण सदन पुणे मीसण बाटी प्रति।
उठै सिद्धपळ अम्ह मंगि जीमण चहियो मति।
बदियो समुद्र कीजै बिबिध एक महानस आपरै।
हूं आइ गोळ सामिल हुवां करां असण इम मन करै॥३०॥

एक बार साला और बहनोई अर्थात् विजयसूर मीसण और समुद्रसिंह बाटी दोनों शिकार खेलने को गए। वहाँ उन्होंने एक खरगोश मारा और दोनों ने एक दूजे की मनुहार की। मीसण विजयसूर ने अपने बहनोई से उस खरगोश को अपने घर ले जाने का प्रीतिपूर्वक आग्रह किया और कहा कि मैं आपके यहाँ आ जाऊँगा और पका हुआ माँस वहीं खा लूँगा। इस पर

समुद्रसिंह बाटी ने कहा नहीं इसे आप ले जा कर अच्छी तरह पकाइये मैं आपके डेरे आ जाऊँगा और वहीं मिल कर साथ भोजन करेंगे, मेरा मन यह चाहता है।

दोहा

जदि मीसण लै सस जिको, आप गोळ द्रुत आइ।
बणवायो जिण पळ बिबिध, मेळण उचित मिळाइ॥३१॥

बाटी घर पूगां वळै, आवण आळस आणि।
गेह करण सस मंगियो, जीमण दंपति जाणि॥३२॥

कहियो मीसण सस सकळ, चूल्हा दीध चढाई।
अब न बणैं भोजन उठै, अठै क्रपा करि आइ॥३३॥

तब विजयसूर मीसण उस मारे हुए खरगोश को अपने डेरे ले कर आ गया और आते ही उसने अच्छे मसाले मिलवा कर अलग-अलग प्रकार का माँस पकवाया। उधर बाटी समुद्रसिंह जब अपने घर पहुँचा तो उसे मीसणों के डेरे जाने का आलस्य आ गया तब उसने अपने घर पर ही पकाने के लिए खरगोश मँगवाया कि इसे मैं अपने घर पर पकाऊँगा और हम पति-पत्नी दोनों खाएँगे। इस पर मीसण ने कहलवाया कि मैंने तो उसे चूल्हे पर चढ़ा दिया है इसलिए आज आपके वहाँ नहीं बन सकेगा। आप कृपा कर यहीं पधार कर जीमें।

सचरणगद्यम्

इण रीति मीसण विजयसूर रो बचन सुणि बाटी रै अनुचर पाछो जाइ जथातथ बात कही।

सो सुणतां ही भावी रै प्रमाण बारूणी रै बसीभूत हुवै समुद्रसिंघ बिपरीत व्यवहार बतावण री टेक गही।

गोळ मैं कहाई कैं तो पळरा देगचा उठाइ म्हांरा आदेस रै आधीन हुवो मीसण बडै बेग अठै आवै।

नहीं तो बळ समाहि म्हांनूं चोड़ैखेत चंद्रहास चखावै॥३४॥

विजयसूर मीसण के कथन को बाटी समुद्रसिंह के अनुचर ने वापस

घर जा कर अपने स्वामी से कहा। सुनते ही भविष्य के अमंगल स्वरूप शराब के नशे में समुद्रसिंह ने विपरीत व्यवहार करने का हठ करते हुए कहलवाया कि वहाँ डेरे में जा कर कहना कि या तो मीसण अपने पके हुए माँस का देगचा उठा कर मेरे आदेश की पालना करता हुआ तुरन्त यहाँ आए अन्यथा सज्जित हो कर मैदान में मुझे अपनी तलवार के जौहर दिखाए।

इसड़ी कहि धरा रो धणी बाटी समुद्रसिंह आपरा साथ नूं सज्जरिक उण हीं सांझ रै समय मीसणां रा गोळ ऊपर चलायो।

जरैं बिजैसूर भी भावी नूं दोसं देरै आपरा आउधीक पूंतारि साम्हों ही आयो।

बाटियां रा बीस मीसणां रा पंद्रह प्रबीर पड़ियां पछैं बहणोई रा प्रहार थी साळा रो सीस उडियो तो भी बिजयसूर रो रूंड तीन बैरियां नूं बाढि खेत पड़ियो।

तिण पछैं गोळ रो लोक भी मोरछा मांडि तुपक तीरां रो वेझो बणाइ पहर दोइ सूधो लड़ियो॥३५॥

ऐसा कह कर भूमि का स्वामी (वहाँ के सांसण का स्वामी) बाटी समुद्रसिंह अपने साथियों को सज्जित कर सांझ के वक्त मीसणों के डेरे पर चढ़ आया। तब विजयसूर मीसण ने भी अपने भविष्य को कोसते हुए अपने शस्त्रधारी सेवकों का उत्साह बढ़ाने वाले वचन सुना कर मुकाबला करने को तत्पर किया। इस भिड़ंत में बाटियों के बीस और मीसणों के पन्द्रह आदमी मारे गए। तभी बहनोई की तलवार के प्रहार से साले का सिर कट कर भूमि पर जा गिरा पर विजयसूर के धड़ ने गिरने से पहले तीन शत्रुओं को मार गिराया। इसके बाद तो मीसणों के डेरे पर वहाँ के लोगों ने मोर्चे बना कर धनुष बाणों से निशाना साधते हुए दो प्रहर तक बाटियों के दल का मुकाबला किया।

आसव रो उतार हुवां समुद्रसिंह नूं तो उणरा पुरोहित मोतीसर प्रमुख संकोच रा लोकां बीच में आइ पाछो मोड़ियो।

अर प्रभात हुवां केड़ै गर्भवती पत्नी आपरा अनुगां नूं काठां चाढण रो निदेस देर धणी रा अंचळ हूं अंचळ जोड़ियो।

जिको सुणि पूरा पछितावा समेत समुद्रसिंह आपरी पत्नीं इसड़ी

बिजयसूर री बहिणी बरजण नूं गोळ मैं भेजी जिकण कहियो बाभी पहिली मोनूं मारि पछें चिता री तरफ चरण दीजै।

अर नहीं तो बीर रो बंस राखि प्रसूतिकाळ रै अनंतर बेद रा बचन रै अनुसार बिधानपूर्वक सहगमण कीजै ॥३६॥

शराब का नशा उतरने पर समुद्रसिंह बाटी को उसके पुरोहित और मोतीसर (चारणों के याचकों की एक जाति) आदि लोगों ने बीच बचाव कर वापस मोड़ा। उधर प्रातः होते ही विजयसूर की गर्भवती स्त्री ने अपने सेवकों से चिता तैयार करने का निर्देश दे कर शीघ्र अपने पति के वस्त्र से अपने वस्त्र को जोड़ कर गठजोड़ा बाँधा। यह समाचार सुनते ही समुद्रसिंह बाटी ने अपनी पत्नी जो विजयसूर की बहन थी को मीसणों के डेरे में भेजा कि तू उसे जा कर सती होने से रोक। उसने जा कर कहा हे भाभी! पहले मुझे मार दो उसके बाद चिता की ओर बढ़ना। यदि नहीं तो मेरे भाई का वंश सुरक्षित रखने के लिए प्रसूतिकाल के बाद वेदवचनों के अनुसार विधि-विधानपूर्वक सती होना तब तक के लिए आप पति के साथ अपना सहगमन रोकें।

इसड़ो बचन सुणि बिरोध रो क्रोध बिसारि बिजयसूर री जोड़ायत कर में कटार झालि साहस ढबण रै काज रीढक रै समीप आपरी पीठ फाड़ि नेत्रमूढ मूर्छित बाळक नूं काढि नणद रै हाथ दीधो।

अर अब इणरो पाळणो थारै अधीन इसड़ी कहि बाळक रो नाम पीठहवो रखाइ सहगमण कीधो।

जिण बाळक नूं आपरी भुवा मंजा रो दूध देर नीठि नीठि पाळि दस बर्ष रा बय नें आणियो।

जिण अर्भक लाड में मत्त एकण दिन कंदुक री क्रीड़ा करतां आघात रो अपराध मानि कोई ग्राम्य स्त्री रा कहण हूँ फूंफा समुद्रसिंह नूं आपरा बाप रो मारणहार जाणियो ॥३७॥

ऐसी बात सुनते ही अपने इस प्रकार रोके जाने से उपजे क्रोध को भूल कर विजयसूर की धर्मपत्नी ने हाथ में एक कटार ली और रीढ की हड्डी के पास से अपनी पीठ फाड़ डाली और बंद आँखों वाले मूर्छित बालक को पेट में से निकाल कर अपनी ननद के हाथों पर रख दिया। फिर कहा कि हे

ननद! अब इस आपके वंश के रखवाले को संभालो और इसका पालन पोषण कर बड़ा करो। इसका नाम पीठवा (पीठ से हुआ इसलिए पीठहवा) रखना। इतना करने के बाद विजयसूर की पत्नी ने अपने पति के साथ स्वर्गलोक सहगमन किया। इस बालक पीठवा को तब उसकी बूआ ने बकरी का दूध पिला कर बमुश्किल तमाम किसी तरह दस वर्ष की उम्र का बालक बनाया। इस लाड प्यार में पले बालक की एक दिन खेलते समय गेंद पास ही के किसी घर में जा पड़ी। उस घर की स्त्री ने उलाहना देते हुए यह भेद बालक के समक्ष उजागर कर दिया कि तेरे फूफा समुद्रसिंह बाटी के हाथ से तेरा पिता मारा गया।

जरैं उठा ही सूं पीठहव भुवा रो भवन छांडि कोईक ओघड़ अतीतां री जमाति रै साथ बेड़ी रै बळ खाड़ी लांघि हिंगुलाज देवी रै धाम पूगियो।

अर अनन्य भक्ति रा प्रभाव करि जगदंबा रो प्रसाद पाइ बारह बर्ष री बय में पाछो आइ फूंफा समुद्रसिंह नूं मारि आपरा पिता बिजैसूर रो बैर लियो।

पीठहव बाटी नूं मारि तिकण रो मस्तक ले हालियो जाणि महा पतिव्रता आपरी भुवा सहगमण रै काज मांगियो तोभी मस्तक पाछो देर न आयो।

जरैं सती रा स्राप हूँ कलेवर में कोढ पाइ पुष्कर प्रयाग प्रमुख तीर्थां में न्हाई और भी औषधादिक अनेक उपाय करि थाको परंतु पाटव न पायो॥३८॥

तब वहीं से पीठवा अपनी फूफी का घर छोड़ कर खाखी सन्यासियों की एक जमात के साथ नाव से खाड़ी पार कर हिंगलाज देवी के धाम पर पहुँचा। वहाँ जा कर उसने देवी की भक्ति की। अपनी भक्ति के सहारे जगदंबा हिंगलाज का वरदान पा कर बारह वर्ष की वय में उसने वापस लौटते ही अपने फूफा समुद्रसिंह बाटी को मार कर अपने पिता विजयसूर मीसण का वैर लिया। पीठवा जब अपने फूफा को मार कर उसका कटा हुआ मस्तक ले कर जाने लगा तब उसकी बूआ ने अपने पति का कटा सिर मांगा जिस के साथ वह सती हो सके पर उसने नहीं दिया। इस पर उसकी सती होती फूफी ने शाप दिया जिससे पीठवा के पूरे शरीर पर कुष्ठ रोग हो

गया। वह अपने कुष्ठ निवारण के लिए पुष्कर, प्रयाग आदि प्रमुख तीर्थस्थानों पर नहाया। कई औषधियों का प्रयोग किया पर सब कुछ निष्फल गया। वह निरोग नहीं हो पाया।

इम समय अठी कंवर जगमाल रो काको बीरमदेव रो अग्रज परमेश्वर रो परमभक्त राठोड़ जैतमाल सळखाउत सुमियांणै राज करै।

जिकण बाळकपण सूं ही चारण नूं उर थी लगाई मिलण रो पण लीधो जिकण थी बारहठ बंस रो बाळक भी दीठां गळै लगाई पिता रै प्रमाण प्रीति धरै।

जिण समय पंद्रह बर्ष रा बय में मीसण पीठहव झरतै कोढ सुमियांणैं आयो जिकण हूँ राठोड़ जैतमाल नटतां नटतां भी प्रेम रो प्रवाह जणाइ ऊठि मिळियो।

जिण महाभक्त रो अंग संग होतां ही आपरो कोढ गमियो जाणि मीसण राठोड़ नूं दसमां सालिग्राम इसड़ो बिरूद दियो॥३९॥

इस समय इधर जगमाल राठौड़ का चाचा और बीरमदेव का बड़ा भाई जो ईश्वर का परम भक्त था वह राठौड़ जैतमाल सलखावत सुमियाणा का राजा था। इस जैतमाल राठौड़ के बाल्यावस्था से ही यह नियम था कि चारण जाति के किसी सदस्य के आने पर वह उसे गले लगा कर मिलेगा। इस प्रतिज्ञा के चलते यदि उसे चारण वंश का कोई बालक भी दिख जाता तो वह उसे अपने गले लगाता और पिता के समान उसका आदर करता। इसी बीच पन्द्रह वर्ष की उम्र में कुष्ठ रोग से गलित देह लिये पीठवा सुमियाणे आ निकला। उससे राठौड़ जैतमाल लाख मना करने के बावजूद अपनी प्रतिज्ञा के अनुसार स्नेह जतलाता हुआ आ कर गले मिला। उस सिद्ध मुक्त जैतमाल का अंग संग होते ही पीठवा का कुष्ठ रोग ठीक हो गया तब पीठवा मीसण ने राठौड़ जैतमाल को दसवें शालिग्राम (शालग्राम) की उपाधि (विरुद) दी।

भक्ति रै प्रभाव जैतमाल और भी इसड़ा अनेक दुष्कर काम करि आपरो नाम ख्यात कीधो सो अजे भी भक्तलोकां री नामावळी में प्रधानता जणावै।

किताक काळ पछै अठी बंबावदा रै नरेस हालू अनेक उपाय करि थाको तो भी रणमरण न पायो जाणि प्रतिदिन बार्द्धक नूं बद्धमान

देखि बर्ष तीन रा निरंतर ज्वर थी पाटव पाइ प्रामार राज बिक्रम रा चउदह सै एगारह रा सक में आपरो सीस जोगिणी नाम देवी नूं चढाई दीधो।

जिण केड़ै इणरा पुत्र चन्द्रराज रो राज सीमाड़ां चोतरफ सूंहीं दाबण रो बिचार कीधो॥४०॥

अपनी भक्ति के फलस्वरूप राठौड़ जैतमाल ने ऐसे अनके दुष्कर कार्य संपादित कर अपना नाम प्रसिद्ध किया जो आज भी भक्तों की नामावली में प्रमुखता के साथ विद्यमान है। इसके थोड़े समय बाद उधर बंबावदा के राजा हल्लू जब अनेक उपाय कर हारा पर उसे रणभूमि में मरना नसीब नहीं हुआ और यह जान कर कि दिन प्रतिदिन बुढ़ापा और बढ़ता जा रहा है वह परेशान हो गया। इस बीच वह तीन वर्षों तक लगातार ज्वर पीड़ित रहने के बाद निरोग हुआ तो उसने विक्रम् संवत के वर्ष चौदह सौ ग्यारह में अपना मस्तक काट कर जोगणी देवी के स्थान पर चढ़ा दिया। राजा हल्लू की मृत्यु के बाद उसके दूसरे पुत्रों ने राजा चन्द्रराज के राज्य की सीमा को चारों ओर से हड़पने की सोची।

दोहा

सक तेरह इगुणीस सक, हालू संभव होण।
भू नव गुण ससि भांजियो, भड़ मंडोउर भोण॥४१॥
सक मयंक भू सक्वरी, देवी नूं सिर दीध।
कीधा जिण पगपग कळह, लेख इसै मृत लीध॥४२॥

विक्रम संवत् तेरह सौ उन्नीस के वर्ष में हाड़ा राजा हल्लू का जन्म हुआ था और उस योद्धा ने तेरह सौ इक्यानवें में जा कर मंडोवर का दुर्ग ध्वस्त किया अर्थात् उसे विजित किया। विक्रम संवत् के वर्ष चौदह सौ ग्यारह में उसने देवी के आगे अपना सिर काट कर चढाया। इस वीर राजा ने कदम-कदम पर अर्थात् ठौर-ठौर पर युद्ध किये पर वह युद्ध में नहीं मर सका और भाग्यलेख के अनुसार इस तरह मरा।

इतिश्रीवंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे पञ्चम राशौ वीतिहोत्र-चण्डासि बीज्यवर्णनबीजहड्डाधिराडस्थिपाल वंश्यानुवंश्यविहितव्याख्या वेलाव्याहार्यबुन्दीनरेन्द्रबरसिंह समानसमयकप्राप्तिचित्रकूटाधिपत्य-

राणालक्षपति राष्ट्रकूटबीरमदेव तत्पुत्रचुण्ड तत्पितृव्यकजैत्रमल्ल द्वारहठ-मिश्रणपृष्ठभव प्रवृत्तिप्रस्तवनेशैशवमूढराणालक्षपतिबुन्दीविध्वंसानन्त-रप्रत्यवसानसन्धास्वीकरण, भट मन्त्रि वर्गकल्पितबुन्दीदुर्गमध्यस्वाश्रित-पूर्वहल्लू द्वितीय पुत्रकुम्भकर्ण सप्रसभस्थापन कृत्रिमबुन्दीपराजयमुमूर्षु-कुम्भ राणावर्णितसहस्त्र वाहिनीविध्वंसन, पलायितप्राप्तस्वास्थ्यप्रत्य-भिमुखराणानी ककल्पितबुन्दीविजयकुम्भकर्ण मरण जीवन संदिग्धपक्ष-द्वय प्रख्यापन, कथितपूर्वभाड़ंगनगराधीशयवनविशेषाश्रितनीतनिखिल-नेम राष्ट्रकूटबीरमदेव चुण्ड नामस्वपुत्रजन नानन्तरतज्जामातृमारणदिमन्तु-पञ्चक प्रमुखानेकानर्थार्जन स्वप्रभुप्रच्छन्नयवनपरिकरविधिविशेषविश्रा-मितवाजिनीविकलबीरमदेव विध्वंसन स्वौरसपुत्रचुण्ड सहित पलायित-तत्पत्नीमांङ्गलिकीप्रतिहाग्प्रतोलीपात्रधन्वदेशस्थद्वारहठाऽऽल्ल्हसमाख्यवश-बहुवर्षविहान, द्वारहठप्रत्यभिज्ञातचुण्डेन्दोपटङ्किप्रतिहारभेदविशेषप्रधान-परिणायनानन्तरहड्डेशहल्लू जितपूर्वप्रतिहारपृथ्वीश हम्मीरनिस्सारणुपुरस्स-रवैरमदेविमण्डपपुरमहिपीकरण।

श्री वंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण की पंचम राशि में अग्निवंशी चहुवान कुल वर्णन के कारण हड्डाधिराज आस्थपाल के वंश और अनुवंश की कथा बताने के समय के वचनों में बूँदी नरेन्द्र बरसिंह के समय में होने वाला चितौड़ के स्वामीपन को प्राप्त हुआ महाराणा लाखा, राठौड़ वीरमदेव उसका पुत्र चूंडा, उसका काका जैत्रमल्ल बारहठ मीशण पीठवा, इन की प्रवृत्ति के प्रस्ताव में बालकपन के कारण मूढ राणा लाखा का बूँदी का विनाश किये बाद भोजन करने की प्रतिज्ञा को लेना, (कृत्रिम बूँदी को बिगाड़ने और महाराणा लाखा की प्रतिज्ञा लेने की कथा मेवाड़ के इतिहास में नहीं है) उमराव और मंत्री वर्ग द्वारा रचित कृत्रिम बूँदी के गढ़ में पहिले अपने आश्रित हल्लू के दूसरे पुत्र कुम्भकरण को हठपूर्वक रखना, कृत्रिम बूँदी दुर्ग की पराजय पर मरने की इच्छा वाले कुंभकरण का राणा की बनाई सहस्त्र सेना को भगाना, भागकर और स्वास्थ्य पाकर फिर सामने आई हुई राणा की फौज के कल्पित बूँदी दुर्ग को विजय करने पर कुंभकरण के मरने और जीने इन दोनों पक्षों के संदेह की सूचना करना, पहले कहे हुए भाड़ंगनेर के अधीश यवन विशेष के आश्रित सम्पूर्ण में से आधा राज्य प्राप्त कर राठौड़

बीरमदेव का चूंडा नामक अपने पुत्र के जन्म के बाद उस यवन के जमाई को मारने आदि पाँच अपराधों सहित अनेक अनर्थों को इकट्ठा करना, अपने मालिक से चुपके यवन की परगह का किसी प्रकार से घोड़ी को ठहराकर विकल बीरमदेव को मारना, अपने औरस पुत्र चूंडा सहित भागी हुई उस (बीरमदेव) की स्त्री मांगलियानी का प्रतिहार के पोलपात मारवाड़ देश में रहने वाले आल्हा नामक बारहठ के घर में बहुत वर्ष बिताना, इंदा पदवी वाले पड़िहारों की किसी शाखा के प्रधान को बारहठ से पहिचान कराये हुए चूंडा को अपनी पुत्री ब्याह कर हाड़ों के पति हल्लू से प्रथम विजय किये हुए प्रतिहार राजा हम्मीर को निकाल कर आगे बीरमदेव के पुत्र को मंडोउर का राजा करना।

श्रुतजनकध्वंसबीरमदेवद्वितीय पुत्रगोगराजदलाख्यनिर्मन्तु-म्लेच्छमारणकरवालप्रहारयाथातथ्यश्लाघा गर्हा सूचन, प्रत्यागतसजन्यजन परिणीतम्लेच्छराजपुत्र मार्गमिलितगोगराज मिथोमरण बारू टेकराख्य-नगरन्युषितपलायित प्रतिहारराजहम्मीरवंशीय विशेषव्याघ्रटपुत्रव्या-पादनानन्तरपूर्वदेशान्तरुच्चखेटादिप्रान्तसमाक्रमणसंज्ञापन प्राप्तमण्ड-पपुरराष्ट्रकूटराजचुण्डसमुद्भवशत्रुशल्ल्य रणमल्ला दिपुत्रचतुर्दषक भाविप्रादुर्भावप्राप्तिनिवेदन, ज्ञातखटदौर्लभ्यदुष्कालगौर्जरजनपद-पूर्वप्रान्तप्राप्तसस्वीय ग्रामजनताककविकुलपरपुरुषविजयशूरतत्र-त्यरैवतराजशरवधिको पटङ्किचालुक्यविसेषप्रतोलीपात्रवार्तिकसमुद-सिंहस्वसीमस्थापन मिश्रणस्वलघुभगिनीवार्तिकपरिणायनान्तरपरि-णायनोत्तरदिनान्तराच्छोटनमारितैक मृदुलोमकप्रत्यागतानुचितविरोध-जामिप शाल समरच्छिन्नमूर्द्धविजयशूररुण्डशत्रुत्रि भटीपातनानन्तरपतन निवारणगतनिजननान्दृकरसमर्पितविदारितपृष्ठमार्गनिष्कासितपृष्ठभवना-माङ्कितस्वभ्रूणविजयशूरसुचरित्रासहधर्मिणी सहगमन ज्ञातस्वजनध्वंसक-समुद्रसिंहहत्यक्ततत्पस्त्यप्राप्तहिंगुला जाम्बिकाप्रसादप्रत्यायातहत-समुद्रपितृभगिनीप्रार्थन प्रतीपद्वादशवर्षवयस्क पृष्ठभवतन्मस्तकानर्प सहगामिनीसतीशापप्राप्तकुष्टकृताऽनेकोपचारपञ्चदश वर्षवयस्कपृष्ठभव-परमभागवतराष्ट्रकूटजैत्रमल्लसञ्चरस्पर्षतद्रुजोल्लघीभवन, मिश्रणमहाभक्त-महिप बिरुदविशेषवसुधेशवर्गविख्यापन द्विनवति वर्षवयस्कयोगिनी-नामोपहारीकृतस्वमूर्द्धहड्डाधिराजहल्लू जन्म मरणा दिशकसूचन तत्पुत्र-

पृथ्वीशचन्द्रराज पृथ्वीप्रत्यनीकचक्राक्रमणविचारणं त्रयोदशो मयूखः ॥१३॥ आदितः षष्ट्युत्तरैकशततमः ॥१६०॥

पिता को मरा हुआ सुनकर बीरमदेव के द्वितीय पुत्र गोगराज का दला नामक निरपराधी म्लेच्छ को मारने में खड्ग के प्रहार की यथार्थ स्तुति और निन्दा की सूचना करना, ब्याहकर लौटे हुए बारात के लोगों सहित म्लेच्छराज के पुत्र और मार्ग में मिले हुए गोगराज का परस्पर मारा जाना, बारू का टेकरा नामक नगर में बास करके भगे हुए प्रतिहार राजा हम्मीर के वंशवालों का बघड़ाउतों को मारकर पूर्व देश में ऊंचाखेड़ा आदि प्रान्तों को दबाने की सूचना करना, मंडोउर लेकर राठौड़ राज चूंडा के पुत्र शत्रुशल्य, रणमल्ल आदि चौदह पुत्रों के आगे आने वाले समय में जन्म होने की प्राप्ति बताना, अकाल में तृण की दुर्लभता जानकर गुजरात देश के पूर्व प्रान्त में गये हुए अपने ग्राम के लोगों सहित ग्रन्थकर्ता (सूर्यमल्ल) के परपुरुष विजयशूर को वहाँ वाले रैवत क राजा सरबहिया पदवी वाले किसी सोलंकी के पोळपात बाटी समुद्रसिंह का अपनी सीमा में स्थापित करना, मीसण का अपनी छोटी बहन को बाटी को ब्याहने के कुछ दिनों बाद शिकार में एक खरगोश मारकर लौटने पर अनुचित विरोध से बहनोई का साले के मस्तक को युद्ध में काटना और मस्तक कटने पर भी विजयशूर का शत्रुओं के तीन वीरों को मारकर गिराना, रोकने के लिए आई हुई अपनी ननद के हाथ में पीठ को चीरकर निकाले हुए पीठवा नामक अपने बालक को देकर विजयशूर के साथ पतिव्रता स्त्री का सती होना, समुद्रसिंह को अपने पिता का मारने वाला जानकर, उसका घर छोड़कर, हिंगलाज देवी का वरदान पाकर, वापस आकर, समुद्रसिंह को मारकर, पिता की बहन की प्रार्थना के विरुद्ध बारह वर्ष की अवस्था वाले पीठवा का उसके मस्तक को नहीं देना, साथ गमन करने वाली सती के श्राप से कोढ पाकर अनेक इलाज कराकर पन्द्रह वर्ष की अवस्था वाले पीठवा का परम भगवद्भक्त राठौड़ जैत्रमल्ल के पास जाकर उसके स्पर्श से उस रोग से नैरोग्य होना, मिश्रण का महाभक्त राजा को राजाओं के समूह में विशेष विरुद से प्रसिद्ध करना, बानवे वर्ष की अवस्था में अपने मस्तक को योगिनी नामक देवी की भेंट करने वाले हड्डाधिराज हल्लू के जन्म मरण आदि के सम्वत् की सूचना करना, उसके पुत्र राजा चन्द्रराज

की भूमि को शत्रुओं के समूह का दबाने की सोचने का तेरहवाँ मयूख समाप्त हुआ। और आदि से एक सौ साठ मयूख हुए।

प्रायो ब्रजेदेशीय प्राकृत मिश्रित भाषा

दोहा

सक बिक्रम सिव सक्वरी हल्लू मरन निहारि।
बैरिन को जिततित बहुरि, बढत प्रताप बिचारि ॥१ ॥

दिल्लीस हिं दब्बन दुजन, अप्रगल्भ लखि ईह।
गिरिसिर तारादुर्ग किय, बुंदिय नृप बरसीह ॥२ ॥

सीमा पुब्ब तड़ाग सों, चामुंडा लग चाहि।
तारागढ़ तिम समय तकि, बंधिय बिरुद निबाहि ॥३ ॥

साहमुहुम्मद मरिग सक, बाजि व्योम चउ चंद्र।
तखत लह्यो फीरोज तंहं, तुगलक साह अतंद्र ॥४ ॥

दया प्रमुख बहुगुन बिदित, यामें तदपि अनेक।
बंगादिक सूबा प्रबल, टरे पकरि समटेक ॥५ ॥

विक्रम संवत् के वर्ष चौदह सौ ग्यारह में हाड़ा राजा हल्लू का मरना देख कर फिर से इधर-उधर के शत्रुओं का मनोबल बढ़ गया। वे अपना दबदबा बढ़ाने का विचार करने लगे। दिल्ली का बादशाह भी निर्बुद्धि देख कर उन राजाओं की भूमि दबाने की चेष्टा में था ऐसी परिस्थितियाँ देख कर बूँदी के हाड़ा राजा बरसिंह ने पहाड़ के शिखर पर तारागढ़ नामक दुर्ग बनवाने का विचार किया। पूर्व की सीमा पर तालाब से लगा कर चामुंडा देवी के मंदिर तक की भूमि पर समय नाजुक देख कर तारागढ़ का निर्माण करवा कर राजा ने अपना विरुद निभाया। विक्रम संवत् के वर्ष चौदह सौ सात में दिल्ली का बादशाह मुहम्मदशाह मर गया। उसकी जगह उद्यमी फिरोजशाह तुगलक दिल्ली के तख्त पर बैठा। यह बादशाह दयावान था यद्यपि इसमें अनेक गुण थे पर इसी के समय में बंगाल आदि सूबे दिल्ली के आधिपत्य को हठपूर्वक नकार कर अलग हुए।

अज्ज जवन जिततित अधिप, लग्गे पर भुव लैन।
यातैं नृप बुंदिय अचल, अंकिय दुर्गम अैन ॥६ ॥

प्रथम ब्याह बरसिंह पटु, अजयसिंहजा आनि।
प्रभावती गुनसील पटु, किय दयिता हित कानि ॥७ ॥

जो महिषी हुव हम्म जब, कासी निबसन कीन।
क्रम दूजो उपयम कियउ, पुनि इहिं समय प्रबीन ॥८ ॥

सो खुसाल कूरम सुता, जंबारेगढ जाइ।
अहिजनकुमरि सनाम यह, ब्याहित त्याग बढाई ॥९ ॥

पुनि अनुपम प्रामार की, कन्या छत्र कुमारि।
गो ब्याहन मंचोरगढ, बल बुंदीस बिथारि ॥१० ॥

आर्य और यवन राजा जहाँ कही से संभावना लगती वहीं से भूमि दबाने लगे। यह देख कर पर्वत पर बूँदी के राजा ने तारागढ़ दुर्ग जैसा दुर्गम घर बनाया। बूँदी के इस हाड़ा राजा बरसिंह ने अपना पहला बिवाह अजयसिंह की चतुर कन्या से किया। राजा ने इस प्रभावती कुमारी को जो शीलवती और गुणवान थी को अपनी प्यारी रानी बनाया। जब राजा हम्मीर ने काशीवास किया तब वह पटरानी बनी। इसी क्रम में दूसरा विवाह भी राजा बरसिंह ने लगभग इसी समय किया। उसने जमवा रामगढ़ (जंबारेगढ़) के कच्छवाहा राजा खुसालसिंह की अहिजनकुमारी नामक पुत्री से पूरे विधि-विधान पूर्वक विवाह कर इस अवसर पर खूब इनाम-इकराम बाँटा। तीसरा विवाह करने को हाड़ा राजा बरसिंह पूरे दल बल के साथ मंचोरगढ़ गया। जहाँ उसने अनुपम प्रमार की पुत्री छत्र कुमारी से विवाह संपन्न किया।

कछवाही के ब्याहके, अंतर ही नृप एह।
पत्तो ब्याहन मंचपुर, गढ प्रामारन गेह ॥११ ॥

करि बिबाह दै बसु कविन, दलत अरातिन दप्प।
दुलही जुग सेवित दुलह, आयउ बुंदिय अप्प ॥१२ ॥

पट्टरागिनी के प्रसव, न भयो चिरहु निहारि।
सक रवि सक्करि इम सुपहु, ब्याह्यो उभय बिचारि ॥१३ ॥

तनय छ हायनलग तदपि, हुव दुव तेहु रहेन।
नियति नाम पुब्बहि मरन, किय इम प्रथम कहेन ॥१४ ॥

सक अट्ठारह सक्करी अब बिक्रम भव आत।
कछवाही कै हुव कुमर, बैरिसल्ल बिख्यात ॥१५ ॥

कच्छवाहा वंश की अपनी दूसरी रानी से विवाह करने के थोड़े दिनों बाद ही हाड़ा राजा बरसिंह मंचपुर के गढ़ (मंचोरगढ़) में प्रमारों के घर तोरण मारने गया। यहाँ विवाह कर राजा ने कवियों को धन बांटा और अपने शत्रुओं के दर्प का दलन करता हुआ वह अपनी दुल्हन के साथ वापस बूँदी लौटा। जब अपनी पटरानी प्रभावती कुंवरी के लम्बे समय तक कोई पुत्र उत्पन्न नहीं हुआ तब बाद वाले दोनों विवाह राजा ने विक्रम संवत् के वर्ष चौदह सौ बारह में किये। यों तो छः वर्ष की अवधि में राजा के दो पुत्र जन्मे पर वे जीवित नहीं रहे। भाग्य योग से पहला बालक तो नामकरण से पहले ही मर गया पर विक्रम संवत् के चौदह सौ अठारह के वर्ष में रानी कच्छवाहा के गर्भ से पुत्र जन्मा जो बैरिसल्ल (बैरीसाल) नाम से प्रसिद्ध हुआ।

तीजे अब्दहि अनुज तस, नृपसुत जावदु नाम।
प्रकट्यो कछवाही प्रसव, दूजो गुन उद्दाम॥१६॥

भो तीजो प्रामारि भव, निम्मदेव जस जुत्त।
बार्द्धक में बरसिंह नृप, पाये इम त्रय पुत्त॥१७॥

लक्खरान इत सुत लहिय, अनघ चुंड अभिधान।
बरनिय छट्ठे रासि बहु, जगजस बिदित सुजान॥१८॥

अब्द बीस लग अंतर सु, बिनु पूर्वा पर बोध।
तिनसों अंतर अधिक तब, बत्तन समय बिरोध॥१९॥

तिम अनिरुद्ध चरित्र तक, ऐसो अंतर आइ।
जंहं न असंगत जानिये, संभव उचित सुहाइ॥२०॥

इसी कछवाहा रानी की कोख से तीसरे वर्ष में राजा को दूसरे पुत्र की प्राप्ति हुई। जावदु नामक यह दूसरा कुमार अत्यंत गुणवान था। तभी तीसरा पुत्र निम्मदेव नामक प्रमार रानी के गर्भ से उत्पन्न हुआ। वृद्धावस्था तक जाते राजा बरसिंह के कुल में तीन पुत्र हुए। उधर चित्तौड़गढ़ के राणा लाखा (लक्ष्मण सिंह) के एक निष्पाप (पवित्र) पुत्र चूंडा नामक जन्मा पर मैं (ग्रंथकर्ता सूर्यमल मीसण) इसका विस्तार से वर्णन अपने ग्रंथ (वंश भास्कर) की छठी राशि में करूँगा। पूर्वापर का ज्ञान नहीं होने के कारण इन घटनाओं में बीस वर्ष तक का अन्तर हो सकता है यदि अन्तर इससे अधिक हो तो कथा में समय का विरोध हुआ है सुजान पाठक ऐसा मानें। समय गणना में

इसी प्रकार का अन्तर अनिरुद्धसिंह के वृतान्त तक आएगा इसे असंगत न समझ कर जहाँ जैसा हो वहाँ वैसा मान लें।

कहि इक्क रु अपर हिं कहैं, कहुंक अनंतर काल।
कहुं अंतर समकाल कहुं, पै संभव महिपाल॥२१॥

कहुं पहिली पीछैं कहुंक, पीछैं हुव पहिलैं सु।
बढि पे हायन बीस सों, होइ जु पुब्ब नहैं सु॥२२॥

मैंने यदि एक का वर्णन कर दूसरे को किसी अन्य समय में बता दिया है और कहीं एक ही समय वालों को दूसरे समय में कह दिया है तो हे राजा रामसिंह! ऐसा होने में संदेह न किया जाए ऐसा होना संभव है। कहीं पर पहले का वृत्तान्त बाद में आया होगा और किन्हीं स्थलों पर बाद की कथा पहले आ गई होगी परन्तु मेरी मति अनुसार यह अन्तर अधिक से अधिक बीस वर्ष का ही रहा होगा।

षट्पात्

इत मंडपपुर ईस चुंडसुत कहिय चउद्दह।
सत्रुसल्ल तिम सबन महत बरनिय बिरोधमह।
जास अनुज रनमल्ल सोहु अनई अग्रजसम।
तात अनंतर सत्रुसल्ल भो भूप कहे क्रम।
रनमल्ल समर हनि सिंधुलन लरि सोझतिपुर दब्बि लिय।
सह सट्ठित्रिसत निवसथ सकल करि अधीन तंहं राज्य किय॥२३॥

इधर मंडोवर के राजा चूंडा के चौदह पुत्र हुए। इनमें सबसे बड़ा शत्रुसाल था जो लिरोध करने में भी बड़ा था। इससे छोटा रणमल था वह भी अपने बड़े भाई की तरह न्यायरहित अर्थात् अन्यायी था। अपने पिता की मृत्यु के बाद पाटवी पुत्र शत्रुसाल राजा बना और रणमल ने सिंधुल क्षत्रियों को मार कर उनके अधिकार की भूमि सहित सोजत नगर को अपने अधिकार में कर लिया। इस प्रकार कुल तीन सौ साठ गाँवों का आधिपत्य करते हुए उसने राज किया।

सत्रसल्ल नृप सूनु नाम नरबद हुव निर्दय।
इक अह तात तनूज मंत्र मिलि किय अधर्ममय।

करि महिमानी कपट बुल्लि रनमल्ल जुत्त बल।
रत्ति हनहिं जब रहहिं तब सु सोझत अप्पन तल।
इम मंत्रि तत्थ पठयो यहहि नरबद सुत बुल्लन अनुज।
नृपराम लखहु कलि के नृपन भक्खन बंस खुजात भुज॥२४॥

शत्रुसाल के नरबद नामक एक निर्भय पुत्र जन्मा। एक दिन दोनों पिता पुत्र ने आपस में मिलकर अधर्म युक्त मंत्रणा की। उन्होंने विचार कर ऐसी योजना बनाई कि रणमल को दलबल सहित छलपूर्वक मेहमान के रूप में बुलाया जाए। जब वह आ जाए तो रात्रि के समय अचानक उसे मार डाला जाए जिससे सोजत परगना अपने अधिकार में आ जाए। इसी योजना के अंतर्गत राजा ने अपने पुत्र नरबद को ही सोजत अपने चाचा को निमंत्रित करने भेजा। हे राजा रामसिंह! आप देखें कि कलियुग के राजा अपने ही वंश का भक्ष्य लेने में कैसे भुज खुजलाते हैं अर्थात् उत्साह दिखलाते हैं।

दोहा

अनई चिंतिय अप्प उर, रनमल्ल हु सुहि रीति।
हनन उतारयो थान हित, प्रकटि भतीजहिं प्रीति॥२५॥

उधर जब कुमार नरबद सोजत पहुँचा तो लगभग वैसा ही अन्याय रणमल ने विचारा और उसने अपने भतीजे के समक्ष पूरे स्नेह का प्रदर्शन करते हुए जहाँ उसे मारना सुगम हो ऐसे सुरक्षित स्थान पर ठहराया।

षट्पात्

समयरत्ति तस सिविर भेजि नानाबिध भोजन।
मदिरापाइ प्रमत्त जास किन्न न वह को जन।
बलि लै निज भटबर्ग रत्ति काका सौमिक रचि।
कट्टिय भ्रातृज कटक बीच नरबद रहिगो बचि।
प्रहरन प्रहार दृग तस दुव हि गये फुट्टि कटि गातहू।
बहु घाय लग्गि परिगो बिकल जियहित लोचन जातहू॥२६॥

रात्रि के समय कुमार नरबद के डेरे पर रणमल ने नानाविध व्यंजन भिजवाए फिर उसे छक कर मदिरा पिलाई और उसे अकेले में प्रमत्त कर दिया। इसके बाद अवसर देख कर रात को रणमल ने अपने योद्धाओं सहित धावा बोला। सबसे पहले भतीजे की सारी सेना को काटा पर नरबद बच

गया। शस्त्रों के प्रहारों से उसकी दोनों आँखें फूट गई और उसके शरीर पर कई गहरे घाव लगे। प्राण तो नहीं गए पर इस तरह अपनी आँखों के फूटने पर वह व्याकुल हो कर भूमि पर घायलावस्था में गिर पड़ा।

दोहा

कपट फेन निज बदन करि, ब्याकुल स्वास बढाइ।
सठ लग्गो कर पय घिसन, द्रुत असु जात दृढाइ॥२७॥

कुमार ने जानबूझ कर कपटपूर्वक अपने मुँह से झाग प्रकट किये और व्याकुल नरबद ने सांस ऊपर चढ़ा ली फिर वह अपने हाथ-पाँव इस प्रकार भूमि पर पटकने लगा . इससे ऐसा प्रतीत हो कि वह मृत्यु के अत्यंत करीब है और इस छटपटाहट के साथ ही उसके प्राण पखेरू उड़ जाएँगे।

षट्पात्

नरबद मरत निहारि भटन जामिक धरि निर्भय।
लिय बैभव तस लुट्टि दीप प्रद्योत बीतदय।
महल आइ रनमल्ल सयन किन्नों पतनीं सह।
कछुउपाय इत कड्ढि अंध भग्गो नरबद यह।
सो ग्राम सीरवादे प्रबिसि घुसि निबस्यो इक जट्ट घर।
रवि उदय सुन्यों रनमल्ल जगि सो भतीज कढिगो सडर॥२८॥

नरबद को इस प्रकार मरणासन्न देख कर रणमल ने अपने सैनिकों को वहाँ प्रहरी लगाये और मन में निर्भय हो गया फिर मशालों की रोशनी में निर्दयी ने अपने भतीजे नरबद का सारा माल असबाब लूट लिया। इसके बाद वह अपने महल में आ कर अपनी पत्नी के साथ निश्चिंत होकर सो गया। इधर कोई उपाय ढूँढ कर वह अंधा नरबद वहाँ से भाग लिया और रास्ते में सीरवादे गाँव के एक जाट के घर में ठहर गया। उधर सूर्योदय होते-होते रणमल ने सुना कि उसका भयभीत भतीजा वहाँ से निकल भागा है।

दयो भटन तिन्ह दंड जित्ते रक्खे तिहिं जामिक।
सजि निज कटक समत्थ गयो बारू आगामिक।
बल मंडपपुर बेढि लूट मंडत प्रबिस्यो लरि।
राजद्वार निज रक्खि आनि मारिय अग्रज अरि।

दहि सत्रुसल्ल रनमल्ल द्रुत मंडोउर भूपति भयो।
नरबद दुरयो सु खोजन निपुन प्रचुर दूत गन प्रेसयो॥२९॥

रणमल ने उन प्रहरियों को बुला कर कड़ा दंड दिया जिन्हें वह रात्रि को यहाँ तैनात कर गया था फिर उसने अगले ही दिन अपनी सेना को सज्जित किया और अपनी सेना सहित उसने जा कर मंडोवर को घेर लिया। नगर को लूटता हुआ शीघ्र ही महलों में जा पहुँचा। राजद्वार पर अपने विश्वासपात्र आदमियों को रखा और उसने भीतर जा कर शीघ्र ही अपने शत्रु बड़े भाई शत्रुसाल को मार डाला। आनन-फानन में उसकी विजय हुई और रणमल मंडोवर का राजा बन गया। राजा बनते ही उसने यहाँ-वहाँ अपने दूत भेजे कि जहाँ कहीं भी नरबद छिपा हुआ हो उसे ढूँढ़ निकालो।

दोहा

कुमरी इक रनमल्ल कै, क्रम चोबीस कुमार।
अक्खयराज रु करन इम, अनुजनि चंप उदार॥३०॥

नुत खंधिल रनधीर नर, सब कलिकृत्य सुबोध।
इत्यादिक कतिकन अनुज, जोथ नाम रनजोध॥३१॥

इत बंबावद गढ अधिप, चंद्रराज चहुवान।
हल्लू सुत जाकों कहिय, अपर चंच अभिधान॥३२॥

आयुभुग्गि बिधिउचित इहिं, दिय तजि चंद्र हु देह।
तनय धीर अभिधान तस, अधिपभयो तंहं एह॥३३॥

इस राजा रणमल के एक पुत्री और क्रमशः चौबीस पुत्र हुए। इनमें अक्षयराज, कर्ण और इनमें छोटा चांपा नामक था। इनसे छोटे भाइयों में कांधिल, रणधीर थे जो युद्ध के कामों में निपुण थे। इनसे भी छोटे कई भाई थे जिनमें जोधा नामक कुशल योद्धा था। इधर बंबावद गढ़ का राजा चहुवान चन्द्रराज जो राजा हल्लू का पुत्र था और जिसका अवर नाम चंच भी था। विधाता द्वारा प्रदत्त अपनी लंबी आयु भोग कर जब राजा चंद्रराज हाड़ा ने अपनी देह का त्याग किया तब उसका धीर नामक पुत्र अपने पिता की जगह बंबावद का राजा बना।

षट्पात्

बुंदियपति बरसिंह सुनत उपयम इत सद्धिय।
पल्ल्हनगढ़ प्रामार हेरि अप्पन समता हिय।
पट्टिमदेवी प्रथम सुता दलसाह सयानी।
बैरिसल्ल वह ब्याहि कमनआनी कुमरानी।
चालुकी सदाकुमरि सु प्रथम जनक बिबाह्यो जावदुव।
भुव भाग पाइ पीछैं यहहु त्रय बिबाह पुनि करत हुव॥३४॥

बूँदी के हाड़ा राजा बरसिंह ने अपने पुत्र का विवाह सुनते हैं कि ऐसे किया कि सबसे पहले पल्हनगढ़ के प्रमार वंशीय क्षत्रियों के कुल को अपने समतुल्य पाया फिर वहाँ के राजा दलशाह की सयानी और सुन्दर पुत्री पट्टिम देवी का विवाह बैरीसाल से कर उसे कुंवरानी बनाया। इसी तरह अपने दूसरे कुमार जावदू का विवाह चालुक्य वंशीय सदा कुंवरी से किया पर जावदू ने जागीर में से अपना हिस्सा पाने के बाद तीन विवाह और रचाए।

दोहा

परन्यों दूजी पट्टलहि, बैरीसल्ल बहोरि।
दहर भारमल्लहसुता, मानकुमरि हितजोरि॥३५॥
निम्मदेव कुमरहिं नृपति, पुर बालेर पठाइ।
सीता हरि दाहिम सुता, परिनायउ सम पाइ॥३६॥

राजा बन कर बैरीसाल ने अपना दूसरा विवाह दहर के भारमल की पुत्री मान कुंवरी से किया। राजा ने इसके बाद अपने कुमार निम्मदेव को बालेरपुर भेजा और दाहिमा हरि की पुत्री सीता से उसका विवाह संपन्न करवाया।

सचरणगद्यम्

हड्डाधिराज बरसिंह नैं मध्यकुमार जाबदू कों बसुधा के बिभाग में बंसीपुर दयो।

सोही अपनों आवास राखि जाबदू महाथाटीधर गबदू नाम भिल्ल कों भंजि अनेक आहवन में प्रसंसा पाइ बूँदी सों छ कोस ईसान आसान पर नंदन नाम निबसथ बसावत भयो।

ताकें बंस के समस्त ही हड्डुन में एगारम भेद पाइ जाबदूके कहाये।

जहाँ जाबदू कै सारन अरु सेव दो पुत्रभये तिनमें सारन कै सामंत सेव कै मेव भयो तिनकरि निज निज कुल सामंत के मेवाउत्त अैसें जाबदू के जननके द्वै ही भेद प्रसिद्ध पाये॥३७॥

हाड़ा राजा बरसिंह ने अपने दूसरे पुत्र कुमार जावदू को अपनी भूमि के विभाग में बंशीपुर नामक गाँव दिया। जावदू ने बंशीपुर में अपना आवास बनाया फिर गबदू नामक एक बड़े भील डाकू को मारकर उसने अनेक युद्धों में प्रशंसा पाई और बूँदी के ईसान कोण में छह कोस की दूरी पर नंदन नामक गाँव बसाया। इसके वंशजों से सभी हाड़ाओं में ग्यारहवाँ भेद प्रचलित हुआ। उसके अनुसार इसके कुल के सारे वंशज जावदूके कहलाए। सारन और सेव नामक दो पुत्र जावदू के हुए। इनमें से सारन के आगे सामंत नामक पुत्र जन्मा और सेव के मेव नामक हुआ। इनमें भी सामंत के वंशज सामंतके और मेव के वंशज मेवाउत कहलाए। इस प्रकार जावदू के पुत्रों के दो भेद प्रसिद्ध हुए।

दोहा

जाबदु कुल इम भेद जुग, द्विरदन तोरन दंत।
कहियत नृप सामंतके मेबाउत्त महंत॥३८॥

निम्म हिं दियउ बिभाग नृप, नगरनाम नवगाम।
पुरबुंदिय सन पच्छिम जु, बसहि त्रि कोस विराम॥३९॥

निम्मदेव संतति निखिल, निम्माउत्त कहाइ।
हड्डुनभेद सु बारहम, यहं संख्या मिति आइ॥४०॥

जाबदू के कुल में ऐसे दो भेद हुए जो हाथियों के दाँत तोड़ने वाले एक तो सामंतके और दूसरे मेवाउत वीर कहलाए। राजा ने निम्मदेव को उसके हिस्से में नवगाम नामक नगर की जागीर दी जो बूँदी नगर से तीन कोस की दूरी पर पश्चिम दिशा में अवस्थित है। इस निम्मदेव की सारी संतति निम्माउत के नाम से प्रसिद्ध हुई। हाड़ाओं में इसे बारहवाँ भेद कहा जाता है।

षट्पात्

बुंदियपति बरसिंह जरठ गंगा सूकर जंहं।
पत्तो पहु कछुपर्ब त्रय हि रानिन उपेत तंहं।
सुबरन पंचसहस्त्र सुरभि सतपंच सुलच्छन।
बिप्रन हित दिय बंटि पारि बिस्मय परपच्छन।
यह खिन निहारि तोमर अमर स्वभट अचानक सज्जि सब।
पहिलैं जु हम्म जित्त्यो प्रथित वह दब्बिय पुर टुंक अब॥४१॥

बूँदी का हाड़ा राजा अपनी वृद्धावस्था में किसी पर्व के अवसर पर अपनी तीनों रानियों को साथ ले कर गंगा के सोरम घाट पर गया। जहाँ पर उसने पाँच हजार स्वर्ण मुद्राओं सहित पाँच सौ सुलक्षणी गायों का दान ब्राह्मणों को दे कर अपने शत्रुओं में विस्मय का संचार किया। राजा के राज्य से बाहर होने का अच्छा अवसर देख कर तंवर अमरसिंह अपने योद्धा सहित सज्जित हो कर अचानक चढ़ आया और पूर्व में जिस टोंक नगर को राजा हम्मीर ने जीता था उस प्रसिद्ध नगर को अपने अधिकार में ले लिया।

दोहा

भीम नैनवापति दभिक, सो हरिसुत लै संग।
पुरडग्गीपति अमर इम, दब्बिय टुंक सु द्रंग॥४२॥

नैणवा नगर का स्वामी दहिया भीम जो दहिया हरि का पुत्र था को अपने साथ ले कर डिग्गी के तंवर राजा ने टोंक जैसा सुन्दर नगर दबा लिया।

षट्पात्

अमर टुंक अंगमि रु आइ बुंदिय धन घेरिय।
नैननगर के नाह दभिक तदुचित सहाय दिय।
मंडिय कुमरन अमित सज्जि तारागढ़ संगर।
घन तोपन निर्घात पटकि ब्याकुल कित्रैं पर।
ति लालसिंह नृप के अनुज गैनोली सन बीरगति।
द्रुत आइ असह रतिबाह दिय किय प्रद्रुत लिय मारि कति॥४३॥

डिग्गी के तंवर राजा अमरसिंह ने टोंक को जीतने के बाद आकर

बूँदी नगर को घेर लिया। नैणवानगर के दहिया राजा ने उचित सहायता दे कर उसका साथ दिया। इधर कुमार ने मरना तय कर अपनी सेना को तारागढ़ पर मुकाबले के लिए सज्जित किया और तोपों के धमाकों से सभी शत्रुओं को व्याकुल कर डाला। यह सुन कर राजा का छोटा भाई वीर लालसिंह हाडा गैणोलीनगर से द्रुतगति से आया। उसने आ कर रात्रि को अचानक धावा बोल कर शत्रुओं के कई सैनिकों को मार डाला और शेष सेना को वहाँ से भगा दिया।

दहिया तोमर दुव हि मिले भज्जत बिगारि मुख।
निट्ठिनिट्ठि नैनपुर जाइ मन्निय जीवन सुख।
बुंदिय पुनि बरसिंह आइ कुमरन सिराहि अति।
दियु रीझि सोदरहिं दुर्ग मक्खीद महामति।
दल सज्जि निखिल बिजई दुसह लोचनपुर द्रुत बिंटि लिय।
सकुटुंब दभिक तोमर सहित कढि आलंबन टुंक किय॥४४॥

दहिया भीम और तंवर अमरसिंह दोनों अपेक्षित सफलता नहीं मिलने पर वहाँ से अपना मुँह बिगाड़ते हुए भागे। बमुश्किल तमाम उन्होंने नैणवा नगर पहुँच कर प्राणों के रहने का सुख माना। जब राजा तीर्थयात्रा से वापस लौटा तो उसने अपने कुंमारों की दृढ़ता से मुकाबला करने के लिए सराहना की और महामति बरसिंह ने अपने भाई लालसिंह को रीझ कर मक्खीद का दुर्ग जागीर में दिया। इसके बाद तुरन्त अपनी विजय करने वाली सारी सेना को सज्जित की और जा कर नैणवा नगर को घेर लिया फिर दहिया और तंवर को सकुटुम्ब वहाँ से निकाल बाहर किया और उनके आधार को ही तोड़ डाला।

दोहा

लरि करउर जिम हम्म लिय, पहिलैं दहियन पेलि।
लोचनपुर बरसिंह लिय, खेल असिन तिम खेलि॥४५॥
निज थानां धरि नैनवा, रच्छक बीर बिसेस।
चिंतिय नृप अग्गैं चलन, दब्बन टुंक प्रदेस॥४६॥

भाखिय तंहं अप्पन भटन, दुर्लभ जय बिधि दिन्न।
उयउ टुंक तिहिं संटि गढ, लोचनपुर तुम लिन्न॥४७॥

पूर्व में जैसे हाड़ा राजा हम्मीर ने दहियों को निकाल कर युद्ध में विजय पाकर करउर लिया था। उसी प्रकार का तलवारों का खेल खेल कर हाड़ा बरसिंह ने लोचनपुर (नैणवापुर) लिया। राजा ने नैणवा में अपना थाना स्थपित किया और उसकी रक्षा के लिए अपने वीर सैनिक वहाँ तैनात किये। इसके बाद राजा बरसिंह ने आगे जा कर टोंक के परगने को वापस हथियाने का विचार किया। इसके लिए उसने अपने सामन्तों से कहा कि यह दुर्लभ विजय तो भगवान ने हमारी करवा दी। नैणवा के गढ़ को तुम लोगों ने जिस प्रकार टोंक के बदले में ले लिया यह तारीफ की बात है।

बिच दाहिम चालुक बहुत, नृप दुगद्रंग निराइ।
अग्गैं बजते मित्र अब, रिपु हुव सीम भिराइ॥४८॥

दाहिम तोमर मिलि दुहुन, सज्जिग टुंक सिपाह।
अह बहु लग्गहिं अप्पनैं, नैर चलहु नरनाह॥४९॥

अक्खिय नृप बार्द्धक उचित, मरन देहु रन मांहिं।
प्रसभ मोरि आन्यों तदपि, जोधन लंघिन जांहिं॥५०॥

यहाँ से टोंक की राह में दाहिमा और चालुक्य कई राजा हैं जो नैणवा नगर के हिमायती हैं। वे पूर्व में हमारे मित्र थे पर अब वे सीमा पर शत्रु हो कर भिड़ेंगे। दाहिमा और तंवर दोनों ने मिल कर टोंक में अपनी सेना सज्जित कर रखी होगी। हमें उसे लेने में कई दिन लगेंगे इसलिए हे राजा! अब अपने नगर को लौट चलें। यह सुन कर राजा ने कहा कि अब वृद्धावस्था है इसलिए में रणभूमि में मरना चाहता हूँ पर दर्प से भरे राजा को सामन्तों ने वापस मोड़ दिया।

बंबावद धीर जु बदिय, चंद्र तनय चहुवान।
जाको नाम द्वितीय जग, कहत ज़ चंच कथान॥५१॥

पहिलैं अरिन उपाय किय, दब्बन चंच प्रदेश।
दीस्यो तब रोधक दुसह, रिपु बरसिंह नरेस॥५२॥

अंग तजिय बरसिंह अब, जय संभव इम जानि।
धरनी दब्बन धीर की, अरिगन लग्गे आनि॥५३॥

हाड़ा चंद्रराज जिसका अवर नाम कथाओं में चंच चहुवान भी आता है का पुत्र बंबावद का राजा धीर बोला कि पहले भी शत्रुओं ने मेरे पिता के प्रदेश को हड़पने के कई उपाय किये पर वे सभी व्यर्थ हो गए ज़ब उन्हें अपने समक्ष राजा बरसिंह जैसा दुस्सह अवरोधक शत्रु नजर आया। अब जब वीर राजा बरसिंह इस सृष्टि में नहीं रहे तो उन्हें लग रहा है कि अब विजय संभव है और शायद यही सोच कर वे शत्रु राजा धीर की भूमि दबाने को उतावले हो कर आने लगे हैं।

बसु रस गुन भू मित बरस, जंहं बिक्रम सक जात।
भयो नृपति बरसिंह भव, पुरबुंदिय तंहं प्रात॥५४॥

गुन नव तेरह साक गत, धरिय छत्र सिर धीर।
तारागढ़ बंधिय तिमहि, सिव चउदह सक सीर॥५५॥

सुत संभव चिरलों चहत, गहिय न रानिय गब्भ।
रवि चउदह सक तब रचे, दुव पुनि ब्याह अदब्भ॥५६॥

सकबसु ससिचउदह समय, बयपचास सम बित्ति।
पायउ सुत त्रय बृद्धपन, किय बितरन रन कित्ति॥५७॥

विक्रम संवत् के तेरह सौ अड़सठवें वर्ष के गुज़रते समय में हाड़ा राजा बरसिंह का बूँदी नगर में जन्म हुआ और विक्रम संवत् के वर्ष तेरह सौ तिरानवे के बीतते उन्होंने बूँदी का छत्र धारण किया। उन्होंने राजा बन कर चौदह सौ ग्यारह में तारागढ़ जैसे दुर्ग का निर्माण करवाया। यह राजा लंबे समय तक अपने पुत्र के जन्म की प्रतीक्षा करता रहा पर दुर्भाग्य से रानी ने गर्भ धारण नहीं किया तब उसने वर्ष चौदह सौ बारह में जा कर दो उत्तम विवाह और किये। विक्रम संवत् के वर्ष चौदाह सौ अठारह में जब राजा की उम्र के पचास वर्ष व्यतीत हो चुके थे तब सौभाग्य से वृद्धावस्था में राजा को तीन पुत्र प्राप्त हुए जिन्होंने आगे जा कर युद्ध और दान दोनों क्षेत्रों में कीर्ति अर्जित की।

सकत्रि बेद चउ इक्क सम, जनक अस्थि लै जाइ।
सूकर डारे सुरसरित, बितरन न्हान बिधाइ॥५८॥

ता हि बरस रचि रन तुमुल, भीम रु अमर भजाइ।
लोचनपुर चिरगत लयो, जितिति अरिन लजाइ॥५९॥
बरस बयासी भुग्गि बय, नभ सर सक्करि मान।
सक जावत बरसिंह नृप, सुरपुर पत्त सुजान॥६०॥

विक्रम संवत् के वर्ष चौदह सौ तैंतालीस में राजा बरसिंह अपने पिता की अस्थियाँ ले कर उनके विसर्जन के लिए गंगा नदी के सोरम घाट को गया जहाँ उसने पूरे विधि-विधान से गंगा की पूजा अर्चना कर स्नान किया और इस अवसर पर ब्राह्मणों को बहुत दान दिया। इसी वर्ष याने चौतह सौ तैंतालीस ही में इस हाड़ा राजा ने बड़े युद्ध में भीम दहिया और अमर तंवर जैसे राजाओं को भगा कर नैणवा नगर को अपने अधिकार में लिया। अपने शत्रुओं को लज्जित कर चिरकाल से वांछित अपनी इच्छा पूरी की। अपनी बयासी वर्ष का लंबा भरा पूरा जीवन जी कर विक्रम संवत् के चौदह सौ पचासवें वर्ष में हाड़ा राजा बरसिंह अपनी देह का त्याग कर स्वर्गलोक को गया।

इतिश्री बंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायण पञ्चम राशौ वीतिहोत्र-चण्डासि बीज्यवर्णनबीजहड्डाधिराडस्थिपाल वंश्यानुवंश्यविहितव्या-ख्यानावसरव्याहार्यबुन्दीनरेन्द्रबरसिंह चरित्रे सूचितशकसमयदिल्लीश-मुहम्मद नन्तरप्राप्तपट्टफीरोजसाह सामन्तगणप्रातीप्यप्रबुद्धसमालोचितदेश काल बरसिंह तारादुर्गनिर्माणसमयानन्तरवार्द्धकछुसानपत्यनृपकौर्मी प्रामारी पत्नीद्वय परिणयन, सप्रसूनिश्चयबरसिंहिवैरिशल्य जावदु निम्मदेव कुमारत्रय समुद्भवन, चित्रकूटाधिराजराणालक्षधीरज्येष्टकुमारचुण्डप्रादु-र्भवन, समय विरुद्धवृत्तान्तवर्णनबीज सन्देहसङ्गतिसमाधानावधिसूचन मण्डपपुराधिराजराष्ट्रकूटचुण्डतनुत्यागानन्तरप्राप्तपट्टतत्पुत्रशत्रुशल्य स्वी-यकुमारनरबद समाहूतरणमल्लमारणरहस्यालोचन प्राप्त सोझतपुराधिपत्य-स्वानुजरणमल्लकारणार्थशत्रुशल्यस्वपुत्रप्रेषण, प्रत्युतप्रतीपरणमल्लमदिष्ठा-मत्तभ्रातृजशिस्सौप्तिकपातन ज्ञातम्रियमाणावस्थाग्रजात्मजन्यस्तजामिक-समात्तशिबिरसर्वस्वरणमल्लशयनसमयान्धीभूतनरबदप्राप्तच्छिद्रपलायन योत्स्यमानमण्डपपुरप्रविष्टनिपातितस्वाग्रजशत्रुशल्यरणमल्लतदाधिपत्यसमा-दान रणमल्लैरसाक्षयराज कर्म चम्पा दिचतुर्विंशति सूनुसमर्थकियदनु-जयोधनामकुमाराधिकयोधनाऽभिरुचित्वज्ञापन।

इति श्री वंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण की पंचम राशि में चहुवान वंशवर्णन के कारण हड्डाधिराज अस्थिपाल के वंश और अनुवंश की कथा बताने के समय के वचनों में बूंदी नरेश बरसिंह के चरित्र में जिसके शक समय को सूचित किया है ऐसे दिल्लीश मुहम्मद के पीछे फीरोजशाह के तख्त पर बैठने पर उमरावगणों के विरुद्ध होने से सावधान और देश काल को विचारने वाले बरसिंह का तारागढ़ बनाने के बाद बुढ़ापे के छूने पर अर्थात् वृद्ध होने पर संतान न होने के कारण कछवाही और प्रामारी दो स्त्रियों से विवाह करना, माता सहित निश्चय किये हुए बरसिंह के पुत्र बैरिशल्य जावदू और निम्मदेव तीन कुमारों का जन्म होना, चित्तौड़ के राजा राणा लाखा के ज्येष्ठ कुमार चूंडा का जन्म होना, समय के विरुद्ध वृत्तान्त वर्णन करने के कारण भूत सन्देह की संगति के समाधान की अवधि की सूचना करना, मंडोउर के राजा राठौड़ चूंडा के देहांत के पीछे उसके पुत्र शत्रुशल्य का गद्दी पर बैठकर अपने पुत्र नरबद को बुलाकर रणमल्ल को मारने का एकान्त में विचार करना, सोझतिपुर के स्वामिपन को प्राप्त हुए अपने छोटे भाई रणमल्ल को बुलाने के लिए शत्रुशल्य का अपने पुत्र को भेजना, उलटा शत्रु बनकर रणमल्ल का मदिरा में मत्त भतीजे के ऊपर रतिवाह देना, बड़े भाई के पुत्र को मरने की अवस्था में जानकर उस पर पहरायत रखकर डेरों में से सर्वस्व हरने वाले रणमल्ल के शयन करने के समय अंधे नरबद का छिद्र पाकर भागना, युद्ध करने वाले रणमल्ल का पुर में प्रवेश करके अपने बड़े भाई शत्रुशल्य को मारकर उसका आधिपत्य लेना, रणमल्ल के अक्षयराज, कर्ण और चम्पा आदि चौबीस औरस पुत्रों में से समर्थ कितनों ही से छोटे जोधा नामक कुमार की युद्ध करने में अधिक रुचि होने की सूचना करना।

बम्बावददुर्गाधिराजचंचा ऽपर नामचन्द्रराज मरणानन्तरतत्पुत्रधीरदेव पितृपट्टप्रापण नरेन्द्रबरसिंह कुमारत्रय क्रमप्राप्तप्रामारी चालुकी दाधिमी पत्नीत्रय परिणायन जनकमरणानन्तरबैरिशल्य जावदु क्रमैक त्रय भावि-विवाहकरणकथन बिभाग-प्राप्तवंशीपुरव्यापादितगबद्वाख्यभिल्ल-संवासितनन्दननामनिवसथजाबदु सन्तानजाबदूको पटङ्क्येकादश हड्डुभेदसमासादन, भाविजावदवसारण सेव द्वय सुतसामन्त मेव द्वय सन्तानस्वभेदान्तर्भूतपृथक्पृथक् सामन्तक मेवाउत्त भेदयुग्मा धिगमन दायलब्ध नवग्रामनगरनिम्मदेव सन्ततिनिम्माउत्तो पटङ्क्द्वादश हड्डु-

भेदप्रकटन राज्ञीत्रयो पेतशूकरक्षेत्रगङ्गासङ्गतबरसिंह नरेन्द्रपर्वान्तरपुण्य-समयसुरभिशतपञ्चक सहितस्वर्णसहस्रपञ्चक समुत्सर्ज्जन नयननगर-नाथदभिक भीमसहायप्राप्तावसरसमाक्रान्तटोङ्कपुरसन्नद्धतोमराऽमरसिंह-बुन्दीद्रङ्गवेष्टन तारादुर्गाधिष्ठितबैरिशल्या दिकुमारत्रय प्रारब्धनाली-यन्त्रावमर्दविहस्तलालसिंह सौप्तिकसन्त्रस्ततोमर दभिक नयनपुरपलायन प्रत्यागतप्रशंसितस्वसूनुकस होदरार्थप्रसाददत्तमक्षीद-दुर्गनिष्कासिततोमर दभिक द्वय वयोवृद्धबरसिंह नयननगरसमाक्रमण लब्धबुन्दीन्द्रमरणाव-सरशत्रुमण्डलबम्बावदाधिराजधीरदेव देश दुर्गाऽऽदानप्रारम्भण हड्डाधि-राजबरसिंह जन्म राज्य प्राप्ति तारादुर्गनिर्माण पत्नीद्वय पाणिपीडन पुत्राधिगम गङ्गोपरागदान नयननगराक्रमण तनुत्याग शकसूचनं चतुर्दशो मयूखः- ॥१४॥ आदित एकषष्ट्युत्तरैकशततमः ॥१६१॥

बम्बावदा गढ़ के राजा चंच दूसरे नाम से चंद्रराज के मरने पर उसके पुत्र धीरदेव का पिता का पाट पाना, नरेन्द्र बरसिंह के तीन कुमारों का क्रमपूर्वक प्रामारी सोलंकिनी और दाहिमी इन तीन स्त्रियों से विवाह करना, पिता के मरने के पीछे वैरिशल्य और जावदू का क्रम से एक और तीन आगे होने वाले विवाह करने का कथन करना, बंटवारे में बंसीपुर पाकर गबदू नामक भील को मारकर नंदन नामक गाँव बसा कर जावदू की संतान का जावदूका इस पदवी से हाडों में ग्यारहवें भेद का ग्रहण करना, आगे होने वाले जावदू के पुत्र सारन और सेव के दो पुत्र सामन्त और मेव, इन दोनों पुत्रों की संतान का अपने ग्यारहवें भेद के अंतर्गत जुदे जुदे सामन्तके और मेवाउत्त इन दो भेदों को प्राप्त होना, बंटवारे में नवगाँवां नामक नगर पाकर निम्मदेव के वंश का निम्माउत्त पदवी से हाड़ों में बारहवें भेद का प्रकट होना, तीन रानियों सहित गंगा के सोरमघाट पर राजा बरसिंह का किसी पर्व के पुण्य समय में पाँच सौ गौओं के साथ पाँच हजार मुहरों (अशर्फियों) का देना, नैणवानगर के पति दहिया भीमसिंह की सहाय से समय पाकर टोंकपुर को लेकर सज्जीभूत हुए तंवरों के राजा अमरसिंह का बूँदी नगर को घेरना, तारागढ़ में स्थित बैरिशल्य आदि तीन कुमारों द्वारा तोपों का युद्ध प्रारम्भ करना और प्रवीण लालसिंह के रतिवाह से भयभीत होकर तंवर और दहिया का नैणवापुर को भागना, वापस आकर प्रशंसायुक्त अपने पुत्र और छोटे भाई के लिये रीझ में मक्खीदगढ़ देकर तोमर और दहिया दोनों को निकालने

वाले वृद्ध बरसिंह का नैणवानगर लेना, बूँदी के राजा के मरने का समय पाकर शत्रुमंडल का बम्बावदा के राजा धीरदेव से देश और गढ़ लेने का आरम्भ करना, हड्डाधिराज बरसिंह के जन्म, राज्य प्राप्ति, तारागढ़ को बनाना, दो स्त्रियों से विवाह करना, पुत्रों का होना, ग्रहण में गंगा पर दान देना, नैणवानगर को लेना और शरीर छोड़ने के संवत् की सूचना करने का चौदहवाँ मयूख समाप्त हुआ। और आदि से एक सौ इकसठ मयूख हुए।

प्रायो ब्रजदेशीय प्राकृत मिश्रित भाषा

दोहा

जवनराज फीरोज जो, किन्न कवल जब काल।
तखत गयासुद्दीन तस, साह रह्यो इक साल॥१॥
सर चउ चउ ससि सक समय, जो हु मरत जवनेस।
दिल्लीपति अष्टादशम, अबूबकर हुव एस॥२॥
कतिकमास सो राज्यकरि, हुव बिधिबस बपुहीन।
ता हि बरस बैठो तखत, दुमति नासुरुद्दीन॥३॥
सक ख पंच चउ ससिमृत सु, पंच बरस असुपाइ।
तखत हुमायोंसाह तब, बैठो स्वमत बनाइ॥४॥
ता हि बरस मृत सो हु तब, बिगरत समय बिसेस।
दिल्लीपति महमूद हुव, आगम मुगलन एस॥५॥

यवन बादशाह फिरोजशाह जब काल कवलित हुआ तो उसके बाद दिल्ली के तख्त पर गयासुद्दीन बैठा। इसने दिल्ली पर एक वर्ष तक राज्य किया। विक्रम संवत् के चौदह सौ पैंतालीसवें वर्ष में जब यह बादशाह भी मर गया तब उसकी जगह पर दिल्ली के अठारहवें बादशाह के रूप में अबूबकर राजसिंहासन पर बैठा। अबूबकर भी दिल्ली पर कुछ माह राज्य कर नियतिवश शरीर छोड़ गया तब इसी वर्ष यानि चौदह सौ पैंतालीस में दिल्ली के तख्त पर दुर्मति नासुरुद्दीन आसीन हुआ। विक्रम संवत् के चौदह सौ पचासवें वर्ष में पाँच वर्ष तक राज कर जब नासुरुद्दीन भी मर गया तब हुमायु शाह ने अपने बल पर दिल्ली का तख्त हासिल किया। पर दुर्भाग्य से इसी वर्ष अर्थात् चौदह सौ पचास में वह मर गया और स्थितियां बड़ी विकट हो गईं। तभी महमूद नासुरुद्दीन के दिल्ली का स्वामी होने पर मुगलों का

आगमन आर्यावत् में हुआ।

तसहु नासुरुद्दीन तिम, यह दूजो अभिधान।
सोहु सम्हारि न घर सक्यो, भजि प्रमाद मितभान॥६॥

महमूद का ही दूसरा नाम नासुरुद्दीन था इससे दिल्ली का राज्य नहीं संभाला गया। उसके आलसी और अविवेकवान होने के कारण उससे घर अर्थात् आर्यावर्त की देखभाल न हो सकी और वह भाग छूटा।

प्रायो मरुदेशीय प्राकृत मिश्रित भाषा

दोहा

हुवो मरण बरसिंह रो, जिणही समय सजोग।
एक मुगल बधियो अठी, गंजे काबल गोर॥७॥

जब बूँदी के हाड़ा राजा बरसिंह की मृत्यु हुई तब ताकतवर हो कर एक मुगल जिसने काबुल और गोर देश को फतह किया था वह इधर आर्यावर्त की ओर बढ़ा।

सचरणगद्यम्

इण ही समय अठी समरकंद देस रा एक मुगल अमीर रो पुत्र तैंमूरबेग प्रारब्ध रै जोर बधियो।

तिकण समरकंद बकर गोर फारस तातार काबल प्रमुख देसां रो बिजय करि एक आपरा भरोसा रो भड़ मुगल रमजानबेग दिल्ली रो बळ देखण रै काज अटक रै वार भेजियो।

जिकण कसमीर मुलतान दो ही देस लूटिया जाणि पंजाब रा ओला देस ऊजड़ हुवा सुणि दिल्ली सहित प्रतीची दिसा रो आधो आर्यावर्त्त चळबिचळ थियो।

एकबीसमां महमूदा ऽपर नाम नासुरुद्दीन रै दिल्ली में राज करतां इण तैंमूर काबल रै अधीस आपरो विस्वासपात्र मुगल रमजानबेग करतोया रै ओलै तट पेलियो।

जिकण पंजाब में दरोळ पाड़ियो तौभी दिल्ली रै अधिराज महमूदा ऽपर नाम नासुरुद्दीन साम्हैं चलावण रो उच्छाह भी न धारियो।

जिणथी दिसा दिसारा नरेसां मुगल रै साम्हैं अनेक उपहार भेजि आपस री इळा आप आपरै हेठै लेण रो प्रयत्न बधारियो ॥८॥

इसी समय में समरकंद देश के एक अमीर मुगल का पुत्र तैमूर बेग भाग्य के बल से बढ़ा। जिसने समरकंद, बकर, गोर, फारस, तातार, काबुल आदि देशों को फतह किया। उसने अपना एक विश्वासपात्र सामंत मुगल रमजानबेग को अटक नदी के इस पार भेजा जिससे वह दिल्ली की ताकत का अंदाजा लगा सके। जब उसने आर्यावर्त में घुसते ही काश्मीर और मुलतान दोनों प्रांतों को लूटा जिसे सुन कर पंजाब से इधर वाले प्रदेश उजड़ गए। इसका सीधा प्रभाव दिल्ली पर भी पड़ा इससे दिल्ली सहित पश्चिम दिशा का आधा आर्यावर्त अस्थिर हो कर विचलित हो उठा। दिल्ली पर इस समय इक्कीसवें बादशाह के रूप में महमूद जिसका अवर नाम नासुरुद्दीन भी था का राज था। इसी काल में काबुल के स्वामी तैमूरबेग ने अपने विश्वासपात्र मुगल रमजानबेग को अटक नदी के इस पार भेजा। जिसने पंजाब में अपने उपद्रव से आतंक फैलाया तब भी दिल्ली के बादशाह महमूद उर्फ नासुरुद्दीन ने इसका सामना करने के लिए कोई उत्साह नहीं दिखाया अर्थात् वह उदासीन बना रहा। इससे घबरा कर सभी दिशाओं के नरेशों ने तरह-तरह के उपहार मुगलों को भेजे। फिर उन्होंने आपस में पृथ्वी को बांट कर उसे अपने-अपने अधिकार में लेने के प्रयत्न आरंभ किये।

दोहा

बाळे बरस बतीस बय, संभर बैरीसाल।
जनकछत्र धरियो जठै, चींतावे कुळचाल॥९॥

बत्तीस वर्ष की वय पूरी करने के बाद चहुवान (हाड़ा) बैरीसाल ने अपने पिता का छत्र स्वयं के सिर पर धारण किया और अपनी कुल मर्यादा का स्मरण रखते हुए वह राजा बना।

सचरणगद्यम्

अठी रमजानबेग पंजाब रो बिजय करि महमूद नूं निर्बळ निहारि पाछो जाइ आर्यावर्त्त नूं आंगमण रै काज तैंमूर नूं अटक नदी रै वार आणियो।

जिणथी दो ही वार लड़ाई में पराजय पाइ भागे प्रमाद रै अधीन

भागहीण जवनां रै अधिराज नासुरुद्दीना ऽपरनाम महमूद तीजी बार साम्हैंचलाइ रणरो रस चाखण रो मनोरथ भी न जाणियो।

अठी हाड़ां रै अधीस बैरीसाल बूँदी हूँ चलाइ पातोर रा दहड़ भारमल्ल री कन्या मानकुमरि रै साथ दूजो बिबाह कीधो।

अर अठी सत्रुमंडळ रा सीमाड़ां बंबावदा रा नरेश धीरदेव रा देश दाबण रो निबाह कीधो ॥१०॥

इधर मुगल रमजान बेग ने पंजाब को फतह करने के बाद जब यह देखा कि दिल्ली की सल्तनत पर काबिज महमूद निर्बल है तो वह वापस अपने देश गया और वहाँ जा कर सारे हालात बताते हुए तैमूरबेग को आर्यावर्त पर चढ़ा लाने के लिए प्रोत्साहित किया और वह तैमूरबैग को अटक नदी के इस पार ले आया। जिसने अपनी दोनों लड़ाइयों में पराजय नहीं पाई। ऐसे प्रमादी और अभागे यवनों के स्वामी नासुरुद्दीन अवर नाम महमूद ने तीसरी बार भी ऐसे अवसर पर सामने जा कर मुकाबला कर युद्ध का रस चखने की इच्छा ही नहीं की। इधर हाड़ा राजा वैरीसाल बूँदी से चल कर पातोर पहुँचा और वहाँ के दहड़ भारमल की पुत्री मानकुंवरी के साथ दूसरा विवाह किया। इधर सीमावर्ती शत्रुओं ने मिल कर बंबावद के राजा धीरदेव की भूमि को हथियाने के प्रयत्न जारी रखे।

पहली बरसिंह जीवतां जिकारों जोर न लागो तिकां अब एक तो बुंदीस रा मरण रो सहाय पायो।

अर दूजां तैंमूर रै आगम दिल्लीस महमूद नूं दबियो देखि खीचियां झालां प्रामारां सहित सीसोदियां भी हाड़ां री धरा दाबण नूं मन चलायो।

अठीतो भाणपुर रा खीची भरतसेण रै पोतै जयमल्ल तो आपरी तरफ री सीमा रा खेड़ी रत्नगढ़ प्रमुख बंबावदा रा गढ़ गंजि भैंसरोड़ सूधी आई अमल जमायो।

अर झालां प्रमारां नूं प्रचारि सीसोदियां भी केथोली सींघोली जावद अठाणां बींझोली आदिक देस दुर्ग दाबि बेघम रै माथै तोपां रो ताव धमायो ॥११॥

पूर्व में राजा बरसिंह के रहते जिनका कुछ भी वश नहीं चलता था एक तो उन्होंने अब बूँदी के इस राजा की मृत्यु के बाद अवसर पाया। और

दूसरा मौका जब तैमूरबेग के आगमन से दिल्ली के बादशाह महमूद को डरा हुआ देखा तो खीची, झाला और प्रामारों सहित सिसोदियों को हाथ आया जिन्होंने हाड़ाओं की भूमि हड़पने को अपना मन ललचाया। इधर भानपुरा के खीची भरतसेन के पौत्र जयमल ने तो अपनी ओर की सीमा से लगे खेड़ी, रत्नगढ़ जैसे बंबावद के प्रमुख गढ़ों को जीत कर भैंसरोड़ तक के क्षेत्र पर अपना अधिकार जमा लिया। यही नहीं झाला और प्रमारों को उकसा कर सिसोदियों ने केथोली, सींघोली, जावद, अठाणा, बींझोली आदि गाँव और दुर्ग दबा कर बेघम पर अपनी तोपों का ताप बढ़ाया अर्थात् तोपों के सहारे बेघम (बेगूं) को लेने पर आमादा हो गए।

नरेस बैरीसाल दूजो बिबाह करण रै काज पातोर पूगो जिकण ही समय बेघम रै ऊपर जोर पड़तां आपरे एक बंबावदो ही रहतो जाणि चांचाउत्त धीरदेव दूलह नरेस बैरीसाल नूं अवनी जावण रो पत्र दीधो।

सो आज रा बैरियां रो ब्रात आसंगियो न जाइ जिणथी प्रपितामह समरसिंह रो बिरुद बिचारि सहाय रो अवलंब दीजै इण रीति अरजी में प्रणती रो प्रसाद कीधो।

मिरजा पातसाह तैंमूरबेग रै आगम आर्यावर्त में दिसा दिसा दरोळ पड़तो देखि नरेस बैरीसाल भी दुलही नूं बडै बेग लेर बूँदी पधारियो।

अर धीरदेव नूं सहाय देण बेयम रै माथै फौजबंधी करण में विलंब न धारियो॥१२॥

राजा बैरीसाल जब दूसरा विवाह रचाने पातोर पहुँचा तभी बेघम पर इस प्रकार शत्रुओं का दबाव पड़ता देख बंबावद के राजा ने यह सोचा कि इस तरह तो अपने अधिकार में मात्र बंबावद ही रह जाएगा। यह सोच कर चंच के पुत्र हाड़ा राजा धीरदेव ने दूल्हे राजा वैरीसाल को पत्र लिखा कि हमारी भूमि जा रही है। आज शत्रुओं के समूह ने असहनीय उपद्रव मचा रखा है सो आप अपने प्रपितामह समरसिंह की ख्याति (विरुद) का स्मरण कर सहायता का सहारा दीजिए। इस तरह राजा धीरदेव ने अपने पत्र में कृपा करने की प्राथना वैरीसाल से की। मिर्जा तैमूरब्रेग के आगमन से आर्यावर्त में जगह-जगह उपद्रवों का उभार बढ़ता जान कर राजा वैरीसाल हाड़ा भी अपनी दुल्हन को साथ ले कर बड़े वेग से बूँदी पहुँचा। आते ही उसने अपने

भाई हाड़ा राजा धीरदेव की सहायता करने की गरज से तुरन्त अपनी सेना बेघम की ओर रवाना करने में विलम्ब नहीं किया।

जठै आपरा सुभट मंत्रियां एकत्र होइ अरज कीधी इण समय बेघम हालियां तो बूँदी भी घरे रहण में द्वापर ही दिखावै।

अर दिल्लीस महमूद नूं निर्बळ निहारि आर्यखंड आंगमण नूं तैंमूर अटक रै वार आवियो तिको असेस ही आर्य अवनीसा नूं अवसर देर आपस रा देस दाबणों सिखावै।

आपरा परिकर री इसड़ी अरज मानि नरेस बैरीसाल धीरदेव रै सहाय तीन हजार सेना भेजी जिकी पूगियां पहली ही सीसोदियां दुर्ग समेत बेघमपुर छुडाइ लीधो।

अर उठी रा देस में राणा लाखा रो अमल जमाइ बंबावद जाइ आहव रो प्रारंभ कीधो ॥१३॥

इसी समय राजा बैरीसाल के सामन्तों और सचिवों ने एकत्रित हो कर निवेदन किया कि हे राजा! हम इस वक्त बेघम पर चढ़ कर गए तो संभव है हम से हमारी बूँदी भी छूट जाए। इसमें कोई संदेह नहीं कि वक्त नाजुक है आप इसका ध्यान रखें। उधर दिल्ली के बादशाह महमूद को निर्बल देख कर आर्यावर्त में तैमूरबेग के अटक पार कर आ जाने पर उसने नई रणनीति तय कर उसके अनुसार कार्य आरंभ किया। तैमूर यहाँ आर्य राजाओं को आपस में एक दूसरे का देश दबाने को उकसाने लगा है। ऐसी परिस्थिति में अपने परिकरों का निवेदन स्वीकार कर राजा बैरीसाल ने स्वयं वहाँ जाना स्थगित किया और राजा धीरदेव की सहायता के लिए अपनी तीन हजार सैनिकों की फौज भेजी। पर इस सेना के पहुँचने से पहले ही सिसोदियों ने दुर्ग सहित बेघम पुर हाड़ाओं के अधिकार से छुड़ा लिया फिर इस विजित क्षेत्र में राणा लाखा की विजयाज्ञा की मुनादी करवा दी। इसके बाद सिसोदियों ने बंबावद पहुँच कर युद्ध आरंभ किया।

दोहा

सक चोवन चउदह समा, मुगल अठी तैंमूर।
समर गंजि दिलीस नूं, साह हुवो अतिसूर ॥१४॥

विक्रम संवत् के चौदह सौ चौवनवें वर्ष में मुगल तैमूरबेग ने युद्ध में दिल्ली के बादशाह महमूद को हरा कर दिल्ली पर अपना आधिपत्य जमाया।

षट्पात्

तातारी दळ अतुळ साजि रमजान कुतुब सह।
मुगल साह तैंमूर आइ दिल्ली जय आग्रह।
सक चोवन चउ सोम हांकि संका विणु हैंबर।
पाणीपथ लग पूगि धणी बणियो आरिजधर।
महमूद मीर निरखे निबळ कचरघाण घमसाण करि।
मंडियो तखत दिल्ली मुगल कातर बंस पठाण करि॥१५॥

मुगल रमजानबेग और कुतुबबेग ने भारी तातारी सेना को सज्जित कर दिल्ली पर मुगल शाह तैमूरबेग की विजय करवाने के लिए चढ़ाई की। वर्ष चौदह सौ चौवन में निशंक अपने घोड़े बढ़ाते हुए यह दल पानीपत तक पहुँच गया और आर्यों की इस भूमि का स्वामी बन बैठा। दिल्ली के बादशाह महमूद के सामन्तों को निर्बल जान कर घमासान युद्ध छेड़ा और उसकी सेना को बुरी तरह कुचल डाला जैसे कोल्हू में तिल कुचले जाते हैं। इससे दिल्ली के तख्त पर मुगल वंश का आधिपत्य हो गया और मुगलों ने कायर पठानों को मसल डाला।

दोहा

नीड़ैं दिल्ली नैर रै, लाख उभै मित लोक।
कत्ती हैठै करि कतल, अमल कियो सब ओक॥१६॥

पंद्रह दिन रहियां पछैं, मुगल मीर तैंमूर।
क्रम इण मंडळ जीत करि, गो गृह पाणिप पूर॥१७॥

आरिज राजां समय इण, जठी तठी अड़ि जुद्ध।
आपस री दाबे इळा, राखी अवसर रुद्ध॥१८॥

हूँता भड़ जे नृप हुवा, हूँता जे नृप हारि।
हळ खेती ठाकुर हुवा, बैलां सींचण बारि॥१९॥

अधिप किता बधिया अधिक, गंजे परगढ़ गेह।
बरताणों इसड़ो बिखम, आगम मुगल अनेह ॥२०॥
बंबावद रचि बैरियां, समर अठी बळसीर।
धीरदेव हणियो धणी, बूँदी दळ सहबीर ॥२१॥

दिल्ली नगर के आसपास करीब दो लाख की संख्या में लोग थे। उसने अपनी तलवार की धार से कइयों को काट कर पूरे क्षेत्र को अपने अधिकार में कर लिया। मुगल मीर तैमूरबेग यहाँ दिल्ली में पन्द्रह दिन ठहरा। अपनी पंद्रह दिन की बादशाहत के दौरान पूरे मंडल का आधिपत्य लेकर वह पराक्रमी वापस अपने गृह प्रदेश में गया। आर्य राजाओं ने इस समय अवसर पा कर यहाँ वहाँ सभी और आपस में युद्ध करना आरंभ किया। वे आपस में ही एक दूसरे की भूमि दबाने लगे। जो उमराव थे वे राजा बन गए और जो राजा थे वे किसी से युद्ध में हार कर बैलों से हल चलाने वाले और पानी खींच कर खेती करने वाले ठाकुर मात्र रह गए। सभी ओर दूसरों का गढ़ दबा कर राजा बनने वालों की बाढ़ आ गई। मुगलों के आगमन से ऐसे विषम समय वाला वर्तमान हो गया। ऐसे ही कठिन समय में बलशाली शत्रुओं ने युद्ध में हाड़ा राजा धीरदेव को मार डाला। उन्होंने सहायता के लिए आए हुए बूँदी के योद्धाओं को भी परास्त कर बंबावद पर अधिकार कर लिया।

सचरणगद्यम्

अठी तैंमूरबेग रै पाछो गयां केड़ै एक दिल्ली अमीर इकबालखान पातसाही रो प्रबंध आपरै अधीन कीधो।

अर पराजय रै प्रसंग माणहीण हुवो महमूदसाह पाछो आयो तिकण नूं प्रामार रै साथ प्रतिमामात्र पातसाह रहण नूं अवसर दीधो।

पंद्रह दिन रहियां बावीसमां पातासाह तैंमूर रै गयां केड़ै प्रतिमामात्र सोळह बरस रहियां एकबीसमां पातसाह महमूद रै मरियां पाछैं बिक्रम रा ब्योम बाजी बेद बिधु सम्मित साह रै समय मुलतान रा सूबादार सय्यद मलिक सुलैमान रै पुत्र खिजरखान नाम तेबीसमैं पातशाह दिल्ली रो अधिराज भाव गहियो।

सोभी अटक पार रा पातासाह तैंमूर रा पुत्र साहरुख रो सिक्को ही रुपियां में राखि जगत नूं जणावण नैं तिण रा ही हुकम रै अधीन होइ

रहियो ॥२२॥

इधर तैमूरबेग के वापस अपने देश लौट जाने के बाद दिल्ली के एक अमीर इकबालखान ने बादशाही का सारा प्रबंध अपने हाथ में ले लिया और पराजय के कारण मानरहित हो गया। महमूदशाह जब प्रामार के साथ दिल्ली वापस आया तो उसे कठपुतली बादशाह की तरह एक अवसर और दे दिया गया। पन्द्रह दिन के लिए बादशाहत करने वाले दिल्ली के बाइसवें बादशाह तैमूरबेग के वापस जाने के बाद यह कठपुतली बादशाह सोलह वर्ष तक और जीवित रहा। इस इक्कीसवें बादशाह महमूद की मृत्यु के बाद विक्रम संवत् के वर्ष चौदह सौ सत्तर में मुलतान के सुबेदार सय्यद मलिक सुलेमान का पुत्र खिज्र खान दिल्ली का तेबीसवाँ बादशाह बना। वह भी स्वतंत्र बादशाह नहीं था। दिल्ली के तख्त पर अवश्य था पर इसने अटक के उस पार के बादशाह तैमूरबेग के पुत्र शाहरुख की छाप वाला सिक्का ही अपने यहाँ प्रचलन में रखा। इस तरह वह मात्र संसार को बताने को बादशाह था पर असल में वह शाहरुख के हुक्म के अधीन रहा।

अठी चित्तोड़ रा अधीस राणा लाखा रा पट्टप कुमार चूंडा थी पुत्री रो संबंध करण रै काज मंडोउर रै नरेश राठोड़ रणमाल आपरा पोळिपात्र भेजिया।

तिकां राणारी सभा में जाइ समता रा संबंध रा सूचक पत्रदिया। राणैं समान बय रा[१] बिबाहरो नर्म कीधो सुणि कुमार चूंडै बड़ा प्रसभ रै प्रमाण पितारो संबंध करवाइ आप चित्तौड़ री गादी छोडण रो लेख करि मारवाड़ां रै अधीन कीधो।

अर तिकीही मांग पिता नूं परणाइ तटस्थ भाव धारि अपूर्ब जस लीथो ॥२३॥

इधर चित्तौड़गढ़ के स्वामी राणा लाखा के पाटवी कुमार चूंडा से अपनी पुत्री की सगाई करने के लिए मंडोवर नरेश राठौड़ रणमल ने अपने

---

१. मंडोठर से राव चूंडा की पुत्री की सगाई कुमार चूंडा से करने को मंडोउर के प्रतिनिधि चित्तोड़ गये थे उनसे महाराणा लाखा ने हंसी में कहा कि जवानों की सगाई करना सभी कोई चाहते हैं जवानी में तो हमारी सगाई के भी इसी प्रकार नारियल आते थे। जिस पर चूंडा ने अपनी सगाई का निषेध करके पिता को विवाह देने का हठ किया इस पर मंडोउर के प्रतिनिधियों ने कहा कि रणमल्ल की पुत्री के महाराणा लाखा से जो पुत्र होगा वह तुम्हारा संवक समझा जावेगा। इस कारण हम महाराणा को विवाहना नहीं चाहते। इस पर चूंडा ने चित्तोड़ का राज्य छोड़ दिया। इस कथा को वीर विनोद नामक मेवाड़ के इतिहास में अन्य प्रकार से लिखी है सो वीर विनोद के पृष्ठ ३०७ पर देखें। -संपादक

पोलपात्र बारहठ को चित्तौड़गढ़ भेजा। उन्होंने राणा की राजसभा में जा कर इस आशय का पत्र दिया कि सगाई सदा बराबर हैसियत वाले कुलों में होती आई है इसलिए यह प्रस्ताव भेजा जा रहा है। राणा लाखा ने हँसी में कहा कि समान उम्र वालों की सगाई करना सभी चाहते हैं पर हमारे जैसे बुड्ढों का विवाह कौन करे? यह सुनते ही बड़ा हठ कर चूंडा ने अपने पिता की सगाई करवाई और स्वयं ने चित्तौड़गढ़ की राजगद्दी को छोड़ने का इकरार लिख कर मारवाड़ वालों को दिया। यही नहीं अपनी मंगेतर से अपने पिता का विवाह करवाने के बाद चूंडा ने राजकाज से उदासीन रह कर सुयश कमाया।

इण ग्रंथ में छठ्ठो रासि पहली निर्माण हुवो जिकण में भी प्रसंग पाइ कुमार चूंडा री सपूती बिसेस जणाई।

अर राणा रै दूजो पुत्र राठोड़ां रो भाणेज मोकल हुवो तिकण पिता रै अनंतर चूंडा नूं काढि नांनां रा पक्ष रो विस्वास करि बाळक थकै ही चित्तौड़ री गादी पाई।

पछैं मोकल रै माथे विस्वासघात बिचारियो जाणि चूंडै चित्तौड़ माथै चढि राव रणमाल नूं मारि कुमार जोधा नूं भगायो।

अर जाट रा घर थी पाट रा धणीं नरबद आंधा नूं बुलाई मंडोउर लै जाई उण देस मांहै तिकण रो हुकम लगायो॥२४॥

इस ग्रंथ की छठी राशि जिसका निर्माण पहले हुआ है में भी प्रसंगानुकूल पितृभक्त कुमार चूंडा की सपूताई का वर्णन है। राणा लाखा के इस राठौड़ रानी की कोख से दूसरे पुत्र मोकल का जन्म हुआ जिसने अपने पिता की मृत्यु के बाद चूंडा को मेवाड़ से निर्वासित कर अपने ननिहाल वाले राठौड़ों के पक्ष का विश्वास करते हुए चित्तौड़गढ़ की राजगद्दी पाई। फिर मोकल के साथ विश्वासघात के विचार की योजना का पता चलते ही चूंडा ने चित्तौड़गढ़ पर आक्रमण कर राठौड़ राजा रणमल को मार गिराया और उसके पुत्र जोधा को मेवाड़ से भगा दिया। यही नहीं चूंडा ने जाट के घर से जोधपुर की राजगद्दी के असली हकदार अंधे नरबद को बुलाया और मंडोवर ले जाकर मारवाड़ देश में उसका हुक्म चलवाया अर्थात् उसे राजा बनाया।

पहली जैतारण रै सांखलै राजा महराज कुमार पणें नरबद हूँ आपरी बडी पुत्री रो संबंध कीधो।

पछैं सोझति रा संगर में नरबद नूं मरियो जाणि पाली रा पड़िहार

खींदा रा कुमार नरसिंहदेव हूँ तिकण कन्या रो बिबाह करि दीधो।

पछैं इण कारण मांग रै आंटै थोड़ा बरसां में नरबद नरसिंह दो ही पाँचै मन ऊजळा लोहां काम आया।

जरैं रणमाल रै चोबीसां में केही सूं छोटै पुत्र जोधै मंडोउर आइ पाछा आपरा नीसाण घुराया॥२५॥

पूर्व में जेतारण के सांखला वंशीय राजा ने जब नरबद राजकुमार था तब उससे अपनी बड़ी बेटी की सगाई की थी पर फिर सोजत वाले युद्ध में नरबद को मरा जान कर सांखला राजा ने अपनी पुत्री का विवाह पाली के पड़िहार खींदा के पुत्र नृसिंहदेव से कर दिया। जब नरबद को चूंडा से मंडोवर की सत्ता मिली तो इसके थोड़े दिनों बाद मंगेतर के वैर के सबब नरबद और नृसिंह दोनों सच्चे मन से आपस में भिड़ते हुए कट कर उजले लोहों (प्रहार के बाद तलवार पर रक्त न लगे उसे उजला लोहा कहते हैं) काम आए। इस तरह नरबद की मृत्यु के बाद रणमल के चौबीस पुत्रों में से कई भाइयों से छोटे (भाई) जोधा ने मंडोवर आ कर अपने नगाड़े बजवाए अर्थात् अपने आधिपत्य में मंडोवर आने की घोषणा की।

दोहा

कामिणि आरत्ती करण[१], नरबद रै सुप्रि नाह।
रहियो इम नरसिंह रण, सह अरि अंध सिपाह॥२६॥

---

१. नरबद की मांग सुपियारदे की शादी नृसिंह खींदावत के साथ कर दी गई थी फिर मांग का दावा करने पर सुपियारदे की छोटी बहन नरबद को इस शर्त से ब्याही गई कि सुपियारदे नरबद की आरती उतारेगी, नृसिंहदेव ने अपनी स्त्री को आरती उतारने से मना किया, परंतु उसने अपने पीहरवालों के प्रार्थना करने पर नरबद की आरती उतारी, यह खबर पाकर नृसिंहदेव ने सुपियारदे को बहुत कष्ट दिया, जिसका वृत्तान्त सुपियारदे ने नरबद को लिख भेजा, जिसपुर सुपियारदे को गुप्त रूप से निकालकर नरबद ले भागा, जिस पर परस्पर में युद्ध होकर नरबद का भाई मारा गया और स्त्री को नरबद ले गया। यहाँ इस कथा में कुछ भेद है। रावरणमल्ल को महाराणा मोकल के समय में रावत चूंडा का मारना लिखा सो ठीक नहीं क्योंकि रावरणमल्ल राठोड़ महाराणा कुम्भा के समय में मारा गया था जिसका वृत्तान्त इस प्रकार है कि रणमल्ल का भानजा महाराणा मोकल चाचा और मेरा नामक पासवानियों के हाथ से मारे गये थे। उन दोनों को मारकर रणमल्ल ने अपने भानजे महाराणा मोकल का वैर लिया, फिर मालवा के बादशाह महमूद को युद्ध में पकड़ कर महाराणा कुम्भा के आधीन किया, इन सेवाओं के कारण महाराणा कुम्भा ने रणमल्ल को प्रधान बना कर मेवाड़ का सम्पूर्ण कार्य उसके हाथ में दे दिया इसके बाद रणमल्ल का विचार महाराणा कुम्भा को मारकर मेवाड़ का राज्य दबा लेने का हुआ, यह भेद खुल जाने पर महाराणा कुम्भा ने अपने पिता के बड़े भाई रावत चूंडा को मांडू से चुपके बुलाकर राव रणमल्ल राठौड़ को चित्तौड़ पर मरवा डाला और रणमल्ल का पुत्र जोधा भागकर मारवाड़ में चला गया इस वृत्तान्त को सविस्तार देखना हो तो वीरविनोद नामक मेवाड़ के इतिहास के ३२१ पृष्ठ पर देखें। संपादक

अपनी ब्याहता पत्नी द्वारा नरबद की आरती उतारने की बात जब नृसिंहदेव ने सुनी तो वह कुपित हो कर नरबद से भिड़ा और इस तरह नृसिंहदेव भिडंत में अपने अंधे शत्रु का प्रहार झेलते हुए रणभूमि में नि:शेष हुआ।

सचरणगद्यम्

अठी बाळ ही बय में राणैं मोकल आपरा अग्रज चूंडा नूं पाछो राज रो लेदेणहारि जाणि तिकण रा भुजां चित्तौड़ रो भार झलाइ मेवाड़ में अकंटक अमल कीधो।

अर चांचाउत्त धीरदेव नूं मारियां केड़ै तिकण रा भाई बेटां नूं मंडणगढ रा सात ग्राम देर बेघम बंबावदा सूधी चित्तौड़ रो थांणो जमाइ दीधो।

अठी महमूदसाह नूं जीति दिल्ली पैं पंद्रह दिन पातसाही करि आर्यावर्त्त ग केही अधीसां नूं दंडि मीर तैंमूरबेग रै पाछो गयां केड़ै दिल्ली रा सूबादार जठी तठी आप आपरै मत्तै रहण ढूका।

अर सिंधुदेस रा सूबादार जवन करीमखान जिसा अनेक अधिकारी सीमा रा समीपी नरेसां हूँ उपहार लेर तिकां नूं आप रै अधीन बणाइ सूबादारी रो अनादर करि पातसाही पद नूं बहण ढूका॥२७॥

इधर बाल्यावस्था में राणा मोकल ने अपने अग्रज चूंडा को राज्य वापस दे देने वाला योद्धा जान कर उसकी भुजाओं पर चित्तौड़गढ़ का राज्य भार रख दिया। उसके सहारे मोकल ने पूरे मेवाड़ देश पर निर्बाध अपना आधिपत्य जमाया और चांचाउत हाड़ा राजा धीरदेव को मारने के बाद उसके बेटे और भाइयों को मांडलगढ़ के क्षेत्र के मात्र सात गाँव दे कर बेघम और बंबावद तक चित्तौड़गढ़ के थाने स्थापित कर दिये। उधर महमूद शाह को जीत कर दिल्ली पर पन्द्रह दिन तक अपनी बादशाही हुकूमत कर आर्यावर्त के कई राजाओं को दंड देने के बाद मीर तैमूरबेग के वापस जाने के बाद दिल्ली के मातहत सूबेदार हर कहीं अपनी मनमरजी चलाने लगे। सिंध देश के सूबेदार यवन करीमखान जैसे अनेक अधिकारी अपने सीमावर्ती राजाओं से उपहार ले कर उन्हें अपने अधीन करने लगे। इस तरह वे सूबेदारी को ठुकरा कर स्वयं बादशाह बन बैठे। अर्थात् उन्होंने सूबेदारी छोड़ कर बादशाही करनी शुरू कर दी।

माळवा रै सूबादार नबाब बाजबहादुर तो मांडू सहर नूं राजधानी बणाइ धारा भूपाल सागर सीहोर राजगढ़ राघवगढ़ गुगैर सोपुर गागरुणि गंगराड़ भाणपुर दसोर जीरण रामपुर प्रमुख राजां हूँ उपदा लेर बुंदी चित्तोड़ भी उपायन सहित आइ मिलण रा फरमाण दीधो।

अर दक्खिण रै बादशाह अहमदसाह आपरा अग्रज फीरोज साह सूं गादी पाई गुजरात में अहमदाबाद नाम नगर बसाइ अठै ही आपरी राजधानी राखि मांडवी जामनगर हलवद मोरवी अणिहलपुर कोकिलपुर बालेस ईडर सिरोही जाळोर बाढ़मेर जूनांगढ समेत पच्छिम रो प्रांत भी आपरै ही अधीन कीधो।

इसी कड़ी में मालवा के सूबेदार नवाब बाजबहादुर तो मांडू को अपनी राजधानी बना कर धार, भोपाल, सागर, सिहोर, राजगढ़, राघवगढ़, गुनैर, सोपुर, गागरोन, गंगरार, भानपुरा, मंदसोर, जीरन और रामपुर के राजाओं से नजराने लेने लगा। उसने बूँदी और चित्तौड़गढ़ के राजाओं से भी नजराना ले कर आने का फरमान जारी किया। इसी तरह दक्षिण के बादशाह अहमदशाह ने अपने बड़े भाई फिरोजशाह से राजगद्दी पा कर गुजरात में अहमदाबाद नामक नगर बसाया और इसे अपनी राजधानी बना कर मांडवी, जामनगर, हलवद, मोरवी, अनिहलपुर, कोकिलपुर, बालेस ईडर, सिरोही, जालोर, बाड़मेर, जूनागढ़ सहित पश्चिम के प्रांत भी अपने अधीन कर लिये।

पहली ग्यारमों पातसाह अलावुद्दीन रै अनंतर केही सूबादार दिल्ली हूँ पलटिया तिकां में किताक पाछा दिल्ली रा ताबादार हूँता तिकांभी तैंमूरबेग रो बिजय देखि फेरि महमूद नासुरुद्दीन री तथा खिजरखान री आसंग में न आइ जुदैजुदै ठिकाणैं आप आपरो अमल जमायो।

पहली दिल्ली रा पंद्रहमां पातसाह अलफखाना ऽपर नाम मुहम्मद तुगलक रै समय दक्खिण में कोई गणकराज बिप्र रो चाकर एक हुसैन नामक जवन हुवो तिकण प्रारब्ध रै जोर दक्खिण री पातसाही पाइ अलावुद्दीन नाम कहाइ कुलबर्ग दौलताबाद दोही सहर आबाद करि दो ही ठाम आपरी राजधानी बणाई तिकण रा बंस में इण समय फीरोजसाह अहमदसाह ही कुलबर्ग दौलताबाद में नामी हुवा तिकां में बडो फीरोजसाह पहली बिजयपुर रा बारड नरेस रणधवल हूँ रण में हारियो तिकण री

लाज पाइ आपरा अनुज अहमदसाह नूं गादी देर दक्खिण पच्छिम रो पातसाह कीधो तिकण अहमदसाह इण समय दक्खिण में गोलकुंडा नाम गढ बणाइ गुजरात में अहमदाबाद नाम नगर बसाइ सोही आपरी राजधानी राखि दो ही दिसा रो राजमंडळ नमायो॥२८॥

पूर्व में दिल्ली के ग्यारहवें बादशाह अलाउद्दीन की मृत्यु के बाद कई सूबेदार दिल्ली से विमुख हो कर पलट गये थे। उनमें से कुछ तो वापस दिल्ली के ताबेदार (मातहत) हो गए थे। अब उनने भी तैमूरबैग की विजय देख कर फिर से महमूद नासुरुद्दीन तथा खिज्रखान के अंकुश को न मान कर अलग-अलग ठिकानों पर अपना अधिकार जमाया। पहले दिल्ली के पन्द्रहवें बादशाह अलफखान जिसका दूसरा नाम मुहम्मद तुगलक था के समय में दक्षिण के एक ज्योतिषी ब्राह्मण का सेवक हुसेन नामक यवन हुआ जिसने अपनी तकदीर के जोर से दक्षिण की बादशाहत प्राप्त की जो बाद में अलाउद्दीन के नाम से विख्यात हुआ। उसने कुलवर्ग (गुलबर्गा) और दौलताबाद दो शहर आबाद कर दोनों जगह अपनी राजधानी बनाई। इस अलाउद्दीन के वंशजों में इस समय फीरोजशाह और अहमदशाह नामक दो भाई कुलवर्ग और दौलताबाद में प्रसिद्ध हुए। इनमें से बड़े फीरोजशाह ने विजयपुर के बारड नरेश रणधवल से शिकस्त खाई। इससे लज्जित हो कर उसने अपने छोटे भाई अहमदशाह को राजगद्दी सौंप कर उसे दक्षिण के साथ पश्चिम क्षेत्र का बादशाह बनाया। उसी अहमदशाह ने इस समय दक्षिण में गोलकुंडा नामक दुर्ग बनवाया और गुजरात में अपने नाम से अहमदाबाद नामक नगर बसाया। इसने भी अपनी दो राजधानियां बनाई और दोनों दिशाओं के सारे राजाओं को अपने समक्ष झुकाया।

अठी बुंदी रा नरेस बैरीसाल रै अखेराज चूंडो उदैसिंह सुभांडदेव सोंडदेव लोहठ कर्मचंद्र स्यामदास स्यामा कन्या ए नव ही संतान आप आपरै समय प्रसूत हुवा।

तिकां में सुभांडदेव सोंडदेव दो ही कुमारां बासठि बरस रा बय में बृद्ध हुवा हड्डाधिराज हूँ छोटी राणी दाहड़ी में जोड़ै ही जन्म लीधो तिकां ही पछैं बुंदी पाइ चित्तौड़ रा अधीस कुंभा रा भांजिया हुवा।

तिकारै अनंतर दाहड़ी में लोहठ कर्मचंद्र प्रामारी में स्यामदास स्यामा ए च्यारि ही संतान बुंदीस बैरीसाल रै बयमें पैंसठि मां बर्षपर्जंत

प्रकटिया।

अर अखैराज चूंडो उदैसिंह ए तीन ही कुमार हड्डाधिराज रै चाळीस बर्ष रा बयथी बडीराणी पाटिमदेवी में प्रसूत थिया॥२९॥

इधर बूँदी के हाड़ा नरेश बैरीसाल के आठ पुत्र और एक पुत्री क्रमशः इस प्रकार जन्में अखेराज, चूंडा, उदयसिंह, सुंभाडदेव, सोंडदेव, लोहठ, कर्मचन्द्र, श्यामदास, और श्यामा कुमारी। इस तरह नौ संतानें समय समय पर जन्मीं। इनमें से सुभांडदेव और सोंडदेव इन दोनों कुमारों ने बासठ वर्ष की वय पा कर वृद्ध हुए हाड़ा राजा की छोटी रानी दाहड़ी के गर्भ से जुड़वां रूप में जन्म लिया। जिन्होंने बड़े हो कर बूँदी का राज्य पाया और युद्ध में चित्तौड़गढ़ के राणा कुंभा के सैनिक समूह का संहार किया। इन दोनों भाइयों के बाद दाहड़ी रानी की कोख से लोहठ और कर्मचन्द जन्मे और प्रमार रानी के गर्भ से श्यामदास और श्यामा कुमारी ने जन्म लिया। ये चारों संतानें राजा वैरीसाल के जन्मीं उस समय उसकी उम्र पैंसठ वर्ष की थी। पर अखैराज, चूंडा और उदयसिंह ये तीनों भाई हाड़ा राजा की चालीस वर्ष की उम्र के बाद अपनी पटरानी पाटिम देवी की कोख से क्रमशः जन्मे थे।

दोहा

दूजो नाम सुभांड रो, भारमल्ल निबहंत।
स्यामदास अभिधा अपर, केसवदास कहंत॥३०॥

तनय भूपरा तीन ही, पहिला जोबनपाइ।
रुचि जिमतिम लग्गे रहण, भाव निरंकुस भाइ॥३१॥

सुभांडदेव हाड़ा का दूसरा नाम भारमल भी बताया जाता है और इसी तरह उसके एक भाई श्यामदास का अवर नाम केशवदास था। राजा वैरीसाल के तीनों बड़े पुत्र अखैराज, चूंडा और उदयसिंह बड़े हो कर अपनी योवनावस्था से ही अपनी इच्छानुसार आचरण करने लगे। वे तीनों निरंकुश भाव से जीवन बिताने लगे।

प्रायो ब्रजदेशीय प्राकृत मिश्रित भाषा

दोहा

हंमसाहि कछवाह की, कन्या नंदकुमारि।
अक्खयराज कुमार कौं, नृप ब्याहिय निरधारि॥३२॥

रामसाहि प्रतिहार की, कन्या राजकुमारि।
अधिप कुमर चुंड हिं यहै, ब्याही समुह बढारि॥३३॥
कन्या मान कबंध की, राजकुमरि अभिधान।
सुता गौड़ सुरतान की, स्यामाकुमरि सुजान॥३४॥
ए उभय हि तीजे तनय, उदयसिंह के अत्थ।
परिनाई बुंदी सुपहु श्रुतिबिधान मह सत्थ॥३५॥

कछवाहा राजा हेमशाह की पुत्री नंदकुमारी से सगाई निर्धारित कर राजा बैरीसाल ने अपने पाटवी कुमार अक्षयराज (अखैराज) का विवाह किया। इसी प्रकार रामशाह प्रतिहार की बेटी राजकुमारी से राजा ने अपने कुमार चूंडा का विवाह बड़ी धूमधाम से उत्सवपूर्वक किया। मानसिंह राठौड़ की कन्या जिसका नाम भी राजकुमारी था और गौड़ सुरतान की पुत्री जिसका नाम श्याम कुमारी था इन दोनों सुजान कन्याओं का विवाह राजा बैरीसाल ने अपने तीसरे पुत्र उदयसिंह के साथ पूरे विधि-विधान से करवाया।

कुमरपनहि खटपुर कियउ, अक्खयराज अधीन।
सुतदूजे चुंड हिं सुपहु, द्रंग बरूंधनि दीन॥३६॥
तीजे सुत उदय हिं बितरि, नृप पिप्लदा नैर।
मंडूपतिसन मंडयो, बैरीसल्ल हु बैर॥३७॥
पायो नहिं इन राजपद, तीनन कुब्यसन तानि।
व्है हैं सिसुहि सुभांड नृप, जब मरिहै भूजानि॥३८॥

कुमारावस्था में ही खटपुर की जागीर अक्षयराज को राजा ने प्रदान की और अपने दूसरे पुत्र चूंडा को बरुंधनि नामक गाँव दिया। तीसरे पुत्र उदयसिंह को पिप्पलदा नगर दे कर वैरीसाल ने मंडू के राजा से वैर लेने को युद्ध रचाया। इन तीनों भाइयों ने राज्यपद नहीं पाया इसका मुख्य कारण राजा पिता ने इन्हें कुव्यसनी माना। राजा ने घोषणा कर दी कि मेरी मृत्यु के बाद यह बालक सुभांडदेव मेरा उत्तराधिकारी हो कर राजा बनेगा।

कुल सब अक्खयराज को, अक्खाउत्त कहाइ।
हड्डुन में हुव तेरहम, प्रकट भेद क्रमपाइ॥३९॥

कुमर चुंड संतति सकल, अरिन करन उच्छेद।
चुंडाउत्त चउद्दहम, भो हड्डुन कुल भेद ॥४०॥
ऊदाउत्त कहाइ इम, उदयसिंह कुल एह।
हड्डुन अभिधा पंद्रहम, नृप जानहु जुत नेह ॥४१॥
भेद सबहि भावी भनिय, बर्तमान पुनि बत्त।
सुपहु राम धारहु श्रवन, अन्वय जस अनुरत्त ॥४२॥

अक्षयराज के सारे वंशज अक्खावत उपटंक वाले हुए और इस प्रकार हाड़ाओं में तेरहवाँ भेद प्रचलित हुआ। कुमार चूंडा की सारी संतानें जो शत्रुओं का नाश करने वाली हुईं वे चूंडावत कहलाई। यह हाड़ाओं का चौदहवाँ भेद कहलाता है। पन्द्रहवाँ भेद हाड़ा शाखा में उदयसिंह के वंशज उदावतों से प्रचलित हुआ। हे राजा रामसिंह! मैंने ये सारे भेद जो भविष्य में होंगे उन्हें बताया है। अब आप जो अपने वंश के यश से प्रीति करने वाले हैं वर्तमान का हाल सुनें।

इति श्री वंशभास्करे महाचंपूके पूर्वायण पञ्चम राशौ वीतिहोत्र-चाहुवाण बीज्यवर्णनबीजहड्डाधिराडस्थिपाल वंश्यानुवंश्यविहितव्या-ख्यानवेलाव्याहार्यबुन्दीनरेन्द्रबैरिशल्य चरित्रे पूर्वनृपबरसिंह मरणसमय-समीपमुगलजातीयतैंमूर नामम्लेच्छकाबल प्रभृतिप्रत्यन्तप्रभभवन तत्प्रे-रणाधीनकरतोया वारातनिर्णीतदिल्लीयाथातत्थ्यलुण्टितकश्मीर मुलतान गृहीतविविधार्योपहारप्रतिगतयवनरमजानतैमूरा र्यावर्तसीमासमानयन प्राप्तपितृपट्टहड्डाधिराजबैरिशल्य पातोरपतिपुत्रीदाहड़ीमानकुमरी परिणयन सीमाशत्रुवर्गबम्बावदेशधीर देव सम्पूर्णराज्यसमाक्रमण समरसंस्था-पितधीरदेव सन्तत्यर्थमण्डनदुर्गसम्बन्धिग्रामसप्तक समर्पण पराभूतप्रद्रा-वितदिल्लीशमहमूदनासुरुद्दीन मारितनिर्मन्तुतद्देशीयलोकलक्षद्वय तैमूर पक्षैक दिल्लीराज्यकरण तदवसरप्रबुद्धयत्तदार्यराजकपरस्परपृथ्वीसमाक्रमण तैमूर प्रतिगमनानन्तरपराजितप्रत्यायातमूर्तिमात्रपातसाहमहमूद षोडश वर्षजीवि-तावधितत्सचिवेकबालखानसर्वराज्य कार्यसाधानानन्तरमुलतानसूबा-पतिसय्यदसुलैमानपुत्रखिजरखान सूचितशकसमयदिल्लीपट्टप्रापण।

श्री वंश भास्कर महाचम्पू के पूर्वायण की पंचम राशि में अग्निवंशी चहुवान वंश वर्णन के कारण हड्डाधिराज अस्थिपाल के वंश और वंश की

शाखाओं की कथा बताने के समय के वचनों में वैरिशल्य के चरित्र में पहले राजा वरसिंह के मरने के समय के समीप मुगल जाति के तैमूर नामक म्लेच्छ का काबुल आदि म्लेच्छ देशों का पति होना, उसकी प्रेरणा के अधीन अटक नदी के इधर का दिल्ली का सत्य वृत्तान्त जानकर कश्मीर और मुलतान को लूट कर आर्यों से नाना प्रकार की भेंट लेकर वापस गये हुए यवन रमजान का तैमूर को आर्यावर्त की सीमा पर लाना, पिता का पाट पाकर हड्डाधिराज वैरिशल्य का पातोर के पति की पुत्री दाहड़ी मानकुमारी से विवाह करना, सीमा के शत्रुओं के समूह का बंबावदे के पति धीरदेव के सम्पूर्ण राज्य को दबाना, युद्ध में स्थापित धीरदेव के पुत्रों के लिये मांडलगढ़ सम्बन्धी सात गाँव देना, पराजित होकर भगे हुए दिल्ली के बादशाह महमूद नासुरुद्दीन के देश के निरपराधी दो लाख लोगों को मारकर तैमूर का पन्द्रह दिन तक दिल्ली में राज्य करना, उस समय में सावचेत हुए इधर उधर के आर्य राजाओं का परस्पर पृथ्वी को दबाना, तैमूर के लौट जाने पर हारकर पीछे आये हुए नाममात्र के बादशाह महमूद के सौलह वर्ष तक जीने की अवधि में उस के सचिव इकबालखान के सब राज्य कार्य साधने के अनंतर मुलतान के सूबापति सैय्यद सुलैमान के पुत्र खिजरखान का ऊपर बताये हुए शक समय में दिल्ली का पाट पाना।

चित्रकूटेशशीर्षोदलक्ष कुमारचुण्डसंबन्धार्थसमागतमण्डपपुर-महीपराष्ट्रकूटरणमल्लविश्वस्तवर्गमध्यगणावयः साम्यविवाहनर्मविधान श्रुतैतद्दन्तत्यक्तपैतृकराज्यसहिततत्सम्बन्धकुमारचुण्डतत्कन्यापितृपरिणा-यन लक्ष्मणानन्तरनिर्वासित चुण्डबाल्याविवेक राणामोत्कलमातुलपक्ष-विश्वसन श्रुतमोत्कलजिघांसुमारववर्गप्रच्छन्नप्रत्यागतमारित रणमल्ल-द्रावितततपुत्रयोधचुण्ड चित्रकूटराज्यस्वानुजमोत्कलाधीनीकरण मण्डपपुर-राज्यपितृव्यरणाद्धनरबदार्थप्रत्यर्पण त्याजितपूर्व सम्बन्धाऽपरसम्बन्ध-परिणीतशाङ्खलीसुप्रियकारदेवीनिमित्तराष्ट्रकूटनरबद प्रतिहारनरसिंह परस्परसरणमरण श्रुतैतदवृत्तमण्डपपुरप्रत्यागतकत्यनुजराणमल्लियोध-सिंहतद्राज्यसमासादन दिल्लीशसूबाधिकारिवर्गस्वामिद्रोहसमाचरणसमय-दक्षिणयवनेन्द्रप्रतापप्रकर्षपुरस्सरमालव सिन्धु देशा धिकारिद्वय प्रासभ्य-पातसाहीभवन।

चित्तौड़ के स्वामी सिसोदिया लाखा का कुमार चूंडा के संबंध के लिए आये हुए मंडोउर के राजा राठौड़ रणमल्ल के विश्वासपात्र लोगों में

समान अवस्था न होने से विवाह करने की हँसी करना, वह वृत्तान्त सुनकर पिता के राज्य सहित उस संबंध को छोड़कर कुमार चूंडा का उस कन्या को अपने पिता को ब्याहना, लाखा के मरे बाद चूंडा को निकालकर बाल्यावस्था के अविचार से राणा मोकल का मामा के पक्ष पर विश्वास करना, मोकल को मारने की इच्छा वाले मारवाड़ वालों को सुनकर छिप कर आये हुए चूंडा का रणमल्ल को मारकर उसके पुत्र जोधा को भगाकर चित्तौड़ का राज्य अपने छोटे भाई मोकल के अधीन करना, काका से हुए युद्ध में अंधे हुए नरबद को वापस मंडोउर का राज्य देना, पहले संबंध को छोड़ दूसरे संबंध का विवाह करने पर सांखली सुपियारदे के कारण राठौड़ नरबद और पड़िहार नृसिंह का परस्पर युद्ध में मारा जाना, यह वृत्तान्त सुनकर मंडोउर में वापस आकर कितनों ही से छोटे रणमल्ल के पुत्र जोधा का उसके राज्य को लेना, दिल्ली के बादशाह के सूबों के अधिकारी वर्ग के स्वामिद्रोह करने के समय दक्षिण के बादशाह के बड़े प्रताप से मालवा और सिंधुदेश के दोनों अधिकारियों का हठपूर्वक बादशाह होना।

विजयनगराधिपबारडरणधवलपराजय सज्जितदक्षिणाधिराजफीरोजसाह स्वानुजाऽहमदासाह ऽर्थस्व राज्यवितरण तदहमदसाह दक्षिणाऽन्तरगोलकुण्ड दुर्गसहित गौर्ज्जरान्तरनिजनामाङ्कितनव्य नगरनिर्माण बुन्दीन्द्रह ड्डाधिराजबैरिशल्य सन्तानपुत्र्येक पुत्राऽष्टक समुद्भवन नृपमध्यवयोजातत्रिक बार्द्धकजातषट्क सन्तानप्रत्येक मातृनिश्चयसहयुग्मै क सहजनिसूचन नरेन्द्रकुमाराक्षय राज कौर्मी चुण्ड प्रातिहारी तृतीयो उदयसिंह राष्ट्रकूटी गौड़ी युग्म परिणायन प्रथम कुमाराऽर्थ षट्पुर द्वितीयार्थ बरुंधणि तृतीयार्थ पिप्पलदा स्थानविभजन कुमारत्रय व्यसनविमनस्कनृपचतुर्थ कुमारसुभाण्डदेवार्थ स्वानन्तरभाविनीराज्यप्राप्तिनिर्दिशन कुमार त्रय भाविसन्तानाऽक्खाउत्त चुण्डाउत्तो दावुत्तो पटक्त्रियोदश चतुर्दश पञ्चदश भाविहड्डुभेदा विर्भावसूचनं पञ्चदशो मयूखः ॥१५॥ आदितो द्विषष्ट्युत्तरैकशततमः ॥१६२॥

विजय नगर के पति बारड़ रणधवल का पराजय करके सज्जीभूत होकर दक्षिण के पति फिरोजशाह का अपने छोटे भाई अहमदशाह के अर्थ अपना राज्य देना, उस अहमदशाह का दक्षिण के भीतर गोलकुण्डा गढ़ सहित गुजरात के भीतर अपने नाम से नवीन नगर बसाना, बूँदीन्द्र हड्डाधिराज वैरीशाल के संतान में एक पुत्री और आठ पुत्रों का जन्म होना, राजा के मध्य

वय में उत्पन्न हुए तीन और बुढ़ापे में उत्पन्न हुए छह संतानों की प्रत्येक माताओं के निश्चय के साथ एक साथ उत्पन्न होने वाले दो बालकों की सूचना करना, राजा के कुमार अक्षयराज का कछवाही चूंडा का प्रतिहारी और तीसरे उदयसिंह का राठौड़ी और गौड़ी दोनों से विवाह करना, पहले कुमार के अर्थ खटकड़ दूसरे के अर्थ बरूंधनी और तीसरे के अर्थ पीपलदा स्थान बाँटना, बड़े तीनों कुमारों का व्यसनी होने से उदास राजा का चौथे कुमार सुभांडदेव के अर्थ अपने बाद आगामी राज्य प्राप्ति को दिखाना, तीनों कुमारों के आगे होने वाली संतान से अक्खाउत्त, चूंडाउत्त, ऊदाउत्त पदवी वाले तेरहवें, चौदहवें और पन्द्रहवें आगे होने वाले हाड़ों के भेद की सूचना करने का पन्द्रहवाँ मयूख समाप्त हुआ। और आदि से एक सौ बासठ मयूख हुए।

प्रायो ब्रजदेशीय प्राकृत मिश्रित भाषा

पादाकुलकम्

मंडोउर इत जोध महीपति, सुत बारह पाये निज संतति।
पहिलो सूरजमल्ल पट्टधर, भयो जनकपीछैं सुहि भूवर॥१॥

ऊदा बलि दूदा जसउत्तम, कर्मसिंह रतनेस जथा क्रम।
जिम बाकी बीदा सेखा जुत, सेसन सह बारह प्रकटे सुत॥२॥

निज निजकुल इनके इन नामन, अग्ग उत्तपद भजत प्रथितपन।
बीका भिन्न राज्य निज बंधिय, सोहु अग्ग अैहैं क्रम संधिय॥३॥

गय बीदा हु सहज तस संगहि, जंगलधर खट्टिय जिन्ह जंगहि।
इत आमैर नगर बर अंहति, पृथ्वीराज नाम हुव भूपति॥४॥

सो यह चंद्रसेन नृप को सुत, जाकै सुत बारह हुव जसजुत।
अग्रज भारमल्ल हुव इनमें, खिल हु भये कुलधर बढि खिनमें॥५॥

मंडोउर के राठौड़ राजा जोधा के कुल बारह पुत्र हुए। इनमें सबसे बड़ा पाटवी सूरजमल (सूजा) था जो अपने पिता के बाद मंडोउर का राजा बना। इससे छोटे भाइयों में क्रमशः उदयसिंह (ऊदा), दूदा, कर्मसिंह, रत्नसिंह, बीका, बीदा, शेखा आदि थे। इनके वंशज आगे जा कर इनके नाम से जाने गए। उनके उपटंक भी इसी तरह बन . बीका ने अपने लिए एक अलग राज्य बनाया उसका वृत्तान्त आगे कहा जाएगा। बीका के साथ उसका

छोटा भाई बीदा भी मंडोउर से चला गया उन्होंने वहाँ से जा कर जंगलधर (बीकानेर) की भूमि को युद्ध में जीता। इधर आमेर नगर में श्रेष्ठ वदान्य पृथ्वीराज नामक राजा हुआ। यह राजा चन्द्रसेन का पुत्र था। पृथ्वीराज नामक इस राजा के बारह यशस्वी पुत्र हुए। इनमें सबसे बड़ा भारमल था शेष सारे भाई भी इतने ही प्रसिद्ध हुए कि उनके नाम से आगे उनके कुल पहचाने गए।

मुक्कल इत चित्तोर महीपति, मुलक सम्हारन अटत महामति।
क्रम मुकाम बग्घोर द्रंग किय, लहिखिन खलन तत्थ तस असु लिय॥६॥

दासीभव[1] याके काका दुव, हे नृप चाच रु मेर दुष्ट हुव।
बिरचि दगा तिन्ह रान बिनासिय, तेहु बहुरि चुंडा सन त्रासिय॥७॥

मंत्रि भट न अंतर कति मासन, बिरचि चाच अरु मेर बिनासन।
मुक्कल सूनु सिसुहि कोबिदमति, कुंभ कियउ मेवार महीपति॥८॥

कुंभलमेरु दुर्ग जिहिं किन्नों, दान अमित कवि बिप्र न दिन्नों।
ताके दये अबहु दुख त्रासन, सुकवि बि भुग्गहिं बहु सासन॥९॥

रानां यहहु भयो दुर्जय रन, चुंड पितृव्य सधर्म धराधन
थंभ बिजै निज कर यहु थाप्यो, इम मेवाड़ गरब पुनि आप्यो॥१०॥[2]

इधर चित्तौड़गढ़ में इन दिनों राणा मोकल था जो लड़ने के लिए दूर के राज्यों में फिरता था। इस क्रम में एक बार उसका पड़ाव बागोर नामक पुर था। इसने अवसर प्राकर वहाँ अपने शत्रुओं के प्राण हरे। इसके दो काका थे चाचा और मेरा ये दोनों दुष्ट दासी पुत्र थे। इन्हीं दोनों ने मिल कर कपट से महाराणा को मार डाला। इसी के कारण वे चूंडा से डरते थे। राणा के

१. यहां पर चाचा और मेरा को दासी के पेट से उत्पन्न होना लिखा सो ठीक नहीं है क्योंकि ये दोनों खातिन के पेट से उत्पन्न हुए थे। इनसे बागौर के मुकाम पर महाराणा मोकल ने एक दरख्त के लिये पूछा कि काकाजी इस दरख्त का नाम क्या है? इस पर चाचा और मेरा ने सोचा कि वृक्षों के भेद खाती लोग जानते हैं और हम भी खातिन के पेट से उत्पन्न हैं इस कारण महाराणा ने सबके सन्मुख हमारी निंदासूचक हँसी की है इस द्वेष के कारण रात्रि में महाराणा के डेरे पर आकर उनको छलपूर्वक उन दोनों ने मार डाला और वहाँ से भाग गये यह खबर सुनकर मंडोवर के राव राठौड़ रणमल्ल ने अपने भानजे का वैर लेने को उदयपुर से पश्चिम दिशा में पेई के पर्वतों में जाकर चाचा और मेरा दोनों भाइयों को मार डाला और वे वहाँ से चित्तौड़ आकर राज कार्य करने लगे जिसका वृत्तान्त पहले आ चुका है। संपादक

२ छंद संख्या १० से सीधी १६ आ जाने का कारण मात्र यह है मूल प्रति में जगह छोड़ी हुई है। संभवतः कवि यहां इसी विषय में अन्य छंद रचना चाह रहा होगा पर ऐसा न हुआ। संपादक

सामन्तों, मंत्रियों आदि ने कई माह तक उनका पीछा किया और उन्हें (चाचा और मेरा को) मार डाला। फिर महाराणा मोकल के बुद्धिमान पुत्र कुंभा को मेवाड़ का राजा बनाया। इसी कुंभा ने राजा बन कर कुंभलगढ़ जैसा सुदृढ़ दुर्ग बनवाया। ब्राह्मणों और कवियों (चारणों) का आदर करते हुए इस वदान्य राजा ने उन्हें अमिट दान दिया। उस राजा कुंभा द्वारा प्रदत्त सांसण जागीर के गाँव अब तक उनके द्रारिद्र्य के दुख को मिटाते हैं। यह राणा युद्ध में अपने चाचा चूंडा की तरह अजेय योद्धा था। उसने अपनी विजय की स्मृति स्वरूप विजय स्तम्भ स्थापित किया। इस प्रकार उसने मेवाड़ के गौरव को पुनः स्थापित किया।

जुद्धहि तैं बिस्तार जमायो, सगती बिय हम्मीर सवायो।
रायमल्ल हुव कुंभरान सुत, जो सिसुपनहि कुमर सब गुन जुत॥१६॥

महाराणा (कुंभा) ने युद्धों की सहायता से अपने राज्य का विस्तार किया और महाराणा हमीरसिंह से भी आगे बढ़ गया अर्थात् उससे भी सवाया बलशाली हो गया। महाराणा कुंभा के रायमल नामक पुत्र हुआ जो अपनी शैशवावस्था में ही सभी गुणों से भरा पूरा था।

दोहा

कहत चाच मेर हिं किते, जाठर खत्तनि जात।
तिन किय पुच्छत जाति तरु, पापिन रान निपात॥१७॥

कई लोग यह भी कहते हैं कि चाचा और मेरा दोनों बढ़इन (सुथार स्त्री) के गर्भ से उत्पन्न थे। उनसे एक बार महाराणा ने पूछ लिया कि इस वृक्ष की जाति क्या है? अर्थात् यह किस प्रजाति का पेड़ है? तो उन पापियों ने महाराणा को यह सोच कर मार डाला कि इसने हमें बढ़ई वंश का जान कर वृक्षों की प्रजाति पूछी है जिससे सभी के सामने हमारा अपमान हो गया।

बाजबहादुर साह बनि, मंडूपति इत मिच्छ।
बुंदी उप्पर बाहिनी, आनी लुंटन इच्छ॥१८॥

नृप नमाइ सब निकट के, पहिलें इहिं बलपान।
दिय बुंदिय चित्तोर द्रुत, मिलन केर फरमान॥१९॥

मांडू का स्वामी बाजबहादुर स्वयं बादशाह बन बैठा और उस यवन ने

बूँदी को लूटने के लिए अपनी सेना भेजी। इस बलवान शाह ने अपनी भुजाओं के बल पर पहले पास के कई राजाओं को अपने कदमों में झुका लिया था। इसी दर्प से उसने बूँदी और चित्तौड़गढ़ के राजाओं के पास भी फरमान भेजे कि वे भी उपहार आदि दे कर हमारे मातहत बन जाएँ।

षट्पात्

मुक्कल नृप मेवार मिच्छ फरमान न मन्निय।
नमिलन उचित निहारि कुंभरानहु साहस किय।
बैरीसल्ल हु बीर सोहु हठ अडर समाह्यो।
ताके दूतन तरजि दुष्ट मिच्छन उर दाह्यो।
तातैं सु पुब्ब चित्तोरतजि बाजबहादुर सज्जि बल।
द्रुत आइ देस लुट्टत दुसह बुंदिय किय बेढन बिकल॥२०॥

मेवाड़ के राणा मोकल ने म्लेच्छों के फरमान कभी नहीं माने थे उनकी अनुपालना कभी नहीं की थी। अपने कुल की इस मर्यादा का पालन करते हुए राणा कुंभा ने भी उससे मिलना स्वीकार नहीं किया। इधर बूँदी का हाड़ा राजा बैरीसाल भी निर्भय होकर अपने हठ पर अडिग रहा उसने बाज बहादुर के दूतों को दुत्कार कर वहाँ से निकाल दिया और इस प्रकार उसने म्लेच्छ का दिल जलाया। इससे कुपित हो बाजबहादुर ने अपनी सेना को सज्जित किया और चित्तौड़गढ़ को छोड़ कर सर्वप्रथम बूँदी पर चढ आया देश लूटने वाली उसकी सेना ने शीघ्र ही बूँदी आ कर विकट युद्ध छेड़ा।

धकि तोपन घमचक्क अग्गि लग्गिय धर अंबर।
ओलन गति दुहुं ओर असह गोलन आडंबर।
सलिल निवानन सुक्कि तजत पत्रन भुरसे तरु।
देस अनूपहु दहत महत झंखर बनिगो मरु।
हड्डुहु चलाइ रोके अहित तारागढ़सन तोप तति।
कित्रों बिहाल मंडुव कटक गजब डारि पबि पात गति॥२१॥

दोनों ओर की तोपों ने आग बरसा कर धरती और आकाश दोनों को तपा दिया। ओलों की तरह दोनों पक्षों पर गोले बरसने लगे, जिनके आतप से तालाब सूख गये और पेड़ झुलस कर पत्रहीन ठूँठ हो गए। हरा भरा पूरा प्रदेश सूख कर झंखर हो मारवाड़ की तरह निर्जल हो गया। हाड़ा वीरों ने तारागढ़

दुर्ग से तोपों के गोले बरसाकर शत्रुओं को आगे बढ़ने से रोका ही नहीं बल्कि मांडू के शत्रुदल पर तेज गति से वज्रपात कर उसे बेहाल कर दिया।

दोहा

दूर लखत दर्पन दृगन, नृप अरिसेन निहारि।
सुरभि बैल कट्टत सतन, रत न रह्यो तिहिं रारि॥२२॥

कहिय भूप भोजन करहिं, अप्पन बुंदिय अैंन।
कट्टैं द्वारहिं गो निकर, सु अनय पिक्खि सकैंन॥२३॥

दूर तक देखने वाले दर्पणों (दूरबीन) की सहायता से जब राजा बैरीसाल ने शत्रुदल का निरीक्षण किया तो क्या देखता है कि सैंकड़ों गाय बैल भी साथ कट गए हैं। यह देख कर राजा की इस प्रकार के युद्ध में प्रीति नहीं रही अर्थात युद्ध में उसकी रुचि न रही। इस पर राजा ने कहा कि हम लोग तो अपने-अपने घरों में बैठ कर भोजन कर रहे हैं और बूँदी के द्वार पर गायों के समूह कटे पड़े हैं यह मुझसे नहीं देखा जाता। मैं यह सहन नहीं कर सकता।

षट्पात्

मंडूपुरपति मिच्छ घोर संगर पुर घेरिय।
याके अमित अनीक हनन हड्डुन हित हेरिय।
तोपन रच रचि तदपि निकट आवन देते नन।
पै गोबध यह पिक्खि मरन जित्तन चिंतैं मन।
जो परैं खेत हम तो सजव सब अंतहपुर सिसुन सह।
तुम देहु कढ्ढि रहन न उचित, जानि जवन अतिबल असह॥२४॥

यवन मांडूपति की सेना ने नगर को घेर कर भीषण संग्राम मचाया प्रत्युत्तर में बूँदी के हाड़ाओं की सेना ने शत्रुदल के कई लोगों को अपने रक्षार्थ मारा। यद्यपि हाड़ाओं ने भी तोपों से युद्ध छेड़ रखा था और ऐसी दशा में शत्रु करीब नहीं आ सकता था पर राजा ने जब गायों को इस प्रकार कटा हुआ देखा तो मन में विचार किया कि इस विजय की बजाय मर जाना उचित है और कहा कि यदि मैं रणभूमि में निःशेष हो जाऊँ तो तुम शीघ्र ही जनाने महल से स्त्रियों और बालकों को निकाल देना क्योंकि तब उनका यहाँ रहना उचित नहीं होगा। म्लेच्छों का दल बहुत बड़ा है और असह्य है।

दोहा

भूप कतिक विश्वस्त भट, रक्खे पुर इम अक्खि।
मरन चल्यो सेसन सहित, सविता कंहं करि सक्खि॥२५

अक्खय तिम चुंड रु उदय, मूरख त्रय हि कुमार।
रहे दुरे निजनिज निलय, भिरन न बंटिय भार॥२६॥

नृप अक्खिय आये नहीं, मम सहाय सुत मूढ।
तिनहिं न रक्खहु पट्ट तुम, रहहिं सुभांड प्ररूढ॥२७॥

अखिल करावहु याहि तैं, प्रेत कर्म बिधि पाइ।
मरन महीपति अक्खि इम, अरर खुलाये आइ॥२८॥

साक गगन निधि बेद ससि बिक्रम सक गत बेर।
बाजबहादुर सैन्य बिच, किन्नैं हय जय केर॥२९॥

अपने कुछ विश्वासपात्र योद्धाओं को ऐसा निर्देश दे कर राजा ने उन्हें वहीं दुर्ग में रखा और स्वयं सूर्य की साक्षी में अपनी शेष सेना सहित मरने चला। इस कठिन समय में उसके अपने तीनों पुत्र अक्षयराज, चूंडा और उदयसिंह अपने अपने घरों में दुबके रहे। उन्होंने आगे हो कर बूँदी के वीरों के साथ युद्ध भार उठाने में हाथ बटाना उचित नहीं समझा। इस पर राजा ने कहा मेरे पुत्र मेरी सहायता में युद्ध करने नहीं आए इसलिए सामन्तो! इन मूर्खों को तुम राजगद्दी मत सौंपना। मेरा उत्तराधिकारी सुभांडदेव होगा। मेरे मरने पर सारे प्रेतकर्म भी उसी के हाथों पूरे विधि-विधान से करवाना। इतना कह कर राजा ने दुर्ग के दरवाजे खुलवाए। विक्रम संवत् के वर्ष चौदह सौ नब्बे के अन्त में हाड़ा बैरीसाल ने बाज बहादुर की भारी सेना के मध्य विजयश्री अर्जित करने की आशा में अपने घोड़े बढ़ाए।

नाराचः

नमात भू हमल्ल हल्ल बैरिसल्ल निक्कस्यो।
खुलाइ द्वार के किंवार आजि फार उक्कस्यो।

कसे दुतंग अँड अंग द्रंग रंग दंडते।
चले तुरंग ज्यों कुरंग यों मलंग मंडते॥३०॥

करीन पैं खुले निसान लंबमान लोल व्है।
दिसादिसान खानखान बर्द्धमान बोल व्है।

समग्ग खग्ग संभरी करग्ग नग्ग संग्रह्यो।
अनीक अग्ग व्है उदग्ग ऐंचि बग्ग उम्मह्यो ॥३१॥

अपने हमले (धावा) से भूमि को लचकाता हुआ बैरीसाल हल्ला (दकाल) करते हुए दुर्ग के दरवाजे खुलवा कर युद्ध में मारकाट मचाने के लिए उद्धत हुआ। अपने घोड़ों के दुतंग (जेरबंध) कसवा कर और अपने अंग-अंग में ऐंठ (दर्प) भर कर वह नगर से युद्ध में शत्रु को दंड देने चला और हरिणों की तरह फलांगे भरते उसकी सेना के घोड़े बढ़े। सेना के हाथियों पर बड़ी-बड़ी ध्वजाएं चपल वेग से खुल कर फहरने लगी। दिशा-दिशा में खाओ-खाओ (मारो-मारो) के बोल गूंजने लगे। तलवार चलाने के मारे मार्गों (पट्टेबाजी) में निष्णात चहुवान (हाड़ा) बैरीसाल ने अपने हाथ में नंगी तलवार उठाई और उसने अपनी सेना के अग्रभाग (हरावल) में उदग्र हो कर अपने घोड़े की लगाम खींची। इस तरह वह रणोन्मुख हो कर हुआ।

रहे कुमार दट्टि द्वार जे अगार जत्थ ही।
सजे स्वभ्रात जावदू रु निम्मदेव सत्थ ही।
सलज्ज सज्ज रज्ज कज्ज अज्ज मिच्छ अंकुरे।
घटा सकज्ज छज्ज गज्ज बज्ज तज्जने घुरे ॥३२॥
चलंत चक्क होत हक्क रीझि अक्क रुक्कयो।
झटक्क धक्क पक्क नक्क सप्प सक्क झुक्कयो।
झरी कृपान यों खनंकि ज्यों झनंकि झल्लरी।
ढरैं प्रबीर प्रोत तीर होत चीर ढल्लरी ॥३३॥

उसके बड़े तीन पुत्र जो अपने घर में थे वे घरों के किंवाड़ बंद कर वहीं रहे पर उसके वीर भाई जावदू और निम्मदेव सज्जित हो कर अपने भाई के साथ सहायता को गए। अपने पर आई आपदा देख कर लज्जा सहित सज्जित हो कर राज्य की रक्षार्थ आर्य म्लेच्छों के सामने उठ खड़े हुए। घटा के समान गर्जना करती हुई सेना शत्रुओं पर छा जाने के लिए जब बढ़ी तो रणभेरी आदि वाद्य बज उठे। सेना के प्रयाण के समय होती हाक (दकालें) को सुन कर सूर्य रीझ कर रुक गया और सेना के प्रयाण से लगते झटकों के

कारण अपनी नासिका (फण) पकड़ कर शेष नाग अपने स्थान से थोड़ा सरक कर चल विचल हो झुक (लचक) गया। युद्धारंभ में तलवारें खनकती हुई यों बज उठीं जैसे झालर बजने लगी हो। तीरों के प्रहारों से वीर बिंधने लगे और ढालें चिरने लगी।

वृखेस पैं चढे महेस पब्बई मृगेस पैं।
निहारिबे लगे पधारि रीझ ते नरेस पें।
पचासद्वै रु च्यारि सट्ठि पत्त रत्त पूरिकैं।
मिरा समान मंडि पान मत्त भान भूरिकैं[1] ॥३४॥
सनंकि पिच्छ अंतरिच्छ गिद्ध चिल्ल्ह संकुले।
खलक्कि अस्त्र खाल लाल ताल नाल से खुले।
इते मुरारि इष्टधारि गंगबारि आचमैं।
निगाह लाह राह दै उतैं इलाह को नमैं ॥३५॥

युद्ध का नजारा निरखने को महादेव अपने बैल पर सवार हुए और पार्वती मृगपति सिंह पर आरूढ़ हो राजा पर प्रसन्न हो रणभूमि में पधारे। बावन भैरव और चौंसठ योगिनियाँ अपने-अपने पात्र रक्त से भर कर पीने लगे और मद्यपान किए हुए मद्यप की तरह भानभूल होने लगे। रणभूमि के ऊपर आकाश में अपने पंखों की सनसनाहट करते हुए गिद्ध और चील पक्षियों के समूह आ एकत्र हुए। रक्त के नाले यों बह निकले मानों किसी लाल रंग के पानी से भरे तालाब के नाले खुले। इधर के पक्ष वाली हाड़ाओं की सेना के वीर अपने इष्टदेव कृष्ण (मुरारी) का स्मरण कर अन्त समय आने की दशा में गंगाजल पी रहे हैं तो उधर म्लेच्छ लोग जन्नत (स्वर्ग) के लाभ की ओर निगाहें कर अल्लाह को झुकने लगे।

कितेक रुंड झेलि झुंड ब्याम दोरते करैं।
कबंध जातुधान के समान प्रान संहरैं।
कृपान तंति फेन भंति सेन पंति में कढैं।
परंत भार वार पार मार मार के पढैं ॥३६॥

टिप्पणी :- १. कवि सूर्यमल्ल ने यहां 'भूलिकैं' शब्द की जगह तुक की आवश्यकता के अनुसार 'भूरिकैं' प्रयोग किया है। - संपादक

लुभाइ साकिनीन गोद मोद डाकिनी लहैं।
सपीति कज्ज रीति सों पिसाच रत्त संग्रहैं।
सु सार के दुसार केक अद्धपार सेल व्है।
महंत भार धार ज्यों तुला प्रकार मेलव्है ॥३७॥

युद्ध में मस्तक कटे हुए रुंड (कबंध) दौड़ कर शत्रु समूह को अपनी भुजाओं में भरने लगे तो कहीं कबंध राक्षसों की तरह सामने वाले का प्राण हरने लगे। जैसे झाग को काटती हुई तांत निकलती है उसी तरह सेना की पंक्ति को काटती तलवारें निकलने लगी। कितने ही योद्धा तलवारों का भार पड़ने पर चीख-चीख कर 'मार मार' पुकारने लगे। मरणासन्न वीरों को साकिनियाँ लोभ से गोद में लेने लगीं, डाकिनियाँ मोद मनाने लगीं। अपने पीने को प्यार से पिशाच रक्त का संग्रह करने लगे। अच्छी तेज धार वाले भाले पार निकलने लगे और कम तीखी धार वाले शत्रु शरीर में आधे धँस कर तुला की तरह होने लगे जिनसे आधे शरीर का भार इस ओर और शेष आधे का उस तरफ होने लगा।

कहों कितेक फारि कोच अग्ग संगि अग्ग व्है।
मनों कि लाल मीन बाल झीनजाल मग्ग व्है।
बडे करीन मत्थ हत्थ बैरिसल्ल के बहैं।
रुलैं तदुत्तमंग रंक पाय चो रूपे रहैं ॥३८॥
झिलैं कितीक बेर बेर फेर भुम्मि पैं झुकैं।
लगे स्वप्रान त्रान में चढाक आन में लुकैं।
कितेक छिनन बावदूक जावदूक कित्ति कैं।
जई कितेन लेत खेत निम्मदेव जित्ति कैं ॥३९॥

कहीं पर कवचों को चीरती हुई बरछियों के अग्र भाग पार निकलने लगे मानों छोटी-छोटी लाल रंग की मछलियों के बच्चे बारीक जाल से अपना मुँह निकालने लगे हों। बड़े-बड़े हाथियों के मस्तक पर बैरीसाल के हाथ की तलवार के वार होते ही उनके मस्तक कट कर लुढ़कते हैं और हाथी का शेष धड़ चार पाँवों पर (रुपा) खड़ा रह जाता है। वे कुछ देर जस के तस खड़े रह कर बाद में भूमि पर झुककर गिरते हैं और उन पर सवार

योद्धा अपने प्राणों की रक्षार्थ कहीं ओर छुपते हैं। कई कटे हुए डींग हाँकने वाले (ज्यादा बक-बक करने वाले) घायल जावदू के प्रहार की (कीर्ति) तारीफ करते हैं। उसी के साथ विजयी निम्मदेव हाड़ा कई शत्रु योद्धाओं को रणभूमि में सुला कर जय हासिल करने लगा।

करंत काज अज्जराज मिच्छराज पैं क्रम्यों।
दु पास तास दंति खास चंद्रहास तैं दम्यों।
समत्थ तत्थ हत्थि हत्थ बाजिमत्थ संग्रह्यो।
रच्यो दु मग्ग खग्गदै करग्ग लग्ग जो रह्यो ॥४० ॥
भई सु छिन्नि सुंडि है सिरोधि बेढि यों भली।
करी कि याल बाल त्रान काल व्याल कुंडली।
कटंत सुंडि छंडि रारि चीह पारि गो करी।
कियो स्वबाह और साह भो निगाह सो करी ॥४१ ॥

ऐसे करतब करता हुआ आर्य राजा वैरीसाल म्लेच्छपति पर कुपित हो कर चला और दोनों के पास पास होते ही शत्रु के खास हाथी को अपने खड्ग प्रहार से मार गिराया। वहीं उस समर्थ हाथी ने अपनी सूंड में राजा के घोड़े का सिर पकड़ लिया। इसी समय तलवार चली जिससे सूंड के दो टुकड़े हो गए। वहीं रह गई हुई घोड़े की गरदन को घेरने वाली कटी सूंड यों लगने लगी मानों घोड़े की अयाल रूपी सर्प के बच्चों की रक्षा करने के लिए काले भुजंग ने उन पर अपनी कुंडली मारी हो। अपनी सूँड के कटते ही चीख मार कर हाथी उल्टी दिशा में भाग गया। इस समय बादशाह की नजर के आगे जो कोई दूसरा हाथी पड़ा उसी को उसने अपना वाहन बना लिया।

बितंड पिट्ठि जात जात खग्ग भूप को बह्यो।
रनंकि टोप कट्टिगो रु सीस चट्टिगो रह्यो।
गज द्वितीय पिट्ठिप्रान इट्ठि साह निट्ठिगो।
दुरंत होद कोद जो समोद भूप दिट्ठिगो ॥४२ ॥
चल्यो तदीय लैन जीय खग्ग स्वीय चंड लै।
दुचाल दुष्टजाल पैं मनों कि काल दंड लै।
दये सु पत्रबाह साह हड्डु नाह बच्छ द्वै।

मनों तनुत्र जाल अच्छ पच्छ बेग मच्छ द्वै॥४३॥

उस दूसरे हाथी की पीठ पर बादशाह के चढते-चढ़ते राजा की तलवार चली जो उसके शिरस्त्राण को काटती हुई उसके सिर को चाटती हुई ठहर गई। बादशाह तुरन्त उस हाथी को छोड़ कर दूसरे हाथी पर सवार हुआ और उसके होदे के एक कोने में दुबक कर बैठा पर वह राजा की नजर की हद में आ गया अर्थात् दिखाई दे गया। दिखते ही उसके प्राण लेने के लिए राजा अपना प्रचंड खड्ग ले कर उसकी ओर बढ़ा मानों बुरी चाल वाले (पापी) दुष्टों के जाल पर यमराज अपना दंड ले कर बढ़ा हो। तभी मांडूपति ने हाड़ा राजा की छाती पर दो बाण मारे जो उसके कवच में धंस कर ऐसे दिखाई दिये मानों किसी जाल में पंख वाले पक्षियों की गति से दो मगरमच्छ घुसे हों।

सही प्रबीर तीर पीर गोसु मीर सम्मुहो।
प्रसंस हड्डुबंस क्वैन अंसहू परम्मुहो।
हन्यों करीम अब्दुलादि मिच्छ जत्थ हड्डु है।
बन्यों सु भूप भूप गूढ जानि ब्यूढ बड्डु है॥४४॥
तजैं न जंग जो भजैंन संग जो भजैं तहां।
जु भुम्मि बाह वाह हड्डुनाह आरुह्यो जहाँ।
करीम अब्दुलादि को तुरंग भूप कट्टि कैं।
दयो चिराइ खग्ग सों गिराइ सोहु दट्टि कैं॥४५॥

वीर वैरीसाल छाती में लगे तीरों की पीड़ा को सहन कर मांडूपति के सामने गया क्योंकि प्रशंसनीय हाड़ों का वंश लेशमात्र भी किसी शत्रु के सामने परांगमुख नहीं होता। इसी समय अब्दुल करीम नामक एक यवन ने हाड़ा के घोड़े को काट डाला जिससे वह भूप (अर्थात् राजा) पृथ्वी पर पैर रखने वाला पैदल हो गया पर तभी उसने म्लेच्छ को अपने रचे हुए बड़े व्यूह में छिपा हुआ देखा। वह म्लेच्छ न युद्ध को छोड़ता है और न ही भागता है क्योंकि ऐसा उसका कोई साथी नहीं जिसके पास भाग कर जाए। हाड़ा राजा ने भी भूमि रूपी वाहन का आरोहण कर (पैदल चल कर) अब्दुल करीम के घोड़े को काट कर अपने खड्ग के दूसरे जोरदार प्रहार से उस को चीर डाला।

चढाइ बान सेनखान व्हैं चुहान पैं चल्यो।
दयोन जान जाबदू सु पैं कृपान तैं दल्यो।
दु बाह मिच्छ को सुबाह अप्प नाह को दयो।
नरेस तास अस्वबार जुद्ध फार निर्मयो ॥४६॥
गुलाम हैदरादि कों सबाजि आजि गंजि कैं।
रहीम भंजि कैं लयो निराइ साह रंजि कै।
कमाल नूर भूप पैं कृपान हत्थ सत्थ के।
करे सिरस्क दारि फारि भाग च्यारि मत्थ के ॥४७॥

तभी सेनखान अपने धनुष पर बाण चढ़ा कर चहुवान पर चला उसे जावदू ने आगे नहीं जाने दिया और वहीं अपनी तलवार से उसे काट गिराया। उस दोनों हाथों से तलवार चलाने वाले (दुबाह) वीर जावदू ने म्लेच्छ शत्रु का वाहन तब अपने स्वामी हाड़ा वैरीसाल को दिया। राजा ने उस पर सवार हो युद्ध फैलाया। राजा ने हैदर गुलाम को उसके घोड़े सहित एक ही प्रहार में मार गिराया और आगे राह में पड़े रहीम को काट कर बादशाह को अपने समीप लिया। तभी कमाल और नूर इन दोनों यवनों ने एक साथ राजा पर तलवार के वार किये जिनसे शिरस्त्राण और टोप कट कर राजा के मस्तक के चार भाग हो गए।

स्वसीस्र बंधि भुम्मिपाल सो कमाल संहस्यो।
कृपानघात निम्म भ्रात पात नूर को कस्यो।
तदग्ग अैंचि बग्ग निम्म खग्ग साहपैं तज्यो।
भयो सत्रान खंध हान खान प्रान पैं भज्यो ॥४८॥
महीप अब्ब पैं इते झुक्यो घुमाइ मोह सों।
लही मही सु नां टिक्यो छक्यो अचेत लोह सों।
अचेत भू रह्यो बहोरि व्है सचेत उट्ठयो।
प्रलैस मैं भयो प्रमानि रुद्र जानि रुट्ठयो ॥४९॥

राजा वैरीसाल ने तब अपने सिर को बाँध कर तुरन्त उस अपने प्रहारक कमाल को काट डाला। उसी समय निम्मदेव ने अपनी तलवार के

वार से नूर को काट गिराया और अपने घोड़े की लगाम खींच कर उसे बढ़ाते हुए पास जा कर उसने मांडूपति पर खड्‌ग मारा जिससे उसका कवच सहित कंधा कट गया और वह प्राण बचाने को भाग खड़ा हुआ। इधर तभी शस्त्रों से घायल मूर्च्छागत हो कर राजा घोड़े से अचेत हो कर नीचे गिर पड़ा। थोड़ी देर अचेत रह कर वह वापस इस तरह उठा मानों प्रलय काल में कुपित रुद्र उठा हो।

हुसेन खान मिच्छ तत्थ मत्थ भूप को हर्यो।
सु जानि जाबदूक आनि सोहु मिच्छ संहर्यो।
खुले महीस सीस के बिभाग च्यारि खग्ग सों।
मच्यो तथापि रुंड को रच्यो प्रघात मग्ग सों॥५०॥
हदाख्य नैन पाइ अैन सैन जावनी हनैं।
जितैं जितैं चलैं तितैं तितैं बजार से बनैं।
अनुत्तमंग भिन्न अंग रंग द्वै घरी रच्यो।
बिमत्थ व्है न नाथ तो सु साह को कहें बच्यो॥५१॥

इसी समय म्लेच्छ हुसेनखां ने बढ़ कर राजा का मस्तक काट डाला यह देखते ही जावदू ने लपक कर उस यवन को मार गिराया। नीचे गिरते ही राजा के मस्तक के चार टुकड़े हो गए पर उसके धड़ (रुंड) ने शत्रु का मार्ग रोक कर प्रहार किये। वह राजा का कबंध अपनी आंखों को हृदय के पास पा कर यवन सेना को मारने लगा। वह जिधर-जिधर बढ़ता उधर-उधर के मध्य बाजार जैसा मार्ग खुल जाता। मस्तकरहित और घायल राजा के रुंड ने दो घड़ी तक अविराम युद्ध किया। यदि राजा मस्तकहीन नहीं होता तो मांडूपति को बचा हुआ कौन कहता अर्थात शर्तिया मारा जाता।

झरैं दुहत्थ अप्पनैं तथापि धाइ झुंड में।
महीप लत्त घत्त की घनैंन बच्छ मुंड में।
किते पदाति सत्रु घाय राय पाय हू कटे।
अमत्थ साख पिंड केहु अंग जंग को अटे॥५२॥
गिरंत भूप जाबदू प्रघात स्वामिता गही।
मलेच्छ मुंड पट्टिकें मतीर खेत की मही।

समान निम्म जावदू अमान खान संहरे।
पठान के सहस्त्र चाहुवान के छसै परे॥५३॥

लड़ते हुए राजा के रुंड के दोनों हाथ भी शत्रुओं ने काट डाले तब भी धड़ ने शत्रुओं के झुंड पर दौड़ कर लातों के प्रहार किये। इसके बाद कई पैदल शत्रुओं के प्रहारों से राजा के मस्तक और हाथविहीन धड़ के पाँव भी कट गए तब भी वह लोथ बना शरीर युद्ध में विचरण करता रहा। राजा के मरने के बाद जावदू के प्रहारों ने स्वामीपन ग्रहण किया और उसने अपनी तलवार से म्लेच्छों के मुंडों से रणभूमि को पाटकर ऐसा बना दिया मानों वह रणभूमि न हो कर तरबूजों का खेत हो। मानसिंह सहित निम्मदेव और जावदू ने तब घेर कर अमान खां को मार गिराया। इस तरह इस युद्ध में मांडूपति बाज बहादुर के एक हजार और हाड़ाओं के छह सौ योद्धा काम आए।

घटी छ सेस घस्त्र पैं नरेस कढ्ढि नैर सों।
बन्यो दिनेस गुप्ति एस लेस लेस बैर सों।
निहारि मिच्छ जै भयें बरोध को निकासिबो।
तथासु दीह अंत लै रच्यो अराति त्रासिबो॥५४॥

छह घड़ी दिन के शेष रहते राजा नगर से निकला और सूर्य के अस्त होने पर लेशमात्र वैर को बाकी रख कर आप भी अपने शरीर में अंश मात्र बाकी रहा (यहाँ वैर शब्द में श्लेष है अर्थात् वैर का एक अर्थ शरीर और दूसरा अर्थ शत्रुता या वैर होता है।) फिर म्लेच्छों की विजय पक्की समझ कर जनाने से स्त्रियों और बच्चों को निकाला। इस प्रकार दिन के अन्त समय में शत्रुओं ने त्रासक स्थितियाँ बनाईं।

दोहा

परे नृपाऽनुज[१] दुव प्रहत, रहत आयुबल रक्खि।
मारि छखान समान मृत, चालुक छत नव चक्खि॥५५॥

इस युद्ध में राजा बैरीसाल के दोनों छोटे (पुत्र) निम्मदेव और जावदू घायल हो कर रणभूमि में गिरे और मानसिंह चालुक्य छह खानों को मार कर स्वयं मारा गया।

टिप्पणी :- यहां 'नृपाऽनुज' की जगह 'नृपतनुज' शब्द रहा होगा। लिपिकारों ने गलत लिख दिया लगता है क्योंकि जावदू और निम्मदेव हाड़ा राजा के छोटे पुत्र थे। छोटे भाई नहीं जैसा कि अर्थ से लगता है।- संपादक

षट्पात्

परिग बिजय प्रामार सत्रु अष्टक रन संहरि।
परिग कुम्म गोपाल कतल सत्रह जवनन करि।
भट तेरह अरि भंजि हड्डु लक्खन घुग्घल हर।
परिग भीम प्रतिहार सद्धि बारह खल संगर।
जद्दव सुमेरु हनि दस जवन खंडि अमर सीसोद खट।
पित्थल बघेल हनि नव परिग भुट्टिय संकर च्यारि भट॥५६॥

युद्ध में अपने आठ शत्रुओं को मार कर प्रामार विजयसिंह नि:शेष हुआ और कछवाहा गोपाल सत्रह म्लेच्छों को मार कर मरा। हाड़ा घुग्घल के वीर पुत्र लाखा ने कुल तेरह शत्रुओं को रणभूमि में काटा और प्रतिहार भीम बारह दुष्टों को मार कर मारा गया। यादव सुमेरसिंह ने दस यवनों को और अमरसिंह सिसोदिया ने छह म्लेच्छों को मरने से पहले मारा। बाघेला पृथ्वीराज ने नौ शत्रुआ का संहार कर जान दी तो भाटी शंकरसिंह चार शत्रु योद्धाओं को मार कर मरा।

दोहा

जैतावत खंधिल जई, मृत सोलह खल मारि।
छितिप परत दिनकर छिपत, तंहं धप्पिय तरवारि॥५७॥
एकादस मुख्य रु इतर, पंद्रह तदनु पचीस।
एकावन हनि परिग इम, सुपहु ससीस असीस॥५८॥
भ्रात जाबदुव निम्म भट, पंद्रह सत्रह पारि।
बिसम लोह छकिपरि बचे, ध्रुवहि आयु खिल धारि॥५९॥

खांधिल जैतावत ने राजा के मरने और सूर्य के छिपने तक अपने सोलह शत्रुओं को अपनी मौत के घाट उतार कर अपनी तलवार को तृप्त किया। ग्यारह मुख्य योद्धाओं और पन्द्रह दूसरे योद्धाओं सहित पच्चीस अन्य सैनिकों को काट कर अर्थात् कुल इक्यावन शत्रुओं को राजा वैरीसाल ने अपने मस्तक के रहते और कटने के बाद रणभूमि में सुलाया। जावदू ने पन्द्रह और निम्मदेव ने सत्रह शत्रु युद्ध क्षेत्र मे गिराये। दोनों भाइयों ने यद्यपि गहरे घाव खाये पर अपनी आयु शेष होने से वे जीवित बच गए।

स्वसत पिक्खि पुर के सुजन, इनकों जानि अचेत।
लाइ दुराये समय लहि, निज कहुं गूढ निकेत॥६०॥

पुर प्रबिसे नृप के परत, तब अरि अरर तुराइ।
लग्गे लुट्टन लोभ लगि, पथ बजार पृथु पाइ॥६१॥

भूपति जे बिश्वस्त भट, आयउ रक्खि अगार।
अरि प्रबिसत तुट्टत अरर, किय तिन कथित प्रकार॥६२॥

सह परिगह रानिन सिसुन, बलि कुमरन निर्बाहि।
तारागढ कों छन्न तजि, चले नयनपुर चाहि॥६३॥

रणभूमि में घायल हो कर सोये पड़े इन दोनों भाइयों को नगर वासियों ने जब जीवित पर अचेत देखा तो वे इन्हें उठा कर ले आए और गढ़ के तहखाने में ला छिपाया। राजा के युद्ध में मरते ही शत्रु दल दुर्ग के किंवाड़ तोड़ कर नगर में प्रवेश कर गया। वहाँ घुसते ही बड़ा बाजार देख कर लोभ के मारे वे लूटपाट करने लगे। राजा अपने जिन विश्वासपात्र योद्धाओं को दुर्ग में तैनात कर आया था उन्होंने नगर का प्रवेश द्वार टूटने पर नगर में घुस आई यवन सेना के साथ वही सलूक किया जैसा उन्हें करने को कहा गया था। और राजा के सारे परिकर, रानियाँ बच्चे और कुमार अपने जीवन निर्वाह के लिए तारागढ़ दुर्ग से गुप्त रूप में सारे नैणवा नगर जाने को निकले।

इतिश्री बंश भास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे पञ्चम राशौ वीतिहोत्र-वसुधेश्वर बीज्यवर्णनबीजहड्डाधिराडस्थिपाल वंश्यानुवंश्यविहितव्या-ख्यानावसरव्याहार्यबुन्दीनरेन्द्रवैरिशल्य चरित्रे मण्डपपुराधिराजराष्ट्रकूट-योधराजौरससूर्यमल्ल दिद्वादश पुत्रप्रादुर्भवन, तत्तन्नामोटपङ्क्तिततत्कुलभेद-प्रकटन, तथाऽऽनमैरनरेन्द्रचान्द्रसेनिकूर्मपृथ्वीराजौरसभारमल्ल प्रभृति-कुलधरकुमारद्वादशक समुद्भवन, चित्रकूटाऽधिराजशीर्षोद्दभौजिष्येयपि-तृव्य चाचा मेरा व्याघ्रपुरविश्वस्तराणामोत्कलनिपातन प्राप्तत्पट्टनिबद्ध-कुंभिलमेरुदुर्गसमुत्पादितसूनुराजमल्लमौत्कालिरा णाकुम्भकर्णशौर्यौ दार्य प्रशंसन मण्डूद्रङ्गस्कन्धावारबुन्दी चित्रकूट प्रातीप्यप्रतिकूलमालवाधिराज-युयुत्सुयवनेन्द्रबाजबहादुरबुन्दीवेष्टन मुकुरोपदृग्दृष्टगोवर्गवधतदुपेक्षित-नालीयन्त्रयुद्धज्ञातकुमारत्रय सहायानागमपट्टाहीकृतचतुर्थ कुमारनिरर्ग लीकृतगोपुरारहड्डाधिराजवैरिशल्य सूचितसम्बत्समयमुक्तेतरशस्त्रशत्रु-

सैन्यसंयोधन कर्त्तितनिजार्वशिरोधिवेष्टितम्लेच्छराजगजहस्तनरेन्द्रापरग-जारोहन्म्लेच्छपरिशिरस्क खड्गकर्तन म्लेच्छान्तरसोढनिषादिम्लेच्छ राजबाणद्वय हड्डाधिराजहयनिपातन।

श्री वंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण की पंचम राशि में अग्निवंशी चहुवान वंश वर्णन के कारण हड्डाधिराज के वंश और अनुवंश की कथा बताने के समय के वचनों में बूँदीनरेन्द्र वैरिशल्य के चरित्र में मंडोउर के स्वामी राठौड़ों के राजा जोधा के सूर्यमल्ल आदि बारह औरस पुत्रों का जन्म होना, उन उनके नाम की पदवी से उनके कुल के भेद प्रकट होना तथा आमेर के नरेन्द्र चन्द्रसेन के पुत्र कछवाहे पृथ्वीराज के कुल को धारण करने वाले भारमल्ल आदि बारह औरस पुत्रों का होना, चित्तौड़ के पति सिसोदिया राणा मोकल को पासवानिये काका चाचा और मेरा का बागोरपुर में विश्वासघात से मारना, उसका पाट पाकर कुम्भिलमेर गढ़ बनाकर रायमल्ल पुत्र को उत्पन्न करने वाले मोकल के पुत्र राणा कुम्भकर्ण की वीरता और उदारता की प्रशंसा करना, राजधानी मांडूपुर से आकर बूँदी और चित्तौड़ की विरुद्धता के कारण प्रतिकूल हुए युद्ध करने की इच्छा वाले मालवा के पति बादशाह बाजबहादुर का बूँदी घेरना, दूरबीन से गायों के समूह का वध देखने के कारण तोपों के युद्ध को छोड़कर तीन कुमारों का सहायतार्थ आना जानकर चौथे पुत्र को पाट के योग्य करके शहर के द्वार के किवाड़ खुलाकर हड्डाधिराज वैरिशल्य का सूचना किये हुए सम्वत् के समय में अमुक्त अर्थात् तलवार से शत्रुसैन्य के साथ युद्ध करना, अपने घोड़े की गर्दन को घेरने वाले बादशाह के हाथी की सूँड को काटकर दूसरे हाथी पर चढ़े हुए म्लेच्छ के टोप को राजा का खड्ग से काटना, हाथी के सवार बादशाह के दो प्रबल बाणों को सहने वाले हड्डाधिराज के घोड़े को किसी म्लेच्छ का मारना।

पद्गीभूतनरेन्द्रखड्ग प्रहारसतुरङ्गतत्प्रतिघातन जाबदु निज-निपातितयवनान्तरसप्तिस्वस्वामिसमर्पण तत्तुरगारूढसंहतससप्तियवनयुग्म बुन्दीशमस्तकयवनानन्तरद्वय खड्गयुग प्रत्प्रहारचतुर्धा विभजन वस्त्रबद्धस्वशीर्षहड्डेशस्वप्रहारकक मालाख्यप्रोज्जासन प्रमथितद्वितीय प्रहारक निम्मदेव सस्कन्धत्राणसायुष्कम्लेच्छराजांसविदारण हुसैननाम यवनमूर्छितवाजिपतितोत्थितयुध्यमानमहीपकन्धराकर्तन जाबदु परासूकृततन्म्लेच्छपूर्वकर्तितसङ्कुलावमर्दमर्दितमहीश मूर्द्धभागचतुष्क

पृथक्पृथग्विशरण घटिकाद्वय मण्डिता वमर्दनिपातितैकपंचाश त्पारिपन्थिकराजरुण्डकरचरणा दिप्रतीकशकलीभवन संहृतपंचदश सप्तदश सपत्तनदुस्सह प्रघातजर्जरिताङ्गसायुष्कजावदु निम्मदेव रङ्गपतन समाना द्युब्दुल्करीमा दिशतषद् क सहस्त्र सम्मिताऽऽर्य म्लेच्छ शूरशय्याशयन पौरजनगूढगृहानीतजावदू निम्मदेव क्षतपूर्त्तिहितो-पचारप्रवर्तन त्रोटि ताररपुरप्रविष्टयवनानीकबुन्दीविप्लवविस्तरण दृष्टतदुपद्रवशु द्धान्तद्वारस्थापितविश्वस्तसामन्त भट स्वशिशुवर्गशुद्धान्तजन नेत्रनगरप्रस्थापनप्रारम्भणं षोडशो मयूखः ॥१६॥ आदितस्त्रिषष्ट्युत्तरैकश-ततमः ॥१६३॥

पैदल हुए राजा का खड्ग के प्रहार से घोड़े सहित उसको मारना। अपने मारे हुए किसी यवन के घोड़े को जावदू का अपने स्वामी को देना, उस घोड़े पर चढ़कर घोड़े सहित दो यवनों को संहार करने वाले बूँदीश के मस्तक का किन्हीं दो यवनों के एक साथ खड्ग के प्रहार से चार भाग होना, वस्त्र से अपने मस्तक को बाँधकर हड्डेश का अपने ऊपर प्रहार करने वाले कमाल नामक म्लेच्छ को मारना, दूसरे प्रहार करने वाले को मारकर निम्मदेव का कन्धत्राण सहित आयुष्यवाले बादशाह के कन्धे को काटना, हुसैन नामक यवन का मूर्छित होकर घोड़े से पड़कर उठे हुए युद्ध करने वाले राजा की गर्दन को काटना, जावदू से मारे हुए उस म्लेच्छ के पहले काटे हुए और अवकाशरहित युद्ध में मर्दित राजा के मस्तक के चारों भागों का जुदा जुदा बिखरना, दो घड़ी तक युद्ध रच कर इक्यावन शत्रुओं को मारकर राजा के धड़ के हाथ पैर रूप से अंगों का टुकड़े टुकड़े होना, पंद्रह और सत्रह शत्रुओं को मारकर दुःसह प्रहारों से जर्जर अंग होकर आयुष्य वाले जावदू और निम्मदेव का युद्ध में पड़ना, रूप से आदि छह सौ आर्य और अब्दुलकरीम आदि हजार यवनों का काम आना, पुर के लोगों का जावदू और निम्मदेव को तहखाने में लाकर घावों की पूर्ति के इलाज में लगना, किंवाड़ तोड़कर पुर में घुसी हुई यवन सेना का बूँदी में लूट फैलाना, इस उपद्रव को देखकर जनानी ड्योढी पर रखे हुए विश्वास वाले उमराव और वीरों का अपने बालकों के समूह सहित जनाने लोगों को नैणवा नगर में स्थापित करने के प्रारम्भ का सोलहवाँ मयूख समाप्त हुआ। और आदि से एक सौ तिरसठ मयूख समाप्त हुए।

प्रायो ब्रजदेशीय प्राकृत मिश्रित भाषा

पादाकुलकम्

सारन सेव उभय जाबदु सुत, जैत्रसिंह गैनोलीपति जुत।
अनुज तास नवब्रह्म बीर इम, तोग हु निम्मदेव नंदन तिम॥१॥
भ्रात बिजय नवरंग बंसभव, बलि हप्प रु डुंगर कुल बंधव।
निज ही जात सकैं न निहारिहु, रुद्र कृतांत प्रचारैं रारिहु॥२॥

हाड़ा जावदू के दोनों पुत्र सारण और सेव के साथ गैनोली का स्वामी जैत्रसिंह भी राजा बैरीसाल के योद्धाओं में था। इनके अतिरिक्त जैत्रसिंह का छोटा भाई नवब्रह्म हाड़ा और निम्मदेव का पुत्र तोग भी शामिल थे। तोग के चचेरे भाई विजयसिंह जो नवरंग हाड़ा का पुत्र था सहित हापा और डूंगरसिंह जैसे कुल बांधव थे। अपनी जाति और कुल की लज्जा को सहन नहीं कर सकते थे इसके लिए वे रौद्र रूप धर कर यमराज से भिड़ जाने वाले थे।

पहुचैं जे भूपति अंतहपुर, धरे भ्रात ऐसे प्रकोष्ट धुर।
निज कुमार एक हु आयो नन, मोरयो इम त्रिक तैंहिं भूप मन॥३॥
थिर बिस्वस्त सुभट कति थप्पिय, अंतहपुर रच्छा जिन्ह अप्पिय।
गिनियत तेहु सुनहु सह परिग्रह, सुंदरदास गोर गिरधर सह॥४॥
धीर कबंध कुम्म बंसीधर, सल्ह प्रमार त्रिबिक्रम सैंगर।
चापोत्कट देव रु हरि चालुक, कलह सबहि पलचरन कृपालुक॥५॥

यदि शत्रुदल राजा के अंत:पुर में प्रविष्ट होने लगे तो ड्योढी पर रक्षा के लिए उपरोक्त सारे योद्धा तैनात थे वे उनसे युद्ध करते। युद्ध में जाते समय राजा बैरीसाल के साथ उसके बड़े तीनों पुत्रों में से एक भी उनके साथ नहीं आया इसलिए राजा ने अपने इन तीनों पुत्रों से मन फिरा लिया। इन तीनों को छोड़कर जो राजा के विश्वासपात्र योद्धा थे राजा ने उन्हें अंत:पुर की रक्षा का भार सोंपा हे राजा रामसिंह! मैं उनके नाम गिनवाता हूँ। पूरे आदर के साथ आप सुने! उनमें सुन्दरदास, गिरधर गौड़, राठौड़ धीरदेव, कछवाहा बंशीधर, प्रमार सल्ह, सैंगर त्रिविक्रम, चावड़ा देवीसिंह, चालुक्य हरिसिंह जैसे आठ राजा के सामन्त थे जो माँसाहारी जानवरों पर कृपा करने वाले थे अर्थात् जो युद्ध में शत्रुओं के माँस से इन प्राणियों की क्षुधा शान्त करने वाले वीर थे।

षट्पात्

अट्ठ बंधु भट अट्ठ जत्थ कति सहंस चमूं जुत।
पहु अवरोध प्रकोष्ट रक्खि फुल्लत सिंधुन रुत।
कहि इम बाहिर कढिय परैं जो हम तो तुम पट्ठु।
नारिन सिसुन निकासि कुसलजिमि जाहुपिक्खि कट्ठु।
सुहि हुव नरेस तिलतिल समर पारि जवन घन झरि पर्य्यो।
जवनेस सेस दल लहि बिजय सजि पुर लुट्टन संचर्य्यो॥६॥

आठ बांधव और आठ सामन्तों के साथ सेना का एक दल भी राजा ने अपनी जनाना ड्योढी पर शत्रु अवरोधक के रूप में तैनात किया था। यहाँ तैनात सारे योद्धा सिंधुराग के एक एक बोल पर रीझने वाले थे अर्थात् साहसी और रणरसिक वीर थे। उनसे राजा ने कहा कि हम जो दुर्ग से निकल कर युद्ध करने जा रहे हैं यदि रणभूमि में मारे जाएँ तो तुम पूरी सावधानी से स्त्रियों, बच्चों को सकुशल यहाँ से निकाल कर सुरक्षित ले जाना। वही हुआ। युद्ध में राजा वैरीसाल शत्रुओं को मारता हुआ तिल-तिल हो कर कट मरा और विजय प्राप्त कर शत्रुओं का दल अब शहर लूटने को तत्पर हुआ।

पुर खल करत प्रबेसि बिक्खि सारन मुख बांधव।
सुंदर आदिक सुभट जानि बहु बिघ्न बडे जव।
दलहिं ·पुब्ब दौराइ जैतगढ सरनि जमायउ।
तारागढ सन तियन निकर ध्रुवदिस निकसायउ।
जंहं सबन मध्य रानी जुगल हुव प्रामारिय दाहरिय।
अर्भक छ जुत्त चल्लिय उभय निखिल बेढ मिज नाहरिय॥७॥

शत्रुदल को नगर में प्रविष्ट होते हाड़ा सारण आदि बांधवों ने देखा। इसी तरह सुन्दरदास जैसे सामन्तों ने इस बड़े विघ्न को आते देखा तो शीघ्रता से अपने दल के सैनिकों को जैतगढ़ के मार्ग पर दौड़ा कर सुरक्षा की व्यवस्था करवाई फिर तारागढ़ दुर्ग से स्त्रियों और शिशुओं के समूह को उतर दिशा वाले द्वार से निकाला। इस समूह के मध्य में दोनों रानियों (प्रमार रानी और दाहड़ रानी) को रखा। ये रानियाँ अपने छह बच्चों को घेर कर यों चल रही थीं जैसे शेरनी अपने बच्चों को घेर कर चलती है।

सिसु सुभांड अरु सौंड सहज नव समबय सोदर।
क्रम लघु लोहठ कर्मचन्द्र सिसु तेहु सहोदर।
प्रामारी भव पृथुक स्याम स्यामा इन्ह बय सम।
ए चउ धात्रिन अंक चले सहसा भय चंक्रम।
यह सुनत मिच्छ लगि पिट्ठि अर सोधत हुव रजनी समय।
बिधि लिखित कोन टारन प्रबल आयति पर अय वा अनय ॥८ ॥

इस समूह में सुभांडदेव और सोंडदेव दोनों कुमार जिनकी उम्र उस समय लगभग आठ नौ वर्ष की होगी के साथ उनसे छोटे भाई लोहठ और कर्मचन्द्र भी थे। इन्हीं कुमारों के समवयस्क प्रमार रानी से उत्पन्न बालक श्याम और श्यामा भी इस दल में थे। लोहठ, कर्मचन्द्र, श्याम और श्यामा इन चारों बालकों को धात्रियों (धाय माँ) ने उठा रखा था जो भय से इधर-उधर देख कर चल रही थी। इस बात का पता चलते ही यवनों ने इनको ढूँढ़ने के बहुत प्रयत्न किये पर रात का समय था इसलिए नजर नहीं आये। विधाता के लिखे हुए लेख से कल्याण और अकल्याण को कौन टाल सकता है ?

बहुल नृजानन बैठि गूढ निकसन बनी न गति।
हेषा के भय न हय संग इक्क हु किम संहति।
ओरहु प्रबहन अखिल हत्थि आदिक परबस हुव।
यातैं सब अवरोध भजिग पायन परसत भुव।
दीपन प्रकास नैंकन दुरैं छपा तिमिर निकसे छिपन।
निज गम्य मन्नि अंबकनगर जान लगे गिरिमग्ग जन ॥९ ॥

क्योंकि बड़ी पालकियों में बैठ कर चुपचाप निकलना संभव नहीं था। यह दल हींसने के डर से कोई घोड़ा भी साथ नहीं ले सकता था फिर पूरा समूह था जिसके लिए कई घोड़े होते तो आवाज होती। आवागमन के दूसरे साधनों में हाथी हो सकते थे पर वे सभी शत्रुओं के कब्जे में थे। इसलिए जनाने की सारी स्त्रियाँ पाँवों से भूमि का स्पर्श करती पैदल-पैदल भागीं। दीपक का प्रकाश करना तो खतरे को आमंत्रित करना था इसलिए वे रात्रि के अंधेरे में छिप कर निकलने को विवश थीं। यह पूरा दल पर्वतीय मार्ग से अपनी मंजिल नैणवा नगर को जाने लगा।

कुमर स्याम स्यामा कनी, इन सह धाइ उभै हि।
रयहत डुलि पीछैं रहत, भो तिन्ह आगि सु भै हि।
भै सु तिन्हैं आनि गढ अद्रि मध्यहि भयो।
लघत इत उत फिरत भेद जवनन लयो।
भेद अनुसार पहुँचे रु अतिद्रोहभरि।
पोत धात्रिन सहित द्वै हि आनैं पकरि॥१०॥

कुमार श्याम और कुमारी श्यामा ये दोनों धात्रियों की गोद में थे। वे धात्रियाँ दल के साथ उनकी गति से न चल पाने के कारण पीछे रह गईं और रास्ता भूल गईं। भय ने उन्हें पर्वतों के मध्य गढ़ जैसी सुरक्षा प्रदान करने का अहसास जगाया। इसी समय इस दल को इधर-उधर ढूँढ़ते हुए यवनों को उनके वहाँ होने का भेद मिल गया। सूचना के अनुसार वे द्रोह से भरे यवन वहाँ आ पहुँचे। आते ही उन्होंने दोनों बालकों सहित धात्रियों को भी पकड़ लिया।

कहन लगी ते करि कपट, बनिकन के ए बाल।
तदपि लये पहिचान तिन्ह भोग्य नियत लिपिभाल।
भाग्यलिपि भोग्य न मिटैं सु बेदहु भनैं।
बेस नृप सिसुन किम ओर कहतहिं बनैं।
स्याम स्यामा पकरि लुट्टि पथ सेस कों।
जाइ रोवत दये द्वै हि जवनेस कों॥११॥

पकड़ते समय उन धात्रियों ने झूठ बोलते हुए कहा कि आप लोगों को धोखा हुआ है ये बालक तो बनियों के हैं जिन्हें आप लोग ढूँढ रहे हो ये बालक वे नहीं है। फिर भी भाग्य के उल्टे लेख के आधार पर उन्होंने बालकों को पहचान लिया। भाग्य का लिखा भोगना ही पड़ता है वह किसी तरह टल नहीं सकता ऐसी बात वेद भी कहते हैं। असल में राजकुमारों का वेष ही उनका शत्रु बन गया। यवनों ने कुमार श्याम और कुमारी श्यामा को पकड़ कर शेष साथ वालों को लूट लिया। फिर उन्होंने उन दोनों रोते हुए बालकों को ले जा कर यवनेश को सौंप दिया।

जंहं कटकहिं सुद्धांतजन, मिले भटनजुत मग्ग।
सोधन तंहं लग्गे सबन, उत्तरि घंटिय अग्ग।
त्वरित गति लंघि निज अद्रिघंटिय तहां।
जुरति मधि संघि बिजुबद्रि अंटिय जहां।
चक्रबिच लै सबन बाहनन चढाये।
पाक दुव तेहि तंहं रंकनिधि न पाये॥१२॥

जहाँ जनाना दल को अपने सामन्तों सहित जाते हुए राह में आगे उनके अपने योद्धा मिलेंगे इस उम्मीद में दल पहाड़ की घाटी लाँघ कर आगे गया और सभी उन्हें ढूँढ़ने लगे। अपनी ओर के पहाड़ की घाटी को लाँघते हुए वे वहाँ पहुँचे। जहां झाड़-झंखाड़ के मध्य वांछित समूह रुका हुआ था। सामने आए दल ने इन सदस्यों को सुरक्षा की दृष्टि से अपने मध्य ले कर सभी को उन्होंने वाहनों पर सवार किया। इसी समय उन्हें पता चला कि दोनों बालक (श्याम और श्यामा) रंक के धन की तरह वहाँ नहीं हैं।

प्रचुर दीपिका जोरि पुनि, हारे जिततित हेरि।
पै न लखे ते दुव पृथुक, टिके छिनक तिन्ह टेरि।
टेरि कछु काल तंहं बीरपंच हि टरे।
कटक सह नैनपुर सेस चलते करे।
देखि प्रामारि दुख भ्रात सहजात दुव।
सोधि बे सिसु न लग्गे मुरन भूप सुव॥१३॥

मसालें आदि जला कर उनकी रोशनी में यहाँ वहाँ ढूँढ़ते हुए वे हार गए पर वे दोनों बालक उन्हें कहीं नहीं मिले। थोड़ी देर उन्होंने राह में रुक कर कई बार उन बालकों को आवाज लगाई पर वे अधिक समय वहाँ व्यर्थ जाया नहीं कर सकते थे इसलिए अपने दल सहित शेष लोग तो नैणवा नगर के लिए चल पड़े पर पीछे पाँच वीर सेवकों को उन्हें ढूँढने के लिए छोड़ गए। दोनों जुड़वा बालकों श्याम और श्यामा के नहीं मिलने से व्याकुल प्रमार रानी के दुःख को देख कर उन दोनों बच्चों को ढूँढ़ने के लिए राजा के दो पुत्र भी मुड़ कर वहाँ उन्हें ढूँढ़ने आए।

षट्पात्

सहज सुभांड रु सोंड अनखि हेरन मुरि आवत।
निट्टिन भटन निहोरि लये गहि संग लजावत।
सह अवरोध निसीथ ग्राम दुबलान चमू गय।
इत भट पंचक कियउ पिक्खि तारागढ पब्बय।
कुमरी कुमार पाये कहुंन सुनि उदंत पुनि भूत सब।
गतनक्क जानि मिच्छन ग्रसन तिन चिंतिय रतिबास तब॥१४॥

कुमार सुभांडदेव और सोंडदेव दोनों भाई उन बच्चों को ढूँढ़ने के लिए मुड़ कर आए। पहले राजा के सामन्तों ने उन्हें नहीं जाने के लिए मनाया पर जब दोनों कुमार नहीं माने तो वे लजाते हुए उनके साथ आए। शेष दल इन अड़चनों को भोगता हुआ आधी रात के समय दुबलान गाँव पहुँचा। उधर पाँच योद्धाओं का पंचक तारागढ़ दुर्ग के पहाड़ पर बालकों को ढूँढ़ने पहुँचा पर कुमार श्याम और कुमारी श्यामा दोनों कहीं नहीं मिले पर उन्हें वह वृत्तान्त सुनने को मिल गया जो घटित हुआ था अर्थात् बच्चों को कौन पकड़ कर ले गया था। यह सुनते ही अपना नाक कट गया जान कर उन पाँचों योद्धाओं ने आपस में मंत्रणा की कि इन म्लेच्छों को मारने के लिए रात्रि के समय चुपचाप धावा बोला जाए।

कर्पूरकम् उल्लालइत्येके

जाबदु तंनूज सारन जई, लाल तनय नवब्रह्म लहु।
रट्ठोरधीर चालुक हरि रु, सहित त्रिबिक्रम सैंगरहु॥१५॥
पंच हि बिचारि रतिवाह पटु, प्रबल जाइ इततैं परे।
उततैं कुमार उद्दल अनखि, कन कन रन जवनन करे॥१६॥

इन पाँच योद्धाओं में हाड़ा जावदू के विजयी पुत्र सारण के साथ लालसिंह हाड़ा का पुत्र नवब्रह्म था। दोनों के अतिरिक्त राठौड़ धीरदेव, हरिसिंह चालुक्य और त्रिविक्रम सेंगर थे। इन पाँचों योद्धाओं ने रात्रि को धावा करने की सोची और योजना को कार्यान्वित करने के लिए वे वीर एक ओर को गए। उधर से कुमार ऊदल (उदयसिंह) ने कुपित हो कर यवन सेना पर टूट पड़ कर यवनों को आकस्मिक धावे से कण-कण का करने का

निश्चय किया अर्थात् उन्हें बिखेर देने की सोची।

दोहा

काम जनक आयो कलह, उदयसिंह सुनि एह।
पिप्पलदा सन सज्जि पुनि, आयो रजनि अनेह॥१७॥

जानि कढे अवरोध जन, पठयो चर तिन्ह पास।
पंथ मिल्यो भट पंचक हिं, सिव केदार निवास॥१८॥

जंपिय तिन अवरोध सन, इत पठये दुबलान।
पै स्याम रु स्यामा पकरि, मिच्छन लिय सहमान॥१९॥

मांडूपति के विरुद्ध युद्ध लड़ते हुए अपने पिता के मारे जाने का समाचार जब उनके पुत्र उदयसिंह ने सुना तो वह पिप्पलदा से सज्जित हो कर रात्रि के समय आया। उसने जनाना दल के दुर्ग से निकल जाने की खबर सुनी तो उसने अपना एक दूत उनके पास नैणवानगर भेजा। इस दूत को वहाँ जाते हुए रास्ते में केदारनाथ नामक शिव मंदिर पर पाँचों योद्धाओं का पंचक मिला। उन्होंने इसे बताया कि जनाना दल को दुबलाना गाँव में भेज दिया गया है पर कुमार श्याम और श्यामा कुमारी दोनों बालकों को यवनों ने पकड़ लिया है।

षट्पात्

कहिय दूत पंचक हिं उदय कुमरहु खिजि आवत।
तासों मिलि सब तुमहु परहु निद्रित खल पावत।
सुनि यह दूतहिं संग मोरि लाये सारन सुख।
मिलि उद्दल सन मग्ग दुसह तिन चविय भूत दुख।
कुप्यो सु सुनत सोदर कुगति पावक जनु बारूद परि।
तुरकन अनीक उप्पर अतुल कियउ हल्ल हरि सक्खि करि॥२०॥

दूत ने योद्धाओं के पंचक से कहा कि कुमार उदयसिंह भी खीझ से भरा इधर आया है। आप लोगों को उससे मिलना चाहिए और फिर आप सभी को मिल कर सोते हुए यवन शत्रुओं पर पिल पड़ना चाहिए। दूत से ऐसा सुनते ही हाड़ा सारण गया और उदयसिंह को मोड़ लाया। सारण ने रास्ते में उदयसिंह से इन दिनों पड़ी विपदा का पूरा वृत्तान्त कह सुनाया। यह

सुनते ही उदयसिंह को क्रोध आ गया कि उसके सहोदरों की क्या दुर्गति हुई। वह बारूद में चिनगारी पड़ने की तरह रोष में फूट पड़ा। उसने तुरन्त यवन सेना को ललकारते हुए विष्णु भगवान को साक्षी बना कर आक्रमण किया।

बलि सारन नवब्रह्म बीर हरि धीर त्रिबिक्रम।
सजिसजि निजनिज सत्थ सद्धि पंचन सह संक्रम।
बजत बिनायकबाग जत्थ जवनेस बिजैजुत।
सोवत निर्भय सिबिर दाव तापर लगाइ द्रुत।
पटके तुरंग हड्डुन प्रथित रयनि अद्ध जात रु रहत।
चलबिचल किन्न मिच्छन चमू मिल्यो पैन इच्छित महत॥२१॥

उसके साथ ही हाड़ा सारण, नवब्रह्म, राठौड़ धीरदेव, हरिसिंह चालुक्य और सैगर त्रिविक्रम का पंचम भी सज्जित हुआ और सबने मिल कर एक साथ हमला बोला। अभी यवनों की विजयी सेना विनायक बाग में डेरा डाले थी और वहाँ सारे सैनिक आराम से सो रहे थे। बूँदी पक्ष के इन वीरों ने ठीक आधी रात के समय तेज गति से अपने घोड़े बढ़ाते हुए आक्रमण किया। इससे म्लेच्छों की सेना में भगदड़ मच गई पर उनको अपनी इच्छित वस्तु नहीं मिल पाई अर्थात् वे बालक नहीं मिले।

बाजबहादुर बाल बखसि अभिमत बहिकाये।
हिय लगाइ करि हेत सयन निज ढिगहि सुवाये।
बाह रचिग रतिवाह आय हड्डुन हिं अंतर।
जनु कलबिंकन जात पात किय स्येन घात पर।
सारन बजीर मार्‌यो सहज उद्दकुमर रोसनअली।
नवब्रह्म हन्यों तूसीन जब बलि हरि कम्मन काबली॥२२॥

बाज बहादुर ने उन बालकों को बहलाने के लिए उनकी इच्छानुसार चीजें दिलवाई। उसने उन्हें अपने हृदय से लगाया, स्नेह किया और अपने पास ही उन्हें सुलाया। इसी बीच अर्द्धरात्रि के समय हाड़ाओं ने अचानक धावा बोला और वे यवन सेना पर इस प्रकार टूट पड़े जैसे चिड़ियों के समूह पर सिकरा (बाज) पक्षी झपटता है। सारण हाड़ा ने घुसते ही वजीर को मार गिराया और कुमार उदयसिंह ने रोशनअली का काम तमाम किया। तूसीन

न्धां को नवब्रह्म ने मारा उतनी ही देर में हरिसिंह ने कम्मनखां और काबली गां को मौत के घाट उतार दिया।

ए चउ गिरत अमीर प्रहत सत्रुन छुट्टे पग।
निम्म घाय नतखंध साह लग्गिय मंडुव मग।
तजेन दुव सिसु तदपि खास गज तिन्ह चढाइ खल।
बट उब्बट भजि बेग निट्टि मालव लिय निर्बल।
हनि नृपहि तास भुव भोग हित दुजनन झंडे गड्डि दिय।
भिरि तत्थ उदय सारन प्रभृति लहि जय बुंदिय रक्खि लिय ॥२३॥

यवनों के चार मुख्य सामन्त जब मारे गए तो शत्रुओं के पाँव डिग गए निम्मदेव के प्रहार से टूटे हुए कंधे को संभालते हुए यवनपति बाज बहादुर ने मांडू का रास्ता लिया। फिर भी उसने उन दोनों बालकों को नहीं छोड़ा उस दुष्ट ने उन्हें भी अपनी सवारी के खास हाथी पर चढ़वाया और शीघ्र ही उबड़-खाबड़ रास्तों पर हिचकोले खाते हुए मालवा नजदीक लिया। जिन आततइयों ने राजा वैरीसाल को मार कर उनकी भूमिपर अपने झंडे गाड़ दिए थे उन्हीं से भिड़ कर उदयसिंह और सारण आदि हाड़ाओं ने बूँदी को विजय करवा दी। उन्होंने पराये हाथों में गई हुई बूँदी को वापस घर में रख लिया।

दोहा

कुमरउदय उनमत्त क्रम, घले निसीथ सु घत्त।
जननी जुग बंदन बिनुहि, पिप्पलदा पुनि पत्त ॥२४॥

सिसु निग्रह जाबदु सुन्यों, हो पुर में जंहं हाय।
असु छोरे उट्ठत अनखि, घट फट्टे सब घाय ॥२५॥

अप्पन दल दुबलान इत, जवन पलायित जानि।
तजि अबंकपुर गमन तब, महा कुसल लिय मानि ॥२६॥

पै गिनि जयसु पराजयहि, निग्रह सिसुन निदान।
अंतहपुर आन्यों अखिल, बुंद्रिय जतन बिधान ॥२७॥

उन्मत्त कुमार उदयसिंह ने रात्रि के समय अचानक घात लगा कर हमला बोला और शत्रुओं को भगाया पर वह अपनी दोनों माताओं को प्रणाम

किये बिना ही वापस अपने नगर पिप्पलदा चला गया। बच्चों को पकड़ लेने की बात जब स्वास्थ्य लाभ लेते जावदू ने सुनी तो वह जोश खा कर अपनी शय्या से उठ खड़ा हुआ। जोश के इस उफान से उसके अधसिले घाव वापस फट पड़े और उसने देह त्याग दी। इधर दुबलाना गाँव में हाड़ाओं के शेष दल ने जब यह सुना कि शत्रु भाग खड़े हुए तो उन्होंने नैणवा नगर जाना स्थगित किया और वापस कुशलतापूर्वक बूँदी की राह ली। बालकों को पकड़ कर ले जाने के कारण यह हाड़ाओं के लिए पराजय जैसी ही थी। उत्साह की ठौर मन मसोस कर जनाना दल को बूँदी ले आया गया और वह भी पूर्ण रूपेण सुरक्षित ढंग से।

कर्पूरकम उल्ललइत्येके

बुंदीस पट्टरानी बिकल, प्रामारी अनसन पकरि।
इम तजियदेह सबलघु उभय, कीलित और सध्यान करि ॥२८॥

अपनी कोख से उत्पन्न दो लाडलों को यवनों द्वारा पकड़ कर ले जाने के सदमे से बूँदी की प्रमार रानी ने अन्न-जल का त्याग कर दिया और अन्ततः अपने बच्चों को झुरते हुए थोड़े ही समय में परलोक सिधार गई।

दोहा

निंदि मरत प्रामारि निज, जेठे त्रय तनुजात।
भूप सोति सुतही भन्यों, बर सुभांड बिख्यात ॥२९॥

सघन कह्यो याकेहि सय, निज मृतिकृत्य निसेस।
मनि हाटक भू गज प्रमुख, बिप्रन बितरि बिसेस ॥३०॥

प्रमार रानी ने मरते समय अपने तीनों औरस बड़े पुत्रों की, निंदा की वहीं पर राजा की दूसरी रानी और अपनी सौतन के पुत्र सुभांड देव को राजा का उत्तराधिकारी बनाने की अनुशंसा करते हुए उसकी प्रशंसा की। उसने अपनी अंतिम इच्छा प्रदर्शित करते हुए कहा कि मेरे मरने पर सारे प्रेतकर्म इसी सुभांडदेव के हाथों संपन्न करवाए जाएँ। सुभांडदेव ने वैसा ही किया और इस अवसर पर ब्राह्मणों को हाथी, स्वर्ण, मोती और जागीर का दान पुण्य किया।

हुव सारन अरु धीर हरि, जुज्झत घायल जंग।
तातैं जाबदु कृत्य तिम, सद्धिय सेव सअंग ॥३१॥

निम्म सहित इत घायलन, उचित ठानि उपचार।
क्रम सत्वर पाटव कियउ, आगमबिधि अनुसार॥३२॥

प्रजा पलायित बुल्लि पुनि, सचिवन भटन समान।
दै बिसवास बसाइ दिय, थिर अप्पिय सुखथान॥३३॥

मरन कढत बुंदिय महिप, भन्यों सुभांड हिं भूप।
पै जनकहि मृत सुनत पुनि, उदय लरयो अनुरूप॥३४॥

रात्रि के आक्रमण में हुई झड़प में हाड़ा सारण, राठौड़ धीरदेव, चालुक्य हरिसिंह बुरी तरह घायल हो गए थे इसलिए जावदू का अंतिम संस्कार और प्रेत कार्य सभी कुमार सेव ने संपादित किये। इधर दुर्ग में निम्मदेव सहित दूसरे सारे घायलों का उचित उपचार किया गया। वैद्यों ने अपने ग्रंथों में बताई गई विधियों से सभी को शीघ्र ही स्वस्थ किया। म्लेच्छ सेना के आक्रमण से त्रस्त हो कर बूँदी की प्रजा जो पलायन कर गई थी उसे वापस बुलवाया गया और अपने सामन्तों और सचिवों को उतने ही अधिकार दिये गए। विश्वास दिलाकर सुखपूर्वक सभी का पुनर्वास किया गया। राजा वैरीसाल तारागढ़ दुर्ग से युद्ध में मरने को निकला तब उसने हिदायत दी थी कि सुभांडदेव को मेरे बाद राजा बनाना पर जब कुमार उदयसिंह को पिता की मृत्यु के समाचार मिले तो वह अपने नाम के अनुरूप (युद्ध में लड़ने का उदय कर) लड़ा।

भारमल्ल सिसु राज्य भर, निबहै समय सु नांहिं।
मन्त्र्यों जो नृप मंतु सो, उदय में न अब आंहिं॥३५॥

यह बिचारि बुल्ल्यो उदय, पै बय जाड्य प्रमत्त।
नीच जनन निरत सु नट्यो, बदि जंजाल सु बत्त॥३६॥

आकारन सुनि उदय को, अक्खयराज हु एह।
गह्यि चाहि गुरुत्व गिनि, आयउ कृत्य अनेह॥३७॥

ताहि गोरि चुंड हिं तरजि, उदय नट्यो आलोचि।
किय प्रमान निजप्रभु कथित, समय देस गति सोचि॥३८॥

सामन्तों और सचिवों ने राय दी कि भारमल (सुभांडदेव का अवर नाम) अभी बाल्यावस्था में है इसलिए राज्यभार को अच्छी तरह उठाने में सक्षम नहीं और फिर राजा के साथ युद्ध में साथ नहीं जाने का जो दोष उदयसिंह पर लगा था उसे उसने राजा की मृत्यु के बाद युद्ध करके धो दिया

है। इस मंत्रणा के बाद उदयसिंह को राज्यारूढ़ होने के लिए आमंत्रण भेजा पर वह नीच और ओछे व्यक्तियों की संगत में रहने के कारण नहीं आया। उसने यह कह कर इस प्रस्ताव को नहीं माना कि वह राज-काज के झंझटों में नहीं पड़ना चाहता। उदयसिंह को राजा का उत्तराधिकारी बनने के लिए बुलाये जाने की बात सुन कर अक्षयराज वहाँ राजा के अंतिम संस्कार के वक्त आ गया और कहने लगा कि पाटवी होने के कारण से गद्दी का हकदार मैं हूँ। यह सुन कर उसे चूंडा ने डाँटा और चूंकि अच्छी तरह विचार कर उदयसिंह ने भी इस प्रस्ताव को अस्वीकार कर दिया था यह देख कर उसने अपने स्वामी (स्व. राजा) के कथन को पूरा करने के लिए देश और काल की उपयुक्तता पर विचार किया।

खेतहिं हारे खोजि पै, नृपबपु पायउ नांहिं।
लगे होन सम रुंड लखि, मत बहु पंचन मांहिं॥३९॥

इधर राजा के सेवक जब रणभूमि में राजा वैरीसाल की मृत देह ढूँढ़ने को गए तब उन्हें वह नहीं मिली। कुछ कटे हुए रूँड वहाँ अवश्य थे पर वे सभी एक जैसे दिखते थे इसलिए उन लोगों (पंचों) के मत अलग-अलग हो गए। अर्थात् कोई कहता यह है, तभी दूसरा बोल पड़ता यह नहीं, ऐसा मतभेद हो गया।

षट्पात्

निम्मदेव नृप अनुज पत्यो घायल प्रासादहि।
जिहिं झंझट यह जानि कुणप खोजिन पठई कहि।
नृप कमाल तंहं हनिय मैं हु नूर सु जंहं मारिय।
जंहं प्रकुप्पि जाबदुव कवल कंकन हुसैन किय।
जवनेस हत्थि कर अग्ग जंहं पिक्खहु नृप कर्तित पत्यो।
मिच्छपति अंस कट्टि रु हमहु कलह जत्थ अद्भुत कत्यो॥४०॥

राजा का छोटा भाई निम्मदेव इन दिनों घायलावस्था के कारण महलों में उपचाराधीन था। उसे जब इस झंझट का पता चला कि भाई की मृत देह को खोजने में कठिनाई आ रही है तो उसने राजा के अनुचर सैनिकों से कहा कि जिस स्थान पर राजा ने कमाल खां को और मैंने नूर खां को मारा था। रणभूमि में जिस जगह जावदू ने हुसैन खान को कंक पक्षियों का ग्रास बनाया। जहाँ पर यवनेश बाज बहादुर के हाथी की सूँड कटी उसी स्थान पर

अच्छी तरह देखना कटा हुआ राजा का शरीर पड़ा होगा। यह वही स्थान है जहाँ पर मैंने अपनी तलवार से अद्भुत युद्ध करते हुए बादशाह का कंधा काटा था।

दोहा

जंहं समान मैं जाबदुव, परे लखे तुम पास।
हमतैं दिस दक्खिन ढिगहि, आजि तुमुल तंहं आस॥४१॥

जिस स्थल पर मैं, मानसिंह और जावदू तुम्हें घायलावस्था में पड़े मिले। उस ठौर से दक्षिण दिशा में पास ही जहाँ घमासान युद्ध हुआ था वहां खोजना।

षट्पात्

फट्टिय सिर चो फार तेग द्वै परि नृप को तंहं।
पुनि हुसैन असि पाइ जोहु खुलि खंड पर्‍यो जंहं।
मस्तकरहित मुहूर्त भिरत कर पय पुनि भग्गे।
ढर्‍यो बिकसि ढब्बुरहु लोह अगनित तस लग्गे।
कर पय कटे रु सिर के सकल चतुर तत्थ पहिचानि कैं।
करि निचित दाह तिनको करहु पहु सुभांड लहु पानि कैं॥४२॥

वहाँ जाकर अच्छी तरह देखना तलवार के दो प्रहारों से चार भागों में विरक्त राजा का कटा हुआ मस्तक मिलेगा जिसे हुसैन खान ने अपनी तलवार से काटा था। मस्तक कट जाने के बाद भी दो घड़ी तक राजा के कबंध ने युद्ध किया। इसी समय उसके हाथ, पाँव भी काट डाले गए। अनेकानेक घाव लगने के बाद शेष रह गया बिना हाथ पाँव और सिर वाला धड़ वहाँ मिलेगा। इस तरह तुम लोग राजा के सारे कटे अवयवों को मेरी बताई जगह पर ढूँढ़ते हुए पहचान कर लाना। पहले अच्छी तरह निश्चित कर लेना कि ये अंग राजा ही के हैं फिर उनका अंतिम संस्कार सुभांडदेव के हाथों करवाना।

दोहा

पहिलैं कछु हमसैं परैं, रुंडपनहु रचि रारि।
प्रभु प्रतीक तंहं पायहो, निश्चय निपुन निहारि॥४३॥

मैं जहाँ घायलावस्था में पड़ा था उससे थोड़ा पहले युद्ध में कबंध बन कर युद्ध करने वाले हमारे स्वामी के अवयव तुम्हें वहीं मिलेंगे। तुम लोग

चतुर हो इसलिए अच्छी तरह देख कर पहले निश्चय कर लेना।

षट्पात्

निम्म कथित सुनि नरन खेत मति गति पुनि खोजिय।
अंग निचित किय अखिल जाहि भास्यो समजो जिय।
सबन तैंहु पुनि सोधि कतिक नृप अंग निकारे।
कतिकन पाये कलह टूक लघुलघु असि टारे।
सिर सकल द्वै रु कर पय सकल रजनि गूढ ठक्कुर दलित।
कर निज सुभांड चय तास करि कथित रीति दग्धसु कलित ॥४४॥

निम्मदेव हाड़ा के बताये अनुसार सेवक-सैनिकों ने रणभूमि में जा कर भेद बुद्धि के साथ राजा की मृत देह को फिर से खोजा। फिर वहाँ मिले अंगों का पहले यह निश्चय किया कि ये राजा ही के हैं। इस तरह एक एक कर राजा की देह के अवयवों को ढूँढ निकाला कुछ छोटे टुकड़े अवश्य नहीं मिले जिनका शत्रुओं की तलवार ने कीमा बना डाला था। पूरा सिर सभी टुकड़ों सहित, दो हाथ, दो पाँव और धड़ को रात्रि का अंधेरा गहराने के पहले ही सेवकों नें ढूँढ निकाले तब सुभांडदेव ने अपने हाथों से उन अवयवों का प्रचलित शास्त्रोक्त रीति से दाह संस्कार किया।

पट्टिम देवी प्रान तजिय बासर बसु अंतर।
यातैं बीस हि अहन नियत हुव कृत्य निरंतर।
मनि हाटक मातंग सप्ति सुरभी भू मुख सब।
दये द्विजन सुभदान तिमहिं अभिमत भोजन तब।
सह प्रीति पाइ भोजन सबन इकबीसम आवंत अह।
बैठोसु पट्ट नव अब्द बय महिप सुभांड महंतमह ॥४५॥

रानी पट्टिमदेवी ने राजा की मृत्यु के आठ दिन बाद अपने प्राण त्यागे, इससे पहले राजा के बारह दिन और बाद में रानी के बारहवें तक कुल बीस दिनों का शोक रखा गया और सारे प्रेत संस्कार करवाए गए। इसके बाद मणियां, स्वर्ण, हाथी, घोड़े, गाएँ और भूमि का पुण्य दान ब्राह्मणों को उनके इच्छा भोजन करवाने के साथ ही दिया गया। सभी लोगों ने बारहवें के दिन

स्नेह से भोजन किया और इक्कीसवाँ दिन आने पर नौ वर्ष की अवस्था में सुभांडदेव उत्सव पूर्वक राजगद्दी पर बैठा।

दोहा

घाय मिटत सब घायलन, लिय बुलाय हिय लाय।
हय गज ग्राम अतीव हित, बखसे मान बढाय॥४६॥

युद्ध में घायल हुए अपने सारे सामन्तों और योद्धाओं के पूर्ण रूपेण निरोग हो जाने पर राजा सुभांडदेव ने सभी को बुला कर हृदय से लगाया और अतीव स्नेह के साथ उनका मान बढ़ाने के लिए हाथी, घोड़े और जागीर के गाँव प्रदान किए।

रुचिरा

जवन इतसु लजि बाजबहादुर भजि मंडुव पुर जात भयो।
निम्म निसित असि भिन्न बिकृत निज अंस अहन सिकवात भयो।
रहि गय जास सिबिर उपहारहु तिन्ह लुंटन पुर जनन तन्यों।
जयबिच्च लहि सहसा सु पराजय बलि बुंदियसिर कुपित बन्यो॥४७॥
गो पहुपाक जुगल गहिकैं गृह भनि तिहिं प्रति हित अहित भरयो।
उर खल लाइ असन निज अप्पिरु जिहिं सिसु जकुट हि जवन करयो।
तिन दोउन बिस्वास बढैं तिम दये निजन अधिकार दयो।
पहु इत पृथुक सुभांड सुहुव परगुन सहन सु दोसत्व गयो॥४८॥

यवनपति बाज बहादुर बूँदी से लज्जित हो कर भागता हुआ मांडू को जा पहुँचा। वहाँ उसने निम्मदेव के तीखी धार वाले खड्ग के प्रहार से कटे अपने कंधे का उपचार और सिकाव करवाया। उसकी बूँदी के शिवरों में छूटी हुई सामग्री को लूटने के लिए बूँदी नगर के लोगों की भीड़ उमड़ पड़ी। जीती हुई बाजी को अचानक इस प्रकार खो कर पराजय को प्राप्त हुआ वह यवनेश बूँदी पर नाराज ही रहा। राजा बैरीसाल के बालकों के युगल को जो वह बूँदी से पकड़ कर लाया था उन्हें दुष्ट ने मन में कपट विचार कर अपना झूठा भोजन करवाया और इस तरह दोनों बालकों को यवन बनाया। वे दोनों बालक उसका भरोसा कर लें इसके लिए उसने उन्हें भी कुछ अधिकार अपने बच्चों की तरह प्रदान किए। इधर सुभांडदेव हाड़ा अपनी

बाल्यावस्था में ही राजा बना। जिसमें सहनशीलता का गुण था पर इस गुण की अधिकता उसके लिए दोष बन गई।

दोहा

बिदित यहै आधार बस, उचित रु अनुचित आहि।
जोगिन गुन अति सहन जो, सुपहुन दोस सदाहि ॥४९॥

कोउन जानैं दैवक्रम, हिय बिद्या निधि होहु।
व्है हैं नृप साधारनहु, सबन न जानी सोहु ॥५०॥

सक बसु ससि चउदह समय, बैरिसल्ल हुव बीर।
नभ सर सक्करि सक नियत, धरिय छत्र जिहिं धीर ॥५१॥

ख निधि चउद्दह साक खिन, इम बुंदिय रन एह।
बरस बहत्तरि पाइ बय, देत भयो तजि देह ॥५२॥

किसी राजा के लिए आधारभूत बात यह है कि वह उचित क्या है और क्या अनुचित इसमें भेद करना जानें क्योंकि सहनशीलता के गुण का अधिक होना योगियों-सन्यासियों के लिए वरदान है वहीं इस गुण की अधिकता राजा का अवगुण बन जाती है। विधाता के लिखे भाग्यफल को कौन जान सकता था कि जिसके हृदय में विद्याओं से भरा खजाना है वह राजा के रूप में मात्र साधारण राजा ही सिद्ध होगा। इसका कयास किसी ने नहीं लगाया था। वीर हाड़ा राजा वैरीसाल का जन्म विक्रम संवत् के वर्ष चौदह सौ अठारह में हुआ और वह धीर पुरुष विक्रम संवत् चौदह सौ पचास में राजगद्दी पर बैठ कर राजा बना। विक्रम संवत् के वर्ष चौदह सौ नब्बे में हुए बूँदी के प्रसिद्ध और भीषण युद्ध में अपनी बहत्तर वर्ष की आयु पूर्ण कर उस वीर ने अपनी काया छोड़ी।

इतिश्री वंश भास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे पंचम राशौ वीतिहोत्र वसुधेश्वर बीज्यवर्णनबीजहड्डाधिराडस्थिपाल वंश्यानुवंश्यविहितव्या-ख्यानावसरव्याहार्यबुन्दीनरेन्द्रसुभाण्डदेव चरित्रे तारादुर्गाद्रिपर पार्श्वप्रस्था-पितपूर्वबल वाह वर्गसहपरि ग्रहसारणा दिबान्धवाऽष्टकसुंदरा दिसुभटा-ऽष्टक नयनपुरनेतव्यसशिशुशुद्धान्तजनिष्कासन, प्राप्तप्रत्ययपृष्ठलग्न लुण्टाकयवनाऽनीकहतवेगमार्गमूढधात्रीजनधूतस्ववशीकृतश्याम श्यामा

शिशुद्वय म्लेच्छराजोपायनीकरण यानारोहणस्थानालब्धशिशुद्वय प्रसभ-प्रतिप्रस्थापितसाऽनुजसुभाण्ड गम्यमार्गगामितसानीकरक्षणीयवर्ग-प्रत्यागमशोधित शैलालब्धलभ्यसमवगतयथाभूतोदन्तसम्मतसौप्तिक-चिकीर्षाचंक्र म्यमाणसपरिग्रहसारण नवब्रह्म धीर हरि त्रि विक्रम सामन्त-पंचक केदारेश्वरसद्मसमीपपिप्पलदाधी शकुमारोदयसिंह सम्प्रेषितसन्देश-हारकसम्मिलन, प्रत्यानीततद्दूतसम्मेलितसर्वसङ्घातसम्पातन सारणो दय नवब्रह्म हरिसिंह तदमात्यादिसुभटचतुष्क संहरण समाश्वा सनविश्रम्भ-सार्थीकृतशिशुद्वय सोढांसक्षतव्यथयवनाधिपबाजबहादुरमण्डूपुरपलायन।

श्री वंशभास्कर महाचम्पू के पूवार्यण की पंचम राशि में अग्निवंशी चहुवान वंश वर्णन के कारण हड्डाधिराज अस्थिपाल के वंश और अनुवंश की कथा बताने के समय के वचनों में सुभांडदेव के चरित्र में तारागढ़ के पर्वत की दूसरी ओर स्थापन की हुई पहले की सेना और वाहन वर्ग सहित परगह सारण आदि आठ बांधव और सुन्दर आदि आठ उमरावों का नैणवापुर को ले जाने योग्य बालकों सहित जनाने के लोगों को निकालना, संकेत पाकर पीठ लगी हुई लुटेरी यवन सेना का थके हुए मार्ग भूले हुए और धात्रियों के उठाये हुए श्याम और श्यामा दो बालकों को अपने वश में करके बादशाह की नजर करना, सवारियों पर चढ़ने क स्थान में दोनों बालकों को न पाकर और छोटे भाई सहित सुभांड का मार्ग में हठ से वापस भेजकर, सेना सहित रक्षा करने योग्य समूह को अर्थात् जनाने को रवाना करके वापस आकर पूर्वत को ढूँढ़ने पर भी लभ्य वस्तु को न पाकर यथार्थ वृत्तान्त को जानकर, सलाह कर के रतिवाह देने की इच्छा से चलाई हुई अपनी परगह सहित सारण नवब्रह्म, धीर, हरि और त्रिविक्रम इन पाँचों सामन्तों का केदारेश्वर के मंदिर के समीप पीपलदा के पति कुमर उदयसिंह के भेजे हुए हलकारे से मिलना, उस दूत को लाकर सय समूह को मिलाकर छापा देना, सारन उदयसिंह, नवब्रह्म और हरिसिंह का उस (बादशाह) के मंत्री आदि चार सुभटों को मारना, धैर्य देने से विश्वास पाये हुए दोनों बालकों को साथ में लेकर कंधे के घाव की पीड़ा को सहने वाले बादशाह बाज बहादुर का मण्डूपुर को भागना।

जननीजकुट दर्शन वन्दनादिवि मुखमहोन्मत्तोपमानकुमारोदय-सिंह स्वस्थनपिप्पलदाप्रतिप्रस्थापन शिशुयुग निगडनश्रवणसमकाल-

संरम्भसमुत्थान शीर्णक्षतसन्धानजाबदु तनुत्यजन श्रुतशत्रुपलायनसेवादिबन्धुवर्गसकुशलशिशु शुद्धान्त जनबुन्दीपुरप्रत्यानयन, धीर हरि सहित सारण क्षतपारवश्यप्राप्तवसरसेव जावदु प्रेतकर्मप्रणयन निश्चितनृपनिर्दिष्टापराधनिवारणसुभट सचिव समाकारितनीचजनानुमतरतोदयसिंह राज्यानङ्गीकरण राज्यरक्षिवर्गविज्ञाततद्वृत्तकृत्यसमयसमागतसन्नद्ध-सैन्यसानुजज्येष्ठकुमाराऽक्षयराज निराकरण सचिव सामन्त स्वीकृत-स्वामित्वसुभाण्डदेव सक्षतस्वपितृव्यकनिम्मदेव सूचितसमरस्थानग-वेषणसम्पादित पृथ्वीशप्राप्यप्रतीकस्वकरसमीरसखसंस्करण दिनाऽष्टकाऽनन्तरपट्टराज्ञीपट्टिमदेवी तनुत्यागकारणवासरविंशति पितृप्रेतकृत्यानुष्ठान प्राप्तैकविंश वासर वसरसर्वसम्मतनव वर्षवयस्कभूपभारमल्ल पितृपट्ट-प्रापण।

दोनों माताओं के दर्शन और नमस्कार आदि से विमुख और महा उन्मत्त के सदृश कुमार उदयसिंह का अपने स्थान पीपलदा को वापिस जाना, दोनों बालकों का कैद होना सुनने के साथ ही जोश आने से घावों का मिलना फटकर जावदू का शरीर छोड़ना, शत्रुओं को भागे हुए सुनकर सेव आदि बान्धव वर्ग का बालकों और जनाने के लोगों को कुशलतापूर्वक बूँदीपुर में लाना, धीर और हरि सहित सारन घावों से परवश होने के कारण समय पाकर सेव का जावदू के प्रेतकर्म करना, राजा के कहे हुए अपराध के निवारण का निश्चय करके उमराव और सचिवों के बुलाने पर भी नीच लोगों की सलाह में प्रीति रखने वाले उदयसिंह का राज्य से इनकार करना, राज्य की रक्षा करने वाले समूह का वृत्तान्त जानकर प्रेतकर्म के समय सेना सजकर आये हुए छोटे भाई सहित बड़े कुमर अक्षयराज का अनादर करना, मंत्री और उमरावों से स्वामी स्वीकार कर लेने पर सुभांडदेव का घायल काका निम्मदेव द्वारा सूचना किये हुए युद्धस्थल में ढूंढ कर राजा के पाने योग्य अंगों को इकट्ठा करके अपने हाथ से अग्नि संस्कार करना, आठ दिन के बाद पाटवी रानी पट्टिमदेवी के शरीर छोड़ने के कारण बीस दिन तक पिता और माता का प्रेतकर्म करना, इक्कीसवें दिन का समय प्राप्त होने पर सबकी सलाह से नौ वर्ष की अवस्था वाले राजा भारमल्ल (सुभांड का दूसरा नाम है) का पिता का पाट पाना।

प्रापितप्रघातपाटवसभासमाकारितवीरबर्गपट्टादिपूजन प्रकृति-

विप्लुतशिबिरोपहारनिम्म खरखङ्गखिन्नांसमण्डूपुरप्रविष्टपुनर्निश्चितबुन्दी-विरोधबाजबहादुरसम्पादितसमुचिताधिकारबुन्दीन्द्रबौलद्वय यवनीकरण पौगण्डवयप्राप्तपट्टभूमीभुजङ्गभारमल्ल तिसहनगुण दोषीभाव भाविता-भाषण बुन्दीन्द्रबैरिशल्य जन्म पट्टप्राप्ति शूरशय्याशयन शक सूचनं सप्तदशो मयूखः ॥१७॥ आदितश्चतुष्षष्ट्युत्तरैकशततमः ॥१६४॥

घाव पाये हुए वीरों के समूह के नैरोग्य होने पर सभा में बुलाकर उनका पट्टा आदि दे कर सत्कार करना, डेरों की सामग्री को प्रजा के लूट लेने पर निम्मदेव के तीक्ष्ण खड्ग से कटे कंधे वाले बाजबहादुर का मंडूपुर में प्रवेश करके फिर बूँदी पुर के विरोध का निश्चय करके उचित अधिकार देकर ग्रहण किये हुए बूँदीन्द्र के दोनों बालकों को यवन बनाना, दस वर्ष की अवस्था पाकर भूपति भारमल्ल का अत्यन्त सहनशीलता के गुण-दोष भाव का सेवन करना अर्थात् गुण का दोष होना, बूँदीन्द्र शत्रुशल्य के जन्म, पाट पाने और काम आने के संवत् की सूचना करने का सत्रहवाँ मयूख समाप्त हुआ आदि से एक सौ चौंसठ मयूख हुए।

प्रायो ब्रजदेशीय प्राकृत मिश्रित भाषा

दोहा

अक्खय तिम चुंड रु उदय, न मिल्यो पट्ट निहारी।
दब्बन लग्गे देस द्रुत, बालक नृपहिं बिचारि॥१॥

जानि तज्यो हम पट्ट जब, भोगन दारिद भाव।
क्यों पावहिं इम चिंतिकैं, उदय हु किय उफनाव॥२॥

निज निज ढिग के बर नगर, अंगमि प्रसभ अकूट।
लिय छिन्न रु रोधक लखत, लगे मचावन लूट॥३॥

पट्टनि जयथल खेट पुनि, लक्खैरी रु लवान।
खटपुरपति दब्बे अखय, उद्धतपन अभिमान॥४॥

पुब्बहु यह लंपट प्रथित, भयो सु सुनि खिजि भूप।
निज प्रसाद बाहिर नियत, रक्ख्यो अघ अनुरूप॥५॥

चुंड हु लखि अग्रज चलन, लग्गो छोरन लज्ज।
देस में सु बर्जन दुसह, कैं तर्जन मद कज्ज॥६॥

बिगरन के दिन बाहुरत, बिक्खैं सुभ बिपरीत।
नीच जनन उदय हु निरत, प्रकट सु मत्त प्रतीत॥७॥

अक्षयराज, चूंडा और उदयसिंह ने जब देखा कि बड़े होते हुए भी उन्हें राजगद्दी नहीं मिली तब उन्होंने राजा को बालक जान कर उसकी भूमि दबाना शुरु किया। उदयसिंह ने क्रोध में उफनते हुए कहा कि जब मैंने अपनी इच्छा से राजसिंहासन का त्याग किया और दारिद्र्य भाव से रहना स्वीकार किया तो अब इस तरह क्यों माँगू ? जरूरत होगी तो जबरन ले लूँगा। इन भाइयों ने अपने-अपने पास के अच्छे नगर और भूमि को हठपूर्वक अपने अधिकार में लेना आरंभ किया। वे कभी चुपके-चुपके दबाते और कभी कोई रोकने वाले मिल जाते तो लूट कर ले लेते। इस प्रकार पाटण, जयथल, खेट, लाखेरी और लवान जैसे छह नगर अक्षयराज ने उदण्डतापूर्वक हक समझ कर हथिया लिये। पहले भी राजा बैरीसाल ने जब यह जान कि अक्षयराज व्यभिचारी के रूप में प्रसिद्ध हो गया है तो उन्होंने खीझ कर उसे अपने महलों से अलग रखा। उसके पाप कर्मों को देखते हुए अलग स्थान पर रहने को निकाल दिया। चूंडा भी अपने बड़े भाई अक्षयराज का चलन देख कर स्वयं बेशर्म होने लगा। लोगों से झगड़ना और मद्य पीना ही उसका एकमात्र कार्य रह गया। बूँदी में अच्छे दिनों के विपरीत बुरे दिनों का आना शुरू हुआ क्योंकि उदयसिंह नीच कुल के लोगों से प्रीति बढ़ाने लगा। वह उनकी संगत में रह कर अपनी मति भी वैसी कर बैठा।

मदनावतारः

बुल्लयो याहि जब पट्ट बैठारिबे,
धरनि अधिराजपन छत्र सिर धारिबे।
हेय कुल सचिव चम्मार याकै हुतो,
स्वामि संबोधि लग्गोहि अटकन सुतो॥८॥
बदिय इम स्वामि तुम भूप जब बज्जिहो,
गरूव भर नम्र सिर इमन तब गज्जिहो।
लैन लखि जाचकन हैन कहि लज्जिहो,
सैनसर पै न इम मैनसुख सज्जिहो॥९॥

राजा बैरीसाल की मृत्यु के बाद जब बूँदी का भला सोचने वाले

सामन्तों ने यह प्रस्ताव उदयसिंह के समक्ष रखा कि आप बूँदी का छत्र धारण कर हमारे राजा बन जाएँ पर उस समय उदयसिंह के एक त्यागने योग्य नीच कुल का चमार सचिव था वह अपने स्वामी अर्थात् उदयसिंह को समझाते हुए राय देने लगा कि तुम यहाँ राजसिंहासन पर बैठ कर राजा तो अवश्य कहलाओगे पर तब आप अपना सिर राजकाज के भारी बोझ से झुका हुआ महसूस करोगे। इस तरह उन्मुक्त भाव से गर्जना नहीं कर सकोगे। आपके पास आए याचकों को यह कह कर मना करते हुए कि मेरे पास नहीं है मन ही मन लज्जित होओगे। अपने शयन की शय्या पर स्वतंत्र रूप से कामदेव की खुली साधना भी नहीं कर सकोगे इसके लिए आपके पास अवकाश नहीं होगा।

दोहा

चर्मकार जो इम चविय, उदय सु मन्त्रि असेस।
पायो अबुध न भूप पद दब्बहिं अब प्रभु देस॥१०॥

राजा बनते ही कई प्रकार के बंधन आप पर लागू हो जाएँगे इसलिए हे स्वामी! इससे तो हम अभी जितनी मनमर्जी करने को स्वतंत्र हैं वह अच्छा है। चमार सचिव ने जब यह कहा तो उदयसिंह तुरन्त उसकी पूरी बात मान गया। उस मूर्ख ने इस तरह तब तो राज लेना स्वीकार नहीं किया पर अब राजा के नगर और भूमि को बलात् दबाने लगा।

मदनावतारः

दब्बिपुर द्वै रु कृति गाम निज देस के,
कतिक लिय नानता प्रमुख कोटेस के।
होजु मक्खीद गैनोलिपति को हर्‌यो,
और भ्रातन सनहु जोर अति अद्दर्‌यो॥११॥

उदयसिंह ने तब बूँदी राज के दो नगर और बीस गाँवों को दबाकर अपने अधिकार में कर लिया। कुछ गाँवों सहित नानता नामक प्रमुख गाँव कोटा के राजा का हड़प लिया। इनके अतिरिक्त गैनोली पति का मक्खीद

गाँव हथिया लिया। इस प्रकार वह अपने ही हाड़ा बांधवों के साथ प्रतिद्वंद्विता पूर्वक जोर आजमाने लगा।

दोहा

निम्मान रु लोहित नगर, खीनां डब्भिय खंड।
चुंड हु लग्गिय चट्टिबे, कोन घटैं अघ कंड॥१२॥
रोहितपुर दिन सत रह्यो, नियत अमल निम्मान।
नृप दैन किय हल्लू कुलहिं, लिय पच्छे खिल थान॥१३॥
बुंदिय बल प्रबया बच्यो, निम्मदेव बिनु नांहिं।
नृप के सिसुपन इम निजहु, मुरन लगे मन मांहिं॥१४॥
चले क्यों न परचित्त जब, घर ही में यह घाट।
तकत छिद्र अभिमत तन्यों, बन्यों मुलक द्रहबाट॥१५॥
नृप हिं मराइ गहाइ निज, अनुज रह्यो भजि एक।
भाग्यहीन यह भूप है, अक्खैं इमहु अनेक॥१६॥

इधर चूंडा हाड़ा ने भी यह सोच कर कि कहीं वह इस पाप कर्म में पीछे नहीं रह जाए, उसने बूँदी राज के निम्मान और लोहित नगर सहित खीनां एवं डब्भिय (डाबड़ी) गाँवों के क्षेत्रों को चट कर लिया। उसने निम्मान को अपने हस्तगत करने के लिए रोहितपुर में सौ दिन तक अपना डेरा रखा। राजा नें यह नगर राजा हल्लू के वंशजों को देना निर्धारित कर रखा था। कुल मिला कर इन दिनों में बूँदी का बल उस वीर निम्मदेव के मरते ही और कमजोर हो गया। यह देखकर कि राजा बाल्यावस्था के कारण निर्बल है उसके अपने लोग भी बूँदी की स्वामीभक्ति से मन ही मन अपना मुँह मोड़ने लगे। नीति कहती है कि परायों का मन भूमि हड़पने को क्यों न ललचाए यदि घर के लोगों का ही यह हाल हो। राज्य की निर्बलता और बांधवों में मनमुटाव की स्थिति का उचित अवसर देख कर शत्रुओं की तो जैसे मन जानी हुई। इस तरह पूरा मुल्क बरबाद होने लगा। यही नहीं लोग आपस में कहने लगे कि यह राजा अत्यन्त भाग्यहीन है। इसके जन्मते ही पिता मारा गया और इसके दो भाइयों को यवन पकड़ कर ले गए। इस तरह की कई बातें आम हो गई।

षट्पात्

पौगंडहु बय पाइ इम न सहिबो व्है औरन।
सरल निसग्ग सुभांड जनन बचनहु दै जोरन।
इतरहु तब अंगमि रु भ्रात लग्गे दब्बन भुव।
असगोत्रहु भट अवर हड्डु सहना प्रतीप हुव।
सीमा अराति लखि यह समय रहे दब्बि जिततित धरनि।
जंहं बढत द्रोह इक गृह जनन सत्रु मनन सुहि तंहं सरनि॥१७॥

दस वर्ष की उम्र में इतनी सहनशीलता दूसरों में नहीं पाई जाती। सरल स्वभाव वाले राजा सुभांडदेव को लोग तरह-तरह की बातें सुनाने लगे। उधर स्वयं के भाई उसकी भूमि दबाने लगे और उनकी देखा देखी में अन्य भी उसकी भूमि हड़पने को उतावले हो उठे। स्वयं के गोत्री भाई भी राजा की इस लाचार-सी सहनशीलता को देख कर विरुद्ध हो गए। सीमा पर बसने वाले शत्रुओं ने सोचा कि इस कमजोर राजा की भूमि को हड़पने का यह सबसे उपयुक्त समय है। जब घर में और अपने ही वंश में विद्रोह जन्मने लगे तो शत्रु भी यही मार्ग अपनाते हैं यह सामान्य नियम है।

नृपति पितृव्यक निम्म तजिय द्वि समा अंतर तनु।
जिहिं सब लुब्धहु जानि मन न मोर्‌यो भीषम मनु।
बुंदिय रन छतबिकल पट्टहु खिन्नहि रह्योसु पुनि।
बोधितकिय जिहिं बिमुख सोहु उपदेस तज्यो सुनि।
अब निम्म मरत प्रबया न इक परे स्वामि ढिग सब प्रबय।
असगोत्र भटन कति उब्बरे जितनैं न बन्यों बिमुख जय॥१८॥

राजा के काका निम्मदेव ने सुभांडदेव के गद्दी पर बैठने के दो वर्ष बाद ही शरीर त्याग दिया। वही मात्र एक ऐसा व्यक्ति था जिसने सभी लोगों को लोभ करते हुए देख कर भी अपना मन नहीं डुलाया। उसकी निष्ठा सदैव भीष्म पितामह की तरह बूँदी राज्य के हित में ही लगी रही। उसने राज्यहित को समझाने के लिए सभी को उपदश दिये पर सभी ने उन्हें सुन कर अपने लोभ के आगे उसके उपदेशों को नजर अंदाज कर दिया। अब

निम्मदेव के मरने से राजा के पास मंत्रणा करने के लिए कोई वयोवृद्ध अभिभावक नहीं रहा। अधिकतर वृद्ध तो राजा वैरीसाल के साथ युद्ध में मारे जा चुके थे। बचे हुए बांधव योद्धा इतने सक्षम नहीं थे कि वे राजा का अहित करने वालों का सामने जा कर मुकाबला कर सके।

अमरदुर्ग इत दब्बि पाइ झज्झोल प्रमोदन।
संकरगढ लग सहज सीम प्रसरिय सीसोदन।
इत खिच्चिन आटोनि लियउ बारां बड़ोद लग।
बप्पाउर बररोद प्रमुख पुहवी दब्बी पग।
इत हम्म बिजित डोडन अनखि लग रहलावनि दब्बि लिय।
इक होइ दभिक तोमर अरिन इत उत्तर भुव अंगमिय॥१९॥

इसी समय चित्तौड़गढ़ के सिसोदियों ने बूँदी राज्य के अमरगढ़ को दबा लिया और झज्झोल (जाझोली) को ले कर शंकरगढ़ तक अपने राज्य की सीमा का विस्तार कर लिया। इधर खीची ने बूँदी के वशवर्ती आटोण पुर को ले कर अपनी सीमा बारां और बड़ोद तक बढ़ा ली। उसने बप्पावर और बररोद का इलाका भी दबा लिया। इधर राजा हम्मीर हाड़ा द्वारा विजित रहलावण जैसे क्षेत्र को डोड क्षत्रियों ने हथिया लिया। यही नहीं दहिया और तंवर जैसे शत्रुओं ने संगठित हो कर बूँदी राज्य की उत्तर दिशा के सीमावर्ती इलाके को दबा लिया।

उन्नयपुर लहि इनहु गंजि आमा हनुमतगढ़।
लोचनपुर द्रुत लग्गि रारि मंडिय प्रलोभ रढ।
जंहं नृपमातुल जैत दहर गढपति हो दुस्सह।
दिय भजाई जिहिं दुजन मारि गोलन प्रसारि मह।
नैनपुर टिकट उतके निखिल रद तुट्टत अहिजिम रहे।
इत निजन मेंहु बहुपुर अखय दब्बि निजहि कुलजन दहे॥२०॥

उणियारा को ले कर उन्होंने आमा और हनुमानगढ़ पर भी अधिकार कर लिया। इसके बाद लोभ से हठपूर्वक नैणवा नगर को हथियाने के लिए आक्रमण किया। जहाँ राजा सुभांडदेव के मामा दाहड़ जैत्रसिंह ने गढपति बन कर इनका मुकाबला किया और तोपों से गोले बरसा कर उसने इन दुर्जनों

को भगा कर गढ़ की रक्षा की। नैणवा नगर के बचते ही डोडिया और खीची जैसे शत्रु ऐसे हो कर रह गए जैसे दाँत टूटा हुआ सर्प होता है। इधर राजा के अपने बांधवों में से अक्षयराज ने अपने ही कुल के राजा के कई नगरों पर अधिकार कर लिया।

दोहा

पट्टनि से पुर लिय प्रथम गिनि प्रभुता निजगेह।
मरत निम्म रोधउ न मिल्यो, अधिक बढ्यो तब एह॥२१॥

जास तोग अभिधान जग, बिदित पराक्रम बोध।
निम्मदेव सुत जिहिं निपुन, जनक पट्ट लिय जोध॥२२॥

हल्लू बिनु जिम तुच्छ हुव, बंबावद सु बढंत।
बैरिसल्ल पाछैं सु बिधि, हुव बुंदिय भुव हंत॥२३॥

अक्षयराज ने अपने ही घर में अपनी प्रभुता का प्रदर्शन करते हुए राजा का पाटण नगर हड़प लिया। काका निम्मदेव के मरते ही जब कोई अवरोधक नहीं रहा तो रोकने वालों की अनुपस्थिति का लाभ उठा कर वह और अधिक उन्मत्त हो उठा। तभी निम्मदेव के वीर पुत्र तोगदेव जिसका पराक्रम जगविदित था वह अपने पिता का उत्तराधिकारी बना। इधर राजा हल्लू के मरने के बाद बंबावद राज्य का विकास अवरुद्ध हो गया तो उधर राजा बैरीसाल के मरते ही बूँदी का भी बुरा हाल हुआ।

षट्पात्

खित्तल बनिक खटोर हुतो नृप सचिव स्वामि हित।
प्रतिभा मंत्र प्रगल्भ दूरदरसी सकुनोदित।
बिख सु राज्य बिच बढत हेरि सब सुख रोकत हुव।
जिनजिन लिय जो जोहि भयो तिनतिन अप्पत भुव।
सारन रु जैत समुचित समुझि अनुमत निज लै ए उभय।
नृप पै लगाइ दिन्नैं निखिल उज्झि अखय चुंड रु उदय॥२४॥

इस समय राजा सुभांडदेव के खेतल (खेता) नामक खटोड़ जाति का बनिया मंत्री था। वह स्वामीभक्त मंत्री बुद्धिमान, दूरदर्शी, शकुन का अच्छा जानकार और अच्छी सलाह देने वाला था। अपने राज्य में इस तरह का

आपाधापी का जहर फैलता देख उसने उसे रोकने का प्रयास किया। जिन-जिन लोगों ने जितनी-जितनी भूमि दबा ली थी उसने आदरपूर्वक उन्हें दे दी फिर उसने सारण और जैत्रसिंह हाड़ा जैसे व्यक्तियों को कुशल प्रबन्धकर्ता और योद्धा समझ कर उनसे मंत्रणा की। उन्हें अपने पक्ष में किया। फिर इन दोनों की सहायता से कूटनीति का आसरा ले कर सभी सामन्तों को राजा के पक्ष में किया सिवाय तीन को छोड़ कर। वे तीन थे अक्षयराज, चूंडा और उदयसिंह। ये तीनों उन्मत्त बने रहे।

दोहा

निजनिज दब्बी दै निखिल, लाये नृप पय लुद्ध।
लाल निम्म जाबदु कुलहि, समुति रहे तंहं सुद्ध॥२५॥

गहत उदय मक्खीद गढ, जैत बिचारिय जंग।
सचिव निवार्‌यो सोहु समि, रच्यो स्वामिहित रंग॥२६॥

अरिन जिते सब अंगमें, गये तिते पुर ग्राम।
निज प्रतीत रक्खे निजहिं, सचिव दुघां रचि साम॥२७॥

अपनी-अपनी दबाई भूमि उन्हीं को राजा के हाथ से दिलवा कर सारे लोभी सामन्तों को राजा का मातहत बनाया। राज्य में लालसिंह, निम्मदेव और जावदू के वंशज अवश्य निर्लोभी और सुमतिवान बने रहे। जब उदयसिंह ने बलात् मक्खींदगढ़ पर अपना अधिकार किया तब जैत्रसिंह ने मुकाबला करने के लिए युद्ध करने का विचार किया। उसे भी शान्त कर राजा के मंत्री ने राज्यहित का कार्य किया। राज के जितने भी नगर और गाँवों को अपने अधिकार में करने वाले शत्रु थे और उनके अतिरिक्त राज से विमुख जितने भी लोग थे उनमें और राज्य के बीच अपनी बुद्धिमता से मंत्री ने मेल-मिलाप का वातावरण बनाए रखा।

षट्पात्

बय नृप सोलह बर्ष हुवहु न छमा छोरत हुव।
सरलपनहु सचिवोक्त धारि निजहित मन्न्यों ध्रुव।
राव सूर खदिराट जनन चालुक्य जाजपुर।
तनया कमला तास धरन प्रकटी साध्विन धुर।

उपयाम प्रथम रानी यहै पहु सुभांड आनी परनि।
संबंधि नृपन न दई सुता धम्मि घटत अबिरत धरनि॥२८॥

राजा सुभांडदेव ने सोलह वर्ष की वय हो जाने तक भी सहनशीलता और क्षमा जैसे गुणों को नहीं छोड़ा। सरल स्वभाव वाले इस राजा ने अपने मंत्री खेता द्वारा लिए गए निर्णयों में ही अपने राज्य का हित देखा अर्थात् अपनी ओर से कोई दखल नहीं दिया। जब बराबरी वाले संबंधी राजाओं ने अपनी पुत्री देने का प्रस्ताव नहीं किया और पृथ्वी पर धर्मवान राजाओं की निरन्तर होती जा रही कमी देखी तो मंत्री ने अपनी ओर से पहल की। उसने खैराड़ प्रदेश के जहाजपुर नगर के सोलंकी वंशीय राजा सूरसिंह की पुत्री कमला से राजा का विवाह संपन्न करवाया। सोलंकी वंश की यह कन्या जो पतिव्रता स्त्रियों की परम्परा को बढ़ाने वाली थी को राजा ने अपनी पहली रानी बनाया।

दोहा

कनी नाम अनुपमकुमरि अमर कबंध अगार।
उपयम दूजे सो अधिप, परन्यों कथित प्रकार॥२९॥

राजकोट चालुक रतन, कन्या स्यामकुमारि।
सोंड बिबाह्यो सो सती, नियति लेख निरधारि॥३०॥

इसके बाद राठौड़ अमरसिंह की अनुपम कुंवरी नामक कन्या से राजा सुभांडदेव का दूसरा विवाह हुआ। राजा ने पूरे विधि-विधानपूर्वक विवाह कर इसे अपनी दूसरी रानी बनाया। इसी श्रृंखला में राजा के भाई सोंडदेव का विवाह राजकोट के चालुक्यराजा रतनसिंह की बेठी श्यामाकुमारी से हुआ। विधाता ने ऐसा ही लेख लिखा था।

षट्पात्

जुग सोदर सहजात बिबिध महसह बिबाहि बर।
सचिव सु खित्तलसाह घनैं जस जुत लायो घर।
लघु इनतैं लोहठ रु कर्मचंद्रक बय बालहु।
हुव अनूढ मृत हात कहुंक असहन छम कालहु।

सुत दुव उपेत मृत दुव सुतन दुख अनंत किय दाहरिय।
तिन्ह प्रेतकर्म बिधिमत बितत करि द्विजनन घनघन करिय॥३१॥

इन दोनों जुड़वाँ भाइयों राजा सुभांडदेव और सोंडदेव का पूरे समारोह पूर्वक उत्सव सहित विवाह संपन्न करवा कर उनका सचिव खित्तलशाह (खेता) उन्हें बूँदी लाया। इन विवाहों के अवसर पर उचित इनाम इकराम दे कर मंत्री ने बूंदी को यश दिलाया। इन भाइयों से छोटे लोहठ और कर्मचन्द्र थे। ये दोनों भाई विवाह करने से पूर्व किसी के हाथों निःसंतान मारे गए। काल बड़ा समर्थ होता है उसके समक्ष कोई क्या कर सकता है ? अपने दो पुत्रों के रहते दूसरे दो पुत्रों की मृत्यु ने दाहड़ रानी को शोक संतप्त कर डाला वह इसी दुःख के मारे चल बसी। राजा ने इस रानी का अंतिम संस्कार पूरे विधि-विधान पूर्वक संपन्न करवाया और इस अवसर पर बहुत सारा दान ब्राह्मणों को दिया।

दोहा

सक मुनि नव चउदह इमसु, बिरचि भ्रात जुग ब्याह।
बन्यों थंभ खित्तल बनिक, राज्य थंभि नय राह॥३२॥
पीछैं निज निज समय पर, तनया इक सुत तीन।
भारमल्ल नृप कै भये, पथ निज चलन प्रबीन॥३३॥

विक्रमी संवत् के वर्ष चौदह सौ सतानवे में राजा सुभांडदेव और उसके भाई सोंडदेव का विवाह संपन्न करवा कर मंत्री खित्तलशाह बूँदी का हित करने वाला हुआ। यही नहीं राज्य का स्तंभ यह मंत्री राज्य को नीति की राह पर चलाने वाला बना। विवाह के बाद समय-समय पर अपने बनाए रास्ते पर चलने वाले राजा भारमल्ल (अवर नाम सुभांडदेव) के एक पुत्री और तीन पुत्रों ने जन्म लिया।

षट्पात्

तंहं जो जेठो तनय सूर नारायनदास सु।
तानक स्वकुल द्वितीय बिदित नरबद वितरन बसु।
प्रभु के जिहिं परपुरख बंस यह बहुल बढायउ।
कीरति तिहिं कुल करनि चहूं जस आभ चढायउ।

नरसिंह नाम तीजो निपुन कुमर जन्यों अनुपमकुमरि।
जिन्ह पिट्ठि मदनकुमरी जनी कमला बार्द्धक भाव करि॥३४॥

राजा सुभांडदेव का बड़ा बेटा नारायणदास प्रसिद्ध वीर था तो अपने कुल को वंश वृद्धि से बढ़ाने वाला दूसरा पुत्र नरबद नामक था जो जागीर और धन बाँटने वाला था। हे राजा रामसिंह! आपके पूर्वजों के वंश को इस नरबद ने बहुत बढ़ाया। उसने चहुवानों की कीर्ति को दिग दिगन्त में फैलाने हेतु यश को आकाश की ऊँचाई तक बढ़ाया। राजा का तीसरा पुत्र नरसिंह नामक था जो राठौड़ रानी अनुपम कुँवरी की कोख से उत्पन्न था। राजा के तीन पुत्रों के बाद रानी मदन कुँवरी ने अपनी बढ़ी हुई उम्र में कमला नामक पुत्री को जन्म दिया।

दोहा

संतति न भई सोंड कै, नियति उदर्क निदान।
क्रम संभव ए चउ कहिय, सुपहु हड्डु संतान॥३५॥

भाग्य के कमजोर बल से सोंडदेव के कोई संतान उत्पन्न नहीं हुई और बूँदी के राजा की क्रमशः उपरोक्त बताई गई चार संतानें हुईं।

पादाकुलकम्

मंडोउर इत जोध महीपति, औरस कुल बिस्तरि प्रबया अति।
बिक्रम सक पंद्रह तिथि बित्तत्त, सुक्र बिसद एकादसि सम्मत॥३६॥

भुव निज नाम रहन कछु भायउ, बंको गढ घलि नयर बसायउ।
सोदर बीका बीदा तस सुव, भाग्य लखन गय दुव जंगल भुव॥३७॥

देवीदास तनय इक दुद्धर, पाइ जनक कटुबैन अनख पर।
आयउ हड्डुवती जनपद वह, स्वभट कियउ खिच्चिन पुनि हित सह॥३८॥

भो पित्थल जाको नाती भट, मातुल मारि बह्यो जो उब्बट।
जिहिं कुल अब गागरनीं जानहु, प्रभु भ्राता ब्याह्यो सु प्रमानहु॥३९॥

उधर मंडोवर के राजा जोधा ने वृद्धावस्था की वय तक पहुँचते-पहुँचते अपनी औरस संतानों से राठौड़ कु[illegible] की वृद्धि की। इस राजा ने विक्रम संवत् के वर्ष पंद्रह सौ पन्द्रह के व्यतीत होते फाल्गुन माह के शुक्ल पक्ष की एकादशी तिथि तदनुसार शुक्रवार के दिन अपना नाम पृथ्वी पर

अमिट रखने के लिए अपने नाम से जोधपुर नामक नगर बसाया और वहाँ दुर्ग बनवाया। इसके दो पुत्र बीका और बीदा दोनों भाई जंगलधर की भूमि पर अपना भाग्य आजमाने गए। मंडोवर के राजा जोधा का एक दुर्द्धर्ष पुत्र देवीदास अपने पिता के कुछ कहने पर कुपित हो अपना देश छोड़ कर हाड़ोती जनपद में चला आया। जिसे खीची राजा ने हित देख कर अपना सामंत बनाया। इस देवीदास के एक पौत्र पृथ्वीराज ने अपने मामा को मार डाला और उजड़ मार्ग का राही बना। हे राजा रामसिंह! उसके वंशज वर्तमान में गागरनी में विद्यमान हैं जहाँ आपके भाई ने विवाह किया।

लखि खिन रान अमरगढ जब लिय, कोउक बंधु दुर्गपति तंहं किय।
बुंदियधर जिहिं लूट बढाई, प्रचुर प्रजा पंहं त्राहि पढाई॥४०॥
सोलह सम नृप बय जब ही सों त्रासन अरिन चिंत्ति तबही सों।
बर्मित बल खिजि चढन बिचारिय, निज अमात्य तब तब सु निवारिय॥
जिन जिन भुव दब्बी निज जोधन, पठये ते इम नीति प्रबोधन।
आगस मिटन बेर यह आगत, जो वह जोर अरिन सिर जागत॥४२॥
मन बिनु तेह गये रिपु मारन, बाहिर अंतर भेद बिथारन।
क्रम लुघतम हेला गुरु कारन, कहुंक लरैंहु मिटीसु पुकार न॥४३॥

जब कमजोर समय देखा तो चित्तौड़गढ़ के राणा ने बूँदी का अमरगढ़ ले लिया और वहाँ अपने विश्वासपात्र बांधव को गढ़पति बना कर किले की रखवाली सौंपी। राणा कुंभा ने बूँदी राज में जगह-जगह लूट मचा कर प्रजा में त्राहि-त्राहि मचा दी। इधर राजा सुभांडदेव जब सोलह वर्ष की उम्र में आया तब उसने अपने शत्रुओं को डराने का सोचा। उसने कवच पहनी हुई पूरी तरह से सज्जित सेना से कुछ स्थानों पर चढ़ाई करने का सोचा पर उसी समय उसके मंत्री ने उसे ऐसा नहीं करने की सलाह देते हुए रोका। मंत्री खितलशाह ने राज्य की भूमि को जिन जिन ने दबा कर अपने अधिकार में कर लिया था उन्हें संदेश भेज कर कहलाया कि आपने राज्य की भूमि दबा कर जो अपराध किया है। यह समय उसके प्रायश्चित का है और इसके लिए आप लोगों को बूँदी के शत्रुओं का मुकाबला करना चाहिए। मंत्री से यह निर्देश पा कर वे लोग गये भी पर वे बिना मन से शत्रु संहार को गये। वे राज्य के भीतर और बाहर के भेद में संतुलन बनाने में अधिक रुचि ले रहे थे उन्हें

हराने में नहीं। अपने छोटे-छोटे कदम रखते हुए पर हल्ला बड़ा-बड़ा मचा कर उन्होंने युद्ध में जाने की खाली औपचारिकता निभाई। कुछ लड़े भी पर इससे कोई फायदा नहीं हुआ।

हनैं इनहिं जिन छद्म प्रहारन, संगन दिय इम जैत रु सारन।
जे सागस पहुँचे निज जारन, पायउ तंहं तिन परन प्रतारन ॥४४॥

बसुधा निज प्रभु कीहि बिगारन, धी कुटिलसु लग्गैं किम धारन।
बिफल मुरे लखि बिमुख न बारन, हुव नृप बिमन पुकार हजारन ॥४५॥

रुकिय अग्ग गणकन उच्चारन, प्रान तजहिं नृप हेति प्रहारन।
सु बचन चिंति खित्तल रु सारन, नृप को करहिं ससोंह निवारन ॥४६॥

रहत सदाहि छमा प्रभुता रन, बढैं छमां तउ कित्ति बिगारन।
जुज्झैं इम हुव नृप साधारन, बेलोचित कृति जानि बिचारन ॥४७॥

बूँदी की ओर से लड़ने गये इन सामन्तों ने किसी शत्रु को मारा भी तो छद्म प्रहार से। इन प्रयाणों में हाड़ा जैत्रसिंह और सारण ने भी पूरे मन से इनका साथ नहीं दिया जो लोग इन मुकाबलों में पहुँचे, वे बूँदी की भूमि दबाने वाले अपराधी थे अथवा बूँदी की भूमि को गुप्त रूप से भोगने वाले थे इसलिए वे वहाँ मात्र धोखा देने को गए थे। सही ढंग से और पूरी आतुरता से लड़ने नहीं। ये लोग तो स्वयं अपने ही स्वामी (बूँदी के राजा) का अहित करने वाले थे। ऐसे कुटिल-बुद्धि लोग भला कैसे तलवार उठाते। उन्हें युद्ध से विमुख हो कर मुड़ने में भी देर नहीं लगी। उदास राजा लाख उन्हें पुकारता रहा। राजा कई बार अपने जोश के उफान में कहीं निकलने को हुआ भी तो ज्योतिषियों ने उसे यह कह कर रोक लिया कि हे राजा! आपकी मृत्यु का योग शस्त्र प्रहार से है। राजा घबरा कर ठहर जाता। इस बात का जब खितलशाह और सारण हाड़ा को पता चला तो उन्होंने शपथपूर्वक राजा का भय मिटाया। उन्होंने कहा हे राजा! प्रभुता सदैव युद्ध और क्षमा के बराबर अनुपात में बसती है। इन दोनों में से जब एक क्षमा बढ़ती है तो वह कीर्तिनाशक हो जाती है। इसलिए क्षमा के साथ आपको युद्ध पर भी जोर रखना चाहिए। उन दोनों के इस प्रकार समझाने पर उसने कहा कि उचित अवसर देख कर युद्ध करने जाएगा।

जो गुन बच्यो बाल्य अंतर जब ओगुन छमा दया सह सो अब।
प्रभुता जंहं अैस छबि पावैं, दुष्टन तो इन्ह परखि दबावैं ॥४८॥
धुत्त धिठ्ठ बंचन तंहं धारैं, पचांगन जंहं मंत्र प्रचारैं।
जंहं लेसहु उच्छाह न जग्गैं, भिदि तंहं कृत्य उपक्रम भग्गैं ॥४९॥
त्रिक जो इक व्हैहै प्रभुता ही, दब्ब सबन तोहु सठ दाही।
नृपमें सक्ति त्रय हि भास्यो नन, जातनैं दबि रहे निज पर जन ॥५०॥
सारन सोंड जैत खित्तल सह, ए चउ व्हैन रहै न पट्ट यह।
निम्म तनय तोग हु भट नामी, सिरहि सदा मन्नैं निज स्वामी ॥५१॥

बूँदी के राजा के अन्तःकरण में बाल्यावस्था से जो क्षमा का गुण था वह अच्छा था पर अब वही गुण दया के साथ मिल कर अवगुण हो गया। जिस राज्य में ऐसी प्रभुता की छवि हो वहाँ दुष्ट लोग इस कमजोरी को परख कर दुष्टता फैलाते हैं। धूर्त और ढीठ लोग वहाँ ठगने का कार्य करने लगते हैं जहाँ राज्य के पाँच अंग विफल हो जाते हैं। जिस राज्य के राजा की उत्साह रूपी तीसरी शक्ति नहीं जगती वहाँ कार्य के आरंभ में ही हानि होने लगती है। यदि प्रभुशक्ति, मंत्रणा शक्ति और उत्साह शक्ति ये तीनों शक्तियाँ एक हो जाती हैं तो प्रभुता अतिरिक्त रूप से शक्तिशाली हो उठती है। ऐसा शक्तिमान राजा ही दुष्टों को दहन करने वाला होता है। जब राजा सुभांडदेव के राज में तीन शक्तियों की कमी देखी तो उसके अपने और पराये लोग दबे हुए नहीं रहे। यह तो राज्य का भाग्य थोड़ा अच्छा था कि वहाँ हाड़ा सारण, सोंडदेव, जैत्रसिंह और खटोड़ खितलशाह जैसे चार लोग थे। यदि ये नहीं होते तो राज्य ही न रहता। एक हाड़ा निम्मदेव का सुयोग्य पुत्र तोगदेव था जो राजा को अपना स्वामी मानते हुए स्वामीभक्त बना रहा और राजाज्ञा को शिरोधार्य करता रहा।

दोहा

तिम नवब्रह्म रु सेव तंहं, अमर बिजय चउ एहु।
निज मनकरि इच्छै नृपहि, जुरे इतर निज जेहु ॥५२॥

इसी तरह हाड़ा नवब्रह्म, सेव सहित अमरसिंह और विजयसिंह ये चारों भी अपनी इच्छा से राजा के पक्ष में बने रहे अन्यथा राजा के अपने बांधव और स्वजन भी उससे विमुख हो कर दूसरे पक्ष से जा मिले।

इतिश्रीवंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे पंचम राशौ वीतिहोत्र-वसुधेश्वरबीज्यनबीजहड्डाधिराडस्थिपाल वंश्यानुवंश्याविहितव्याख्या-नाऽवसरव्याहार्यबुन्दीनरेन्द्रसुभाण्डदेव चरित्रे ऽप्राप्तराज्याऽक्षयराजाद्यग्रजत्रय बुन्दीद्रङ्गदुर्गादि सप्रसभसमाक्रमण चर्मकारपारवश्यानङ्गीकृता-ऽऽधिपत्योदयसिंह बुन्दी कोटा गैणोली पुर ग्राम प्रकरसमासादन ज्ञात-युवावस्थबुन्दीशतितिक्षातिशयपृथ्वीपरिलुब्धस्वपर सामन्तस्वस्वसीमा-वृद्धिविस्तारण दृष्टेतराऽपूर्वलाभप्रत्युततत्प्राप्तिप्रतीपपृथ्वीशपितृव्यक-गाङ्गेयगृहीतधुरधारकमहामनोनिम्मदेव प्रधनप्रहरणप्रघातप्राप्तिपश्चाद्द्वि-तीया ऽब्दावसान समयतनुत्यजन राणाकुम्भकर्णाऽमरदुर्गा दिबुन्दीसीमा-प्रदेशसमाक्रमण।

श्री वंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण की पंचम राशि में अग्निवंशी चहुवान वंश वर्णन के कारण हड्डाधिराज अस्थिपाल के वंश और वंश की शाखाओं की कथा बताने के समय के वचनों में बूँदीनेरन्द्र सुभाण्डदेव के चरित्र में राज्य नहीं मिलने से अक्षयराज आदि तीन बड़े भाइयों का बूँदीनगर और गढ़ आदि को हठ सहित दबाना, चमार के वशीभूत होकर राजापद को अस्वीकार करके उदयसिंह का बूँदी, कोटा और गैणाली के पुर और ग्रामों के समूह को लेना, युवावस्था में बूँदीश की अत्यन्त क्षमा को जानकर पृथ्वी के लोभी अपने और पराये उमरावों का अपनी-अपनी सीमा को बढ़ाना, दूसरों का अपूर्व लाभ देखकर उलटा उस प्राप्ति के विरुद्ध भीष्म की ग्रहण की हुई धुर को धारण करने वाले राजा के काका बड़े उदार मन वाले निम्मदेव का युद्ध में शस्त्रों के घाव पाये बाद दूसरे वर्ष के अन्त समय में शरीर छोड़ना, राणा कुम्भकर्ण का अमरगढ़ आदि बूँदी की सीमा के प्रदेश को लेना, खीची और डोड दोनों शत्रुओं का बूँदी के वशवर्ती आटोण और रहलावण आदि प्रान्तों का मालिक होना, इकट्ठे मिले हुए प्रांत को और उणियारा आदि नगर के प्रदेशों को मन से आधा आधा बांट कर दहिया और तोमर दोनों शत्रुओं का नैणवा नगर को सेना से घेरना, उसके किलादार बूँदीश के मामा दहड़ जैत्रमल्ल का उन शत्रुओं की सेना को भगाना, रोकने वाले निम्मदेव के मरने के बाद अक्षयराज का बारम्बार मालिक की भूमि को काटना।

खिच्चि डोड द्विषद्द्वय बुन्दीवशाऽऽटोणि रहलावणि प्रभृति-प्रान्तप्रभूभवन मनोविभक्तलब्धिनैमैकी भूत प्रान्तोन्नयनपुर प्रमुख-

पत्तनप्रदेशदभिक तोमर द्वेषिद्वन्द्व दुग्द्रङ्गवाहिनीवेष्टन तद्दुर्गपतिबुन्दीशमा-
तुलदहडजैत्रमल्लतत्प्रत्यनी कपृतनाप्रद्रावण रोधकनिम्मदेव मरणाऽनन्त-
राऽक्षयराज पुनः पुनः प्रभुपृथ्वीपरिच्छेदन निम्मदेव नन्दनतोगदेव विभा-
गप्राप्तपितृपदनवग्रामपुरस्वामितासमा सादन विभ्रष्टबुन्दीराज्याऽवशिष्ट-
रक्षकसमालोचितदेश काल ज्ञातगतदौर्लभ्यतत्तदर्थप्रत्यर्पितमनोमात्रा-
ऽवमतस्वस्वसामन्तसमाक्रान्तप्रान्तस्वामिधर्मसेवन समर्थसारण जैत्र
सम्मतिसङ्गतप्रतिभा प्रगल्भमन्त्र महोदधिशाकुन सुज्ञानबर्तिष्यमाण
दूरदर्शिमहामात्यमन्त्रिमणिवणिक्क्षेत्रल बुन्धुत्रय वर्जितविमुखीभूतसमस्त
स्वभटवर्गस्वामिभासमानयन तिरस्कृताग्राह्यलब्धिलोभलाल निम्म जाबदु
संतानस्वामिसेवासमुत्कर्षसूचन वैश्यसचिवोदय परिच्छिन्न-
पूर्वस्वपितृप्राप्तमक्षिपददुर्गप्रतिनीषुजैत्रसिंह निवारण मन्त्रिराजक्षेत्रल
समनृपानङ्गीकारसमयसीमासामीप्यवर्तिसामन्तापत्यचालुकी राष्ट्रकूटी
द्वितीयाद्वय नरेन्द्रभारमल्ल परिणायन नृपाऽनुजसोण्ड राजकोट-
नामग्रामैकग्रामणीचालुकरत्नसिंहकन्याश्यामकुमारी पाणिग्रहण
विवाहशकज्ञापनाऽनन्तरानूढलोहठ कर्मचन्द्र कैशोर्यसंस्थासूचन
भूभुजङ्गभारमल्ल ऽपत्यचतुष्क सम्भवाऽवसरकुमार-नारायणदास नरबद
कन्यामदनकुमारी तोकत्रय चालुकी प्रसबन कुमारैकनरसिंह राष्ट्रकूटी
जनन विख्यापन।

निम्मदेव के पुत्र तोगदेव का विभाग में आये हुए पिता के स्थान नवगाँवाँ नगर का स्वामित्व प्राप्त करना, बूँदी के राज्य को भ्रष्ट हुआ देखकर बाकी के राज्य की रक्षा करने के लिए देश काल को समझ गये हुए का मिलना दुर्लभ जान, जो जो प्रांत जिन जिन ने दबाये थे उनको वे वे प्रांत केवल मन से अपमान किये हुए अपने उमरावों को नहीं देकर स्वामी धर्म का सेवन करने में समर्थ सारण और जैत्र की सम्मति के साथ बुद्धि में प्रबल सलाह के महा समुद्र शकुन के श्रेष्ठ ज्ञान वाले दूरदर्शी, प्रधान मंत्रि शिरोमणि वैश्य क्षेत्रल का तीन भाइयों को छोड़कर बाकी के विरुद्ध हुए सब उमरावों के समूह को स्वामी की सभा में लाना, अग्राह्य लाभ के लोभ का तिरस्कार करके लाल, निम्मदेव और जावदू की संतान का स्वामी सेवा में बड़प्पन दिखाना, वैश्य सचिव का पहले अपने पिता को मिले हुए उदयसिंह के छीने हुए मक्कीदगढ़ को फिर से लेने की इच्छावाले जैत्रसिंह को मना करना,

बराबर के राजाओं के अस्वीकार करने के समय में मंत्री खेता का अपनी सीमा के समीपवर्ती सामन्त की पुत्री चालुकी और दूसरी राठौड़ी दोनों से नरेन्द्र भारमल्ल का विवाह करना, राजा के छोटे भाई सौण्ड का राजकोट नाम एक ग्राम के पति सोलंकी रत्नसिंह की कन्या श्यामकुमारी से विवाह करना, विवाह के सम्वत् की सूचना किए बिना विवाहे लोहठ और कर्मचन्द्र के किशोर अवस्था में मरने की सूचना करना, भूपति भारमल्ल के चार सन्तानों के जन्म के समय कुमार नारायणदास, नरबद और कन्या मदनकुमारी तीनों बालकों का चालुकी से प्रकट होने और एक कुमार नरसिंह का राठौड़ी से जन्म होने की प्रसिद्धि करना।

परिणीतचालुकी कशोण्ड सन्तानाभावसमर्थन मण्डपपुर-राजराष्ट्रकूटयोधराजनिजनामाङ्कनवीनयोधपुरनामनगर निर्म्माण-सम्वत्सरसङ्ख्यान योधराजपुत्रबीका बीदा सोदरद्वय जाङ्गलप्रदेशप्रस्थान तत्तृतीय पुत्र देवीदास हड्डवतीजनपदसमीपखिच्चिवाटदेशाधिपति-खिच्चिराजाश्रितीभवन तद्भाविपौत्रपृथ्वीराजवंश्याद्यावधिगागरणी-पुरप्रवर्तमानदेवीदासपौत्राष्ट्रकूटकुलप्रभुकनिष्टभ्रातृश्वाशुर्यसम्बन्धि-तास्फुटीकरण, चित्रकूटायत्तामरदुर्गाध्यक्षबुन्दीसीमान्तरविप्लव विस्तरण रुद्धतज्जिघांसुनृपप्रस्थानमन्त्रिराजप्रस्थापिताकृतकार्यविमुखभटवर्ग-प्रत्यागमन शक्तित्रय विहीननृपक्षमा दया गुणदोषीभावप्रकटन मन्त्रिराज-क्षेत्रल समुपेतसारणा दिदायाऽष्टक साधारणस्वामिनृपतानिर्वाहण मष्टादशो मयूखः ॥१८॥ आदितः पञ्चषष्ट्यत्तरैकशततमः ॥१६४॥

चालुकी को ब्याहने वाले सोंड की संतान के अभाव को पुष्ट करना, मंडोउर के राजा राठौड़ जोधा का अपने नाम से नवीन नगर जोधपुर बसाने के सम्वत् की गणना करना, जोधा के पुत्र बीका और बीदा दोनों सहोदर भाइयों का जांगल देश में जाना, उसके तीसरे पुत्र देवीदास का हाड़ोती देश के समीप खीचीवाड़ा देश के पति खींची राजा के आश्रित होना, उसके आगे होने वाले पौत्र पृथ्वीराज का वंश इस समय तक गागरणी पुर में वर्तमान है उस देवीदास के पौत्र के राठौड़ कुल में प्रभु (रावराजा रामसिंह) के छोटे भाई के ससुराल के संबंध को स्पष्ट करना, चित्तौड़ के वशवर्ती अमरगढ़ के अध्यक्ष का बूँदी की सीमा के भीतर लूट खसोट फैलाना, उसको मारने की

इच्छा वाले राजा के प्रस्थान को रोककर मंत्रीराज के भेजे हुए उमरावों का कार्य के बिना विमुख होकर लौट आना, तीन शक्तियों के बिना राजा के क्षमा और दया गुण का दोष होना प्रकट करना, मंत्रीराज खेत्तल सहित सारण आदि आठ भाइयों का साधारण स्वामी के राजापन को निबाहने का अठारहवाँ मयूख समाप्त हुआ और आदि से एक सौ पैंसठ मयूख हुए।

प्रायो ब्रजदेशीय प्राकृत मिश्रित भाषा

दोहा

विधि बिलसित जानैं न जग, रक्खैं हित अनुराग।
कति सुभांड लखि अब कहैं, भू रहिहै जो भाग॥१॥

विधाता ने जिसके भाग्य में राजा बनना लिखा ऐसा वह राजा सुभांडदेव स्वयं इतना निश्छल था कि वह जगत के छल छंदों को नहीं जान कर सभी को स्नेहपूर्वक रखने वाला था। उसके कार्य देख कर लोग कहने लगे कि अब यदि थोड़ी बहुत भूमि बूँदी राज्य में रही तो वह मात्र भाग्य के बल से ही बचेगी।

पादाकुलकम्

अधिप हु मरन जात यह अक्खी, स्वामि सुभांड करहु सब सक्खी।
सिसु की कै न परख सब सच्ची, कति इम बत्त गई रहि कच्ची॥२॥

समरअग्रज हु अचल अनुज सम, तदपि यहै दोउन अंतरतम।
नृप रन आनि बनैं तंहं निबहैं, सोंड निजन दुख दूर हु नसहैं॥३॥

यातैं जब जब सचिव अटक्किय, तब तब तास कथित हित तक्किय।
नृप को कथितहु अनुज निबाह्यो, सचिव मानि संकोचहु साह्यो॥४॥

पूर्व राजा बैरीसाल ने युद्ध में जाने से पहले सभी के सामने यह कहा था कि यदि मैं रणभूमि से वापस जीवित नहीं लौटूँ तो मेरे बाद सुभांडदेव को बूँदी का राजा बनाना। उस समय सुभांडदेव बालक था। बालक की परख सच्ची नहीं होती इसलिए उसके निर्णय सारे कच्चे निर्णय होते। बात पूरी नहीं बन पाती। यदि अग्रज सुभांडदेव भी अपने छोटे भाई सोंडदेव जैसा अचल वीर होता तो भी बात बन सकती थी पर असल में दोनों में बहुत अंतर था। राजा के सामने जब जब भी युद्ध की स्थिति बनती वह उसे टाल देता और यह देख देख कर सोंडदेव अपने दुःख की परवाह नहीं करता था पर उससे यह सहन नहीं होता और वह मात्र मन मसोस कर रह जाता क्योंकि

मंत्री खितलशाह भी उसे युद्ध न करने की सलाह देता और वह राज्यहित में चुप हो जाता। सोंडदेव अपने राजा की आज्ञा मानता था इसलिए संकोचवश मंत्री की बात भी उसे माननी पड़ती।

जो नृप होतो अनुज सुद्ध जम, करतो तो मरि मारि कुलक्रम।
नृप रु सचिव अब पाइ नियंत्रिक, धूनैं सिर मनमारि सदा धक॥५॥

मेवारन यह डमर मचावत, अतिपुकार जन पैं जन आवत।
बनिक हुतो जब कखुक ब्याधि बस, रन खिन तब नृपकैं रचाई रस॥६॥

सेना सजि हंकिय दुव सोदर, पर्‌यो कलह थानांपुर परिसर।
हिंडोली लुट्टन श्रम हारे, मिले तत्थ जावत मेवारे॥७॥

यदि राजा सुभांडदेव की जगह पर उसका छोटा भाई सोंडदेव बूँदी का राजा होता तो वह मरने मारने की अपनी कुल मर्यादा की जरूर रक्षा करता पर राज्य के कमजोर भाग्यवश ऐसा नहीं हुआ। पूरा राज्य कर्म राजा और मंत्री के नियंत्रण में था इसलिए सोंडदेव अपने क्रोध को मन मार कर दबा लेता यद्यपि वह उनके कई निर्णयों पर अपना सिर अवश्य धुनता। राज्य में मेवाड़ वालों ने उपद्रव मचा रखा था। प्रतिदिन लोग आ आकर सहायता की पुकार करते पर व्यर्थ उन्हें राजा की ओर से कोई सहायता नहीं मिलती। इसी बीच कुछ दिनों के लिए मंत्री खितलशाह व्याधिग्रस्त हो गया। इस अवधि में सोंडदेव ने राजा के मन से युद्ध का भय निकाल कर उसमें रण के रस का संचार किया। सेना को सज्जित कर दोनों भाई सुभांडदेव और सोंडदेव ने युद्ध के लिए प्रयाण किया और थाना नामक पुर के समीप अपना पड़ाव डाला। हिंडोली नगर को लूट कर जाते हुए थके हारे मेवाड़ वाले उन्हें मिल गए।

सुनि सारन पहुंच्यो बंसीसन जैत न पूगि सक्यो खट जोजन।
जो मग मांहिं सु संग तोग भट, सत्रु मिलत बेढे अति संकट॥८॥

दिन अवसेस रहत घटिकादस, रच्चे प्रबीरन रन समुचित रस।
मिलि मैंनन इकसहंस चमू उत, सहंसच्यारि सुभटन इत संजुत॥९॥

दिट्ठिजुरत बज्जिग असि दारुन, रन हुव अचल हड्ड कोपारुन।
फैर इक्क तुपकन कछु फुट्टे खापन तदनु काल अहि खुट्टे॥१०॥

इसकी खबर पाते ही हाड़ा सारण भी कछवाहा वंशीधर को साथ ले कर थाना के पड़ाव पर राजा की सहायता को पहुँचा। इस समय छह योजन की दूरी पर होने से जैत्रसिंह अवश्य नहीं पहुँच पाया। मार्ग में जो भी शत्रु मिले उन्हें वीर तोगदेव काटता हुआ आ मिला। दूसरे दिन दस घड़ी सूर्यास्त में शेष रहते इन वीरों ने युद्ध आरंभ किया। राजा के साथ बूँदी की चार हजार की संख्या में सेना थी। उसमें एक हजार मीणाओं के दल को और शामिल कर लिया गया। आमना-सामना होते ही अथवा नजर पड़ते ही तलवारों की जोरदार भिड़ंत आरंभ हुई। हाड़ाओं ने क्रोध में आरक्त नेत्रों से पूरे शौर्य का प्रदर्शन किया। धमाकों के साथ कुछ बंदूकें चलीं और म्यानों से काले सर्प की तरह लपलपाती तलवारें निकलीं।

मिलतहिं बिकल भजे खल मैंनें, प्रचुर सहे न गये असि पैनैं।
भजत गमार लगे अरि भज्जन, लुट्टन पटु जुट्टन जिन्ह लज्ज न॥११॥

दब्बत ही एडिन इन्ह दोरत, एहु मुरे कति लज्ज अहोरत।
बज्ज्यो प्रखर तहां बलि असिबर, परिग बिभिन्न लुत्थि लुत्थिन पर॥१२॥

आयउ काम गोरि गिरधर इत, जु लिखि सोंड पहुंच्यो घाटिप जित।
बाहुल तस तरवारि बिदारिय, याके असि तस सीस उतारिय॥१३॥

पर दुर्भाग्य से इस भीषण भिड़ंत के होते ही मीणा सैनिकों का दल डर कर भाग खड़ा हुआ। उनसे तलवारों के तीखे प्रहार नहीं झेले गए। इन गँवारों के भागते ही शत्रुदल भी भागने लगा। जो लूट-पाट करने में चतुर थे उन्हें युद्ध में नहीं भिड़ सकने की तनिक भी लज्जा नहीं आई। वे एड़ियों को दबाते हुए (पीछे हटना) साथ के साथ भाग खड़े हुए पर उनमें से कुछ लज्जा के कारण वापस मुड़ कर आए। मुड़ते ही वापस मुकाबला हुआ। तलवारों के प्रखर प्रहारों की झड़ी लग गई और रणभूमि में मरे हुए योद्धओं के शव पर शव पड़ने से शवों का ढेर लग गया। इस भीषण युद्ध में गौड़ गिरधर काम आया। उसे मरा देख कर सोंड ने लपक कर मेवाड़ के लुटेरों को जा लिया। उसने इन शत्रुओं के बाहुलों (हाथ के कवचों) को अपनी तलवार से काट डाला और कुछ प्रहारों से शत्रुओं के सिर उतारे।

सुंदर गोर गेरि अरि सत्तल, मोरयो गिरधर बैर महाबल।
बंशीधर कूरम मृत हय बढि, चपल धाटिपति वाह लयो चढि॥१४॥

माधव भ्रात हुल्ल हरि मार्‌यो, बलिय तोग तस बाजि बिदार्‌यो।
लुंटाक रु सत्तल हरि लोटत, घोटक जुग मोटक पग घोटत॥१५॥

पुनि मेवार भटन छुट्टे पग, मारे इन्ह बहु पहुंचि पहुंचि मग।
धीर सल्ह सारन अग्गैं धपि, अट्टैं मग ठट्टे जय आलपि॥१६॥

रिपु बिच परे मरे बहु मारत, मरे कतिक कातर मातर मत।
गाढचकित अरि अट्ठ लये गहि, बुल्ल्यो नृप अब चलहु बिजय बहि॥१७॥

इसी बीच गौड़ सुन्दरदास ने शत्रु सातल को जा घेरा और उस महाबली ने गौड़ गिरधर का वैर लिया। तभी वंशीधार कछवाहा अपने घोड़े के मारे जाने के बाद चपल गति से आगे बढ़ कर मृतक शत्रु सातल के घोड़े पर सवार हुआ। नवरंग के वंशज और राजा के भाई माधवसिंह हाड़ा ने अपने सामने आए हुल्ल जाति के क्षत्रिय हरिसिंह को काट गिराया और इसी समय तोगदेव हाड़ा ने उसके घोड़े को मार डाला। सातल, हरिसिंह जैसे राज्य में जबरन लूट-खसोट करने वालों के रणभूमि में गिरते ही और साथ ही दो घोड़ों के कटते ही मेवाड़ की सेना के पाँव उखड़ गए। वे भागे और उनका पीछा कर हाड़ाओं ने शत्रुदल के कई सैनिकों को मार गिराया। उधर भागते हुए शत्रुओं के आगे पहुँच कर राठौड़ धीरदेव, प्रमार सल्ह और सारण हाड़ा ने उनका रास्ता रोक दिया और उन पर टूट पड़े। मरने-मारने का निश्चय कर इन वीरों ने कई योद्धाओं को युद्धभूमि में सामना करने में अक्षम, कायर मति वाले कायरों को मार गिराया। इस तरह कई शत्रुओं को मार कर हाड़ा वीरों ने शत्रुदल के आठ सामन्तों को जीवित पकड़ लिया। इसके बाद राजा ने कहा विजय प्राप्त कर अब वापस बूँदी चलते हैं।

जंपिय सोंड नैर प्रभु जावहु, सेना बलि निज संग सिधावहु।
हम सतपंच अमरगढ़ हंकिहिं, इक जो जतन बैनैं तो अंकहि॥१८॥

जतन कोन सारन खिजि जंपिय, पहु अनुजात सु सुनत पयंपिय।
तुम हम चलि गढ द्वार निसा तम, कै दिन अरिन खुलाइ अरर क्रम॥१९॥

पैठैं सहज दुर्ग निज पावैं, नृप आगम इम सफल बनावैं।
अंस थप्पि सारन मन्त्री यह, आनि इतें जैत हु पहुंच्यो वह॥२०॥

मंत्र सु मन्त्रि चलन किन्नों मन, नृप तब कहिय हमहु जैहैं नन।
जैत कह्यो इतनों दल जावैं, नृप को हठ तब हमहिं नसावैं॥२१॥
तदपिन नैंक महिप मन्त्री तब, जैत सबन पहु संग दयो जब।
संग न जान लगो हठि सोहू, तिन दिय सपथ संग किय तोहू॥२२॥

तभी सोंडदेव ने निवेदन किया कि स्वामी! आप बूँदी नगर को जाएँ आपके साथ शेष सेना भी जाए पर आप यह आज्ञा प्रदान करें कि हम लोग पाँच सौ सैनिकों के साथ अमरगढ़ पर जा कर आक्रमण कर सकें। और इस तरह हम भी एक आध अच्छा कार्य राज्यहित में संपन्न करने का यत्न कर सकें। इस पर हाड़ा सारण ने खीज कर पूछा कि क्या यत्न करना है? यह सुन कर राजा के छोटे भाई सोंडदेव ने जवाब दिया कि तुम और मैं अपने दल सहित रात्रि के समय अमरगढ़ के द्वार पर जाएंगे और वहाँ जा कर इन बंदियों को (मेवाड़ वालों) आगे कर शत्रुओं से द्वार खुलवा लेंगे। इसके बाद तो हम गढ़ में घुस कर अपना दुर्ग वापस पा लेंगे और यों राजा के राजधानी से बाहर निकलने के प्रयास को सफल कर देंगे। यह योजना सुनते ही सारण ने सोंडदेव का कंधा थपथपाया और भाग्य के संयोग से इसी समय जैत्रसिंह वहाँ आ पहुँचा। उसने भी योजना सुन कर मंत्रणा की ओर चलने का मन बनाया तभी राजा ने कहा लेकिन हम नहीं जाएँगे। इस पर जैत्रसिंह ने कहा कि जब हम लोग जा रहे हैं दल सहित, तो फिर राजा का नहीं जाने का हठ भी तोड़ेंगे। इस पर भी राजा ने उनकी एक नहीं सुनी तो सभी ने एक राय हो कर जैत्रसिंह को राजा के साथ जाने की कही पर जब जैत्रसिंह ने राजा के साथ जाने से मना किया और कहा कि मैं तुम लोगों के साथ अमरगढ़ जाऊँगा इस पर सभी ने उसे शपथ दिला कर राजा के साथ बूँदी के लिए रवाना किया।

काका जाइ भतीज मरे कलि, बिजय भले लै जस अछुत्त बलि।
यह न उचित हमरे मन अै हैं, जदपि सबन टारे टरि जैहैं॥२३॥
भनि इम जैत मुर्यो लै भूधन, आये सब निज नाह आयतन।
भट सतपंच सज्जि उत भू पर, सारन सोंड तोग अग्रेसर॥२४॥
अरि जे अठु गहे कातर अति, पटा दैन इततैं कहि तिन प्रति।
पहुँचत अमरदुर्ग पुर परिसर, बढे अग्ग तजि हयन बीर बर॥२५॥

अरि अट्ठ न कटिपट गहि सह असि, हिय जमदड्ढ छुवात चले हसि।

..॥२६॥

यह कैसा न्याय कि काका तो जा कर युद्ध में मरे और उसका विजय का अपूर्व यश भतीजे राजा को मिले। मेरा मन तो इसे उचित नहीं मानता। इस पर भी वे हमें टाल देंगे तो टल जाएँगे। राजा को इस प्रकार समझाते हुए जैत्रसिंह ने वहीं से वापस मुड़ने का प्रस्ताव रखा। सुनते ही राजा मान गया और जैत्रसिंह रास्ते से मुड़ कर वापस वहाँ आया जहाँ हाड़ा सारण आदि लोग थे और राजा अपने घर बूँदी गया। वहाँ आ कर पाँच सौ सैनिकों के दल को सज्जित किया और उनके नायक सारणदेव, सोंडदेव और तोगदेव को बनाया। मेवाड़ के शत्रुदल से जिन आठ योद्धाओं को बंदी बनाया था उन्हें जागीर देने का लालच दे कर साथ लिया। अमरगढ़ के समीप पहुँच कर इन वीरों ने अपने घोड़े वहीं छोड़ दिये और वहाँ से पैदल ही गढ़ की ओर चले। उन्होंने उन आठों बंदियों को उनके कमरबंधों से पकड़ कर आगे किया और पीछे से कटार सटा दी।

जंपिय ढिग अप्पन पहुँचे जब, तुम इम श्रमित देहु हेला तब।
हनन आत हड्डुन हम हारे, अररखुल्लि लेहु ब रखवारे॥२७॥

चविहो इम न तोसु मन चुरि हैं, मोरि बसु न लुट्टत बसु मुरि हैं।
पटा कथित नहिं तो तुम पैहो, बनि हमरे सुख आयु बितैहो॥२८॥

इम कहि धरि मेवार पग्घ इन, डिगरहि बंधि सिसिर ऋतु डड्डिन।
तमी रहत इक जाम निबिड़ तम, दुर्ग द्वार पहुँचे दायक दम॥२९॥

कथित रीति अट्ठ न हेला किय, बदलि गिरा एकति तिम बुल्लिय।
जामिक सुनि प्रतिहार जगायो, अक्खिय तिहिं गढ पतिनन आयो॥३०॥

फिर बंदियों को समझाया कि जब हम गढ़ के प्रवेश द्वार पर पहुँचे तब तुम थकी-थकी आवाज में भीतर वालों को पुकार कर कहोगे कि हमें इधर आते हुए रास्ते में हाड़ाओं ने मारा अब तुम शीघ्र दरवाजा खोल कर हमारी रक्षा के लिए हमें अंदर लो। यदि तुमने ऐसा नहीं कहा तो यह जो धन तुमने लूटा है वह भी नहीं जाएगा और वापस जीवित तुम लोग भी नहीं जा पाओगे। और यदि तुमने हमारे कहे अनुसार किया तो जागीर पाओगे और

सुखपूर्वक अपनी शेष आयु काट सकोगे। बंदियों से ऐसा कह कर इन हाड़ा पक्ष के योद्धाओं ने मेवाड़ की पगड़ी पहनी, डाढी बाँधी और अपना ऐसा भेष बनाया जैसे वे भी मेवाड़ी हों। रात्रि के एक प्रहर शेष रहते घने अंधकार में ये शत्रुओं को दंड देने वाले हाड़ा गढ़ के प्रवेशद्वार पर पहुँचे। पूर्व निर्देशानुसार उन आठों बंदियों ने उसी तरह पुकार की और अपनी आवाज को बदल कर नाटकीय ढंग से एक ने वही कहा जो सिखाया गया था। गढ़ के प्रहरियों ने यह सुनते ही द्वारपाल को जगाया और उससे कहा कि गढ़पति के जन आए हैं अर्थात् मेवाड़ के राणा के योद्धा आए हैं।

किम ताबिनु अब खुलैं किंवारहु, प्रातहि सब तससंग पधारहु।
गढपति हनिय कह्यो तिन्ह गाढैं, बचे कतिक हम तिन्ह अब बाढैं ॥३१॥

लाइ निसैंनिन गढ अरि लैहैं, अंदर जो न लरन हम अैहैं।
बिक्खि निजन तिन अरर बिछोरे, द्वार खुलत प्रबिसे भट दोरे॥३२॥

कछुक हुते रच्छक ते कट्टिय, द्वार किंवार पैठि गढ दट्टिय।
भटन घुराइ अभय जय भेरिय, फबत सुभांड आन पुनि फेरिय॥३३॥

अट्ठन तिन इततैं कछु आदर, पायउ इक इक ग्राम बचन पर।
बुंदिय कहि लिय दूत बधाई, पुहवि उचित जित्ते तिन्ह पाइ॥३४॥

किल्लादार तत्थ तोग हि किय, सारन सोंड बुलाये बुंदिय।
तोग सुभट सतपंच सहित तिम, किय बिप्लुत मेवार मुलक जिम॥३५॥

भिल्हड़ा लग लुट्टि रान भुव, धनिक बनिक गहि बहु आनैं धुव।
मंडनदुर्ग सहित पुरमंडल, बिंझोली बेगम लुट्टिय बल॥३६॥

प्रहरियों ने कहा कि तुम्हारी आज्ञा के बिना दरवाजा हम कैसे खोल सकते हैं और यह भी कहा कि दिन उगते ही सारा संग यहाँ से चला जाएगा। यदि तुमने दरवाजा नहीं खोला तो वे तुम्हें मार कर गाड़ देंगे। हम अब बचे ही कितने हैं जो हाड़ाओं को जा कर मारें। यदि हम उनसे लड़ने के लिए गढ़ में नहीं आए तो वे हाड़ा शत्रु शीघ्र ही आ कर गढ़ को सीढ़ियाँ लगा कर ले लेंगे। द्वारपाल ने अपने ही आदमी अर्थात् मेवाड़ी वेषभूषा में उन्हें देख कर गढ़ के किंवाड़ खोल दिये। दरवाजा खुलते ही हाड़ा योद्धा भीतर प्रवेश कर गए। गढ़ में थोड़े ही रक्षक थे उन्हें अपनी तलवार से काट गिराया और द्वार

से घुस कर दुर्ग को फतह कर लिया। फिर इन हाड़ा योद्धाओं ने निर्भय हो कर विजय के नगाड़े बजवाए और राजा सुभांडदेव की विजयाज्ञा सर्वत्र प्रसिद्ध करवा दी। दूत विजय की बधाई ले कर बूँदी आया कि हमारे दल ने अपनी गई हुई पृथ्वी को पुनः अर्जित कर लिया। राजा ने तुरन्त आदेश दिये कि विजित दुर्ग अमरगढ़ का किलेदार तोगदेव को बनाया जाए। फिर राजा ने सारणदेव और सोंदडेव को बूँदी बुलवाया। उन आठों मेवाड़ी बंदियों को जागीर में राजा ने एक-एक गाँव की जागीर प्रदान की जैसा कि पूर्व में गाँव देने का उन्हें वचन दिया गया था। तब तोगदेव हाड़ा ने अपने पाँच सौ सैनिकों के साथ इस क्षेत्र से मेवाड़ की हुकूमत को विलुप्त किया। उसने भीलवाड़ा तक राणा की भूमि को विजित कर वहाँ बहुत सारे धनिक बनियों को पकड़ लिया और उन्हें साथ ले कर आया। तोगदेव ने मांडलगढ़ सहित मांडल का क्षेत्र, बिंझोली, बेघम आदि पुरों को अपने बल से लूट लिया अर्थात् उन पर अधिकार कर लिया।

सत्रु धरनि इम धुम्मि निम्म सुव, हाहाकारकार, दुजननहुव।
गढचित्तोर पुकार असह गत, कुंभरान सज्जिय जन कुक्कत॥३७॥

निम्मदेव हाड़ा के इस सपूत तोगदेव ने इस प्रकार शत्रुओं की भूमि को दबाया और वह शत्रु के घर में हाहाकार मचाने वाला कहलाया। इस लूटपाट की खबर जब पुकार करने वालों ने चित्तौड़गढ़ तक पहुँचाई तो प्रजाजनों की इस पुकार को सुन कर राणा कुंभा ने अपनी सेना को सज्जित किया।

षट्पात्

रायमल्ल रान सुत कहिय हमछत प्रयान किम।
देहु हमहिं आदेस जित्ति हड्डुन अग्गैं जिम।
अमरदुर्ग अपनाइ हड्डु तोग हिं संगर हनि।
अैहैं लहि जस अतुल तात मानस सम्मद तनि।
तस अरज एह मुक्कलतनय सुनि सिराहि गृह रक्खि सुव।
करि छल अनीक इक ठाम करि हड्डुन हनन प्ररुष्ट हुव॥३८॥

राणा के पुत्र रायमल ने कहा कि हमारे होते हे पिता! आपको युद्ध के

लिए प्रयाण करने की क्या जरूरत है ? आप मुझे आज्ञा दें उन हाड़ाओं को मैंने जैसे पहले हराया था उसी तरह अब भी हरा कर आता हूँ। युद्ध में उस हाड़ा तोगदेव को हरा कर अमरगढ़ को वापस अपने अधिकार में कर आता हूँ। रायमल ने ऐसा कह कर राणा के मन को प्रसन्न कर यश अर्जित किया। अपने पुत्र रायमल के निवेदन को मोकल के पुत्र महाराणा कुंभा ने सुन कर उसकी सराहना की। फिर अपने पुत्र को वहीं चित्तौड़गढ़ में रख कर महाराणा कुंभा ने छल विचार कर अपनी सारी सेना को एक जगह इकट्ठा किया जिसकी सहायता से हाड़ाओं को मारा जा सके।

दोहा

थोरो थोरो थप्पिकैं, मंडनगढ़ दल मेलि।
कुंभ छत्र प्रस्थानकिय, हनिबे हड्डन हेलि ॥३९॥
क्रमत रान पतनी कह्यो, ऐहो कब प्रभु अत्थ।
अक्खिय ऐहों हड्डुहनि, तीज श्रावनिक तत्थ ॥४०॥
दंपति कै हो प्रेम दृढ़ परिवृढ इम अतिप्रीत।
कलित सपथ पुनिपुनि कह्यो, तीजन होहिं अतीत ॥४१॥
रानी अक्खिय रान सों, किन्न सपथ मम कानि।
तो मृत गिनि जरिहों तुमहिं, जत्थ अनागत जानि ॥४२॥

महाराणा कुंभा ने अपनी पूरी एकत्रित सेना में से छोटे-छोटे दल बनाकर उन्हें थोड़ी-थोड़ी संख्या में मांडलगढ़ भेजा। जब पर्याप्त संख्या में सेना वहाँ पहुँच गई तो चुपके से बिना बताए महाराणा ने हाड़ाओं के सूर्य को मारने के लिए चित्तौड़गढ़ से प्रस्थान किया। प्रस्थान के समय जब महाराणा की रानी ने पूछा कि हे नाथ! आप वापस कब लौटेंगे ? तो इसके उत्तर में महाराणा कुंभा ने कहा शीघ्र ही हाड़ाओं को मार कर मैं सावन माह की तृतीया (श्रावनी पर्व) को वापस आ जाऊँगा। राणा दंपति के आपस में प्रगाढ़ स्नेह था इसलिए राणा कुंभा ने शपथपूर्वक बार-बार कहा कि आप निश्चिंत रहें मैं सावन की तीज का दिन व्यतीत नहीं होने दूंगा अर्थात् उस दिन अवश्य लौट आऊँगा। यह सुन कर रानी ने आगे कहा कि हे नाथ! आपने मुझसे शपथपूर्वक यह बात कही है कि तीज को आप लौट आएँगे। इसलिए यदि

आप उक्त तिथि को नहीं पहुँचे तो मैं आपको मरा हुआ समझ कर जल मरूँगी।

पतनी प्रति करि इम सपथ, प्रस्थित निस प्रच्छन्न।
हयनडाक द्रुत आइ हुव, सूचित गढ संपन्न॥४३॥

कुहक भाव करि कुंभ को, प्रकट न भो प्रस्थान।
तोग भीर करतो नतो, चतुरंगहिं चहुवान॥४४॥

कछु कहुं कछु कहुं इम कियउ, इत उत थितदल अद्ध।
मंडनगढ तिम जेम निज, बल जोर्‌यो हठबद्ध॥४५॥

कामिनि अग्गैं सोंह करि, अब मंडनगढ़ आइ।
चाहत जय व्हां तैं चढ्यो, स्वीयन गम्य सुनाइ॥४६॥

रानी के साथ इस प्रकार का शपथपूर्वक करार कर राणा कुंभा ने रात्रि के समय प्रच्छन्न रूप से प्रस्थान किया। घोड़ों की डाक के वेग से शीघ्र ही राणा मांडलगढ़ पहुँच कर अपने दल से जा मिला। महाराणा ने अपने प्रस्थान को कपटपूर्वक गुप्त रखा अन्यथा चहुवान (हाड़ा) तोगदेव भी अपने साथ सेना को जुटा लेता। वह ऐसा न कर सका। थोड़ी वहाँ थोड़ा यहाँ इस प्रकार अपनी आधी सेना को इधर-उधर तैनात किया और आधी सेना को अपने साथ ले कर महाराणा कुंभा ने मोर्चा लिया। अपनी रानी के आगे शपथ कर राणा मांडलगढ़ पहुँचा और अपनी विजय की इच्छा से साथ वाले सामन्त योद्धाओं को लड़ने के लिए अपना-अपना गंतव्य सुना कर उन्हें वहाँ जाने को कहा। महाराणा कुंभा ने इस प्रकार अपनी व्यूह रचना को अंजाम दिया।

षट्पात्

अमरदुर्ग उद्देस समय ग्रीखम सायंतन।
करि दल सब एकत्र रान हंकिय इक्कत रन।
अखिलरत्ति बहि अघ्व पाइ उद्दिष्ट प्रभातहि।
बेढ्यो तोपन ब्रात जोरि जंजीरन जातहि।
पठई छ तोप भूपहु प्रथम तोग अमरगढ़ सज्जि तिन।
रजगुन उफान अंदर रुप्यो, कंदर जिम केहरि कठिन॥४७॥

अमरगढ़ के दुर्ग को फतह करने का उद्देश्य ले कर ग्रीष्म ऋतु की एक सांझ को महाराणा कुंभा ने अपनी इकट्ठी की हुई सेना को युद्ध के लिए

रवाना किया। पूरी रात चलने के बाद सवेरा होते-होते उसके योद्धा तोपों के समूह को जंजीरों से बाँधकर खींचते हुए वहाँ ले पहुँचे। पूर्व में बूँदी से राजा ने जो तोगदेव के पास अमरगढ़ छह तोपें भेजी थी उन्हीं तोपों को तोगदेव ने दुर्ग पर तैनात किया और उनके साथ जोश से भरा स्वयं आ डटा जैसे गुफा के भीतर केसरीसिंह कष्टपूर्वक खड़ा हो।

चउदह दिन धमचक्क तोग मंडिय दारुन तम।
न दये आवन निकट कुंभ जोधन रोधन क्रम।
सारन कै जिहिं समय जग्यो बिधिबस संतत ज्वर।
मारि असिन मक्खीद दुर्ग जैत सु लिय दुद्धर।
लाल सुत गत्त जिहिं रन लगिय दुसह हेति आघात दुव।
भंजिकैं तदपि उद्दल भटन हड्डु बिजय जस हेत हुव ॥४८॥

पूरे चौदह दिन तक तोगदेव ने अपनी तोपों के धमाकों से भयंकर मुकाबला किया और इस अवधि में उसने राणा कुंभा के योद्धाओं को दुर्ग के पास फटकने नहीं दिया। इस समय सारणदेव भी उसकी सहायता को नहीं आ सका क्योंकि दुर्भाग्य से इन दिनों वह निरंतर ज्वर से ग्रस्त था। इधर जैत्रसिंह ने अपनी तलवार के बल पर मक्खीदगढ़ को वापस लिया। इस भिड़ंत में लालसिंह के पुत्र को शस्त्र के दो गहरे घाव लगे थे इसलिए घायलावस्था में था। यद्यपि उसने उदयसिंह के सैनिकों को वहाँ से खदेड़ कर भगा दिया और राजा के लिए विजय अर्जित कर यश कमाया।

दोहा

लग्गो जावन सोंड लघु, दैं तंहं सपथ निदान।
बरज्यो निट्ठि सु नृप बनिक, अक्खि तोग आह्वान ॥४९॥

इस समय राजा का छोटा भाई सोंडदेव अमरगढ़ से आए तोगदेव के बुलावे पर जाने को तैयार हुआ पर उसे राजा पुभांडदेव और उसके मंत्री खित्तलशाह बनिये ने शपथ दिला कर रोक लिया।

षट्पात्

दल तोग हु इम दियउ लरहिं द्वापर जिन लावहु।
पै उपहार प्रनष्ट प्रचुर अन्नादि पठावहु।

पत्र लिखित पठयेहु परन लुट्टे लखि पद्धति।
बारबार सुहि बनत गिनैं सब पंथ रुद्धगति।
पठई लिखाइ तब तोग प्रति निरखि बरस आवहु निकसि।
सुनि सोक त्रपा बहि निम्म सुव हुव धुव रन जुज्झार हसि ॥५० ॥

राजा ने यद्यपि तोगदेव की सहायता के लिए सैन्य सहायता भेजी पर वह इतनी न्यून थी कि उसके जीतने में संदेह था। यही नहीं जो खाद्य सामग्री भेजी वह थी तो प्रचुर मात्रा में पर अन्न सड़ा हुआ था। तोग ने कई पत्र लिख कर भिजवाए पर उन्हें शत्रुओं ने मार्ग में ही लूट लिया। उसने कई दिनों तक सहायता के लिए राह देखी पर शत्रुओं ने सारे मार्ग अवरुद्ध कर दिये थे। ऐसे समय में बूँदी के राजा ने तोगदेव को पत्र लिखा कि उचित अवसर देख कर दुर्ग से निकल आए। यह सुनते ही शोकग्रस्त और लज्जित हो कर निम्मदेव के इस पत्र ने मन ही मन निश्चय किया कि वह जीते जी दुर्ग नहीं छोड़ेगा चाहे भीषण युद्ध करते हुए वह मारा ही क्यों न जाए।

दोहा

प्रथम अठ्ठ जे लिय पकरि, गिनि निज अप्पिय ग्राम।
कढ्ढि छिन्न ते मुक्कले, बुंदिय सुख बिस्राम ॥५१ ॥
हल्लू कुल संतान हे, मंडनगढ हद मांहिं।
क्रमत कुंभ हड्डुन हनन, निखिल रहे तंहं नांहिं ॥५२ ॥
आइ तोग प्रति कहिय इन, आवन रान उदंत।
पुब्बहि किय अवधान पटु, अद्धरजनि खिन अंत ॥५३ ॥
कढ्ढुन लग्गो तिनहु कों, स्वीकृत बसु अरि संग।
हड्डु हमहु उन उच्चरिय, रचिहैं प्रभुमत रंग ॥५४ ॥

पूर्व में मेवाड़ के जो आठ योद्धा बंदी बनाए गए थे और बाद में उन्हें एक-एक गाँव की जागीर दी गई थी। उन्हें तोगदेव ने चुपके से दुर्ग से निकाल कर बूँदी के लिए रवाना कर दिया ताकि वे बच जाएँ। उधर राजा हल्लू के जो वंशज मांडलगढ़ क्षेत्र में निवास क रहे थे उन्होंने महाराणा कुंभा को जब हाड़ाओं को मारने के लिए आक्रमण करने को जाते देखा तो वे सारे वहाँ से निकल लिये। मांडलगढ़ के क्षेत्र में शेष कोई नहीं रहा। वे सारे वहाँ

से अमरगढ़ तोगदेव के पास आ गए और उन्होंने आ कर उसे आगाह कर दिया कि राणा कुंभा अपनी सेना के साथ तुम पर बढ़ा चला आ रहा है। उन चतुर लोगों ने तोगदेव को सावधान कर दिया कि देखो अन्त समय करीब है। तोगदेव उन्हें भी आठ मेवाड़ी वीरों के साथ वहाँ से सुरक्षित ढंग से निकालने लगा तो यह सुन कर उन्होंने कहा कि हम भी हाड़ा हैं। हम भी अपने राजा के लिए तुम्हारी तरह शत्रुओं से लड़ेंगे।

सपथ करिहु न कढे समुझि, बीच भटन बैठाइ।
सप्त अग्ग पंचहि सतन, पूजे भुज मह पाइ॥५५॥

पट भूखन आयुध प्रमुख, अप्पिय सबनहि आनि।
केसर रंग दुकूल करि, मरन सज्यो सुभ मानि॥५६॥

रमत असिन मारत मरत, जैहों कढि तो जोग्य।
रहों न तो ढिग रानके, भव्य त्रिदिव चहि भोग्य॥५७॥

हड्डुन कुलहिं कलंक व्है, जब छत्रैं भजि जाइ।
तथा बनैं किम तोग सों, लज्ज प्रिया हिय लाइ॥५८॥

इम दृढ करि खट तोप वे, गड्डि धरनि कहुं गूढ।
करि गंगोदक न्हान क्रम, रंजिय प्रमद प्ररूढ॥५९॥

अह पहिलैं किन्नों असन, अनसन सबबिधि अज्ज।
लग्गे दिन की संझ लग, सभट भयो रनसज्झ॥६०॥

जब तोगदेव ने देखा कि मांडलगढ़ से आए राजा हल्लू के वंशज हाड़ाओं ने शपथपूर्वक वहाँ से निकलने को मना कर दिया तो उसने उन्हें अपने योद्धाओं में शामिल कर सभी के साथ बिठाया। इसके बाद सारे पाँच सौ सात योद्धाओं के भुजाओं की उत्सवपूर्वकर पूजा की गई। वस्त्र, आभूषण, शस्त्र आदि तोगदेव ने सभी योद्धाओं को ला कर भेंट किये। इसके बाद उसने अपने वस्त्रों को केसरिया रंग में रंगा और वह वीर योद्धा मरने को मंगल मान कर युद्ध के लिए सज्जित हुआ। यह देख कर मांडलगढ़ से आए हाड़ाओं ने कहा कि हम तलवारों का मरने मारने का खेल अवश्य खेलेंगे। यहाँ से निकलना हमें स्वीकार नहीं। हम अब महाराणा के क्षेत्र के पास रहने को जाने वाले नहीं है हम तो अब स्वर्ग के भव्य भोगों को भोगना चाहते हैं।

यदि हम यहाँ से चुपचाप चले जाएँ तो यह हमारे हाड़ा कुल पर कलंक होगा। अब आप ही कहें कि हे तोगदेव! हम लज्जा को हृदय में बसा कर जीवित रहें। यह हमसे कैसे होगा। इस प्रकार अपनी दृढ़ इच्छा प्रकट कर उन्होंने कहा कि हे तोगदेव! आप इन छह तोपों को जमीन में गड़वा दें। यह कह कर सभी योद्धाओं ने गंगाजल ग्रहण कर स्नान किया और प्रसन्नता के साथ लड़ने को उद्यत हुए। पहले दिन उन्होंने अनशन कर अर्थात् अन्नजल छोड़ कर व्रत रखा और इस दिन के सूर्यास्त तक तोगदेव हाड़ा अपने योद्धाओं सहित युद्ध करने के लिए हठपूर्वक सज्जित हुआ।

इति श्रीवंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे पंचम राशौ वीतिहोत्र-वसुधेश्वर बीज्यवर्णनबीजहड्डाधिराडस्थिपाल वंश्यानुवंश्यविहितवृत्तान्त-व्याख्यानावसरव्याहार्यबुन्दीनरेन्द्रसुभाण्डदेव चरित्रे संदह्यमानस्वप्रजा-ऽवनसामर्थ्यमहीप तदनुज शौर्यमहदन्तरद्योतन, स्वामि सचिव संरोधह्रीण शौण्डदेव वैमनस्यविख्यापन, श्रुतस्वदेशराणापक्षीयवर्द्धितविप्लुतपूत्कार निश्चितरुड्मांद्यवणिक्प्रधानापारवश्यविप्लववर्द्धिष्णुयुयुत्सुसन्नद्ध सैन्य-शौण्ड स्वाग्रजप्रस्थापन बुन्दीवरुथिनी हिण्डोलीशृगालीश्रान्तप्रतिगम्य-मानलुण्टाकगण स्थानाख्यपुरपरिसरप्रधनप्रारम्भण प्रेक्षितपलायमान-स्वसहायीभूतान्त्यजविद्रुतवैरिबलभूयोविनिवर्तन, परपक्षयोधान्तर बुन्दी-वीरगौडिगिरिधर संहरण शोण्ड तद्धाटिधरमुख्यवैरि व्यापादन गौडसुन्दर-दास पारिपन्थिकसत्तल समापन प्राप्तसंस्थार्वकूर्मवंशीधर डमरकरस्वामि-सप्त्या रोहण नवरंग वंशीयमाधव प्रतियोधिहुल्लहरि हनन, निम्मदेव नन्दनतोगदेव तद्वाजि विध्वंसन पलायितपरबलनासीर प्राप्तकार्मध्वजधीर प्रमारसल्ह हड्डुसारण प्रत्यनीकप्रतिरोधन शातितानेकशात्रवबुन्दीवीरवर्ग लुण्टाकभटाऽष्टक निग्रहण सार्थीकृतजैत्र शिक्षा शपथ स्वीकारितस द्मस-रणिप्रतिमोटितवाहिनीकबुन्दीशसहायसङ्गीभूतशूरशतपंच कसन्दानिता-ऽभियात्यऽष्टक संगतिच्छलामरदुर्गनिनीषुविन्यस्त मेदपाटदेश्यवेशोष्णीष-पद्दीभूतदत्तलोभ भय व्याजवाग्विवक्षितसंरुद्धसपत्त्नशोण्ड सारण तोग त्रय याम यामि न्यवशिष्टसन्तमसमयसमाक्रमिष्यमाणदुर्गसमीपसंक्रमण।

श्री वंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण की पंचम राशि में अग्निवंशी चहुवान वंशवर्णन के कारण हड्डाधिराज अस्थिपाल के वंश और वंश की

शाखा की कथा बताने के समय के वचनों में बूँदीनरेन्द्र सुभाण्डदेव के चरित्र में अपनी प्रजा की रक्षा करने में संदेह युक्त सामर्थ्य वाले राजा और राजा के छोटे भाई की वीरता में बड़ा अन्तर होने की सूचना करना, स्वामी और सचिव के रोकने से लज्जित सोंडदेव के उदास होने की प्रसिद्धि करना, महाराणा के पक्षवालों का अपने देश में उपद्रव मचाने की पुकार सुन बनिया जाति के प्रधान को रोग के वश जान, उपद्रव बढ़ाने वालों से युद्ध करने की इच्छा वाली सेना को सज्जीभूत करके सोंड का अपने बड़े भाई राजा को रवाना करना, बूँदी की सेना का हिंडोली को लूटकर पीछे जाने वाले थके हुए लुटेरों के समूह से थाना नामक पुर के पास की भूमि में युद्ध प्रारम्भ करना, देखते ही भगने वाले अपने सहायक अन्त्यजों के भागते ही वैरियों की सेना का वापिस लौट जाना, शत्रुओं के वीरों में से किसी सुभट का बूँदी के वीर गौड़ गिरधर को मारना, सोंड का उन धाड़ायतियों (डाकुओं) के पति मुख्य शत्रु को मारना, गौड़ सुंदरदास का शत्रु सत्तल को मारना, घोड़े का नाश होने पर कछवाहे वंशीधर का धाड़ायतियों (डाकुओं) के पति के घोड़े पर चढ़ना नवरंग के वंशवाले माधवसिंह का शत्रु हुल्ल जाति के क्षत्रिय हरि को मारना, निम्मदेव के पुत्र तोगदेव का उसके घोड़े को मारना, भगे हुए शत्रुओं के आगे जाकर राठौड़ धीर, प्रमार सल्ह और हाड़ा सारण का शत्रुओं को रोकना, अनेक शत्रुओं को मारकर बूँदी के वीरों के समूह का लुटेरों के आठ भटों (वीरों) को पकड़ना, शिक्षा और शपथ से जैत्रसिंह को साथ दे, सेना को वापस लौटाना, घर के मार्ग पर जाना स्वीकार करने वाले बूँदीश की सहायता के लिए इकट्ठे हुए पाँच सौ वीरों से कैद किये हुए आठ शत्रुओं को साथ लेकर छल से अमरगढ़ को ले जाने की इच्छा से मेवाड़ देश का वेश और पगड़ी पहनाये हुए पैदल किये हुए लोभ और भय दिये हुए कैद किये हुए शत्रुओं से कपट की वाणी बोलना स्वीकार कराकर सोंड सारण और तोग इन तीनों का एक प्रहर रात्रि बाकी रहते अन्धकार के समय में गढ़ लेने की इच्छा से उस (गढ़) के समीप जाना।

सन्दानितासहनकपटलसंलापितदुर्गद्वाःस्थ यामिका ऽपावृतवल जबुन्दीबलविशन श्रुतशातिततत्रत्यशत्रुवर्गसंरुद्धाऽष्टक सपत्नार्थ-समर्पितैके क ग्रामदुर्गाक्रामकस्वकीयसामन्तसंघविहि तोचित-प्रसादतत्कोट्टाध्यक्षीकृततोग भूमिभुजंगभारमल्ल शौण्ड सारण बुन्दी-

प्रत्याकारण पुनः पुनर्लुण्टि तमेदपाटजनपदपू ग्राम प्रकरस्वदुर्ग-समानीतनिगडितानेक धनिकवणिग्जनतोग त्रस्तप्रजाप्रभुपाश्वपूत्करण वारितसन्निनत्सुस्वसूनुराजमल्लस्वयमभिषिषेणायिशुराणाकुम्भकर्ण स्वकीयसहधर्मिणी समक्षश्रावणीकतृतीया समयप्रत्यागमन सन्धास्वीकरण प्राणप्रियपभ्वनागमप्रेष्टापावकप्रवेश-प्रतिश्रवण मण्डनदुर्गसम्मेलि-तनानापद्धतिप्रस्थापितसमस्त सैन्यसंगत सन्नद्धप्रच्छन्नप्रस्थितकुम्भ-कर्णाऽमरदुर्गवेष्टन प्रारब्धप्रगुणीकृतप्रभुप्रेषितष ण्नालीयन्त्रयुद्धतोग चतुर्दश दिनावऽधिसपत्त्नसैन्यसमीपसंक्रमसंरोधन तत्समयसारण विषमज्वरापाटवप्रख्यानपूर्वकप्राप्तप्रहरणप्रहारयुग्म प्रतिनीतस्वकीय पूर्वमक्षिपददुर्गजैत्रसिंहो दयसिंह बलविजयन रुद्धशौण्डा ऽभिषेण-बुद्धप्रेष्यपदार्थविघ्नमहीप मन्त्रि प्रनष्टोपहारतोग प्रत्याकारण वाचित-तत्पत्रच्छन्नबुन्दीप्रेषितपरपूर्वस्वीकृतभटाऽष्टक तोग संग्रामसन्धास मादान तिरस्कृतमेदपाटनिवासविज्ञापितराणागमाऽवमतपिहि तनिष्कस-नहड्डू वंशीयवीरपंचक तोग सहायी भवन ह्यःकृताऽशनभूषणाऽऽदिस-मर्चितवीरवर्गबाहुकौङ्कुमी कृतदुकूलगूढनिखातगोपितनालीयन्द्रविहिता-ऽऽहवमुमूर्षुविधेयतोग शर्वरीसमयसंग्रामसज्जीभवन मेकोनविंशो मयूखः ॥१९॥ आदितष्षट्षष्ट्युत्तरैकशततमः ॥६६॥

कैदियों की असह्य कपट की वाणी से द्वारपाल और चौकीदार के किवाड़ खोलने पर बूँदी की फौज का घुसना, वहाँ वाले शत्रुओं को मारकर पकड़े हुए आठ शत्रुओं को एक एक ग्राम देकर गढ लेने वाले अपने वीरों के समूह को उचित पारितोषिक देकर उस कोट (गढ़) का अध्यक्ष तोगदेव को बनाकर राजा भारमल्ल का शौण्ड और सारण को बूँदी बुलाना, बारम्बार मेवाड़ देश के पुर और ग्रामों को लूट कर अपने गढ़ में लाकर अनेक धनवान बनिये लोगों को कैद करने से तोग से डरी हुई प्रजा का अपने स्वामी के पास पुकार करना, गर्जना करते हुए अपने पुत्र रायमल्ल को रोककर, स्वयं युद्ध यात्रा की इच्छा वाले राणा कुम्भकर्ण का अपनी स्त्री के आगे श्रावण की तीज के समय लौट आने की प्रतिज्ञा स्वीकार करना, प्राणप्यारे पति के नहीं आने पर प्यारी का अग्नि प्रवेश की प्रतिज्ञा करना, मांडलगढ़ में शामिल की हुई अनेक मार्गों से भेजी हुई समस्त सेना सहित सज्जीभूत होकर चुपके से प्रस्थान करने वाले कुम्भकर्ण का अमरगढ़ को घेरना, अपने स्वामी की भेजी हुई भाग्य से सफल हुई छह तोपों से युद्ध करके चौदह दिन पर्यन्त शत्रु सेना

को समीप आने को रोकना, उस समय सारण के विषम ज्वर से ग्रस्त होने की सूचना करने के साथ शस्त्र के दो प्रहार पाये हुए जैत्रसिंह का अपने पहिले के मक्खीदगढ़ को लेकर उदयसिंह की सेना को विजय करना, सोंड की युद्धयात्रा को रोक, भेजने योग्य पदार्थों में विघ्न जानकर राजा और मंत्री का नष्ट हुई सामग्री वाले लोगों को वापस बुलाना, उस पत्र को पढ़कर पहले अपनाये हुए शत्रु के आठ भटों को चुपके से बूँदी भेजकर तोगदेव का युद्ध की प्रतिज्ञा लेना, मेवाड़ के निवास को छोड़कर राणा के गुप्त रूप से आने की सूचना करने वाले हल्लू के वंश के पाँच वीरों का चुपके से निकलना नामंजूर करके तोग के सहायक होना, पहले दिन वस्त्र और आभूषण आदि प्रदान कर, वीरों के समूह के भुजों को पूज, केसर में वस्त्र रंगकर, तोपों को भूमि में दबाकर युद्ध में मरने की इच्छा वाले कर्त्तव्य कर्म करने वाले तोग का रात्रि के समय युद्ध में सज्जित होने का उन्नीसवाँ मयूख समाप्त हुआ। और आदि से एक सौ छासठ मयूख हुए।

प्रायो ब्रजदेशीय प्राकृत मिश्रित भाषा

दोहा

मुक्कल सुत पंहं मुक्कल्यो, अप्पन चर इम अक्खि।
आवत हड्डे रंग अब, रुपहु प्रमाद न रक्खि॥१॥

काल निसागत जो कहहु, कालनिसा तुम कोंहि।
सहंसन तुम हम पंचसत, यह अंतर कछु योंहि॥२॥

सावधान रानहु सुनत, चढि चढाई चतुरंग।
सज्ज लखैं हड्डुन सरनि, जयभनि धरनि भुजंग॥३॥

महाराणा मोकल के पुत्र महाराणा कुंभा के पास अपना दूत भेज कर तोगदेव हाड़ा ने कहलवाया कि अब हम हाड़ा रणभूमि में अपनी तलवार के जोहर दिखलाने आ रहे हैं। आप असावधानी छोड़ कर युद्धभूमि में अपने पाँव रोपें। निसा (रात्रि) का काल जिसे कहते हैं वह आप लोगों के लिए कालरात्रि होगी। आप संख्या में हजारों हैं और हम मात्र पाँच सौ पर संख्या कुछ अर्थ नहीं रखती। यह अंतर अर्थहीन है। यह सुनते ही राणा कुंभा सावधान हो गए और उन्होंने अपनी सेना को सज्जित हो कर चढ़ाई करने का आदेश दिया। उन्हें मार्ग में सचमुच हाड़ा युद्ध को तत्पर दिखाई दिये।

जय घोष के साथ अपनी भूमि को अपनी कुंडली में पकड़े हुए वे वीर नाग तनिक भी अविचल नहीं थे।

चटकप्लुतिः ॥ हरिरित्येके ॥ पर्यस्तकुमारललितेत्यपरे

सुनि कुंभ रान सज्ज्यो, गहिरे अनीक गज्ज्यो।
सहंसै अलात सक्खी, रन माहताब रक्खी ॥४॥

छ मुहूर्त चंद्र छायो, उततैं सु तोग आयो।
मिला द्वै हरोल मज्झी, दव खग्ग भुम्मि दज्झी ॥५॥

भिरतैं किवान भासी, कढि चंद्र की कलासी।
हय सूर लेत हल्ली, चपला कि अद्रि चल्ली ॥६॥

बहु ओक सोक बग्गी, सिवकी समाधि जग्गी।
मन बंछि मुंडमाला, झरि त्रि नैण ज्वाला ॥७॥

चलि आइ चौंकि चंडी, रमि सट्ठि च्यारि रंडी।
गन डाकिनीन गोलैं, डिगरी बिहीन डोलैं ॥८॥

क्रमि रत्त मत्त केई, थरकैं पिसाच थेई।
दुवपंच बीर दोरैं, मुरकी अनीन मोरैं ॥९॥

यह सुन कर महाराणा कुंभा सज्जित हुआ और उनकी सेना ने जोरदार गर्जना की। सहसा मशालों की अग्नि प्रज्वलित हो गई और वे चन्द्रमा को युद्ध का साक्षी रख कर बढ़े। आकाश में छह घड़ी चन्द्रमा चढ़ चुका था। इस समय उधर से तोगदेव आया। दोनों वीर आमने-सामने हरावल की अग्रिम पंक्ति में मिले और तलवार की अग्नि से पृथ्वी दाझने लगी। भिड़ते हुए योद्धाओं की तलवारें चन्द्रमा की कला की तरह निकल कर दिखलाई देने लगी। घोड़े और योद्धा धावा बोलने चले। ढेर सारी तलवारें एक साथ चलीं। कई घरों में शोक छा गया और शिव की समाधि टूट गई। मनोवांछित मुंडमाला के लिए महादेव के तीसरे नेत्र से आग बरसने लगी। चौंक कर त्वरा से रणचंडी युद्ध क्षेत्र की ओर लपकी और चोंसठ ही योगिनियाँ खेलने लगीं। डाकिनियों के दल मार्गविहीन इधर-उधर डोलने लगे। रक्त पीकर मस्त हो पिशाचगण रणभूमि में नृत्यमग्न हो गए। बावन भैरव घेर-घेर कर मुड़ कर जाती हुई सेना को फिर से रणभूमि में लाने लगे।

त्रहके टमंकि त्रंबी, बिथुराइ नाद बंबी।
रद बज्जि भीरु रोरी, हिममैं कि नीर होरी ॥१०॥

खिरिजात सूर सौंहैं, भिरिजात मुच्छ भौंहैं।
हसिकैं चुरैल हुंकैं, भजि दूत भूत भुंकैं॥११॥

बढि जात मार बत्ती, कढि जात पार कत्ती।
घट फुट्टि केक घुम्मैं, झट जुट्टि कंठ झुम्मैं॥१२॥

धरि ब्याम रुंड धावैं, गन सम्महे गिरावैं।
खिजि केक लग्गि खेधैं, बरछीन बीर बंधे॥१३॥

तरवारि तोग वारी, दल संहरैं दुधारी।
महि रूंड मुंड पट्टैं, घन नास स्वास घट्टैं॥१४॥

ढोल और तासे बज उठे। नगाड़े बजने की ध्वनि फैलने लगी जिसे सुन कर कायरों के दांत बजने लगे मानों हेमंत ऋतु में ठंडे पानी से फाग (होली) खेलने पर बज रहे हों। रणभूमि में कट कर गिरते हुए वीर शोभा पाने लगे। वीरों की मूँछें-भोहों से भिड़ने लगी। चुड़ेलनें हँस कर हुंकार करने लगी। भूत रूपी दूत भागते दोड़ते कूकने लगे। प्रहारों की मारक क्षमता बढ़ने लगी। तलवारें शत्रु शरीरों के पार निकलने लगीं। मस्तक कटे हुए कई रुंड डोलने लगे जो सामने पड़ने वाले के कंठ पकड़ने लगे। इसी प्रकार कुछ कबंध हाथ फैला कर दौड़ने लगे और सामने वालों को गिराने लगे। कई खीझे हुए वीर पीछा कर शत्रु को अपनी बरछी भालों से बेधने लगे। तोगदेव की दुधारी तलवार शत्रुओं का संहार करने लगी। जिससे रणभूमि कटे हुए सिर और धड़ों से पाटी जाने लगी। कई शत्रुओं के नाक में श्वास घटने लगे।

पल जात तेग पंती, तिरछी कि सब्बु तंती।
मिलि अच्छरीन माला, झुकि खेत देत झाला॥१५॥

गज बाजि भार गैली, फनमाल ब्याल फैली।
ढहि कोल दंत ढीले, लजि कुम्म अंग लीले॥१६॥

फटि फीलमत्थ फांकैं, ढरि कुंभ छोनि ढांकैं।
किलकैं बिरूप काली, लहि गत्त रत्त लाली॥१७॥

असिधार झार इक्खे, तरकैं फुलिंग तिक्खे।
जित रान हत्थि जान्यों, तित तोग जंग तान्यों॥१८॥

ढिग गो बढाई बाजी, उलटात ब्रात आजी।
इक सत्रु मिच्छ आयो, रन चोगुनों रचायो॥१९॥

शत्रु के माँस को सीधी पंक्ति सा काटने को तलवारें पार निकलने लगीं पर साबुन से पार होती ताँत की तरह मांस तिरछा कटने लगा। अप्सराएँ मिल कर वीरों को वरमाला पहनाने के लिए रणभूमि में झुक-झुक कर बुलाने के इशारे करने लगीं। हाथियों और घोड़ों का एक ही रास्ते पर जाने से बढ़े भार के कारण शेषनाग की फनमाला फैलने लगी। वराह के दाँत ढीले हो कर गिरने को होने लगे और कच्छप लज्जित हो कर अपने अंग समेटने लगा। हाथियों के मस्तक तलवारों के प्रहारों से फटने लगे। कटे कुंभस्थलों से धरती ढाँपी जाने लगी। अपने काले शरीर पर लगे रक्त से लाल हो जाने से कुरूप होकर कालिका किलकारी करने लगी। असिधार की ज्वाला दिखने लगी और तड़कते हुए अग्निकण दिखने लगे। जहाँ महाराणा के हाथी को पाया तोगदेव ने उधर वाली दिशा में युद्ध फैलाया। अपना घोड़ा उधर बढ़ा कर शत्रुदल की भीड़ को चीरता हुआ तोगदेव महाराणा के हाथी के समीप जा लगा। तभी एक यवन योद्धा बीच में आ गया और उसने चौगुना युद्ध रचाया।

जुव दाव घाव जोर्‌यो, तस सीस तोग तोर्‌यो।
जिहि लैन रुद्र जावैं, प्रहसैं सिखा न पावैं॥२०॥

बलभद्र रान बंधू, गिरि अंध अध्व अंधू।
रन तोग कों निरायो, गल कट्टि सो गिरायो॥२१॥

चहुवान इक्क चीनों, तस तंग दारि दीनों।
झुकि आइ कोउ झल्ला, रचि हड्डुसीस हल्ला॥२२॥

बढिकैं किंवान बाही, सुन तोग व्हां सिराही।
छम खग्गवार छुट्टयो, लगि झल्ल धूरि लुट्टयो॥२३॥

गज रान केर गढ्ढो, ठनकात घंट ठड्ढो।
लखि तोग बाग लिन्नी, असि रान अंस दिन्नी॥२४॥

लगातार एक के बाद एक दो प्रहार कर तोगदेव हाड़ा ने उस यवन का सिर काट डाला। शिव उस यवन का कटा मुंड लेने गए पर सिर पर चोटी नहीं देख कर हँसने लगे अर्थात् प्रसन्न हुए। इसी समय महाराणा का एक बांधव बलभद्र अंधे व्यक्ति के अंधे मार्ग पर चलने की तरह (अर्थात् वीर तोगदेव के सामने असावधानी वश नहीं जानते हुए कि उधर नहीं जाना है) युद्ध में संलग्न तोगदेव के समीप आया। उस वीर तोग ने तुरन्त सिर काट गिराया। चहुवान तोग को लपकता आता एक शत्रु नजर आया उसने उसके

शरीर को काट डाला। तभी एक शत्रु झाला आगे आया और उसने तोगदेव पर धावा बोला। उसने बढ़ कर तलवार चलाई जिसके प्रहार की प्रशंसा में तोग के मुँह से वाह निकली पर प्रत्युत्तर में उस समर्थ का वार हुआ जिससे झाला रणभूमि की धूल चाटता नजर आया। महाराणा का हाथी दृढ़ खड़ा वीरघंट बजा रहा था उसे देखते ही तोगदेव ने अपने घोड़े की लगाम खींची और घोड़े को उड़ा कर राणा कुंभा के कंधे पर तलवार मारी।

छुवि खंधत्रान छेद्यो, तिल अंसभाग भेद्यो।
छत्रि डोड पिक्खि छायो, अदि जेम दौरि आयो॥२५॥

छिति जात टाप छ्वैगो, यह बध्य डोड ह्वैगो।
सतच्यारि बीर सत्थी, इम तोग जुद्ध अत्थी॥२६॥

असि झारि रारि अच्छी, कढि जान किन्न कच्छी।
इक बीर रान वारे, मिलि तत्थ बैन मारे॥२७॥

सतइक्क संटि सूरे, करि प्रान लोभ कूरे।
किम अस्थिपाल केरे, अब भज्जिजात एरे॥२८॥

सुनतैं सु छोह छायो, हय मोरि सम्मुहायो।
दृगकन्न पिट्ठि दोर्‌यो, मनु पुच्छ को मरोर्‌यो॥२९॥

सतद्वै निकास सिक्खे, पलटे तितेहि पिक्खे।
मन जे अराति जी के, बर अच्छरी बनी के॥३०॥

इस प्रहार ने राणा कुंभा के कंधे का त्राण (कवच की झालर) काट कर तिल जितना कंधे को काटा। यह देख पहाड़ की तरह दृढ़ निश्चय के साथ दौड़ कर डोड क्षत्रिय सहायता हेतु आगे आया पर उतरते हुए घोड़े की टाप की झपट से डोडिया क्षत्रिय मारा गया। चार सौ वीरों के साथ वीर तोगदेव ने ऐसी भिड़ंत की। अपनी तलवार से भीषण युद्ध करते हुए उसने अपने घोड़े को वहाँ से निकालना चाहा। इसी समय राणा के योद्धा ने व्यग्य का बाण मारा कि सौ वीरों की जान दे कर उनके बदले में अपने प्राणों का लोभ कर ओ अस्थिपाल के वंशज! अब भागता क्यों है ? यह सुनते ही उसे फिर से जोश आ गया और तोगदेव ने अपने घोड़े को मोड़ लिया। वह पूँछ मरोड़े हुए सर्प की तरह उसी के पीछे गया। उसकी सेना के दो सौ सैनिक भाग रहे थे वे सभी तोग को मुड़ा हुआ देख कर वापस रणभूमि में आ गए। जिनके मन अपने जीव के शत्रु (मरने को उद्यत) थे और जो अप्सरा रूपी

दुल्हनों के वर थे।

जिनमें सु तोग जैसैं, उडुबृंद चंद्र अैसैं।
बकतैं असह्यबानी, पलटे उदस्त्रपानी ॥३१॥

मरिबेहि बाजि मोरे, जिम अग्ग खग्ग जोरे।
लखि रान भीति लायो, द्विंप दिट्ठि तैं दुरायो ॥३२॥

झुकि तोग तेग झारी, बहुबेर फोज फारी।
अतिमान रान वारे, पखरैत केक पारे ॥३३॥

हिय रान भ्रांति हेर्‌यो, गज इक्क भुम्मि गेर्‌यो।
अरि तीस छेदि छक्कयो, जब तोग निट्ठि जक्कयो ॥३४॥

इन वीरों में तोगदेव ताराओं के वृंद (झुंड) में चन्द्रमा के समान लग रहा था। राणा के वीरों के असह्य व्यंग्य भरे वचन सुन कर हाड़ा वीर भी हाथों में शस्त्र उठाये हुए वापस लौटे। इन वीरों ने जैसे मरने के लिए ही घोड़ों को मोड़ा। आते ही उन्होंने पहले की तरह अपने खड्ग प्रहार करने आरंभ किये। यह देख कर भय से राणा कुंभा हाथी की पीठ पर दुबक गया। घोड़े से झुक-झुक कर तोग ने अपनी तलवार चलाई और शत्रु सेना को फाड़ (काट) डाला और बड़े मान वाले महाराणा के पक्ष के कई कवच युक्त वीरों को मार गिराया। महाराणा के हाथी के भ्रम में तभी तोगदेव ने एक हाथी को काट कर रणभूमि में गिराया। इसके बाद लगभग अपने तीस शत्रुओं को मार कर बमुश्किल तमाम तोगदेव रणभूमि में गिरा।

दोहा

हयतें इक तिथि हत्थतें, पहिले रन रिपु पारि।
बलि पच्छो मुरि बोल पैं, तीस न सीसउतारि ॥३५॥

करि सक्खी करबाल कों, रान अंस कछु रेखि।
गज इक पीछैं गेरियो, द्रोहिप के भ्रम देखि ॥३६॥

सूरपरे उतके त्रिसत, सतदुव इतके सर्ब।
पर्‌यो तोग मुरि बैनपर, इम करि कित्ति अखर्ब ॥३७॥

घायल सत छकि घुम्मते, बुंदिय पतअत बीर।
क्रम समुचित उपचार किय, सब उल्लाघ सरीर ॥३८॥

पहले हाड़ा तोगदेव अपने हाथ से पन्द्रह और घोड़े से एक शत्रु मार कर जा रहा था पर शत्रु के बोल पर वापस मुड़ कर उसने तीस और शत्रुओं के सिर धड़ से अलग किये। अपनी तलवार को साक्षी रख कर उसने राणा कुंभा के कंधे पर भी अपनी रेखा खींची फिर शत्रुओं के स्वामी के हाथी के भ्रम में एक अन्य हाथी काट गिराया। इस भिड़ंत में शत्रु पक्ष के तीन सौ सैनिक मारे गए और हाड़ा तोगदेव के दो सौ वीर काम आए। तब कहीं जा कर एक व्यंग्य के बोल पर मुड़ा हुआ तोगदेव अपनी बड़ी कीर्ति फैला कर रणभूमि में गिरा। तोगदेव के गिरते ही घायलावस्था में शेष जीवित बचे सौ वीर बूँदी पहुँचे। वहाँ उनका उचित इलाज करवाया गया जिससे वे वापस स्वस्थ हुए।

हल्लू के कुल के हुते, सब घायल तिन संग।
पटा मांहिं उनकों सुपहु, दिय डब्भिय मुख द्रंग॥३९॥

बड्ढे अरु घायल बचे, और जिते तिन्ह अत्थ।
उचित अप्प किन्नैं अधिप, सब मन लरन समत्थ॥४०॥

तनय तोग कै हो न तस, अनुजहि गंग उदार।
पहु किय पुर नवगाम पहु, भुवधरि बुन्दियभार॥४१॥

वीरता के साथ लड़ते हुए घावों से छके जो योद्धा बूँदी आए वे सभी राजा हल्लू के वंशज थे। उनको राजा सुभांडदेव ने पट्टे सहित जागीर में डाभी नामक नगर दिया। इस भिड़ंत में जो मारे गए, घायल बचे और जीवित बचे उन सारे योद्धाओं को राजा ने उचित पुरस्कार दे कर सभी को लड़ने में फिर से समर्थ बनाया अर्थात् सभी का मनोबल बढ़ाया। हाड़ा तोगदेव के कोई पुत्र तो था नहीं हाँ, एक गंगदेव नामक छोटा भाई था उसे राजा सुभांडदेव ने नवगाँव नगर का स्वामी बनाया और उसके कंधे पर बूँदी की भूमि की रक्षा का भार डाला।

षट्पात्

अमरदुर्ग अपनाइ थप्पि अंदर पुनि थानां।
किय बुंदियसिर कुच्च रोस फुल्लत अहि रानां।

सुक्र दुवद्दसि सुभ्र रक्खि नवगामप तिहिं रन।
करि दस तत्थ मुकाम पूर सज्ज्यो गढ तोपन।
प्रतिमल्ल हड्डु हत्थन परखि लार खिलहु बल बुल्लि लिय।
आसाढ असित कंदर्प अह[१] क्रमि बुंदियपुर बेढ किय॥४२॥

उधर अमरगढ़ पर अपना अमल जमा कर राणा कुंभा ने वहाँ अपना थाना स्थापित किया। इसके बाद क्रोधित सर्प की तरह फुफकारते हुए अपनी सेना के साथ बूँदी नगर पर आक्रमण करने को कूच किया। ज्येष्ठ माह के शुक्ल पक्ष की द्वादशी तिथि को नवगाँव के स्वामी को युद्ध में मार कर महाराणा कुंभा मार्ग में दस पड़ाव डालता हुआ अपनी तोपों के साथ सज्जित वह बूँदी पहुँचा। वहाँ शत्रुओं ने हाड़ाओं के हाथों की परख कर शेष पीछे रहा अपनी सेना को भी बुला लिया और आषाढ़ माह के कृष्ण पक्ष की त्रयोदशी तिथि के दिन राणा कुंभा की सेना ने बूँदी के चारों ओर घेरा लगाया।

समुचित जंहंजंहं सिबिर रान बेढिय बिधान रचि।
पृतना पतन प्रतीप बिसम अचलादि रहे बचि।
तेरसि अह प्रत्युष लोल गोलन झर लग्गिय।
उडत सार दुहुं ओर ज्वलन कीलाकुल जग्गिय।
तारकादुर्ग दकि तोप तति दुजन निकट रहन न दये।
गज्ज रु अलात अयपिंड गन छिति अंबर संकुल छये॥४३॥

युद्ध की व्यूह रचना के लिए राणा कुंभा ने अपनी सेना के लिए समुचित शिविर भी वहाँ बनवाए जहाँ शत्रु सेना के पड़ाव और उनकी सेना के पड़ाव के बीच विषम पहाड़ रहें फिर त्रयोदशी के दिन प्रातः काल से तोपों के चपल गोलों की झड़ी लगा कर युद्ध का आरंभ किया। दोनों पक्षों की तलवारें उठते ही (युद्धारंभ का संकेत) तोप के जलते गोलों से अग्नि की ज्वालाएँ उठीं। तारागढ़ दुर्ग से भी तोपों की पंक्ति ने गोले बरसा कर शत्रुओं को करीब नहीं आने दिया। तोपों की गर्जना, अग्नि और लोह निर्मित गोलों से आकाश और पृथ्वी दोनों छा गए।

टिप्पणी : १. ज्योतिष शास्त्र में तेरस (त्रयोदशी) तिथि का स्वामी कामदेव माना जाता है। इसलिए इसे कवि ने कामदेव का दिन अर्थात् त्रयोदशी कहा है। संपादक

मनोहरम्

होत फैर फैरन पैं तोप के अमाप जब,
डिगि डिगि शृंग आप आपके अंगर मैं।
गोलन चलात परगोलन के पात भात,
तारागढ जान्यों जात जगरमगर मैं।
जा रन प्रजारन हजारन अलात फैले,
बाखरि[1] मैं बीथी मैं बजार मैं बगर मैं।
कालिका की बालिका लों ज्वालिका बमत बनी,
नालिका दगत दीपमालिका नगर मैं ॥४४॥

शीघ्र ही एक के बाद एक तोपों के धमाके होने लगे जिनसे दुर्ग के कंगूरे हिल हिल कर उखड़ते हुए घरों में जा कर गिरने लगे। दूसरे पक्ष के गोले के गिरते ही इधर का पक्ष गोला दागता। इस तरह गोले पर गोला दागे जाने के प्रकाश से और अग्नि की ज्वालाओं की चकाचौंध से तारागढ़ दुर्ग जगमगा गया। इस युद्ध में सुलगते हुए हजारों अंगारे (निर्धूम अग्नि) उड़ कर मकानों में गलियों में, बाजार में और चौक में फैल गए। काले काले रंग की तोपें मानों कालिका देवी की बालिका की तरह ज्वालाएँ उगलने लगी और गोले दागती तोपों की नालिकाओं से पूरे बूँदी नगर में जगमगँ दीवाली हो गई।

घनाक्षरी

फोजन तैं ओजन तैं जोजन कढत दूर,
अर्चिन के ओजनतैं जो पै रहैं रुकिरुकि।
पाउस के अभ्र से अखंड धूममंडल मैं,
तापन तैं तापन तपायो लज लुकि लुकि।
बिस्मय प्रलै बिनु त्रि लोक ओक ओक आनैं,
चोंक चंद्रचूड़हु समाधि जात चुकि चुकि।
काल के से टोला गुरु गोला गिरिबे तैं मही,
ब्यालफन दोला चढी झोला लेत झुकि झुकि ॥४५॥

टिप्पणी : १. ब्रज भाषा में घर को बाखरि कहते हैं और राजस्थानी (मरुभाषा) में घर के खुले स्थल को बाखर कहते हैं। - संपादक

सूर्य सेनाओं के ओज से योजनों दूर से हो कर गुजरने लगा और अग्निदेव ज्वालाओं के ताप से चलते-चलते रुकने लगा। वर्षा ऋतु के मेघ के समान धुएँ से भरे अंतरिक्ष में अग्नि की ताप से तपा हुआ सूर्य छुप छुप कर लज्जित हुआ। बिना किसी प्रलय के तीनों लोकों के जीव घर-घर में आश्चर्य करने लगे और शिव अपनी समाधि की अवस्था में चौंक उठे। साक्षात् काल के वज्र जैसे बड़े-बड़े गोले पृथ्वी पर गिरने से शेषनाग के फन के झूले पर झुकी झुकी सी पृथ्वी झूलने लगी।

मनोहरम्

स्याम सुचि तेरसि तैं सावनअमा अवधि,
बासर ब्यतीत भये घोर घमसान कों।
कारन उलंघि जैत सारन हु आये पर,
दै दै रतिवाह सोंड सोस्यो परप्रान कों।
सोही दाव दीनों दुव बेर चुंड ओ उदय,
कीनों कितो तोपन अनीक अवसान कों।
बुंदीपुर पावन की पद्धति न पाइ इतैं,
आई तीज सावन की जावन की रान कों॥४६॥

आषाढ़ माह के कृष्ण पक्ष की त्रयोदशी से सावन माह की अमावस्या तक की तैंतीस दिन की अवधि भयंकर युद्ध करते बीती। न आने का कारण होते हुए भी उसका उल्लंघन कर जैत्रसिंह और हाड़ा सारणदेव शत्रुओं पर चढ़ कर आए। रात्रि को धावा बोल-बोल कर सोंडदेव ने शत्रुओं के प्राण सोखे। ऐसा ही दाँव दोनों बार चूंडा और उदयसिंह हाड़ा ने लगाया कि तोपों के प्रहार से सेना का संहार किया। शत्रु महाराणा कुंभा को बूँदी नगरी प्राप्त करने का मार्ग नहीं मिला और इधर महाराणा के चित्तौड़गढ़ जाने की यानी सावन की तृतीया तिथि आ पहुँची।

दोहा

बनि दुर्मन सुभटन बदिय, रान रसिक स्मररंग।
तीज परब पहुँचैं न तो, पतनी जरन प्रसंग॥४७॥

तब उदास हो कर कामदेव के रंग के रसिक महाराणा ने अपनी सेना के सामन्तों को एकत्रित कर कहा कि मुझे जाना पड़ेगा। यदि मैं सावन माह की तृतीया तिथि को चित्तौड़गढ़ नहीं पहुँचा तो मेरी पत्नी जल मरेगी।

षट्पात्

बुल्ले भट हम बहुत पग्ग निज रक्खि पधारहु।
जिहिं अग्गैं सब जुरहिं नमहिं संदेह न धारहु।
मन्नि सुनत सुहि मूढ गूढ हयडाक गयो गृह।
पटगृह रक्खिय पग्ग सुपहु अैसो रत सस्पृह।
तोप न चलाइ जिम पुब्बतिम कतिक रहे डमरहु करत।
बुंदिय बिनाह लग्गे बढन मेवारे मारत मरत॥४८॥

यह सुन कर सामन्तों ने कहा हे महाराणा! आप अपनी पगड़ी यहाँ रख कर पधारें। युद्ध के लिए हम लोग ही काफी हैं। हमारे सामने जो भी आएगा उसे हार कर झुकना ही पड़ेगा इसमें कोई संदेह नहीं। अपने सामन्तों से यह आश्वासन पा कर वह मूर्ख राजा घोड़ों की डाक से शीघ्र ही चित्तौड़गढ़ को रवाना हुआ। डेरे में अपनी पगड़ी रख कर वह रति क्रीड़ा का लोभी राजा घर पहुँचा। पीछे से उसकी सेना ने पूर्ववत् तोपें नहीं चलाईं और कुछ सैनिक तो लूटपाट में संलग्न हो गए। बिना मालिक की सेना जैसी मेवाड़ी सेना मरने मारने पर उतारू हो कर बूँदी नगर की ओर बढ़ने लगी।

दोहा

दृढ निश्चय हुव दोजि दिन, रक्खि पग्ग गय रान।
कढि जुज्झन मत सुनत किय, चहि अवसर चहुवान॥४९॥

महाराणा कुंभा को अपने डेरे में पगड़ी रख कर गये दूसरा दिन हो गया और इसी दिन दृढ़ निश्चय के साथ हाड़ाओं ने दुर्ग से बाहर निकल कर युद्ध करने का विचार किया।

षट्पात्

सारन जैत रु सचिव अरज नृप प्रति किन्नी यह।
जिम छुद्रहि रन जात स्वामि बरजे हम साग्रह।

तिम यहै न अब तुमुल रान महिमान पधारत।
जाकी पग्घहु जोहि बनत तस भाव बिचारत।
कै पग्घ गहहिं दल जित्ति कैं मरन ठाम उग्गहिं मरन।
सन्नद्ध बिरचि ध्वजिनी सकल करहु हल्ल जग जसकरन॥५०॥

सारणदेव हाड़ा, जैत्रसिंह और राजा के मंत्री खित्तलशाह ने जा कर राजा सुभांडदेव से निवेदन किया कि छोटे से युद्ध में जाने के लिए हमने आपको आग्रहपूर्वक मना किया था पर अब यह युद्ध छोटा नहीं रह गया है। महाराणा के जाते ही अब तुमुल युद्ध की संभावना न के बराबर है जिनकी पगड़ी यहाँ है उनकी ऐसी सोच है कि वे स्वयं यहाँ है। अब तो इस युद्ध को जीत कर हम उनकी पगड़ी ले लेंगे। मरने की जगह मरना प्रसिद्ध होगा इसलिए हे राजा! आप अपनी सज्जित सेना के साथ उस मेवाड़ की सेना पर आक्रमण कर यश अर्जित कीजिये।

सोंड सिराहिय सुनत त्रय हि कहि वाहवाह तब।
बुल्लि सेव नवब्रह्म अमर गंग रु माधव अब।
भार खंध जिन भटन पानि मुत्तिन तिन पुज्जहु।
जिम पिक्खहिं प्रतिजाम समर कौतुक रुकि सुज्जहु।
अनुजात कथित करि बत्त यह साधु साधु कहि भटन सह।
बुंदिय त्रपा सु गर बंधिकैं अधिप हड्ड सज्जिय असह॥५१॥

राजा द्वारा इस अनुरोध को मान लेने पर सारण, जैत्रसिंह और मंत्री ने वाह-वाह की और इसे सुन कर सोंडदेव ने भी राजा के इस निर्णय की सराहना की। उसने तब हाड़ा सेव, नवब्रह्म, अमरसिंह, गंगासिह और माधवसिंह को बुलवाया। उनके आने पर राजा से कहा कि इन योद्धाओं के कंधों पर युद्ध का सारा भार है इसलिए आप पहले इनके हाथों की मोतियों से पूजा करें और फिर आप इनके युद्ध का जोहर प्रत्येक प्रहर में देखें। अपने छोटे भाई सोंडदेव के कहे अनुसार राजा ने सारा कार्य निष्पादित किया तभी सारे योद्धाओं ने 'श्रेष्ठ है, श्रेष्ठ है' कह कर राजा का जयघोष किया और तब बूँदी की लज्जा को अपने गले से बाँध कर वह हाड़ा राजा असह्य युद्ध के लिए सज्जित हुआ।

दोहा

जंपिय सारन जैत प्रति, गदकृस रहिये गेह।
तिन अक्खिय हो गद तब सु, अगद बन्यों अब एह ॥५२॥
राजा दिन निजरोधकन, इम सह सपथ निवारि।
हुव संगहि दायाद दुव, धुव ब्याधि न कछु धारि ॥५३॥

इसी समय हाड़ा सारणदेव ने जैत्रसिंह से कहा कि आप अभी रोग के कारण दुर्बल हैं इसलिए घर पर रह कर आराम कीजिये। इस पर जैत्रसिंह ने कहा कि मैं बीमार तो तब था अब तो मैं एकदम चुस्त और नीरोग हो गया हूँ। अपने रोकने वालों को सौगंध दे कर वह अपने राजा के साथ हुआ। इस प्रकार अपने रोग की तनिक भी परवाह नहीं करते हुए वह दोनों भाइयों के साथ युद्ध के लिए रवाना हुआ।

षट्पात्

पर पृतना के पिठ्ठि पिहित दल अद्ध पठायउ।
अद्ध कटक सह अप्प अरिन सम्मुह उफनायउ।
रजनी घटि दुव रहत स्वस्थ निर्भय सीसोदन।
पहुंचि परे पबिपात मंडि मंडिय अनुमोदन।
राजा रु.जैत सारन रुजित हंकिय त्रय आरूढ हय।
दल खिल पदाति उभय हि अनिन प्रारंभिय मंडन प्रलय ॥५४॥

उसने शत्रु सेना के पीछे की ओर अपनी आधी सेना रवाना की और शेष आधी सेना को साथ ले कर शत्रु सेना के सामने वह क्रोध में उफनता हुआ बढ़ा। दो घड़ी रात के रहते जब सिसोदियों की सेना चैन की नींद सो रही थी ठीक इसी समय हाड़ा वज्रपात की तरह उस पर टूट पड़े। राजा सुभांडदेव, जैत्रसिंह और सारणदेव ये तीनों रोगी और घायल थे इसलिए उन्हें घोड़ों पर सवार किया। शेष सेना पैदल थी दोनों ओर की सेना के अग्रभाग आपस में भिड़े और प्रलयंकारी युद्ध शुरू हुआ।

गोटे दलबिच गेरि प्रथम बारूद प्रजारित।
बंधन हयन बिछोरि दये लरवाइ बिदारित।

होत अचानक हक्क जूह निद्रित कति जग्गत।
कति गुल्मन नित्यकरि लुब्भि इष्टन पय लग्गत।
गीतादि पढत कति बीरगन कतिक कोन क्यों किम करत।
गज रिपुन पैठि हरि हड्डु गय अरि यातैं इम उच्चरत॥५५॥

इन्होंने जाते ही बारूद के पीपे जला कर शत्रु सेना के शिविर में फेंक दिये जिससे धमाके के साथ धुआँ ही धुआँ हो गया। इधर उन्होंने शत्रुओं के सारे घोड़ों को उनके बँधने के ठिकाने से खोल दिया जिससे वे आपस में लड़ते हुए इधर उधर बेतहाशा भागने लगे। अचानक भगदड़ और धमाकों के बीच वीरों की हाक सुन कर शत्रु सेना नींद से जागी। प्रहरी सेना की टुकड़ियों के योद्धा प्रात:काल होता देख कर नित्यकर्म में संलग्न थे। कुछ अपने इष्टदेव की पूजा में थे इसलिए गीता आदि का पाठ करते हुए वे बीच में ही बोल पड़े कि अचानक यह कौन? क्यों? और कैसे कर रहा है? शत्रु रूपी हाथी के समूह पर हाड़ा रूपी सिंह झपट पड़े हैं इसलिए शत्रु ऐसा बोलने लगे हैं।

तुल्लि मिलत तरवारि झकट जिततित रचि झारिय।
कर जो हुव सुहि कतिन प्रखर उततैं हु प्रहारिय।
पै यह अतुल प्रमाद बनत जान्यों बिरले बल।
खुलि हय जुट्टत खिनहु प्रचुर पाये मैंचित पल।
उठि उठि प्रमत्त ते भट अखिल मग लग्गिय लै जिय विमद।
सम्मुह चलाइ कट्टिय सकल हड्डुन रक्खिय बिरुद हद॥५६॥

हाड़ाओं ने हाथ में उठाई हुई तलवारों से युद्ध के आरंभ होते ही इधर-उधर प्रहार करना शुरु किया। सामने वाले भी जो हाथ में आया वह इन पर फेंकने लगे। शत्रु सेना यह मुकाबला अत्यंत गफलत से कर रही थी। खुले हुए घोड़ों के लड़ते समय बहुत से शत्रु सेना के सैनिक आंखें मसलते हुए आए। इधर हाड़ा योद्धाओं को लपक-लपक कर प्रहार करते देख मद रहित हो शत्रु सेना के वीरों ने भागने की राह पकड़ी पर हाड़ा वीरों ने उनके सामने जा जा कर युद्ध करते हुए उन्हें काट गिराया और इस तरह सारे हाड़ा योद्धाओं ने अपने विरुद की हद रखी अर्थात् उन्होंने अपने यश को अक्षुण्ण रखा।

सेव छ अरि संहरिय खेल माधव चउ खंडिय।
अमर च्यारि अंगमिय कुणप नवब्रह्म सत्त किय।
नवक गंग हठि हनिय ग्लान सारन चउ गेरिय।
लुंचि त्रि सिर जैत लिय नवक असु सोंड निबेरिय।
केणिका खास सोधन करत गोहिल हरि पग्घ सु गहिय।
इम आतआत सिखरी उदय लुट्टि सिबिर जस थिर लहिय॥५७॥

इस भिड़ंत में सेव ने छह शत्रुओं का संहार किया और युद्ध का खेल खेलते हुए माधवसिंह ने चार शत्रु मारे। अमरसिंह ने चार शत्रुओं को मार दबाया और नवब्रह्म ने सात शत्रु योद्धाओं को शवों में बदला। हठी गंगासिंह ने नौ शत्रु मारे और रुग्णावस्था में होते हुए भी सारणदेव ने चार शत्रु योद्धाओं का काम तमाम किया। जैत्रसिंह ने तीन शत्रु वीरों के मस्तक तोड़ लिये और सोंडदेव हाड़ा ने नौ शत्रुवीरों के प्राण हरे। इसी बीच हरिसिंह गोहिल ने महाराणा के ठहरने को बनाए गए छोटे डेरे (कणिका) में घुस कर पगड़ी को ढूंढा और मिलने पर ले ली। इस तरह सूर्य के उगते-उगते में हाड़ाओं ने शत्रु शिविर को लूट कर अपनी कीर्ति को स्थिर किया।

दोहा

मिली पग्घ सुनतहि मुररि, अनखि सिबिर पुनि आइ।
मेवारे द्वैसत मरे, दारुन हत्थ दिखाइ॥५८॥
मारे नृप तिन मांहिंसो, बानन पंच प्रबीर।
कट्टि उभय असितैं करे, सत्तन कुणप सरीर॥५९॥
पहुआश्रित खटसत परे, अरि तेरहसत अत्थ।
आहव बंब घुराइ इम, हड्डुन किय जय हत्थ॥६०॥

भागती हुई मेवाड़ की सेना ने जब यह सुना कि महाराणा कुंभा की पगड़ी शत्रुओं के हाथ लग गई है तो क्रोधित सेना मुड़ कर शिविर में आई। फिर झड़प हुई और इसमें सिसोदियों की सेना के दो सौ सैनिक मारे गए। इनमें से पाँच वीरों को तो राजा सुभांडदेव ने अपने तीरों से छलनी कर मारा और सात योद्धाओं को अपनी तलवार से दो टुकड़ों में काट कर उन्हें मुर्दा बनाया। इस भिड़ंत में बूँदी राजा के पक्ष के छह सौ वीर मरे और शत्रु सेना के

तेरह सौ योद्धा खेत रहे। इस तरह युद्ध में विजय के नगाड़े बजवा कर हाड़ाओं ने फतह पाई।

मनोहरम्

ग्रीखम तैं पाउस लों बाहिनी बलय बंधि,
रोपी रारि रानां कुंभकरन प्रतीप नैं।
ताराचाल नालिन निघातकरि कंप्यो सोहु,
चेदिप ज्यों चंप्यो चतुरंग सह श्रीप नैं।
परिकर राखि जपि हित सु निकेत पूगो,
काटि सो पैं कीनों जै कृसानु कुलदीप नैं।
संप्रयोग सहल सअग्घ सुघराइ उतैं,
पग्घ पधराई इतैं महल महीप नैं॥६१॥

ग्रीष्म ऋतु से लगा कर पावस ऋतु के आगमन तक अपनी सेना से बूँदी नगर के घेरा लगा कर शत्रु महाराणा कुंभा ने युद्ध रचाया। तारागढ़ दुर्ग के पर्वत को अपनी तोपों के गोलों के प्रहार से कंपायमान कर डाला। उसने चेदिराज शिशुपाल की तरह अपनी सेना की सहायता से बूँदी को दबाया पर श्रीकृष्ण रूपी बूँदी के राजा ने अपनी प्रजा की रक्षा की। वह राजा उन्हें सुरक्षा दे कर अपने घर आया। उस अग्निवंश के कुलदीपक ने अंधेरे रूपी शत्रु को दूर भगाया। अपने बल का सहज प्रयोग कर आदरसहित पूरी सुघराई से राजा ने उसकी पगड़ी को ला अपने महल में रखा।

दोहा

इत जयबंब घुराइ इम, पुर करि भूप प्रबेस।
लघु पाटवकिय घायलन, बीरन अप्पि बिसेस॥६२॥

मेवारेहु बिगारि मुख पत्ते जब पहुपास।
लज्जित रान सक्यो न लखि, अंतर निबसि उदास॥६३॥

कुंभ त्तज्यो सुहि सोक करि, बपु दुव मास बिताइ।
रायमल्ल तब रान हुव, पट्ट जनकधृत पाइ॥६४॥

इधर हाड़ाओं की विजय के नगाड़े गूंजे और उधर राजा ने अपने नगर

में दर्प के साथ प्रवेश लिया। अपनी सेना के घायल योद्धाओं के लिए शीघ्र उपचार देने की व्यवस्था कर उसने अपने वीरों को पुरस्कृत किया। उधर मेवाड़ वाले सिसोदिया दल के वीर जब मुँह लटकाए अपने स्वामी महाराणा कुंभा के पास पहुँचे तो लज्जित महाराणा अपनी हारी हुई सेना को देख न सका और वह उदास महाराणा अपने अन्त:पुर में चला गया। वहीं रहते हुए कुंभा ने इस सदमे से दो माह की अवधि में ही अपना शरीर त्याग दिया। राणा कुंभा की मृत्यु के बाद रायमल अपने पिता के राजसिंहासन पर बैठ कर मेवाड़ का महाराणा बना।

इतिश्रीवंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे पंचम राशौ वीतिहोत्र-वसुधेश्वर बीज्यवर्णनबीजहड्डाधिराडस्थिपाल वंश्यानुवंश्यविहितवृत्ता-न्तव्याख्यानावसरव्याहार्यबुन्दीनरेन्द्रसुभाण्डदेव चरित्रे पूर्वप्रेषितस्व-दूतप्रख्यापितनिजाऽभिसम्पातसावधानसज्जीकारितसपत्नसैन्यतोग शुक्रशुभ्रचतुर्दशी निशीथनिकटवैरिबलसम्मुखसमभिषेणन संहृतपंचदश सपत्नसामन्त शूर करवालकृत्तसस्कन्धत्राणराणांसस्तोकभागविशीर्ण विपक्षवाहिनीकप्राप्तप्रत्यनीकान्तरवाक्प्रतोदनिर्यियासुतोग पुनरवमर्द-प्रत्यारम्भण मेदपाटमहीपमारीचभ्रान्तिपातितमतङ्गजान्तरपुन:परासूकृ-तत्रिंश त्प्रतीपसाध्वसप्रतापितप्रत्यनीकपरिवृढतोग शूरशय्याशयन पक्षद्वय प्रवीरशतपंचक परलोकप्रापण नरेन्द्रसुभाण्डदेव बुन्द्यागतस्वकी यक्षत-खिन्नपटूकृतशूरशतक यथातथसत्करण प्राप्तप्रचुरप्रहारस्वबन्धुहल्लू वंशीयप्रवीरपंचक दार्भी प्रभृतिपत्तन प्रतिवसथ प्रकरपट्टप्रसादन निष्प्र-जतोगा ऽनुजगङ्गा पर नामयश:कर्ण स्वाग्रजपदनवग्रामपुरप्रभूभवन न्यस्ताऽमरदुर्गसनालीयन्त्र रक्षिवर्ग तत्सीमन्युषितदिनदशक समाकारित-खिलसैन्यप्रस्थितराणाशुचिश्यामलत्रयोदशी प्रत्यूषबुन्दीवाहिनीवेष्टन श्रुतैतदुदन्ताऽवमत क्षत ज्वर खेदजैत्र सारण स्वामिसहायबुन्दी पुरी-प्रविशन।

श्री वंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण की पंचम राशि में अग्निवंशी चहुवान वंशवर्णन के कारण हड्डाधिराज अस्थिपाल के वंश और वंश की शाखाओं की कथा बताने के समय के वचनों में बूँदीनरेन्द्र सुभाण्डदेव के चरित्र में पहले अपना दूत भेजकर अपने युद्ध की सूचना करके शत्रु की सेना को सचेत और सज्जीभूत कराकर तोगदेव का जेठ शुक्ला चतुर्दशी को आधी

रात के समीप शत्रु सेना के सन्मुख युद्धयात्रा करना, शत्रुओं के पंद्रह वीर और उमरावों का संहार कर खड्ग से राणा के कन्धत्राण को काट, कंधे के थोड़े से भाग को विदीर्ण कर, शत्रु की सेना को बिखेर कर निकलने की इच्छा वाले तोगदेव का प्राप्त हुई शत्रु सेना में से किसी शत्रु के वचन रूपी चाबुक लगाने से फिर युद्ध प्रारम्भ करना, मेवाड़ के महीपति की सवारी के हाथी की भ्रान्ति से किसी हाथी को मार, फिर तीस शत्रुओं को मारने से शत्रुओं की सेना को भय से तपाकर बलवान तोगदेव का मारा जाना, दोनों पक्ष के पाँच सौ वीरों का परलोक को प्राप्त होना, नरेन्द्र सुभाण्डदेव का बूँदी में आये हुए घायल सौ वीरों को नैरोग्य करके उनका यथार्थ सत्कार करना, बहुत प्रहार पाये हुए अपने बन्धु हल्लू के वंश के पाँच वीरों को डाभी आदि पुर और ग्रामों का समूह जागीर में देना, बिना संतान वाले तोगदेव के छोटे भाई गड्ग दूसरे नाम से यशकर्ण का अपने बड़े भाई के स्थान पर नवग्राम पुर का पति होना, तोपों सहित रक्षा करने वाले समुदाय को अमरगढ़ में रख, उसकी सीमा में दस दिन निवास कर बाकी की सेना को बुलाकर प्रस्थान किये हुए राणा का आषाढ़ कृष्णा त्रयोदशी के प्रभात बूँदी को फौज से घेरना, यह वृत्तान्त सुन प्रहार और ज्वर के खेद को न गिनकर जैत्र और सारण का स्वामी की सहायता के लिए बूँदी में प्रवेश करना।

पुनःपुन श्रतुशोण्ड समनुष्टितसौप्तिकचुण्डो दय युग्म द्विःकृत्वोरात्रिप्रघातपातन श्रावणिकदर्श पर्यन्तसम्प्रहाराऽप्राप्तबुन्दीविजय निजसामन्तसड्घसम्मत स्वस्थानस्थापितोष्णीषराणाकुम्भकर्णप्रच्छन्न-चित्रकूटप्रविशन ज्ञाततद्वृत्तान्तसारण सचिवा दिस्वसम्वर्द्धितोत्साहशौण्ड समेधितशौर्य समाहूतयशःकर्णा ऽपरनामगङ्ग माधवादिदायादसं दोहबुन्दी-न्द्रसुभाण्डदेवो ष्णीषस्वामिचित्रकूटचमूसंग्रामसक्रमण, स्वसुहृद्वर्ज्जन-विपरीतप्रसभविमतस्वस्वव्याधिवेगसहप्रस्थित हयारुढसारण जैत्र स्वामि-सहायीभवन परपृतनापरप्रान्तप्रस्थापितपड्गीकृतसैन्यार्द्ध सार्थीकृत-पत्तिनेमा नीकस मारुढसप्तिहड्डाधिराज प्रक्षेपितपूर्वबारुदवर्त्तकविक्षो-भवित्रोटित बन्धनबैरिबलवाजिविद्रावण मुहूर्तैक रात्रिशेषसमयबुन्दीन्द्र वाहिनीसौप्तिकसम्पातकोलाहलावबुधप्रमत्तप्रद्रुतप्रत्यनीकप्रकर प्रतिमुटि-तकियत्सपत्नसामन्तसम्मुखसंय्योधन सेव माध्रवाऽमर नवब्रह्म गङ्ग सारण जैत्र सोण्ड प्रभृतिबुन्दीवीरविपोथितवैरिवर्गसंख्यासूचन।

बारम्बार सौंड का रतिवाह देना सुनकर चूंडा और उदय दोनों का दो

बार रतिवाह देना, श्रावण की अमावस्या पर्यन्त के युद्ध से बूँदी की विजय नहीं मिलने से अपने उमरावों के समूह की सलाह से अपने स्थान में पगड़ी रखकर राणा कुम्भकर्ण का चुपके से चित्तौड़ जाना, यह वृत्तान्त जानकर सारण और सचिव आदि के निज उत्साह को बढ़ाने से और सौंड की भलीभांति बढाई हुई वीरता से यशकर्ण दूसरे नाम से गङ्ग, माधव आदि भाइयों के समूह को बुलाकर बूँदीन्द्र सुभाण्डदेव का पगड़ी ही है स्वामी जिसकी ऐसी चित्तौड़ की सेना से युद्ध करने को चलना, अपने सुहृदों के मना करने के विरुद्ध हठ से अपने अपने रोग के वेग को न गिनकर घोड़ों पर चढ़, प्रस्थान करने वाले सारण और जैत्र का अपने स्वामी की सहाय होना, शत्रुसेना के पीछे आधी पैदल सेना को भेजकर आधी पैदल सेना को अपने साथ ले कर घोड़े पर सवार होकर हड्डाधिराज का प्रथम बारूद के पीपों से क्षोभ होने के कारण बंधन तुड़वाकर शत्रुओं की सेना के घोड़ों को भगाना, दो घड़ी रात्रि बाकी रहते समय बूँदीन्द्र की सेना के रतिवाह के कोलाहल से जगकर गाफिल भागे हुए शत्रुओं के समूह में से पीछे मुड़े हुए शत्रु के कितने ही उमरावों का सन्मुख युद्ध करना, सेव, माधव, अमर, नवब्रह्म, गढ़, सारण जैत्र और सोंड इन बूंदी के वीरों से मारे हुए वैरिवर्ग की संख्या की सूचना करना।

दिवाकरोदयाऽधिसमस्तशिबिरसामग्रीसंग्रहणावसर भूपभट-गोभिलहरिसिंह हस्तमेदपाटमहीपमूर्द्धमण्डनमिलन श्रुतैतदुदन्त-प्रत्यागतपरप्रवीरद्विशती पुनःप्रत्याघातप्रवर्तन खड्गखण्डितद्वैषिद्वय पृशत्कपरासूकृतप्रतीपपंचक पृथ्वीप्रोत्साहितप्रबीरतच्छेष निषूदन संस्थापितपरपक्षत्रयोदशशतक सुभाण्डदेव सुभटषट्शतक शूरशय्याशयन निर्घोषितविजयवाद्यप्रद्रावितपारिपन्थिक सक्षतस्वभटकारितोचितोपचारयथातथप्रसारितप्रवीरहड्डाधिराजशत्रुशीर्षोद्दशिरोवेष्टन स्वसद्मसमायन पलायनप्रत्यागतनिजानीकिनीप्रेक्षणपराङ्मुखतत्रपा-निगूढन्युषितमासयुग्म राणाकुम्भकर्णतनुत्यागानन्तरतत्पुत्रराजमल्ल-पितृपट्टप्रापणं विंशतितमो मयूखः ॥२०॥ आदितः सप्तषष्ट्युत्तरैकश-ततमः ॥१६७॥

सूर्योदय के समय समस्त डेरों की सामग्री हरण करने के समय राजा के उमराव गोभिल हरिसिंह के हाथ मेवाड़ के महीप की पगड़ी मिलना, यह वृत्तान्त सुनकर शत्रु के दो सौ वीरों का वापस आकर फिर युद्ध करना, दो शत्रुओं को खड्ग से और पाँच शत्रुओं को बाणों से मारकर राजा के उत्साहित

वीरों का बाकी के शत्रुओं को मारना, तेरह सौ शत्रुओं को मारकर सुभाण्डदेव के छह सौ सुभटों का मारा जाना, विजय के वाद्य बजवाना, शत्रुओं के भगाये, घायल हुए अपने वीरों का उचित इलाज कराकर यथातर्थ उनकी फैलाई हुई वीरता से हड्डाधिराज का सीसोदिया शत्रु की पगड़ी को अपने घर में लाना, भागकर वापस आई हुई अपनी सेना के देखने में पराङ्मुख उस लज्जा से गुप्त निवास करने वाले राणा कुम्भकर्ण के शरीर छोड़ देने के बाद उसके पुत्र रायमल्ल का अपने पिता का पाट पाने का बीसवाँ मयूख समाप्त हुआ। और आदि से एक सौ सड़सठ मयूख हुए।

प्रायो ब्रजदेशीय प्राकृत मिश्रित भाषा

दोहा

अनुज सोंड हित दिय उचित, नरपति करउर नैर।
तंहं रहि चिंत्यो हनि तुरक बालन स्वजनक बैर॥१॥

पच्छे लिय पट्टनि प्रमुख, अक्खय दब्बे अग्ग।
अग्रज कों तंहं किय अमल, लोभ न रंचक लग्ग॥२॥

बूँदी की इस विजय के बाद राजा सुभांडदेव ने अपने छोटे भाई सोंडदेव को करउर नगर की जागीर प्रदान की। वहीं रहते हुए सोंडदेव ने बाद में अपने पिता का वैर लेने के लिए मांडूपति बाजबहादुर को मारा। अक्षयराज ने जो बूँदी की सीमा में पाटण आदि नगर दबा लिये थे उन पर फिर से अपने बड़े भाई राजा सुभांडदेव का आधिपत्य करवाया पर सोंडदेव ने स्वयं के लिए रंचमात्र भी लोभ नहीं किया।

षट्पात्

सारन जैत सहाय सोंड लै अग्रज दल सन।
चुंड उदय चंपीहु अवनि पच्छी लिय अप्पन।
जैताउत खंधिल जु मारि सोलह सुत्तो महि।
तस भ्रूणंग तनूज लई उदयसु सक्यो न लहि।
बाकोहु अमल करवाइ उत नानता दि ग्रामन निपुन।
चहि जनकबैर लग्गो चढन मंडुवपुर पृतना प्रगुन॥३॥

अपने बड़े भाई राजा सुभांडदेव की सेना ले कर सोंडदेव ने सारणदेव और जैत्रसिंह की सहायता से बूँदी राज्य की भूमि को जिसे चूंडा और

उदयसिंह ने दबा लिया था को उनके अधिकार से छुड़ाया। इस प्रकार सोंडदेव ने अपने राज्य की भूमि को वापस लिया। पूर्व में खांधिल जैताउत जिसने सोलह वीरों को मार कर जिस भूमि को दबाया था और जिसे उदयसिंह भी वापस नहीं ले सका था वह भ्रूणंग के पुत्र को वापस प्राप्त हुई। इस ली हुई भूमि पर जिसमें नानता आदि गाँव थे उसका अधिकार करवा कर सोंडदेव ने अपने पिता वैरीसाल का वैर लेने के लिए अपनी विशिष्ट गुणों वाली सेना को साथ ले कर मांडू नगर पर आक्रमण करने का सोचा।

इहिं निहोरि नृप अग्ग जैत सारन लाये जब।
अग्रज सचिव उपेत ताहि च्यारि हु बुल्ले तब।
मंडुवपति वह मिच्छ प्रचुरदल साह बजत पहु।
अज्ज नृपन गंजि अरु लेत आब्दिक सबतैं लहु।
संगर न ताहि अंगमि सकैं उज्झहु लाल कुमंत्र यह।
छिन्नी स्वकीय बिमुखन छिति जु सुहि दब्बहु उद्यम असह ।।४।।

यह जान कर राजा सुभांडदेव, उसके मंत्री खित्तलशाह, जैत्रसिंह और सारणदेव इन चारों ने उसे समझाया कि मांडू का स्वामी वह यवन बहुत बड़ी सेना का मालिक है और अपने बल के आधार पर ही वह बादशाह कहलाता है। उसने कई आर्य राजाओं को हराया है और वह उन सभी से सालाना खिराज वसूल करता है। हम उसे युद्ध में नहीं दबा सकेंगे इसलिए हे लाला! यह खोटी सलाह छोड़ दो अभी तो तुम अपनी उस भूमि को छुड़ाओ जिस पर हमारे शत्रुओं ने बलात् अधिकार कर रखा है। फिलहाल तुम यह कठिन उद्यम करो।

दोहा

सो मन्त्री जिम सोंड सुनि, दिन कछु ठहरि उदार।
छिन्नी अरु रक्खी जु छिति, लिन्नी बिमुखन लार।।५।।

परत भार न सह्यो क पर, परैं काम जिन पोचि।
उनतैं सब छिन्नी अवनि, उचित दमन आलोचि।।६।।

सुपहु जैत सारन सचिव, सोंड हि निट्ठि निहोरि।
पच्छी दिय ही जु कु प्रथम, तिन्ह मन कानि न तोरि।।७।।

सभी द्वारा दी गई इस राय को सोंडदेव ने मान लिया और उसने अपनी योजना कुछ दिन के लिए स्थगित कर दी। इस बीच उसने राज्य की दूसरों द्वारा हड़पी हुई भूमि को छुड़वाया। जिन लोगों ने राज्य पर पड़ते भार को अपने सिर पर वहन नहीं किया और जरूरत पड़ने पर पोचे (कमजोर कायर) सिद्ध हुए ऐसे लोगों को दंड देना उचित समझ कर उनसे सारी भूमि छीन ली। (अधिकतर यह राज्य के उन सामन्तों के साथ ही हुआ जिन्होंने राजा को बाल्यावस्था में निर्बल जान कर भूमि हथिया ली थी) तब राजा सुभांडदेव, जैत्रसिंह, सारणदेव और राजा के मंत्री खित्तलशाह ने सोंडदेव को समझा बुझा कर कि अब उनका दर्प दमित कर दिया गया है इसलिए यह छीनी हुई भूमि उन्हें वापस कर देनी चाहिए ताकि इससे उनकी मर्यादा भी बनी रह जाए।

तिनमैं हो सु त्रिबिक्रम हु, सैंगर बिमुख कुसंग।
सो अपमान न जिहिं सह्यो, जो तिलतिल हुव जंग ॥८॥

भार परत जिन जिन भटन, निबह्यो टारि नरेस।
दब्बे स्वबस प्रदेस जे, अप्पे तिनहिं असेस ॥९॥

जिनसे भूमि छीनी गई ऐसों में त्रिविक्रम सेंगर भी था जो बुरे साथ के कारण राजा से विमुख हो गया था। उससे भूमि वापस लेने का अपमान नहीं सहा गया और वह राजा की सेना का सामना करते हुए रणभूमि में तिल-तिल हो कर कट मरा। राज्य पर आपदा पड़ने के समय जिन जिन सामन्तों ने राजा की सहायता करने का कार्य टाल दिया था और जिन्होंने राज्य को भूमि दबा ली थी। वे सभी भय के मारे अब भूमि को वापस लौटाने लगे।

मदनावतारः

तोग अनुजात जो गंग नवगामपति,
जास अभिधान जसकर्ण दूजो जगति।
सुरथपुर दै रु उडुदुर्गपति सो कर्‌यो,
अप्प सिर तोग कृत ऋन सु इम उद्धर्‌यो ॥१०॥
भिरत घुग्घुल हर जु टूक लक्खन भयो,
अमर तस पुत्र जिहिं खेट पुर अप्पयो।

हड्ड नवरंग कुल भ्रात माधव हितैं,
अस्व निज जुत्त अरनिट्ठ अप्पिय इतैं ॥११॥

तोगदेव का छोटा भाई जो नवगाँवा का स्वामी गंगासिंह था उसका अवर नाम यशकर्ण भी प्रसिद्ध था। उसे सुरथपुर की जागीर प्रदान कर राजा ने तारागढ़ दुर्ग का किलेदार (दुर्गपति) बनाया। तोगदेव के इस भाई ने अपना सिर सौंप कर पितृऋण अदा किया। राज्य की दबाई हुई भूमि को वापस छुड़ाने के कार्यक्रम में जिन और वीरों ने अपनी जान दी उनमें घुग्घुल का पौत्र लक्खन (लक्ष्मण) भी था जो भिड़ंत में टुकड़े-टुकड़े हो रणभूमि में गिरा। राजा ने लक्ष्मण के पुत्र अमरसिंह को खेड़ा नामक पुर की जागीर दी। इसी प्रकार हाड़ा नवरंग के वंशजों के बांधव माधवसिंह को राजा ने अपने घोड़े सहित अरणेठा नामक गाँव की जागीर प्रदान की।

दोहा

मोरत बल मेवारको, सबन गिन्यों कछु सत्व।
बिमुखन दब्बी लेत बलि, पिक्ख्यो उचित नृपत्व ॥१२॥

इक्कैं कोउन परत अब, संब अचानक सीस।
मन औरैं कछु चिंत मन, जोरैं कछु जगदीस ॥१३॥

सोंड गिनी नृप वा सुभट, मंडू जाइ न मूर।
मैं दावा करि मिच्छ सों, कुरूं सु व्याकुल कूर ॥१४॥

करउर ही यह मंत्र करि, सादी चउसत सज्जि।
मालव जो मंडू मुलक, गो लुट्टन तिहिं गज्जि ॥१५॥

चित्तौड़गढ़ के महाराणा कुंभा की मेवाड़ी सेना को जब वापस मोड़ कर भगाया तभी से राजा सुभांडदेव को लोगों ने पराक्रमी मानना शुरु किया पर जब उसने अपने राज्य की दबाई हुई भूमि को वापस लेना आरंभ किया तो उसके नृपत्व पर और अधिक निखार आ गया। इस बात की कल्पना किसी ने नहीं की थी कि अब सिर पर वज्रपात होगा। मन जो कुछ सोच कर मन ही मन करने की सोचता है पर जगदीश (भगवान) कुछ और ही सोच कर मन का सोचा पूरा नहीं होने देता। सोंडदेव ने समझा कि राजा और उसकी सेना मांडू जाएगी। पीछे नहीं मुड़ने वाली सेना के सहारे मैं धावा बोल

कर यवन बाज बहादुर को व्याकुल कर दूँगा। सोंडदेव ने करउर में ऐसी मंत्रणा कर अपने साथ चलने के लिए चार सौ घुड़सवार योद्धाओं को सज्जित किया और गर्जना करता हुआ वह वीर मालवा मुल्क में अवस्थित मांडू नगर को लूटने के लिए चला।

मदनावतारः

हड्डु नृप छन्न इम सोंड सजि हंकियो,
ढार खुरमार रजभार रवि ढंकियो।
पुब्ब लक्खेरि पुनि जाइ पट्टनि पर्‌यो,
आपगा थाग कोटा सु क्रमि उत्तर्‌यो॥१६॥
भ्रात भ्रूणंग महिमानि मह मंडयो,
द्वै दिवस रक्खि उपहार इच्छित दयो।
मन्नि इम कोउ आ जाइ जिन मोरिबे,
द्रुतहि चढिगो सु जनकारि भुव दोरिबे॥१७॥

बूँदी के हाड़ा राजा सुभांडदेव को बिना बताए गुप्त रूप से सोंडदेव ने अपने दल को बढ़ाया। उसके काफिले के घोड़ों की टापों से उड़ी रजकणों से सूर्य ढंक गया। उसका दल पहले लाखेरी पहुँचा वहाँ से आगे पाटण होते हुए नदी को थाग कर (नदी को चल कर पार करने को थाग कहा जाता है) कोटा पहुँचा। कोटा में सोंडदेव की मेजबानी बांधव भ्रूणंग ने की। उसने अपने अतिथियों को दो दिन तक अपने यहाँ ठहराया और बाद में उपहार दे कर उन्हें विदा किया। हाड़ा भ्रूणंग को यह मनवा कर कि कोई हमारा पीछा करने आए तो उसे मोड़ना तुम्हारा कार्य है वह सोंडदेव शीघ्र ही अपने पिता के शत्रु की भूमि दबाने आगे बढ़ा।

भूध्र दर लंघि मग लुट्टि खिच्चीन भू,
खुंदि किय पट्टनि रु भानपुर खीन भू।
रक्खि अपसब्य चंद्राउतन रामपुर,
पैठिगो देस आवंत्य भय दै प्रचुर॥१८॥
कन्हड़ हिं खुंदि सारंगपुर कुट्टि कैं,
लिन्न करि खिन्न उज्जैन लग लुट्टि कैं।

इंद्रपुर धुम्मि इत जागपुर अंगम्यों।
दब्बि खनीज इतकों मऊ लों दम्यों॥१९॥

पहाड़ी दर्रा लाँघ कर सोंडदेव ने रास्ते में पड़ने वाले शत्रु खीची की भूमि लूटी। खीची की भूमि पाटण और भानपुर को कुचल कर उसे कमजोर बनाया। यहाँ से आगे चन्द्रावतों के रामपुर को दाहिनी ओर छोड़ कर अपना भय प्रसारित करता हुआ सोंडदेव का दल उज्जैन प्रदेश की सीमा में दाखिल हुआ। यहाँ घुसते ही कन्हड़ और सारंगपुर के शासकों को लूटा अर्थात् उन्हें हराते हुए उसने उज्जैन तक का क्षेत्र जीत कर वहाँ के शासक को खपा कर दिया। उसने इन्द्रपुर को हरा कर जोगपुर को दबाया। यही नहीं यहाँ से आगे खनिज पुर सहित मऊ तक के क्षेत्र का दमन किया।

दै बसी त्रास सीतामऊ दंडयो,
खुंदि सुरनैर हरिदुर्ग इत खंडयो।
पिप्पलोदा रु समखेट जय पट्टिकैं,
दंडि अरुनोद निंबोद लिय दट्टिकैं॥२०॥
बाहिनी साह की पिट्ठि लग्गी बही,
संग जिम छांह तिम रंग इच्छित सही।
सोंड जय लैंन दिन अैंन कछु सैंन कैं,
नैक निस में न मिलि चैंन दुव नैंन कैं॥२१॥

यहाँ से आगे बसी को त्रास दे कर सीतामउ को दंडित किया। सोंडदेव के दल ने आगे सुरपुर, हरिगढ़ पिप्पलोद और समाखेड़ा पर विजय हासिल की। आगे इस दल ने अरणोद और निंबोद को दबाया। मांडू के वादशाह की सेना इस दल का पीछा करती हुई चलती रही। मनुष्य के शरीर के साथ जिस प्रकार छाया रहती है उसी प्रकार भिड़ंत की इच्छा करती हुई मांडूपति की सेना साथ लगी रही। सोंडदेव ने विजय प्राप्त करने के लिए दिन के समय थोड़ा विश्राम कर अपनी थकान मिटाई। पिछली कई रात्रियों से उसकी पलकें मुंदी नहीं थी अर्थात् नींद नहीं ली थी।

धर्म आपत्ति के तुल्य चर्या धरैं,
अर्ब आरूढ कहुं भोज्य सब अहरैं।

जानि इम बात भजिजात अरि जानिहैं,
तुझि असि मोघ खल मुच्छ कर तानिहैं ॥२२॥
सोधि यह अप्प निंबोद सन संक्रम्यो,
जंगहर द्रंग रुचिरंग दोउ न जम्यों।
भात दल ब्रात दुव प्रात पहिलैं भले,
चीरते दंस पल हड्डु असि व्हां चले ॥२३॥

यह वीर आपद्धर्म के समान आचरण करने वाला घोड़े पर सवार जब चलता है तो राह में जो कुछ मिल जाए खा लेता है। उसका सुनते ही कि आ रहा है शत्रु अपना स्थान छोड़ कर भाग जाते हैं और कभी-कभी व्यर्थ ही तलवार उठा कर अपनी मूंछों पर ताव देते हैं। यह वीर सोंडदेन का दल उन्हें ढूंढते हुए निंबोद से चला। वहाँ से थोड़ा आगे जंगहरपुर दोनों को रणभूमि बनाने के उद्युक्त लगा। दोनों सेनाओं के शोभायमान समूह प्रातःकाल होने से पहले ही भिड़ पड़े। जहाँ शत्रुओं के कवच और उनके मांस को चीरती हुई हाड़ाओं की तलवारें चलीं।

सत्रु बहु निंदगत भान लहि नां सके,
छिप्र निसअंत तम लोह हड्डु न छके।
खान परवेज अरि मुख्य भिरतहि खप्यो।
थीर चहुवान पर प्रान पीवत धप्यो ॥२४॥
मरत सेनाधिपति पाय मिच्छन मुरे,
आहनें केक नासीर बढि अंकुरे।
पार दल केर दुव बेर हय प्रेरये,
गाहि भुजपीन सततीन खल गेरये ॥२५॥

शत्रुदल की आंखों में नींद घुली हुई थी इसलिए पूरी तरह सावधान न हो सका और रात्रि के अन्त से थोड़ा पहले हाड़ाओं के खड़गों के प्रहार खा कर घायल हो बैठे। यवन सेनापति परवेज खान तो भिड़ंत के शुरू होते ही मारा गया और धीर चहुवान शत्रुओं के प्राण पीते हुए अघा गया। अपने सेनापति के मरते ही म्लेच्छों की सेना मुड़ कर भाग खड़ी हुई पर हाड़ा दल ने आगे बढ़ कर कई यवनों को मारा। इस दल ने दो बार अपने घोड़े बढ़ा

कर भागते यवन दल से आगे जा कर उन्हें रोक कर मारा। हाड़ा दल ने अपनी पुष्ट भुजाओं से तीन सौ शत्रुओं को काट गिराया।

जुग्गिनी बीर पलचार जयकार लै,
फोज मुरमाई घनघाई जस फार लै।
बंब घुरवाई छकछाइ ठट्टो बली,
वाह जग पाइ जुरवाइ उत अंजली ॥२६॥

जत्थ तरफत लखे मिच्छ घायल जिते,
तानि बहुजान कहुं थान पठये तिते।
झारि असि रारि सतइक्क निजहू झरे,
अट्ठ अरु बीस तिन माहिं परि उब्बरे ॥२७॥

योगिनियों, बावन भैरवों और मांस भक्षी पक्षियों को संतुष्ट कर उनसे जय जयकार ले कर सोंदडेव हाड़ा ने अपने दल को वहीं से वापस मोड़ कर बहुत सुयश प्राप्त किया। अपनी विजय के नगाड़े बजवा कर ही उत्साह से भरा वह बलवान वीर रुका। उसने पूरे जगत से वाहवाही ली और शत्रुओं से हाथ जुड़वाए। रणभूमि में जिन यवनों को घायल पाया और जिनके जीवित रहने की उम्मीद थी उन सभी घायलों को पालकियों में रखवा कर उनके स्थान तक पहुँचाया। हाड़ा सोंडदेव ने जिस युद्ध में तलवार के जोहर दिखाए उसी युद्ध में उसके सौ योद्धा घायल हो कर रणभूमि में गिरे। उनमें से बीस और आठ याने अठाईस वीर बच गए।

दोहा

तिन्ह डोलिन बैठारि तब, मुररि सोंड अतिमान।
कियउ साह हय लैन कों, पुर दसपुर प्रस्थान ॥२८॥

मंडूपति की मंदुरा, ताजिन की इक तत्थ।
द्रंग नदीतट जिन दिनन, सुखित रहैं रुचि सत्थ ॥२९॥

सत्तुन मोदक दधि सिता, असन लहैं जे अर्ब।
सुगम न्हान ग्रीखम समय, सरितातट इम सर्ब ॥३०॥

दिनमें खसखानन दुरैं, छिति टट्टिन छिरकाइ।
निस बाहिर बंथैं निखिल, प्रतिठानन रुचि पाइ॥३१॥

अपने घायल योद्धाओं को डोलियों में लदवा कर सोंडदेव हाड़ा वापस मुड़ा और बादशाह के घोड़े लेने के लिए उसने मंदसौर नगर की ओर प्रस्थान किया। मांडूपति बाज बहादुर की एक हयशाला जिसमें अच्छी नस्ल के घोड़े थे वहाँ मंदसौर में शिप्रा नदी के तट पर थी जिसे पूरी रुचि ले कर मांडू के बादशाह ने वहाँ बनवाया था। सत्तू के लड्डू, दही, शक्कर जैसा भोजन जिनको दिया जाता ऐसे घोड़े यहाँ थे। उन्हें ग्रीष्म ऋतु की गर्मी में अच्छी तरह नहलाया जा सके यही सोच कर इस हयशाला को नदी के तट पर बनाया गया था। दिन को ये घोड़े खसखस की टट्टियों से बने खानों में रहते और टट्टियों पर पानी छिड़का जाता। रात्रि के समय थोड़ा ठंडा हो जाने पर सभी घोड़ों को उनके ठानों (बंधने के स्थान) से बाहर ला कर खुले में बाँधा जाता।

षट्पात्

बाजबहादुर बाजि खास ताजिक नत खंधन।
इम दसपुर सतइक्क बिहित तटिनी तट बंधन।
तिन हि लैंन दृढ तक्कि सोंड सतत्रय भट सादिन।
अद्धर जनि खिन आइ मारि तिन्ह त्रान प्रमादिन।
सस्त्रन दु बंध करि छिन्न सब लोल हयन धरि अग्ग लिय।
संजेत लुट्टि हंकत सतत दरगिरि पैठि मिलान दिय॥३२॥

मांडू के बादशाह बाजबहादुर के झुके हुए कंधों वाले अच्छी नस्ल के सौ घोड़े थे जो यहाँ मंदसौर (दसपुर) में नदी के तट पर बंधे हुए थे। इन्हें हथियाने के लिए सोंडदेव ने दृढ़ निश्चय कर अपने तीन सौ घुड़सवार योद्धाओं के साथ उस हयशाला में पहुँच कर उन घोड़ों की रक्षा करने को तैनात असावधान प्रहरियों को मार गिराया। घाड़ों को बांधने के अगाड़ी (गले में बांधने का रस्सा) और पिछाड़ी (घोड़े के पिछले दोनों पांवों को

बांधने के लिए बनी दो रस्सियों को पिछाड़ी कहते हैं) के दोनों बंधनों को अपने शस्त्रों से काट डाला फिर उन चपल घोड़ों को अपने साथ लिया और वहाँ का सामान लूट कर वे निरन्तर अपने घोड़े दौड़ाते हुए पहाड़ के दर्रे में पहुँचे। यहाँ सोंडदेव के दल ने पड़ाव डाला।

भ्रात सु सुनि भूणंग हुलसि पहुंच्यो सहाय हित।
बल खिच्चिन तिर्हि बेर सुनत बाहिर हुव संचित।
दसपुर तैं मिच्छ दल सहंसइक पिठि्ठ लग्यो सरि।
पहुंचि मिल्यो अगपार कलह खिच्चिन सीरी करि।
दर रुक्कि झारि तुपकन दुहुंन इन संगर मंडिय असह।
भूणंग भिरिग सतदुव भटन सोंड जुरिग सततीन सह॥३३॥

जब उनके आगमन का समाचार सोंडदेव के भाई भूणग ने सुना तो वह हुलस कर सहायता के लिए चल कर सामने पहुँचा और यह समाचार जब खीचियों ने सुना कि सोंडदेव वापस लौट रहा है तो वे सभी इकट्ठे हुए। मंदसौर से घोड़े लुट जाने की खबर पा कर म्लेच्छों का एक दल जिसमें एक हजार सैनिक थे पीछा करता हुआ आया। वह चल कर पर्वत के पार पहुँचा और उसने युद्ध के लिए खीचियों के साथ साझा किया। पहाड़ के दर्रे के पास ही दोनों दलों का मिलान हुआ और मिलते ही युद्ध शुरू हुआ। भूणंग हाड़ा अकेला दो सौ शत्रुओं से भिड़ा और सोंडदेव तीन सौ योद्धाओं से जा अड़ा।

आत दरे ढिग अरिन मारि मोलिन पग मोरे।
सहंस मिच्छ दुव सहंस असह खिच्ची हु अहोरे।
तिन्ह मुकाम तंहं जानि सबर हक्कारि उभैसत।
रक्खि दरे पर लरन रिक्थ बहु अप्पि करे रत।
तिन रुपि निसंक भिल्लन तबहि जुरि रोके खिच्चिय जवन।
सहमात्र सोंड कोटा क्रमिय हेतिन करि अहितन हवन॥३४॥

दर्रे के पास आते ही मोला (खुदा) को मानने वालों पर तलवारों के प्रहार कर उन्हें वापस मोड़ा। एक हजार म्लेच्छों और दो हजार की संख्या वाले खींचियों के दलों को उस वीर के दल ने रोक लिया। सोंडदेव हाड़ा का पड़ाव वहाँ जान कर दो सौ भीलों का दल वहाँ पहुँचा। उन्हें सोंडदेव ने धन दे कर अपनी ओर से लड़ने के लिए दर्रे पर तैनात कर दिया। निडर भीलों ने पर्वत पर मोर्चे ले कर खीची और यवन दलों को आगे बढ़ने से रोक दिया। फिर सोंडदेव के साथ उसके सारे बांधव अपने शस्त्रों से शत्रुओं को होम कर कोटा की ओर बढ़े।

दोहा

कानि रक्खि भूणंग की, हित कोटा चउ रत्ति।
हय किय भेट सुभांड रहि, घर घर पुर जसघत्ति ॥३५॥

उपालंभ जैत रु अधिप, सारन सचिव समेत।
दिन्नों कहि आन्यों दुखहि, बुंदिय भय समवेत ॥३६॥

भूणंग की बात रखते हुए सोंडदेव अपने दल सहित चार रात तक वहाँ कोटा में रुका। सोंडदेव ने यहाँ अपने भाई को घोड़े भेंट किये और नगर के घर घर में अपनी कीर्ति फैलाई। बूँदी के राजा सुभांडदेव, जैत्रसिंह, सारणदेव, और मंत्री खित्तलशाह सभी ने सोंडदेव को उलाहना दिया कि यह तुमने क्या किया? तुम बूँदी के लिए दुःख और भय दोनों को न्यौता दे आए।

पादाकुलकम्

जोध तनय बीका इत जंगल, बड्डि संखुलन प्रधन महाबल।
भट्टि न जित्ति तत्थ निर्जल भुव, हद निजनाम द्रंग बिरचत हुव ॥३७॥

बिक्रम सक मुनि दृग तिथि बित्तत, सनि बैसाख तीज सित संगत।
पहु बिक्रम जंगल जयपायो, बर पुर बीकानैर बसायो ॥३८॥

तंहं तदनुज बीदा हु बीरतर, स्वाभिध खेट रच्यो बीदासर।
जबतैं बीकानेर सु जंगल, बन्यो राज्य बढ़ि बढि इतनैं बल ॥३९॥

बदत किते सर चउतिथि संबत, सो बहु हेतुन परत असंगत।
वृद्ध जोध जोधपुर बसायउ, पहिलैं तस बीका जनु पायउ ॥४०॥

उधर जोधा का पुत्र बीका (बिक्रम) जंगलधर प्रांत की ओर गया उसने वहाँ युद्ध में सांखला क्षत्रियों को मार भगाया। फिर भाटियों को जीत कर इस निर्जल भूमि में अपने नाम से नगर बसाने का निर्णय किया। विक्रम संवत् के वर्ष पन्द्रह सौ सत्ताईस के वैशाख माह के शुक्ल पक्ष की तृतीया तिथि तदनुसार शनिवार[1] के दिन राजा बीका ने जंगलप्रदेश पर फतह पाई और बीकानेर नामक एक सुन्दर नगर बसाया। उसके छोटे भाई बीदा ने भी तब अपने नाम पर बीदासर गाँव बसाया। तभी से जांगल प्रदेश बीकानेर के नाम से प्रसिद्ध हुआ जो इसी नये नाम से जाना जाने लगा और शनैःशनैः विकास करता हुआ एक दृढ़ राज्य बन गया। कई इतिहासकार विद्वानों का कहना है कि बीकानेर की स्थापना विक्रम संवत् के वर्ष पन्द्रह सौ पैंतालीस में होना कई ग्रंथों में लिखा है पर कई कारणों से यह समय असंगत लगता है क्योंकि राव जोधा ने वृद्धावस्था में जोधपुर बसाया था उससे पहले ही बीका ने जन्म पा लिया था।

बीस बरस बय के निकट हि बलि, किय जंगलधर अमल जित्ति कलि।
अरु पुंगलपति पुत्री उद्वहि, बिरच्यो द्रंग वहहु तंहं बेगहि ॥४१॥

राव बीका ने बीस वर्ष की वय में ही जांगल देश की भूमि पर युद्ध जीत कर अपना आधिपत्य जमा लिया फिर पूंगल के राजा की पुत्री से विवाह रचा कर शीघ्र ही बीकानेर जैसा नगर बसाया।

१. यहाँ पर ग्रंथकर्ता (सूर्यमल्ल) ने बीकानेर के बसने के संवत् १५४५ का खंडन करके संवत् १५२७ में बीकानेर का बसना लिखा है सो ठीक नहीं है क्योंकि बीकानेर का बसना संवत् १५४५ के वैशाख शुक्ल २ शनिवार के दिन प्रसिद्ध है यही बीकानेर के लिए नैणसी मुहता, कर्नल टॉड और उदयपुर के महामहोपाध्याय कविराजा श्यामलदास ने माना है। जैसलमेर के इतिहास में संवत १५४२ में बीकानेर का बसना लिखा है सो भी असत्य है यह संवत् १५२७ में बहुत दूर और ४५ के संवत से अधिक समीप है परंतु अधिक मत के कारण हम संवत ४५ को ही सत्य मानते हैं बीका का पहिले पूंगल के पति की पुत्री से विवाह करना और फिर करनी माता की आज्ञा से सेखा नामक भाटी की पुत्री से दूसरा विवाह करना लिखा सो तो सब सत्य है परन्तु यह विवाह बीस वर्ष की अवस्था में ही लिखा सो ठीक नहीं है क्योंकि बीकानेर की ख्यात में बीका का जन्म विक्रम संवत् १५९५ में एवं जोधपुर की ख्यात में १४९७ में होना लिखा है इन दोनों में से कोई भी सत्य हो, परंतु बीका ने पुंगल के राव शेखा की पुत्री से संवत् १५३५ के पीछे विवाह किया है सो बीका की अवस्था उस समय ४० वर्ष से न्यून नहीं थी और जोधपुर का राव जोधा भी उस समय विद्यमान था क्योंकि राव जोधा का देहांत संवत् १५४५ में ६१ वर्ष की अवस्था में होना लिखा है बीकानेर वाले जोधा का देहांत १५४७ में लिखते हैं परंतु बहुमत से ऊपर का संवत् ही सत्य पाया जाता है। - संपादक

दोहा

करि निज सक्ति निदेस करि, धरि बीका लहि धीर।
सेख भूप भट्टिय सुता, ब्याह्यो पुंगल बीर॥४२॥

करत सक्ति के कथित करि, अबलों बिहित उछाह।
पहिलैं बीकानैर पहु, इम पुंगल उद्वाह॥४३॥

पहु सूजा हुव जोधपुर, परत जोध तस पुत्त।
तस कुमरहिं मृत बग्घ तंहं, जनि गंग हिं जस जुत्त॥४४॥

उस धीर वीर बीका ने अपनी आराध्या करनी माता की आज्ञा से भाटी वंश के राजा शेखा की पुत्री के साथ पूंगल जा कर विवाह किया। राव बीका ने शक्ति (करनी माता) के उस कथन को पूरा किया था इसलिए तब से लगभग यह प्रथा सी बन गई कि बीकानेर का राजा अपना पहला विवाह पूंगल में करता है। इधर जोधपुर में राव जोधा की मृत्यु के बाद उसका पुत्र सूजा राजा बना। उसके पुत्र कुमार बाघा की मृत्यु हो गई पर उसकी मृत्यु के बाद गंगासिंह नामक पुत्र जन्मा।

अधिप परत सूजा हु अब, सब नत्ती यह तास।
कुमर बग्घ को जो कुमर, अधिप गंग तंहं आस॥४५॥

राज्य करत आमैर इत, भारमल्ल भूमान।
प्रतपै गढ चित्तोर पहु, रायमल्ल इत रान॥४६॥

मंडूपति के जिहिं समय, अस्व खास सत आनि।
नृपहित सोंड निवेदये, जे दुख हेतु न जानि॥४७॥

जोधपुर के राजा राव सूजा की जब मृत्यु हुई तो उत्तराधिकारी के रूप में विद्यमान सारे पौत्र थे। उनमें से कुमार बाघा (व्याघ्रराज) का पुत्र गांगा उसके राजसिंहासन पर बैठ कर राजा बना। इस समय उधर आमैर में भारमल कछवाहा राज करता था तो चित्तौड़गढ़ का महाराणा रायमल था। मांडूपति के जब अच्छी नस्ल के सौ घोड़े सो‍ंडदेव मंदसौर से जबरन लाया तो उसने उन्हें ला कर बूंदी के राजा को भेंट किये तब वह नहीं जान रहा था कि ये घोड़े भविष्य में दुःख का कारण बनेंगे।

षट्पात्

सु सुनि कुप्पि हुव असह मिच्छ वह बाजबहादुर।
बन्हि मनहु बारूद अनखि उद्धत प्रजरयो उर।
बुन्दिय लैन बिचारि कटक निज अखिल सज्ज किय।
गन तोपन बहु प्रगुन कलह जय उदय कज्ज किय।
बीरन पटाहु बढते बखसि थप्प्यो मंडुव भारभुज।
किय मंत्र नियत पकरन कुटिल अधिप सुभांड इह सह अनुज ॥४८

अपने घोड़ों के लूट लिये जाने के समाचार जब िच्छ बादशाह बाज बहादुर ने सुने तो वह असहनीय क्रोध से भर उठा मानों किसी ने बारूद में अग्नि लगा कर उसके कलेजे को राख कर दिया हो। उसने तुरन्त ही बूँदी पर अधिकार करने के लिए अपनी सेना को सज्जित किया और युद्ध में सहज विजय प्राप्त करने के लिए अच्छी-अच्छी तोपों का समूह साथ लिया। उसने अपने सामन्तों को बड़ी-बड़ी जागीर के पट्टे दे कर कहा कि मांडू का भार अब तुम्हारी भुजाओं पर है और मंत्रणा कर यह निश्चय किया कि उस कुटिल राजा सुभांडदेव को उसके छोटे भाई सोंडदेव सहित पकड़ कर बंदी बनाया जाए।

जवन करे गृह जाइ दुष्ट पहिलैं बालकदुव।
तिनमें स्याम सु तास पास बिस्वासपात्र हुव।
प्रपा महानस प्रमुख दुलभ बिक्ष तिहिं दिन्नों।
सोवत इकनिस सबन पिहित जगि साह क पिन्नों।
पात्री सु उदंचन बिनुहि पुनि रक्खि आइ पल्यंक रहि।
स्याम हिं जगाइ रिस तास सिर करिय पिलावहु आब कहि ॥४९॥

पूर्व में जब बूँदी से यवन बाजबहादुर राजा के दो बालक उठा लाया था। उस दुष्ट ने उनमें से श्याम नामक बालक को घर ले जा कर धीरे-धीरे अपना विश्वासपात्र बनाया। इसलिए वह श्याम सदा अपने स्वामी के पास रहता। आबखाना (पानीघर) रसोईघर आदि का उसे हाकिम बनाया और इस निमत्त कई अधिकार दिये। वह श्याम हर दम उसकी हाजरी में रहता। एक रात को जब सभी सो रहे थे तो बादशाह को प्यास लगी तो उसने बिना किसी को जगाये स्वयं उठ कर चुपचाप पानी पी लिया पर वह मटकी पर

ढक्कन वापस ठीक से लगाए बिना ही अपने पलंग पर आ कर सो रहा. थोड़ी देर बाद उसने आवाज लगा कर श्याम को जगाया और पानी पिलाने के लिए कहा।

दोहा

स्याम रु केसवदास तस, दुव कुलनाम दुराइ।
समरकंद अभिधान तिहिं, मिच्छ दियउ मुद लाइ॥५०॥

जवन सुताहि बिबाह जिहिं, बंध्यो स्वहित बिसास।
तनय खानदाऊद तस, इक किसोरबय आस॥५१॥

समरकंद सन तिहिं समय, जल मंगिय जवनेस।
पात्री उठि न लखी पिहित, उहां चकित हुव एम॥५२॥

मिच्छ कह्यो रे मैं मरत, अतुल पिपासा आइ।
समरकंद कंपत तब सु, बुल्ल्यो ताहि बताइ॥५३॥

पाकै नांहिं उदंचनहु, इम पाऊं किम आब।
आनूं नूतन डारि इहिं, स्वामिन जतन हिसाब॥५४॥

भनि इम पात्री मंजि भरि, लाइ कह्यो अब लेहु।
मंगि मंगि जंपिय जवन, उचित भृत्य गिनि एहु॥५५॥

हाड़ा श्याम के बचपन से ही दो नाम थे। एक श्याम और दूसरा केशवदास पर उस यवन ने उसके इन दोनों नामों को हटा कर अपनी ओर से समरकंद नाम दिया। यही नहीं उसे अपना विश्वासपात्र बनाने के लिए एक यवन कन्या से उसका निकाह करवाया। इस यवन पत्नी से समरकंद के दाऊदखां नामक पुत्र हुआ जो अभी किशोरावस्था में था। इस श्याम अर्थात् समरकन्द से जब बादशाह ने पानी पिलाने का कहा तो वह तुरन्त पानी लेने गया पर वहाँ उसने मटकी को बिना ढक्कन के पाया तो वह चकित रह गया। म्लेच्छ बाज बहादुर ने तब डाँट लगाते हुए कहा कि जल्दी से पानी क्यों नहीं पिलाता मेरा गला सूखा जा रहा है। तब समरकंद कांपते गले से उसे निवेदन करने लगा कि हे मालिक! यह पानी आपको पिलाने योग्य नहीं है क्योंकि पता नहीं कितनी देर से यह मटकी ढक्कन रहित रही है। ऐसा अशुद्ध पानी भला मैं आपको कैसे पिला सकता हूँ। थोड़ा सब्र करें मैं तुरन्त ही अपने स्वामी के पीने योग्य जल ले कर तुरन्त आता हूँ। ऐसा निवेदन कर वह

भागता हुआ गया। घड़े को अच्छी तरह माँज कर पानी भर कर लाया फिर उसने बादशाह को पानी पेश किया तब बादशाह ने कहा मैं माँग-माँग कर हैरान हो गया पर यह भी उचित है कि एक सेवक को यहाँ करना चाहिए था।

पादाकुलकम्

जान्यों स्याम कटक ध्रुव जै हैं, लरि सत्वर बुंदिय धर लैहैं।
यातैं जनक भुवहि मंगों वह, सोधि इम सु बुल्ल्यो अंजलि सह॥५६॥

किंकरपर जो साह महर किय, बखसहु ततो ब प्रभु वह बुंदिय।
जान्यों साह यह न बदलैं जन, ममहु लैन बुंदिय निश्चय मन॥५७॥

तो सुहि दै इहिं मुदित करों तिम, इक्क पंथ दुव कज्ज बनैं इम।
यह बिचारि बुंदिय तिहिं अप्पिय, थिर दल में हु मुख्य सुहि थप्पिय॥५८॥

इक्कल साह रह्यो गढ अंदर, पिल्ल्यो कटक सर्व बूँदी पर।
हंकिय समरकंद रन जयहित, आत भानपुर जानि परी इत॥५९॥

जब श्याम हाड़ा ने सुना कि आक्रमण की तैयारियाँ हो रही है तो सेना निश्चय ही वहाँ जाएगी और शीघ्र ही बूँदी की भूमि पर अधिकार कर लेगी। यह सोच कर कि मैं क्यों न अपने पूर्वजों की भूमि माँग लूँ उचित अवसर देख उसने बादशाह के समक्ष हाथ जोड़ कर निवेदन किया कि हे मालिक! मुझ दास पर आपकी बड़ी मेहरबानी है अब मुझे यदि आप बूँदी बख्श दें तो और कृपा होगी। यह सुनकर बादशाह ने मन ही मन विचार किया कि यह मुझसे अब कभी नहीं बदलेगा। बूँदी पा कर यह मेरा और अधिक विश्वासपात्र बना रहेगा तो मैं क्यों नहीं इसे बूँदी की भूमि दे कर प्रसन्न करूँ। इसमें मेरे एक पंथ दो काज सिद्ध होंगे। ऐसा सोच कर बाज बहादुर ने बूँदी उसे प्रदान कर दी और उसे अपनी सेना का एक मुख्य योद्धा बनाया। बादशाह बाज बहादुर तो मांडू के दुर्ग में ही रहा पर उसने अपनी सेना को बूँदी पर आक्रमण करने के लिए रवाना किया। समरकंद सेनापति बन कर अपनी सेना सहित बूँदी को जीतने की इच्छा लेकर मांडू से चला। जब शत्रु सेना चल कर भानपुर तक आ पहुँची तब जा कर बूँदी को इसकी खबर पड़ी।

दोहा

सट्ठि सहंस दल संक्रमत, जिततित जग भजि जात।
अध्वजनन अग्गैं उदक, पीछैं इचिकिल पात॥६०॥

साठ हजार की संख्या वाली विशाल सेना बूँदी की ओर आगे बढ़ती हुई जहाँ जहाँ पहुँचती लोग भय से नगर गाँव छोड़ कर भाग जाते। फौज इतनी बड़ी थी कि इसमें आगे चलने वाले को पानी नसीब होता तो पीछे चलने वाले को कीचड़ ही मिल पाता।

इतिश्रीवंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वाऽयणे पंचम राशौ वीतिहोत्र-वसुधेश्वर बीज्यवर्णनबीजहड्डाधिराडस्थिपाल वंश्यानुवंश्यविहितव्या-ख्यानावसरव्याहार्यबुन्दीभूपालभारमल्ल चरित्रे स्वाग्रजप्रसादवसुधा-विभागप्राप्तकरपुर पत्तनसारण जैत्र सहायसमिद्धसैन्यसङ्गन्सन्नद्धशोण्ड पूर्वत्रय परिच्छिन्नपूर्व पृथ्वीप्रत्याक्रमण जैत्र सारण भ्रूणङ्गार्थप्रतिदापि तगतकोटाग्रामादिकमण्डूमहीशम्लेच्छराजमारणवैरिवालनप्रतिष्ठासुशोण्ड सप्रसभबुन्दीप्रत्यानयन नृप सचिवा ऽऽदिचतुष्टय सम्बोधितशोण्ड स्वस्वा-मिभटवर्ग्गसाहसमाक्रान्तप्रान्तप्रत्यादान कलहकार्यशेमुषीशिथिल-प्रेरणाप्रतीपसर्वथाविमुखसगर्वसर्वस्वहरणावसरस्वामिसेनासम्मुखसन्न-द्धसाङ्गरत्रिविक्रम प्रधनपरासूभवन नृपादिचतुष्टय कृतप्रभुकार्यरणरसि-कनियोगाऽनुकूलस्ववीरवर्ग्गार्थपरिच्छिन्नसमस्तप्रतिदापन नरेन्द्रस्वप्रसाद-प्रापितसुरथपुरतोगा नुजयशःकर्णा ऽपर नामगङ्ग तारादुर्गाध्यक्षीकरण बुन्दी मण्डूपतिमृधमृतघुग्घुल वंशीयलक्ष्मण तनुजन्माऽमरसिंहा ऽर्थखेट नामपुरपट्टाऽर्पण नवरंघ वंशीयमाधवसिंहा ऽर्थस्वारोह्यसप्ति सहिता-ऽरणिष्ठ नामनिवेशनवितरण, स्वस्थानीयकरपुरसन्नद्धचतुःशत सादि-सङ्घशोण्ड मालवलुण्टनप्रस्थान कोटाविहापितदिनद्वयस्वीकृत भ्रातृभ्रूणङ्गा ऽऽतिथ्यविप्लुतमार्गागतपट्टणि भानुपुर प्रभृतिखिच्चिखण्डहड्डुऽमालव-सीमसङ्क्रमण विप्लुतविशालेन्द्रपुर यागपुरा ऽऽदिमालवोदग्भागसमा-चरिताऽऽपद्धर्मचर्यशोण्डदेव स्वसमापनसज्जसंमुखसमागतमण्डूपति-चमूपरिसौप्तिकसम्पातन व्यापादितसेनाऽध्यक्ष सहितसपत्त्नशतत्रय निर्घोषितविजयनिःशाणदशपुरप्राप्तनृपाऽनुज बलात्कारविलुण्टितवैरिवा-जिशतक स्वसद्मसरणिसमानयन।

श्री वंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण की पंचम राशि में अग्निवंशी चहुवान वंशवर्णन के कारण हड्डाधिराज अस्थिपाल के वंश और वंश की शाखाओं की कथा बताने के समय के वचनों में बूँदी के राजा भारमल्ल के चरित्र में बड़े भाई की प्रसन्नता से भूमि के विभाग में करउर नगर पाकर सारण और जैत्र की सहायता से युद्ध में बड़ी सेना को साथ ले, सज्जीभूत सोंड आदि तीनों की छीनी हुई पहली पृथ्वी को वापस लेना, जैत्र और सारण का भ्रूणंग के अर्थ गये हुए कोटा आदि ग्रामों को वापिस दिलाकर माण्डू के पति म्लेच्छराज को मार, बैर लेने को प्रस्थान करने की इच्छा वाले सोंड को हठपूर्वक बूँदी में लौटा लाना, राजा और मंत्री आदि चारों के समझाने पर सोंड का अपने स्वामी के सुभटवर्ग के हठ से लिये हुए प्रान्तों को वापस लेना, युद्ध के कार्य में शिथिल बुद्धिवाले, प्रेरणा से विरुद्ध सर्वथा विमुख ऐसे सैंगर त्रिविक्रम का गर्व के साथ सर्वस्व हरने के समय स्वामी सेना के सन्मुख सन्नद्ध होकर युद्ध में मारा जाना, राजा आदि चारों का प्रभु का कार्य करने वाले, रणरसिक आज्ञानुकूल अपने वीरवर्ग के अर्थ छीने हुए सब ग्राम आदि वापस देना, राजा की प्रसन्नता से तोग के छोटे भाई यशकर्ण दूसरे नाम से गंग को सुरथपुर देकर तारागढ़ का किल्लेदार बनाना, बूँदी में माण्डूपति के युद्ध में मरे हुए घुग्घुल के वंश वाले लक्ष्मणसिंह के पुत्र अमरसिंह के अर्थ खेड़ा नामक पुर का पट्टा देना, नवरंग के वंश वाले माधवसिंह के अर्थ अपने चढ़ने के घोड़े सहित अरणेठा नामक स्थान देना, अपने रहने के करउर नगर में सज्जित होकर चार सौ सवारों के समूह सहित सौण्ड का मालवा लूटने को जाना, कोटा में दो दिन बिताकर भाई भ्रूणंग का आतिथ्य स्वीकार करके मार्ग में आये हुए पाटन भाणपुरा आदि खीचियों के देश लूटकर हाड़ा का मालवा की सीमा में जाना, विशालपुर, इन्द्रपुर और यागपुर आदि मालवा के उत्तर भाग को लूटकर आपद्धर्म का आचरण करने वाले सोंण्डदेव का अपने मारने को सजकर सन्मुख आई हुई माण्डूपति की सेना पर रतिवाह देना, सेनाध्यक्ष को तीन सौ शत्रुओं के साथ मारकर विजय के नगाड़े बजाकर मंदौसर पुर में आकर राजा के छोटे भाई का बल पूर्वक बैरी के घोड़ों को लूटकर अपने घर के मार्ग में लाना।

ज्ञातखिच्चि यवन शत्रुसैन्यद्वय समभिषेणनसानुमतसन्धिपुटान्त-रायातसहायसम्मिलितभ्रूणङ्ग समुपेतकृतकियत्कलिकौतुकप्रत्यनी

कप्रतिमल्लीकारितसमाकारितप्रसारितशबरशतद्वय चतूरात्रस्वी कृतकोटाप-तिसत्कारबुन्दीसमागतशौण्ड तत्तुरगशतक स्वाग्रजोपायनीकरण नृप जैत्र सारण सचिव दिनृ पाऽनुजोपालम्भन योधपुराधिराजराष्ट्रकूटयोधराज-तनूजविक्रम विद्र सोदरद्वय जङ्गलजनपदसमाक्रमण रणशातितशङ्खुल प्रामारशासनवशीकृतभट्टि यादवशक्तिशासनाऽनुसारसमनुष्ठिपुङ्गल-पतिभट्टिभूपसेखसुतापाणिपीडनविक्रम सूचित संवत्सम यस्वसर्जसम्बद्ध-विक्रमनगर नामनव्यनगरनिर्मापण प्रमाण शून्यमतान्तरसंवन्निरास बिद्र रचितबिद्रासर स्थानीयसूचना समेतदेवीनिदेशवशजाङ्गलाधिराजविक्रम वंशपट्टधरप्रथम पुङ्गलपतिकुलपतिपुत्रीपाणिग्रहण नियमविख्यापन।

खीची और यवन दोनों शत्रुओं की सेना का युद्धयात्रा करना जान, पर्वत की संधि (दरा) में आए, सहाय के अर्थ मिले हुए भ्रूगंग सहित कुछ युद्ध कौतुक कर, शत्रुओं से मुकाबिला करने वाले दो सौ भीलों को बुला कर उनको वहाँ रोककर फिर कोटा के पति का चार रात्रि तक सत्कार स्वीकार करके बूँदी में आये हुए सोंड का उन सौ घोड़ों को अपने बड़े भाई की भेट करना, राजा जैत्र सारण और सचिव आदि का राजा के छोटे भाई को उपालम्भ देना, जोधपुर के पति राठौड़ जोधा के पुत्र विक्रम (बीका) और बीदा दोनों सहोदर भाइयों का जंगल देश को लेना, युद्ध में सांखला प्रामारों को मारकर भाटी यादवों को अपने हुक्म के वश कर शक्ति करनी माता की आज्ञानुसार पुंगल के पति भाटियों के राजा शेखा की पुत्री से विवाह करके बीका का ऊपर सूचना किये हुए सम्वत् के समय में अपने नाम से बीकानेर नामक नवीन नगर बसाना, प्रमाण से शून्य ऐसे मतान्तर के सम्वत् का खंडन और बीदा के रचे हुए बीदासर स्थान की सूचना समेत देवी करनी माता की आज्ञावश जांगल देश के पति बीका के वंश के पाट धारण करने वालों का पूंगल पति के कुलपति की पुत्री से विवाह करने का नियम प्रसिद्ध करना।

योधराजा नन्तरकृतकियत्कालराज्यतत्पट्टपपुत्रसूर्यमल्ल संस्थाव सरतत्त नूजमुख्यव्याघ्रराज योधपुराधिपत्यप्रापण चित्रकूटाधिराज राजमल्ला ऽऽमैरनगरनरेशभारमल्ल समयशोण्ड मण्डू पतिवाजिविप्लवसूचन श्रुतैतदुदन्तकालकुपितपुनर्बुन्दीसमा चिक्रमयिषुम्लेच्छराजबाजबहादुर सुप्रसादितसैन्यसज्जीकरण निग्रहीतपूर्वशिशुश्यामाऽऽयत्तीकृतप्रपा महानसा द्यधिकाररात्र्यन्तरपिपासाऽवबुद्धप्रच्छन्नृपीतजलाऽपिहिततत्पात्र-

प्रत्यागतकपटक्रुद्धयवनेन्द्रप्रतिबोधितश्याम सका-शवार्मार्गण गोपितश्याम केशवपूर्वनामद्वय प्राक्कालपरिणीतयवनपुत्री-कसमुत्पादितदावूदाऽऽदिदायादप्रभुप्राप्तसमरकन्द स्वनामहड्डुपूर्वत-द्यवनपुनरानीतनिवेदन स्वसेवासावधानताप्रसन्नम्लेच्छपतिमिमार्गयिषितस मरकन्द बुन्दीराज्य-याचन दत्तप्रार्थितसेनाऽध्यक्षीकृतसमरकन्द स्वयमात्तदुर्गाश्रय-म्लेच्छमहीपषष्टिसहस्त्र सर्वसैन्यबुन्दीविजयप्रस्थापन मार्गपुर ग्रामादिप्रजाप्रद्रावक भानुपुरसमीपस मागतपरिपंथकपृतनाशुद्धिबूँदी-वास्तव्यवर्गसमाकर्णन मेकविंशो मयूखः ॥२१॥ आदितोऽष्टषष्ट्युत्तरैक-शततमः ॥१६८॥

जोधा के बाद कई समय राज्य करके उसके पाटवी पुत्र सूर्यमल्ल (सूजा) के देहान्त समय पर उस (सूर्यमल्ल) के पाटवी पुत्र व्याघ्रराज (बाघा) का जोधपुर का स्वामी होना, चित्तौड़गढ़ के राजा रायमल्ल, आम्बेर नगर के राजा भारमल्ल के समय सौंड का मण्डूपति के घोड़े लूटने की सूचना करना, यह वृत्तान्त सुनकर समय के फेर से कुपित हुए बाजबहादुर का फिर बूँदी लेने की इच्छा से कृपापात्र सेना को सज्ज करना, पहले पकड़े हुए बालक श्याम के पाणेरा (जलघर) और रसोईघर आदि अधिकारों के वश में करके रात्रि में प्यास से जगकर चुपचाप जल पीकर पानी के पात्र को बिना ढका हुआ रखकर वापस आये हुए यवनेन्द्र का कपट से क्रोध करके अपने जगाये हुए श्याम से जल मांगना, पहिले के श्याम और केशव इन दोनों नामों को छिपाकर पहिले समय में विवाह की हुई यवन पुत्री से दाउदखां आदि पुत्र उत्पन्न करके स्वामी से पाये हुए अपने समरकंद नाम ताले पहिले के हाड़े उस यवन का फिर लाये हुए (जल) का निवेदन करना, अपनी सेना की सावधानी से प्रसन्न म्लेच्छ पति से मांगने की इच्छा वाले समरकंद का बूँदी के राज्य की याचना करना, उसकी प्रार्थना को स्वीकार करेक उसी को सेनापति बनाकर स्वयं किले का आश्रय लेकर म्लेच्छ महीप का साठ हजार सेना बूँदी को विजय करने को रवाना करना, मार्ग के पुर, ग्राम आदि की प्रजा को भगाने वाली शत्रु की सेना का भानपुरा के समीप आने की बूँदी के वीरों का खबर सुनने का इक्कीसवाँ मयूख समाप्त हुआ। और आदि से एक सौ अड़सठ मयूख हुए।

प्रायो ब्रजदेशीय प्राकृत मिश्रित भाषा

दोहा

सुनि बुंदिय खित्तल सचिव, इम मंडुवदल आत।
किय रहस्य एकत्र करि, बिदित बंधु भट ब्रात॥१॥
सोंड कहिय लघु सिंह व्है, दंती व्है गुरुदेह।
तदपि बिदारै कुंभ तस, आलोचहु दृढ एह॥२॥
द्वीपी लघु गुर देह के, गवय गवल बल गंजि।
दुसह गज्जि पारत दहल, भिरतहि डारत भंजि॥३॥
यातैं लखहु न बहु अलप, सजहु इक्क मन सर्ब।
अनीभवंर हम अग्ग व्है, खंडहिं दुजन अखर्ब॥४॥

बूँदी राज्य के सचिव खित्तलशाह ने जब यह सुना कि शत्रु दल हमारी ओर बढ़ा आ रहा है तो उसने सभी सामन्तों और राजकुल के बांधवों को एकत्रित कर बताया कि मांडू की सेना आ गई है, अब हम क्या करें? उसने सभी से मंत्रणा की। इस पर सोंडदेव ने गर्जना करते हुए कहा कि सिंह कलेवर में छोटा होता है और हाथी एक विशालदेह प्राणी तब भी वह उसका मस्तक विदीर्ण कर डालता है। इसलिए चिंता की क्या बात है। मन में दृढ़ता धारण करो। बघेरा छोटी देह वाला हुआ तो क्या वह अपने से बड़े शरीर वाले रोझ और जंगली भैंसे को अपने बल से दबा कर दुस्सह गर्जना कर उन्हें दहला देता है और भिड़ने पर मार गिराता है। इसलिए हम योद्धाओं को छोटा-बड़ा नहीं देख कर मन में दृढ़ इच्छाशक्ति धारण कर इकट्ठा होना चाहिए। सेना का दुल्हा बन कर मैं स्वयं आगे होऊँगा और शत्रुओं को खंड-खंड कर डालूँगा।

षट्पात

गहत इक्क आमगुन तानि कीट हु तिहिं तोरत।
बहुगुन जुरि बंधैं सु इभ हु मदमत्त अहोरत।
यातैं सब मनइक्क होहु कबहु न तो हारहिं।
समरकंद सह सेन बदन हरि आन बिगारहिं।

बढि अग्ग जित्ति मालव बलन रोधक को सूर न रहत।
जो मिच्छ भजहिं दूथनि जनित बिनु सूथनि गूथनि बहत॥५॥

एक पतले तंतु को तो कोई छोटा मोटा कीड़ा ही तोड़ डालता है पर बहुत सारे तंतु मिल कर रस्सी रूप हो मदमस्त हाथी को भी रोक सकते हैं। इसलिए संगठित हो कर एक मन से लड़ोगे तो नहीं हारोगे। उल्टा वह समरकंद और उसकी सेना बन्दर की तरह अपना मुंह बिगाड़ेगी। मैं जब मालवा की ओर बढ़ता हुआ जा रहा था तब किसी वीर की मुझे रोकने की हिम्मत नहीं पड़ी। जिस यवन ने अपनी माँ का दूध पिया हो वह मेरे सामने आये। अपनी माँ के जाये जो म्लेच्छ भगने से बच जाएँगे वे अपना पाजामा विष्टा से लथपथ पाएँगे।

इम न ततो हम अलस, जोति सीरहु नन जानें।
असन बसन की आस मनन मनन तब प्रमानैं।
मिलि यातैं इक मन तुरग नक्खहु तिन्ह त्रासहिं।
मथि हम बिसिख समुद्र नियत जयरत्न निकासहिं।
यह सुनत अमर माधव मुखन कियसराह तस वाह कहि।
जंहं नृप रु जैत सारण सचिव चंवी चउन नय एसनहि॥६॥

शत्रुओं को भगाने का यह कार्य हमसे नहीं हुआ तो हम आलसियों को बैल जोत कर हल हांकना भी नहीं आता तब हम किस मुंह से मन में अन्न और वस्त्र पाने का (मनन) विचार रखेंगे। हमें इसलिए चाहिए कि हम एक मन हो कर अपने घोड़े निडर हो कर शत्रु दल पर हाँके। हम संगठित हो कर एक रहे तो यवनों की सेना के समुद्र को मथ कर उसमे से विजय नामक रत्न निकालेंगे। हाड़ा सोंडदेव के मुँह से वीरता भरे ये वचन सुन कर अमरसिंह और माधवसिंह के मुँह से सराहना के बोलों के रूप में वाह-वाह निकल गई। तभी राजा सुभांडदेव, जैत्रसिंह, सारणदेव और सचिव खित्तलशाह चारों ने एक साथ कहा कि यह नीतिसम्मत नहीं है।

कहां अयुतखट कटक कहां अप्पन छसहंस किर।
तकि भुवलैन तहांहु आत स्याम हिं बनि आसिर।

लाय हयन तुम लाल बीज बिपदामय बाविय।
यह फल तास अमोघ अबहि पकिबे पर आविय।
पूगैं न लरन अप्पन परन मन्नहु इम सबको मरन।
को तब उपाय छितिहित करन रहहिं बंस बीजहु धर न ॥७॥

कहाँ साठ हजार की विशाल संख्या वाली फौज और कहाँ हम मात्र छह हजार सेना वाले! निश्चय ही हमारी भूमि को हथियाने के लिए वह श्याम (असुर) बन कर आ रहा है। हे लाल! तुम जो म्लेच्छ के घोड़े लूट कर लाए यह तुमने हमारे राज्य के लिए विपदा के बीज बोने का कार्य किया उसी के परिणाम स्वरूप अब उसी बीज से उगे पेड़ पर ये फल पका है। हम ज्योंहीं शत्रुओं की सेना से लड़ने पहुँचेंगे तो यह मान कर चलें कि हम सभी मारे जाएँगे तब हम अपनी भूमि को बचाने की चिंता ही क्यों करें क्योंकि इस युद्ध में हमारा वंश बीज ही समाप्त हो जाएगा।

दोहा

हे हड्डे अग्गे इहां, बीजहु गो ब बिलाइ।
करनी यहहि कथानिका, जुरहु समुख तो जाइ ॥८॥

पहले यहाँ हाड़ा क्षत्रिय थे यह राज्य उनका था पर उनका बीज ही खत्म हो गया। इस कथा को यदि सत्य करना हो तो निश्चय ही उस विशाल सेना का मुकाबला सामने जा कर करना चाहिए।

षट्पात्

यह मंडुवपति अज्ज अखिल दक्खिन बलि ऐंचत।
इहिं मंडुवपति अग्ग खग्ग कोउन रुपि खैंचत।
मह्नै पुब्बहि महिप अज्ज आब्दिक इहिं अप्पहिं।
यह दिल्लियबल उदधि थाहि नैंकन मन थप्पहिं।
आश्रय रु द्वैध यातैं उभय अब कुल रक्खन अनुसरहिं।
रहिजाइ जबहि दल अल्प रिपु कदन तबहि छलबल करहिं ॥९॥

उस मांडूपति बाजबहादुर ने दक्षिण के सारे आर्य राजाओं को अपने आगे एकदम निर्बल बना दिया। उस मांडूपति के सामने अपने पाँव रोप कर कोई तलवार म्यान से खींचने की हिम्मत नहीं कर सकता। जिसके सामने

आर्य राजा उसके माँगने से पहले ही डर कर आगामी वर्ष का खिराज ला कर भेंट करते हैं। वह दिल्ली की सेना रूप-समुद्र को मथने की सामर्थ्य रखता है इसलिए ऐसे प्रबल शत्रु के समक्ष नीति कहती है कि उसके छह गुणों में से दो गुण आश्रय और द्वैधीभाव का प्रयोग कर हमें अपना कुल बचाए रखने के यत्न करने चाहिए। हाँ, जब शत्रुदल अल्पमात्रा में रह जाएँ तब कहीं हमें छल-बल से उसके नाश का सोचना चाहिए।

दोहा

भायो सुहि मत भूप को, सारन जैत सहाय।
भटन चब्बि ओठन भनिय, हरख दब्बि तब हाय॥१०॥

राजा सुभांडदेव का यह मत सोंडदेव को तनिक भी अच्छा नहीं लगा और यह तो एकदम उसके गले नहीं उतरा कि सारणदेव और जैत्रसिंह ने राजा की हाँ में हाँ मिलाई। उसने होंठ चबाते हुए वीर सामन्तों के सामने जा कर युद्ध करने की ना सुन कर हर्ष को दबाते हुए हाय! हाय! कहा।

षट्पात्

रचत मंत्र यह रूठ्ठि तरजि गय उठ्ठि चउ हि तब।
माधव गंग रुअमर सोंड कातर गिनि ए सब।
सारन जैत रु सचिव बिहित लैकैं इततैं बलि।
बनि सु सांधि बिग्रहिक मिले सम्मुह जंहं चम्मलि।
उपदा निवेदि तीनन अरज करिय स्याम प्रति जोरिकर।
हम अनुग सिरहिं धारत हुकम मन्त्रि उचित मंडहु महर॥११॥

यह हाय! सुन कर राजा सहित चारों गुस्सा हो कर वहाँ से उठ कर चले गए। उन्होंने इन कायरों माधवसिंह, गंगासिंह, अमरसिंह और सोंडदेव को व्यर्थ समझा (को सभी ने कायर समझा)। इसके बाद सारणदेव हाड़ा, जैत्रसिंह और मंत्री खित्तलशाह तीनों चला कर शत्रु सेना के सामने गए और चम्बल नदी के तट पर जा कर मिले। उपहार और नजराने भेंट कर तीनों ने श्याम के सामने हाथ जोड़ कर निवदेन किया कि हम सब आपके सेवक हैं! आपकी आज्ञा को शिरोधार्य करते हैं। अब आप हम पर उचित कृपा कीजिये।

हम छन्नैं लिय हयहु सोंड सिसुपन हठ संग्रहि।
वे हाजरि सब अत्थ नैंक मंतुहु नृपमें नहिं।
समरकंद इम सुनत कह्यो छोरहु बूँदी कंहं।
लहि सुभांड दुबलान तथा समुचित बिलसहु तंहं।
संबसथ इतर बारह सहित करि सु स्वीय सुद्धहु हुकम।
बलि ग्राम पंच सोंड हिं बखसि व्है हैं सबन अधीस हम॥१२॥

वह सोंडदेव हम लोगों से चुपके से बचपना कर हठपूर्वक आपके घोड़े ले आया। वे सभी आपकी सेवा में हाजिर हैं। इसमें राजा सुभांडदेव का कोई दोष नहीं। वे निर्दोष हैं। यह सुन कर समरकंद ने कहा तब फिर उनसे कहो कि बूँदी छोड़ दें। उन्हें दुबलाना नगर देता हूँ वे आराम से वहाँ रहे। मैं उन्हें दुबलाना के साथ बारह अन्य गाँवों की जागीर भी इनायत करता हूँ। मैं इसके अतिरिक्त पाँच गाँव की जागीर सोंडदेव को भी देने को तैयार हूँ बशर्ते कि आप सारे लोग हमारी गुलामी स्वीकार कर हमारे मातहत हो कर रहें।

दोहा

तबहि पटा लिखवाइ तिन्ह, सचिव बंधु लहि संग।
दै उपदा पच्छेमुरहि, आये रहित उमंग॥१३॥

दिय दुराइ पुब्बहिं पिहित, बसु भूखन मुख व्रात।
तजि बुंदिय दुबलान तब, पत्तो नृप कढि प्रात॥१४॥

निज गज तुरग रु नालिका सब दिय बुंदिय संग।
मन यातैं कातर समुझि, रच्यो जवन हितरंग॥१५॥

तोग अनुज जसकर्ण तंहं, तारा दुर्ग तजैंन।
सुपहु ताहि दै निज सपथ, आन्यौं उज्झि सु अैंन॥१६॥

सोंड हिं गूढ बिचारि सुहि, मिलि इन कठिन मनाइ।
पंच ग्राम तक्कुल प्रमुख, स्वीकारित समुझाइ॥१७॥

पट्टा लिखवा कर तीनों मंत्री और राजा के बांधव उन्हें उपहार भेंट कर खुशी-खुशी वहीं से वापस मुड़ गए और उन्हें साथ ले कर लौटे। अपना धन, आभूषण आदि को गुप्त रूप से निश्चित और सुरक्षित जगह में गाड़ कर राजा प्रातःकाल होते ही बूँदी छोड़कर दुबलाना के लिए रवाना हुआ। अपने

हाथी, घोड़े और तोपें सभी कुछ बूँदी के साथ ही छोड़ दिये। यह देख कर यवन समरकंद उन्हें कायर समझ कर मन ही मन बहुत खुश हुआ। इधर तोगदेव का छोटा भाई यशकर्ण जो तारागढ़ का किलेदार था उसने किला छोड़ने से मना कर दिया। उसे राजा ने अपनी शपथ दिलवा कर किसी तरह उससे दुर्ग खाली करवाया। सोंडदेव ने भी तब किसी तरह अपना मन मार कर इस कठिन परिस्थिति के अनुकूल व्यवहार किया। बहुत समझाने पर पाँच गाँवों के साथ ताकला नामक गाँव लेना स्वीकार कर लिया।

इम सु स्याम हुव आई कैं, पुरबुंदिय छितिपाल।
सूनु खानदाऊद सह, बुल्ले बेगम बाल॥१८॥

बूँदी जनपद बाहिनी, मिच्छन बिचरि महंत।
समरकंद बस करि करे, सब हाजरि सामंत॥१९॥

सीमाहर सत्रुहु सकल, लघु तस पयन लगाइ।
छिन्न नव लिन्नी सु छिति, सासनबस समुझाइ॥२०॥

बुंदी त्रि सहंस रक्खि बल, मान अतुल जयमत्त।
करि प्रबंध खिल जो कटक, पच्छो मंडुव पत्त॥२१॥

बुल्लैं जब गृहतें सबन, समरकंद स्वसमाज।
माधव सोंड रु गंग मुरि, आत खिल रु अधिराज॥२२॥

पुनि स्वनाम लेखित पटा, अखिलन नूतन अप्पि।
जे बुंदियभट पुब्ब जिम थिर रक्खे निज थप्पि॥२३॥

सनैं सनैं तिन्ह संहरन, अबहि धीरधर एह।
स्वांत अहित बाहिर सहित, नरन दिखावत नेह॥२४॥

इस तरह श्याम आ कर बूँदी का राजा बना और उसने पुत्र दाऊदखां के साथ अपनी बेगम को बाल बच्चों सहित यहाँ बुलवा लिया। पूरे महत्व के साथ म्लेच्छ मेना बूँदी जनपद में इधर से उधर घूमी और उसने बूँदी पर समरकंद की विजयाज्ञा फैला कर वहाँ के सारे सामन्तों को समरकंद की सेवा में ला उपस्थित किया। बूँदी की सीमा का हरण करने वाले शत्रु के पाँवों में सभी सामन्तों को झुका कर उनकी सारी भूमि को छीन अपने मालिक के शासन के अंतर्गत करवा दी। राजा श्याम ने तब बूँदी में मात्र तीन हजार की

संख्या में सेना रखी और शेष सारी सेना को मांडू वापस भेज दिया। इसके बाद समरकंद ने बूँदी राज्य के अपने समाज को (बांधवों को) घर से बुलवाया। माधवसिंह, सोंडदेव, गंगासिंह और राजा सहित सभी आये। उन्हें अपने नाम से नये पट्टे जारी कर दिये और जो जो सामन्त पहले जिस स्थान पर थे उन सभी को वापस वही स्थान दे कर रख लिया। धीरे-धीरे सारे धैर्यवान सामन्तों ने उसको मारने की योजना सोची। वे सभी मन से शत्रु पर जाहिर में मित्रता का व्यवहार नये राजा से करने लगे।

षट्पात्

समरकंद लिय समुझि आत सोंड न उनमत्त सु।
क्यों माधव जसकर्ण पटा मम लहि न आत पसु।
इहिं आगस बलबंधि अनखि तिन पैं उफनायउ।
जैत रुजित तिन्ह जंपि छलन तब चलन छमायउ।
मिस खैन अरस कोऊ समय दोऊ समय दिखाइ दिय।
तुम जो असक्त भेजहु तनय कहि इम मिच्छहु माफ किय॥२५॥

समरकंद ने अच्छी तरह जान लिया कि वह उन्मत्त सोंडदेव नहीं आ रहा है और क्यों माधवसिंह और यशकर्ण मुझसे पट्टा नहीं लेना चाहते हैं? उसने उनका यही (दोष) अपराध मान कर उन पर कुपित हो कर फौजकसी करने की तैयारी की। जैत्रसिंह ने नहीं आने का कारण यह बताया था कि वह बीमार है। इस पर म्लेच्छ समरकंद ने कहा कि मेरे सामने छल नहीं चलेगा पर जब उसकी रोगग्रस्त देह देख कर संतुष्टि हो गई कि सचमुच जैत्रसिंह बवासीर और क्षय रोग से ग्रस्त है तो उसने कहलवाया कि यदि तुम अशक्त हो! नहीं आ सकते हो तो अपने पुत्र को भेज दो। मैंने तुम्हारा गुनाह माफ किया।

दोहा

अक्खिय तिन सुत सिसु अबहि, अैहैं लहि बय अत्थ।
काय बचन मन करि करहिं, सेवन प्रभु हित सत्थ॥२६॥
जरा सिथिल इत अति जरठ दिय जैत हु तजि देह।
स्वामी हुव तस मुख्यसुत, गैनोली निज गेह॥२७॥

सारन माधव हे सबल, पै नृप दिन प्रतिकूल।
एहु मरे बिधि बस उभय, सो हुव सब हिय सूल॥२८॥
बंसीपति हुव छ सम बय, सारन सुत सामंत।
बाल जदपि मतिबृद्ध बुध, इच्छें बढत उदंत॥२९॥
भो माधव सुत इत भरत, निडर लाडपुर नाह।
सोंड अमर गंग रु सचिव, रहे चउहि नृप राह॥३०॥

इस पर जैत्रसिंह ने कहलवाया कि मेरा पुत्र बाल्यावस्था में है ज्योंहीं वह थोड़ा बड़ा होगा। मैं उसे, आने योग्य होते ही आपकी सेवा में भेज दूँगा जिससे वह अपने मन, वचन और काया से स्वामी की सेवा कर सके। उधर थोड़े दिनों बाद ही वृद्धावस्था और रुग्ण होने से जैत्रसिंह ने देह त्याग दी। उसका पुत्र तब गैनोली का स्वामी बन कर गाँव में रहने लगा। सारणदेव और माधवसिंह दोनों सबल थे पर राजा सुभांडदेव के दिन प्रतिकूल थे। ये दोनों भी विधाता के लेख के वश हो कर मर गए। इससे सभी को बड़ा खेद हुआ। सारणदेव का पुत्र अपने पिता का उत्तराधिकारी हो कर सामन्त बना। वह भी अभी शैशवावस्था में था पर कुशाग्र बुद्धि और कुछ कर गुजरने की इच्छा रखने वाला था। इसी तरह माधवसिंह का निडर पुत्र भरतसिंह लाडपुरा का स्वामी बना। शेष चारों सोंडदेव, अमरसिंह, गंगासिंह और सचिव खित्तलशाह चारों राजा के साथ रहे।

षट्पात्

खित्तल बनिक खटोर सचिव कोबिद सकुनागम।
परि है नृपहि बिपत्ति कहिय जब भो न अतिक्रम।
द्रंग सु अब दुबलान रहैं सेवन पति हित रत।
जिहि पुब्बहिं लिय जानि बिखम परिहै दुकाल बत।
संबत कु बेद तिथि गत समय अक्खिय नृपहिं प्रताप अह।
आगामी अब्द सब संहरन अब दुकाल परि है असह॥३१॥

खटोड़ जाति का बनिया खित्तलशाह बहुत बुद्धिमान सचिव था। वह शकुन शास्त्र का भी पंडित था। उसने यह घटना नहीं घटित हुई थी तभी पहले ही भविष्यवाणी कर दी थी शकुन देख कर कि राजा पर विपत्ति आने

वाली है। वह इन दिनों दुबलाना नगर में अपने स्वामी सुभांडदेव की सेवा में रहने लगा। उसने अपने शकुनों के आधार पर जान लिया कि आगामी वर्ष दुर्भिक्ष का वर्ष होगा। विक्रम संवत् के पन्द्रह सौ इकतालीस के बीतते ही हे राजा! बुरे दिन आने वाले हैं। अगले वर्ष भयंकर और असह्य दुष्काल पड़ेगा जो सब का संहार करने वाला होगा।

दोहा

बित्त रु जे भूखन बसन, ए सब दै लै अन्न।
निखिल भरहु कुट्ठार नृप, समय घोर संपन्न॥३२॥
प्रत्यय हो अग्गहिं नृपहिं, सचिव न चवहिं असत्य।
हिय सोच्यो अब जानि हम, वै किम छमहु असत्य॥३३॥

हे राजा! अपने पास जो धन है, बहुमूल्य आभूषण और वस्त्र हैं उन्हें दे कर आपको अन्न खरीद कर भंडार भर लेने चाहिए। जो आने वाले घोरतम कठिन समय में हमारा सहायक होगा। राजा को उसकी भविष्यवाणियों पर पहले से ही पूर्ण विश्वास था। राजा जानता था कि यह झूठ नहीं कहता इसकी भविष्यवाणी सत्य होती है। राजा ने मन ही मन सोचा कि मैंने पहले वाली उसकी भविष्यवाणी को क्यों असत्य समझ कर अपनी हानि की। अब पछताने से क्या ?

षट्पात्

छमा दया निधि छितिप अखिल संसृति उपकारक।
इम उदार आलोचि सबन बिपदा संहारक।
इतउततैं आकारि प्रचुर बानिज बिक्रयपर।
मंत्रकथित प्रमान कियउ निजपुर अन्नाकर।
ब्यय बिरचि दम्म लक्खन बहुन क्रम लक्खन मन धान्य करि।
खातिका खात गहिरे खनित भवन कुसूल हु दिन्न भरि॥३४॥

दया और क्षमा का भंडार वह राजा संसार का उपकार करने वाला था। उदार राजा सुभांडदेव ने सभी पर आने वाली आपदा को विचार कर इधर-उधर सभी जगह के व्यापारियों को बुलाया और उनके सामने अन्न खरीदने का प्रस्ताव रखा। अपने मंत्री खित्तलशाह के कथनानुसार राजा ने अपने नगर को अन्न का भंडार बना दिया। राजा ने लाखों रुपये खर्च कर

लाखों मन धान क्रय किया। उसने धन का खजाना खाली कर धान से खजाना भर लिया उसके प्रयत्न से गहरे और बड़े-बड़े बने कोठार अन्न से भर गए।

दोहा

अधिपति पुब्बहि चेति इम, मतिसख मंत्र प्रमान।
जगहिं जिवावन जो भयो, धन दै धान्य निधान॥३५॥

संबंधी निज तेहु सब, चतुर दये चेताइ।
न दयो बुंदिय भेद नृप, जानि अबहु भजि जाइ॥३६॥

जितनैं सचिव कही जु ही, बनी अचानक बत्त।
दुवचालीसम अब्द दृढ़, पुहवि दुकाल सु पत्त॥३७॥

राजा सुभांडदेव ने अग्रिम रूप से सावचेत हो कर अपने बुद्धिमान मंत्री की सलाह पर अमल किया। वह राजा दुर्भिक्ष के समय में संसार को खिला कर जीवित रखने के हित धन दे कर धान का धनी बना। यही नहीं उस चतुर राजा ने अपने संबंधियों को भी आगाह किया कि वे ऐसे प्रयत्न करें जिनसे आगामी अकाल का मुकाबला किया जा सके पर उसने बूँदी के राजा श्याम को इसकी भनक भी नहीं लगने दी क्योंकि सुभांडदेव को यह अंदेशा था कि वह यह जान कर कहीं भाग न जाए। जैसी खित्तलशाह ने अपने शकुनों के आधार पर भविष्यवाणी की थी उसके अनुरूप विक्रम संवत् के पन्द्रह सौ बयालीस में दुष्काल पड़ा।

षट्पात्

जिन गृह बल जान्यों न प्रचुर तिनकै हु पठायउ।
बुंदियभट करि बिभय अखिल जनपद अपनायउ।
लघु भूपहु कति चलित सहज लिय झेलि प्रजा सह।
जन लक्खन यह जानि आनि नृपढिग कट्टे अह।
इम जग जिवाइ करुनाउदधि धवल बह्यो अम्मीढधुर।
धनपति निधान निज जनु धरिय पूरि नव हि दुब्बलानपुर॥३८॥

राजा सुभांडदेव ने बूँदी जनपद में जिन घरों में प्रचुर ताकत नहीं जानी अर्थात् अकाल का सामना करने के साधनों की न्यूनता जानी वहाँ सामग्री भिजवाई। उसने बूँदी के सभी सामन्तों को निश्चिंत कर पूरे जनपद को

अपनाया मात्र दुबलाना के क्षेत्र को ही अपना नहीं समझा। इस छोटे राजा ने सहज ही पूरे जनपद की प्रजा के कष्ट को अपना कष्ट बनाया। दुष्काल से पीड़ित लोग यह जान कर राजा के पास दुबलाना में आ रहे। उन्होंने अपने दु:ख के दिन यहाँ काटे। इस तरह पूरे जनपद के लोगों को जीवित रखने के लिए उस करुणा के समुद्र राजा सुभांडदेव ने राजा अजमीढ की बराबरी की। राजा अजमीढ़ की तरह बाएँ जुतने वाला बैल हो कर उसने अकाल का पूरा भार ढोया। ऐसा लगता था मानों दुबलाना नगर में नव निधि सहित कुबेर ने अपना खजाना धर दिया हो।

दोहा

समरकंद तंहं धान्यसुनि, अक्खिय बेचहु एम।
कछुक दयो आसान करि, न लयो अर्घ नरेस॥३९॥
न्कति सत्रुहु आसान करि, जिनको कुकृत जताइ।
बखसि अन्न थंभे बिकल, प्रनतिपत्र तिन्ह पाइ॥४०॥

बूँदी के राजा समरकंद ने भी भीषण अकाल की भयावहता के समय में यह सुना कि दुबलाने में धान का पर्याप्त भंडार है तो उसने बूँदी के राजा को धान बेचने का प्रस्ताव भेजा पर राजा सुभांडदेव ने बूँदी पर अहसान करते हुए थोड़ा अन्न भिजवाया वह भी निशुल्क। राजा ने अपने शत्रु पर अहसान करते हुए उसके कुकृत्य बताए पर उस जनपद की प्रजा के सारे प्रार्थनापत्रों पर ध्यान देते हुए पुष्कल अन्न प्रदान किया।

मनोहरम्

भो जैंडैल भूपै परे तिन्हैं थंभि भिस्सा याग,
ब्याज लैन बुंब दीसे राह बहु रोहे जे।
याके आदिपदन चतुर्दस बरन[1] आदि,
दल दोहा पहिली के होत सब सोहे जे।

---

१. इस मनहर छन्द के आदि के चरण के चौदह पदों के आदि के चौंदह अक्षरों से मरुभाषा के दोहे का पूर्वार्द्ध निकलता है जिसके निकालने का यह क्रम है कि ॥ सुप्तिङ्न्तम्पदम् ॥ अर्थात् सुप् तिङ् आदि विभक्ति जिसके अन्त में होवे उसको पद कहते हैं सो ये इस प्रकार है भो, जैंडैल, [illegible] परे, तिन्हैं, थम्भि, भिस्सा, [illegible], ब्याज, लैंन, बुम्ब, दीसे, राह, बहु ॥ इन उपरोक्त १४ पदों से आदि के अक्षरों से दोहे का यह पूर्वार्द्ध निकलता है ''भोजै भूपति थम्भिया वालै (ल्है) बून्दी राव ॥'' अर्थात् बून्दी के लोकप्रिय राव राजा ने (भूखों को) भोजन कराकर ठहराया अर्थात् आश्रय प्रदान किया।

पंथपंथ पृच्छक पठाइ बुलवाये व्रात,
जात तात जाया जननी जन विछोहे जे।
भारमल्ल भूप दुबलानां यों खजानां खोलि,
मानव मतंगज मलीदन तैं मोहे जे ॥४१॥

जो लोग भूख से निष्चेष्ट हो कर ढेलों की तरह भूमि पर बिखरे पड़े थे उन्हें भिक्षा के यज्ञ से भोजन करा कर उनके पलायन की राह को इस राजा ने थामा। उन्हें सहारा दिया। अपने यहाँ वापस लेने के बहाने जिसने कई राहों को रोका अर्थात् उन रास्तों पर भूखों को नहीं जाने दिया। मनोहर (मनहर) छन्द के इस चरण के पदों के पूर्व में आए चौदह अक्षरों का जो आधा दोहा बनता है अर्थात् पूर्वार्द्ध बनता है (विस्तृत अर्थ के लिए टिप्पणी देखें) उसका अर्थ इस राजा पर लागू होता है। प्रत्येक मार्ग पर पूछने वाले भेज कर भूखों के समूहों को बुलवाया। जो भूख के कारण अपने पुत्र, पिता, स्त्री, माता और अपने स्वजनों से विलग हो गए थे उन्हें राजा भारमल (सुभांडदेव) ने दुबलाना गाँव में खजाना (अन्न का) खोल कर मनुष्य रूपी हाथियों (भूखे जो अपनी भूख से अधिक खाते हैं इस अर्थ में हाथी जितना खाने वाले) को मलीदा खिला कर मोह लिया। (यहाँ मलीदा शब्द में श्लेष है अर्थात् मनुष्यों के लिए माल मलीदा याने हलवा खिलाया वैसे हाथियों के सामान्य भोजन आटे और गुड़ के मिश्रण को मलीदा कहते हैं)

दोहा

सो दोहा नृप समय को, मारव बानी मांहिं।
जंहं लकार अध बिंदु जुत, अंत्य ब दंत्य हु आंहिं ॥४२॥

सोलह मासन इम सुपहु, दै लक्खन जिय दान।
किय तटस्थ अरि मित्र कुल, अबिरत जस आसान ॥४३॥

आधे दूजे अब्द लों, रक्खे कतिक नरेस।
पाथेयहु तिन्ह अर्थ पुनि, दै पठये निज देस ॥४४॥

यह दोहा मरुवाणी अर्थात् मारवाड़ी (राजस्थानी) भाषा में राजा भारमल्ल (सुभांडदेव) के समय का बना हुआ है जिसमं 'ल' तो आधे अनुस्वार सहित है और अन्तिम 'व' दन्त्य अर्थात् ब है। लगातार सोलह माह तक

अर्थात् सवा वर्ष तक की अवधि में राजा ने लाखों प्रजाजनों को जीवनदान दिया और ऐसा कर राजा ने शत्रु, मित्र सभी कुलों को तटस्थ बना दिया और अबाधित रूप से अपनी कीर्ति का आसानी से प्रसार किया। अगले वर्ष के भी आधा बीत जाने तक राजा ने कई लोगों को अपने यहाँ शरण दे कर भोजन कराया फिर अच्छी वर्षा हो जाने पर राजा ने मार्ग का व्यय और मार्ग का भोजन दे कर उन्हें अपने-अपने घर भेजा।

मनोहरम्

बेची स्वीय संतति सवित्री सविता हू जहाँ,
पति पतनी की प्रियता पैं हरि हीन की।
घां घां घर घुम्मत घरट्टन को घोर मिट्यो,
चुल्लिन में छाई तंतुमाला मर्कटीन की।
खाल खिल सूके पंक मैंडुक मिलानैं बाग,
बिपिन बिलानैं द्रुम छांह छबि छीन की।
देस की गिनें को अैसे समय सुभांड देखो,
पोखि परदेस की प्रजा कों परिपीन की॥४५॥

दुष्काल के प्रभाव में अपनी संतान को उनके माता-पिता ने बेच डाला। इस कठिन अकाल ने पति-पत्नी के प्यार को छीन कर उसे हीन बना दिया। घर-घर में घूमती हुई चाकियों के चलने की ध्वनि थम गई। जगह-जगह चूल्हों में मकड़ियों के जाले छा गए। सारे नाले और नदियां सूख गए और वहाँ के मेंढक कीचड़ में गहरे दुबक गए। बाग बगीचे और वन समाप्त हो गए। वृक्षों की छाया दुबली हो गई। ऐसे समय में देश का तो क्या कहें। परदेश की प्रजा का भी राजा सुभांडदेव ने पालन कर उसे पुष्ट बनाया।

षट्पात्

मंगिय बहुरिहु मिच्छ कहिय तब तब नृप कारन।
अब खद्धो बहुअन्न बढत लक्खन जन बारन।
तदपि हजारन ताहि जानि प्रतिघस्त्र जिमावत।
स्वीय कतिन कछु सैंन पिहित गेहहु पहुँचावत।

हमकों न देत इम सोधि हिय मारन पुब्बहिं जास मत।
तिहिं समरकंद उर बैर तकि बाहिर हित मंडिय बितत॥४६॥

बूँदी के राजा समरकंद ने राजा सुभांडदेव से और अन्न देने का कहा तो राजा ने जवाब भिजवाया कि बहुत सारा धान खाया जा चुका है और अभी तो लाखों लोग भोजन की प्रतीक्षा में है। प्रतिदिन हजारों की संख्या में लोगों को फिर भी भोजन कराना पड़ रहा है। हमें चुपके से अपनी सेना के लोगों के घर भी भेजना पड़ता है। यह सुन कर भी समरकंद ने सोचा कि सुभांडदेव हमें अन्न नहीं देना चाहता है और हमारे लोगों को भूख से मारना चाहता है। इससे उसके हृदय में राजा के प्रति शत्रुता का भाव आया। यह देख कर राजा सुभांडदेव ने बाहर वालों को और अधिक धान बाँटना शुरू किया।

दोहा

आनि असूया ईरखा, जानि मिले सब जत्थ।
बसुधा हड्डुन बंस तैं, इच्छत लैंन अनत्थ॥४७॥
अधिप सोंड गंग रु अमर, मारे चाहत मिच्छ।
ते चउ चाहत हनन तिंहिं, अंतर प्रीति अनिच्छ॥४८॥

असूया और ईर्ष्या से भरे हुए तब समरकंद और उसके लोग इकट्ठे हुए। उन्होंने हाड़ा वंश के परिवारों से सारी भूमि छीन लेने का विचार किया। इस पर राजा सुभांडदेव, सोंडदेव, गंगासिंह और अमरसिंह इन चारों की इच्छा थी कि समरकंद को मार डाला जाए। वे दिल से इस यवन को अंश मात्र भी नहीं चाहते थे।

षट्पात्

भूपहिं खित्तल भनिय अप्प अंकिय दुकाल इम।
मम नामहु छिति मांहिं करहु कछु रीति रहैं किम।
सुनिनृप पंद्रहसहंस कड्ढि रुप्पय निज कोसन।
बिक्खि समय सुभ बुल्लि निपुन सिल्पिन निर्द्दोसन।
दुबलान तैं जु पवमान दिस पाइ उचित थल कोस पर।
कासार रचिय तस नाम करि बिदित सु खित्तोलाव बर॥४९॥

तभी राजा सुभांडदेव से उसके सचिव खित्तलशाह ने कहा कि हे राजा! आपने इतने भीषण दुष्काल को इस तरह झेल लिया इससे आपका नाम तो अमर हो गया। अब मेरा निवेदन है कि आप मेरे लिए भी कुछ कीजिये जिससे मेरा नाम भी रह जाए। यह सुन कर राजा ने अपने खजाने से निकाल कर पन्द्रह हजार रुपए दिये और अच्छा मुहूर्त देख कर शिल्पियों को बुलाकर निर्देश दिये कि दुबलाना नगर से वायुकोण में एक कोस की दूरी पर जो स्थान है वहाँ एक सुन्दर तालाब का निर्माण करो। निर्माण पूरा होने के बाद राजा ने इस तालाब का नाम अपने मंत्री खित्तलशाह के नाम पर 'खित्तोलाव' रखा।

दोहा

नाम भवानीपुर नियत, अब निबसथ जंहं आस।
देबी खित्तोला सदन, ताल गिनहु वह तास॥५०॥

निबसथ रचिय सुभांड नृप, भंडाहेर सु भव्य।
सुंडाहेर सु सोंड किय, निज निज नामन नव्य॥५१॥

नृपकुमार नारायन सु, पंद्रह सम वय पाइ।
बिदया प्रहरन बाहनन, लिन्नी सब मन लाइ॥५२॥

अभी जहाँ पर भवानीपुर नामक गाँव बसा हुआ है वहाँ खित्तोला देवी के नाम से देवी का सुन्दर मन्दिर भी राजा ने बनवाया और इस मंदिर का नाम भी अपने मंत्री के नाम पर रखा। इसी तरह स्वयं राजा ने अपने नाम से भंडाहेर नामक सुन्दर गाँव बसाया और सोंडदेव के अपने नाम से सुंडाहेर नामक गाँव की स्थापना की। ये दोनों नये गाँव राजा ने स्वयं और स्वयं के भाई के नाम पर बसवाए। इधर तब तक राजा सुभांडदेव का पुत्र नारायणदेव पन्द्रह वर्ष का हो गया था। जिसने शस्त्रविद्या और वाहन विद्या सीख कर सभी के मन हर्षित किये।

त्रय पीढिन नृप हम्म तैं, आयति बिधि बस एक।
पुत्र लहे जिन बृद्धपन, जीवनहार जितेक॥५३॥

पाये तिमहिं सुभांड पहु, जुब्बन जव ढरि जात।
कुमर तीन इक्क सु कनी, प्रथित आयुबल पात॥५४॥

नारायन तिनमें निपुन, अग्रज सूर उदार।
जनक पुब्ब चिंतैसु जुरि, बुंदिय लैंन बिचार॥५५॥

मिच्छ चहैं इन्ह मारिबो, एहु चहैं तिन्ह अंत।
दाव न लग्गैं द्वै हि दिस, मनकरि जदपि मिलंत॥५६॥

विधाता के लिखे लेख का यह अजीब संयोग ही कहा जाएगा कि राजा हम्मीरसिंह से लगाकर लगातार तीन पीढ़ी तक इस वंश में संतानें अमूमन राजा की वृद्धावस्था में जाकर पैदा हुई। राजा सुभांडदेव भी इसके अपवाद नहीं रहे। जवानी की उम्र ढल जाने के बाद ही उन्हें तीन पुत्रों और एक कन्या की प्राप्ति हुई और उन्होंने अच्छी उम्र पाई। इनमें सबसे बड़ा नारायणदेव था जो वीर और उदार था। इसने अपने पिता द्वारा सोचे हुए कार्य में अपना सोच मिलाते हुए बूँदी को वापस अपने अधिकार में करने का विचार किया। उधर यवन समरकंद इन्हें मारना चाहता था और ये उसे खत्म कर देना चाहते थे। यद्यपि दोनों पक्षों में अपने कार्य को अंजाम देने की उतावली थी पर ऐसा अवसर दोनों को मिल नहीं रहा था जिसके बहाने लड़ाई की जा सके।

आयति नृप की अनुज की, हुव ध्रुव बिगरनहार।
इच्छत बुंदिय आक्रमन, जेहि मरत जुद्धार॥५७॥

जैत अनुज नवब्रह्म जिम, अमर अलोद अधीस।
पुनि गंग हु नवगामपति, सुपहु भार जिन्ह सीस॥५८॥

अरु सेव जु सारन अनुज, इन हु लह्यो क्रम अंत।
तिम समाप्त अग्रज त्रिकहु, इम यह होन उदंत॥५९॥

भाग्य की विडंबना को क्या कहा जाए कि राजा सुभांडदेव और उसके भाई सोंडदेव के भाग्य में निश्चय ही बिगड़ना लिखा था। इसे अजीब दुर्योग ही कहा जाएगा कि जो भी बूँदी लेने का विचार करता है वह वीर मर जाता है। जैत्रसिंह का छोटा भाई नवब्रह्म हो या अलोद का स्वामी अमरसिंह। नवगाँव का राजा गंगासिंह हो अथवा सारणदेव हाड़ा का छोटा भाई सेव। इन चारों वीरों की मृत्यु हो गई जिनसे उम्मीद थी कि बूँदी वापस लेने में सहायक होंगे। यही हाल तीनों अग्रजों का हुआ। इस वृत्तान्त को इस तरह ही होना था।

षट्पात्

समरकंद छल सज्जि हनन हड्डुन हिंडोलिय।
परिगह सह खल पहुंचि पिहित बिस्वासघात प्रिय।
अंगज निज दाऊद कलित कछु मह निमित्त करि।
रचिय गोठि अभिराम बिबिध व्यंजन गन बिस्तरि।
सुत तीन इक्क सोदर सहित दै निमंत्र दुबलान तैं।
अनुगन समेत बुल्ल्यो अधिप मिल्यो कहुक बहुमान तैं॥६०॥

तभी बूँदी के राजा समरकंद ने हिंडोली नगर में हाड़ाओं को मारने की एक कपटपूर्ण योजना बनाई। चुपके से अपने सेवकों सहित हिंडोली पहुँच कर उसने अपनी प्रिय आदत विश्वासघात का सहारा लिया। अपने पुत्र दाऊद खां से कह कर वहाँ कोई उत्सव रखवाया। इस उत्सव के अवसर पर एक बड़ी गोठ का आयोजन कर उसमें नानाविध व्यंजन बनवाए। इसके बाद दुबलाना निमंत्रण भेज कर राजा सुभांडदेव को उसके तीनों पुत्रों और छोटे भाई सहित आमंत्रित किया। सेवकों सहित राजा सुभांडदेव वहाँ आया तो कपटी समरकंद उनसे पूरे आदर सहित मिला।

दोहा

जदपि निवार्‍यो जात जंहं, पहु बहु बनिक प्रधान।
गयो तदपि अंतक ग्रसित, भोरो अरि हित भान॥६१॥

सिसु नरबद नरसिंह सह, जावन लग्गो जत्थ।
जेठे सुत जुत सचिव जिन्ह, हठि रोके गहि हत्थ॥६२॥

आयो सोंड हु मिलन इत, जोहु नट्यो तंहं जान।
सोहु लयो नृप दै सपथ, देखत हितहि निदान॥६३॥

मंत्री खित्तलशाह ने राजा को वहाँ जाने के लिए बहुत मना किया पर काल का ग्रास हुआ वह भोला राजा शत्रु के व्यवहार में अपना हित सोच कर नहीं रुका। राजा के रवाना होते समय कुमार नरबद, नरसिंह (नृसिंह) और नारायणदेव भी साथ जाने को तैयार हुए कि मंत्री ने राजा के तीनों पुत्रों को हाथ पकड़ कर हठपूर्वक रोक लिया। उन्हें साथ नहीं जाने दिया। इस समय

सोंडदेव भी जो अपने बड़े भाई से मिलने दुबलानापुर आया हुआ था ने भी राजा को हिंडोली नहीं जाने का कहा पर राजा नहीं माना उल्टे उसने अपनी सौगन्ध दिला कर अपने छोटे भाई सोडंदेव को भी अपने साथ चलने को मजबूर किया।

षट्पात्

मिल्यो दुहुन अतिमान समरकंद सु रचि संसद।
अबजु आहि सरसेतु पंति हुव तास सीमपद।
अक्खिय भूप हिं अनुज जवन मारों यंह जिम्मत।
बदिय भूप खल बहुत बनत भावी न टरैं बत।
आपान बिरचि करि तब असन करधावन सानुज करत।
बहराम कुतब पति सैनबस बाहिय असि हसि बिप्फुरत॥६४॥

हिंडोली में आयोजित राजसभा में समरकंद बहुत सम्मानपूर्वक सुभांडदेव और सोंडदेव से मिला। अभी जहाँ तालाब की पाल है उसके नीचे की सीमा (के मैदान) में पंक्तिबद्ध हो कर सभी बैठे। इस समय सोंडदेव ने धीरे से अपने अग्रज से कहा कि यदि आप कहें तो मैं इस शत्रु को भोजन करते समय मार डालूँ। यह सुन कर राजा सुभांडदेव ने कहा कि नहीं, दुष्ट बहुत बलशाली है फिर कभी देखेंगे। इसके बाद मद्यपान की महफिल हुई उसके बाद भोजन हुआं। दोनों हाड़ा भाई जब भोजन कर हाथ धोने लगे तभी उन पर बहराम खां और कुतबखान दोनों ने अपने स्वामी समरकंद के संकेत से अपनी-अपनी तलवारें निकाल कर जोरदार प्रहार किये।

दोहा

पैठो नृप के अंस परि, असि उपवीत उतार।
तदपि हन्यों बहराम तिहिं, कर निज झारि कटार॥६५॥

बहराम खां की तलवार चली जो राजा के कंधे पर पड़ी और जनेऊ बाढ (एक कंधे पर लग कर दूसरी और की पसलियों से निकलने वाला काट जो उपवीत की तरह हो उसे जनेऊ बाढ कहते हैं) करती हुई पार निकल गई। राजा ने भी भूमि पर गिरते-गिरते अपनी कटार निकाली और अपने हत्यारे बहराम खां को मार गिराया।

षट्पात्

कुतबखान खग्गकरि सोंड उडिजात स्वीय सिर।
कटि सन कड्ढि कृपान चंड रन रुंड रच्यो चिर।
परि समाज प्रद्रवन जवन चढि तरुन बचे जंहं।
हिय अंखिन मनु हड्डु तक्कि छ अराति हनैं तंहं।
पैंतीस भजे सहसा प्रथन पंद्रह भट नृप के परे।
नृप सोंड सहित सत्रह नरन कतल मिच्छ छ छ गुन करे॥६६॥

इधर कुतबखान ने अपनी तलवार के प्रहार से सोंडदेव का सिर उड़ा दिया पर कमर पर बंधी कृपान निकाल कर सोंडदेव के रुंड ने बहुत देर तक घमासान मचाया। यवनों का समाज यह देख कर इधर-उधर भागा और कइयों ने पेड़ों पर चढ़ कर अपनी जान बचाई। सोंडदेव हाड़ा के कबंध ने जैसे अपने हृदय की आँख से देखते हुए छह शत्रुओं को ढेर कर दिया। इस अचानक हुई भिड़ंत में पैंतीस योद्धा भाग खड़े हुए और राजा के पन्द्रह योद्धा रणभूमि में गिरे। सुभांडदेव और सोंडदेव सहित कुल सत्रह वीर खेत रहे पर उन्होंने यवनों के छत्तीस योद्धाओं को परलोक पहुँचाया।

दोहा

सचिव छत्र आवत सु सब, मुख्य कुमर सुनि मग्ग।
पच्छो मुरि दुबलानपुर, आलय पत्त उदग्ग॥६७॥
दहल बढी सब देस में, सुनि नृप पक्खिन सोहि।
कढि निवास परसीम किय, बन्यों रहन बल कोहि॥६८॥
सारन सोदर सेव सुत, तजि बसुदारी तत्थ।
गो मेव हु खटपुर गहन, जानि रहन थिर जत्थ॥६९॥
गिरिसकोन खट द्रंग तैं, मेध्या सरित समीप।
ग्राम बिरचि अभिनव गुढा, विस्यो परन प्रतीप॥७०॥

सचिव खित्तलशाह से छिप कर बड़ा कुमार नारायणदेव हिंडोली को जा रहा था कि उसे रास्ते में ही इस भिड़ंत के समाचार मिले तो वह वापस मुड़ कर दुबलाना आ कर अपने घर में दुबक गया। सारे क्षेत्र में भय और

आतंक फैल गया और राजा के परिकर आदि जो भी उसके पक्ष के लोग थे उन्होंने गाँव छोड़ कर दूसरी जगह शरण ली। सारणदेव हाड़ा के भाई सेव का पुत्र मेव अपना वसुदारी गाँव छोड़ कर खटकड़ नामक गाँव में रहने चला गया। यह सोच कर कि अब इस नये गाँव में शान्तिपूर्वक निश्चिंत हो कर रह सकेगा। बाद में खटकड़पुर से ईशान दिशा में मेझा नदी के पास पड़ी जगह में मेव ने नया गुड़ा नामक गाँव बसाया और वह शत्रुओं का प्रतिद्वंद्वी वहाँ रहने लगा।

नृप सानुज पायो जनन, महि बसु सक्करि मान।
नवति चतुर्दस पट्ट निज, बैठो उचित बिधान॥७१॥

बेद बेद तिथि मित बरस, बिक्रम संबत बेर।
हिंडोली बपुहान किय, ढाहि छतीसन ढेर॥७२॥

बदिय अग्ग गणकन बिदित, नृप को सस्त्र निपात।
सोहि भई सारकसठन, भेजि परे दुव भ्रात॥७३॥

राजा सुभांडदेव ने अपने जुड़वा भाई सोंडदेव के साथ विक्रम संवत् के वर्ष चौदह सौ इक्यासी में जन्म पाया और वर्ष चौदह सौ नब्बे में वह अपने पिता राजा वैरीसाल का उत्तराधिकारी हो कर राजगद्दी पर बैठा। विक्रम संवत् के वर्ष पन्द्रह सौ चवालीस में इस राजा ने हिंडोली में अपने छत्तीस शत्रुओं को ढहा कर अपनी देह त्यागी। पूर्व में ज्योतिषियों ने यह भविष्यवाणी की थी कि राजा शस्त्र के घात से मारा जाएगा। वही हुआ। अपनी मूर्खता के कारण दोनों भाई कट मरे।

इतिश्रीवंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे पंचम राशौ वीतिहोत्र-वसुधेश्वर बीज्यवर्णनबीजहड्डाधिराडस्थिपाल वंश्यानुवंश्यविहितव्या-ख्यावेलाव्याहार्यबुंदीवसुधापतिसुभाण्डदेव चरित्रे श्रुतसीमासमीप-समरकन्दा भिषेणनसामन्त सचिव नृप निःशलाकमन्त्रावमाननोद्युक्तशोण्ड नानालघु गुरु कृश स्थूल दृष्टान्तदर्शनसङ्ग्रामसमर्थन निरस्तमाधवाऽमर-कृततदनुमोदनरणनिश्चितवंशनाशनृप जैत्र सारण सचिव शत्रुशासन-स्वीकारसूचन, समवज्ञातनृपा दि सन्धिसम्पततर्जितकथितकातरीभूत-सन्धिमन्त्रिकक्ष्माजदर्शितपार्थक्याऽमर माधव गङ्ग शोण्ड स्वस्वस्थान-गमन, निश्चिताऽनुकूलाऽवसरम्लेच्छ मारणनृपा नुमोदितप्रगुणीकृतो-पायनस्वीकृतशत्रुशासनचर्मण्वत्य वधिसमभिसृतनिवेदितोपदमानित-

म्लेच्छमतसारण जैत्र सचिव बूँदीविहानस्वीकरण लेखितनृपा र्थद्वादशो पवसथोपेतदुर्बलान द्रङ्गशोण्डा ऽर्थतर्ककुला दिग्रामपंचक पट्टप्रत्यागत-त्‍त्रय वसुधेश बूँदीबहिर्नि:सरणोपदेशन परागोचरगोपितबसु भूषण व्रात-त्यक्तसगज तुरग नालिका निकरबुन्दीनगरबलात्कारनिष्कासिततारादुर्गा-ऽध्यक्षनरेन्द्रदुर्बलानप्रविशन सारण सचिवा दिप्रसभप्रबोधितशोण्ड ग्राम-पंचक स्वीकारण समाहूपत्नी पुत्रा दिपरिकरसमरकन्द सीमान्तबूँदीराज्य-स्वीकारण।

श्री वंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण की पंचम राशि में अग्निवंशी चहुवान वंश वर्णन के कारण हड्डाधिराज अस्थिपाल के वंश और वंश की शाखाओं की कथा बताने के समय के वचनों में बूँदी के भूपति सुभांडदेव के चरित्र में सीमा के समीप समरकन्द की युद्धयात्रा सुन कर उमराव, सचिव और राजा के एकांत में किये हुए मंत्र की अवज्ञा करके उद्यत हुए सोंड का अनेक छोटे बड़े दुर्बल और मोटे दृष्टान्तों को दिखाकर युद्ध को पुष्ट करना, माधव और अमर के किए हुए उसके अनुमोदन का तिरस्कार करके युद्ध में निश्चय ही वंश का नाश जानकर राजा, जैत्र, सारण और सचिव का शत्रु की आज्ञा को स्वीकार करने की सूचना करना, राजा आदि चारों की संधि की सम्मति को न मानकर कायर कहकर संधि करने वाले मंत्री समाज को धमकाकर पृथक्मन दिखाकर अमर, माधव, गंग और शौंड का अपने अपने स्थानों को जाना, अनुकूल समय में म्लेच्छ को मारने का निश्चय करके राजा के अनुमोदन से सरलतापूर्वक नजराना ले शत्रु की आज्ञा स्वीकार करके चामल नदी तक सन्मुख जाकर नजराना भेंट करके म्लेच्छ के मत को मानकर सारण जैत्र और सचिव का बूँदी छोड़ने को स्वीकार करना, राजा के अर्थ द्वादश ग्रामों सहित दुबलाना पुर और शौंड के नाम ताकला आदि पाँच ग्रामों का पट्टा लिखाकर वापस आ जैत्र आदि तीनों का राजा को बूँदी से बाहर निकलने की सम्मति देना, शत्रुओं से नहीं जाने हुए धन और आभूषण के समूह को छिपाकर हाथी घोड़े और तोपों के समूह सहित बूँदी नगर को छोड़कर तारागढ़ के किलेदार को कठिनता से निकालकर राजा का दुबलाना पुर में जाना, सारण और सचिव आदि का हठपूर्वक समझाकर सोंड को पाँच गाँव स्वीकार भेजना, स्त्री पुत्रादि परगह को बुलाकर समरकन्द का सीमा पर्यन्त बूँदी के राज्य को अपने अधिकार में करना।

जितवशीकारितसीमासपत्नबुन्दीस्थापितत्रिसहस्त्र बलखिल-

सैन्यमण्डूप्रतिगमन समाहूतसमाग तमाधवा ऽऽदित्रय वर्जितनृपा दिसाम-न्तसंघार्थस्वावसरसंजिहीर्षुयवनपृथक् पृथङ्निजनामलेखितपट्टाऽर्पण, निश्चितनृपाऽनुजोन्मत्तभावबुंदीशमाधव गंगा ऽनागमकारणपृच्छावसरजैत्र यक्ष्मा ऽर्शो मिषत्कोपनिवारण क्षान्तमन्तुस्व सेवनपुत्रप्रेषणदत्तनियोग-कदाचिद्दुष्टकपटाऽऽमयावियुग स्वस्वसूनुशैशवनिवेदन जैत्र सारण माधव त्रय स्वस्वसमयसंस्थासमादानाऽवसरतत्पुत्रगैणोल्या दिस्वस्वस्थानीय-स्वामी भवन स्वस्वामिसेवासावधानदुर्बलान वास्तव्यनीति निमित्त निपुणमन्त्रिराजबणिक्क्षेत्रलस्वप्रभुसमक्षाऽऽगमिष्यमाण वर्षदुर्भिक्षविज्ञपन परीक्षाप्रतीतसचिवसावधानीकृतविहितभर्मभूषणा दिविनिमयेदयालुनरेन्द्र सर्वजनजीवनसमानधान्य सम्भारसंचयन प्राप्तसूचितशकसंगतद्वि-चत्वारिंशा ऽब्दमहादुर्भिक्षाऽऽगमयवनयाच्यमानदत्तसम्मितधान्यमूल्या-निनीषुसुभाण्डदेव सपत्नावधिशुष्यमाणासंख्यजनतासंजीवन तत्र त्यम-नोहरवृत्तप्रथम पादादिचतुर्दश शब्दपूर्वपूर्वैकै का क्षरयोगतत्कालीनप्राक्त-नीदोहापूर्वार्द्ध संघटन पुनर्मार्गणा प्राप्तधान्यसमरकन्द सार्द्धैक समाव-धिनिर्वोढसर्वजनजीवनसपरिग्रहसुभाण्ड परस्परछद्मघातविचारण मन्त्रि-क्षेत्रलप्रार्थितनरेन्द्र सूचितस्थानविहितपंचदशसहस्र रौप्यव्ययवणिङ्नाम-सूचकनव्यकासारनिर्मापण सुभाण्ड शोण्ड स्वस्वाऽभिधानाऽङ्कितभाण्ड-खेट शोण्डखेट नामनवीननिवसथयुग्मनिवासन।

सीमा के शत्रुओं को विजय और वश में करके बूँदी में तीन हजार सेना रखकर बाकी की सेना का वापस मण्डूपुर भेजना, बुलाने से आये हुए माधव आदि तीनों को छोड़कर राजा और उमरावों के समूह के अर्थ अपने अवसर पर मारने की इच्छा वाले यवन का अपने नाम से लिखकर जुदा-जुदा पट्टे देना, राजा के अनुज माधव और गङ्ग के उन्मत्तभाव का निश्चय कराकर बूँदी नहीं आने का कारण पूछने के समय जैत्रसिंह का क्षय रोग और बवासीर के मिस से कोप मिटाना, अपराध को सहन करके अपने सेवन में पुत्रों को भेजने की आज्ञा देने पर कदाचित् कपट देखकर दोनों रोगियों का अपने अपने पुत्रों का बालकपन निवेदन करना, जैत्र सारण और माधव तीनों के अपने अपने समय में देहान्त होने के अवसर पर उनके पुत्रों का गैणोली आदि अपने अपने स्थानों का पति होना, अपने स्वामी की सेवा में सावधान दुबलानपुर निवासी नीति और शकुन में निपुण मन्त्रिराज बनिया क्षेत्रल का अपने स्वामी के सन्मुख आने वाले सम्वत् में दुर्भिक्ष होने की जानकारी

करना, परीक्षा में प्रतीति किये हुए सचिव के सावधान करने से उचित स्वर्ण और आभूषण आदि देकर दयालु राजा का सब जीवों के जीवन के सामान धान्य का समूह संचय करना, सूचना किये हुए के सम्वत् के साथ प्राप्त हुए महादुर्भिक्ष आने के समय यवन के याचना करने पर मूल्य नहीं लेकर कुछ धान्य देकर सुभांडदेव का शत्रुओं तक शुष्क हुए असंख्य मनुष्यों को जिलाना, वहाँ के मनोहर छंद के प्रथम चरण के चौदह शब्दों के प्रत्येक पद के प्रथम के एक एक अक्षर के मिलाने से उस समय के प्राचीन दोहे के पूर्वार्द्ध को रचना, फिर मांगने पर धान्य के नहीं मिलने से डेढ वर्ष की अवधि तक सब जनों का निर्वाह करने वाले परिग्रह सहित सुभांड को परस्पर छलघात करके मारने का विचारना, मंत्री क्षेत्रल के प्रार्थना करने पर राजा के बताये हुए स्थान पर पन्द्रह हजार रुपये खर्च करके बनिये के नाम को बताने वाले नवीन तालाब का बनाना सुभांड और सोंड का अपने अपने नामों से जाने जावैं जैसे ऐसे भांडखेडा और सोंडखेड़ा नामक नवीन दो गाँव बसाना।

नृपहम्मा ऽर्वाग्वैरिशल्या ऽवधिनृपत्रय वार्द्धकवयोराज्यधरप्रसूतिप्राप्तिसूचना पुरस्सरसुभाण्डदेव यौवनाऽवतरणसमयसन्ततिचतुष्टया ऽधिगमसूचन हेतिहया दिविद्याविदग्धज्येष्टकुमारनारायणदास पितृपरोक्ष म्लेच्छमारणविचारण नृपनियतिप्रातिकूल्यपरतन्त्रम्लेच्छमार णतन्त्रोद्यतनवब्रह्मा ऽऽदिनृपबन्धुनवक स्वस्वसमयसमापन हिण्डोलीपुरप्राप्तसपुत्रसमरकन्द कल्पितमहान्तरगोष्ठी भोजनव्या जसमाहूतमन्त्रिवारणगृहन्यस्तकुमारसाहससार्थीकृताऽनुजसुभांड देव सूचितस्थानगमन भोजनाऽवसानसमरकन्द सूचनासञ्जिही-र्षुयवनयुगसुभाण्ड शौण्ड भ्रातृद्वय दलन तिर्यक्कृत्तवामकरकृष्टकट्टारनरेन्द स्वमारकबहराम संहरण छिन्नमूर्धकरकृतपाणशोण्ड द्वेषिषट्क निषूदन नृपपक्षीयपंचदश परपक्षीयषट्त्रिंश त्शूरसम्मितसमापन मार्गश्रुतैतदुदन्तस्वस्थानप्रत्यागतकुमारनारायणदास बन्धुवर्गपरजनपदपलायन षट्पुरगहनसम्प्राप्तसेव सूनुमेव नव्यनिर्मितगुढाख्यग्रामनिवसन सानुज जन्म पट्टप्राप्ति तनुत्याग शकसमासङ्ख्यासूचनं द्वाविंशो मयूखः ॥२२॥ आदित एकोनसप्तत्युत्तरैकशततमः ॥१६९॥

राजा हम्मीर से वैरिशल्य तक तीनों राजाओं के वृद्ध अवस्था में राज्य को धारण करने वाली संतान की प्राप्ति होने की सूचना पूर्वक सुभांडदेव के यौवन उतरने के समय चार संतान होने की सूचना करना, शस्त्र और हय

विद्या में पंडित बड़े कुमार नारायाणदास का पिता के परोक्ष म्लेच्छ को मारने का विचार करना, राजा के उलटे भाग्य की परतन्त्रता से म्लेच्छ को मारने के तंत्र में उद्यत होने वाले नवब्रह्म आदि राजा के नौ भाइयों का अपने अपने समय पर मरना, हिंडोली पुर में पहुँच कर समरकन्द के कल्पित उत्सव की गोठ के बहाने से बुलाये हुए मंत्री के रोकने से कुमार को घर में छोड़कर हठपूर्वक छोटे भाई को साथ ले कर सुभांडदेव का सूचना किये हुए स्थान को जाना, भोजन के अन्त में समरकन्द की सूचना से मारने की इच्छा वाले दो यवनों का सुभांड और सोंड दोनों भाइयों को मारना, खड्ग से तिरछा कटने पर हाथ से कटार निकाल कर राजा का अपने मारने वाले बहराम को मारना, मस्तक कटे पीछे हाथ से खड्ग लेकर सोंड का छह शत्रुओं को मारना, राजा के पक्ष के पन्द्रह और शत्रु के पक्ष के छत्तीस शत्रुओं का युद्ध में मार जाना, मार्ग में यह वृत्तान्त सुनकर कुमर नारायणदास का अपने अपने घर पर आना और बन्धुवर्ग का पराये देश में भागना, खट्पुर के गहन बन को पाकर सेव के पुत्र मेव का नवीन बसाये हुए गुढा नामक ग्राम में निवास करना, छोटे भाई सहित राजा के जन्म, पट्टप्राप्ति और शरीर छोड़ने के विक्रम के सम्वत् की गणना सूचन करने का बाईसवाँ मयूख समाप्त हुआ। और आदि से एक सौ उनहत्तर मयूख हुए।

प्रायो ब्रजदेशीय प्राकृत मिश्रित भाषा

षट्पात्

बरज्यो जावत बनिक तास करि कानि रह्यो तब।
पुनि नारायन पिहित जोग्य अवसर हंकिय जब।
इक्कल हय आरूढ जानि न सकैं अमात्य जिम।
नगर बरोद निकट अध्व कुलनास सुन्यों इम।
पच्छो सु आइ दुबलानपुर हेय तजि रु बिधि करत हुव।
बैरिन सराह बाहिय बदत स्वांत निगूढ सुभांड सुव॥१॥

राजा सुभांडदेव को हिंडोली के लिए प्रस्थान करते समय उसके मंत्री बनिया खित्तलशाह ने बहुत रोका पर उसकी एक न मान कर वह गया फिर कुमार नारायण देव भी चुपके से अवसर देख कर यहाँ से चला। वह कुमार अकेला अपने घोड़े पर सवार हो कर इसलिए निकाला ताकि अपने किसी अमात्य को इसकी खबर न हो। वह जब बरोदा गाँव के करीब पहुँचा तो

रास्ते में उसे अपने कुल के नाश का अप्रिय समाचार मिला। तुरन्त वहीं से वापस मुड़ कर दुबलाना पुर पहुँचा। मन ही मन त्यागने योग्य को त्याग कर उसने अपने मन को समझाया कि भाग्य में यही बदा था। इसके बाद से वह शत्रु की बाहर से तारीफ करता पर उस के मन में अपने शत्रु के लिए घृणा ही घृणा थी। इसके अतिरिक्त अन्तस में गहरे दफन बैर लेने की भावना थी।

दोहा

संतति न हुती सोंड कै, यातैं कुमर उदार।
जनक पितृव्यक कृत्य जुग, सद्धिय बिधि अनुसार ॥२॥

कानि करन आवैं अखिल, इम भाखैं तिन्ह अग्ग।
करी उचित मारे कुटिल, मतिबिनु चलत कुमग्ग ॥३॥

स्वामी को हनिबो सतत, चाहत हे दुव चित्त।
सहत सहत अति आगसन, भरि आमुख किय भित्त ॥४॥

समरकंद काका सु पहु, अब है जनक उदार।
बेगम काकी माइ बलि, हमरे पालनहार ॥५॥

सुनि बुंदिय यह बत्त सब, जवन तिन्हैं निज जानि।
बेगम सिसु पठये बिहसि, करन अग्रजन कानि ॥६॥

नारायन सु नरायन हु, दीसत सब्द द्वि रूप।
इन दोउ न करि बिदित इम, भाख्यो जात सु भूप ॥७॥

हाड़ा सोंडदेव की अपनी कोई संतान नहीं थी इसलिए कुमार ने ही अपने पिता के साथ अपने चाचा का भी अंतिम संस्कार पूरे विधि-विधान से संपन्न किया। मातमपुरसी के लिए सारे बैठने आते। वे यही कहते कि उन कुटिलों को मार कर समरकंद ने उचित किया, वे बुद्धिहीन कुमार्ग पर चल रहे थे, बार-बार स्वामी की हत्या की बात सुन कर कुमार द्विमना (बाहर से मित्र भीतर से शत्रु गिनने वाला दोहरे मन वाला) हो गया और उस दुष्ट के अपराध भरे अत्याचारों को सहते-सहते कुमार मुँह तक भर गया। वह पूरी तरह आजिज आ गया पर प्रदर्शित यह किया कि अब राजा समरकंद ही हमारे पिता तुल्य हैं और बेगम चाची ही अब हमारी पालनहार है। यह बात जब बूँदी के राजा ने सुनी तो उसने सोचा कि हम लोगों के यवन होते हुए भी

ये हमें अपना गिन रहा है। यह सोच कर राजा ने अपनी बेगम को बच्चों सहित दुबलाना पुर बड़े भाइयों की मातमपुरसी के लिए भेजा। नारायण और नरायण ये दो शब्द दो अलग-अलग नामों के द्योतक हैं पर असल में इन दोनों नामों से वह राजा प्रसिद्ध था अर्थात् ये दोनों कुमार नारायणदास के ही नाम थे।

षट्पात्

दुमन नरायनदास अरज बेगम प्रति अक्खिय।
तुम माता वे तात प्रथित पालक निज पक्खिय।
उर लगाई सुनि बहहु अभय अप्पि रु गृह आई।
अप्पन पति के अग्ग बहुत किय तास बडाई।
कमरहु इतैं सु सब कृत्य करि नीतिनिपुन मिच्छन नयो।
बिगनित जिमाइ दिन बारहम भूप पट्ट पावत भयो॥८॥

उदास नारायणदास ने बेगम से अर्ज करते हुए कहा कि अब आप हमारी माँ है और वे हमारे पिता। आप दोनों ही अब हमें पालने वाले हैं। यह सुन कर बेगम ने उसे अपनी छाती से लगा कर सांत्वना दी और अभय दे कर वह वापस अपने घर बूँदी आई। यहाँ आ कर उसने इन बच्चों की अपने पति के आगे खूब तारीफ की। उधर कुमार नारायणदास ने बारह दिनों के सारे क्रियाकर्म संपन्न किये और उस नीति निपुण कुमार ने म्लेच्छ के सामने पूरी नम्रता का प्रदर्शन किया। अपने पिता और चाचा की बारहवीं पर अनगिन व्यक्तियों को भोजन करवा कर वह अपने पिता का उत्तराधिकारी हो दुबलाना पुर का स्वामी बना।

बुंदिय आइ बहोरि नीतिकोबिद अपुब्ब नमि।
समरकंद संसद सु स्वांत गोपित बैठो समि।
अंतहपुर आदेस जानि हित चहत दयो जब।
बेगमपास बहोरि तास नुति करि आयो तब।
उपबसथ ताहि बारह अधिक द्रोहमिटन मिच्छप दये।
जनकारि अनुग इम जानि जग भूपहिं बहु निंदतभये॥९॥

पिता का उत्तराधिकारी बन कर नारायणदास बूँदी आया और नीति

का पंडित वह यवनों के आगे झुका। वह समरकंद की राजसभा में अपने मन की बात दबाते हुए सब कुछ सहन कर बैठा। फिर उसने राजा समरकंद से जनाना महल में जाने की जो इजाजत माँगी वह उसे मिल गई। तब उसने भीतर जा कर बेगम को प्रणाम किया। इस पर उस म्लेच्छ राजा ने उसे बारह अतिरिक्त गाँवों की जागीर अता की जिससे द्रोह मिट जाए पर नारायणदास की सभी ने इस बात के लिए निंदा की कि वह अपने पिता के हत्यारे का सेवक बन गया है।

दोहा

इम बारह निबसथ अधिक, पुब्ब पटासन पाइ।
पहु आयो दुबलानपुर, मिच्छन हितहि मनाइ॥१०॥
समरकंद कंहं सुत सहित, चाहत मारन चित्त।
जिम सल्लैं काका कनक, घर घल्लैं बलबित्त॥११॥

इस तरह अपने पिता से बारह गाँवों की अधिक जागीर उसने राजसिंहासन पर बैठने से पहले ही प्राप्त की और यवनों द्वारा किये गये इस उपकार से खुश होकर वह वापस दुबलाना पुर लौटा। समरकंद को उसके पुत्र सहित मारने की इच्छा उसके चित्त में और अधिक बलवती हो उठती जब उसके मानस में अपने पिता और काका की हत्या की स्मृति कौंधती। ऐसा खयाल आते ही वह सोचता कि मुझे सेना रूपी धन जोड़ना चाहिए और उससे अपने घर को समृद्ध बनाना चाहिए।

षट्पात्

तंहं नृप मातुलतनय बग्घ चालुक बीरन बर।
लहि अवसर दुबलान मिलन आयो हित मंथर।
मन संकल्प सु महिप कह्यो तासन सहकारन।
बग्घ निपुन तब बदिय मित्त न बनैं तस मारन।
पुच्छत निदान अक्खिय पुनिहु अंधू छांहं जिम मंत्र उर।
रक्खैं सु हनैं अैसे रिपुन धारि न सक्कैं ओर धुर॥१२॥

दुबलाना के राजा नारायणदास के मामा का लड़का चालुक्य बाघा (व्याग्रराज) एक वीर योद्धा था। वह हितैषी एक बार समय निकाल कर

दुबलाना पुर आया। राजा ने अपने मन का गुप्त संकल्प उसे बताते हुए वांछित सहायता चाही। बाघ व्यावहारकुशल और अनुभवी था उसने कहा भाई ऐसा विचार करना छोड़ दे क्योंकि तेरा शत्रु इतना बलवान है कि उसे मारना आसान नहीं। राजा ने जब कारण पूछा तो उस कुएं की छाया की तरह अपने विचारों को मन ही मन में रखने वाले चालुक्य ने कहा कि ऐसी बात को सदा मन ही में रखना चाहिए। इच्छा प्रकट कर अथवा योजना बद्ध तरीके से ऐसे धुरंधरों को नहीं मारा जा सकता है।

बदिय भूप तुव बंधु सुहृद मामक मामकसुत।
हम तुम अंतर है न इम नजा नैं इत ओ उत।
बग्घ कहिय व्है बंधु तदपि न कहहु अब तासों।
अवसर सद्धहु इष्ट रक्खि व्यवहित [illegible]नासों।
व्है जब अनेह बुल्लहु हमहिं दैहैं मेटि कलंक दुव।
हड्डुन अधीस मारक हनि रु भुग्गहु बुंदिय राज्य भुव॥१३॥

यह सुन कर नारायणदास हाड़ा ने कहा तुम मेरे बंधु हो सखा हो और मामा के पुत्र होने के कारण सम्बन्धी भी इसलिए हममें तुम में कोई अन्तर नहीं। मैं कोई पराया नहीं पर इस तरह की बात तुम इधर-उधर मत कहा करो। ऐसी बात तो तुम्हें अपने सगे भाई को भी नहीं बतानी चाहिए। बस, चुपचाप उचित अवसर की प्रतीक्षा करो और मन में दृढ़तापूर्वक पर गुप्त रूप में अपने उद्देश्य को सदा याद रखो। तुम्हारी नजर में जब ऐसा निरापद दिन आ जाए तो मुझे बुला लेना हम दोनों मिल कर तुम्हारे उस शत्रु रूपी कलंक को मिटा देंगे जो हाड़ाओं के स्वामी को मारने वाला कलंकरूप उन्हीं की बूँदी पर राज कर रहा है।

दोहा

जंपि इम सु गय जाजपुर, बीर निजालय बग्घ।
दुस्सह बित्ते मास दस अधिपहिं निट्ठि अनग्घ॥१४॥
पुनि नृप लग्गत ऋतुप्रसल, मृगसिर मास समत्थ।
बग्घादिक निज बुझ्झिकैं, सत्त लये तंहं सत्थ॥१५॥

जोध इतर सतच्यारि जिन्ह, राजा गोपुर रक्खि।
स्वसह अट्ठ प्रबिसन प्रथम, उचित गिनैं फल अक्खि ॥१६ ॥

चालुक्य बाघ अच्छी तरह अपने फूफेरे भाई को समझा कर अपने घर जहाजपुर वापस चला गया और इधर बदले की आग में भीतर ही भीतर जलने वाले राजा ने बमुश्किल तमाम दस माह की अवधि गुजारी। समर्थ राजा ने मृगसिर माह में हेमंत ऋतु के लगते ही अपने भाई बाघा को बुलवाया। उससे और अधिक प्रतीक्षा न बनी और अपने साथ सात वीरों को ले कर वह रवाना हुआ। उसने अपने चार सौ विश्वासपात्र सैनिकों को शहरद्वार पर तैनात किया जिससे बाहरी आक्रमण को रोका जा सके और स्वयं आठ योद्धाओं के जत्थे सहित शहर के भीतर दाखिल हुआ।

षट्पात्

चढि प्रातहि चहुवान बेग आयउ पुर बुंदिय।
बिरचत रन बुलबुलन हसत पिक्ख्यो निर्भय हिय।
गोल्हाबापिय गाह महल पच्छिम दिस मंडित।
तोरन बाहिर तत्थ प्रथित बैठो छलपंडित।
सिसु पुत्र पौत्र काजी सहित परिजन अल्प प्रमोद पगि।
बटछांहं सभा बेदिय बिरचि लखत समाव्हय खेल लगि ॥१७ ॥

दुबलाना से प्रातः शीघ्र ही वह चहुवान तीव्र वेग से बूंदी पहुँचा। वहाँ बुलबुल पक्षियों को लड़ाने के खेल में व्यस्त समरकंद गोल्हा बावड़ी के पास पश्चिम दिशा में नये बने महल के स्थान पर था। तोरनद्वार से बाहर वाले द्वार पर वह प्रसिद्ध महाकपटी बैठा था। वह बच्चे, बेटे, पोते और शहर काजी सहित अपने परिजनों के साथ आमोद-प्रमोद के इस खेल को हँसते-हँसाते देख रहा था। इन सभी की मंडली पास ही खड़े विशाल वटवृक्ष के नीचे बने चबूतरे पर जुड़ी थी और पक्षियों की लड़ाई देखने में मशगूल थी।

अक्खय सुत अभिधान जास संग्राम सोहु जंहं।
खटपुरपति मिलि खलन हुतो हाजरि पापी पंहं।
पहु तजि हय गय पास कलित अंजलि मुजरा करि।
कहि रु पुच्छि हित कुसल धीर बैठो अग्गैं धरि।

जुज्झत संकुत बुलबुल जकुट पिक्खत जवन प्रसक्तपन।
दियै सैन सत्त बग्घादिकन मारन तिन्ह चल्ल्यो न मन॥१८॥

अक्षयराज हाड़ा का पुत्र जिसका नाम संग्राम था वह भी समरकंद की सेवा में आया हुआ पास ही हाजिर था। राजा नारायणदास अपने घोड़े से उतर पड़ा और समरकंद के पास जा कर उसने अपने दोनों हाथ जोड़ कर अभिवादन (मुजरा) किया। अपने राजी खुशी के समाचार बताकर उसने बूँदी राजा की कुशलक्षेम पूछी और सामने जा कर बैठ गया। पक्षियों के जोड़े की लड़ाई देखने के रसिया यवन समरकंद जब वापस उनके दाँव-पेच देखने में दतचित्त हो गया तो राजा नारायणदास ने संकेत कर बाघा आदि अपने सातों साथियों को आगे बुलाया पर उनमें से किसी की हिम्मत शत्रु को मारने की नहीं हुई और वे आगे नहीं आए।

तबहि कड्ढि तरवारि निडर झारिय नारायन।
चकित अंखि चकचुंधि घरन नट्ठे बिनु घायन।
समरकंद अरि अंस चक्खि तिरछी कढि चल्ली।
सघन मेघ असि असित बाढ चमकत घनबल्ली।
उडिपरिय तास कर्तित अवनि मुंड बिसिख भ्रमि चक्र मग।
कटु जनु कुलाल खरतंति करि उडत चक्रसन किय अलग॥१९॥

तब नारायणदास स्वयं ने अपनी तलवार निकाली और निडरता से एक भरपूर प्रहार शत्रु पर किया। अचानक और अप्रतिहत हुए इस हमले से समरकंद के परिजन चकित रह गए। उनकी आँखें चकाचौंध से चुंधिया गई और वे कठिनाईपूर्वक वहाँ से डर कर भागे। नारायणदास की तलवार समरकंद के कंधे को चखती हुई आगे तिरछी निकल गई। जैसे सघन छाये हुए श्याम रंग के बादलों में बिजली चमकी हो। बिना शिखा वाले यवन का मुंड कट कर चक्राकार घूमता हुआ जमीन पर जा गिरा मानों किसी कुम्हार ने अपने चलते हुए चाक पर से तीखी तांत की सहायता से गीली मिट्टी वाला घड़ा उतारा हो।

इतर सत्रु आयुधिक अट्ठ जुज्झे गहि आउध।
भंजे खट नृप भटन उभय अप्पहि बट्ठे बुध।

अंदर गिनि दाऊद चल्यो महलन सीढी चढि।
सु लगि पिट्ठि संग्राम बेग नृप हनन गयो बढि।
पुर राजमहल सीढीन पर पहुँचत जानि कुबंधु पर।
झुकि पलटि झारि उलटो हि असि धकि डारिय सिर तास धर॥२०॥

यह देखते ही जब शस्त्रधारी शत्रु लपके तो उनसे भिड़ कर इन आठ योद्धाओं ने उनका मुकाबला किया। उन्होंने राजा समरकंद के छह योद्धाओं को मार गिराया। दोनों पक्ष के वीर आपस में उलझने लगे। इसी समय नारायणदास महल के भीतर गया यह सोच कर कि यवन शत्रु का बेटा दुष्ट दाऊदखां अन्दर होगा। वह महल की सीढ़ियाँ चढ़ने ही लगा था कि क्या देखना है कि इसके पीछे संग्राम हाड़ा बढ़ा चला आ रहा है। यह देखते ही जल्दी-जल्दी तीन वार सीढ़ी चढ़ कर अपने पीछे लगे इस कुबंधु संग्राम के सिर पर राजा ने झुक कर अपने खड्ग का उल्टी ओर से कुपित हो कर वार किया।

उदासीन गिनि याहि जवन कट्टत न हन्यों जब।
पै बनि सत्रुनपुत्त आत मारन पिक्ख्यो अब।
पलटि खग्ग इम प्रबल कंठ झारिय उलटिकर।
कट्टि सु दक्खिन कुंड्य प्रखर पैठो लगि पत्थर।
सिर रुंड उभय संग्राम के गये अरर लगि बेग गुरि।
पहुंच्यो महीप अंगनअवधि जंहं बीबिन किय प्रस्न जुरि॥२१॥

राजा ने इसे समरकंद की हत्या से उदासीन देख कर क्योंकि संग्राम ने उस समय मुकाबला नहीं किया था मन में सोचा कि कदाचित् यह हाड़ाओं के पक्ष में है तभी इसे वहाँ पर नहीं मार कर छोड़ दिया था पर जब शत्रु के पुत्र पर राजा आक्रमण करने जा रहा था तब यह मारने को दौड़ा। यह देख कर राजा ने उल्टे हाथ से अपनी तलवार इसके कंठ पर प्रहारी। इससे वह कट कर दक्षिण ओर की दीवार से जा टकराया फिर उसका कटा हुआ सिर और धड़ उछल कर लुढ़कते हुए किंवाड़ से जा लगे। यहाँ से राजा नारायणदास सीधा भीतर के आंगन में गया जहाँ समरकंद की बेगमें इकट्ठी हो कर उससे सवाल करने लगी कि क्या हुआ?

जब लग तिन जानी न सौध हक्कहि केवल सुनि।
इम नृपसम्मुह आइ कूक कारन पुच्छिय पुनि।
बदिय अप्प हनि बंधु मियां मोकंहं अब मारत।
दुरिहों जंहं दाऊद रहैं बिनु मंतु बिदारत।
उन कहिय गयो फजरहि वहै बहरी बाज सिकार बन।
रहि तू अरोहि अधिरोहिनी बनत हर्म्य तंहं भय अब न॥२२॥

उन बेगमों ने अब तक जनाने में सिर्फ हल्ला सुना था। उनकी जानकारी इतनी ही थी इसलिए वे राजा के सामने आ कर पूछने लगी कि यह कोलाहल क्यों हो रहा है? इसका क्या कारण है? राजा ने तत्काल जवाब दिया कि शत्रुओं ने मेरे यवन बांधवों को मार डाला है और अब वे मुझे मारने को मेरे पीछे लगे हैं। मैं तुरन्त जा कर दाऊद खां के साथ छिप जाना चाहता हूँ नहीं तो मैं निर्दोष मारा जाऊँगा। यह सुन कर बेगमों ने कहा कि दाऊदखान तो अपना बाज पक्षी ले कर आज प्रातः काल (फजर) से ही बाहर वन में शिकार को गया है। अब तू इस सीढ़ी (नीसरणी) से चढ़ कर उधर चला जा जहाँ नया महल बन रहा है। हमारी राय में वह स्थान सर्वाधिक निरापद और सुरक्षित है।

दोहा

सुत नत्ती लखि इतर सिसु, अधिप दया तिन्ह आनि।
हर्म्य नव्य जंहं होतहो, पत्तो तंहं असिपानि॥२३॥
जन्मदिवस मह होत जंहं, राजमहल नृपराम।
सौध बनितहो तास सिर, लघु तिन दिनन ललाम॥२४॥
तंहं चढि निश्रेनीहु तस, अैंची उप्पर अप्प।
रुचिर गोख ठड्डो रह्यो, दलि कुलघातक दप्प॥२५॥
निजभट मुख्य प्रकोष्ठ नृप, लेग लये सब बुझि।
कह्यो बिडारहु खलन कंहं, खीजहि जिततित खुझि॥२६॥

राजा नारायणदास ने वहाँ आंगन में खड़े राजा समरकंद के नाती पोतों सहित दूसरे बच्चे भी खड़े देखे पर मन में दया विचार कर उन बालकों को

नहीं मारा। वह तो उसी प्रकार हाथ में तलवार पकड़े हुए सीढ़ी से चढ़ कर नये निर्माणाधीन महल में आ गया। हे राजा रामसिंह! इन दिनों जहाँ आपके जन्म दिवस का उत्सव होता है यह वही महल है। यह उन दिनों निर्माण की प्रक्रिया में था और इतना ऊँचा नहीं था। इसके सुन्दर कमरे निर्माण की अवस्था में थे। नीसरनी (सीढी) की सहायता से ऊपर चढ़ कर राजा ने उस नीसरनी को ऊपर नये महल की छत पर खींच लिया जिससे दूसरा न आ सके फिर वह उस नये महल के अधबने झरोखे में अपने कुल को समाप्त करने वाले शत्रु को मार कर दर्प सहित खड़ा हुआ। उसने महल के मुख्य प्रकोष्ठ (सिरे ड्योढी) पर खड़े अपने योद्धाओं को बुलाया और कहा कि जहाँ-जहाँ शत्रु नजर आए उन दुष्टों को वहीं ढेर कर दो।

अज्ज मिले नृप में अखिल, मिच्छ रहे खिल मानि।
निखिल निकासे नैरतैं, तर्जन ताड़न तानि॥२७॥

पुरढिग भट चउसत पिहित, आयो रक्खि अधीस।
आये ते मंडत अमल, सेसन खंडत सीस॥२८॥

सिसु महिला दिक सत्रुके, जन कड्ढे बिनु जान।
भिल्ल जवन तंहं दुव भये, सज्ज रचन घमसान॥२९॥

सारे आर्य सेवक और सैनिक राजा नारायणदास के पक्ष में हो गए उन्होंने सारे म्लेच्छों को डरा धमका कर और दंड दे कर नगर से बाहर खदेड़ दिया। शहरपनाह के मुख्य द्वार पर अपने जिन चार सौ योद्धाओं को राजा तैनात कर आया था वे भी सभी भीतर महल की ओर बढ़े और राह में मिले शत्रुओं के सिर काटते हुए आगे बढ़ते ही रहे। शत्रु पक्ष की जितनी महिलाएँ और बच्चे थे उनको बिना मारे वहाँ से निकाल दिया पर तभी शत्रु पक्ष की ओर से यवन और भीलों ने मिल कर मोर्चा लिया और वहाँ घमासान रचा।

षट्पात्

महा धनुर्द्धर मिच्छ दास अरु डल्ल भिल्ल दुव।
कर चउ टंक कमान पिट्ठि द्वि कलाप धरैं धुव।
बोध्य सु द्रुम चल बेधि अचल गुंजाहु उतारत।
सद्द श्रवन अनुसार प्रदर तनु सार प्रहारत।

अज अद्ध दलित आढक असन चित्त ग्रसन मज्ञन चहैं।
रहि इत्थ डमर परदेस रचि रित्थ अमर लावत रहैं॥३०॥

यवन समरकंद के एक धनुर्धर सेवक और डालिया नामक भील इन दोनों ने मिल कर अपने चारटंक (टंक धनुष की कमान का एक माप है चार टंक अर्थात् पूरी ताकत वाली कमान) वाली कमानों वाले धनुष उठाए और पीठ पर बड़े तूणीर कसे। ये ऐसे धनुर्धर थे जो हिलते हुए पीपल के पत्ते को अपने तीर से बेध सकते थे और स्थिर पड़े निशाने में चिरमी को उड़ा सकते थे। ये ऐसे तीरंदाज थे जो शब्द या ध्वनि सुनकर ही अगले का शरीर बेध डालते थे। ये खाने में भी पूरे वीर थे इनमें से एक-एक व्यक्ति आधा बकरा और आधा आढक अर्थात् चार सेर भार के बराबर) पीसे हुए अन्न से निर्मित भोजन चट्ट कर जाता था। ये वीर यहाँ रहते हुए परदेस में लूटपाट करते और अकूत धन लाते थे।

मंडुवपति करि मिच्छ अग्घ आदर जिन्ह अप्पिय।
अरिगन पाहुन इठ्ठ धिठ्ठ काहु न रन धप्पिय।
पहिलैं इनहिं कुपाइ बैर अनुसरि कुछ बोली।
मन असोक प्रामार बहैं बैर साध्वस बिंझोली।
मंडुवमहीप जिन्ह करि जवन बहुदिन रक्खि स्वपास बलि।
दिय समरकंद संगहि दुसह बुंदिय दब्बन करन कलि॥३१॥

मांडूपति बाज बहादुर ने इनका बल और कौशल देख कर आदरपूर्वक सत्कार करते हुए इन्हें म्लेच्छ बना कर अपनाया था। ये ऐसे ढीठ योद्धा थे जो यहाँ आने वाले अतिथि शत्रुओं से युद्ध करते अघाते नहीं थे। पूर्व में इन्होंने अपना वैर लेने के लिए बिजोलियां (बिंझोली) के स्वामी अशोक नामक प्रमार को इतना आतंकित किया कि वह उनसे सदा भय खाता रहा। मांडूपति यवन बादशाह ने इनको यवन बना कर कई दिनों तक अपने पास रखा पर जब समरकंद बूँदी पर चढ़ाई करने को चला तब इन योद्धाओं को उसके साथ कर दिया जिससे बूँदी को युद्ध कर जीतने में आसानी हो।

दोहा

हसन चंदखां नाम हुव, जिनके बिदित जिहान।
गो त्रिसहंस दल सोहु गृह, परखि जिन्हैं अति प्रान॥३२॥

इहां समर रक्खे इतर कति ते हनि कति कड्ढि।
इम बुंदिय लिन्नी अधिप, द्विप अरि केहरि दड्ढि॥३३॥

भिल्ल जवन तंहं द्वैहि भट, हुव नन निमकहराम।
निज गृह तैं बुल्ल्यो नृपहिं, निडर चंदखां नाम॥३४॥

बुंदिय जो लिय भाग्यबल, तो झेलहु इक तीर।
निहचैं हम मरिहैं नतो, बड्डन पिल्लहु बीर॥३५॥

बचि जैहो इक बान तैं, तो हम आयुध तोरि।
व्है फकीर तुमरे रहहिं, जुग आश्रित कर जोरि॥३६॥

गोलीअंतर ताहि गिनि, भूप कुतूहल भाइ।
बदिय खान इक बान तू, चंद हु लेहु चलाइ॥३७॥

इनके नाम क्रमशः हसन खान और चंद खान थे जो पूरे क्षेत्र में प्रसिद्ध थे। समरकंद ने ऐसे अत्यंत बलवान वीरों के भरोसे ही बूँदी में रही तीन हजार की सेना को घर वापस भेजा था। यहाँ समरकंद ने कुछ नये सैनिक रखे थे उनमें से कुछ को मार कर शेष को भगा कर राजा नारायणदास ने हाथी रूपी शत्रु को सिंह की तरह खा कर बूंदी को छीन लिया। समरकंद के सारे सेवकों में से दो योद्धा एक भील और दूसरा यवन ये नमकहराम नहीं हुए। इनमें से चांद खां अपने घर से आ कर राजा से कहने लगा कि हे राजा! यह बूँदी तो आपको भाग्य के बल से प्राप्त हुई है यदि नहीं (अर्थात् लड़ कर ली हो) तो ऐसे वीर से मैं कहता हूँ कि आप मेरे एक तीर का प्रहार झेल लें। यदि आप मेरा तीर खा कर बच जाएँ तो निश्चय ही अपने वीरों से कह कर मेरा सिर कलम करवा दें। मैं शपथ पूर्वक कहता हूँ कि यदि आप मेरा तीर खा कर बच गए तो मैं धनुष तोड़ कर फकीर बन कर तमाम उम्र आपके आश्रय में पड़ा रहूँगा। राजा ने तब गोली अंतर (बंदूक की गोली जितनी दूर जाती है उतनी दूरी) पर खड़े हो कर अपने कुतूहल को शान्त करने के लिए अपने को इस दूरी पर सुरक्षित समझते हुए चांद खान से कहा कि ले अब तू एक तीर चला ले।

षट्पात्

चाप बिसिख धरि चंद करखि कुंडलकिय आक्रमि।
लायो एडिय लपट नटी मानहु उलटी नमि।

कठिन तानि आकरन तग्यो गोलिय इक अंतर।
कढि सु सब्य भुज कंख संधि पर थंभ लग्यो सर।
कछु ग्राव सकल जिहिं भिन्न किय सकल भये बिस्मित स्वजन।
बचिगो सु पिक्खि चंद हु वदिय पिक्खहु अब कमनैतपन॥३८॥

राजा का निर्देश सुनते ही बिना शिखा वाले उस यवन चंद खां ने धनुष को खींच कर कुण्डलाकार किया। ऐसा करने में उसका मुँह अपनी ऐड़ी के समीप चला गया। वह इस प्रकार दोहरा हो गया मानों कोई नट जाति की स्त्री उल्टी झुक कर अपनी एड़ियाँ छू रही हो। फिर उसने तीर को कानों तक खींच कर एक गोली की दूरी पर खड़े राजा पर चलाया। उसके बाण के बीच का डंडा राजा के बाएँ हाथ की कांख और हाथ के संधिस्थल पर टकराता हुआ निकला और आगे पत्थर पर जा लगा। जिससे पत्थर के टुकड़े हो गए और देखने वाले सारे विस्मय से भर उठे। राजा बच गया यह देख कर चांद खान ने कहा कि हे राजा! अब मेरी धनुर्विद्या देख।

जोरि करन इम जंपि संधि धनुगुन द्वितीय सर।
गन छागिन बामगिरि तक्कि चउ बुरज दुर्गंतर।
मत्त छगल तिन्ह मध्य इक्क सतिलक दृग आवत।
प्रकर लंबि पल्लवन खरो दु पयन रहि खावत।
तस गोधि तिलक कहि बेध्य तब सिखि बिसिख दूजो दयो।
अज लेत कुलट महलन अवधि भुवप्रदेश आवत भयो॥३९॥

अपने दोनों हाथ जोड़ कर उसने दूसरा तीर निकाल कर धनुष की प्रत्यंचा पर लिया और कहा कि हे राजा! वह जो बूँदी के बांई ओर पहाड़ पर दुर्ग के चौबुरज के नीचे बकरियों का झुण्ड चरता हुआ दिखाई दे रहा है। इन बकरियों के बीच में वह जो मस्त बकरा तिलक वाला नजर आ रहा है ना, जो अपने अगले पैरों को ऊंची झाड़ी पर टिकाये दो पांवों पर खड़ा पत्ते खा रहा है। उसके ललाट वाला तिलक मेरा लक्ष्य है। इतना कह कर उस विसिख (विना शिखा वाले यवन) ने दूसरा विसिख (बाण) चलाया इससे अविलम्ब ही वह बकरा वहाँ से लुढ़क कर महल की दीवार के पास वाली भूमि पर आ गिरा।

दोहा

इम सु मिच्छ वह मारि अज, अरज करत हुव एह।
बचि मोतैं प्रभु भाग्यबल, अब भुग्गहु भुव एह ॥४० ॥

इस तरह यवन ने उस बकरे को मार कर राजा से विनम्रतापूर्वक यह निवेदन किया कि हे स्वामी! आप मेरे तीर से अपने भाग्यबल के कारण बच गए अब आप इस भूमि पर खुशी-खुशी राज करें।

सौराष्ट्री दोहा

इम कहि दोउ न आइ, हेतिन तोरि फकीर व्है।
प्रभुता नृप की पाइ, आश्रय लिय जीवित अवधि ॥४१ ॥

नृप तिन दोउ न नाम, चोकी धरि रक्खे अचल।
इक सिवदिस अभिराम, दूजी इत मंडूक दर ॥४२ ॥

इम बुंदिय अपनाइ, समरकंद मार्‍यो सुनत।
सुत दाऊद रिसाइ, मृगयातजि आयो मरन ॥४३ ॥

इतना कह कर वे दोनों आए और अपने-अपने धनुष-बाणों को तोड़ फेंका और फकीर हो कर राजा की प्रभुता स्वीकार की। वे वहाँ दोनों उम्र पर्यन्त राजा के आश्रय में ही रहे। राजा ने भी इन दोनों के नाम से बूँदी के तारागढ़ दुर्ग वाले पहाड़ पर दो चोकियां बनवा कर एक को शिव मंदिर वाली दिशा में तैनात किया तो दूसरे को मंडूक दर्रे पर किया। उधर बूंदी के ले लिये जाने के साथ ही राजा समरकंद के मरने का समाचार जब दाऊदखान ने सुना तो वह यवन कुमार शिकार खेलना छोड़ कर क्रोध से भरा बूँदी की ओर मरने को आया।

षट्पात्

इषुधि पिठि कटि उभय प्रगुन दुव बाजि दु पासन।
इम दु ओर दुव आस सज्ज कर इक्क सरासन।
कटि जहरी असि कदर बाज बहरी बिहाइ बन।
पयचंपत जिम पुच्छ पलटि पन्नग फुलाइ फन।
आयो सु रहत त्रि मुहूर्त अह बैर चहत अतिमद बहत।
दृग कोप महत मानहु दहत कोन जनकमारक कहत ॥४४॥

पीठ और कमर पर दो तूणीर बांधे और घोड़े के दोनों ओर प्रकृष्ट गुण (विशिष्ट प्रत्यंचा युक्त) वाले दो धनुष टांके हुए और हाथ में एक चढ़ा हुआ धनुष लिये दाऊदखान जिसके कमर पर विष का पांण लगी तलवार बंधी हुई थी। वह पंजों पर छुरे बंधा हुआ बाज और बहरी को वन में ही छोड़ आया और स्वयं पैर तले दबे सर्प के समान अपना फन क्रोध में फुलाता हुआ छह घड़ी दिन बाकी रहते वैर लेना चाहने वाला मद से भरा वहाँ पहुँचा। जो अपनी आंखों में क्रोध की जलती अग्नि दहका कर यह पूछता हुआ आया कि मेरे पिता का संहारक कौन है मुझे बताओ ?

दोहा

गोपुर जिततित रुद्ध गिनि, सह हय व्है गिरिसानु।
उत्तरि पुर ढिगगो सु इम, भिंटन हड्डुनभानु॥४५॥

शहरपनाह के सारे दरवाजे बंद देख कर वह घोड़े सहित पर्वत के शिखर पर से उतरता हुआ हाड़ाओं के सूर्य से भिड़ने को नगर में पहुँचा।

षट्पात्

निकट चतुर्भुजनाथ सदन जंहं अब शृंगाटक।
आवत तंहं अटक्यो सु छोह उद्धत मद के छक।
भट रोधक चउ भंजि लंघि गोल्हाबापी लग।
आत-कहाई अधिप मरहु अबही न लेहु मग।
मंडुव पुकारि लै दल महत पुहवि लेहु पुनि हमहिं हनि।
दाऊद बदिय जत्थ सु जनक तत्थ हि सुत ऊरतव्य तनि॥४६॥

हे राजा रामसिंह! अभी चतुर्भुजनाथ के मंदिर के पास जो बाजार वाला चौराया है वहाँ आते हुए अवरोध पा कर वह मद से छका हुआ थोड़ा रुका पर क्रोध से फुफकार कर अगले ही क्षण वह अपने रोकने वाले चारों योद्धाओं पर पिल पड़ा। उन्हें मार कर गोल्हा बावड़ी के पास आ कर उसने राजा से कहलवाया कि तू मेरे हाथों अभी मारा जाएगा। कहीं भागने के लिए कोई मार्ग पकड़ने की जरूरत नहीं है। मैं मांडू के बादशाह से कह कर उसकी सेना के सहारे हमारी छीनी हुई बूँदी की भूमि को तो वापस ले कर रहूँगा। जिस स्थान पर समरकंद मारा गया था उसी स्थान पर खड़े हो कर

अपना कर्तव्य निभाने की ऐसी बात दाऊदखान ने कही।

काहू भट इम कहत तुपक झारिय छन्नैं तकि।
सिर गोलिय लगि दुसह छोनि हयतैं सु पर्‌यो छकि।
जंहं मारे चउ जोध घाय खट तंहं लग्गे घट।
बलि सिर गोलिय बिद्धभुव सुपरि तदपि उठ्ठि भट।
असि कड्ढि आत तोरन अवधि उज्झि पर्‌यो दाऊद असु।
किय तुपक घात ताकंहं तरजि पहु निंद्यो बहु अक्खि पसु ॥४७॥

कोई यह भी कहता है कि बूंदी के किसी वीर ने चुपके से निशाना साध कर अपनी बंदूक से गोली मारी थी और वह सीधी उसके सिर में जा लगी जिससे वह घायल हो कर घोड़े से लुढ़क कर नीचे आ पड़ा। दाऊदखान ने जिस ठौर पर उसे रोकने वाले वीरों को काट गिराया था। वहीं झड़प में उसके शरीर पर छह घाव लगे थे इस पर उसके सिर को बेधती गोली निकल गई तब भी वह बहादुर वापस उठ खड़ा हुआ। वहाँ से वह अपनी तलवार निकाल कर दौड़ता हुआ सिरे ड्योढी तक पहुँच गया था और वहाँ प्राण त्याग कर गिरा था। राजा ने उस बंदूक चलाने वाले को डाँट लगाई और उस निर्दयी की बहुत भर्त्सना की।

अच्युत चउभुज अग्ग कबर तिन दुहुन कहावत।
समरकंद दक्खिन सु उदग दाऊद गोरगत।
समरकंद सुंदरिय नाम निज करन धाम नुत।
बिरच्यो बीबनबाइ जारि निबसथ बापी जुत।
इत लहि गई सु पच्छी अवनि राजमहल संसद बिरचि।
पहिलैं सु पट्ट बैठो सुपहु मह तूरन अभिसेक मन्चि ॥४८॥

हे राजा रामसिंह! वर्तमान में भगवान चतुर्भुज के मंदिर के आगे जो दो कब्रें हैं वे इन्हीं की बताई जाती है। इनमें से दक्षिण दिशा वाली समरकंद की है और उत्तर दिशा वाली कब्र में दाऊदखान सो ता है। यवन राज समरकद ने अपनी बेगमों के नाम पर जो सुंदर स्थान बनवाया था उस बीबन बाई नामक गाँव को बावड़ी सहित जला कर नष्ट कर दिया और राजमहल में राजसभा

बुलवा कर अपनी गई हुई भूमि को वापस प्राप्त कर पहले से एक राजगद्दी पर बैठे हुए (दुबलानापुर की गद्दी पर) राजा ने नगाड़े बजवा कर पूरे उत्साहपूर्वक दूसरा बूँदी का अभिषेक करवाया।

सत्रह सम नृपसीस सौध जिहिं हुव अभिसेचन।
तबतैं नृप तंहं करत पर्ब हायन दल पूजन।
उम्मेद हु अभिसिक्त तत्थ प्रभु के प्रपितामह।
भद्रासन तंहं भुजत अप्प इम अब्दगंठि अह।
ढुरवाइचमर तंहं छत्र धरि पुर फेरिय निजआन पहु।
संग्राम कट्टि पैठो जु सिल असि तस व्है अर्चन अबहु॥४९॥

सत्रह वर्ष की उम्र में राजा नारायणदास का जिस महल में अभिषेक किया गया था। हे राजा रामसिंह! तभी से उस महल में प्रतिवर्ष दो बार पूजन होता है। आपके प्रपितामह राजा उम्मेदसिंह का राज्याभिषेक भी इसी स्थान पर हुआ था। हे स्वामी! जिस राजसिंहासन पर आप बैठते हैं उस पर वे भी आसीन इसी वर्षगांठ के दिन हुए थे। अपने चंवर ढुलवा कर, छत्र धारण कर, पूरे नगर में अपने अमल की विजयाज्ञा (आण दुहाई) को प्रसारित कर, नारायाणदास राजा बना। हे राजा रामसिंह! नारायणदास के हाथ से चली जो तलवार संग्रामसिंह को काटती हुई पत्थर पर जा लगी थी उसकी अब भी राजा पूजा करते हैं।

दोहा

जननी जुग अनुजात जुत, परिजन सचिव उपेत।
बुंदीपुर दुबलान तैं, बुल्ले सब समवेत॥५०॥
नारायन तें नरबद सु, जुग हायन लघुजात।
नरबद तैं नरसिंह लघु, अंतर बरस छ आत॥५१॥
नृप नरबद सोदर स्वसा, कन्या मदनकुमारि।
सो लघुबय नरसिंह तैं, पंच समा बिच पारि॥५२॥
बलि अवसर नृप व्याहिहै, याकौं गढ सुमियान।
निरखि भामता उचित नृप कर्मध्वज कल्यान॥५३॥

राजा नारायणदास ने तब अपनी दोनों माताओं को दोनों छोटे भाइयों

सहित दुबलाना से बूँदी बुलवाया। उसने अपने चतुर मंत्री खित्तलशाह को अपने परिजनों सहित बूँदी बुलाया। इस राजा नारायणदास से उसका छोटा भाई नरबद पूरे दस वर्ष छोटा था और नरबद से नृसिंह छह वर्ष छोटा था। राजा नारायणदास और उससे छोटे भाई नरबद के बाद उनकी एक बहन थी जिसका नाम मदन कुमारी था। वह बहन सबसे छोटे भाई नृसिंह से उम्र में पाँच वर्ष बड़ी थी। अपनी इस बहन का विवाह समय पर राजा ने सुमियाणा गढ़ किया। अपनी बहन के योग्य वर के रूप में राठौड़ कल्याणसिंह को पा कर उसके साथ विधि-विधानपूर्वक विवाह संपन्न किया।

निज इम राज्य जमाइ नृप, स्वजन गये परसीम।
जे सब बुल्ले प्रीतिजुत, भासि अरातिन भीम॥५४॥

रायमल्ल इत रान मृत, सुत नृप हुव संग्राम।
पट्ट बग्घ को जोधपुर, लिय सुत गंग ललाम॥५५॥

भारमल्ल भूपाल के अंगज इत भगवंत।
पट्ट लहिय आमैरपुर, अवसर स्वजनक अंत॥५६॥

बूँदी पर अपने राज्य को अच्छी तरह जमा कर राजा ने अपने उन सारे स्वजनों को जो बुरे समय में राज्य छोड़ कर पराये राजाओं की सीमा में जा बसे थे को वापस प्रीतिपूर्वक बूँदी बुलवाया। शत्रुओं को भयंकर दिखने वाले इस सुहृदय राजा ने अपने बांधवों को वापस बूंदी में बसाया। उधर चित्तौड़गढ़ के महाराणा रायमल की मृत्यु के बाद राणा सांगा (संग्रामसिंह) मेवाड़ का राजा बना और जोधपुर में राव वाघा के मरने पर उसका उत्तराधिकारी राव गांगा बना। इधर कछवाहा राजा भारमल के पुत्र भगवंतदास ने आमेर नगर का राज्य अपने पिता के परलोक गमन पर प्राप्त किया।

इतिश्रीवंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे पंचम राशौ वीतिहोत्र-वसुधेश्वर बीज्यवर्णनबीजहड्डाधिराडस्थिपाल वंश्यानुवंश्याविहितव्या-ख्यानवेलाव्याहार्यबुन्दीनरेन्द्रहड्डाधिराडनारायणदास चरित्रे मार्ग-श्रुतपितृद्वय निपातसत्वरप्रतिनिवृत्तदुर्बलानप्रत्यागत विख्यापितस्व-यङ्गर्हितस्वपक्षसापराधत्वसाधितपितृ पितृव्यौ ध्र्वंदैहिकमनोनिगूढमन्त-व्यबहिर्दर्शितयवनानुकूल्यकृतकप्रेममातृभावमतसद्यागतयवनयोषित्क-नारायणदास पितृपट्टप्रापण स्वस्त्रीकृतश्लाघास्निग्धसमरकन्द समाहूत-

बुन्द्या गतसूचितस्वाऽसहनस्वामित्वप्रह्वताप्रगुणसंसत्सम्मिलितोपविष्ट-नारायण सपत्नीकसपत्लप्रसादग्रामद्वादशक पुनःप्रापण स्वसद्मायात-निजमातुलपुत्राऽग्रम्लेच्छमारणमनोमतप्रकाशन प्रतीपचालुक्यव्याघ्रदेव कार्याऽवधितन्त्रमूकीभावोपदेशन मासदशका नन्तरसहायसार्थीकृतसमा-हूतव्याघ्रदेवा दिविश्वस्तबन्धुसप्तक गोपुरसमीपगूढस्थापितस्वभटचतुः-शतक बुन्दया ऽऽगतनरेन्द्रनारायणदास स्वल्पसार्थसंसत्स्वास्थ्यसमुपविष्ट पक्षिप्रधनप्रेक्षमाणयवनसमरकन्द संहरण दाऊद गवे षमाणराजसौधश्रेढी समारुढगतपृष्ठगतमिमारयिषुबान्थवाधमसङ्ग्रामकन्थरनृपखड्गदक्षिणकुड्य-प्रस्तरप्रभेदन परिपन्थिपत्नीपृच्छाप्रतीतमृगव्यगतदाउद दयोज्झितशत्रुशिशु-वर्गसमारूढनव्य निर्मीयमाणहर्म्यमूर्द्धभूमसमाकृष्टनिः श्रेणीकबुन्दीश-समाहूतस्वसुभटसङ्घसन्त्रस्तपरपक्षिजननिष्कासन।

श्री वंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण की पंचम राशि में अग्निवंशी चहुवान वंशवर्णन के कारण हड्डाधिराज अस्थिपाल के वंश और वंश की शाखाओं की कथा बताने के समय के वचनों में बूँदी नरेन्द्र हड्डाधिराज नारायणदास के चरित्र में मार्ग में काका और पिता दोनों का मारा जाना सुनकर शीघ्र दुबलाना पुर में आकर उनकी स्वयं निन्दा करके अपने पक्ष को अपराध वाला विख्यात करके पिता और काका की और्ध्वदैहिक् क्रिया करके अपराध को अपने मन में छिपाकर बाहर यवन से अनुकूलपन दिखाकर घर पर आई हुई यवन स्त्री कें साथ बनावटी प्रेम से माता भाव दिखाकर नारायणदास का पिता के पाट को प्राप्त करना, अपनी स्त्री द्वारा की हुई प्रशंसा से स्निग्ध समरकन्द के बुलाने पर बूँदी में आकर बताई हुई अपनी असह स्वामिभक्ति और नम्रता के विशेष गुण से सभा में शामिल बैठकर नारायणदास का स्त्री सहित शत्रु की प्रसन्नता से बारह ग्रामों का और प्राप्त करना, अपने घर पर आये हुए अपने मामा के पुत्र के आगे म्लेच्छ को मारने का विचार प्रकट करने के विरुद्ध सोलंकी व्याघ्रदेव का कार्य करने की अवधि पर्यन्त सलाह को गुप्त रखने का उपदेश देना, दस मास के बाद सहाय के लिए बुलाये हुए व्याघ्रदेव आदि विश्वासवाले सात बान्धवों को साथ लेकर शहर के दरवाजे पर अपने चार सौ वीरों को गुप्त रखकर बूँदी में आये हुए राजा नारायणदास का अपने अल्प साथ के साथ सभा में स्वस्थता पूर्वक बैठकर पक्षियों को देखने वाले यवन समरकन्द को मारना, दाऊद को ढूंढने के लिए राजमहल

की सीढी पर चढ़ते हुए पीठ लगे हुए को मारने की इच्छा वाले अधम बान्धव संग्रामसिंह के गले को और दक्षिण दीवार के पत्थर को राजा के खड्ग का काटना, शत्रु की स्त्री से पूछने पर दाऊद के शिकार जाने की प्रीति होने पर दया से शत्रु के बालकों को छोड़कर नवीन बनते हुए महल पर चढ़कर निसरनी को ऊपर की छत पर खींचकर बूँदीश का अपने सुभटों के समूह को बुलाकर डरे हुए शत्रु के पक्ष के लोगों को निकालना।

पुरप्रविष्टगोपुरबहिर्वर्ति शूरशतचतुष्क नृपाज्ञाप्रवर्तनपुरस्सर-म्लेच्छमतमात्रनिःसारणसमयशबरपूर्वयवनबन्धुद्वय मुमूर्षण मण्डूपतियवनीकृतद त्तसादरसामन्तभावविरोधविक्षोभितविन्ध्यावलीप्रमार-महाधनुर्द्धरव हुधाविप्लुतपरप्रान्तसमरकन्द सहायबूँदीवास्तव्यमृधमुमूर्षुहस न चन्द यवनयुग स्वैकाऽऽशुगशरव्यता-शौभाण्डि स्वीकारण ज्ञातनृपकक्षासन्धिनिःसृतच्युतस्वसहायक द्वितीय प्रदरविद्धसव्यसानुमच्छि-खरचरन्मञ्जागणमध्य स्थबर्क्करगोधितिलकचन्दस्वधानुष्कताविख्यापन नरेन्द्रत्रोटि तशस्त्रकाषायवस्त्रस्वशरणागतयवनयुग तन्नामनिर्मितसूचित स्थानस्थापन श्रुतजनकमारणोत्पथागतनिपातितभटचतुष्क महामनोदावूद राज्यस्थानतोरणतनुत्यजन यवनयुग निखातपातनसूचनासहितयवनीनि-वासितवापीविशिष्टग्रामविशे षविख्यापन राजसौधविहितसमाज-समभिषिक्तसमाहूतस्व जननारायणदास यथापूर्वबुंदीराज्यसमाचरण प्रतिवर्षसमासितद्वंश्यतत्सौऽधाभिषेचनसूचना सहित नृपखड्गप्रभिन्नप्रस्तर पूजनरुढिप्रज्ञापन पुरःसरनृपा दिभ्रातृ भगिनी चतुष्क बर्षान्तरविवेचन शीर्षोद्दसंग्राम कबन्धगङ्ग कूर्मभगवत्सिंह नृपत्रय स्वस्वपितृपट्टप्रापणं त्रयोविंशो मयूखः ॥२३॥ आदितः सप्तत्युत्तरैकश-ततमः ॥१७०॥

नगर में प्रवेश करके शहर के दरवाजे से बाहर वाले चार सौ वीरों का राजा की आज्ञा प्रवृत्त करने से पहले म्लेच्छ मत के सम्पूर्ण लोगों को निकालने के समय पहले के भील यवन के दो बंधुओं का मरने की इच्छा करना, मंडूपति के यवन किये हुए और आदर सहित उमरावपन दिये हुए विरोध से बीजोलियाँ के प्रमार को क्षोभ देने वाले महाधनुर्द्धर बहुत करके शत्रुओं के देश को लूटने वाले समरकन्द की सहायता पर बूँदी में रहने वाले और युद्ध में मरने की इच्छा वाले हसन और चांदखां नामक दो यवनों का अपने एक बाण से निशाना मारने का सुभांडदेव के पुत्र नारायणदास का

स्वीकार करना, राजा की कांख की संधि में से बाण का निकल जाना जानकर अपने सहायक दूसरे बाण से बाएँ हाथ के पर्वत के शिखर पर बकरियों के मध्य में चरते हुए बकरे के ललाट के तिलक में चांदखां का अपनी धनुर्विद्या को प्रसिद्ध करना, शस्त्रों को तोड़कर भगवां वस्त्र पहनकर अपने शरण आये हुए दोनों यवनों को राजा का उनके नाम से सूचना किया हुआ स्थान बनाकर उस स्थान में स्थापन करना, पिता का मारना सुन उल्टे मार्ग (उपरवाड़े) से आ चार वीरों को मारकर बड़े मन वाले दाऊद का महलों के बाहिर के द्वार पर शरीर छोड़ना, दोनों यवनों को कब्र में गाड़ने की सूचना सहित यवन की स्त्री के बसाये हुए बावड़ी सहित ग्राम विशेष के बसाने की प्रसिद्धि करना, राजमहल में की हुई सभा के लोगों से अभिषेक किये हुए नारायाणदास का अपने लोगों को बुलाकर पहले के समान बूँदी का राज्य करना, प्रतिवर्ष की समाप्ति (वर्षगांठ) पर उसके वंशवालों का उस महल में अभिषेक होने की सूचना सहित राजा के खड्ग से कटे हुए पत्थर के पूजन की रूढि की सूचना के आगे राजा आदि तीन भाई और एक बहन चारों के वर्षों के अन्तर का विवेचन करना, सीसोदिया संग्रामसिंह, राठौड़ गांगा, कछवाहा भगवन्तसिंह इन तीनों राजाओं का अपने अपने पिता के पाट पाने का तेबीसवाँ मयूख समाप्त हुआ। और आदि से एक सौ सत्तर मयूख हुए।

प्रायो ब्रजदेशीय प्राकृत मिश्रित भाषा

दोहा

नृप बरसिंह अनेह लों, अक्खे दिल्लिय ईस।
भये बहुरि अब भाखियत, साह अज्जभुव सीस॥१॥

हे राजा रामसिंह! अब तक मैंने (ग्रंथकर्ता सूर्यमल मीसण) राजा बरसिंह के समय तक हुए दिल्ली के बादशाहों का विवरण आपसे कह दिया पर उसके बाद भी जो आर्यावर्त पर बादशाह हुए उनका विवरण अब बतलाता हूँ।

षट्पात्

मुगल अग्ग तैमूर प्रतपि दिल्लिय दिन पन्द्रह।
श्रुति सर चउ ससि साक सदन पुनि गो सु बिजयसह।

प्रतिमा जिम आइ पुर साह महमूद रह्यो सिटि।
बिभव खानइकबाल गंजि जिम कवल लयो गिटि।
तनु तजिय साह महमूद तब बिनु रोधक सठ अभय बहि।
इकबालखान स्वच्छंद इम लग्गो रहन अभीष्ट लहि ॥२॥

मुगलों से पूर्व में तैमूर जो दिल्ली की पन्द्रह दिन की बादशाहत कर विक्रमी संवत् के वर्ष पन्द्रह सौ चौवन में विजय पा कर अपने वतन चला गया था। उसकी जगह वापस कठपूतली बादशाह के रूप में लज्जित महमूद आ कर स्थापित हो गया यद्यपि दिल्ली का सारा वैभव तो इकबालखान एक ही ग्रास में ग्रसे बैठा था। इस महमूद ने जब अपना शरीर छोड़ा तब तक वह मूर्ख साठ वर्ष की वय को प्राप्त हो चुका था। उसके बाद तो अपनी इच्छा चलाने वाला इकबालखान स्वछंद रूप से दिल्ली का सर्वेसर्वा हो गया।

दोहा

किते सिकंदर नाम करि, कहत सार याकोंहु।
बदत किते गद्दी बिनां, अधिप होत कहुं योंहु ॥३॥
हाकिम जिम अप्पन हुकम, इम दिल्लिय सुनि याहि।
खिजरखान तस सीस खिजि, आयो हनन उमाहि ॥४॥

कई लोग इसी इकबाल खान को सिकंदर नाम से बादशाह हुआ मानते हैं और कई विद्वानों का मत है कि वह बिना ही पद के आर्यावर्त का बादशाह बन कर रहा। वह हाकिम जो हुक्म करता दिल्ली उसी को सुनती थी। दिल्ली का यह हाल सुन कर खिज्रखान खीज कर उसे मारने की सोच कर चढ़ आया।

षट्पात्

सूबापति सय्यद जु हुतो मुलतान रट्ट हद।
सुलैमानसुत सज्जि सजव आयो सु दुरासद।
बदत हनन इकबाल कतिक कीलन भञ्जन कति।
पै दिल्लिय जय पाइ प्रबल हुव खिजर पट्ट पति।
बीरत्व दया सहनादि बहु पावत गुन जाके प्रचुर।
वह खिजरखान हुव साह इम धरि दिल्लिय भुवभार धुर ॥५॥

मुलतान देश की सीमा पर जो सय्यद सूबापति के रूप में तैनात था वह सुलेमान का पुत्र अपनी सेना सज्जित कर शीघ्र ही दिल्ली पर बढ़ा। कई कहते हैं कि उसने इकबालखान को मार डाला पर कई ऐसा भी कहते हैं कि उसे बंदी बनाया। कुछ उसका भागना भी कहते हैं। कुछ भी हो दिल्ली पर विजय प्राप्त कर वह खिज्रखान दिल्ली के तख्त पर बैठा। सहनशीलता, दया और वीरता की प्रतिमूर्ति होने के साथ ही उसमें दूसरे भी कई गुण थे ऐसा खिज्रखान आर्यावर्त का बादशाह बना और उसने दिल्ली का भार अपने कंधों पर धारण किया।

गिर्वाणभाषा

पथ्यावक्त्रमनुष्टुप्

तवारीखफिरस्ता दिम्लेच्छितेभ्यो विनिश्चितम्।
तथाऽकबरनामा दियवनानीभ्य उद्धृतम्॥६॥

दिल्लीशानां प्रतिग्रन्थमायाति महदन्तरम्।
अद्भुतं यन्मतैक्येऽपि गीरैक्ये ऽप्युरुधा लिपिः॥७॥

प्रभूतमतमासाध्य दिल्लीराड्यवनावली।
उद्देशेनोदिताप्याहो द्वापरालम्बनं क्वचित्॥८॥

इंग्रेजैर्निश्चितापीयं संशेते ह्यन्तरान्तरा।
सर्वेषा स्वस्ववृत्तान्ते वास्वती स्याद्विवेचना॥९॥

मैंने 'तवारीख फरिस्ता' आदि म्लेच्छों के ग्रंथों से निश्चय किया है वैसे ही अकबरनामा आदि जो यवनों की भाषा में ग्रंथ है उनसे भी लिया है। दिल्ली के बादशाहों के हर एक ग्रन्थ में बड़ा अन्तर (फर्क) आता है। यह आश्चर्य है कि एक मत और एक भाषा होने पर भी लेख नाना प्रकार के हैं। बहुतों की सम्मति लेकर मैंने निर्णय के साथ दिल्ली के यवन बादशाहों की पीढ़ियों का निर्णय किया है, तो भी आश्चर्य है कि कहीं-कहीं संदेह ही है। अंग्रेजों ने यवन वंशावली का निश्चय किया है तो भी बीच-बीच में संदेह ही है। अपने-अपने वृत्तान्तों में सब की खोज सत्य होती है।

इंग्रेजैर्वृत्तमार्याणामार्यावर्त निवासिनाम्।
सराजावलि निर्णीतं याथात्थ्यच्युतं बहु॥१०॥

तथैव यवनोद्देशे सन्देग्धि स्वीकृतौ मनः।
आर्यवृत्तादृतत्वं स्यात्तत्र सामीप्यतोऽधिकम्॥११॥
तथापीङ्गेजलोकैर्या निर्णीता यवनाऽऽवली।
तेषां धीमत्त्वमान्यत्वाद्ग्राह्याबहुमता हि सा॥१२॥
यावनीगी लिंविग्रन्थेषूक्तेषु यवनैरपि।
दिल्लीभुङ्म्लेच्छवृत्ता ऽऽख्या सङ्ख्या सुन सदृक्क्रमः॥१३॥

जैसे अंग्रेजों ने आयावर्त (भारतवर्ष) के रहने वाले आर्य लोगों का वृत्तान्त राजाओं की पीढ़ियों के साथ निर्णय करके लिखा है परन्तु उसमें भी बहुत से वृत्तान्त यथार्थ नहीं है। वैसे ही यवनों का क्रम मानने में भी मन को संदेह होता है। वहाँ पर आर्यों के वृतान्तों से अधिक सत्यता होती है क्योंकि आर्यो का वृत्तान्त यवनों के वृत्तान्त से अधिक समीप है तो भी अंग्रेजों ने जिस यवन वंशावली का निर्णय किया है अंग्रेजों की बुद्धिमानी के कारण वह बहुमान्य है इसलिए, उसी को मानना चाहिए। यवनों की भाषा में और यवनों की लिपि में यवनों के बनाये हुए ग्रन्थ हैं तो भी उनमें दिल्ली को भोगने वाले म्लेच्छों के वृत्तान्त, नाम और संख्या में एक सा क्रम नहीं है।

केचिन्निगडित केचिद्धतं केचित्पलायितम्।
दिल्लीशं मन्वते केचितत्रयोविंशं सिकन्दरम्॥१४॥
नैवात्र ब्रुवतेऽन्ये तु समूलं हि सिकन्दरम्।
नापीङ्ग्रेजैर्मतोऽत्रासौ महमूदा त्सिकन्दरः॥१५॥
वृत्तान्त नाम सङ्ख्यादि यद्यथाभूत्तथास्तु तत्।
ख्यापितं महतबाहुल्यं पक्षोऽस्माकं न कुत्रचित्॥१६॥
बहुभिः खिजरः प्रोक्तो महमूदादनन्तरम्।
तत्त्रयोविंशता नीता खिजरं न सिकन्दरम्॥१७॥

सिकन्दर को कितने ही तो कैद हुआ मानते हैं कितने ही मरा मानते हैं कितने ही भगा हुआ मानते हैं और कितने ही दिल्ली का तेइसवाँ बादशाह मानते हैं। कुछ अन्य लोग तो सिकन्दर का होना समूल ही नहीं कहते अंग्रेजों ने भी महमूद के पीछे सिकन्दर को नहीं माना है। इनके वृत्तान्त, नाम और गिनती आदि जो जैसा हुआ है वह वैसा रहे हमने केवल मतभेद कह दिया है।

हमारा पक्ष किसी में नहीं है। बहुत लोगों ने महमूद के बाद खिज्रखान को कहा है, जिस कारण से तेइसवीं संख्या खिज्रखान की है सिकन्दर की नहीं।

प्रायो ब्रजदेशीय प्राकृत मिश्रित भाषा

वैत नाम यावनी वृत्तम्

भयेनां सिकंदर किते यों भनैं, हन्यों के भग्यो के गह्यो के मनैं।
भनी जो रहो बात क्यों हू भई, खिजरखान पैं पातसाही लई ॥१८॥

यहै नीति ईमान नेकी भर्यो, बिनां कंत दिल्ली सुनेता बर्यो।
यहै दूरदर्सी सबर आनिकै, रह्यो साहरुख कों जबर जानिकैं ॥१९॥

तनैं साहरुख नाम तैमूर को, दमैं मत्त जाकों गिनैं दूर को।
करैं पातसाही अटक पार जो, हरैं सत्रुहू जंग हुसियार जो ॥२०॥

खिजर संक ताकी गिनी खाम सों, न सिक्का चलायो स्वयं नाम सों।
सदा साहरुख दास हम यों कहैं, मिलैं नोकरी सोहि करते रहैं ॥२१॥

कुछ लोगों का मत है कि सिकंदर नामक दिल्ली का कोई बादशाह हुआ ही नहीं। कोई कहता है हुआ लेकिन मारा गया। कई मानते हैं कि वह पकड़ा गया और कई उसे भाग जाने वाला भगौड़ा कहते हैं। अब इतने सारे मतों में से किसे माना जाए इनमें से जो भी बात रही हो पर यह तय है कि खिज्रखान ने बादशाही प्राप्त की। यह एक ऐसा बादशाह था जो नीति, ईमान और नेकी से भरा था। इसे दिल्लीपति नहीं कह कर श्रेष्ठ हुकूमत करने वाला एक अच्छा शासक दिल्ली को मिला यह कहना अधिक उपयुक्त रहेगा। यह दूरदर्शी राजा सब्र धारण कर रहा जब इसे पता चला कि शाहरुख अधिक ताकतवर है। वह जानता था कि शाहरुख नाम तैमूर का है जो मद से मत्त राजाओं को दंड देता है यद्यपि वह दिल्ली से काफी दूर रहता है। वह कटक नदी के पार उधर के क्षेत्र का बादशाह है पर अपने शत्रु को सावधानीपूर्वक युद्ध में हराने वाला है। खिज्रखान ने उसके डर से डरते हुए अपनी निर्बलता के चलते अपने नाम से कोई सिक्का भी नहीं चलाया। वह अपने आप को सदा शाहरुख तैमूर का दास ही कहता था और कहता था कि वह जो भी आज्ञा दे मैं उसे पूरा करने की नौकरी करता हूँ।

दोहा

नियत साहरुख नाम को, रुप्पय सिक्का रक्खि।
उर स्वतन्त्र बाहिर अनुग, अप्पहिं तस बस अक्खि ॥२२॥

बनत साह दिल्लिय बिभव, पुरजन सुभट प्रधान।
आनैं नन मन ईरखा, जिम किय खिजर सुजान ॥२३॥

खिज्रखान ने अपने राज में शाहरुख के नाम का सिक्का ही चलन में रखा। वह मन में स्वयं को स्वतंत्र बादशाह मानता पर बाहर वह अपने आपको शाहरुख का सेवक ही कहता था। उसके वैभव पूर्ण दिल्ली का बादशाह बनने पर दिल्ली के पुरजनों, सामन्तों और सचिवों के मन में किसी प्रकार की ईर्ष्या नहीं उपजी। वह सुजान बादशाह जो करता उसे सभी स्वीकार करते।

युग्मम्

उपदा पुनि पुनि भेजि इहिं, पाइ साहरुख प्रीति।
मोहित करि निज जनन मन, रचिय राज्य नय रीति ॥२४॥

कर न प्रजासन लिय कठिन, उत सब करि आबाद।
रीति बिमुख सासक रह्यो, मेटत नरन प्रमाद ॥२५॥

बैरिसल्ल बुंदीस के, समय हुतो यहसाह।
ताही छत गय छोरि तनु, लहि उदर्क अय लाह ॥२६॥

सक हय मुनि चउ ससि समय, खिजरखान बपु खोइ।
पावत गति अर्जित प्रजा, रहिय हारि सब रोइ ॥२७॥

वह खिज्रखान बार-बार नजराने में उपहार भिजवा कर शाहरुख का प्रीति भाजन बना रहा और इधर अपने सुशासन से वह अपनी प्रजा का प्रीतिपात्र बना रहा। उसने राज करने की ऐसी सुन्दर नीति अपनाई। उसने अपनी प्रजा से किसी प्रकार का कोई कठोर कर नहीं वसूला और सभी को सुरक्षित रूप से आबाद किया। वह ऐसा सुयोग्य शासक था जो परम्परा से बादशाहत करने वालों से एकदम उलट था और अपनी प्रजा का प्रमाद मिटाने वाला था। यह बादशाह बूँदी के राजा बैरीसाल का समकालीन था और इस राजा के रहते ही अपनी देह त्याग कर नेक होने से स्वर्ग भोगने का

लाभ लेने गया। विक्रम संवत् के वर्ष चौदह सौ सत्ततर में खिज्रखान ने अपनी काया छोड़ी। जैसा संचय कर्म किया था उसी के अनुसार वैसी ही गति पा कर वह तो स्वर्गलोक को गया और उसके वियोग में प्रजा रोते-रोते हार गई।

षट्पात्

साह मुबारिक खिजर सूनु हुव स्वभुव दुक्ख हरि।
जग जिहिं मोजुद्दीन कहत दूजी अभिधा करि।
सुघर यहहु सुलतान भयउ रन परन भयंकर।
जनक सोंहु बढि जास बिदित फैलिय जस बिस्तर।
ससि अंक बेद भू मान सक स्व सचिव निमकहराम सठ।
मार्‍यो जु साह चाहत मुलक होतहि पापिन पाप हठ॥२८॥

खिज्रखान जैसे बादशाह के मरने के बाद उसका पुत्र मुबारकशाह उसकी जगह अपनी भूमि पर बसने वालों के दुख का हरने वाला हुआ। उसे दुनिया एक मौजुद्दीन के दूसरे नाम से भी जानती है। यह सुघड़ दिल्ली का सुल्तान बड़े-बड़े युद्ध करने वाला और शत्रुओं को दंडित करने वाला होने से इसकी कीर्ति इसके पिता की अपेक्षा अधिक फैली पर दुर्भाग्य से विक्रम संवत् के वर्ष चौदह सौ इकानबे में अपने नमकहराम मंत्री के हाथों मारा गया। उस दुष्ट सचिव ने एक ऐसे बादशाह को मारा जिसे पूरा मुल्क चाहता था। उस पापी ने यह पाप हठपूर्वक किया।

दोहा

पहिले बरस सुभांड पहु, छितिय भयो धरि छत्र।
बरस द्वितीय मुबारिक सु, पत्तो अनसु परत्र॥२९॥

दया छमा रु बदान्यता, रनपाटव बीरत्व।
नयपटुता इतिमुख गुनन, तक्यो मुबारिक तत्व॥३०॥

बल सूबापति जे बिमुख, तिनहु लह्यो तस त्रास।
बहु बिमुखहु नृपपहु स्वबस, किन्ने स्वजय प्रकास॥३१॥

पगधरि अग्ग पिताहुसों सबन दयो सुख साह।
रोइ प्रजा ताके मरत, इम किय सोक अथाह॥३२॥

जिस वर्ष में हाड़ा सुभांडदेव छत्र धारण कर राजा बना उसके अगले ही वर्ष में मुबारकशाह निष्प्राण हो कर परलोक को गया। दया, क्षमा, वदान्यता, रणपटुता और वीरत्व के साथ नीति परायणता जैसे गुणों को ही मानों मुबारकशाह महत्वपूर्ण मानता हो और ये सारे तत्व उसमें समाहित हो गए हों। जितने सूबापति अपने बल के सहारे केन्द्रीय सत्ता से विमुख हो गए थे उन्होंने इस वीर से भय खाया। उसने सारे असहयोग करने वाले राजाओं को अपने वश में कर उन पर विजय पाई। अपने पिता की अपेक्षा दो कदम आगे बढ़ कर ही इसने अपनी प्रजा को सुख शांति की सौगात सौंपी। यही कारण है कि इस बादशाह के मरने पर इसकी सारी प्रजा शोक विह्वल हो कर जार-जार रोई।

षट्पात्

साह मुबारिक सूनु मीर हुव खानमुहुम्मद।
सो इहिं हनिय समर्थ बप्पमारक मंत्री बद।
इक लोदी अफगान इमहि बहलोल नाम इत।
हुवसु साह लाहोर देस पंजाब बलोदित।
सरहिंदमुलक याको वतन सो पठान यह इहिं समय।
बल पाइ साह लग्गो बजन अटक सत्तद्रू बिच अभय॥३३॥

दिल्ली के चौबीसवें बादशाह मुबारकशाह के मरने पर उसका पुत्र खान मुहम्मद बादशाह बना। उस समर्थ ने सर्वप्रथम अपने पितृहंता बदकार मंत्री को मारा। एक अफगान लोदी इसके समय में बहलोल नामक था जो अपनी सेना के बल पर स्वघोषित लाहौर और पंजाब देश का शाह बन बैठा। सरहिन्द नामक जिसका मुल्क था वहाँ का यह पठान इस समय ताकतवर बन कर अटक नदी से सतद्रू नदी के बीच वाले क्षेत्र का बादशाह कहलाने लगा था।

दोहा

तजिय मुहम्मदसाह तनु, मही ख तिथि सक मान।
तनय अलावुद्दीन तस, स्वपुर भयो सुलतान॥३४॥

रचिय अलावुद्दीन इहिं, नगर बदाऊं नाम।
बरस पंच दिल्ली सु बसि, धर्षित गय तिहिं धाम॥३५॥

विक्रम संवत् के वर्ष पंद्रह सौ एक में जब बादशाह खान मुहम्मद ने शरीर त्यागा तब इसका पुत्र अलाउद्दीन दिल्ली का सुलतान बना। इस बादशाह अलाउद्दीन ने एक नया नगर बदायूं नाम से बसाया। यह बादशाह पाँच वर्ष तक दिल्ली में रहा पर बाद में किसी के धमकाने से वह बदायूँ चला गया।

षट्पात्

सक रस नभ तिथि समय बीर लोदी बहलोल सु।
हंकिय तजि लाहोर बंटि बीरन अभीष्ट बसु।
अतिजव दिल्लिय आइ गंजि सय्यद लिय गद्दिय।
दुमन अलाबुद्दीन कड्ढि खिल सब अधीन किय।
निज रचित बदाऊं नवनगर रह्यो सु सय्यद आमरन।
बहलोल साह दिल्लीस बनि कज्ज दुकर लग्गो करन॥३६॥

विक्रम संवत् के वर्ष पन्द्रह सौ छह में वीर बहलोल खां लोदी लाहौर से अपनी सेना ले कर चला उससे पहले उसने अपने सारे सामन्तों को वांछित धन और जागीरें प्रदान की। इस तरह उन सभी को अपना वफादार बना कर वह शीघ्र ही दिल्ली आया और यहाँ आ कर उसने सय्यद को हरा कर दिल्ली का तख्त हथियाया। उदास बादशाह अलाउद्दीन को दिल्ली से खदेड़ कर शेष सारों को अपने अधीन कर लिया। वह सैय्यद अलाउद्दीन अपने नये बनाये शहर बदायूँ में ही मृत्यु पर्यंत रहा। इसकी जगह दिल्ली का बादशाह बन कर बहलोल खां दुष्कर कार्यों को अंजाम देने लगा।

जोनपुर हु जिहिं जित्ति कियउ निज तंत्र फतै करि।
सरित अटक सन सीम बंग जनपद लग बिस्तरि।
अज्ज जवन नृप ओर निखिल पय लाइ नमाये।
मालव गुज्जर मीर द्वै हि प्रतिभट दरसाये।
जे बढिग अग्गहीसों जबर पातसाह बज्जत प्रबल।
उनतैं उदीचि दिस जो अवनि तिहिं लोदी लिय अप्प तल॥३७॥

जोनपुर को विजित कर उसने अपना निर्बाध तंत्र स्थापित किया। इसने अटक नदी से लगा कर बंगाल देश की सीमा तक अपना साम्राज्य फैलाया। आर्य राजाओं सहित सारे यवन राजाओं को भी इसने अपने सामने

समर्पण करने को मजबूर किया अर्थात् इसने सभी को अपने कदमों में झुकाया। मालवा और गुजरात इन दो सूबों के शाहों ने प्रतिरोध दर्शाते हुए इसका मुकाबला करने की इच्छा की। ये दोनों अपनी सीमा को लाँघते हुए स्वघोषित बादशाह बन बैठे थे। इन दोनों से उत्तर दिशा की भूमि को छीन कर इस बहलोलखां लोदी नामक बादशाह ने अपने अधिकार में की।

दोहा

तनु सुभांड नृप जब तजिय, वाहि बरस अफगान।
तजिय साह बहलोल तनु, नियति उदर्क निदान॥३८॥

बेद बेद तिथि सक बरस, दिल्लिय इम उद्दाम।
साहभयो बहलोल सुत, निपुन सिकंदर नाम॥३९॥

अभिधाकरि महमूद इत, जो अहमद कुल जात।
पुर अहमद आबाद पहु, गज्जैं धर गुजरात॥४०॥

बाजबहादुर सुत बिदित, दृढ इत मंडुव द्रंग।
नाम मुदाफर जो निडर, प्रतपैं स्वबल प्रसंग॥४१॥

जिस वर्ष बूँदी के राजा सुभांडदेव ने अपना शरीर छोड़ा उसी वर्ष अफगान बहलोल खान की भी मृत्यु नियति के लेखानुसार हो गई। विक्रम संवत् के वर्ष पंद्रह सौ चवालीस में बहलोल खान का पुत्र अपने पिता का उत्तराधिकारी हो कर सिंकदर खान के नाम से दिल्ली का निरंकुश बादशाह बना। इसी समय में अहमद कुल में उत्पन्न जिसका नाम महमूद था और जिसने अपने नाम से अहमदाबाद आबाद किया वह गुजरात की धरती पर गर्जना करने वाला था अर्थात् राजा था। इधर मांडू में बाजबहादुर का पुत्र मुदाफर वहाँ का शासक बना जो अपने बल पर ही आश्रित रहने वाला निडर योद्धा था।

पादाकुलकम्

धीरसाह बहलोल पट्टधर, सासन दिल्लिय करत सिकंदर।
याहि अनेह नृपति नारायन, हन्यों समग्गकंद सुजिहिं हायन॥४२॥

मन किय तबहि बिचार नीतिमत, करहिं पुकार सत्रुजन कुक्कत।
पृतना जो पिल्लहिं मंडूपति, समर दु घां न बनैं तब संगति॥४३॥

यातैं जाइ करहिं आराधन, मुरहिं कदापि मुदाफर को मन।
मुरहिं जो न तो तंहं तिहिं मारों, निखिल सल्य मैं मरिहु निकारों॥४४॥

धैर्यवान बादशाह सिंकदरखान दिल्ली का शासक बना जो अपने सुयोग्य पिता बहलोल खान का उत्तराधिकारी था। इसी के समय में और इसी वर्ष में समरकंद को बूँदी के राजा नारायणदास ने मारा। राजा ने मन ही मन विचार किया कि शत्रु भी चुप नहीं बैठा रहेगा। यह जाकर जरूर मांडू के बादशाह से कहेगा। इस पर यदि मांडूपति ने अपनी सेना भेज दी तो ऐसे में दोनों पक्षों में बराबरी का युद्ध नहीं हो सकेगा। इसलिए सारी स्थितियों को अच्छी तरह विचार कर यह तय किया कि मांडू जा कर समझाया जाए हो सकता है हमारी अनुनय से बादशाह मुदाफर का मन बदल जाए। लाख समझाने पर भी यदि वह नहीं माना तो मैं उसे वहीं मार डालूँगा और सभी को खटकने वाले इस कांटे को निकाल दूँगा चाहे इसमें मुझे अपनी जान ही क्यों न गँवानी पड़े।

द्वै ही ओर मरन जब दीसैं, जो को रिपुहिं तजैं तब जीसैं।
करत सहाय न साह सिकंदर, दोउन इन्हैं प्रत्युत मन्नैं दर॥४५॥

इमबिचारि परिकर अनुजातन, गदिय अभीष्ट कबहु थिर गातन।
सब तुम बुध अवसर पर हित सह, मदनकुमारि बिबाहहु अति मह॥४६॥

आयु सेस जो तो ध्रुव ऐहों, जोधन पै न संग लै जैहों।
इक्कल जावन भटन अटक्किय, सादी सत तब हठन सत्थलिय॥४७॥

दोनों ही बातों में राजा को मरण ही नजर आया ऐसे में भला शत्रु को छोड़ने में क्या फायदा है। ऐसे में दिल्ली का बादशाह भी रक्षा नहीं करेगा वह तो दोनों पक्षों से उल्टा भयभीत रहता है। ऐसा विचार कर राजा नारायणदास ने अपने परिकरों और छोटे भाइयों को बुला कर उनसे अपने मन की बात कहते हुए कहा कि मेरे शरीर का कोई भरोसा नहीं। वैसे भी किसका शरीर यहाँ स्थिर रहा है? इसलिए तुम सभी पंडित हो, समझदार हो। ऐसे में अपना हित विचारते हुए सबसे पहले मेरी इच्छा है कि तुम लोग बहन मदन कुमारी का विवाह उत्सवर्पूक कर देना। यदि मेरी आयु शेष है तो वापस लौट कर अवश्य आऊँगा। मैं अपने साथ वीरों को नहीं ले जाऊँगा। इस पर सारे सामन्तों ने राजा से कहा कि इस तरह आपका अकेले जाना अच्छा नहीं और उन्होंने हठपूर्वक सौ सवार योद्धा राजा के साथ किये।

मंडूपुर इम पत्त महीपति, पठई नम्र साह प्रति बिन्नति।
जवनराज संबाहक इक जन, धीसख किय ताकों कछु दै धन॥४८॥
ताके कर पहुँची सु अरज तंहं, कहिय मुदाफर बंचि अनुग कंहं।
बदहु तास आसय बल बिक्रम, समुचित अनुग कहे तब मन सम॥४९॥
जबहो करत मुदाफर भोजन, बुल्लयो तबहि असस्त्र धराधन।
पिहित इक्क छुरिका धरि भूपति, मंडूपति ढिग पत्त महामति॥५०॥

इस तरह बूँदी का राजा नारायणदास मांडू पहुँचा और वहाँ पहुँचते ही उसने बादशाह के प्रति अपना प्रार्थना पत्र भिजवाया। यवनराज ने एक अंगमर्दन करने वाले को धन दे कर अपना मंत्री बना रखा था उसके हाथों जब राजा की अर्जी शाह मुदाफर के पास पहुँची तो उसने कहा कि पढ़ कर सुनाओ पर इससे पहले मुझे यह बताओ कि उसकी उम्र क्या है? बल और पराक्रम कैसा है? इन बातों को मंत्री ने अपनी समझ से उत्तर दे कर अपने स्वामी को संतुष्ट किया। इसके बाद जब बादशाह भोजन कर रहा था तब उसने हाड़ा राजा को निशस्त्र कर बुलवाया। अपने कपड़ों में एक छोटी छुरी छिपा कर नारायणदास मांडूपति के पास गया।

दै उपहार पुरट मुद्रा दस, तिम सद्धिय करतव्य उचित तस।
भनिक साह क्यों हमहिं भुल्लि मनि, हमरो समरकंद डारयो हनि॥५१॥
बदिय नृपहु पहु हमहु बिपन्नहु, मन बच काय रावरे मन्नहु।
परैं काम तंहं मरन पठावहु, लहि जय दुलभ महर इत लावहु॥५२॥
समरकंद मम जनक हन्यों सठ, हन्यों कुहक काका हु छद्म हठ।
बाहुज कुल यह रीति रही बनि, हनैं जनक तिहिं लघुहु रहैं हनि॥५३॥
कुल कुपुत्र न हनैं सु कहावत, गत पुरुखन अघ गारि गहावत।
जाति अंगुलिन ताहि जतावैं, पुनि समकुल न सुता परिनावैं॥५४॥
ताहि न देत अंग संगहु तिय, जंपि बंझ जननीहु जरैं जिय।
यातैं समरकंद मारयो अरि, पुत्र तदीय मरयो चहि हठ परि॥५५॥
इच्छित ह्वै सु करहु हजरत अब, सासनबस हाजरि हड्डे सब।
बदिय साह मम जनक हनें बिनु, बदि तू सुत किम तस परनें बिनु॥५६॥

हाड़ा राजा ने नजराने में दस स्वर्ण मोहरें मांडूपति को पेश कीं, उन्हें

नियमानुसार स्वीकार कर वह पूछने लगा कि हे राजा! तुमने हमें भूल कर अर्थात् अनदेखी कर हमारे समरकंद को मार गिराया। यह क्यों किया? इस पर पूरी विनम्रता के साथ राजा ने निवेदन किया कि हम विपदाग्रस्त मन, वचन और काया से आपके निर्देशों को मानने वाले सेवक हैं। यदि कहीं कभी युद्ध में काम पड़ जाए तो आप हमें मरने भेजना। आपकी कृपा से दुर्लभ विजय ले कर ही लौटेंगे। उस मूर्ख समरकंद ने मेरे पिता को मार डाला यही नहीं उस जालसाज ने कपट कर मेरे काका को भी साथ ही काट डाला। हे शाह! हम क्षत्रियों के कुल की यह रीति है कि यदि कोई आपके पिता को मारे तो तुरन्त ही उसे मार डालना चाहिए। यदि अपने पिता का बदला न ले तो वह कुल में कपूत कहलाता है और स्वर्गीय पूर्वजों को तब तक गाली लगती है जब तक बदला न लिया जाए। जाति के सदस्य उसे अंगुलियों के संकेत से बताते हैं कि यह जा रहा है वह जिसके पिता के हत्यारे सुख से जी रहे हैं। यही नहीं बराबरी के कुल वाले उस कुल में अपनी बेटी नहीं ब्याहते। ऐसा व्यक्ति जिस पर वैर उधार हो उसे उसकी ब्याहता पत्नी अपने किसी अंग का स्पर्श नहीं करने देती और उसकी माँ बावजूद पुत्र के बांझ कहलाती है। इतनी गलाजत किससे सहन होती इसलिए समरकंद को मारना लाजिम था। हे हजरत! अब आपकी इच्छा हो वह दंड दें। हम सारे हाड़ा अब आपकी आज्ञा के अधीन हैं। यह सुन कर मांडूपति ने कहा फिर तुम्हारे पिता ने मेरे पिता को तो नहीं मारा। जिसने तुम्हारे दादा को मारा था। वैर नहीं लिया तब फिर उनका (तुम्हारे पिता का) विवाह कैसे हुआ और यदि उनका विवाह नहीं हुआ तो तू फिर उनका पुत्र कैसे हुआ?

सुपहु कहिय हजरत असुस्वामी, इतर सकल प्रभु के अनुगामी।
तुम प्रभु रीझ खीज छम तातें, खल को चिंतहिं बैर खुदातें॥५७॥

कोउन दै प्रभु दंड कलंकहु, परनैं इम जुग ब्याह पितापहु।
मन प्रसन्न हसि सु सुनि मुदाफर, कहिय तुमहु हमरे जो हितकर॥५८॥

आवहु समरकंद जिम तो अब, सहभोजन करि हरहु भ्रांति सब।
सुनि नारायन करि मन संको, बडम धारि धीरज धरि बंको॥५९॥

जान्यों नृप गाहक यह जी को, नुत पुनि मरन धर्म पर नीको।
हैतो सह मरिबो जस ही को, छिप्र खलहिं करि इक्क छुरी को॥६०॥

जातजात ढिग अरि बरजैं तो भली तबहु असु यहहु भजैंतो।
इमगिनि बिरचि बाहंपट ऊंचे, पानिन मोरि परस्पर पूंचे॥६१॥

जावत निकट जवन बरज्यो जो, तब गोपित नप हठहु तज्यो जो।
साहमुदाफर स्वकहि सराह्यो, चित्त समरकंद हिं सम चाह्यो॥६२॥

इस पर राजा नारायणदास ने कहा कि हे बादशाह! आप प्राणनाथ हैं और हम सब आपके अनुगामी सेवक हैं। आपकी तो रीझ और खींझ दोनों क्षम्य है पर वैर तो खुदा से हो तब भी कोई दुष्ट भी नहीं भूलता। हे स्वामी! वे भी राजा थे इसलिए कलंक को कौन दंड देता? अर्थात् उन्हें क्षम्य था इसलिए मेरे राजा पिता ने दो विवाह किये थे। यह सुन कर मुदाफर हँस दिया और कहने लगा तुम हमारा हित करने वाले हो। तुम भी हमार समरकंद बन कर आए हो तो आओ साथ बैठ कर भोजन करें जिससे सारी भ्रांतियां खत्म हो जाएँ। ५.. सुनते ही राजा नारायणदास ने मन ही मन सोचा कि यह तो सचमुच मेरे प्राणों का ग्राहक है पर इससे क्या? उस स्तुति योग्य राजा ने तब भी अपने धर्म पर अटल रह कर दूसरी बार मरने का सोचा। वह मन ही मन कहने लगा कि साथ साथ मरना भी है तो सुयश का ही कार्य। अभी छुरी का एक प्रहार ही इसके लिए काफी है। यदि इसके पास निकट जाते हुए यवनों ने रोक दिया तो कोई बात नहीं यह प्राण धारण करे। इस तरह मन में पूरा आकलन कर राजा ने अपनी कुर्ते की बांहे ऊपर चढ़ाई और दोनों हाथ के पौंचे मोड़ कर शामिल कर लिये। वह आगे बढ़ा ही था कि सचमुच यवनों ने रोक लिया तो राजा ने भी मन में ठाना हुआ गुप्त हठ छोड़ दिया। ठीक इसी समय बादशाह ने यह सोच कर कि यह तो भोजन जीमने की तैयारी में बाँहे भी ऊपर चढ़ा चुका अर्थात् मेरे हुक्म को मानने वाला है तो शाह ने तब राजा को अपना कह कर उसकी सराहना की और उसे मन से समरकंद की तरह ही चाहने लगा।

दोहा

पुनि लिखाइ बुंदिय पटा, नृपहिं अप्प जवनेस।
सिक्ख मरातब द्विरद सह, दिय आवन निज देस॥६३॥

बिगरीबत्त सुधारि सब, नृप नारायनदास।
इम बिलसे पुनि आइकैं, बुंदिय बिभव बिलास॥६४॥

सुपहु रचिय निज नाम सह, नारायणपुर नाम।
पुरतैं पच्छिम दुव रु दल, गव्यूतिन नव ग्राम ॥६५॥
अथ रेवास अनुचित यहहि, रन दुक्खद तजि राज।
गिरि नितंब निबस्यो दुगम, सजि नव सौध समाज ॥६६॥

तब राजा नारायणदास ने अपने नाम पर बादशाह से बूँदी का पट्टा लिखवाया और बादशाह से घर आने की इजाजत माँगी। इस पर बादशाह ने उसे दो हाथी प्रदान कर बूँदी के लिए सीख (जाने की आज्ञा) दी। इस तरह लगभग बिगड़ी हुई बात को सुधार कर राजा नारायणदास पूरे हर्ष के साथ बूँदी जीवित लौटा और यहाँ आ कर उसने बूँदी के वैभव का भोग किया अर्थात् राजा बन कर निशंक राज किया। इस राजा ने अपने नाम से एक नारायणपुर नामक नया गाँव बसाया जो बूंदी नगर से पश्चिम दिशा में ढाई कोस की दूरी पर अवस्थित था और नवगाँवा से पाँच कोस के फासले पर था। यही नहीं इस राजा ने यह सोच कर कि नीचे के महलों में रहना अनुचित है क्योंकि युद्ध की दुःखद अवस्था में कभी कभी उसे छोड़ना पडता है। उसने पर्वत के शिखर पर नये महल बनवाए और उन्हीं में निवास कर रहने लगा।

इतिश्रीवंशभास्करे महाचम्पूके पूवार्यणे पंचम राशौ वीतिहोत्र-वसुधेश्वर बीज्यवर्णनबीजहड्डाधिराडस्थिपाल वंश्यानुवंश्यविहित-वर्णनाऽवसख्याहार्यबूँदीभूभुजंगनारायणदास चरित्रे मुगलतैमूर प्रतिगम-नानन्तरमर्जितम्लेच्छराजमहमूद मरणाऽर्वाक्खिजरखाना दिसिकन्दरा न्तषड् यवनराड्दिल्लीशासनसूचन परमतवृत्ताऽल्पज्ञसर्वजनस्वस्वमतवस्तु-विवेचनायाथातत्थ्यविख्यापन प्रत्यन्तराजतैमूरिशाहरुख सेवकायमान-सय्यदखिजरखान तन्नामाङ्कमुद्राप्रवर्तन मन्त्रिमारितयवनेन्द्रमुबारिक पुत्रदिल्लीशमुहुम्मद स्वसवितृसंहारकधीसखाऽधमध्वंसन निष्कासिततत्त-नूजदिलीशाऽलावुद्दीन प्राप्ततत्पट्टजितजोनपुरादिजनपदलोदिपठान-बहलोल करतोया बङ्गा ऽन्तरदिल्लीसीमाशासन तत्पुत्रसिकंदर नरेन्द्र-नारायणदास युग्म सूचितैक समास्वस्वस्वामितासमासादन तत्समयदिल्ली-पतिप्रत्यनीकपृथग्यवनेन्द्रीभूतपूर्वपरपुरुषमालवमण्डू पुरराजधानीक-म्लेच्छराजमुदाफर गौर्जराहमदाबादस्थानीयस्कन्धावारकद्वितीय यवन-राण्महमूद यवनेशयुग्म भिन्नभिन्नशासकता सामर्थ्यसङ्कथन।

श्री वंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण की पंचम राशि में अग्निवंशी चहुवान वंश वर्णन के कारण हड्डाधिराज अस्थिपाल के वंश और वंश की शाखाओं की कथा बताने के समय के वचनों में बूँदी की भूमि के पति नारायणदास के चरित्र में मुगल तैमूर के लौट जाने के अनन्तर बादशाह महमूद के मरने से इधर खिज्रखां को आदि सिकन्दर तक इकट्ठे ही छह बादशाहों का दिल्ली की हुकूमत करने की सूचना करना, दूसरों के मत के वृत्तान्त में थोड़ा ज्ञान होने के कारण सब लोगों की अपने अपने मत से वस्तु के विवेचन में सत्यता न होने की सूचना करना, म्लेच्छराज तैमूर के पुत्र शाहरुख का सेवक होकर सैय्यद खिज्रखां का उसके नाम का सिक्का जारी रखना, मन्त्री के मारे हुए यवनेन्द्र मुबारिक के पुत्र दिल्लीश मुहम्मद का अपने पिता के मारने वाले अधम मन्त्री को मारना, उसके पुत्र को निकाल कर दिल्लीश अलाउद्दीन का पाट पाने पर जौनपुर आदि देशों को जीतकर लोदी [illegible] बहलोल का अटक नदी से बंगाल तक दिल्ली की सीमा का शासन करना, उसके पुत्र सिकंदर और बूँदी के राजा नारायणदास इन दोनों का बताये हुए एक सम्वत् में अपने अपने स्वामिभाव को ग्रहण करना, उस समय पूर्व में जिनके पुरुष बादशाह थे और जिनकी मालवे में मण्डूपुर राजधानी थी ऐसे दिल्ली पति के शत्रु बादशाह मुदाफर और गुजरात की अहमदाबाद नामक राजधानी में दूसरे बादशाह महमूद दोनों यवनेशों की जुदा-जुदा हूकूमत और ताकत का कथन।

निपातितस-पुत्रसमरकन्दसमाक्रान्तस्वरा ज्यानिश्चितनिखिलार्यशल्यनिष्कासनमण्डूप्राप्तपरिकरपिहितैक छुरिकबहिरशस्त्रदृश्यमाणमुमूर्षुनरेन्द्रनारायणदास भोजनसमयम्लेच्छराणमुदाफरसविधसङ्गमन दत्तप्रश्नापराधव्यावर्त्तको त्तरसहभोजनाकारकम्लेच्छमारकीभूतनिकटायान्तनृपनिवारणाऽनुकूलसमर्पितप्रतिलेखितपृथ्वीपट्ट पीलु प्रभृतिमहन्मान्यत्व पार्थिवप्रागल्भ्यप्रसन्नमण्डूपरिबृढम्लेच्छराजमुदाफरबूँदीन्द्रप्रतिप्रस्थापन सद्यसमायातबूँदीशनिजनामैक नवीननिवसथनिर्माण सहितताराद‌ुर्गाद्रिनितम्बप्रणीतप्रासादावस्थान सूचनं चतुर्विंशो मयूखः ॥२४॥ आदित एकसप्तत्युत्तरैकशततमः ॥१७१॥

पुत्र सहित समरकन्द को मार, अपने राज्य को ले सम्पूर्ण आर्य लोगों के शल्य को निकालने का निश्चय करके मंडूपुर में पहुँच, परगह से गुप्त

एक छुरी ले बाहर से बिना शस्त्र दीखते हुए मरने की इच्छा वाले नरेन्द्र नारायणदास का भोजन के समय बादशाह मुदाफर के समीप जाना, प्रश्न के अपराध को मिटाने वाला उत्तर देकर, साथ भोजन करने को बुलाने वाले म्लेच्छ को मारने को तैयार होना समीप आते हुए राजा के समीप आने से अनुकूल होकर भूमि का पट्टा वापस लिखाकर हाथी आदि देकर बड़े आदर के साथ राजा को बुद्धिमानी से प्रसन्न मंडूपुर के पति म्लेच्छराज मुदाफर का बूँदीन्द्र को वापस भेजना, घर पर आकर बूँदीश का अपने नाम का एक नवीन ग्राम बसाने के साथ तारागढ़ के पर्वत शिखर पर महल बनाकर निवास करने की सूचना करने का चौबीसवाँ मयूख समाप्त हुआ। और आदि से एक सौ इकहत्तर मयूख हुए।

प्रायो ब्रजदेशीय प्राकृत मिश्रित भाषा

दोहा

रायमल्ल इत रान मृत, अक्खिय पुब्ब उदंत।
कहियत तत्थ बिसेस कछु, जीवन तस परजंत॥१॥

हे राजा रामसिंह! मैंने अब तक आपसे चित्तौड़गढ़ के महाराणा रायमल की मृत्यु का वृतान्त कह सुनाया पर उसके जीवन पर्यन्त कुछ विशेष घटनाएँ घटी थीं उन्हें अब यहाँ कहता हूँ।

षट्पात्

रायमल्ल कै कुमर प्रथित हुव त्रय हि बलीपन।
जेठो पृथ्वीराज अपर नामक सुहि उड्डुन।
जिहिं अनेह इक जवन लल्ल अभिधा करि लंपट।
दिल्लीपति दयिता सु भेदि पातुरि लायो भट।
तिहिं आइ नगर टोडा तबहिं बेढि बिरचि तोपन बिकल।
दै त्रास कढ्ढि चालुक दरित बिजित किन्न गढ अप्पबल॥२॥

चित्तौड़गढ़ के महाराणा रायमल के तीनों वीर पुत्र बलवान थे इनमें सबसे बड़ा पृथ्वीराज था जिसको दूसरे नाम से उड्डन भी कहते थे। इसी महाराणा के काल में लल्लाखां नामक एक यवन हुआ जो बड़ा व्यभिचारी था जो दिल्ली के बादशाह की एक प्यारी और पसंद की गणिका का अपहरण कर लाया। उसने दिल्ली से लौटते हुए टोडा नगर को एक जोरदार तोपों का

युद्ध रच कर हड़प लिया। उसने वहाँ से डरे हुए चालुक्यों को टोडा से खदेड़ दिया और अपने बल से टोडा के दुर्ग को जीत लिया।

तिहिं उड्डुन रानसुत बंस चालुक सहाय बनि।
पहुंचि बेग प्रतिमल्ल हल्ल लल्लसु पठान हनि।
करि टोडा जय कलह सु पुनि अप्पिय सोलंखिन।
उड्डुन बज्जिग अप्प पाइ अतिजव मति पंखिन।
इम जित्ति सिरोहीपुर अधिप स्वीय स्वसा दुख संहरिय।
नृप सुनहु बैरकारन निखिल कुमर कुप्पि जिम यह करिय॥३॥

इस दुखद घटना के बाद जब टोडा के सोलंकी सहायता की गुहार करते महाराणा के पुत्र उडना (पृथ्वीराज) के पास आए तो वह उनका सहायक बन कर तेज गति से टोडा जा पहुँचा वहाँ जा कर उसने धावा बोल कर सोलंकियों के शत्रु लल्लाखां पठान को मार गिराया और घमासान युद्ध कर टोडा पर विजय प्राप्त कर ली। उसने जीत कर टोडा वापस सोलंकियों को सौंपा। इस युद्ध के समय वह पक्षियों जैसी तीव्र गति के साथ चित्तौ ढ से टोडा पहुँचा था इसलिए उसका नाम उड़ने वाला पृथ्वीराज हो गया। इस उड़ने वाले वीर ने बाद में सिरोही नगर को जीत कर अपनी बहन का दुःख मिटाया। हे राजा रामसिंह! सिरोही से हुई शत्रुता का कारण सुनाता हूँ आप ध्यान से सुनिये! जिस कारण से कुमार पृथ्वीराज ने कुपित हो कर यह किया।

रामयल्ल करि रान सुता संबंध सिरोहिग।
बरन देवरा बुल्लि कथित बिधि सह बिबाह किय।
जत्थ दत्त गुरुजनन मिलित दंपति करमोन्नत।
हमसु सिरोही दत्त कहिय उड्डुन अति उद्धत।
बर कहिय मम सु उड्डुन बदिय लेतो मैं वह छिन्नि लहु।
अब मैं दई सु लैहों न इम बिलसि सिरोही नृप बजहु॥४॥

चित्तौड़गढ़ के महाराणा ने अपनी बेटी की सगाई सिरोही के राजा के यहाँ पक्की की फिर प्रीतिपूर्वक देवड़ा शाखा के चहुवान को विधि-विधान पूर्वक विवाह करने के लिए चित्तौड़गढ़ आमंत्रित किया। इस विवाह समारोह में दुल्हे के फेरे हो जाने के बाद हथलेवा छूटने का समय हुआ अर्थात्

कन्यादान के लिए परिवार के बड़े बुजुर्गों को बुलवाया गया तो सभी ने आकर कन्यादान किया। इस संदर्भ में कुमार पृथ्वीराज के भी बड़ा होने के सबब बुला कर कन्यादान के लिए कहा गया तो इस उद्धत वीर ने कहा कि मैं अपनी बहन के कन्यादान में सिरोही का राज देता हूँ। यह सुन कर दूल्हे ने कहा कि सिरोही तो मेरी है। तो पृथ्वीराज ने कहा कि यह समझो कि मैंने छीन ली और अब मैं तुम्हे दे रहा हूँ सो सिरोही ले कर उसका राज्यसुख भोगो।

यहै सुनत धकि असह तोरि अंचल बंधन तब।
दुलही लैगय दुलह स्वपुर प्रतिकूल सद्धि सब।
उर धरि मंचकअंघ्रि दैन लग्गो सु तियहिं दुख।
पिहित बंचि तस पत्र रुठ्ठि उड्डुन अंतकरुख।
निस जाइ छन्न भगिनी निलय सोवत भाम जगाइ स्वक।
बुल्ल्यो कटार उरधरि बदहु तव भगिनी प्रभु मैं भृतक॥५॥

यह सुनते ही दूल्हा देवड़ा क्रोध से भर उठा और गठजोड़े को तोड़ कर वह अपनी दुल्हन को ले कर अपने नगर को रवाना हुआ। मन ही मन शत्रुता का भाव लिये घर आ कर उसने अपनी नवोढ़ा को तंग करना शुरू किया। वह अपनी पत्नी की छाती पर अपने पलंग का पाया रख कर सोता और तरह तरह के दु:ख देता। यह सब कुछ सहते हुए जब दु:ख असहनीय हो उठा तो बहन ने अपने भाई को एक गुप्त पत्र भेजा जिसे पढ़ते ही उड़ना (पृथ्वीराज) यमराज की तरह उड़ता हुआ तेज गति से सिरोही आया। रात्रि को चुपके से अपनी बहन के घर में जा कर उसने अपने बहनोई को जगाया फिर उसकी छाती पर अपनी कटार चुभाते हुए कहने लगा कि तू मेरी बहन को अपनी मालकिन बोल और बोल कि मैं इसका सेवक हूँ।

तुंगमहल लै ताहि द्रंग हेलाहु दिवायउ।
अज्ज अवधि लग अम्ह प्रान ईस्वर बल पायउ।
राणकुमर करि करुण अप्पि मोकंहं अबतैं असु।
सहर सिरोही सहित बिदित बखसे नृपता बसु।

इम बहु पराइ हेला रु इहिं छोर्यो जियत कुमार छम।
बहिनिहिं न दुक्ख अब देहु बदि करि जय आयो बिजय क्रम ॥६ ॥

इसके बाद कुमार पृथ्वीराज अपने बहनोई देवड़ा को महल पर ले कर चढ़ा और वहाँ से नगर को सुना कर वही सब बोलने के लिये कहा। बोल! मेरी पत्नी मेरी मालकिन है और मैं उसका सेवक हूँ। यह भी कह नगरवासियों से कि आज तक तो मैं ईश्वर द्वारा प्रदत्त सांसों के सहारे जीवित रहा हूँ पर आज से आगे इस कुमार पृथ्वीराज की दी हुई सांसों के सहारे जीवित रहूँगा। मेरा राज्य और प्राण इसी कुमार के बख्शे हुए हैं। देवड़ा राजा से सभी को ऐसा कहलवा कर मन में दया उपजाते हुए देवड़ा को क्षमा दे कर जीवित छोड़ा। इसके बाद कुमार पृथ्वीराज ने कहा कि अब कभी भी भविष्य में मेरी बहन को कोई दुःख नहीं होना चाहिए। ऐसी धमकी दे कर विजयी उड्डन पृथ्वीराज वापस अपने घर चित्तौड़गढ़ आया।

दोहा

पृथ्वीराज कुमार पहु, उड्डुन पर अभिधान।
कुमरपनहिं बपु हान किय, जिहिं जिम नियति निदान ॥७ ॥

उड्डन सों हे दुव अनुज, मध्यम तंहं जयमल्ल।
अरु संग्राम कनिष्ठ इम, सोदर रिपु कुल सल्ल ॥८ ॥

मर्यो प्रथम उड्डन कुमर, रायमल्ल पुनि रान।
जयमल्ल रु संग्राम जंहं, घुमंडि भिरे घमसान ॥९ ॥

हनि अग्रज जयमल्ल व्है, सुपहु अनुज संग्राम।
प्रतप्यो गढ चित्तोर पर, अय नय जय उद्दाम ॥१० ॥

हे राजा रामसिंह! कुमार पृथ्वीराज जिसका दूसरा नाम उड्डन भी था वह अपने कुमार पद पर रहते हुए ही मर गया। उसके भाग्य में यही बदा था। इस कुमार उड्डन पृथ्वीराज के दो छोटे भाई और थे। उससे छोटा जयमल और सबसे छोटा संग्रामसिंह। ये दोनों भाई भी अपने शत्रुओं के कुल को चुभने वाले थे। पहले कुमार पृथ्वीराज मरा और उसके बाद महाराणा रायमल मरे। अपने पिता महाराणा की मृत्यु के बाद जयमल और संग्रामसिंह दोनों

भाई आपस में चित्तौड़गढ़ के राजसिंहासन के लिए लड़े। इस युद्ध में अपने बड़े भाई जयमल को मार कर छोटा भाई संग्रामसिंह मेवाड़ का महाराणा बना। चित्तौड़गढ़ पर तपने वाला (राज्य करने वाला) यह निरंकुश राजा नीति, विजय और प्रारब्ध में प्रबल था।

षट्पात्

इत नारायन अधिप द्रंग बुंदिय दुर्जन दम।
बेदकथित बिधिनिबहि कियउ उपयम चतुष्क क्रम।
तंहं संग्राम पितृव्य जेष्ठ उड्डन तनु जाई।
चंपा गढ चित्तोर प्रथम हड्डुहिं परिनाई।
तिम राजकुमरि चंद्राउतिसु मलयसुता दूजी सुमति।
परनैं बहोरि दुव जोधपुर पहु बुंदिय चित्तोर पति॥११॥

इधर बूँदी में दुर्जनों को दंड देने वाले राजा नारायणदास हाड़ा ने वेदोक्त रीति के सारे विधि- विधान से चार विवाह किये। पहला विवाह इस राजा ने चित्तौड़गढ़ की कुमारी चंपा से किया, जो महाराणा संग्रामसिंह के बड़े भाई कुमार पृथ्वीराज की पुत्री थी जिसे महाराणा ने बूँदी ब्याहा। इसी तरह राजकुमारी चन्द्रावती इस हाड़ा राजा की दूसरी रानी बनी जो राजा मलय की पुत्री थी। इसके बाद चित्तौड़गढ़ और बूँदी दोनों राज्यों के राजाओं ने एक साथ जोधपुर जा कर विवाह किया।

दोहा

कन्या बग्घ कबंध की, भ्रात गंग भूपाल।
नाम धना खेतू निपुन, ब्याही दै स्वबिसाल॥१२॥

धना रान संग्रामधन, आयो परनि उमाहि।
नारायन खेतू सु निज, बलि किय तीजी ब्याहि॥१३॥

क्रम लक्खाउत चुंड कै, सुत सुत केर सुताहु।
सरहकुमरि चुंडाउति सु, ब्याहिय चोथे ब्याहु॥१४॥

जाई गुज्जर जास जुग, नत्थी लालां नाम।
भूप भुजिष्या करि भवन, रक्खी यह अभिराम॥१५॥

कन्या गुज्जर चंदकी, अतिबल जानी एह।
तस जनकहिं करि तुष्ट तिम, गिनि अनूढ लिय गेह ॥१६॥

जोधपुर के राजा राठौड़ व्याघ्रराज (बाघा) की पुत्रियाँ जो राजा गंगासिंह (गांगा) की बहनें थी इनमें से एक का नाम धना और दूसरी का खेतू था। इन दोनों बहनों का विवाह राजा ने बहुत दहेज दे कर किया। धना नामक राजकुमारी संग्रामसिंह का धन (धण-स्त्री) बनी या दूसरे अर्थ में युद्ध ही जिसका धन है ऐसे महाराणा ने धना नामक राजकुमारी से उत्साह के साथ विवाह किया। और हाडा राजा नारायणदास ने खेतू नामक राजकुमारी से विवाह संपन्न कर उसे अपनी तीसरी रानी बनाया। इसी क्रम में चौथा विवाह हाड़ा राजा नारायणदास ने चित्तौड़गढ़ में किया। उसने महाराणा लाखन के पुत्र चूंडा के पौत्र की पुत्री सरह कुंवर (सिरै कंवर) से विवाह किया। अपने चार विवाहों के अतिरिक्त राजा ने गुर्जर जाति की दो सुन्दर स्त्रियों नत्थी और लालां का अपनी पासवान बना कर घर में रखा। ये दोनों कन्याएँ चंद नामक गुर्जर की बेटियां थी। राजा ने उन्हें बलवती देख और अनब्याही जान कर अपनी रखैल बनाया और इसके लिए उनके पिता को यथोचित धन दिया।

षट्पात्

जोध नृपति जोधपुर रचिय तससुत हुव बारह।
तिनमें पंचम रतन तास सुत रायसिंह तह।
तनुज रायमल्ल तस तास कल्ल्यान बीरतम।
गिनि गृह को लघुग्रास बद्ध्यो मन तास दुष्टदम।
तृनसम न साह दिल्लीस तकि गंजि समर सुमियान गढ।
धुम्मैं सु लुट्टि दिस दिसन धन रावन वारी इक्क रढ ॥१७॥

उधर राव जोधा जिसने जोधपुर बसाया था के बारह पुत्र थे। इनमें से पाँचवें पुत्र रतनसिंह के रायसिंह नामक पुत्र हुआ और राव जोधा के चौथे बेटे रायमल के कल्याण नामक वीर पुत्र था। इस कल्याण ने अपने घर की जीविका को छोटा समझा और उसका मन दु ें को दंड दे कर उनको भूमि छीनने का हुआ। उसने दिल्ली के बादशाह को तृणवत् गिनते हुए उसके अधीनस्थ क्षेत्र में सुमियाणा का दुर्ग छीन लिया। यही नहीं उसने चारों ओर

लूटपाट कर जो सामने आया उसे दंडित किया। इस प्रकार उसने रावण की तरह अपनी हठधर्मिता को निभाया।

दिल्लियदल बहुबेर भंजि कल्ल्यान भजाये।
मिच्छन मन प्रतिमल्ल सल्ल तस गुन न समाये।
रारि रसिक रट्ठोर दोरि दिल्लिय दावायत।
सुनि बुंदिय जससोर ओर तस चुनि हित आयत।
निज जामि मदनकुमरी निपुन तास बिरचि संबंध तंहं।
लरतहु सु बुल्लि बुंदिय दई ब्याहि बहिनि कल्ल्यान कंहं॥१८॥

दिल्ली सल्तनत की सेना को कई बार भगाया इसलिए म्लेच्छों के मन में यह कट्टर शत्रु पल पल खटकता था। एक वीर नायक के सभी गुण उसमें थे। वह रणरसिक राठौड़ जा कर दिल्ली तक धावा बोल आता। उसके अदम्य पराक्रम के सुयश के बारे में जब बूँदी में सुना तो राजा ने सोचा कि यह मेरी बहन के योग्य वर हो सकता है। यह सोच कर हाड़ा राजा ने जोधपुर के इस राठौड़ वीर के साथ अपनी बहन की सगाई तय की और निरंतर युद्ध में रत रहने वाले कल्याण राठौड़ को बूँदी आमंत्रित कर अपनी बहन मदन कुंवरी को उससे ब्याहा।

जबहु कल्ल जवनेस कटक बेष्टित गढतैं कढि।
परन्यों बुंदिय पहुंचि बीर साहस दुरूह बढि।
नव दिन सालकनिलय दै सु थनकविन लक्ख दुव।
सह दुलही हठसंग हंकि निजगढ प्रविष्ट हुव।
दिन्नैं भजाइ पुनि गंजि दल पुनिपुनि लग्गे आइ पर।
बिनु रन गयो न कल्ल्यान बय थकि घुम्मत दिल्लीस धर॥१९॥

वह पराक्रमी राठौड़ कल्याण भी यवन सेना द्वारा घेरे हुए अपने गढ़ से निकल कर बूँदी अपना विवाह करने आया। कठिनाई से समझ में आए ऐसे साहस वाला नौ दिन तक अपने साले के घर अर्थात् ससुराल में रहते हुए यहाँ के कवियों को दो लाख का पुरस्कार दे कर वह अपनी दुल्हन सहित बूँदी से रवाना हो कर पूरे हठ और गर्व के साथ घेरा लगे अपने गढ़ में प्रवेश

कर गया। इसके बाद वह युद्ध में संलग्न हुआ और उसने अपने सारे शत्रुओं को वहाँ से खदेड़ कर भगा दिया पर शत्रु पुनः पुनः लौट आते। कदाचित् इस राठौड़ वीर कल्याण की अपनी उम्र का कोई वर्ष ही छूटा हो जब उसने दिल्लीपति की सेना से लोहा न लिया हो।

जिम आयउ जगमाल हम्म भूपति दुहिताहित।
कल्ल्हु तिम इक काल अप्प रमनिय पठाइ इत।
घेरा पर रचि घात पटकि रतिवाह पाइ पथ।
सावनतीज निसीथ अप्प आयउ बुंदी अथ।
लै तियहिं जाइ सुमियान लहु किंकर नापित द्वंसकरि।
खग्गन सु कल्ल तिलतिल खिरयो जिम हड्डी गय संग जरि॥२०॥

जब जगमाल राजा हम्मीर हाड़ा की पुत्री को ब्याहने आया तो इस अवसर पर विवाह का बहाना बना कर राठौड़ कल्याण ने अपनी पत्नी को पीहर बूँदी भेजा। फिर स्वयं उसने घेरा लगे हुए गढ़ पर प्रतिघात कर रात्रि के समय अचानक धावा बोला। इससे रास्ता मिल जाने पर वह कल्याण सावन माह की तीज (तृतीया तिथि) की आधी रात को बूँदी पहुँचा। फिर यहाँ से अपनी रानी को साथ ले कर सुमियाणा के गढ़ में पहुँचा। जहाँ वह अपने ही एक नाई के अवांछित कृत्य पर क्रोधित हो गया। वह इस अवसर पर हुई झड़प में तिल-तिल हो कर कट मरा और उसकी रानी हाडी उसकी मृत देह के साथ जल मरी।

दोहा

सूनु सिकंदर साह को, जेठे अनुज जलाल।
अब के रनहो मुख्य यह, सेना बिच रिपु साल॥२१॥

सजल भुम्मि सुमियान ढिग, ऊसर निर्जल ओर।
दिल्ली दल जल बिनु दहैं, घेरा रचि दुख घोर॥२२॥

नापित हो जु नरेस को, संबाहक सबिसास।
किल्लापति वह कल्ल किय, जानि धर्ममति जास॥२३॥

उधर दिल्लीपति सिकंदरशाह का बड़ा बेटा और छोटा भाई जलाल खां इस बार यवन सेना के साथ आए हुए थे इसलिए इस बार वाला युद्ध भयंकर और परिणामकारी था दोनों पक्षों के लिए क्योंकि सामने भी शत्रुओं का काल रूप राठौड़ कल्याण था। सुमियाणा का भूगोल ऐसा है कि नगर के पास तो सजल भूमि है अर्थात् वहाँ पानी की उपलब्धता है पर दूरी पर जो भूमि है वह ऊसर और निर्जल है इसलिए सुमियाणा के घेरा डाली हुई दिल्लीपति की सेना पानी की कमी से प्यासे मरने लगी। यह घेरा उस सेना स्वयं के लिए दु:खदायी हो उठा। इस राजा कल्याण का एक नाई सेवक जो राजा का अंग मर्दन करने (मालिश करने वाला) वाला था। इस को अपना विश्वासपात्र मान कर राठौड़ कल्याण ने इसे अपना किलेदार बनाया।

किल्ला सुहि तिर्हिं दैनकहि, महुर छप्पि फरमान।
खल नापित भेद्यो खलन, प्रबलन छलन प्रधान॥२४॥

नापित अधम निसीथ निस, सत्रुन गढ प्रविसाइ।
स्वामि कटाइ कृतघ्न सठ, पीछैं फल लिय पाइ॥२५॥

बंधि कुतुप बारूद के, जवनन भूंग्यो जोहु।
कल्ल महिपहनि मिच्छ कुल, सतिय बस्यो दिव सोहु॥२६॥

जीवन लग निज जामि कों, नगर बरोदा नाम।
नृप नारायनदास दिय, आय बृद्धि अभिराम॥२७॥

इस नाई ने राठौड़ कल्याण की मुहर वाला छपा हुआ फरमान शत्रुओं को देने का वादा कर लिया जब यवनों ने इस नाई को धन दे कर खरीद लिया अर्थात् उसे अपने साथ मिला लिया ये यवन तो वैसे ही कपट करने में निष्णात थे। इस अधम (नीच) नाई ने आधी रात के समय शत्रुओं को दुर्ग में प्रवेश करा दिया। जिसके फलस्वरूप यवन शत्रुओं ने भीतर जा कर उसके स्वामी राठौड़ कल्याण को काट डाला पर इसका फल नाई को भी मिल गया। यवन शत्रुओं ने उस नाई को बारूद से भरे पीपे से बांध कर उसमें आग लगा दी जिससे वह जल भुन कर मर गया। उधर म्लेच्छों को मारने वाला उसका स्वामी कल्याण राठौड़ अपनी रानी सहित स्वर्गलोक में जा बसा। उम्र भर के लिए जीवनयापन को नृप नारायणदास ने अपनी बहन को बरोदा नगर दिया था जिससे उसकी बहन की आय में सुन्दर वृद्धि होती रहे।

सिखरबंध श्रीहरिसदन, मदनकुमरि जा मांहिं।
बिरचि बरोदा किय बिदित, अबहु नाम तस आंहिं ॥२८॥
कल्ल मरन भावी कथा, बर्तमान अब बत्त।
परिनाये बुंदीस पुनि, अनुज उभय अनुरत्त ॥२९॥
अखैराज कछवाह की, कनी समर्थकुमारि।
परिनायो भूपति प्रथम, नरबद सबय निहारि ॥३०॥

इसी बरोदा नगर में राजा की बहन मदन कुंवर ने एक विष्णु भगवान का सुन्दर शिखरबंध मंदिर बनवा कर अपना नाम प्रसिद्ध किया। वह मंदिर अब भी विद्यमान है और उसी के नाम से जाना जाता है। हे राजा रामसिंह! राठौड़ कल्याण के मरने की कथा को जो बाद में घटित हुई थी। अब मैं उस समय की ही बात बताता हूँ। राजा नारायणदास हाड़ा ने तब अपने दोनों भाइयों का विवाह करवाया। कछवाहा राजा अक्षयराज की सुन्दर कन्या जिसका नाम समर्थ कुंवरी था उससे अपने छोटे भाई नरबद का समवयस्क जान कर विवाह करवाया।

हरि जद्दव तनया बहुरि, सुगुनुकुमारि सनाम।
परिनायउ नरबद सु पहु, इम द्वै ही उपयाम ॥३१॥
कनी स्याम सीसोद की, बल्लभकुमरि बिबाहि।
किय इक ब्याह नृसिंह को, नृप हित महित निबाहि ॥३२॥
अधिक नसा अहिफेन को, नृप नारायनदास।
क्रम बढिबढि लग्गो करन, त्वरित भयो बस तास ॥३३॥
अतिअफीम करि अंगतैं, बिनस्यो दर्पक बोध।
परिगो चिरहिं प्रसूति को, रानिन कै इम रोध ॥३४॥

इसके अतिरिक्त राजा ने अपने छोटे भाई नरबद का दूसरा विवाह यादव हरिसिंह की पुत्री सुगुन कुमारी से संपन्न करवाया। सिसोदिया श्यामसिंह की कन्या वल्लभ कुंवरी से राजा नारायणदास ने अपने सबसे छोटे भाई नृसिंह को ब्याहा। यह विवाह राजा नारायणदास ने अपने सबसे छोटे भाई नृसिंह का हित देख कर किया। यह राजा नारायणदास बाद में अफीम का सेवन अधिक मात्रा में करने लग गया था। वह धीरे-धीरे अफीम के नशे का

दास हो गया। अधिक नशा करने से अर्थात् अधिक मात्रा में अफीम सेवन से उसकी कामशक्ति कमजोर पड़ गई। इससे बहुत अर्से तक रानियों को गर्भ नहीं ठहरा और राजा को संतान प्राप्ति नहीं हुई।

संतति न हुव नृसिंह कै, निज प्रारब्ध निदान।
न लयो जिहिं भूभाग निज, मन संतुष्ट प्रमान॥३५॥

निबसथ इक्क नृसिंह नैं, नव्य रचिय निज नाम।
पट्टनि प्रांत नृसिंहपुर, अबहु बिदित अभिराम॥३६॥

नरबद कों भूभाग नृप, दिय माटुंदा द्रंग।
ताकै संतति पंच तिम, प्रकटिय बसर प्रसंग॥३७॥

यही हाल राजा के छोटे भाई नृसिंह का रहा उसे भी प्रारब्ध के निदान कोई संतान नहीं हुई। मन में संतुष्टि रखने वाले नृसिंह ने तब जागीर में से अपने लिए कोई हिस्सा नहीं लिया। हां, नृसिंह हाड़ा ने अपने नाम से अवश्य एक नया गाँव बसाया। पाटण के क्षेत्र में नृसिंहपुर नामक वह गाँव आज भी विद्यमान है। राजा नारायणदास ने अपने छोटे भाई नरबद को भूमि के हिस्से में माटुंदा नामक गाँव की जागीर दी। समय-समय पर इसके पाँच संतानें हुई।

षट्पात्

भयें अर्जुन रू भीम उभय कछवाही औरस।
कन्या कर्मवती रु पूर मुक्कल जाहिरजस।
भगिनी इक दुव भ्रात त्रिक हि जद्दोनि जन्यों तिम।
नृप पहिलैं नारबद प्रजा पंचक उपज्यो इम।
हड्डेस रान संग्राम हित कर्मवति सु ब्याही कुमरि।
याके हि प्रसव बिक्रम उदय कुमर भये लघुकाल करि॥३८॥

हाड़ा नरबद को अपनी कछवाहा रानी से अर्जुन और भीम नामक दो औरस पुत्र हुए। कन्या कर्मवती सहित पूर और मोकल ये तीनों संतानें जिनमें एक बहन और दो भाई थे यादव रानी की कोख से जन्मे। राजा नारायणदास से पहले नरबद के ये संतानों का पंचक उत्पन्न हुआ। कर्मवती कुंवरी का विवाह हाड़ा राजा ने चित्तौड़गढ़ के राणा संग्रामसिंह से किया और इसी

कर्मवती की कोख से राणा को थोड़े ही समय में विक्रमादित्य और उदयसिंह जैसे दो पुत्रों की प्राप्ति हुई।

दोहा

कुमर धना रट्ठोरि कैं, भोज रतन दुव भ्रात।
इनपीछैं बिक्रम उदय, जुगल कर्मवति जात॥३९॥

ब्याह्यो भोज कुमार बलि, मीरां मेरतनी सु।
कुमरपनहि पति मृत्यु करि, बिभुहरिभक्त बनी सु॥४०॥

तकि इक्कत संबंध त्रिक, चहि बुंदिय चित्तोर।
नारायन संग्राम नृप, इक मन दु तन दु ओर॥४१॥

चित्तौड़गढ़ के राणा सांगा (संग्रामसिंह) के राठौड़ रानी धना के गर्भ से भोजराज और रतनसिंह नामक दो पुत्र हुए और इसके बाद हाड़ा रानी कर्मावती की कोख से विक्रमादित्य और उदयसिंह जन्मे। इनमें से कुमार भोजराज का विवाह प्रसिद्ध मेड़तणी (मेड़तावाली) मीरां बाई से हुआ जो अपने पति की (कुमार पद पर रहते हुए हुई) मृत्यु के बाद विष्णु भगवान की परमभक्त बनी। चित्तौड़गढ़ और बूँदी की एकता बनी रहे इसके लिए तीन संबंध दोनों राज्यों के बीच हुए फिर राजा नारायणदास और राणा संग्राम सिंह आपस में साढू होने के अतिरिक्त अनन्य मित्र थे। जैसे वे एक मन और दो तन हों।

षट्पात्

अग्रजजा पति एह प्रथित वह अनुज सुतापति।
जुग हि स्वसुर जामात मन्त्रि इतरेतर सम्मति।
हालीवर इत हड्डु बहुरि उत रान कुलीबर।
सगपन त्रय सम्मेल तिमहि मनमेल अधिकतर।
सीसोद गिनत बुंदिय सदन हड्डु तिमहि चित्तोर चहि।
आव्हान बिनुहु आवत उभय गदित रीति एकत्व गहि॥४२॥

इनमें से एक बड़े भाई की पुत्री का पति था। नारायणदास तो छोटे भाई की कन्या का पति संग्रामसिंह था। इस प्रकार दोनों परस्पर श्वसुर और जामाता एक दूसरे की बात मानते थे। राणा की साली का पति हाड़ा नारायणदास

और नारायणदास की बड़सासू (स्त्री की बड़ी बहन) के पति महाराणा सांगा। इस प्रकार दोनों में तीन-तीन संबंध थे पर सम्बन्धों से भी बढ़ कर उनके मनों का मेल था। सिसोदिया राणा सांगा बूँदी को अपना घर मानते और हाड़ा राजा नारायणदास भी चित्तौड़गढ़ को अपना समझता था। ये आपस में बिन बुलाए भी आते जाते क्योंकि दोनों में पूर्व में कहे अनुसार अच्छी मित्रता थी।

सुरभि समय संग्राम कबहु बुंदिय आगम किय।
तत्थ बिसद मधुतीज महिप दोउ न महमंडिय।
दियउ पातुरिन द्रविन अयुत इक इक इतरेतर।
आयउ ढक्कुव अत्थ सभा सकलहि उट्ठि अर।
उट्ठ्यो न भूप पल लगि इहां तकि ढक्कुव अपमान तंहं।
भनि मृतक नर्म किय रानभट तिहिं दब्बिय खिजि रान तंहं ॥४३॥

एक बार बसन्त ऋतु के आगमन समय में राणा सांगा बूँदी आये। इस अवसर पर चैत्र शुक्ला तृतीया के दिन दोनों राजाओं ने मिल कर बड़े उत्सव का आयोजन किया। नाचने गानेवाली पातुरियों को दोनों ओर से दस दस हजार रुपए दिये गए। ऐसी भव्य महफिल जब अपने रंग पर थी कि तभी वहाँ मेवाड़ के कोठारिया का स्वामी और राणा का सामन्त चहुवान ढक्कू आया जिसके आते ही रंग में भंग पड़ गया। चहुवान ढक्कू के आने पर राजा नारायणदास खड़ा नहीं हुआ तो उसने यह अपना अपमान समझा और राणा का वह सामन्त व्यंग्य में कहने लगा कि कोई मर गया क्या जो इस तरह बैठे हो। यह देखते ही राणा सांगा ने चहुवान ढक्कू को चुप कराया।

दोहा

चेतत पुनि निज कवि चविय, नृप ढक्कुव कटु नर्म।
भ्रात समहु अरितम भनिय, बनिय अप्प जयबर्म ॥४४॥

नारायन अक्खिय निजहु, भ्रात न जानत भाव।
बिना समय बल बाहुजन, दुरयो रहत खय दाव ॥४५॥

इसी बीच राजा नारायणदास को फिर से याद दिलाते हुए उनके कवि ने कहा कि हे राजा! चहुवान ढक्कू ने यह अच्छा मजाक नहीं किया। वह चहुवान होने से आपका भाई है पर व्यवहार उसने शत्रु जैसा किया। वह भी

ऐसा प्रदर्शित करते हुए जैसे स्वयं ने विजय का कवच पहन रखा हो। इस पर राजा नारायणदास ने अपने आदमियों से कहा कि वह यह नहीं जानता लगता है कि बिना जरूरत के समय क्षत्रिय का बल राख में दबी हुई अग्नि जैसा होता है।

षट्पात्

सठ ढक्कुव सोहु सुनि बदिय जो तुम बैसंदर।
सहितसभा पट सबन अंग किन करहु भस्म अर।
रान जानि इम बिरस मुंदिय उट्ठि रु ढक्कू मुख।
सिबिर दई तिहिं सिक्ख रक्ख भट संग प्रबल रुख।
सोदा रच्यो जु बिल्हन सुकवि काव्य बिरुद पुनि श्रवन किय।
ताकंहु प्रसन्न बुंदीस तब दुव सासन इक लक्ख दिय॥४६॥

यह सुन कर मुर्ख ढक्कू चहुवान ने फिर से कटु उक्ति देने के स्वर में कहा कि यदि आप अग्नि हैं तो फिर स्वयं के और इस सभा में उपस्थित सभी जनों के कपड़े कब भस्म करोगे? महाराणा सांगा सभा के रस को विरस होते देख अपनी जगह से उठे और उन्होंने आ कर इस सामन्त का मुँह बंद करवाया। उसे उसी समय वहाँ से जाने को कहा और अपने सेवकों के साथ उसे शिविर में पहुँचाया। इसके बाद वापस आ कर सभा में बैठे फिर उन्होंने सोदा शाखा के चारण बिल्हन से उसका रचा हुआ प्रशस्ति काव्य सुना। इस पर प्रसन्न हो कर बूँदी के राजा नारायणदास ने बिल्हन दो गाँवों की जागीर और लाख पसाव दिया।

सामलसुत सामोर धीर बुंदीस वृत्तिधर।
रान बिरुदमय रचिय हड्डु अनुमत लोहठ हर।
दिय सुनाइ चोत्थि दिन सोहु कविता सीसोदहिं।
जुग सासन लक्ख जुग रान दिय मन्नि प्रमोदहिं।
लग्गो न लैन जिन्ह धीर जब पिक्खि बिमन चित्तोरपति।
संकुचित निहोरि भाखत सुपहु मन्त्रिय निट्ठि उदारमति॥४७॥

अगले दिन श्यामल (श्यामदास) के पुत्र धीर नामक सामोर शाखा के चारण ने जो बूँदी का पोलपात्र था राणा के विरुद में लिखा अपना काव्य जो

उस लोहठ के पौत्र ने अपने स्वामी हाड़ा राजा की अनुमति से रचा था। राणा सांगा के आगमन के चौथे दिन धीर सामोर ने अपना वह काव्य उन्हें सुनाया। यह सुन कर राणा सांगा ने प्रसन्न हो कर उसे दो गाँवों की जागीर और दो लाख पसाव दिये पर वह धीर सामोर जब यह रीझ नहीं लेने लगा तो इससे महाराणा उदास हो गए। तब पूरे संकोच के साथ हाड़ा राजा ने कहा कि कविवर इसे स्वीकार करने में क्या हर्ज है ? अपने स्वामी के कहने पर उस उदार बुद्धि वाले धीर सामोर ने तब महाराणा का दत्त ग्रहण किया।

तदनंतर चित्तोर नृपहु गय यह नारायन
मिले उभय महिपाल करन मिच्छन कारायन।
सड्ढू पन संबंध मिथहि स्वसुर रु जमाई।
रानी इम रट्ठोरि प्रचुर महिमानि पठाई।
दिन इक्क रान संसद सदन भद्रासन थित भूप दुव।
बुंदीस तत्थ अहिफेनबस मैंचि पलन हिंडालु हुव॥४८॥

इसके थोड़े दिनों बाद बूँदी के हाड़ा राजा नारायणदास चित्तौड़गढ़ गये वहाँ म्लेच्छों को कैद करने वाले दोनों राजा प्रीतिपूर्वक मिले। दोनों यों तो संबंध के हिसाब से साढू (स्त्री की बहिन का पति) थे, इसके अलावा वे परस्पर एक दूसरे के श्वसुर-दामाद भी थे। इस अवसर पर राठौड़ रानी ने अपने अतिथि की विशेष मेजबानी की और जवारी (दामाद को विदाई के समय जो धन दिया जाता है उसे जवारी कहते हैं) में बहुत सारा धन भेजा। एक दिन राणा सांगा की राजसभा में दोनों राजा भद्रासन पर बैठे थे कि वहाँ बूंदी के राजा अफीम के नशे के कारण आंख मींच कर झपकी लेने लग गये।

दोहा

पूरबिया कुट्ठारपति, वह ढक्कू चहुवान।
चिंतत भो नृप को बचन, करि रस बिरस कथान॥४९॥

तबसु बहुकरी केर तुन, मंगि फरासन मूढ।
पिहित गयो नृप पिट्ठि पैं, गदि अग्गिन कहुं गूढ॥५०॥

प्रभु मामक कुल परपुरुख, उहां भानुअभिधान।
बरज्यो सठ ढक्कू बहुत, सो न रुक्यो अवसान॥५१॥

तब रानहु ताकों तरजि, उठ्टयो अटकन अप्प।
जोलों तिहिं ढिग जातही, दिय सिर तृन अतिदप्प॥५२॥

इसी समय कोठारिया का स्वामी पूरबिया शाखा का ढक्कु चहुवान जो महाराणा का सामन्त था उसने बूँदी की सभा वाली राजा की बात को याद किया। जहाँ उसे यह कहा गया था कि उसने रसभरी सभा को विरस कर डाला। इस वृतान्त के याद आते ही उस मूढ चहुवान ने सफाई करने वाले फरास से बुहारी (झाड़ू) की एक सीक ली और उसे ले कर वह सीधा भद्रासन की ओर बढ़ा। वहाँ हाड़ा राजा के पीठ पीछे खड़ा हो कर कहने लगा कि इस राजा में छिपी हुई अग्नि है जैसा कि इसने स्वयं कहा था तो यह तृण जल जाएगा। उसने कहा कि हे महाराणा! हमारे कुल का पूर्वज पुरुष भी अग्नि से अपना नाम ले कर प्रकट हुआ था। इस पर महाराणा ने उसे मना किया कि वह ऐसा कोई अभद्र व्यवहार न करे पर अन्त समय आ जाने के कारण वह मूर्ख नहीं माना। यह देख कर राणा सांगा स्वयं उठ कर उसे रोकने के लिए बढ़े तब तक उसने अत्यन्त दर्प से हाड़ा राजा के सिर पर वह तिनका रख दिया।

षट्पात्

बरजन के सुनि बचन हड्डु मन सावधान हुव।
पैं करि कपट प्रमाद अधिक उंघिय सुभांड सुव।
बैठि पिट्ठि इहिं बीच सत्रु तृनकुच्च धर्‍यो सिर।
बुल्ल्यो को यह बन्हि कांड इक्क हु जरैं न फिर।
मैंचेहि दृगन ढिग तुल्लि मन, उलटे कर दिय झारि असि।
बसु खंड कट्टि चहुवान बपु धारा कछु गय थंभ धसि॥५३॥

महाराणा सांगा ने जब चहुवान ढक्कू को रुक जाने का वचन कहा उसे सुन कर राजा नारायणदास मन में सावधान हो गया पर जानबूझ कर कपट करते हुए और अधिक आलस्य से ऊंघने का अभिनय राजा सुभांडदेव के इस पुत्र ने किया। इसी समय इधर तो उस मूर्ख ढक्कू ने राजा के सिर पर तिनका रखा और कहा कि यहाँ अग्नि कहाँ? इससे तो यह तिनका भी नहीं जला और उधर हाड़ा राजा ने बंद आंखों से हा मन में अन्दाज से चहुवान की जगह सोच कर उल्टे हाथ से तलवार का प्रहार किया। राजा की तलवार ढक्कू के आठ टुकड़े करती हुई आगे वाले थंभे में जा खुसी।

दोहा

अँचे दुव पक्खिन असिन, रान पिधान कराइ।
कहिय अनय ढक्कु हि किय, पाप फलहु लिय पाइ॥५४॥

बन्यों सभा रस में बिरस, परि हित मांहिं प्रतीप।
पिसुन नैर कुट्ठारपति, मार्‍यो इम सु महीप॥५५॥

परि उकुरू की पिंडुरिन, खग्ग अठ्ठ अरिखंड।
किय धर के जुग द्वै करन, चउ चरनन इम चंड॥५६॥

आवन लग्गो रुठ्ठि यह, नारायन अवनीस।
हत्थ जोरि रक्ख्यो हठन, रान समावत रीस॥५७॥

यह देखते ही बूँदी और चित्तौड़गढ़ दोनों पक्षों के योद्धाओं ने अपनी अपनी तलवारें म्यान से खींच कर बाहर निकाली जिसे देखते ही महाराणा सांगा ने सभी तलवारों को वापस म्यान के भीतर रखवाया। फिर महाराणा सांगा ने कहा कि यह अनीति ढक्कू चहुवान ने की थी और उसने अपने कर्म का फल पा लिया। राज सभा का रस भंग हो गया और दोनों राजाओं की प्रीत में थोड़ा विरोध का अन्तर आ गया। कोठारिया के स्वामी उस चुगलखोर चहुवान ढक्कू को राजा नारायणदास ने इस प्रकार मार गिराया। उकड़ू बैठे हुए चहुवान की पिंडलियों पर पड़ी तलवार ने उसके आठ टुकड़े कर डाले। धड़ के दो, हाथ के दो और चार टुकड़े पैरों के इस तरह कुल आठ टुकड़े उस प्रचंड राजा ने कर डाले। इसके तुरन्त बाद राजा नारायणदास चित्तौड़गढ़ से रूठ कर रवाना हुआ। बाद में राणा सांगा ने हाथ जोड़ कर उसके क्रोध को शान्त करवाया और उसे वहीं रोका।

षट्पात्

नृपहिं रक्खि बहु दिनन करत मृगयादिक क्रीड़न।
बिबिध गोठि ब्यंजनन असन सह होत सईड़न।
बिजन भूप दुव बैठि मंत्र इकदिन इम मंडिय।
पच्छिम दक्खिन पहुन खलन अज्जन मदखंडिय।

बदि तृन समान दिल्लीस बल जुग हि साह लग्गे बजन।
प्रति अब्द लेत लक्खन प्रमित धरहिं भेट कबलों सु धन॥५८॥

महाराणा सांगा ने बूँदी के राजा हाड़ा नारायणदास को फिर कुछ दिनों के लिए वहीं अपना मेहमान बना कर रखा। इस बीच वह उन्हें शिकार खिलाने ले जाता। विभिन्न गोंठों में तरह-तरह के व्यंजनों से स्तुति सहित भोजन करवाता। कुल मिला कर राजा को वापस प्रसन्नचित बनाया। एक दिन एकान्त में बैठ कर दोनों राजाओं ने मंत्रणा करते हुए विचार किया कि इन यवनों ने पश्चिम और दक्षिण दोनों दिशाओं के आर्य राजाओं को मद रहित बना रखा है। दिल्ली की तुलना में ये दोनों बादशाह (गुजरात और दक्षिण का) बल में तृण समान होते हुए भी जो अपने आपको बादशाह कहलाने लगे हैं। प्रतिवर्ष एक एक भुज के एक लाख अर्थात् दोनों भुजाओं के दो लाख रुपए ये बेचारे आर्य राजा कब तक भेंट करते रहेंगे।

इक्के बीर अनेक रहत जिनके जय रक्खन।
प्रति हायन प्रति पानि लेत बेतन वहु लक्खन।
सत सर चउ चउ सरधि धनुख त्रय त्रय जे धारत।
त्रय गोलिन अंतरहु बेधि पर बलहिं बिडारत।
कैसो उपाय रोकन करहिं जाइ जवन परिभूत जिम।
अज्जन प्रजाहु लुट्टत अटत पत्रिनरन पारथ प्रतिम॥५९॥

इनके पास अनेक इक्के (यवन योद्धा) वीर रहते हैं जो इनको विजय दिलवाते हैं। प्रतिवर्ष लाख रुपयों के हिसाब से लाखों रुपये ये वसूलते हैं। सौ सौ तीरों वाले चार चार तूणीर और तीन तीन धनुष धारण करते हैं जो तीन गोलियों की मारक दूरी जितने दूर से शत्रु सेना को बिखेरने की सामर्थ्य रखते हैं। अब ऐसे योद्धाओं वाले यवनों को किस प्रकार रोका जाए और क्या करने से ये अनादृत हो कर यवन यहाँ से भाग जाएँ। ये सभी आर्य प्रजा को लूटने वाले बाणों के युद्ध में अर्जुन के सदृश हैं। दोनों राजा मंत्रणा करने लगे कि क्या उपाय करें?

दोहा

हड्ड कहिय बुल्लहु हमहिं, सासन अलस सहाय।
किर करिहैं कछु रीति करि, इक्के जयन उपाय॥६०॥

दोउन किय यह मंत्र दृढ, रहि कछु दिन अनुरत्त।
करि सगोत्र ढक्कू कदन, पहु बुंदिय इम पत्त ॥६१॥

हाड़ा राजा नारायणदास ने कहा कि आप हमें बुलायें। हम आ कर आर्य राजाओं के शासन की रक्षा में सहायता करेंगे और कुछ उपाय कर निश्चय ही इन इक्कों को जीतने का प्रयत्न करेंगे। दोनों राजाओं ने इस प्रकार की दृढ़ मंत्रणा की। फिर हाड़ा राजा कुछ दिन और चित्तौड़गढ़ ठहरा। इस तरह अपने ही सगोत्री ढक्कू चहुवान को मार कर कुछ दिन बाद हाड़ा राजा नारायणदास अपने राजधानी बूँदी वापस लौटा।

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पू के पूर्वायणे पंचम राशौ वीतिहोत्र-चतुर्बाहु मद्वीज्यवर्णनबीजहड्डाधिराजास्थिपाल वंश्यानवंश्यविहितव्या-ख्यानावसरविख्यापनीयहड्डुकुलकोटीरबुन्दीवसुधेश्वरनारायणदास चरित्रे संहतलल्लनामयवनप्रवीरराणाराजमल्लज्येष्टकुमारोड्डुयनपृथ्वीराज टोडापुर पुनश्चालुक्यकुलायत्तीकरण विजितशिवपुरीनरेशनिजजामिजानि-मोचिततद्दत्तभगिनीकष्टविद्यमानवप्तृकप्राप्तयौवनकुमारपृथ्वीराजतनु-त्यजन निपातितनिजाग्रजराणासंग्रामसिंहपितृपट्टप्रापण परिणीतशैर्षोद्री प्रभृतिपत्नीचतुष्क स्वीकृतैक भुजिष्यनरेन्द्रनारायणदास स्वभगिनीमदन कुमारी तिरस्कृतदिल्लीशसमा क्रान्तसुमियाणदुर्गराष्ट्रकूटराजकल्याणकर-ग्राहण श्रवाशुर्यानिवे शनवितीर्णद्रम्मलक्षद्वय सप्रसभसपत्नीकसद्मागत।

श्री वंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण की पंचम राशि में अग्निवंशी चार हाथ वाले (चहुवान) के वंशवर्णन के कारण हड्डाधिराज अस्थिपाल के वंश और वंश की शाखाओं की कथा बताने के समय के वचनों में प्रसिद्ध करने योग्य हाड़ा कुल के मुकुट बूँदीन्द्र भूपति नारायणदास के चरित्र में लल्ल नामक यवन का नाश करके बड़े वीर राणा रायमल्ल के ज्येष्ट कुमार उडना पृथ्वीराज का टोडापुर को फिर से सोलंकियों के कुल के अधीन करना, सिरोही के राजा को जीतकर अपनी बहन के पति के दिये हुए दुःख से बहन को छुड़ाकर पिता की विद्यमानता में यौवन प्राप्त कर कुमार पृथ्वीराज का शरीर छोड़ना, बड़े भाई को मारकर राणा संग्रामसिंह का पिता का पाट प्राप्त करना, सीसोदिनी आदि चार स्त्रियों से विवाह कर एक पासवान करके नरेन्द्र नारायणदास का अपनी बहन मदनकुमारी का दिल्ली के बादशाह का

अनादर करने वाले सुमियाणा गढ को दबाने वाले राठौड़राज कल्याण से विवाह करना, ससुराल में दो लाख रुपये कवियों को देकर हठ के साथ स्त्री सहित घर में आ कर यवन सेना को बारम्बार जीतकर दिल्ली के बादशाह के उपद्रव करने वाले राठौड़ नरेश कल्याण का शत्रु बने हुए अपने शरीर की मालिस करने वाले नाई से गढ़ में प्रवेश कराई हुई शत्रु सेना के साथ युद्ध करके अपने साथ गमन करने वाली स्त्री सहित शरीर छोड़ना।

पुनः पुनः पराजितयवनानीकविप्लावितदिल्लीशकर्मध्वजनरेश-कल्याण-प्रतीपीभूतस्वसंवाहकनापितदुर्गप्रवेशितपरपृतनाप्रधनसह-गामिनीसहित-पुद्गलप्रहाण बुन्दीशनिजानुजनरबद कौर्मी यादवी दयिताद्वय नृसिंह शैर्षोद्धी पत्न्येक परिणायन वर्द्धितातिमात्रसमभ्यस्ता-ऽहिफेनवशीभूततन्मदमत्तमनरकनरेन्द्रसन्ततिसंरोधचिरसम्भवन विधिव-शालब्धसन्तानानङ्गीकृत वसुधाविभागनृपाऽनुजनृसिंह निजनामन-व्यनिवसथनिर्माण भूभागप्राप्तमाटुन्दाख्यद्रङ्गनरबद दयिताद्वय सञ्जा तसुतैक सहित्ताऽर्जुना दिसुतचतुष्क समुद्भवन नरेन्द्रनारायदास स्वानुजनरबद सुताकर्मवती चित्रकूटेशराणसंग्रामसिंहपरिणायन राणौ-रसधानेय भोज रत्न कार्मवतेयविक्रमो दय कुमारचतुष्क समुद्भवन जीवज्जनकज्येष्टकुमार भोज मरणानन्तरतत्पत्नी राष्ट्रकूटीमीरांया-वज्जीवहरिभक्तिसमासादन नरेन्द्रनारायणदास राणासंग्रामसिंह सम्बन्धत्रय स्निग्धस्वान्तैक्य परस्परप्रीतिप्रकटन।

बूँदीश का अपने छोटे भाई नरबद का कछवाही और यादवी दो स्त्रियों से और नृसिंह का एक स्त्री सीसोदिनी से विवाह करना, अत्यन्त मात्रा बढ़ जाने के अभ्यास से अफीम के वशीभूत उसके नशे में मत्त मनवाले राजा के संतान का बहुत समय तक रुकना. देव वश से संतान न पाकर, पृथ्वी के विभाग को न लेकर राजा के छोटे भाई नृसिंह का अपने नाम से नवीन ग्राम बसाना, पृथ्वी के बंटवारे में माटूंदा नामक नगर पाने वाले नरबद के दो स्त्रियों से एक पुत्री के साथ अर्जुन आदि चार पुत्रों का होना, नरेन्द्र नारायण दास का अपने छोटे भाई नरबद की पुत्री कर्मवती को चित्तौड़ के पति राणा संग्रामसिंह को ब्याहना, राणा के धना कुंवर के उदर से भोज और रत्नसिंह तथा कर्मवती के उदर से विक्रमादित्य और उदयसिंह इन चार औरस कुमारों का जन्म होना, पिता के जीवित समय में ही बड़े कुमार भोज के मरे बाद उसकी स्त्री

राठौड़ वंशीय मीरां का जीवन पर्यन्त ईश्वर भक्ति ग्रहण करना, राजा नारायणदास और राणा संग्राम सिंह का तीन सम्बन्धों के कारण स्निग्ध मन से एकता करके परस्पर प्रीति प्रकट करना।

सुरभिसमयबुन्दीसमागतसभासमुपविष्टदत्तद्वि पक्षपणस्त्री-गणार्थद्रव्यायुत राणास्वकीयभटढक्कू कृतबुन्दीशाहिफेनप्रामाद्यदुर्बचन-वारण श्रुतस्वगर्हणसावधान सूचिताकाण्डक्षात्रसत्वकालाग्नि-गोपनौचित्यबुंदीशविल्हणार्थमुद्रालक्ष शासनोपवसथद्वय विश्राणन प्रसभप्रतारणापृतनाप्रपातप्रेषितस्तब्धताप्रागल्भ्यकुत्सकतावमतबुन्दीश-बलवैश्वानरत्वस्वशठभटढक्कूकराणाद्वितीय दिनावसरबुन्दीशक-विधीरार्थसमुद्रालक्षयुग शासनयुग सप्रसभसमर्पण स्नेहोत्कर्षसोत्कण्ठ-चित्रकूटप्रयातप्राप्तज्येष्टश्वश्रूप्रेष्यसमज्या सङ्गतविभक्तार्द्धभद्रविष्ट-रोपविष्टसौभाण्डिकृपाणप्रत्यक्प्रहारस्वमूर्द्ध खटक्षेपकढक्कूचाहुवाण-वपुरष्ट धाकर्तन प्रव्हताप्रतिनिवर्त्तितकियत्कालकृतनिवाससमर्थित-राणारहस्यस्वीकृतसमयसहाय नरनाथनारायणदास बुन्द्यागमनं पञ्चविंशो मयूखः ॥२५॥ आदितो द्विसप्तत्युत्तरैकशततमः ॥१७२॥

वसन्त समय में बूँदी में आ सभा में बैठकर दोनों पक्ष की ओर से वेश्याओं को दस-दस हजार रुपए देने पर राणा का अपने उमराव ढक्कू के किये हुए बूँदीश की अमल के नशे की असावधानी के दुर्वचनों को मिटाना, अपनी निन्दा सुनकर सावधान हुए बिना समय क्षत्रियों के पराक्रम रूपी कालाग्नि को छिपाना उचित सूचित करके बूँदीश का विल्हण नामक चारण के अर्थ एक लाख रुपए और दो ग्राम जागीर देना, घमंड की प्रबलता से बूँदीश के बलरूपी अग्नि की निन्दा करके अवज्ञा करने वाले अपने उमराव मूर्ख ढक्कू को बलात्कार से ताड़ना कर डेरे भेज राणा का दूसरे दिन बूँदीश के कवि धीर नामक चारण के अर्थ दो लाख रुपयों के साथ दो जागीर ग्राम हठपूर्वक देना, बड़े स्नेह से उत्कण्ठा सहित चित्तौड़ में आकर बड़सासू की भेजी हुई मेहमानी पाकर सभा में आये हुए आधे आसन पर बैठे हुए सुभाण्ड के पुत्र का तलवार के उल्टे प्रहार से अपने मस्तक पर तृण रखने वाले ढक्कू चहुवान के शरीर के आठ टुकड़े करना, नम्रता से निवर्तन हुए कुछ समय निवास करके राणा की सलाह का समर्थन करके समय पर सहायता करने की बात स्वीकार करके राजा नारायणदास के बूँदी आने का पच्चीसवाँ मयूख समाप्त हुआ। और आदि से एक सौ बहत्तर मयूख हुए।

प्रायो ब्रजदेशीय प्राकृत मिश्रित भाषा

दोहा

पैसे नव मिल लेत पहु, फलरोधक अहिफेन।
जाके जय निकस्यो बिजित, स्मर पुरतैं सहसेन॥१॥
बाढ जदपि नृप कायबल, अतिबल तदपि अफीम।
रक्ख्यो श्रम आहार पैं, स्मर नट्ठो तजि सीम॥२॥

हे राजा रामसिंह! बूँदी का हाड़ा राजा नारायणदास प्रतिदिन नौ पैसा भर (तोल) संतान रूपी फल को रोकने वाली अफीम लेने लगा। इस नशे ने विजय प्राप्त कर राजा के शरीर से कामदेव को उसकी सेना सहित बाहर खदेड़ दिया। यद्यपि राजा का शारीरिक बल बढ़ाये रखा गया तब भी इस अतिबली अफीम के कारण (इससे डरता हुआ) आहार पर जोर रखते हुए भी कामदेव राजा के शरीर की सीमा छोड़ कर भाग गया।

षट्पात्

अच्छोटन दिन इक्क हड्डु नृप रमि इक्कल हय।
आवत पुर अति अमल मिचे नैनन प्रमादमय।
इक धूसरितिय अध्व कछुक गिनि सुप्त नर्म किय।
कर तस आयस कुस सु लोलहय फैंकि छिन्नि लिय।
गहि द्रुत नमाई ताकेहि गल करि डारी नृप कुंडली।
गुरु निगड़ तुल्य भर बस सु गृह चिर विश्रमिबिश्रमि चली॥३॥

एक दिन राजा अकेले ही घोड़े पर सवार हो शिकार खेल कर अपने नगर बूँदी को वापस लौट रहा था। उस समय राजा की आँखें अफीम के नशे से मिची हुई थीं। मार्ग में जब यह एक नीच जाति की स्त्री ने देखा तो उसने चुहल करने की सोच कर मजाक किया जिसे राजा ने सुन लिया उसके हाथ में भूमि खोदने का लोहनिर्मित कुसा था उसे राजा ने अपने चपल घोड़े को तेज गति से चला कर पास से गुजरते हुए छीन लिया और तुरन्त ही उस लोहे को अपने हाथों से दबा कर गोलाकार बनाया और उस लोह कुंडली को वापस उस स्त्री के गले में डाल दिया। अपने गले में ऐसा ठोस बंधन का भार पड़ने से वह अपने घर तक भी बीच राह में रुक रुक कर बमुश्किल पहुँची।

दोहा

कंठीरव गहि बसकरन, सिंधुर रोकन सीम।
इहिं अमलहु नृपबल अतुल, भूतल मल्लन भीम॥४॥
इत थूसर निजनारि वह, कछु निगड़ित करि तीन।
लखि सालस गृहकर्म लहु, आनी न्यायअधीन॥५॥

सिंह को वश में करने को अथवा किसी हाथी को एक जगह पर रोकने जितना अतुल बल इस राजा में था जितना शायद भूतल के किसी भयंकर मल्ल में होगा। उधर वह स्त्री अपने घर में कोई काम नहीं करने लगी। उसने गले में पड़े उस भारी बंधन के कारण कुछ भी करना छोड़ दिया। यह देख कर कि वह आलसी स्त्री स्त्रियोचित गृहकार्य भी नहीं कर रही तब उसका पति उसे पकड़ कर न्याय करवाने के लिए राजा के दरबार में लाया।

षट्पात्

चाक्रिक बिन्नति च्चविय कहत ममतिय नृप यह किय।
सदन कृत्त्य तासोंहि दारकीलित बनि तजि दिय।
द्वै हि मनुज हम सदन सिद्धि किम क्है ब इक्क सन।
उचित अनुग्रह इक्खि पुब्ब जिम करहु करुनपन।
सुनि नृप सु कढ्ढि तस कंठ सन कुस हो जिम तिम सरल करि।
तिन्ह सौंपि कहिय तव मूढतिय पाप सहिय मम हास्य परि॥६॥

राजा के सामने उस तेली ने जब न्याय की प्रार्थना करते हुए अर्ज की कि हे राजा! यह मेरी स्त्री पहले घर का सारा काम करती थी पर गले में इस बंधन के पड़ने के बाद सारा कार्य करना छोड़ दिया। घर में मात्र हम दो जन हैं अब मुझ अकेले से पूरा काम कैसे बने? अब आप उचित कृपा कर इसे पहले जैसा काम करने का आदेश करें। यह सुन कर राजा ने उसके कंठ से कुसनिर्मित कुंडली को पकड़ कर हाथों से वापस सीधी कर दी फिर वह कुस उसे ही वापस करते हुए राजा ने कहा कि तेरी मूर्ख पत्नी ने जो मजाक मुझ से किया था उसके दोष की सजा इसे मिली।

दोहा

बुंदीपति प्रतिघस्त्र बढि, इम अहिफेन अधीन।
सतत मुंदि दृग मन्नि सुख, लग्गो उंघन लीन॥७॥

इतने शारीरिक बल के बावजूद राजा प्रतिदिन अधिक से अधिक अफीम के वश में होने लगा। निरन्तर अपनी आँखें मींचे ऊंघने में उसे सुख की प्रतीति होने लगी। अत: वह अधिकतर समय ऊंघने लगा।

षट्पात्

पौसमास ऋतु प्रसल अधिप रजनी इक अंतर।
सोवत जगि लघु सौच करन बैठो बसुधम्बर।
ऊंघत लगि पल अप्प तत्थ रहिगो प्रभात तक।
रही खरी रठ्ठोरि गहें तब लों भृंगारक।
याकोहि हुतो बासक उहां सीत बात परिभव सहत।
कंपत लखी सु नृप उठ्ठिकैं बपु झीनी सारी बहत॥८॥

पौष माह में हेमन्त ऋतु की एक रात्रि में राजा सोने के बाद वापस जगकर लघुशंका के निवारण हेतु बैठा। वह वहीं बैठ कर ऊंघने लग गया और मूंदी हुई आंखों से वहीं बैठे-बैठे दिन उगा दिया। पास ही राठौड़ रानी हाथ में स्वर्ण निर्मित जल पात्र लिये तब तक खड़ी रही जब तक राजा ने उठ कर हाथ नहीं धो लिये। उस रात्रि राजा के इसी रानी के महल में सोने की बारी थी इसलिए वह रानी ठंडी हवा के झोंके सहती हुई पूरी रात दु:ख पाती रही। राजा ने प्रात:काल जब अपनी रानी को इस तरह खड़े-खड़े ठंड से कांपते देखा कि उसने किस तरह एक महीन चीर ओढ़े जाड़े की ठिठुरती रात काटी है।

दोहा

कर पय दूजी बेर करि, सलिल मृत्तिका सुद्ध।
रानी प्रति नृप उच्चरिय, यह संकोच अबुद्ध॥९॥
किन चेतायों मैंहि कहि, सेई किन हसनी हु।
किन बुल्ली परिचारिका, भुग्गि हिमानी भीहु॥१०॥

राजा जब पानी और मिट्टी से दूसरी बार अपने हाथ धो कर शुद्ध कर चुका तब उसने रानी से कहा आपका यह संकोच मूर्खता है। आपने मुझे आवाज दे कर चेताया (बुलाया) क्यों नहीं और अंगीठी जला कर अपने हाथ क्यों नहीं सेके। आपने किसी दासी को क्यों नहीं बुलाया। आप क्यों चुपचाप भयकारी अत्यन्त शीत को सहती रही?

षट्पात्

भाव परम पति भजन त्रान तनु निजहु न तक्कत।
मंगि कहिय महिपाल मनन बिनु रीझ धरैं मत।
जोरि तबहि कर जकुट प्रनत रट्ठोरि पयंपिय।
मम कर लेहु अफीम देय जो यह सब ही दिय।
आरंभि सु दिन नृप हित अमल रानी खेतू कर रहैं।
तिलतिल घटाइ बपु तत्त्व पर आनिय इहिं गौरव गहैं॥११॥

इस पर राठौड़ रानी ने निवेदन किया कि हे नाथ! पति की सेवा के परम भाव में अपने शरीर की रक्षा की बात कौन स्त्री देख सकती है? अर्थात् नहीं देख सकती। यह सुन कर प्रसन्न होते राजा ने कहा कि प्रिये! तुम्हारी इच्छा हो वह माँगो! मैं रीझ कर देना चाहता हूँ। तब राठौड़ रानी दोनों हाथ जोड़ कर कहने लगी कि हे स्वामी! यदि अब से आगे अफीम मेरे हाथ से लें तो मैं यह समझूँगी कि आपने मुझे सब कुछ दे दिया। राजा ने स्वीकारोक्ति दी तब से ही भविष्य में राजा को अफीम सेवन कराने का कार्य राठौड़ रानी खेतू के हाथ में आ गया सो उसने प्रति दिन तिल भर माप से घटा कर अफीम देनी शुरू की। इससे राजा के शरीर पर वापस चमक लौट आई।

नृपन रीति यह नियत अटन प्रायिक अच्छोटन।
इक दिन कोलन ओघ बाजि दिय पिट्ठि महाबन।
अप्पहु सूकर इक्क छेकि कोसन मार्‍यो छम।
इतनें भो अहिफेनकाल कढि माल अतिक्रम।
अँचत तुरंग तंगहिं उतरि पिच्छम गत रवि दृग पर्‍यो।
आसन उतारि तरु कृकर तर सयन बिकल नृप अनुसर्‍यो॥१२॥

राजाओं का प्राय: यह नियम होता है कि वे घोड़ा चला कर शिकार के लिए वन में भटकने जाते हैं। इसी नियम के अंतर्गत एक दिन राजा नारायणदास ने एक सूअरों के समूह का पीछा करने को अपना घोड़ा बढ़ाया। इस तरह भागते-भागते सूअरों का झुंड घने वन में घुस गया पर इसी बीच समर्थ राजा ने बरछी मार कर एक सूअर को मार लिया। इतने में ही राजा के अफीम लेने का समय हो गया जब वह माल (पहाड़ी समतल भूमि) को पार कर रहा था उसका आलस्य के कारण आगे बढ़ना दूर्भर हो गया। उसने घोड़े को रोक कर उसका तंग ढीला कर दिया और सूर्य पश्चिम दिशा की ओर जाने लगा ऐसे वक्त में घोड़े पर से आसन उतार कर राजा एक करील वृक्ष के नीचे छितरी छाया में सो गया।

कृकरछांह तनु कढि रु परत आतप नृप मुख पर।
कढि इक अहि तंहं करिय छत्र फन छांहं छत्रधर।
सहसा छांहं प्रसंग नैंन नृप खुल्लि निहाऱ्यो।
भुजगकाल तब भजत धीर कर गहि दृढ धाऱ्यो।
चढि कोप उरग कर चंपतहि दृढदक्कुन भूपहिं डस्यो।
ततकाल जोस अहिफेन तिम बहु डक्कन बपु में बस्यो ॥१३॥

ढलती हुई करील की छाया ढल कर जब राजा के मुँह पर धूप आ गई और उसकी आतप बढ़ने लगी। तभी कहीं से एक सर्प निकल आया और उसने आ कर अपना फैलाया हुआ फण छत्र की तरह छत्रधर (राजा) के मुँह पर तान दिया। अचानक इस प्रकार छाया होने से राजा ने अपनी आँखें उघाड़ कर देखा। उसने साँप को अपने ऊपर आया निरख एक हाथ से उसे पकड़ लिया। अपने इस तरह दबाये जाने से साँप ने खीज कर राजा को तीन चार जगह डस लिया पर इससे अफीम के नशे बिना पस्त हुए राजा के शरीर में अचानक स्फूर्ति का संचार हो गया और राजा को अफीम के नशे जितना जोश आ गया।

पैसे इक के प्रमित अमल रानी पति आन्यों।
दर्वीकर गर द्वि गुन जोस बढ्यो मद जान्यों।
सरधि इक्क करि सून्य तीर अन्यत्र बंधि तस।
कीलि सु उरग कलाप लग्यो हय चढन गतालस।

आयुधिक अनुग जोलों अखिल जिमतिम पहुंचि चमूह जुरि।
सूकर लिवाइ मुरि इम सुपहु घर आयउ गर अमल घुरि॥१४॥

धीरे-धीरे अफीम की मात्रा घटाते हुए रानी राजा को प्रतिदिन एक पैसा भर अफीम के प्रमाण पर ले आई थी। आज राजा ने सांप के जहर से दुगुने जोश का अपने शरीर में संचार महसूस किया तो उसने अपना एक तरकश खाली करवाया और उसके तीर दूसरी जगह बाँध लिये। फिर उस सर्प को राजा ने अपने उस खाली तूणीर में रख लिया। इसके बाद तो वह स्फूर्तिहीन राजा वापस घोड़े पर चढ़ा। शस्त्रधारी सेवकों ने तब तक उस सूअर को जैसे-तैसे ढूंढ निकाला और वे उसे ले कर वापस महलों को आने के लिए मुड़े। तब तक विष के अफीम जैसे नशे में गर्क हो राजा सेवकों से पहले ही घर पहुँच गया।

सिक्ख अप्पि निज सबन अप्प गो जब अवरोधन।
हो बासक रट्ठोरि कोहि मन्नि सु अनर्थ मन।
अमल समय अतिवार त्रसित सब सुरन मनावत।
तब पिक्ख्यो वह तोर अजिर घुम्मत नृप आवत।
इहिंकहिय कोन मोबिनु अभय अज्ज प्रभुहिं जिहिं दिय अमल।
नृप कहिय मित्र इक मिलि निपुन द्विगुन दयो तुम देत दल॥१५॥

अपने सारे सेवकों, सामंतों को जाने की आज्ञा दे कर राजा जब अन्त:पुर में आया। आज भी राजा के सोने की बारी राठौड़ रानी के महल में थी। वह मन ही मन राजा के अफीम लेने के समय का उल्लंघन सोच कर डरती हुई देवताओं से मन्नत मांग रही थी कि उसी समय रानी की नजर चौक में आते राजा पर पड़ी। उसने राजा से पूछा कि ऐसा मेरे बिना दूसरा कौन मिल गया जिसने मेरे स्वामी को समय पर अफीम दे दी? इस पर राजा ने जवाब दिया कि मुझे एक मित्र मिल गई थी जिसने मुझे तुम जितनी मात्रा में मुझे अफीम देती हो उससे दुगुनी मात्रा में अफीम खिलाई।

रुट्ठि कहिय रट्ठोरि मोहि भुल्लि रु को मित्र सु।
सरधि खुल्लि तब सर्प कर्‌यो कुट्टिम चल चित्रसु।

लगि भय रानी लखत अमल तजिबे ढिग आन्यों।
हसि ससोंह नृप कहत पुनिसु गर अभय प्रमान्यों।
तिहिं अमल रत्ति आधान तिहिं धरिय भावि रविमल्ल धन।
पुनि हुव सु जोग अवसर प्रसव जगि प्रमोद जनपद जनन ॥१६॥

यह सुनते ही राठौड़ रानी रूठ गई और कहने लगी ऐसी कौन मेरी शत्रु आपको मित्र के रूप में मिल गई कि आप मुझे ही बिसरा बैठे। तब राजा ने अपने तूणीर से उस सर्पिनी को बाहर निकाल कर दीवार पर चलने को छोड़ा। उसे देख कर रानी डर गई। उसने सोचा राजा ने अफीम को सदा के लिए छोड़ने के लिए सर्प मँगाया लगता है। तब हँसते हुए सौगंध खा कर राजा ने कहा कि इसी ने मुझे वह नशा कराया था जिसके सहारे मैं अभय हो कर यहाँ तक पहुँच गया। इसी अफीम से दुगुने विष के नशे में उस रात राजा से रानी गर्भवती हुई। जिस गर्भ से भावी राजा सूर्यमल का जन्म हुआ। इसके बाद निश्चित समयावधि पर रानी के प्रसव हुआ जिसे सुन कर बूँदी के जनपद में जन-जन ने खुशी मनाई।

दोहा

बिप्रन धन लक्खन बितरि, मह किय अतुल महीप।
बसु गुन घटत अफीम बिधि, दये कुमर कुलदीप ॥१७॥

पुत्र जन्म के इस अवसर पर राजा ने बड़ा उत्सव किया। ब्राह्मणों को लाखों रुपयों का दान किया। धीरे-धीरे राजा आठ पैसा भर अफीम प्रतिदिन से एक पैसा भर अफीम के नशे पर आया तब उसे अपने कुल दीपकों की प्राप्ति हुई।

षट्पात्

मुख्य कुमर रविमल्ल अनुज हुव रायमल्ल इम।
लघु तासन कल्ल्यान त्रिक हि रट्ठोरि प्रभव तिम।
भुजिष्या जु इक भनिय सहंस सत्तल द्वै तस सुव।
पुत्र द्वि बिध इम पंच हड्डु नृप कै प्रबीर हुव।
पट्टप कुमार तिनमें प्रबल सिसुहि बेध्य सद्धैं सरन।
पहिलो कि पत्थ अबको कि पुनि पित्थ कुमर यह धन्विपन ॥१८॥

कुल दीपकों में सबसे बड़ा सूर्यमल हुआ इसके बाद उससे छोटा रायमल जन्मा और सबसे छोटा कल्याणमल ये राजा के तीनों ही पुत्र राठौड़ रानी की कोख से जन्मे। इनके अतिरिक्त एक पासवान के गर्भ से सहंसमल और सातल ये दोनों जन्मे। इस तरह हाड़ा राजा के कुल पाँच वीर पुत्रों का पंचक हुआ। इनमें पाटवी कुमार सूर्यमल सबसे प्रबल था जिसने अपनी बाल्यावस्था में ही तीर चलाना सीखा। यह धनुष में इस तरह निष्णात हुआ जितना पूर्व समय में अर्जुन हुआ था और बाद के समय में पृथ्वीराज चहुवान हुआ।

अति सिसुहो जब एह कुमर तब कबहु रुदित किय।
रानी मंजन करत दासि जन स्तन काहू दिय।
अटकत रोदन आइ पुच्छि दासी सु प्रतारिय।
प्रसू भ्रामि सिसु पयन सु पय रुधिरांत निसारिय।
अहिस्याम गरलमद जात यह रुचिहु स्याम इम हास्य रहि।
माता लडाइ उरलाइ मम कारो अतिगर नाग कहि॥१९॥

यह राजकुमार सूर्यमल जब बहुत छोटा था तो एक दिन अचानक रोने लगा उस समय उसकी माँ राठौड़ रानी स्नान कर रही थी। यह देख कर एक दासी ने उसे चुप कराने के लिए अपना स्तन कुमार के मुँह में दे दिया। रानी ने जब यह सुना कि कुमार रोते-रोते बीच में चुप हो गया था वह तुरन्त समझ गई। स्नानघर से बाहर आते ही राठौड़ रानी ने पृछा कि किसने चुप कराया और कैसे? बाद में उस दासी को प्रताड़ित कर रानी मां ने अपने कुमार को घुमा कर औंधा लटकाया जिससे वह सारा दूध बच्चे के मुँह से निकल आया। रानी ने उसे तब तक इसी स्थिति में रखा जब तक दूध की अंतिम बूँद के साथ रुधिर नहीं निकलने लग गया। यह कुमार काले सर्प के जहर के मद से पैदा हुआ था इसलिए वह श्याम वर्ण का था इससे इसकी माँ राठौड़ रानी हंसते हुए हमेशा कहा करती थी कि यह मेरा श्याम वर्ण बेटा काला नाग है जो अत्यन्त जहरीला है।

इत लोदी अफगान साह दिल्लीस सिकंदर।
सक गुन हय तिथि समय कियु तिहिं हान कलेवर।
अंगज इब्राहीम बडो पट्टप हुव बय बल।
दुख निज भ्रातन दैन छिप्र लग्गो सु भरयो छल।

जानैं जलाल अप्पन अनुज कीलित करि मारयो कुगति।
अरु भ्रात अलाउद्दीन इक गो काबल भजि लखि दुगति॥२०॥

उधर दिल्ली के बादशाह अफगान सिकंदर लोदी ने विक्रम संवत् के पन्द्रह सौ तिहत्तर के वर्ष में अपनी काया त्यागी। इस बादशाह की मृत्यु के बाद उसका बड़ा बेटा इब्राहीम लोदी दिल्ली का बादशाह बना जो बल में भी बड़ा था। दिल्ली के तख्त पर बैठते ही इस छल-कपट से भरे इब्राहीम लोदी ने अपने छोटे भाइयों को सताना शुरू किया। इसने अपने एक छोटे भाई जलाल को बंदी बना कर बुरी मौत मारा। अपने भाइयों की ऐसी गति होते देख कर अलाउद्दीन नामक एक भाई तो काबुल को भाग गया।

दोहा

कुल संतति तैमूर को, इत बाबर अभिधान।
काबल जय तिहिं काल करि, स्वबल भयो सुलतान॥२१॥

इसी समय तैमूर के वंश में एक बाबर नामक वीर था जो काबुल को अपने बल पर फतह कर वहाँ का सुलतान बन गया था।

षट्पात्

अंदजान पति अग्ग यहहि हुव जनक अनंतर।
दब्बि समरकंद पुन्नि बढ्यो सब सिर जब बाबर।
भ्रातन बिच परि भेद छोनि यातैं सब छुट्टिय।
पै बहुरिहु बल पाइ किन्न भुव बस रिपु कुट्टिय।
इम पुनि तातारी उजबकन समरकंद जब जित्ति लिय।
तब अंदजान दल सज्जि तिहिं काबल दब्बि अधीन किय॥२२॥

अपने पिता की मृत्यु के बाद पहले यही अंदजान नामक नगर का स्वामी बना जिसने बाद में समरकंद देश को हड़प कर सभी के सिर पर अपना शासन जमाया। इसी समय भाइयों में विभेद पड़ गया जिसके कारण इससे सारी भूमि छूट गई पर धीरे-धीरे बाबर ने वापस सेना जोड़ कर अपने शत्रुओं को मार कर उनकी भूमि पर अमल जमाया। इसने फिर से थोड़ा बल पा कर तातार, उजबेक देश और समरकंद को जीत लिया। इसके बाद इसने

अंदजान से अपनी सेना को सज्जित कर काबुल को फतह कर अपने अधिकार में ले लिया।

दोहा

अंदजान काबल उभय, सासत बाबर साह।
इब्राहीम सु दुष्ट इत, हुव तब दिल्लिय नाह॥२३॥
अधिकारी दुर्मन अखिल, भये तास लहि भीति।
तिम टरिटरि विस्वास तजि, पावत कहुंन प्रतीति॥२४॥
मार्यो अनुज जलाल जब, द्रवित अलाउद्दीन।
काबल बाबर साह को, लयो सरन भयलीन॥२५॥

तब अंदजान और काबुल दोनों पर बाबर राज करने लगा। इसी समय वह दुष्ट इब्राहीम लोदी दिल्ली का बादशाह बना। इसके सारे मातहत अधिकारी इससे भयभीत और उदास रहने लगे। वे इस से बच-बच कर रहने लगे। उसका विश्वास न पा कर उनका दिल किसी भी बात में नहीं लगता। इस इब्राहिम लोदी ने जब अपने छोटे भाई जलाल को निर्ममतापूर्वक मारा तो उससे छोटा भाई अलाउद्दीन भाग कर काबुल में बाबर शाह की शरण में इसी से भयभीत हो कर गया था।

षट्पात्

तंहं सूबा मुलतान खानदोलत अप्पन खत।
पठयो बाबर पास स्वीय पक्खिन लिखि सम्मत।
खानां भयउ खराब इहां लोदी अफगानन।
इब्राहीम हिं अखिल हमहु चाहत अब हानन।
तुम प्रबल आइ इत सुख बितरि हित धरि सब संकट हरहु।
यह स्यार कनकगिरि तैं अलग करि दिल्लिय अप्पन करहु॥२६॥

मुलतान प्रांत के सूबेदार दौलतखाँ ने तब पत्र लिख कर बाबर के पास भेजा। इस पत्र में उसने अपने सूबे सहित पूरे आर्यावर्त का भीतरी हाल लिख भेजा। उसने लिखा कि यहाँ तो अफगान इब्राहीम लोदी के रहते खाना खराब (दुर्दशाग्रस्त) है। हम सभी चाहते हैं कि वह मर जाए। अब आप ही एक प्रबल योद्धा है इसलिए यहाँ आ कर हमारा संकट मिटाइये। हमारा हित सोच कर यहाँ सुख का प्रसार कीजिये। यहाँ इस सोने के पहाड़ पर गीदड़ बैठा है

इसे दूर भगा कर आप स्वयं दिल्ली को अपना बनाइये।

बाबर तब इम बंचि खान दोलत प्रेसित खत।
आयउ जब तरि अटक हुलसि दिल्लिय सिर हंकत।
सबदल पंद्रहसहंस तंत्र ताके कहियत तब।
जित्ति तदपि पंजाब सजव आयो नमात सब।
स्वक बय दु अग्गचालीस सम जुब्बन बय निजपुत्र जुत।
पहुंच्यो सु आनि पानीपथहि दब्बत दिल्लिय देस द्रुत॥२७॥

बाबर ने जब इस दौलतखाँ द्वारा प्रेषित पत्र को बढ़ा तो तुरन्त ही वह सेना सहित अटक नदी को (तैर कर) पार करता हुआ दिल्ली पर चढ़ आया। उस समय बाबर के तंत्र में पन्द्रह हजार सैनिकों वाली सेना थी। सबसे पहले आते ही उसने पंजाब को फतह किया और राह वाले राजाओं को स्वयं के समक्ष समर्पण करवाता हुआ शीघ्र आगे बढ़ा। इस समय खुद बाबर की आयु बयालीस वर्ष की थी और उसका पुत्र भी साथ था। वह दिल्ली प्रांत की सीमा को दबाता हुआ सीधा पानीपत आ पहुँचा।

इब्राहीम अमीर बदलि ता मांहिं मिले बहु।
दल खिल सह दिल्लीस लरन इततैं पहुंच्यो लहु।
पानीपथ भुव प्रधन भयउ चलि सस्त्र भयंकर।
हनि सुहि इब्राहीम विजय सासक हुव बाबर॥
लोदी रह्यो सु बसु अब्द लग संवत ससि बसु तिथि समय।
तैमूर बंस प्रभुता बितत अब दिल्लिय मुगलन उदय॥२८॥

दिल्ली के तत्कालीन बादशाह के कई अमीर (सामंत) अपने स्वामी से विमुख हो बाबर से जा मिले। दिल्लीपति भी अपनी सारी सेना ले कर शीघ्र ही पानीपत आ पहुँचा। इन दोनों पक्षों के मध्य पानीपत में भयंकर युद्ध हुआ। भीषण घमासान के बाद इब्राहीम लोदी को मार कर बाबर ने विजय प्राप्त की और वह यहाँ का शासक बना। इब्राहीम लोदी ने आर्यावर्त की बादशाहत पूरे आठ वर्ष तक की। विक्रम संवत् के वर्ष पन्द्रह सौ इक्यासी में तैमूर वंश की प्रभुता समाप्त हो कर दिल्ली पर मुगलों का उदय हुआ।

पहिलैं गोरिन पाइ भुम्मि दिल्लिय बहु भुग्गिय।
ति खलजी कुल तुरक तुरक तुगलक इम उग्गिय।
सय्यद लोदिन सहित साह बजि बजि नट्ठे सब।
दुलही दिल्लिय दुलह मन्नि मुगलन आई अब।
जोलों सु साह बैठो न जमि सूबा कछु पलटे सबल।
मालव अधीस गुज्जर महिप पाये दुव प्रतिभट प्रबल॥२९॥

सर्वप्रथम गोरी वंश के शासकों ने दिल्ली की भूमि ले कर यहाँ का राजसुख भोगा। इनके बाद खिलजी कुल के तुर्कों ने राज्य किया फिर तुर्कों ही के तुगलक वंश ने, अपना आधिपत्य जमाया। तुगलक वंश के बाद सैय्यद और सैय्यदों के बाद लोदी ने यह सारे बादशाह कहलाते कहलाते समाप्त हो गए तब यह दिल्ली रूपी दुल्हन मुगलों को अपना दूल्हा मान कर उनके घर गई। जब तक पूरे आर्यावर्त पर बाबर का कब्जा नहीं हो गया तब तक उसने कुछ सूबों के हाकिम पलटे। इसी बीच उसे इस बात का इल्म हो गया कि गुजरात और मालवा के स्वामी ये दो प्रबल शत्रु हैं।

बदल्यो दिल्लिय बेस पिक्खि गुज्जर मालव पति।
गंजत जिततित गढन बढे दिसदिस अति उन्नति।
बसु आब्दिक कछु बरस चढ्यो चित्तोर भरन भनि।
अतिबल इक्के उभय बिदित पठये स्वामी बनि।
पहुँचे प्रबीर दुव रानपुर बिबिध फैल बानां बहत।
करमंगि अनय इच्छित करत रान उर न मावत रहत॥३०॥

गुजरात और मालवा के स्वामियों को देख कर दिल्लीपति बाबर ने भी अपना रूप बदला। मुगल धीरे-धीरे कई दुर्गों को जीतते हुए सभी दिशाओं में वृद्धि पा कर बढ़े। यह जान कर कि चित्तौड़गढ़ पर अपना वार्षिक खिराज कई वर्षों से बकाया है। इसकी वसूली के लिए दो इक्कों को बाबर ने स्वामी बनते ही भेजा। ये दोनों इक्के चित्तौड़गढ़ में कई तरह का बवाल खड़ा करने लगे। बकाया कर की वसूली के लिए वे इच्छानुसार अनीति से भरा व्यवहार करने लगे। उनका यह आचरण महाराणा से सहन नहीं हुआ

दोहा

कहि रुप्पय इक्कत करत, रक्खि स्वपाहुन रीति।
छन्न लिख्यो बुंदिय छदन, आवहु लघहु अनीति॥३१॥

महाराणा ने उनसे कहा कि हम रुपयों की व्यवस्था कर रहे हैं जब तक राशि इकट्ठी नहीं हो जाती आप तब तक के लिए हमारे मेहमान बन कर रहें। इस बीच उधर बूँदी के राजा को महाराणा ने एक संदेशवाहक के हाथों गुप्त पत्र लिख भेजा कि यहाँ आ कर देखो कि यवनों की अनीति क्या है।

षट्पात्

बलसह दल वह बंचि सुपहु चितोर सिधाग्गिय।
गंजन इक इक गढन सूर इच्छित अनुसारिय।
मोहिल्लामगरी सु छेकि रानहु हितमें छक्कि।
आयो सम्मुह अप्प तुरक इक्के हु रह्यो तकि।
मिलि मग्ग तैंहि आचरि उचित प्रासादन गय रान पहु।
नृप हुव प्रविष्ट निज पटनिलय बितरत रंकन बित्त बहु॥३२॥

पत्र पढ़ते ही राजा नारायणदास अपने दल सहित चित्तौड़गढ़ के लिए रवाना हुआ। रास्ते में पड़े एक-एक गढ़ के स्वामी को समर्पण के लिए झुकाता हुआ मोहिला मगरी (दशहरे पर होने वाली सेना की हाजरी इससे बने किसी स्थान का नाम) को पार कर महाराणा के हित के अनुरा' में पगा राजा आगे बढ़ा। इस स्थान तक सम्मुख आ कर महाराणा ने हाड़ा राजा का स्वागत किया। इसे दिल्ली से आये इक्कों ने भी देखा। रास्ते में मिलते ही उचित व्यवहार कर महाराणा अपने महलों में लौट गया और इधर हाड़ा राजा ने अपने शिविर में विश्राम करने जाते हुए गरीबों को बहुत सारा दान दिया।

पठई कहि रान प्रति मत्त उद्धत दुव मिच्छन।
हड्डुन बुल्लि सहाय अब कि दैन न कर इच्छन।
बलि चढाइ बहु बरस बलिहु चयकरन बिलंबहु।
प्रधन सहे परिहै न बजत सा॒न जय बंबहु।
अह अठ्ठ अवधि कै सोचि अब कर चढ्योसु हम कर करहु।
यह जो न द्वार समुचित अटकि धन लुट्टहिं कोसन धरहु॥३३॥

यह देख कर दोनों म्लेच्छों ने महाराणा से कहलवाया कि आपने अपनी सहायता के लिए हाड़ा राजा को बुला लिया। आपकी खिराज देने की इच्छा है अथवा नहीं ? पहले तो आपने इतना खिराज बाकी रखा है और अब आप इकट्ठा करने में इतना समय लगा रहे हो। यदि खिराज समय पर अदा नहीं किया तो आपको युद्ध सहना पड़ेगा और उसमें बजते बादशाह के विजय के नगाड़े आपसे सुने नहीं जाएंगे। हम अब आपको मात्र आठ दिन की अवधि स्वीकृत करते हैं। आठ दिनों के बाद बकाया कर की राशि हम स्वयं वसूल करने लग जाएँगे। हम दुर्ग के द्वार पर रोक लगा कर आपका धन खजाने में नहीं रखने देंगे। हम उसे लूट लेंगे।

बुंदिय इत संबंध चउ सु साहहु पहिचानत।
तुम सहाय कहि तदपि आन जानहु भ्रम आनत।
पाहुन आतहु परत सतन सहंसन व्यय संगत।
बसु दिन जंहं तुम बदत मास इक तंहं हम मंगत।
इम रान कथन मिच्छन उफनि अक्खिय अट्ठ हि अवधि अह।
इक मास अवधि तुम तो अबहि अटि अटि पुर लुट्टहिं असह ॥३४॥

बूँदी और चित्तौड़गढ़ के मध्य में चार-चार संबंध हैं। उसे बादशाह जानता है। इसलिए आना जाना लगा रहता है। महाराणा ने कहा कि ये मेहमान हो कर ही यहाँ आए हैं। आप यह भ्रम मत पालिये कि मैंने इन्हें अपनी सहायता के लिए बुलवाया है। फिर मेहमानों के आने पर उनकी आवभगत में खर्च तो करना ही पड़ता है। इसलिए आठ दिन की मोहलत तो आप हमें दे ही रहे हैं और हमारा कहना है कि इस अवधि को आप एक माह की कर दीजिये। महाराणा का इतना कहा सुनते ही म्लेच्छ क्रोध में बिफरते हुए बोले नहीं आठ ही दिन की मोहलत है। एक माह की अवधि में तो तुम लोगों को घूम-घूम कर लूट लोगे।

लुट्टत रंक लुकाइ हमहिं जो लेहु दगा हनि।
तोहु सुगति हम तकहिं तुमहिं कालहि ग्रसिहै तनि।
तंहं पहुंच्यो नृप तदिन इत रु उत बाद रह्यो इम।
जुग घटिका निसजात तक्कि सगपन वरोध तिम।

रट्ठोरि धना कहियत कुली करि बहुधन जिहिं नाम क्रम।
लघु बहिनि पतिहिं पठयो ललित सब आतिथ्य सनेह सम॥३५॥

तुम चुपके-चुपके गरीबों को लूटते हो और हमें कपट से मारने की फिराक में हो। हम तुम्हारी सुगति चाहते हैं और तुम हमें काल बन कर डसना चाहते हो। मुदाफर और महमूद नामक दोनों इक्के (एक यवन योद्धा जो एक हजार सैनिकों से अकेला भिड़े उसे इक्का कहते हैं) महाराणा से ऐसा कह रहे थे उसी दिन हाड़ा राजा नारायणदास एक दिन अपने शिविर में रह कर दो घड़ी रात अपने संबंध के कारण जनाने में मिलने पहुँचा। उन्हें आया देख राठौड़ रानी धना जो उनकी बड़सासू (पत्नी की बड़ी बहन) थी ने अपने नाम के अनुरूप वहुत सारा धन मेहमान की जवारी के रूप में भिजवाया और छोटी बहन का पति होने के नाते राजा का पूरे स्नेह के साथ अतिथि सत्कार किया।

सर्प डसन भय संकि तज्यो रानिय अफीम तंहं।
अमल त्रिगुन बढि अधिक जात मन बढि अटक्यो जंहं।
पैसे त्रय मित जदपि अमल रहिगो अधिपति कै।
तंद्रित दृग मिलि तदपि मोह आवत हुव मति कै।
चित्तोरराज रानिय निचित स्वागत आयउ पट्सदन।
दीस्यो सु तबहु नृप मैंचि दृग बहु उंघत ब्यादित बदन॥३६॥

हाडा राजा की राठौड़ रानी ने सर्प दंश वाली घटना के बाद से अपने पति को अपने हाथ से अफीम देना छोड़ दिया था। इसलिए इन दिनों राजा के अफीम की मात्रा बढ़ा कर लेने की फिर से आदत हो गई थी। उस समय तक तीन पैसा भर का मावा (अफीम की खुराक) रह गया था तब भी राजा की आँखें पूरी नहीं खुलती थीं और हल्की सी अचेतावस्था भी रहती। चित्तौड़गढ़ के महाराणा अपनी रानी के साथ स्वागत करने के लिए जिस समय हाड़ा राजा के शिविर पर पहुँचे। उस समय उन्होंने देखा कि हाड़ा राजा आंखें मींचे ऊँघ रहे थे और उनका मुँह खुला हुआ था।

नृप को यहहि निदेस आइ कोऊ खिन उंघन।
तो मुहिं तिमहिं बताइ जबहि चेताइ देहु जन।

सब निदेस बस स्वजन मरन न करन भय मानत।
जिन अंतहपुर जनन जबहु जावन दिय जानत।
कोउन हरैंहिं तिनमें कहिय किम इनबल इक्कन कदन।
इन्ह राह लखत पहु रान जिन्ह दृग खुलै न न मिलैं बदन॥३७॥

इधर राजा हाड़ा का यह स्पष्ट निर्देश था कि कोई भी यहाँ आ कर मेरी ऊंघ में खलल न डाले। जब मैं आवाज दूँ तभी मुझे किसी का मुँह दिखाई दे। राजा के सारे सेवक अपने मरने से डरते हुए राजा की आज्ञा का पूरा पालन करते थे और आज्ञा तोड़ने से डरते थे। जब उन्होंने देखा कि जनाना भी साथ है तो उन्हें शिविर में जाने दिया। इस जनाना झुंड में से किसी ने हौले से राजा को देख कर यह कह दिया कि यह आदमी भला कैसे इक्कों को मारेगा? हमारे महाराणा भी ऐसों का रास्ता देख रहे थे जिनकी आँखें ना खुलती नहीं और मुँह बंद होता नहीं?

यहहु लई सुनि अप्प होइ अवहित तदनंतर।
हसि बडसस्सू प्रहित सहित सब रक्खि प्रीतिपर।
पहु रुप्पय सतपंच उचित सोदर तिन्ह अप्पिय।
मिलि इक्कन पुनि गमन थानसंसद मन थप्पिय।
निस रहत जाम अप्पहिं नियत अक्खि जगावन अनुचरन।
करि चैन असन सुख सैन किय सूरधर्म रक्खत सरन॥३८॥

हाड़ा राजा नारायणदास ने यह सुन लिया और सुनते ही मन ही मन सचेत हो गया इसके बाद अपनी बड़सासू द्वारा भेजे गए सारे उपहार प्रीतिपूर्वक स्वीकार कर लिये और उनके साथ आए लोगों को पाँच सौ रुपये देकर राजा ने उन्हें विदा किया। इसके बाद राजा ने उन इक्कों से राज सभा में मिल कर वापस आते ही मन ही मन कुछ निश्चय कर अपने सेवकों को निर्देश दिया कि कल सुबह एक प्रहर रात रहते मुझे जगा दिया जाए। इसके बाद आराम से भोजन कर उस वीर ने वीरता के धर्म को मन में रख कर सुख सेज पर शयन किया।

रहत जाम खिलरत्ति जग्गि सुचि करि संध्या [illegible]।
बिबिध सद्धि व्यायाम तुलन मल्लन असह्य तप।

मन छ लोह मुद्गरन उछटि हनि अंस उडावत।
बिबिध झंप दंड बहु अैंचि अतिबल उफनावत।
सत्वर कसाइ हय सजि सलह बिजय पट्ट बाहुन बिलसि।
मन अद्ध संगि अय मय महिप कर झल्लिय सब हेति कसि ॥३९॥

एक प्रहर रात्रि के रहते जग कर राजा ने शौचादि से निवृत्त हो कर संध्या पूजा और जप आदि का नित्य नियम निभाया। इसके बाद विविध व्यायाम किया जो किसी भी मल्ल द्वारा की जाने वाली कसरत के बराबर था। छह मन (भार का एक माप) भारी मुद्गरों को अपनी भुजाओं और कंधे की टक्कर दे कर घुमाया। इसके बाद दंड बैठक कर शरीर को स्फूर्तिवान बनाया। फिर स्नान कर कपड़े पहने और ऊपर से शिरस्त्राण, बाहुकवच आदि पहन कर अपने घोड़े पर जीन कसने का आदेश किया फिर खुद सारे शस्त्र धारण कर घोड़े पर सवार हुआ और अपनी आधा मन भारी लोहनिर्मित बरछी हाथ में ली।

भटन रोकि प्रभुभाव नलिय इक्क हु सहाय नय।
इक्कन उप्पर इक्क हड्डु हंकिय आरुहि हय।
उत निमाज मुख उचित सद्धि व्यायाम बनावत।
दूतन अक्खिय दोरि इक्क इक्कल हय आवत।
सत्थ के जवन लग्गे सजन तिन्ह निवारि अतिमद धरत।
इक भयउ सज्ज उत इक अभय करत हो सु रहिगो करत ॥४०॥

इस प्रकार सज्जित हो कर राजा नारायणदास जब रवाना होने लगा तो उसके सामन्तों ने भी साथ चलने का अनुरोध किया पर राजा ने किसी को साथ नहीं लिया। इक्कों पर एक अकेले हाड़ा ने जाने के लिए अपना घोड़ा बढ़ाया। उधर इक्के भी अपने शिविर में नमाज आदि से निवृत्त हो व्यायामरत थे। इस समय उनके दूत ने जा कर उन से कहा कि कोई एक अकेला घोड़ा आ रहा है। इक्कों के साथ वाले सैनिक सज्जित होने लगे तो उन्हें दर्प से भरे इक्कों ने रोक दिया कि तुम्हारी आवश्यकता नहीं पड़ेगी। उन दोनों में से भी एक ही इक्का सज्जित हुआ दूसरा अपने काय में संलग्न रहा।

कछुक बिंब रवि कढत इक्क पिक्खिय नृप आवत।
कबहु कुब्जबपु कबहु लहरि हानैं सिर लावत।

कहिय मिच्छ सिसु कोन इतसु मरिबे किम आवै।
बदिय चरन बुंदीस उंघि इम अमल उगावै।
तब जानि दम्म दैन न तकिय रान कुहक छल तकिय रन।
पैइक सवार आगमन प्रथन किम इम चिंतिय मिच्छ मन ॥४१॥

सूर्य आधा ही निकला था कि राजा को वहाँ आते देख कर एक ने कहा कि कोई आ रहा है जो कुबड़ा सा दिखता है। घोड़े पर कभी इधर-उधर हिचकोले खाता जो कभी काठी के अग्रभाग पर अपना सिर टिकाता है। उसे देख कर यवन इक्के ने कहा कि यह कौन बच्चा है जो यहाँ मरने के लिए आ रहा है? तभी हलकारों ने कहा कि यह बच्चा नहीं बूँदी का हाड़ा राजा नारायणदास जो अपने अफीम का नशा उगा रहा है। (अफीमची अफीम खा कर थोड़े समय तक उसका नशा चढ़ने की प्रतीक्षा करता है इसे राजस्थानी भाषा में अमल उगाणा कहते हैं।) तब उन इक्कों ने मन ही मन सोचा कि बकाया खिराज की राशि नहीं देने के लिए महाराणा ने कोई नया छल किया लगता है। पर यह समझ नहीं आ रहा कि यह एक सवार भला आ कर क्या युद्ध करेगा। म्लेच्छों ने मन में सोचा।

पहिचानिय दृग परत निकट आवत नारायन।
इक्का चढि खिल अटकि हुत्त हंकिय मत्ते मन।
सोर नकीबन सुनत हेंस तानत सम्मुह हय।
पहुमन बुद्ध हु प्रकट भान मंडिय तंहं निर्भय।
क्यों आत मरन ताके कहत भनिय रान रुप्पय भरन।
बिसिख न किंधोकि संगिन बदहु रुचत बिसिखतव कोन रन ॥४२॥

घोड़े के निकट आने पर पहचाना कि यह तो राजा नारायणदास है। यह देख कर एक इक्का अपने दूसरे साथियों को रोक कर होम होने को चला। नकीबों (बंदीजन) के शोर को सुन कर घोड़ा भी हिनहिनाया जिसे सुन कर राजा को चेत हुआ। उसकी बुद्धि ने साथ देते हुए सुना कि यवन कह रहे हैं कि यह क्यों मरने आया है? तब राजा ने जवाब दिया कि मैं खिराज के रुपयों की भरपाई करने आया हूँ। बोलो बिना शिखा वाले यवनो! धनुष-बाण से लड़ोगे या बरछी से? तुम्हें युद्ध करना किससे पसन्द है?

गदिय मिच्छ तव सुगम कलह सुहि लेहु वार करि।
प्रथम वार पाहुनन भूप अक्खिय साहस भरि।

तुरग फैंकि तब तुरक हड्डु उर कुंत प्रहारिय।
भिदि तनुत्र कछु भाग बाहु उर संधि बिदारिय।
मानहु अमाप अहिफेनमद होन चेत यह वार हुव।
मैं आत सम्हरि इम कहि मुदित सज्जिय संगि सुभांड सुव॥४३॥

यह सुन कर यवन इक्के ने कहा कि जिसमें तुम्हें सुविधा हो उसी का वार कर। इस पर हाड़ा राजा ने कहा कि नही! अतिथि होने के नाते प्रथम प्रहार का अधिकार तुम्हारा है। यह सुनते ही यवन ने घोड़ा बढ़ा कर हाड़ा की छाती पर भाले का प्रहार किया जिससे कवच का कुछ भाग बींध गया और राजा के हाथ और कंधे की संधि टूट गई। यवन का यह वार जैसे अधिक अफीम के नशे में राजा को चेतन कर गया। मैं आया संभल! यह कह कर चहुवान सुभांड के पुत्र ने मुस्कराते हुए अपनी बरछी उठाई।

सरभव कर संग्रहिय हनन जनु क्रोंच केकिहय।
कै अमोघ कर करिय करन जनु आत घडुक्कय।
जातु मनहु इंद्रजित्त पानि पकरिय लक्खन पर।
पित्थ भट कि पुंडीर खंभ बेधन लिन्नी खर।
गहि संगि दपटि हयरय गरुड़ उडत फाल बाहिय उससि।
तस उर तुरंग त्रिक बेधि तिम निकसि बस्ति गय धरनि धसि॥४४॥

हाड़ा ने बरछी हाथ में ली मानों क्रोंच पर्वत को बिखेरने के लिए मयूर के वाहन वाले स्वामी कार्तिकेय ने बरछी उठाई हो। या मानों घटोत्कच के आने पर कर्ण ने अमोघ शक्ति हाथ में ली हो। अथवा रावण के पुत्र राक्षस मेघनाद ने लक्ष्मण पर चलाने को शक्ति उठाई हो या कि पृथ्वीराज चहुवान के सामन्त पुंडीर ने खंभे को बेधने के लिए तीखी शक्ति हाथ में संभाली हो। इस तरह बूँदी के राजा नारायणदास ने गरुड़ के वेग से घोड़े को दौड़ा कर घोड़े के उछाल लेते वक्त अपनी बरछी चलाई जो इक्के के हृदय के साथ उसके घोड़े के कमर की हड्डी को बेधती हुई घोड़े के अंड प्रदेश को फोड़ कर भूमि में जा धंसी।

असनि अटकि मिच्छ उर अग्र इक कर धर अंदर।
पैठत हय चउ पयन खरो रहिगो सह पक्खर।

अतिबल बाहत अस्व भयउ नृप कोहु भिन्न कटि।
अपर इक्क सब उज्झि लखत सहसत्थ गयो लटि।
तस तुरग सज्ज थित ठान तकि चढि तिहिं नृप पुर संचरिय।
बल लखन रान परिगह बलिन अरिसन संगि न उद्धरिय ॥४५॥

राजा की बरछी उस यवन इक्के के हृदय भाग में उसका एक हाथ भी साथ लेती गई और घोड़ा कमर टूटने पर चारों पावों के सहारे पाखर सहित (घोड़ा अपने कवच सहित) वहीं का वहीं खड़ा रह गया और उनके प्राण निकल गए। हाड़ा ने ताकत लगा कर बरछी चलाई थी उसके झटके से उसके खुद के घोड़े की भी कमर टूट गई। यह देखते ही दूसरा इक्का लड़ने को आने की बजाय अपने आदमियों सहित वहाँ से भाग गया। दूसरे इक्के का घोड़ा पायगाँ (घोड़ा बांधने के स्थान) में सज्जित खड़ा था उस पर नजर पड़ते ही हाड़ा उस पर सवार हो कर नगर की ओर चला। उसने महाराणा के आदमियों के बल की परीक्षा के लिए शत्रु सहित भूमि में धंसी हुई बरछी को नहीं निकाला। उसे जस की तस वहीं छोड़ दी।

अरि हय नृप आरूढ आइ प्रतिरान कहाइय।
इक्क अनसु किय अपर जवन सव तजि लैगो जिय।
अनसुहु पिक्खन उचित सुचलि पिक्खहु परिगह सह।
सुनत चढिग सीसोद मचिग चित्तोर महामह।
तुरगहु तज्यो न सुनि आत तिंहिं अब बल निजनिज जुत उभय।
मिलि चलिय चढत छ घटिय मिहिर मिच्छ लखन जय मोदमय ॥४६॥

शत्रु के घोड़े पर आरूढ़ हो कर आए हाड़ा राजा ने महाराणा से कहलवाया कि एक इक्के को तो प्राणविहीन कर डाला पर दूसरा इसी बीच उसके शव को छोड़ कर अपने आदमियों सहित भाग गया। उसका क्या करें! हां वह मुरदा देखने योग्य है यदि आप उसे देखना चाहें तो अपने परिकरों सहित वहाँ चलें। यह सुनते ही कि सिसोदियों की जीत हुई पूरे चित्तौड़गढ में बड़े उत्सव जैसा माहोल हो गया। हाड़ा राजा ने अपना चढ़ा हुआ घोड़ा नहीं छोड़ा जब यह सुना कि महाराणा अपने आदमियों सहित वहाँ आ रहे हैं। राजा ने सोचा कि अब दोनों के अपने अपने बल की परीक्षा होगी। दोनों राजा छह घड़ी दिन चढ़े साथ-साथ प्रसन्न मुद्रा में उस यवन का

शव देखने गए।

दूरहिं सन तिहिं देखि सहय ठड्डो रवि की रुख।
कहिय पिसुन ढक्कूज मरन आनें अरि सम्मुख।
नृप सह सपथ निराइ जथा प्रत्यय लैगो जब।
बदिय वाह बुंदीस अभय तव भुजन करे अब।
संभर स्वसंगि कढ्ढुन कहत रहे करखि थकि रान के।
संग्राम चविय कढ्ढहु सुपहु प्रतिबल न तुम प्रमान के ॥४७॥

दूर से ही नजर पड़ने पर महाराणा ने देखा कि वह शत्रु घोड़े सहित सूर्य की ओर मुँह किये खड़ा है। इसे देखते ही उस चुगलखोर ढक्कू चहुवान के पुत्र ने कहा कि यह तो राजा धोखा कर हमें शत्रु के समक्ष मरने को ले आए लगते हैं। अर्थात् वह तो युद्ध में सन्नद्ध मुद्रा में खड़ा है और जीवित है। इस पर हाड़ा राजा ने शपथपूर्वक कहा कि तुम उसके समीप जा कर परख कर लो। तुम्हें विश्वास हो उस प्रकार परीक्षा करो। जब उसने पास जा कर देखा तो अचानक उसके मुंह से बरबस निकल पड़ा वाह! हे बूँदी के स्वामी! हमें अभय आपकी भुजाओं के सहारे मिली है। इसके बाद चहुवान राजा ने कहा कि महाराणा! हमारी बरछी निकलवा दीजिये। यह सुन कर महाराणा के वीर उसे निकालने के लिए खींच-खींच कर हार गए पर बरछी नहीं निकली। ऐसा देख कर राणा सांगा ने कहा हे राजा! आपकी बराबरी करने वाला दूसरा कोई योद्धा नहीं, आप ही निकालिये।

सु सुनि कहिय संभरिय बाजि मम मृत इहिं बाहत।
मिच्छ तुरग तउ मिलत हानि न गिनी सु जथा हत।
इतर हय न अैसोहु अन्य यातैं हय आनहु।
सुनि रानहु दिय सप्ति चढिय निज तजि चहुवानहु।
तिरछो सु फैंकि ठेंकन तुरग कढ्ढिय झाटकि संगि कर।
कटिभग्न वहहु मृत कति कहत परि घुटनन गो थकि अपर ॥४८॥

यह सुन कर हाड़ा राजा ने कहा कि इसे चलाते समय मेरा घोड़ा मारा गया पर मुझे तो अपने घोड़े के एवज में उस म्लेच्छ का यह घोड़ा मिल गया कोई अधिक हानि नहीं हुई। पर अभी और कोई दूसरा घोड़ा नहीं है इसलिए एक घोड़ा मँगवाइये। यह सुनते ही महाराणा ने अपना घोड़ा हाड़ा राजा को

दिया और स्वयं चहुवान के घोड़े पर सवार हुए। हाड़ा ने इस घोड़े को तिरछा बढ़ा कर घोड़े को उछाल दिलवाई और उसी समय अपनी बरछी को पकड़ कर एक झटके से निकाला पर इस झटके से उस घोड़े की कमर भी टूट गई और वह मर गया। कुछ लोग यह भी कहते हैं कि नहीं घोड़ा मरा नहीं उसके घुटने भूमि पर टिक गए।

दोहा

इक्कन के द्वै हय अपर, बल निज उचित बचाइ।
कड्ढी संगिसु रान के, चढि हय झंप रचाइ॥४९॥
अक्खिय तिन्ह उपहार यह, थप्पहु अब निज थान।
अर्ब उभय लिय हम उचित, रीझ सु मन्नहु रान॥५०॥
रान कहिय ए अरु इतर, गज हय हेति स्वगेह।
बत्त कतिक चित्तोर बलि, इहिं आसान अनेह॥५१॥

हाड़ा राजा ने दूसरे इक्के के घोड़े को अपनी ताकत के झटके से मरने से बचा लिया और अपनी बरछी राणा सांगा के घोड़े को उछाल भरवा कर निकाली। इसके बाद राजा ने महाराणा से कहा कि अब इस घोड़े को उपहार स्वरूप स्वीकार कर आप अपनी हयशाला में रखें। रहा सवाल हमारा तो हमने जो दो घोड़े मारे उन्हें आपकी रीझ की भेंट समझेंगे। इस पर महाराणा ने कहा कि नहीं, यह घोड़ा और इसके अतिरिक्त हाथी, घोड़े और शस्त्र सभी कुछ आप बूँदी ले पधारें! चित्तौड़गढ़ के राणा ने कहा कि आपके इस एहसान के बदले में इन घोड़ों की औकात ही क्या है?

षट्पात्

न आसान नृप कहिय आदि धर्महि अप्पन यह।
अक्खोहिनि मृत अग्ग ओर दुव करि अट्ठारह।
मिहिकावति बहु महिप गोग हित आत अबूफर।
कंगुरपति के कज्ज समरा केदार सिकंदर।
जिम बहु परेहि आवत जवन प्रपितामह गोपाल हित।
महमूद आत गजनी मुकुट बहु भूपन निपतन बिदित॥५२॥

यह सुन कर हाड़ा राजा नारायणदास ने कहा कि हे महाराणा! यह कोई एहसान नहीं है। यह तो हम लोगों का आदि धर्म है सहायता करने का। पूर्व में आप जानते हैं दोनों पक्षों की मिला कर अठारह अक्षौहिणी सेना मरी थी। अबूफर चढ़ कर आया तब मिहिकावती में गोग चहुवान के साथ कितने राजा मारे गए थे? आप से यह भी छिपा नहीं कि कांगड़ा के राजा केदार के काम में सिकंदर के सामने कितने राजा काम आए थे? मेरे प्रपितामह चहुवान गोपाल के हित के लिए यवनों के सामने कितने राजा मरे? गजनी वंश के मुकुट महमूद के आक्रमण में कितने राजा मरे यह सर्व विदित है। इसलिए आप एहसान की बात मत करो।

दोहा

जवन सहाबुद्दीन जब, गोरी जिततित गंजि।
आवत इत रन बहु रहे, भूप जवन बहु भंजि॥५३॥
अग्जन मंडल अग्गमि रु, बनि बैठे हु बहोरि।
पुनिपुनि दक्खिन उदग पहु, मरत देत कै मोरि॥५४॥
अबहि रावरे गढ अधिप, चउरासिय चित्तोर।
रहिय अलाउद्दीन रन, इत उत तिम बहु ओर॥५५॥

यवन शहाबुद्दीन गोरी यहाँ वहाँ हमले कर जीतता हुआ जब यहाँ आर्यावर्त में आया तो हे महाराणा! यहाँ के युद्धों में कई राजा बहुत सारे यवनों को मार कर खेत रहे। आर्यमंडल को दबा कर वे यहाँ के कितनी बार राजा बने थे और इस तरह दक्षिण और उत्तर दिशा के राजा मरते रहे पर मर कर उन्हें मोड़ते भी रहे हैं। हे चित्तौड़पति! आप अभी भी चौरासी गढ़ों के अधिपति हैं जबकि आपको पता होगा कि अलाउद्दीन ने यहाँ वहाँ कितनी बार इसे लेने के लिए युद्ध किये थे।

षट्पात्

कर नृप के इम कहत जोरि संग्राम चविय जंहं।
आसान हिं किय एह तकहिं को० न सहाय तंहं।
पहु दुव इम संलपत मिले बाजिन आये मुरि।
सहहि रान प्रासाद जाइ बिष्टर बैठे जुरि।

बुंदीस भुजन अर्चन बिहित संभृत सब उपहार सह।
मुत्तिय चढाइ अक्खिय महिप अप्प भुजन चित्तोर यह ॥५६॥

हाड़ा राजा से यह सुन कर महाराणा सांगा ने हाथ जोड़ कर कहा कि हे राजा! आपने तो समय देख कर एहसान ही किया है। इस समय और कोई सहायता करने वाला नहीं था। दोनों राजागण इस तरह बातचीत करते हुए अपने घोड़ों को मोड़ कर साथ-साथ चलते हुए नगर में आए। यहाँ से सारे सीधे राजप्रसाद में जा कर साथ-साथ गद्दी पर बैठे। वहाँ महाराणा ने हाड़ा राजा की भुजाओं की पूजा करने के लिए सारी सामग्री और उपहार मँगवाए फिर बूँदी के राजा की भुजाओं पर मोती चढ़ा कर पूजा करते हुए कहा कि हे राजा! अब तो आपकी भुजाओं के भरोसे ही यह चित्तौड़गढ़ है।

स्व पर भटन तंहं सबन रचिय नृप नजरि निछावरि।
पूरन ढक्कुव पुत्र दुमन सद्धिय निदेस डरि।
सुता कुलिय सस्सू हु इम हिं उपदा उत्तारन।
सह पठये संसदहि नृपहु किय आदि निवारन।
बलि तत्थ असन उभय हि बिरचि संभर नृप आयउ सिबिर।
अहिफेन समय पुनि लिय अमल चितवत पातुरि नटनचिर ॥५७॥

इसके बाद बूँदी के और चित्तौड़गढ़ के सामन्तों ने उठ कर बूँदी के राजा नारायणदास को नजराना करना शुरू किया फिर राजा पर न्योछावरों (निछरावलों) का दौर चला। इस समय कोठारिया के चहुवान ढक्कू का पुत्र पूरणमल का मन नही होते हुए भी डरते हुए उसे अपने पिता को मारने वाले राजा को नजराना करना पड़ा। इसी समय जनाना महल से राजा की पुत्री (अपने छोटे भाई की बेटी जो यहाँ ब्याही थी) और बड़सासू ने नजराना और न्योछावर साथ ही राजसभा में भिजवाई। इनमें से हाड़ा राजा ने प्रथम (नजराना) को माफ कर दिया। इसके बाद दोनों राजाओं ने साथ बैठ कर भोजन किया फिर हाड़ा राजा अपने शिविर को आया। अपने अफीम लेने का समय हो जाने पर अफीम लिया और नृत्य में चतुर पातुरियों को याद किया।

पननारिन सह सिक्ख रीझि सतसत दिय रुप्पय।
संध्या दिक सब सद्धि समय किय असन महासय।

द्विरक इक्क बाजि दुव मुट्ठि मनिजटित इक्क असि।
सरधि चाप सिरुपाव पट्ट इक इक सु अंत्य ससि।
अतिप्रीति रान उपहार इम हड्डु सिबिर पठयो हुलसि।
पठई कहाइ यह अब्द प्रति बुंदियपुर भेजहिं बिकसि ॥५८॥

थोड़ी देर बाद सारी गणिकाओं को रीझ के दस हजार रुपए दे कर जाने की आज्ञा दी फिर राजा ने नित्य नियम के अनुसार संध्या की और भोजन कर शयन को गया। दूसरे दिन महाराणा ने प्रसन्न हो कर हाड़ा राजा के शिविर में एक हाथी, दो घोड़े, मुट्ठी भर हीरे जवाहरात, एक तलवार, एक तरकश, एक धनुष, एक सिरपाव, एक सिरपेच और एक स्वर्ण निर्मित आभूषण (चन्द्रमा) यह सारी सामग्री उपहार स्वरूप भिजवाई। ये सारी चीजें भेंट भेज कर कहलवाया कि चित्तौड़गढ़ प्रतिवर्ष प्रसन्न हो कर इसी माफिक भेंट बूँदी भिजवाएगा।

दोहा

अक्खिय भूपति वारि यह, पट्टिस खड्ग पिधान।
पठवहु जुग इहिं नर्म पर, रुचिर तेहु दिय रान ॥५९॥

इतनी सारी सामग्री देख कर बूँदी के राजा नारायणदास ने कहा कि आप ये सारी चीजें वापस ले जाएँ बस मुझे एक कटार और तलवार की दो म्याँनें भिजवा दें। इस मसखरी को सुन कर महाराणा ने तुरन्त हँस कर दो म्याँनें भी भिजवाई।

षट्पात्

दिय चउसत तिन्ह दम्म रान अनुगन अतिहित रत।
आइ रान दिन अपर मंत्र किय सिबिर नीति मत।
मालव गुज्जर मंतु सुनत ऐहैं दुव सत्थहि।
भनिय रान तब भूप उचित आगम निज अत्थहि।
बुंदिय जु काम पहिलैं बनैं तो मम आगम होहि तंहं।
इम थप्पि नियत सबदिन उभय करत रहे दृढ प्रीति कंहं ॥६०॥

अगले दिन हाड़ा राजा ने महाराणा के चार सौ सेवकों को अपनी ओर

से बहुत सारा इनाम दिया। दूसरे दिन महाराणा सांगा चल कर राजा बूँदी के शिविर में कुछ नीतिगत मंत्रणा करने के लिए आया। महाराणा ने कहा कि अब हमारे इक्कों को मार भगाने के इस अपराध को सुनते ही मालवा और गुजरात के दोनों बादशाह साथ ही चढ़ कर आएँगे। यदि ऐसा हो जाए तो आपको वापस आना पड़ेगा और चित्तौड़गढ़ छोड़ कर यदि वे बूँदी पर पहले आ गए तो मैं वहाँ आऊँगा। इस तरह का दोनों राजाओं ने आपस में इकरार कर परस्पर प्रीति का प्रदर्शन किया।

पुनिपुनि नृप प्रासाद नगर खुरली हु निहारिय।
इम मृगव्य आराम नगर खुरली हु निहारिय।
मास अवधि महिपाल रहिय चित्तोर निरंतर।
सदन पधारन समय सुता पठवन कहि संभर।
कर्मवति नाम नरबद कुमरि आयउ लै बुंदिय अडर।
इक्का हन्यों सु नृप जस अतुल बढि हुव दिसन प्रकास बर॥६१॥

इसके बाद बार बार हाड़ा राजा महाराणा के महलों, नगर और हयशाला का निरीक्षण करने गया। उसी तरह शिकारगाहों, बाग-बगीचों और शस्त्रशाला को भी देखा और उनके विकास की राय दी। इस प्रकार एक माह की अवधि यहाँ चित्तौड़गढ़ में बिता कर वापस अपने नगर के लिए चलते समय चहुवान राजा ने कहलवाया कि हे महाराणा! हमारी बेटी को भी पीहर जाने की आज्ञा दें। महाराणा ने तुरन्त अपनी स्वीकृति दी तब अपने छोटे भाई नरबद की पुत्री कर्मावती को साथ ले कर वह निडर राजा बूँदी पहुँचा। यवन इक्के को जिस वीरता से राजा ने मारा उसकी सुन्दर कीर्ति राजा से पहले ही बूँदी पहुँच चुकी थी क्योंकि वह तो दिशा-दिशा में फैल गई थी।

दोहा

गहत पट्ट दिल्लीय मुगल, सुनि यह बाबर साह।
जान्यों ढिग ऐसे जुरैं, लब्भैं तब जय लाह॥६२॥

सुपहु गंग इत बग्घ सुव, किय गोचर जब काल।
जनक पट्टलिय जोधपुर, मालदेव महिपाल॥६३॥

उधर दिल्ली के तख्त पर आसीन होते ही मुगल बाबर ने जब यह

खबर सुनी तो उसने सोचा यदि ऐसे राजाओं से सामना हो जाए तो फिर हमें विजय का लाभ कैसे मिलेगा ? इसी समय जोधपुर के राजा व्याग्रराज (बाघा) के पुत्र राजा गंगासिंह (गांगा) पर काल ने अपनी दृष्टि डाली अर्थात् वह मर गया। तब अपने पिता की गद्दी पर मालदेव बैठ कर वहाँ का राजा बना।

इतिश्रीवंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे पंचम राशौ वीतिहोत्र-चतुर्बाहुम द्वीग्यवर्मनबीजहड्डाधिराडस्थिपाल वंश्यानुवंश्यविहितव्याख्यानावसरव्याख्यायनीयबुन्दीनरेन्द्रनारायणदास चरिते हयद्वितीय क्रीडिताच्छोटनप्रत्यागम्यमानतावदहिफेनमदमीलितनेत्रबूँदीशनर्मोपहसित-तैलितरुणीकण्ठातिभरलोहकु शकुण्डलीकरण तावन्मादकमत्तमहीपमल्ल मातङ्ग मृगेन्द्र संरोधशासनसमर्थबलविख्यापन बुन्दीपुरप्राप्तचाक्रिक-प्रार्थ्यमान पृथ्वीशतैलिनीकण्ठकुशबन्धनविमोचन हेमन्तक्षणलघुशौचाऽऽचरणाऽऽसीनमादकपारवश्यमीलितदृक्प्रातःप्रबुद्धपृथ्वीपरिबृढतद वधिसभात्त सलिलस्वर्णपात्रसपर्यासावधानस्थितप्रार्थनाप्रेरितराज्ञी राष्ट्र-कूटीयाचिततद्धस्ताऽहिफेनाऽऽदानाऽभ्युपगमन स्वसहधर्मिणीनिजयुक्ति-ह्यसरक्षिताऽष्टादश मासकमितमात्रामादकमत्तमृ गयारममाणदंष्ट्रिदलनदूर-दोद्रूयमाणकृतकार्यसमागतमादककालातिक्रमतसममास्तीर्णसप्त्यासन-सौभाण्डिकरीरकारस्कराधःशयन क्रकरकाण्डच्छायासमपसरणसमयनिः-सृतैककालकाकोदरच्छ त्रोचितोपरिच्छत्रीकृतफणच्छायाप्रबुद्धपृथ्वी-शनिगृहीतनागपुनःपुनर्दशन तद्विषवर्द्धितद्वि गुणमदमोदमानसम्मिलित-सर्वसैन्यस्क न्धावारसमागतप्रभुष्टच्छायाथातथ्याऽबबुद्धराज्ञीस्वहस्त-मादकदापनसमुत्सर्ज्जन महीशशपथदूरीकृततद्दरदरस्वास्थ्यसङ्गताराज्ञी-राष्ट्रकूटीतद्रात्रिरविमल्ल गर्भधारण वसु बण्टाहिफेनह्रास कुम्भिनीकान्त-कुमारराष्ट्रकूट्यौरससूर्यमल्ल राजमल्ल कल्याणमल्ल त्रय भौजिष्येयसहस्त्रमल्ल सप्तल द्वय संकलितपंचक समुद्भवन।

श्री वंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण की पंचम राशि में अग्निवंशी चहुवान वंश वर्णन के कारण हड्डाधिराज अस्थिपाल के वंश और वंश की शाखाओं की कथा बताने के समय के वचनों में विख्यात करने योग्य बूँदी नरेन्द्र नारायण दास के चरित्र में घोड़ा ही है दूसरा साथी जिसके अर्थात् अकेले शिकार खेलकर वापस आते हुए अफीम के नशे से मिचे हुए नेत्रों वाले बूँदी नरेश की मसखरी (हंसी) करने के कारण तेली की स्त्री के कंठ

में अति भारवाली लोहे की कुस की कुंडली बना कर डालना, उस नशे में मस्त राजा का मल्ल, हाथी और सिंहों को रोकने और शासन करने में समर्थ बल की प्रसिद्धि करना, बूँदी पुर में गये वापस तेली की प्रार्थना से राजा का तेली की स्त्री के कंठ से कुस का बन्धन छुड़ाना, हेमन्त ऋतु के समय लघुशंका करने को बैठे हुए नशे के परवश नेत्र मिच जाने से प्रभात समय में जगने वाले राजा का उस समय तक स्वर्णपात्र में जल लिये सेवा में सावधान खड़ी और प्रार्थना से प्रेरणा की हुई रानी राठौड़ी के मांगने से उसके हाथ में अफीम लेना स्वीकार करना, अपनी विवाहिता स्त्री की युक्ति से घटाकर अठारह मासा रक्खी हुई अमल की मात्रा के नशे से शिकार खेलने में सूअर को मारने के लिए दूर जाकर सूअर को मारने पर अफीम खाने का समय निकल जाने से घोड़े का गदैला बिछाकर सुभाण्ड के पुत्र का करीर वृक्ष के नीचे शयन करना, उस करीर वृक्ष की शाखाओं की छाया निकल जाने के समय बाहर निकले हुए एक काले सर्प का छत्र के योग्य ऊपर छत्र किये हुए फण की छाया करने पर उस छाया से जगे हुए राजा के पकड़े हुए सर्प का बारम्बार डसना, उसके विष से दुगुने बढ़े हुए नशे से प्रसन्न राजा को सब सेना मिलने पर राजधानी में आये हुए राजा से रानी के पूछने पर यथार्थ वृत्तान्त जानने के बाद रानी का अमल देना छोड़ना, राजा के सौगन्ध खाने से उस सर्प के विष का भय दूर होने पर स्वस्थता सहित रानी राठौड़ी का उसी रात्रि में सूर्यमल्ल को गर्भ में धारण करना, आठ हिस्सा अमल घटाने पर भूपति नारायणदास के राठौड़ी के उदर से सूर्यमल्ल, राजमल्ल और कल्याणमल्ल तीनों और पासवान के पुत्र सहसमल्ल, सातल दोनों मिलाकर पाँच कुमारों का जन्म होना।

प्राक्कालोत्तानशयत्वशालिशैशवस मयसमवगतकृतरोदन-कुमारार्कमल्ल दासीस्तनपानोदन्तकृत तत्किङ्करीताडनगृहीतपोत-पादभ्रामयन्तीराज्ञीरुधिरान्ततत्पोतसर्व दुग्धनिष्कासन सदैव-स्नेहसातिरेकसवित्रीतत्कुमरलालनकाल सर्पसाम्यसम्बोधन सूचितसव त्समयकृतकायहानदिल्लीपतिलोदिपठानसिकंदर सूनुज्येष्ठेब्राहीम पितृपट्ट-प्रापणानन्तर स्वानुजजलाल मारणसन्त्रस्तकनिष्ठालाबुद्दीन कावलपलायन जनकानन्तरप्राप्तान्दजान राज्यस्वदोर्जितसमरकंद परस्परभ्रातृजनद्रोह-भावपरिभ्रष्टपुनः प्राप्तराज्यद्वय पुनस्तत्तांयुजबकसमाक्रान्तसमरकन्द मुगलतैमूर वंशीयतदन्दजानधीशबाबर काबलराज्यसमासादन दिल्लीश-

सर्वाधिकारि दौमनस्यसमयमुलतानसूबाध्यक्षदोलतखानप्रेषितपत्रपूर्व-शरणप्राप्तलावु द्दीन समाक्रान्तकाबलप्रत्यन्तपतियवनेन्द्रबाबरा दिल्ली-समाक्रमणावसरसूचन सज्जपंचदशसहस्र सैन्य द्विचत्वारिंशद् वर्षवयस्क-युवावस्थस्वसूनुसहितदिल्लीनिनीषुसमुत्तीर्णकरतोयसमायातसम्मिलिता-ऽनेकपरपक्षीयपानीयपथप्रधन व्यापादितेब्राह्मीम म्लेच्छमहेन्द्रबाबर दिल्लीपट्टप्राप्तिशक सूचन दिल्लीभोक्तृयवनभेदसूचनापुरस्सरनानासूबा-पतिसंभेदक मालव गौर्जर म्लेच्छराजद्वय दिल्लीशप्रतिभटभावसाम्यसू चना-संकथन।

पहले समय में सीधे शयन करने वाले अत्यन्त बालकपन के समय में रोने से कुमार सूर्यमल्ल को दासी का स्तनपान कराने का वृत्तान्त जान कर उस दासी को धमकाकर बालक के पैर पकड़ कर भ्रमाने वाली रानी का अन्त में रुधिर आया वहाँ तक उस दासी के दूध को निकालना, सदैव अन्तःकरण के अत्यंत स्नेह से माता का उस कुमार का लाड करने में काले सर्प का संबोधन करना, दर्शाये हुए सम्वत् में दिल्ली के बादशाह लोदी पठान सिकन्दर के देहान्त होने पर उसके बड़े पुत्र इब्राहीम का पिता का पाट पाये उपरांत अपने छोटे भाई जलाल को मारने से डरकर छोटे भाई अलाउद्दीन का काबुल भागना पिता के पीछे अन्दजान का राज्य पाकर अपने भुजों से समरकन्द को जीतने पर परस्पर भाइयों के द्वेष से राज्य भ्रष्ट होकर फिर दोनों राज्य प्राप्त होने पर फिर तातार और उजबक दोनों को लेना, इसके बाद समरकन्द दबा लेने पर मुगल तैमूर वंशवाले उस अन्दजान के स्वामी बाबर का काबुल राज्य को लेना, दिल्ली के बादशाह के मुसाहिबों के उदास होने के समय मुलतान के सूबेदार दौलतखान के भेजे हुए पत्र से पहिले अलाउद्दीन का शरण आना और काबुल को दबाने वाले म्लेच्छदेश के पति बादशाह बाबर के अर्थ दिल्ली लेने के समय की सूचना करना, पन्द्रह हजार सेना सज्जित कर बयालीस वर्ष की अवस्था में युवावस्था वाले अपने पुत्र सहित दिल्ली लेने की इच्छा से अटक नदी को उतरकर आये हुए अनेक शत्रुओं के पक्ष के लोगों के मिलने पर पानीपत के युद्ध में इब्राहिम को मारकर बादशाह बाबर के दिल्ली के पाट पाने के संवत् की सूचना करना, दिल्ली के भोगने वाले यवनों के भेद की सूचना करने के साथ अनेक सूबापतियों के भेदने वाले मालवा और गुजरात के दोनों यवन बादशाहों का दिल्लीश के शत्रुभाव की बराबरी की सूचना का कहना।

चित्रकूटाधिराजराणासंग्रामसिंहसम्बन्धिप्रत्यब्दसर्वावशिष्ट-धनर्णीभूतवार्षिककरसमादानार्थमुदाफर महमूद युग्म प्रतिवर्ष प्रतिभुज लक्ष-शोलायकसाहस्त्रिक दुर्द्धर्षस्वयमिक्कोपनाममात्रैकाकित्वप्रसिद्ध-यवनबीरैकै कचित्रकूटप्रेषण कथितरूप्यसंचयविलम्बप्राघुणकप्रीति सत्कृतम्लेच्छराशीर्षोद्दप्रच्छन्नाकारितसैन्यहड्डेन्द्रचित्रकूटगमन समुल्लङ्घित-सदैवसम्मुखागमनसीमशीर्षोद्दससत्कारबूँदीशसमानयन ज्ञापितस्व-सहायहड्डाव्हानकरद्रम्मानर्पणकृतदिनाऽष्टका वधिमत्तम्लेच्छद्वय मर्यादातिक्रमचित्रकूटपुरलुण्टनप्रतिश्रवण तिरोहितसूचितसम्बन्धि-त्वहेतुबूँदीशागमनराणामार्गितमासैका ऽवधियवनयुग्मप्रातः पत्तन-विपिप्लावयिषाप्रादुष्करण नृपगमनदिनभूतैतन्म्लेच्छ शीर्षोद्द पृच्छो त्तर पश्चात्क्षणदाक्षणबुन्दीशज्येष्ठश्वश्रूराणाराज्ञीराष्ट्रकूटीधनाप्रहित-स्वागतसहचारिजनान्तरशनैरतिमादकतन्द्रानवहितव्यादितवक्त्रघूर्ण मानसौभाण्डिकुत्साकरण सहास्यस्वीकृततत्स्वा गतप्रापकपरि जनार्थदत्तद्रम्मपंचशती कसमयसमनुष्ठिताशनसूचितयामि नीयाम शेषावसरजागरणहड्डेन्द्रशयनसेवन समयप्रबुद्धविहितसन्ध्या व्यायाम साहससंरुद्धस्वसर्वसुभटसन्नद्धसादीभूतसमात्तशक्तिकैकाकि-हड्डाधिराजयवनयुग्मो परिप्रस्थान दूतवि ज्ञापितैका ऽश्ववारागमनविधी-यमानव्यायामनिवारितसपरिग्रहद्वि तीयस्वसहधर्मसन्नद्धसप्तिसमारू-ढयवनैक सम्मुखागमसमयस्वान्तसावधानजनादिकोलाहलप्रकटप्रबुद्ध-मत्सरिराजप्रत्यनीकप्रेष्टप्रथनप्रियत्वपृच्छन यवनातिवीरकुन्तकृत्तसकङ्कट-कक्षान्तरवेधिसवाहवैरिवपुष्कबूँदीशकालायसकासूकोणकर मात्रपृथ्वी-प्रविशन यथातथस्थितीकृतससप्तिकपरासुप्रत्यन्तिप्रवीरत्यक्तातिबल-व्याघातभग्नकटिनिजाश्वनरेन्द्रससार्थपलायितापर यवनोचित ताश्वस-मारोहण।

चित्तौड़ के पति राणा संग्रामसिंह के हर वर्ष के चढ़े हुए सब खिराज से ऋणी होने के कारण सालाना खिराज लेने को मुदाफर और महमूद दोनों का प्रतिवर्ष अपने प्रत्येक भुज के एक एक लाख रुपये लेने वाले हजार मनुष्यों से लड़ने वाले दुर्द्धर्ष स्वयं अद्वितिय इक्का पदवी वाले से प्रसिद्ध एक एक यवन वीर को चित्तौड़ भेजना, कहे हुए रुपयों को इकट्ठे करने में विलम्ब होने से प्रीतिपूर्वक उन यवन पाहुनों का सत्कार करके सिसोदिया के गुप्त रूप से बुलाये हुए सेना सहित हड्डेन्द्र का चित्तौड़ जाना, सदैव की

सम्मुख जाने की सीमा को लांघकर सिसोदिये का सत्कार सहित बूँदीश को लाना, अपनी सहाय के लिए हाडे को बुलाने से राणा का खिराज के रूपये नहीं देना जतलाकर आठ दिन की अवधि देकर मयाद निकल जाने पर दोनों मस्त म्लेच्छों का चित्तौड़पुर को लूटने की प्रतिज्ञा करना, सम्बन्धी होने के कारण बूँदीश के चुपके आने को सूचित करके राणा के एक मास की अवधि मांगने पर दोनों यवनों का प्रभात ही नगर लूटने की इच्छा प्रकट करना, राजा के जाने के दिन म्लेच्छ और महाराणा के प्रश्नोत्तर हुए बाद रात्रि के समय बूँदीश की बडसास और महाराणा की राणी राठौड़ी धना के मेहमानी के लिए भेजे हुए मनुष्यों में से किसी का धीरे बोलकर नशे की ऊंघ से फटे मुख वाले और घूमते हुए सुभाण्ड के पुत्र (नारायणदास) की निन्दा करना, हास्यपूर्वक उस सत्कार को स्वीकार करके उसके साथ के लोगों को पाँच सौ रुपए देकर समय पर भोजन करने एक प्रहर रात्रि बाकी रहते समय जगाने की सूचना करके हाडे का शयन करना, समय पर जगकर संध्या और कसरत करके हठ से सब सुभटों को रोक कर सज्जित होकर घोड़े पर सवार हो बर्छी लेकर अकले हड्डाधिराज का दोनों यवनों के ऊपर जाना, दूत से एक सवार का आना जानकर कसरत करते हुए और अपनी परगह सहित अपने समान धर्मवाले (इक्के) को रोककर सन्नद्ध, घोड़े पर सवार हुए इक्के के सन्मुख आते समय मन में सावधान मनुष्यों के कोलाहल से सचेत होकर चहुवानराज का शत्रु के प्रिय युद्ध को पूछना, उस अतिवीर यवन के भाले से कवच सहित कांख कटने पर बेधने वाले वाहन सहित शत्रु के शरीर को फोड़कर बूँदीश की लोहे की बर्छी की नोक का हाथ भर पृथ्वी में प्रवेश कराना, पहले था उसी स्थित में घोड़े सहित यवन वीर को मृतक करके अतिबल के आघात से टूटी हुई कमर वाले अपने घोड़े को छोड़कर साथ वाले दूसरे इक्के के घोड़े पर चढ़ना।

नोद्धृतस्वशक्तिप्रत्यागतसमाहूतस्वसैन्यसङ्ग्रामसम्मिलितसौभाण्डिशक्तिसंस्थितस्थितद्वेषिदर्शनार्थपुनारंगस्थलागमन दूरदृष्टसजीवसन्देहकसप्तिस्थितसंस्थितसपत्तनढक्कूपुत्रपूर्णमल्लमेदपाटमहीपनारायणच्छलख्यापनावसरहड्डेन्द्रयथाप्रत्यसमीपसमानीतसर्वस्वान्तसन्देहसमापाकरण दृष्टशक्तयुद्धरणाऽसमर्थस्वात्मन्तशीर्षोद्दसस्लाघाविज्ञप्तमार्गितराणासप्तिसमारूढशाकम्भरस्वशक्तिसमुद्धरणाऽवसरतत्तुरगव्यसुत्ववैकल्य विचिकित्साविख्यापन समात्तस्वबलोचितयवनयुगा ऽश्वयुग्मा-

नंगीकृतराणाढौकितसर्वस्वसौभाण्डिशेषशत्रुसर्वोपहारशीर्षोद्दपस्त्य प्रस्थान मेदपाटपतिमहोपकारसूचनाऽवसरदर्शितनानापूर्बनृप तिदर्शनसमुपकार-लेशशून्यपुष्टीकृतसहायधर्महड्डु शीर्षोद्द जगतीजानिजकुट प्रत्यागमन सौधसभासहसमागतसिंहासनाऽऽसनाऽवसरराणामुक्ता दिमहोपहारमत्सरि-महीपदोर्दण्डसपर्या साधन वप्तृवैरविज्वलितस्वान्तासंश्रुतस्वामिसाध्व-सवहिर्वैरिवस्याविधित्सुपौर्विक पूर्णमल्लोपेतपक्षद्वय परिषत्प्रवीरप्रगुणप्रा-भृतप्रढौकनपुरस्सरपारियात्रप्रान्तपार्थिवोपरिसमुचितस्वापतेयसमुत्तारण स्वानुजसुता ज्येष्ठश्वश्रू श्वश्रू समुचितोपदो त्तारण पर्षत्प्रेषणक्षणसुता-स्वापतेयवर्जितस्वीकृ तसर्वसमुचितसम्भारसहभुक्तशिबिरागतबुंदी-शवारवारविशिष्टविद्याविलासवेलाद्दम्पायत वितरण मघनक्षित्रपाग-सन्ध्यादिकबुन्दीस्वामिसमीपराणाप्रत्यब्दप्रतिज्ञातप्रोक्तप्रमाणपीलु प्रथि कृपाणों पासङ्ग प्रदरासन पट पट्ट प्राभृतप्रेषणाऽवसरनिर्मितनर्मावनीश-कृपाण कट्टार रिक्तप्रत्यागारयुगयाचन स्वीकृतश्रुतैतदुदन्तसंग्रामप्रेषित-पोक्तप्रहरणपिधानयुग्म प्रापकपरिजनार्थदत्तद्रम्मशतचतुष्क सौभाण्डि-श्वःशिबिरागतराणासहनिःशलाकमन्त्रणमतमन्तुम्लेच्छराजयुग्मा गमपर-स्परसहायस्वीकरण विहितविविधबर्करविलासचित्रकूटव्यतीतैक मास-सौभाण्डिसौदर्यसुतासंग्रामसहधर्मिणीसहतिस्वस्थानीयसमागमन विज्ञात-विरोधिवीरविध्वंसवृत्तान्तप्राप्तेन्द्रप्रस्थपुरपट्टप्रत्यन्तपरिवृढयवनेन्द्रबाबर सौभाण्डिसदृशस्वसैन्यस हायसाधनसोत्कण्ठीभवन योधपुरपार्थिवराष्ट्र-कूटराजगंगतनुंत्यागानन्तरतत्तनूजमालदेवमरुस्वामित्वसमासादनं षड्विंशो मयूखः ॥२६॥ आदितस्त्रिसप्तत्युत्तरैकशततमः ॥१७३॥

अपनी शक्ति नहीं निकालकर वापस आकर अपनी सेना को बुलाकर संग्रामसिंह से मिलकर सुभांड के पुत्र का शक्ति से मरे हुए और ठहरे हुए शत्रु को दिखाने को फिर युद्ध स्थल में आना, घोड़े सहित खड़े मरे हुए शत्रु को दूर से देखकर जीवित होने के संदेह से अपने शत्रु ढक्कू के पुत्र पूर्णमल्ल का मेवाड़ के महीप को मारने का छल्ल बताने के समय हड्डेन्द्र का जिस प्रकार विश्वास आए जिस प्रकार समीप लाकर सब के मन का सन्देह मिटाना, अपने उमरावों को बर्छी पीछी निकालने में असमर्थ देखकर सिसोदिया के प्रंशसा सहित विज्ञप्ति करने पर राणा से घोड़ा माँग कर उस पर चढ़े हुए चहुवान के शक्ति निकालने के समय उस घोड़े के मरने अथवा विकल होने

के सन्देह की सूचना करना, अपने बल के उचित दोनों यवनों के दो घोड़े लेकर राणा के भेट किये हुए सर्वस्व को अस्वीकार कर सुभाण्ड के पुत्र का शत्रु की बाकी की सब सामग्री सिसोदिये के घर भेजना, मेवाड़ के पति के इस बड़े उपकार से सूचना करने के समय पहिले के अनेक राजाओं के दृष्टान्त दिखाकर उपकार के लेश रहित सहायता करने में धर्म की पुष्टि दिखाकर हाड़ा और सिसोदिया दोनों राजाओं का वापस आना। महलों की सभा में साथ आकर दोनों के सिंहासन पर बैठने के समय राणा का मोती आदि बड़ी सामग्री से चहुवान के भुजों की पूजा करना, पिता के वैर से भीतर से जलते हुए और बाहर से स्वामी के भय से शुश्रूवा करते हुए पूरबिया पूर्णमल्ल सहित सभा के दोनों पक्ष की सभा के वीरों के विशेष गुणवाला नजराना अर्पण करने पर बूँदी के प्रान्त के राजा के उपर उचित न्यौछावर करना, अपने छोटे भाई की बेटी और बड़सासू तथा सासू के सभा में उचित नजराना और न्यौछावर भेजने पर एक समय बेटी के धन को निवारण करके अन्य सब उचित सामग्री स्वीकार करके साथ भोजन कर डेरे में आकर बूँदीश का विद्या विलास के समय विशिष्ट वेश्या को दस हजार रुपए देना, सांयकाल की संध्या किये बाद बूँदी के स्वामी के पास राणा का सालियाना भेजने की प्रतिज्ञा सहित हाथी, घोड़ा, खड्ग, भाथा, धनुष, वस्त्र और शिरपेच आदि भेंट भेजने के समय राजा का हँसी करके खड्ग और कटार से खाली दो म्यान मांगना, इस वृत्तान्त को सुनकर संग्रामसिंह के भेजे हुए उपर कहे हुए शस्त्रों के दो म्यान लाने वाले लोकों के अर्थ चार स. रुपये देने वाले सुभाण्ड के पुत्र का अपने डेरे पर आये हुए राणा के साथ एकान्त में सलाह करके इस अपराध से दोनों बाँदशाहों के आने पर परस्पर सहायता स्वीकार करना, नाना प्रकार के परिहास के विलास से चित्तौड़ में एक मास बिताकर सुभांड के पुत्र का अपनी पुत्री और महाराणा सांगा की रानी हाड़ी सहित अपने स्थान पर आना, अपने शत्रुओं के वीरों का नाश होने की सूचना मिलने पर दिल्ली के बादशाह म्लेच्छराज बाबर का नारायणदास के सदृश राजा का अपनी सेना के सहायक होने की उत्कण्ठा करना, जोधपुर के राजा राठौड़राज गांगा के देहान्त पर उसके पुत्र मालदेव का मारवाड़ के स्वामित्व को लेने का छब्बीसवाँ मयूख समाप्त हुआ। और आदि से एक सौ तिहत्तर मयूख हुए।

प्रायो ब्रजदेशीय प्राकृत मिश्रित भाषा

दोहा

नृप पहिलैं नरबद अनुज, पाई संतति पंच।
तिनमें चउ सूचित तनुज, रन देर न जिन्ह रंच॥१॥
निज कुमरन सिसुपन नृपति, जुब्बनबय तिन्ह जानि।
ब्याहे च्यारि हु नारबद, पहिलैं उचित प्रमानि॥२॥

बूँदी के हाड़ा राजा नारायणदास से पहले उसके छोटे भाई नरबद के पाँच संतानें जन्मी। इनमें से चार पुत्र हुए उन्हें हम पहले बता चुके हैं। ये चारों वीर युद्ध रचने में रंचमात्र की देरी भी नहीं लगाते थे। अपने पुत्र तो शैशवावस्था में थे पर अपने भाई नरबद के पुत्र जवान हो गए यह जान कर राजा ने अपने भतीजों का विवाह पहले संपन्न करवाया।

षट्पात्

क्रम गुहिल्लपुत्र कुल दास अर्जुन अभिधा दुव।
तनया तस जयवतिय हड्डु अर्जुन व्याहत हुव।
सूर कबंध सुताहु ऊढ मीरां दूजी यह।
सीसउद्द संग्राम सुता केसरकुमरिय सह।
भगवंतसिंह कूरम कनी नाम अयोध्या जुत निपुन।
किय चउ बिबाह अर्जुन कुमर नरबद सुत पाटव प्रगुन॥३॥

क्रमशः सबसे बड़े नरबद के पुत्र हाड़ा अर्जुन का विवाह राजा ने गुहिल्ल वंश के दास और अर्जुन दो नामों वाले की पुत्री जयवती से किया। राठौड़ वंशीय सूरसिंह की पुत्री मीरां से अर्जुन हाड़ा ने दूसरा विवाह किया। सिसोदिया संग्रामसिंह की बेटी केसर कुमारी से तीसरा और कछवाहा भगवंतसिंह की कन्या अयोध्या से अर्जुन हाड़ा ने चौथा विवाह किया। चार विवाह करने वाला नरबद हाड़ा का यह पुत्र गुणवान और चतुर था।

दोहा

भीम कुमर दूजी भन्यों, चवहिं ब्याह तस च्यारि।
दुजनसिंह तोमर सुता, पहली कुसल कुमारि॥४॥

भोजाउत चालुक सुभट, अखयसिंह तनया सु।
क्रम ब्याह्यो अनुपमकुमरि, उपयम दूजे आसु॥५॥
कन्या कूरम भीम की, याही के अभिधान।
ब्याह्यो अनुपमकुमरि बलि, ब्याह तृतीय बिधान॥६॥
लालसिंह तनया ललित, ब्याहि चतुर्थ बिबाह।
अखयकुमरि प्रामारि इम, लिन्नों नृप जसलाह॥७॥

राजा के भाई नरबद के दूसरे पुत्र कुमार भीमसिंह ने भी अपने बड़े भाई की तरह चार विवाह किये। जिनमें से पहला विवाह उसने तंवर वंश के दुर्जनसिंह की पुत्री कुशल कुमारी से किया। भोजाउत चालुक्य अक्षयसिंह की पुत्री अनुपम कुँवरी से दूसरा और तीसरा विवाह अपने ही नाम वाले कछवाहा भीमसिंह की पुत्री अनुपम कुमारी से किया। प्रमार वंश के लालसिंह की सुन्दर कन्या अखै कुंवरी से राजा ने अपने छोटे भाई नरबद के पुत्र भीमसिंह का चौथा विवाह पूरी धूमधाम से संपन्न करवाया और सुयश पाया।

षट्पात्

तीजो नरबद तनय जुग हि अभिधान बिदित जस।
पूरनमल्ल रु पूर त्रय हि उपयम किनैं तस।
अखयराज सीसउद कनी पहिलैं राजकुमरि।
सदाकुमरि सोलंखि मान तनया बलि लिय बरि।
सुंदर कबंध तनया सुघर तीजी फुल्लकुमार तिम।
मुक्कल चतुर्थ ब्याह्यो महिप उपयम चउ सुनिये ब इम॥८॥

नरबद के तीसरे पुत्र जिसके अपने दो नाम पूरणमल और पूर थे ने तीन विवाह ही किये। पहला विवाह उसने सिसोदिया वंश के अक्षयराज की कन्या राजकुमारी से किया। सोलंकी मानसिंह की बेटी सदाकुँवरी से दूसरा और राठौड़ सुन्दरसिंह की गुणवती कन्या फूल कुंवरी से तीसरा विवाह किया। राजा नारायणदास हाड़ा ने अपने छोटे भाई नरबद के चौथे पुत्र मोकल के चार विवाह करवाए।

दोहा

कर्मध्वज सेढू कनी, उदयकुमरि बरि आसु।
बरि सृंगारकुमारि बलि, चालुक ढोल्ल सुता सु॥९॥

जद्दव मदन सुताहु जिम, रूपकुमरि अभिरूप।
बर मुक्कल तीजी बरिय, भ्रातुज मह किय भूप॥१०॥

उग्रसेन सुत कुम्म इम, अक्खयराज जु आहि।
कन्या तस सुंदरकुमरि, बर चोथी लिय ब्याहि॥११॥

सब ब्याहे पहिले समय, नरबद सुत नरनाह।
मुख्य कुमर रविमल्ल के, बलि किय च्यारि बिबाह॥१२॥

नृप झल्ल पुर निंबड़ी, किर कल्ल्यान कनी सु।
प्रथम समर्थकुमारि पटु, पट्टकुमर परनी सु॥१३॥

राठौड़ (कमधज) सेढू की कन्या उदय कुमारी से पहला, चालुक्य ढोल की पुत्री श्रृंगार कुंवरी से दूसरा, यादव मदनसिंह की बेटी रूप कुंवरी से तीसरा और कछवाहा उग्रसेन के पुत्र अक्षयराज की पुत्री सुंदर कुंवरी से चौथा विवाह किया। अपने इस भतीजे के विवाह भी राजा नारायणदास ने पूरी धूमधाम से समारोह पूर्वक किये। राजा ने फिर अपने पुत्र सूर्यमल के भी चार विवाह करवाए। निंबड़ी के झाला वंशीय कल्याणसिंह की कन्या समर्थ कुमारी से राजा के पाटवी कुमार ने पहला विवाह किया।

सुपहु उदय कूरम सुता, केसरकुमरि कुमार।
दूजे उपयम यह दुलह, परन्यों सुमह प्रसार॥१४॥

सुता रामपुर ईस की, नाम समान कुमारि।
चंद्रावति तीजी चतुर, ब्याह्यो सुजस बिथारि॥१५॥

उदयसिंह सारंग इम, जुग अभिधा स्फुट जास।
नृप प्रमारकुल श्रीनगर, तनया दुव हुव तास॥१६॥

रानकुमर पट्टप मरत, भोज जु प्रथम भन्यों सु।
रतनसिंह पट्टप रह्यो, श्रीनगरहु परन्यों सु॥१७॥

दूसरा विवाह कछवाहा राजा उदयसिंह की पुत्री केसर कुँवरी से पूरी धूमधाम से किया। रामपुर के राजा की पुत्री समान कुंवरी जिसका दूसरा नाम चन्द्रावती था' से राजकुमार ने तीसरा विवाह किया। श्रीनगर के प्रमार राजा जिसके दो नाम उदयसिंह और सारंगदेव थे के दो पुत्रियाँ थी। महाराणा चित्तौड़गढ़ का पाटवी कुमार भोजराज नामक था इसकी मृत्यु के बाद इसका छोटा भाई रतनसिंह पाटवी हो गया था उसने श्रीनगर के राजा के यहाँ विवाह

किया था।

षट्पात्

सुता बड़ी सारंग रान कुमरहिं परिनाई।
राजकुमरि रविमल्ल परनि अनुजा तस पाई।
पंच हि कुमरन सुपहु महन एकोनबीस मित।
बिरचे रुचिर बिबाह अनुज सिरको भर लै इत।
बाबर अधीस दिल्लिय बन्यों उपयम तासों पुब्ब इम।
आये न स्मरन व्हां तब इहां जंपिय भूत प्रवृत्त जिम॥१८॥

श्रीनगर के राजा प्रमार सारंगदेव की बड़ी बेटी को चित्तौड़गढ़ के महाराणा के पुत्र भोजराज से ब्याहा और उसकी छोटी बेटी राजकुमारी का विवाह बूँदी के कुमार सूर्यमल से हुआ। राजा नारायणदास ने अपने छोटे भाई के सिर का भार उतारते हुए सुन्दर समारोह सहित विवाह स्वयं ने किये। बाबर जब दिल्ली का बादशाह बना उससे पहले से ये विवाह संपन्न हो गए थे। मुझे (ग्रंथकर्ता सूर्यमल मीसण) यह जानकारी पहले देनी थी पर स्मरण नहीं आई इसलिए अब यह यह भूल वृत्तान्त के रूप में कहा है।

दोहा

सक हायन पैसट्ठि तैं, कढत लग्नहित केर।
अर्जुन अरु त्रय तस अनुज, ब्याहे निजनिज बेर॥१९॥

सक इकऊन असीति लग, सोलह सम अरिसल्ल।
क्रम इम च्यारि बिबाह किय, मुख्य कुमर रविमल्ल॥२०॥

किते कुमर रविमल्ल के, बरनत पंच बिबाह।
चालुकजा तंहं पंचमी, ते मन्नत नरनाह॥२१॥

इम सहस्त्रमल्ल रु अनुज, सप्तल समय बिसेस।
सुता नृपन तिन्ह बर्णसम, ब्याही दुव बसुधेस॥२२॥

संतति अब कहियत सबन, कति हुव पूरबकाल।
कतिक होत व्हैं कतिक, पै गब सुनहु नृपाल॥२३॥

कुमर खट रु इक कन्यका, सप्त हि कुल संतान।
क्रम पाये जेठेकुमर, अजुर्न प्रधन अमान॥२४॥

विक्रम संवत् के वर्ष पन्द्रह सौ पैंसठ से लग्न का आरंभ कर अर्जुन और उसके तीनों भाइयों को समय-समय पर ब्याहा। जब राजकुमार सूर्यमल हाड़ा विक्रम संवत् के वर्ष पन्द्रह सौ उनासी में सोलह वर्ष के हो गए तब शत्रुहंता उस वीर ने चार विवाह किये। कई लोगों का ऐसा भी मत है कि राजकुमार सूर्यमल ने चार नहीं पाँच विवाह किये। हे राजा रामसिंह! उनका पाँचवा विवाह चालुक्य वंश में हुआ था ऐसा माना जाता है। एक तो सहस्रमल और दूसरा उसका छोटा भाई सातल इन दोनों राजाओं ने अपनी-अपनी पुत्री का विवाह कुमार से किया था। हे राजा रामसिंह! अब मैं उनकी संतानों का हाल कहता हूँ। इनमें से कुछ तो पैदा हो चुकी थी, कुछ हो रही थी और कुछ बाद में पैदा हुई। मैं उन सभी को हे राजा! यहाँ कह रहा हूँ। छह कुमार और एक कन्या कुमार के सात संतानें हुई। इनमें सबसे बड़ा और पाटवी कुमार वीर अर्जुन था उसके बाद क्रमशः जानें।

षट्पात्

सुर्जन अक्खयराज राम जेठी कुमरानिय।
जिम मीरां रट्ठोरि जनत खंधिल इक जानिय।
जुग हि जनें सीसोदनी कुसरन रु लवनकरन।
कछवाही भव कुमरि इक्क गौरी लघु सब सन।
पहिले कुमार कुलधर प्रथित तीन भये प्रभु राम तंहं।
खिल चउ अपत्य लघुबय खपिय करहु श्रवन खिल बंस कंहं॥२५॥

इनमें से सुर्जन, अक्षयराज और राम ये तीनों तो बड़ी कुँवरानी की कोख से जन्में, राठौड़ कुँवरानी मीराँ के पुत्र खंभिल हुआ। दो पुत्र कुसरन और लवनकरन (लूणकर्ण) नामक सिसोदिया वंशीय कुँवरानी के जाये थे। कछवाहा कुँवरानी की कोख से एक गौरी नामक कन्या हुई जो सबसे छोटी थी। हे राजा रामसिंह! कुमार के पहले जो तीन पुत्र जन्मे वे ही कुल को धारण करने वाले रहे शेष सभी चारों छोटी उम्र में ही मर गये थे।

दोहा

जे गद्दीपति के अनुज, बदे सबन तिन्ह ब्याह।
भेदमात्र कुल के भनैं, तिन्ह पुत्रन नरनाह॥२६॥

अब नारायन कुल इहां, व्हैहैं गद्दिय हीन।
सुर्जन यह सुरतान सन पैहैं राज्य प्रबीन॥२७॥
यातैं नरबद अंगजन, बरनैं सबन बिबाह।
प्रभु को यह कुल परपुरुख, रचि स्वधर्म निर्बाह॥२८॥

हे राजा रामसिंह! मैंने बूँदी की गद्दी के स्वामी के छोटे भाई के पुत्रों के विवाह का भी पूरा वर्णन किया उसका कारण है क्योंकि इन्हीं से आपके कुल में नये भेद हुए। अब आगे राजा नारायणदास के वंशज तो गद्दीविहीन हो जाएँगे जो आगे सुर्जन अथवा सुरतान से वापस राज्य प्राप्त करेंगे। इसलिए नरबद के पुत्रों के सारे विवाहों का मैंने वर्णन किया क्योंकि हे स्वामी! नरबद भी आपके कुल का पूर्व पुरुष होगा जो अपना धर्म निबाहने वाला था।

पादाकुलकम्

अर्जुन अनुज भीम जो जानहु, प्रभु तस पुत्र हि पंच प्रमानहु।
सिंह अमान नाम तंहं द्वै सुत, जनैं प्रबीर तोमरी गुन जुत॥२९॥
इक सुत कन्ह चालुकी औरस, तीजी मृत्तिय जगन्नाथ तस।
मरे अनूढ अनुज चउ मानिय, तिन में ज्येष्ठ सिंह कुलतानिय॥३०॥
अभिधा अपर अर्जुन हु याकी, तिम जग अबहु कित्ति धुव ताकी।
अर्जुन कुल व्हैहैं प्रभु यातैं, मुख्य सिंह नरबद कुल तातैं॥३१॥
नाम जैतगढ़ ताहि निबेसन, दायभाग दिन्नों धरनाधन।
सिंहोलाव स्वनाम सरोवर, बिरच्यो तत्थ सिंह जगहित बर॥३२॥

हाड़ा राजा नारायणदास के छोटे भाई नरबद के पाटवां पुत्र अर्जुन से छोटा भाई भीमसिंह था। हे राजा रामसिंह! उसके पाँच पुत्र हुए। इनमें से बड़े दो पुत्र सिंह और अमान तो गुणवती तंवर कुँवरानी की कोख से जन्में। चालुक्य वंशीय कुँवरानी के गर्भ से एक बेटा कान्हा जन्मा और तीसरी कछवाहा वंशीय कुंवरानी ने मोतीसिंह और जगन्नाथसिंह नामक दो पुत्र जाये। हे राजा! भीमसिंह के पाँचों पुत्रों में से चार छोटे पुत्र तो अविवाहित ही बाल्यावास्था में मर गये। एक सबसे बड़ा सिंह ही शेष रहा जो कुल को बढ़ाने वाला था। इस सिंह का दूसरा नाम अर्जुन भी था जिसकी कीर्ति अब तक इस जग में विद्यमान है। हे राजा रामसिंह! इसी अर्जुन का वंशज बूँदी का

स्वामी बनेगा इसलिए अब आगे से नरबद का कुल ही मुख्य माना जाएगा। इस अर्जुन को अपने दाय भाग में रहने के लिए राजा ने जैतगढ़ नामक गाँव जागीर में दिया। जहाँ इसी सिंह ने अपने नाम से एक बड़ा तालाब सिंहोलाव बनवाया।

अरु प्रासाद जैतगढ़ अंतर, बिरच्यो अद्रि कटक सह बिस्तर।
हड्डुन तस कुल भेद सोलहम सिंहभीमपोते कहियत सम॥३३॥
है यह कुल चम्मलि परतट हद, अब हतोर बिल्लैहैंडि उकावद।
भीम अनुज पूरन जो भाखिय कहिय, जथा उपयम त्रय जिमि किय॥३४॥
जाकै मान कुमर हुव गुनजुत, सीसोदनि औरस इक्क हि सुत।
जब बुंदिय पाई नृप सुर्जन, पुर कोटा लिय भंजि पठानन॥३५॥
तंहं यह बीरमान पूरन सुत, व्है जय हेतु भयो हेतिन हुत।
यातैं मान कुल सु बिरुदावत, कोटा रन जयकार कहावत॥३६॥

सिंहोलाव तालाब के अतिरिक्त इसी हाड़ा कुमार सिंह ने पर्वत के शिखर पर जैतगढ़ में बड़ा महल बनवाया। इसी से हाड़ाओं का सोलहवाँ भेद प्रचलित हुआ और इसके वंशज सिंहभीमपोते कहलाए। इनका अधिक विस्तार चम्बल नदी के उस पार हुआ। यह कुल अभी भी हतोर, बिल्हेड़ी और उकावद नामक गाँवों में विद्यमान है। नरबद के पुत्र भीमसिंह से छोटा भाई पूरणमल था जिसके लिए कहा गया कि उसने तीन विवाह किये। इस पूरणमल के एक ही औरस पुत्र उसकी सिसोदिया वंशीय कँवरानी की कोख से मानसिंह नामक जन्मा। जब राजा सुर्जन ने बूँदी वापस पाई तब उसने कोटा नगर से पठानों को भगा कर उसे भी अपने अधिकार में किया था। इस युद्ध में पूरणमल के इस पुत्र वीर मानसिंह ने कोटा फतह करने के लिए शस्त्रों की अग्नि में स्वयं को होमा था। इसी कारण से मानसिंह के कुल को कोटा रन जयकार के विरुद से नवाजा जाता है।

हम्मीर हि इक मान तनय हुव, दान कृपान बही जिहिं धुर दुव।
धारिव धाकि जाहि धरनीधर, मारिब मिच्छ अतुलित बलधर॥३७॥
जब सुपुत्र कुल में निपजैं जो, बंसहि सब तस नाम बजैं जो।
पूराउत उपपद धारक धुव, हड्डुन भेद सत्रहम जो हुव॥३८॥

ता कुल के तबतें छक छज्जत, बलि हम्मीर के हि सब बज्जत।
पायउ पुर हिंडोलिय पूरन, बिरचे हम्म महल सर उपबन॥३९॥
तत्थहि प्रभु अब राम बंस तस, रन बितरन अनुपम चक्खन रस।
पूर अनुज जोथो मुक्कल पटु, किय बिबाह चु जिहिं सपत्न कटु॥४०॥

इस पराक्रमी मानसिंह के एक पुत्र हम्मीर ही जन्मा जो युद्ध और दान दोनों में अपने पिता की तरह धुरंधर था। उसने धरती को धारण करने वाले के रूप में अपनी धाक जमाई। अतुल बलधारी इस वीर ने खूब म्लेच्छों को मौत के घाट उतारा। हे राजा रामसिंह! जब वंश में कोई सपूत जन्मता है तो वंश की पहचान ही उसके नाम से होने लगती है। हाड़ाओं में सत्रहवाँ भेद यहीं से प्रचलित हुआ और उसके सारे वंशज पूराउत नामक उपटंक वाले हुए। इस कुल की सभी युद्ध में घाव खाने वाली वीर संतानें हम्मीर के कहलाने लगी। हाड़ा पूरणमल ने हिंडोली नगर जागीर में पाया। वहाँ हिंडोली में इसी हम्मीर ने महल, तालाब, और बाग अपने नाम से बनवाये। हे स्वामी रामसिंह! अब इसी वंश के आप राजा रामसिंह हैं, जो युद्ध और दान में अनुपम रस लेने वाले विद्यमान हैं। पूरणमल से छाटा भाई और नरबद का चौथा पुत्र मोकल था। इस चतुर और अपने शत्रुओं को कटु लगने वाले वीर ने भी चार विवाह किये।

दाय द्रंग जिहिं जक्खमूल दिय, पुत्र बिदित ताकै खट प्रकटिय।
रायमल्ल पित्थल बिजयीरन, सुत दुव हुव रट्ठोरि प्रसव सन॥४१॥
इक गोपाल चालुकी औरस, तीजी चउभुज राजसिंह तस।
इक हम्मीर जन्यों कछवाही, हुव इम खट द्रोहिन रन दाही॥४२॥

मोकल हाड़ा को दाय भाग में जक्खमूल नामक जागीर का गांव मिला। इसके छह पुत्र हुए। युद्ध में विजयी रहने वाले रायमल और पृथ्वीराज ये दोनों पुत्र उसकी राठौड़ वंशीय कुँवरानी की कोख से जन्मे। एक गोपाल नामक पुत्र चालुक्य वंशीय कुँवरानी से और तीसरी पत्नी से चतुर्भुज और राजसिंह जन्मे। कछवाहा वंश की पत्नी के गर्भ से हम्मीर नामक पुत्र हुआ। इस प्रकार कुल छह पुत्र जन्मे जो युद्ध में शत्रुओं को जला कर राख करने वाले थे।

दोहा

कुल पित्थल गोपाल के, उभय चले अवनीस।
च्यारिन के बंस चले, ऐसे स्थल बिधि ईस ॥४३॥

प्रभिधा मुक्कलपौत्र पद, कुल सब तास कहात।
हड्डुन में अठ्ठारहम, यह साखा स्फुट आत ॥४४॥

मुक्कल को नत्ती सुमन, बैरिसल्ल हुव बीर।
बैराउत्त हु इम बजत, साखा यह समसीर ॥४५॥

बंहु देवालय बापिका, सौध बेल ब्यय सत्थ।
किय मुक्कल अरु तास कुल जक्खमूल पुर जत्थ ॥४६॥

इन छह पुत्रों में से आगे केवल पृथ्वीराज और गोपाल के वंश चले। शेष चार भाइयों के वंश नहीं चले। विधाता का ऐसा ही आदेश था। यह वंश मोकलपोता नाम से प्रसिद्ध हुआ। हाड़ाओं में अठारहवाँ भेद इसी शाखा से चला। मोकल हाड़ा का एक श्रेष्ठ मनवाला पौत्र वैरीसाल हुआ। इसी के नाम से उसके वंशज वैराउत कहलाए। यह शाखा भी बराबर हिस्से वाली है। अपने जक्खमूल नामक पुर में मोकल और उसके वंशजों ने मंदिर, बावड़ी, महल और बाग आदि के निर्माण खूब खर्च से बनवाए।

संतति इम नरबद सुतन, बरनी प्रभु सबिबेक।
सुनिये अब रविमल्ल सुत, अधम बंसअरि एक ॥४७॥

कुमरानी तीजी कहिय, चन्द्राउति क्रम चाहि।
कुमर इक्क रविमल्ल कै, हुव तामें तंहं दाहि ॥४८॥

जानें को को लग्न जंहं, को खिन कोन कुजोग।
किन्ह बल हा प्रबिसैं जठर, रानिन ऐसे रोग ॥४९॥

कुमर कुमर रविमल्ल कै, तस अभिधा सुरतान।
जैहैं बुंदिय जाहि सों, व्हैहैं प्रभुता हान ॥५०॥

हे राजा रामसिंह! मैंने (ग्रंथकर्ता सूर्यमल) पूरे विवेक के साथ हाड़ा नरबद की संतति का वर्णन किया है। अब मैं आपसे सूर्यमल के पुत्र को कहता हूँ जो अधम और अपने कुल का ही शत्रु था। क्रम से तीसरी कुँवरानी चन्द्रावती कहाँ गई उसकी कोख से एक पुत्र जन्मा जो कुलदाही (कुल

नाशक) था। न जाने उस समय क्या मुहूर्त था, कैसा लग्न था वह किस क्षण का कुयोग (बुरा योग) था कि कुँवरानी के गर्भ में ऐसा एक रोग जैसा भ्रूण पनपा जिससे कुमार सूर्यमल के एक पुत्र ने जन्म लिया जिसका नाम सुरतान था। इसी के कारण और इसी के हाथ से बूँदी का राज्य जाएगा और हाड़ाओं की प्रभुता की हानि होगी।

सर हय तिथि सक हुव सुमति, सुर्जन अर्जुन सून।
नभ गज तिथि नृप सूनु कै, इत सुरतान सुऊन॥५१॥
सक मिति एकासीति सों, इत्यादिक बहु आदि।
उपजे अरु कछु हो हिं अब, सूचित क्रम संपादि॥५२॥
तिहिं अवसर दिल्लिय तखत, बाबर मुगल बइट्ठ।
ताही अवसर हड्ड तंहं, इक्क हनिय रन इट्ठ॥५३॥
सो ससि बसु तिथि सकसमय, इतलग्गत अवनीस।
हड्डुन जयमय बिदित हुव, सुजस छत्र भुवसीस॥५४॥

विक्रम संवत् के वर्ष पन्द्रह सौ पचहतर में हाड़ा अर्जुन के सुर्जन नामक सुमतिवान पुत्र जन्मा और पन्द्रह सौ अस्सी में राजा नारायणदास के पुत्र सूर्यमल के यहाँ सुरतान पैदा हुआ। इसके बाद पन्द्रह सौ इक्यासी के बाद दूसरे अन्य जन्मे और जन्मेंगे इन्हें क्रम से आगे सूचित किया जाएगा। यह वही समय था जब दिल्ली के तख्त पर मुगल बाबर बैठा था। इसी समय में हाड़ा नारायणदास जो युद्धानुकूल वीर था ने एक इक्के (यवन योद्धा) को चित्तौड़गढ़ में मार डाला। हे राजा रामसिंह! विक्रम संवत् के वर्ष पन्द्रह सौ इक्यासी के आरंभ में ही हाड़ाओं की विजय प्रसिद्ध हुई और राजा ने अपने सिर पर सुयश का छत्र धारण किया।

इतिश्री वंश भास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे पंचम राशौ वीतिहोत्र-चतुर्बाहुमद् बीज्यवर्णनबीजहड्डाधिराडस्थिपाल वंश्यानुवंश्यविहितव्या-ख्यानावसरविख्यापनीयबुन्दीवसुधावरहड्डाधिराजनारायणदास चरित्रे सूचितसम्वत्समयपूर्वबुन्दीशस्वसन्ततिपाणिपीडनपूर्वस्वानुजनरबद प्रौढ-पुत्रचतुष्क परिणायन ज्येष्ठकुमाराऽर्जुन गुहिलपुत्रीजयवत्या दिपत्नीच-तुष्टय द्वितीय भीम तोमरी प्रभृतिजा याचतुष्क तृतीय पूर्णमल्ल शैर्षोद्दी प्रमुख जायात्रिक चतुर्थ मोत्कल राष्ट्रकूटी पुरोगभा र्याचतुष्टयी सानुक्रम-

परिणायन तदनन्तरहड्डाधिराडसमयप्राप्तयुववयस्कस्वकीयपट्टपति-कुमारसूर्यमल्ल मंकुवाणी प्रभृतिसहधर्मिणीचतुष्क पाणिग्रहण तत्पंचम विवाहसन्देहसूचनापुरस्सरभौजिष्येयसहस्त्रमल्ल सप्तल सोदरद्वय स्वसवर्णकन्यायुग करग्राहण नारबदज्येष्ठकुमाराऽर्जुनौ रसप्रत्येक प्रसूप्रतीतिप्रथमोपेतभूत भावि सुर्जन कर्णा दिज्येष्ठकुमारत्रय वंशप्रवर्तिष्यमाणत्व शिष्ट चतुष्ट निस्सन्ततिसंस्थास्यमानत्व शंसन सहित प्राप्स्यमान पुत्र पार्तिवत्वनिदानककुमारार्जुना ऽनुजत्रय प्रत्येक पाणिपीडनसंख्या-समर्थन दायप्राप्तजैत्रदुर्गाद्वितीय नारबदभीम सुतसिंह सन्तानसिंहभीमपुत्रो पटंकिहड्डुकु लषोडश भेदभाविताभाषण।

श्री वंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण की पंचम राशि में अग्निवंशी चहुवान वंशवर्णन के कारण हड्डाधिराज अस्थिपाल के वंश और वंश की शाखाओं की कथा बताने के समय के वचनों में प्रसिद्ध करने योग्य बूँदी के भूपति नारायणदास के चरित्र में दर्शाये हुए सम्वत् के पूर्व बूँदीश का अपनी संतान के विवाह करने से पहले अपने छोटे भाई नरबद के बलिष्ठ चार पुत्रों का विवाह करना, बड़े कुमार अर्जुन को गुहिल पुत्री जयवती आदि चार स्त्रियों, तीसरे पूर्णमल्ल को सिसोदिनी आदि तीन स्त्रियों और चौथे मोकल को राठौड़ी आदि चार स्त्रियों का अनुक्रम से ब्याहना, जिस पीछे हड्डाधिराज का समय पर युवावस्था प्राप्त होने पर अपने पाटवी पुत्र सूर्यमल्ल को झाली आदि चार स्त्रियों का ब्याहना, पाँचवे विवाह में संदेह की सूचना करने के साथ पासवान के पुत्र सहसमल्ल और सातल को अपने अपने वर्ण की कन्या विवाहना, नरबद के ज्येष्ठ कुमर अर्जुन के औरस पुत्रों की प्रत्येक माताओं की प्रतीति के साथ उनमें प्रथम हुए और आगे होने वाले सुर्जन, करण आदि बड़े तीन कुमारों के वंश की प्रवृत्ति और बाकी के चारों के नि:सन्तान जाने के कथन के साथ इसका पुत्र राज पाएगा इस कारण कुमार अर्जुन के तीनों भाइयों के प्रत्येक विवाह की गणना का समर्थन करना, जैत्रगढ़ पाने वाले नरबद के दूसरे पुत्र भीम के पुत्र सिंह के संतान का सिंहभीमपोता इस पदवी से आने वाले समय में हाडों के कुल में सौलहवें भेद का कथन।

बण्टविभक्तहीण्डोलीनिवेशतृ तीय नारबदपूणममल्ल वंशतत्पुत्रहम्मीर हेतुकहम्मीरको पंटकिहड्डुकुलसप्तदश भेदप्रवर्तिष्य-

माणत्वप्रकटन वसुधाविभागाप्तयाक्षमूलचतुर्थ नारबदमोत्कला ऽन्वय स्वान्तर्भूतभविष्यद्भेदान्तसहितमौत्कलपौत्रो पपदकहड्ड वंशा ष्टादश भेदभविष्यमाणाताख्यापन हड्डाधिराजमुख्यकुमारसूर्यमल्लो रसैक कुमाराऽधमसुरत्राण हड्डवतीराज्य हानोदर्कदर्शन कथाऽवधिशक-प्राक् समयसूचितस्वस्वशकसमु द्भूतविविक्तवयोन्तरसुर्जन सुरत्राणा दिप्राथम्यपूर्व कखिलसन्ततितच्छकार्वाचीनकालसमुद्भवनसमर्थन बूँदीश कुमारकुमारसुरत्राण सम्वभवशकान्तरवर्षयवनेन्द्रमुगलबा कुमारकुमारसुरत्राण सम्भवशकानन्तरवर्षयवनेन्द्रमुगलबाबर दिल्लीपट्ट-प्रापणसमकालहड्डराडिक्कोपटंकियवनप्रवीरप्रति घातनं सप्तविंशो मयूखः ॥२७॥ आदितश्चतुःसप्तत्युत्तरैकशततमः ॥१७४॥

अपने हिस्से में हिंडोली पाने वाले नरबद के तीसरे पुत्र पूर्णमल्ल के वंश में उसके पुत्र हम्मीर के कारण हम्मीर का इस पदवी से हाड़ों के कुल में सत्रहवें भेद की प्रवृत्ति प्रकटना, भूमि के विभाग में जक्खमूल पाने वाले नरबद के चौथे पुत्र मोकल के वंश में अपने भीतर आगे होने वाले भेद सहित मोकलपोता इस पदवी से हाड़ों के वंश में अठारहवें भेद की सूचना करना, हड्डाधिराज के पाटवी कुमार सूर्यमल्ल के एक औरस अधम पुत्र सुरताण से आगे आने वाले समय में हाडोती के राज्य की हानि दिखाना, कथा के सम्वत् से पहले समय में जनाये हुए अपने अपने सम्वत् में उत्पन्न भिन्न अवस्था के अन्तर से सुर्जन का सुरतान से पहले होना और बाकी संतान का सुरताण के जन्म संवत् से पीछे जन्म होने का समर्थन करना, बूँदीश के कुमार सूर्यमल्ल के कुमार सुरताण के जन्म के सम्वत् के बाद यवनों के बादशाह मुगल बाबर का दिल्ली का राजपाट पाने के समय में हड्डराज का इक्का पदवी वाले यवन वीर को मारने का सत्ताईसवां मयूख समाप्त हुआ। और आदि से १७४ मयूख हुए।

प्रायो ब्रजदेशीय प्राकृत मिश्रित भाषा

दोहा

सूचित सक लग्गत समय, बैरिन करि द्रह बट्ट।
माधवऋतु बाबर मुगल, पायो दिल्लिय पट्ट ॥१॥
तदनंतर ग्रीखम तपत, सुनि मिच्छन बल सोर।
हड्ड नृपति इक्का हन्यों, चढि इक्कल चित्तोर ॥२॥

विक्रम संवत् के वर्ष पंद्रह सौ इक्यासी के आरंभ में ही अपने शत्रुओं को बरबाद कर बसंत ऋतु में मुगल बाबर ने दिल्ली का तख्त पा कर बादशाहत पाई। इसके बाद आगामी ग्रीष्म ऋतु तक मुगलों के बल का शोर सभी ओर फैलता रहा पर इसी समय में हाड़ा राजा नारायणदास ने चित्तौड़गढ़ में अकेले ही एक यवन इक्का को मार गिराया।

घनाक्षरी

अनुजसुता जो रान रानी नाम कर्मवती,
व्हां ही ताहि बुंदिय लिवाइ आयो चहुवान।
ताके आनिबेकों बीच पाउस बिताइ समैं,
सारद सहस्त्र पंच पृतना पठाई रान।
अब्दप्रति अंगीकृत कीनों उपहार सोहू,
संगहि पठायी गज तुरग असि प्रधान।
सामंत रु सचिव सु लैकैं इहां आये बिजै,
दसमी के दिवस निवेद्यो सबै सनमान॥३॥

अपने छोटे भाई की बेटी कर्मवती (नामक) जो चित्तौड़गढ़ के महाराणा संग्रामसिंह (राणा सांगा) से ब्याही थी उसे अपने साथ ले कर वह चहुवान (हाड़ा राजा) बूँदी आया। इसे लाने के बाद बीँच में पावस ऋतु का समय बिता कर शरद ऋतु में महाराणा ने अपनी पाँच हजार की संख्या वाली सेना के नायक के साथ स्वीकृत किया हुआ वार्षिक खिराज भिजवाया। इसमें नजराने के साथ महाराणा ने एक हाथी, दो घोड़े और दो खाली तलवार की म्यानें भिजवाईं। इस सामग्री को चित्तौड़गढ़ से महाराणा के सामन्त और सचिव ले कर बूँदी विजयादशमी के दिन पहुँचे और उन्होंने सारे उपहार राजा के सम्मान में भेट किये।

आयो संग रान को सनाभि बंधु सूर सोहू,
रीझत रमायो मृगया दिक घनैं प्रकार।
पच्छ इक राखि प्रिय पाहुनैं प्रचुर प्रेम,
दीनी सीख अनुजसुता कों दै बिभव बार।
ओरओर जोर जवनन को निरखि घोर,
दीनों संग सोदर को अर्जुन बडो कुमार।

बिक्रम उदय दो हू दोहिते लगाइ उर,
चित्रकूट पठये चमू प्रसर मंदचार॥४॥

चित्तौड़गढ़ से आए इस दल के साथ महाराणा का सपिंड भाई था। जो स्वयं वीर भी था। उसे रिझाने के लिए यहाँ बूँदी के राजा ने आखेट के आयोजन रखे कई दिन तक अपने मेहमान को आमोद-प्रमोद के साधन जुटा कर पूरा आथित्य करते हुए पन्द्रह दिन तक रखा। बहुत प्रीति पूर्वक सम्मान देते हुए जब अपने अतिथि को राजा ने अपने भाई की पुत्री के साथ विदा किया तब राजा पुत्री को बहुत सारे उपहार और धन देकर रवाना किया। इस समय चारों ओर यवनों की लूटपाट का जोर था यह सोचकर राजा ने अपने भाई के बड़े पुत्र अर्जुन को साथ भेजा। अपने दोनों नाती (दोहिते) विक्रम और उदय को अपने सीने से लगा कर चित्तौड़गढ़ के लिए विदा किया तब राजा ने साथ अपनी सेना भी भेजी। राजा की यह सेना धीरे चलने वाली मंदचारी था अर्थात् युद्ध में भागने वाली नहीं थी।

राखि कछु बुंदी की चमूं कों सीख देत सारो,
अर्जुन कुमार राख्यो नीठिन निहोरि रान।
रायपुर पत्तन सों पैंसठि सहंस पटा,
हठन झिलायो स्वीय सोह प्रतिभू प्रमान।
बिन्नति लों बुंदिय कहाइ नृप सम्मतिसों,
ताको अवरोध हु बुलायो चित्रकूट थान।
सुर्जन प्रमुख च्यारि पहिले निवारि प्रजा,
अर्जुन कै इतर तहांही भई दृढदान॥५॥

महाराणा ने भी बूँदी की थोड़ी सेना सहित अर्जुन हाड़ा को वहीं रोक कर शेष सारों को वापस बूँदी रवाना कर दिया। अर्जुन को बहुत मनुहार कर रखा और उसे अपने राज्य में रायपुर की पैंसठ हजार की आमदनी वाली जागीर का पट्टा देने की पेशकश की। अपनी सौगंध दिलवा कर पूरे आग्रह के साथ अर्जुन को यह स्वीकार करने को कहा पर वह नहीं माना। महाराणा ने इसके लिए पहले राजा की इजाजत के लिए बूँदी कहलवाया और उसके जनाने को भी चित्तौड़गढ़ बुलवाया। सुर्जन सहित बड़ी चारों संतानों को छोड़ कर अर्जुन की दूसरी संतति यहीं जन्मी।

इक्का एक मारयो दूजो प्रान दै प्रतारयो सुनि,
उरतैं उभै ही जवनेस लाय लाय लाइ।
साजिद दल बद्दल बिताइ बरखा कों नीठि,
चाले महमूद रुमुदाफर धर धुजाइ।
तोपन तैं गैल गढ लोपन करत दोहू,
आवत मिले यों पंच जोजन पैं प्रीतिपाइ।
मोति के खजानां खोलिबे कों महिमान होइ,
चित्रकूट बुंदी के चलाये छम छोनी छाइ॥६॥

बादशाह बाबर ने जब यह सुना कि चित्तौड़गढ़ में मेरे एक इक्के को हाड़ा राजा ने मार दिया और दूसरे को प्राण दे कर भगाया तो उसके तन-बदन में आग लग गई। कुपित हो कर उसने अपने दोनों सामन्तों को सज्जित हो कर पावस का मौसम टाल कर आक्रमण के लिए कहा। मुदाफर और महमूद दोनों को भूमि को कँपाती हुई सेना भेजने के लिए कहा। दोनों की सेनाएँ रास्ते के गढों को अपनी तोपों से ढहाते हुए चित्तौड़गढ़ से पाँच योजन की दूरी पर आ मिली। यहाँ से मुदाफर और महमूद की इकट्ठी हुई सेना जो चित्तौड़गढ़ और बूँदी की पृथ्वी को ढांप देने में समर्थ थी मेहमान हो कर अपने पर न्यौछावर करने के लिए मेजबान का मोतियों का खजाना खुलवाने को बढ़ी।

मानों आयो चित्रकूट लखि पाहुनैं प्रथम पंथ,
लैन महिमानी पहिले की पहिलैं कैं ख्यात।
बुंदी को बहोरि देखिबे कहि अहोरि ओघ,
जोरि जिह्मगावृत्त प्रसारयो पृतना को पात।
अहमदनैर मंडू अर्णव उभय फूटि,
आये मेदपाट भर भीकर भ्रमन भात।
ज्वाला जरदायो दुर्ग रान को बिहान बेढ्यो,
मानों गरदायों मेरू दैत्य दनुजात जात॥७॥

चित्तौड़गढ़ आया देख कर महमानों ने पहले यहीं का रास्ता लिया यह

सोच कर कि यहीं से पहले मेहमानी ले ली जाए जो पहले से बकाया थी। दल के दोनों सेनापति सामन्तों ने कहा कि बूँदी की प्रीतिभरी मेहमाननवाजी बाद में देखेंगे। उन्होंने अपनी सेना को सर्प की कुंडली की तरह पूरे रास्ते पर अपना पड़ाव फैलाया। अहमदाबाद और मांडू नामक दोनों समुद्रों ने फूट कर मेवाड़ को भयंकर भ्रमरों (भंवरों) से छा दिया। उन्होंने अग्नि से जड़ा हुआ अर्थात् अग्नि रूपी कवच को धारण करने वाले महाराणा के गढ़ को प्रभात के समय इस प्रकार आ घेरा मानों दैत्य और दानव सुमेरु (मंदराचल) पर्वत को घेरे खड़े हों।

आते जानि अरिन बुलायो चहुवान रान,
पाइ कछु कारन बिलंबि सोपै नरनाह।
अद्ध बल बुंदी राखि अनुज बडे सहित,
नीठि निजपुत्र रविमल्ल हि अति उछाह।
दल दल सज्जि गो इतेमें नृप नारायन,
थप्पि बीर बाहिर कितेक दैन रतिबाह।
झारि तरवारि बारि बैरिन की फारि पूगो,
जैसैं जुग सिंहन में बिक्रम बली बराह॥८॥

शत्रुओं की आमद सुन कर महाराणा ने चहुवान राजा को बुलवाया पर बूँदी के राजा ने किसी कारणवश स्वयं के थोड़े विलम्ब होते जान अपनी आधी सेना को अपने छोटे भाई के साथ बूंदी रखा। इस अभियान में राजा का पुत्र सूर्यमल पूरी कठिनाई से पर शेष आधी सेना के साथ उत्साहपूर्वक गया। इतने में राजा नारायणदास भी वहाँ पहुँचा। उसने अपने कई वीरों को चित्तौड़गढ़ के बाहर ही रोक लिया जिससे रात्रि को अचानक धावा किया जा सके। फिर यह राजा स्वयं अपनी तलवार के प्रहार से शत्रु की बाड़ को काटता हुआ भीतर प्रवेश कर गया जैसे दो सिंहों के मध्य एक बलवान सूअर बलात् प्रवेश करता है।

दिल्ली दल दैबो कह्यो संभर सहाय हित,
भाख्यो रान उचित नही जय जवन जोर।

स्वीकरि सबन सोही जंत्रन जमायो जुद्ध,
ज्वाल बिकराल छायो संतत सिलगि सोर।
राति में हवाई माहताब ज्यों दिखात दिन,
नैंन चकचौंधैं उल्का अर्चिनतैं ओरओर।
प्रानबाद रान तुरकांन कैं मंडानों तापैं,
एक मास अैसै घुमड़ानों घमसान घोर॥९॥

पूर्व में बूँदी के राजा ने दिल्ली की सहायता के लिए अपना दल भेजना चाहा था पर जब महाराणा ने कहा कि इस तरह यवनों का जोर बढ़ाना उचित नहीं तो चहुवान मान गया। इस समय उसके दल ने अपनी तोपों से ऐसा युद्ध रचाया कि निरंतर चारों ओर सुलगते हुए बारूद की विकराल ज्वालाएँ पसर गई। रात को भी हवाई चंद्रमाओं (जलते गोलों) के कारण दिन दिखाई देने लगा और चारों ओर तोपों से छूटे हुए गोले अग्नि के उल्कापात की तरह आंखों को चुंधियाने लगे। पावस के बीत जाने पर भी महाराणा और यवनों के मध्य ऐसी घटा गहराई कि एक माह तक लगातार घमासान में शस्त्रों की झड़ी लग गई।

दिल्ली पातसाह सुनि बाबर समर एह,
उर में अमाये प्रतिमल्लन पैं रचि रीस।
अज्ज अपनावन चल्यो चढि सु सुनि तासों,
पुब्ब लरिबे को मत मंत्रि उभै अवनीस।
सेनासह पिहित पदाति रजनी में कढि,
सोवत प्रमत्त परे सत्रुन सिबिर सीस।
द्वै दल अचानक अचाह्यो अवमर्द्द होत,
चौंक परे काय कपिकच्छू ज्यों कसत कीस॥१०॥

दिल्ली के बादशाह बाबर ने जब इस घमासान की खबर सुनी तो उसके हृदय में शत्रुओं के लिए क्रोध उमड़ पड़ा। आर्यों को अपना मातहत बना कर अपनाने के लिए चढ़ाई करने की सोची। पहले उसने इसके लिए अपने योद्धाओं से मंत्रणा की पर बाद में चुपके से रात्रि को कुछ पैदल सैनिकों को ले कर सोते हुए शत्रुओं के शिविर पर धावा बोला। दोनों दलों

के सैनिक अचानक यह भीषण युद्ध होते देख कर चौंक पड़े जैसे बन्दर किसी केंवच की फली वाली झाड़ी से रगड़ खा कर चौंक पड़ता है।

पैठत अचानक कपोतकुल स्येनन से,
हेतिन मच्यो झर झुकावत झकट झुंड।
प्रचुर प्रहार मंडि मृत्युके बजार वार,
पार अति धार लसैं लोहित कलित कुंड।
चीर व्है हयन धीर बीर व्है बयन टूक,
चीर व्है चलैं कर मतीर व्है उड़त मुंड।
स्वासन समेटैं चंद्रहासन के भेटैं भिन्न,
लंबे गज लैटैं पोगरन में पलेटैं रुंड॥११॥

कपोतों के समूह पर बाज पक्षी घुसे। उस तरह घुसते ही शस्त्र प्रहारों की झड़ी लग गई जिससे शत्रुओं के झुण्ड झुक गए। प्रचुर प्रहारों से जैसे मृत्यु का बाजार खुल गया। कई तलवारें शत्रु शरीर से आर पार निकलती गई जिससे जमीन पर रक्त के गड्ढे भर गए। घोड़े खड्ग प्रहारों से चिरने लगे और शत्रु योद्धाओं के मस्तक कटने लगे। हवा में उड़ते चीर की तरह फर-फर हाथ चलने लगे जिससे सामने वालों के सिर मतीरों (तरबूजों) की तरह गिरने लगे। तलवार के भेंटते ही कट कर निष्प्राण हो अपनी सांसें समेटे रणभूमि में सीधे पसरे हुए मुरदों को हाथी अपनी सूंडों में भर कर उलट पुलट करने लगे।

बाहिर अनीक अर्द्ध राख्यो रतिबाह काजै,
सहायक व्है सोहू इतै बिच उलटि आइ।
बुंदी सीम भूलों बढि आयो इतैं बाबर हू,
साम्हैं गज तुरग निवेदे नरबद जाइ।
आधी राति यों इत अचानक ही कट्टा होत,
सत्यसंघ बानाबंध सस्त्रन सजे सम्हाइ।
बीर उतहू के काच चूरी लों झरे पैं इहां,
अज्जन क़ो पुण्य यों रहे ए खरे खेत पाइ॥१२॥

राजा ने बाहर जो अपना आधा दल रखा था रात को चुपचाप धावा

करने के लिए, वह दल भी सहायता करने के लिए उलट कर यहाँ आ मिला। उधर बूंदी की सीमा तक बादशाह बाबर भी भूल से बढ़ आया तो बूँदी से नरबद ने सम्मुख आ कर हाथी और घोड़े भेंट किये। इधर आधी रात के समय अचानक कत्लेआम मचते ही सत्य प्रतिज्ञा वाले वीरों का बाना पहने योद्धाओं ने अपने-अपने शस्त्र संभाल कर उन्हें चलाना आरंभ किया। इसके कारण सामने वाले शत्रु पक्ष के योद्धा कांच की चूड़ियों की तरह टुकड़े-टुकड़े हो भूमि पर गिरने लगे। यह तो आर्यों का पुण्य था कि रणक्षेत्र में खड़े रहे अर्थात् डटे रहे।

दस दस द्वार सज्ज तुरग तितेकन लै,
बैठि महमूद रु मुदाफर कढै लै प्रान।
तदपि घरी द्वै नग्गी बग्गी तरवारि भूत,
नकी भग्गी लग्गी कालिका किलकिलान।
अर्जुन कुमार घाय अष्टादस पाय मारि,
मंडू के वजीर हिं पर्‍यो जो आयु बलवान।
ढक्कूसुत पूरन बिचार्‌यो चूक व्हां सो जानि,
पूरन कुमार लीनों कीनों नृप सावधान॥१३॥

दस द्वारों वाले शत्रुओं ने भागने को दसों दिशाएँ ली महमूद और मुदाफर दोनों घोड़ों पर सवार हो अपने प्राण ले कर वहाँ से निकल भागे। दूसरे अर्थ में महमूद और मुदाफर अपने दस द्वारों के पिंजरों में अर्थात् काया में प्राण छुपाये सज्जित घोड़ों पर सवार हो युद्ध भूमि से निकल भागे। फिर भी पीछे रहे शत्रुओं के साथ दो घड़ी तक नंगी तलवारें बजती रहीं। जिससे भूतों की भूख भगी और कालिका मस्त हो हर्ष ध्वनि करने लगी। कुमार अर्जुन ने इस युद्ध में अठारह घाव खाये पर वह मांडू के वजीर को मार कर रणभूमि में गिरा पर उसकी आयु बाकी थी इसलिए बच गया। कोठारिया के चहुवान ढक्कू के पुत्र पूर्णमल ने राजा नारायणदास के साथ चूक करने (धोखे से मारना) की सोच रखी थी पर हाड़ा कुमार पूर्णमल ने राजा को यह बता कर उन्हें सावधान कर दिया था।

मालिक कढैंहू मीर प्रथित प्रबीर केही,
बानैं की त्राप सों खग्ग खेरत खिरत खेत।

साकिनिन सूद महमूद के चमूपति व्हां,
बुंदीभट मारे सोढा संकर दहर नेत।
अनुज नरेस के नृसिंह सौं भिर्‌यो सो पुनि,
सोये सूर दोहू टूक टूक व्है रननिकेत।
आली गन जोगिनि कपाली उपहार आनैं,
लोहित की लाली लीन काली नचैं ताली देत॥१४॥

अपने मालिकों के युद्ध क्षेत्र से निकल भागने के बाद भी कई वीर जो प्रसिद्ध मीर थे अपनी वीरता के बाने की लज्जा में अपनी तलवारों से अपने शत्रुओं को रण भूमि में काट कर गिराते रहे और स्वयं कट कर गिरते रहे। शाकिनियों के रसोईदार रूपी महमूद के सेनापति ने वहाँ रणभूमि में बूँदी के योद्धा सोढा वंशीय शंकरसिंह और दहड़ वंश के क्षत्रिय नेत्रसिंह को मारा। इसके बाद वह राजा नारायणदास के छोटे भाई नृसिंह से जा भिड़ा। वहाँ ये दोनों वीर आपस में लड़ते हुए कट कर टुकड़े-टुकड़े हो रणभूमि में गिरे। योगिनियों का सखी समूह महादेव को उपहारस्वरूप भेंट करने को चुन-चुन कर वीरों के मस्तक लाने लगा और कालिका रक्त की ललाई में लीन हो कर ताली दे कर नाचने लगी।

रान पंच मारे तंहं गुज्जर अमीर उभै,
मालव के बीर असुहीन दये तीन डारि।
सीसउद अमर गिराये खट बानांबंध,
चुंडहर भीम सुनैं तैसे पंच लिय मारि।
दासीभव रान के पितृब्य बनबीर बीर,
मिच्छ नव बानैंके बिदारे सुनैं फौजफारि।
बुंदीपति तैसें तीन गंजि रु गिराये दृढ,
द्वै ही दल दलत मुहूर्त्त चली तरवारि॥१५॥

महाराणा सांगा ने इस युद्ध में पाँच शत्रुओं को मारा जिसमें से दो तो गुजरात के मीर थे। फिर तीन मालवा के यवन वीरों को प्राणहीन कर भूमि पर डाला। सिसोदिया अमरसिंह ने छह कवचधारी यवनों को काट गिराया। सिसोदिया चूंडा के पौत्र भीमसिंह ने पाँच यवनों को मारा और दासी के पेट

से जन्में महाराणा के काका फौजफाड़ (सेना को चीरने वाला) वीर बनवीर ने नौ म्लेच्छ योद्धाओं को परलोक भेजा ऐसा सुना। दोनों यवन दलों को मारने वाली आर्यों की तलवारें मात्र दो घड़ी तक ही चलीं इसमें बूँदी के राजा नारायणदास ने तीन यवन योद्धाओं को रणभूमि में काट गिराया।

सारन तनैं कै घाय च्यारि जिहिं रारि लागे,
जानें जसकर्ण के तनै कै दिपे दुव देह।
सेव सुत वारे अंस एक असि लागो नव,
रंग हर माधव तनैं सो भो नव न नेह।
लागे हरपाल हरदेव के तनैं कै तीन,
मेवारेहु भटन लहे इम छत अछेह।
द्वै ही जवनेस भजिजात बिनु मालिक यों,
मिच्छन मचायो मंडलाग्रन महत मेह ॥१६॥

ऐसी जानकारी में आया कि इस युद्ध में सारणदेव हाड़ा के पुत्र को चार घाव लगे और यशकर्ण के पुत्र ने दो गहरे घाव खाये। सेव हाड़ा के पुत्र के एक कंधे पर तलवार लगी और हाड़ा नवरंग के पौत्र माधवसिंह के पुत्र (दूसरे अर्थ में नवरंगपोता माधवसिंह के पुत्र) ने अपने शरीर पर युद्धस्नेह के कारण नौ घाव झेले। इसी तरह हाड़ा हरपाल और हरदेव दोनों ने तीन-तीन घाव खाये और मेवाड़ी वीरों ने तो इस युद्ध में असंख्य घाव घाए। दोनों गुजरात और मालवा के बादशाहों के भाग जाने के बाद भी बिना मालिकों वाली शत्रु यवन सेना ने तलवारों के प्रहारों की तो जैसे घनघोर वर्षा ही की।

लज्जित उभै ही पुनि आवन कों मंत्रकरि,
सेना के स्वकीयन बुलात भये जातघर।
जान्यों अब घेरा सद्य बिगरि बनैं न रुपि,
रहन मनैं न मन बाबर को आनि डर।
औसैं कहि पठई मुदाफर महीपति सों,
मंडू करि कपट गयो बचि तू पापपर।
बुंदीधर राखि छत्र चामर चलायें फेरि,
बदिहों बहादुर धरेसन में धूर्ततर ॥१७॥

दोनों यवन बादशाह लज्जित हो कर यहाँ से गये पर आगे जा कर उन्होंने यह मंत्रणा की कि वापस आक्रमण करने आना है। उन्होंने घर पहुँचते ही अपनी-अपनी सेना के लोगों को बुलवाया। यह सोच कर मुदाफर ने बूँदी के राजा नारायणदास को कहला भेजा कि मांडू से तू कपटपूर्वक बच कर चला गया और पापकर्म से बूँदी की भूमि को भी बचा कर रख लिया फिर तू छत्र और चँवर धारण कर राजा भी बना रहा। मैं तो कहूँगा कि तू वीर राजाओं में अत्यन्त धूर्ततम राजा है।

खोजि रनखेत पर घायल पठाये उत,
लाये निज घायल चढाई सबै नरजान।
आतहि ठहरि साह बाबर पठाये रीझि,
दोउन कों खिलत उपेत खास फरमान।
संभरनरेस सह आदर लये जे जिम,
लाये तिन देखत ही अनादर दियो रान।
बिदित कहे ए एक जाति के समान सब,
अवसर देखैं दुष्ट अज्जन के लैन थान॥१८॥

युद्ध की समाप्ति के बाद रणक्षेत्र में जा कर सभी घायलों को ढूँढा गया और उनमें से अपने पक्ष के घायलों को पालकियों पर चढ़ाया। इधर बादशाह बाबर ने आते ही रीझ कर दोनों नरेशों को खिलअत सहित खास फरमान भिजवाया। चहुवान राजा नारायणदास ने तो आदर सहित स्वीकार किया पर महाराणा ने जो खिलअत ले कर आये थे उन्हें देखते ही उनका अनादर किया और कहा कि जाति के आधार पर ये सभी समान हैं। ये यवन अवसर पाते ही आर्य लोगों (राजाओं) के स्थानों को हड़पने के लिए तत्पर रहते हैं।

सोही सुनि अंतर सकोप मग्ग ही सों मुरि,
होइ अजमेर कीनों पच्छो ही प्रयान साह।
अर्जुन कुमार न्हान उच्छव अवधि रह्यो,
चित्रकूट अतुल उदार हड्डु नरनाह।

स्वानुज नृसिंह मर्‍यो अग्रज तदीय अर्थ,
द्वै अयुत द्रम्म बंटे बिप्रन बिहित राह।
बुंदी बलि आइ बीर निखिल निवाजे बंब,
बिजय के बाजे लाजे ओदकि अरि सिपाह॥१९॥

यह समाचार बाबर को रास्ते में मिल गया। इससे कुपित हो कर वह आधे रास्ते से वापस मुड़ गया और अजमेर की ओर रवाना हुआ। हाड़ा कुमार अर्जुन के नैरोग्यता के स्नान की अवधि तक अतुलनीय उदार हाड़ा राजा चित्तौड़गढ़ में ही रहा। इस युद्ध में जो उसका छोटा भाई नृसिंह हाड़ा मारा गया वह निःसंतान था इसलिए उसकी अंत्येष्टि क्रिया को पूरे विधि-विधान पूर्वक राजा ने अपने व्यय से संपन्न करवाया और इस अवसर पर ब्राह्मणों को बीस हजार रुपयों का दान दिया। इसके बाद वह वीर राजा नारायणदास अपनी विजय के नगाड़े बजवाता हुआ बूँदी पहुँचा जिन्हें सुन कर शत्रु दल के सैनिक भय से चौंक उठे।

दिल्ली जव जाइ कछु कालहि बिताइ साह,
चित्रकूट अहदी पठाई मंगे करदाम।
सीसउद भाख्यो हम दै चुके तुमहु तीजे,
बंटिलेहु राखि मंडू अहमदनैर साम।
चैंकि चढ्यो सो सुनि बडेदल मुगलराज,
साम्हैं देन स्वागत सज्यो यों समादिकग्राम।
नारादिकअयन नरेसहु स्वरित ओडि,
दिल्लीपति कोप रान सीरी भो कलह काम॥२०॥

उधर बादशाह बाबर ने शीघ्र ही वापस दिल्ली पहुँच कर थोड़े दिनों के बाद चित्तौड़गढ़ तकाजे के लिए अपने आदमी भेजे कि बकाया कर की रकम अदा करो। इस पर सिसोदिया महाराणा सांगा ने कहा कि हम जो दे चुके हैं उनके तीन हिस्से कर लें और मांडू एवं अहमदाबाद को भी उनका हिस्सा दे दें। यह सुन कर बादशाह बाबर कुपित हो अपनी भारी सेना सज्जित कर बढ़ा। शत्रु आ रहे हैं इसकी खबर पाते ही अपने यहाँ आने वाले का उचित आदर करने को सम् है जिसके नाम के आरंभ में वह अर्थात् संग्रामसिंह तैयार हुआ और नार है आदि में जिसके वह अर्थात् नारायणदास हाड़ा राजा

भी अपनी रीत (सहायता करने की अथवा यवनों से भिड़ने की प्रथा) को धारण कर दिल्लपति के क्रोध को झेलने के लिए युद्ध करने को महाराणा का साझेदार बना।

बुंदीसहिं बरज्यो जुरी कों जिन तोरो कहि,
तोहु मरिबे के मत नेहहि भयो निदान।
भाये बिनु सीस बाहिबे में बिरुदाये छाये,
ठाये रसबीर में चलाये रान चहुवान।
पीरेखार अंकित प्रदेस सबिसेस साम्हैं,
सेस सिर दै पय असेसन कै अवसान।
स्वागत समैही खग्ग खूब खुलि खेल्यो प्रलै,
पावक सो पेल्यो झेल्यो सीमा पर सुलतान॥२१॥

जिन लोगों ने कहा कि हे राजा! आप क्यों जाते हैं? इस पर बूँदी के राजा ने जुड़ी हुई (मित्रता) को तोड़ने से मना कर दिया और स्नेह के कारण मरने का ही निश्चय किया। बिना ही मस्तक के तलवार चलाने के विरुद में शोभायमान होने की सोच कर वीरता में पगा चहुवान महाराणा के पास जाने को चला। पीली मिट्टी वाले प्रदेश में (पीलेखार का स्थान जहां युद्ध हुआ) विशेषत: सम्मुख जा कर शेषनाग के फण पर पाँव धरते हुए शेष बचे सम्पूर्ण शत्रुओं का नाश करने के लिए स्वागत के समय में ही वह खड्गों से खुल कर खेला। उसने प्रलय की अग्नि बन कर सीमा पर आए बादशाह का आदर किया।

मिलत अनीन धूजि दूरन के बोल सहि,
भाजे दूर दूरन के कूरन के ओघ इम।
रारि रथ जूरन के धवल धुरीन जुरे,
हूरन के लोभ संघ सूरन के अप्रतिम।
रान चहुवान पहु पानि पान पूरन के,
चाले चमू चूरन के कारक व्है कुंठ किम।
मुंड मुगलन के महर्घ मुगलानिन के,
चूरन के साथी झरैं सूरन के पिंड जिम॥२२॥

आमने-सामने दोनों सेनाओं के मिलते ही वीरों के उत्साह भरे बोल सुन कर कितने ही कायरों के झुंड दूर-दूर भागे। युद्ध रूपी रथ के जुए में बांई

ओर जुतने वाले और सारा भार स्वयं के कंधों पर लेने वाले पराक्रमी योद्धा रूपी धवल (बैल) जुते। अप्सराओं द्वारा वरे जाने के लोभ में वीरों के अप्रतिम समूह भिड़ने लगे। महाराणा और हाड़ा राजा दोनों के बली हाथ पूरी त्वरा से चले जो शत्रु सेना का चूरा बना देने वाले थे। वे भला क्यों कर रुकते। इनके खड़ग प्रहारों से मुगलों के मस्तक जो अपनी स्त्रियों (मुगलनियों) के मंहगे चूड़ों के साथी थे शरीर के साथ ही गिरने लगे अर्थात् इधर कट कर मुगलों के मस्तक गिरते और उधर उनकी स्त्रियों की मँहगी चूड़ियाँ टूटती क्योंकि वे विधवा हो जातीं।

चाले चंद्रहास चहुं ओर चपलासे चल,
कादंबिनी कटक दुहूँ दिस दिखावैं द्योत।
को के दूत कज्जन के सज्जन भिराय भूत,
तज्जन के त्रास मंडें मज्जन सोनित स्त्रोत।
अज्जन असि न छिन्न प्रोथित गदान गज,
लोटे लखि कुंत कासू पट्टिस प्रदर प्रोत।
के तजि कवादे बृथा बाहु भर लादे मुरि,
मांदे मन मोति सों खुसादे खानजादे होत॥२३॥

चारों ओर बिजुरी की चपलता से तलवारें चलने लगीं। जिनकी चकाचौंध से मेघमाला रूपी सेना के दोनों ओर उजास हो गया। कितने ही दूतों का कार्य एक साथ करने वाले भूत भिड़ने के लिए सज्जित वीरों को भड़का रहे हैं। फिर ताड़ना के भय से रक्त से भरे गड्ढों में जा दुबकते हैं। आर्य वीरों की तलवार से घोड़े और गदा प्रहारों से मरे हाथियों को गिरे हुए देख कर वे यवन लौट लौट जाने लगे कि तलवारें भाले, बरछी, कटार, तीर और कबाण (धनुष) का व्यर्थ भार अपनी भुजाओं पर सहने में अब क्या सार है ? इसलिए खानजादे (यवन) अपने शस्त्र भार से लदे मुर्दा मन से मुड़ कर खुश हो रहे हैं कि चलो जान बची और लाखों पाए।

चामीकर बंगर बिचित्र गजदंत झरैं,
मानहु मुसल लंब सबन सह सुहात।
ऊंधे झुकि झंडे खर खंडे के प्रहार परैं,
सैल के सिखर सों ज्यों तुंग ताल तरू पात।

सीसोदन हड्डुन सम्हारे सत्रु सीमापर,
हतिन के मारे मतवारे लों तंवारे खात।
बाबर के बिदित बहादुर सिपाह चीते,
काबल जे जीते इहां रीते बल बीते जात॥२४॥

युद्ध में सोने के बंगड़ (छल्लों) वाले विचित्र हाथियों के दांत प्रहारों से उखड़ कर गिरने लगे जो लंबे सफेद मूसलों जैसे लगते हैं। तीखी धार वाले खड़्गों के प्रहारों से हाथियों की पीठ पर खड़े लंबे ध्वज यो गिरने लगे जैसे पर्वत शिखर से ताड़ के लंबे लंबे वृक्ष गिरते हैं। सिसोदिया और हाड़ा वीरों ने अपनी सीमा संभाल कर शत्रुओं पर इस प्रकार अपने शस्त्र चलाए कि शत्रु योद्धा मतवालों की तरह चक्कर खाने लगे। बाबर के वे प्रसिद्ध चीते जैसी स्फूर्ति वाले बहादुर सिपाही जिन्होंने काबुल को जीता था वे यहाँ इन क्षत्रियों के सम्मुख बल खोकर जैसे खाली हो गए हों, रीत गए हों, ऐसा प्रतीत होने लगा।

चोरैं चाहि चिंतन झकोरैं असि रानभट,
ओरैंगे अहोरैं दोरैं बाबर के भोरैं भीर।
जोर जव जोरैं बढि आतन बिछोरैं केक,
लाघव के छोरैं वार तोरैं सिर मोरैं मीर।
मोदन बलापति को ओदन उजेरि इत,
तोदन तुरक्कन बिनोदन धरतधीर।
होदन में कूदि के निसादिन के गोदन में,
मोदन में मलपि कटार हनैं हाडे बीर॥२५॥

महाराणा के वीर सैनिक बिना किसी आड़ के सीधे शत्रुओं के सम्मुख जाने की सोच कर जाते हैं और अपनी तलवारों का उन शत्रुओं के रक्त से प्रक्षालन करते हैं। वे बाबर के भ्रम में दूसरे अमीर योद्धाओं को भीड़ की भीड़ जा कर घेर लेते हैं फिर शीघ्रता से अपनी ओर बढ़ते आते शत्रु समूह को बिखेर देते हैं। वे त्वरा से प्रहार कर अपनी तलवार से मीरों (बड़े यवन योद्धा) के मस्तक तोड़ते हैं और इस प्रकार अरावली पर्वत के स्वामी अर्थात् महाराणा का अन्न प्रसन्न होकर उजालते हैं (खाए हुए अन्न का कर्ज उतारते हैं)। वे तुर्कों को खिझाने में हर्ष का अनुभव करते हैं। इन वीरों के

साथी बूँदी के हाड़ा वीर शत्रुओं के हाथियों के होदे पर कूद कर पहुँचते हैं और उन पर सवार शत्रुओं की गोद में कटारें झोंकते हैं।

जोर कों जमत घमसान घोर दोहूँ ओर,
जातजात टिकत जिहाज जैसें चक्रबात।
द्वै ही मार मचत गता गत रचत मानूं,
ओघ के उफान ह्रदिनीपति हिलोरैं खात।
मैंचि मैंचि दृगन पलावत पकरि केक,
ऐंचि ऐंचि आनैं अवमर्द के असह घात।
थहरि थहरि थू छी प्रहरि प्रहरि फौजैं,
लहरि लहरि पुनि ठहरि ठहरि जात॥२६॥

दोनों पक्षों में योद्धा भीषण युद्ध में संलग्न हैं कभी इनके बढ़ने से और कभी उनके आगे आने से ऐसा लगता है जैसे समुद्र में ज्वार से लहरें उठ कर भाग रही हों। कभी कभी जब धावा बोलकर ये योद्धा थोड़ी देर के लिए ठहर जाते हैं। तब ऐसा लगता है मानों चक्रवात में फंसा कोई जहाज झकझोले खा कर ठहर गया हो। ये योद्धा आँख मींच कर पलायन करते शत्रुओं को जा पकड़ते हैं और उन्हें खींच कर वापस रणभूमि में लाते हैं जहाँ युद्ध में तलवारों के असह्य और भीषण प्रहार हो रहे हों। पकड़ कर लाये गये ये शत्रु कांपते हुए थू थू छि-छि जैसे अवज्ञा के वचन उच्चारते हैं। दोनों ओर की फौजें कभी प्रहार पर प्रहार करती हैं फिर तनिक देर ठहर कर ठीक समुद्र की लहरों की तरह रुक-रुक कर फिर से चलती हैं।

उच्चतम अंस आइ रुकत इते मैं अर्क,
जोर जवनन को बढ्यो अति प्रथित प्रान।
रान कह्यो चित्रकूट लैकैं लरिये बरहैं,
सबके मरत मिटैं मनतैं बिजय मान।
हड्डनृप भाख्यो आपसे को भजिबो न नीक,
जैहैं व्है अनृत पद बजिबो स्वयं दिवान।
रान कह्यो कहू यह राखहु सुनत चहुवान,
बढ्यो अग्र पीठि दीनों दै अभय रान॥२७॥

प्रभात का सूर्य चढ़ कर सर्वाधिक ऊँचाई को पहुँच गया अर्थात्

दोपहर का समय हो गया इस समय प्रसिद्ध बल वाले यवनों का जोर बढ़ गया। यह देख कर महाराणा ने कहा कि इससे अधिक सुरक्षित ढंग से तो हम चित्तौड़गढ़ दुर्ग में लड़ सकते हैं इसलिए अच्छा है कि हम वहाँ जा कर मोर्चा लें। यहाँ रह कर लड़ने में सभी के मारे जाने की आशंका है फिर विजय भी यहाँ दूभर है। यह सुन कर हाड़ा राजा नारायणदास ने कहा कि आपका इस तरह भागना ठीक नहीं रहेगा क्योंकि इससे आपका एकलिंग महादेव का दीवान कहलाना झूठा हो जाएगा। इस पर महाराणा ने कहा फिर इस दीवान पद को आप धारण कर लो। यह सुनते ही चहुवान राजा महाराणा को पीछे छोड़ कर आगे बढ़ गया।

रान के प्रधान भट भाखी मंकुआन सोही,
चामर लजैंगे ए भजैंगे जब भूमिधन।
सोहु सुनि रान ताहि चामर दुव हि दैकैं,
भाख्यो आपही अब निबाहहुगे चामरन।
सीसोदन ईस अैसें कढन बिचार्यो तहां,
बूँदी बसुधेस सेस मेवारेहु वीर गन।
झारि तरवारि मारि रोके निगमारि सो,
निहारि भय टारि ठहरानी रारि रान मन॥२८॥

इसी समय महाराणा के एक प्रमुख सामन्त झाला ने कहा कि महाराणा के जाते ही (भागते ही) उनके छत्र चँवर जब हाड़ा राजा पर होंगे तो वे छत्र चंवर लज्जित होंगे। यह सुनते ही महाराणा ने अपने छत्र और चंवर दोनों झाला को दे दिये और कहा अब आप ही इनकी मर्यादा का निर्वहन करना यह कहकर सिसोदियों के स्वामी महाराणा सांगा ने वहाँ से निकलना चाहा वहीं बूँदी के हाड़ा राजा और मेवाड़ के शेष वीरों ने अपनी तलवारों के प्रहार से वेद विरोधियों (यवनों) को मार कर रोके रखा। यह देख कर महाराणा के मन का भय दूर हो गया और उन्होंने भी युद्ध में ठहर कर लड़ने का मन बनाया।

पूरो पछितावो लै दिवानपद चामर दै,
देखि रिपु रोके रुकि रानां रह्यो पीठिपर।

लीनों मारि तेगन दिवान पद तादिनतैं,
ओटभो अधीस बांधि अंघ्रिनसों आड थर।
सुनियत त्योंही बोल बेलापैं उचारिबेमे,
सादरी के झल्लन पैं तब तैं चलैं चमर।
केते कहैं कढन बिचारि रहिगो यों रान,
केते कहैं याही इक बेर भज्यो चित्रकर॥२९॥

मन में पूरा पश्चात्ताप ले कर और चँवर तथा दीवान पद दे कर महाराणा ने पीछे रुक कर देखा कि सचमुच उन्होंने शत्रुओं को अपने प्रति-आक्रमण से रोक दिया है। उसी दिन अपने खड्ग के भीषण प्रहार से उसने दीवान पद लिया और महाराणा (बूँदी के अरावली की) ओट में हो गया और इस तरह समय पर ऐसे वचन कहने के कारण ही सादड़ी के झालाओं पर अब तक चंवर दुलाये जाते हैं। कुछ लोगों का कहना है कि महाराणा ने वहाँ से निकलने का कहा था पर वह गया नहीं, वहीं रहा और कुछ लोगों का मत है कि लोगों को आश्चर्य दे कर वह एक बार ही भागा था।

रान बहुबिक्रम बिचारत सुकवि स्वांत,
भाजिबो न भावत दृढावत रुपान रारि।
बाबर के बारन लों बढत बलापति की,
खंडखंड खेरत चलानी चंड तरवारि।
गंजि पखरालन करालन गिराये रत्ति,
तालन तिराये सह ढालन गजन ढारि।
मारत मुगल भूत भावी सब या रन में,
संभरधनी के लागे लोह चालीस रु च्यारि॥३०॥

हे राजा रामसिंह! मुझ ग्रंथकर्ता के मन में तो अत्यंत पराक्रमी महाराणा के भागने की बात नहीं बैठती मुझे तो यह जचती है कि उन्होंने वहाँ रह कर अपने वीरों का हौंसला बढ़ाया होगा। पर यह तय है कि बाबर के हाथियों तक बढ़ने वाले अरावली के स्वामी (बूँदी के राजा) की प्रचंड तलवार बीच में आये शत्रुओं को खंड-खंड काटती चली गई। उसने पाखर (कवच) वाले हाथी घोड़ों को काट कर उन्हें रक्त से भरे तालों में ढालों की तरह तैराया। दीवान पद पाने से पहले और उसके बाद में राजा नारायणदास को

मुगल शत्रुओं को मारने में कुल चवालीस तलवार के घाव लगे।

बीररस घल्ले छल्ले अंबुद अनीक उभै,
बग्गन अचल्ले अैंचि खग्गन मचल्ले खेत।
कल्ले स्वर कातर दहल्ले दूर होत ठल्ले,
ठामठाम गिनत गिरे भटन लग्गे प्रेत।
पल्लेछेह मल्ले नाकनारिन नवल्ले नेह,
पैठैं तोपलल्ले गति राग रस झल्ले चेत,
छाती धरि हल्ले मैं मुसल्ले मचकात इन्हैं,
भल्ले हथ चल्ले ए डिगात तिन्हैं टल्ले देत॥३१॥

मेघ में पानी के समान वीरता से भरी छलकती हुई दोनों सेनाएँ बढ़ी। इसमें अचल वीर अपने घोड़ों की लगाम खींच कर युद्ध क्षेत्र में लड़ने को मचले। इससे दहल कर कई कायर कलराये हुए स्वर में रणभूमि से चीखते हुए भागे। इनके भागने से खाली हुई रणभूमि में जगह-जगह बिखरे हुए वीरों की मृत देहों को भूत-प्रेत गिनने लगे। वीरों के समूह जीवन के उस पार स्वर्गीय अप्सराओं के नये स्नेह बंधन में जा बँधे। सिंधु राग के रस में तल्लीन वे वीर शत्रुओं की छाती में तोप के गोलों की तरह घुसने को शत्रु दल में धावा देने लगे तिन्हे मुसल्ले (यवन) हिम्मत कर रोकने लगे पर अपने सामने आए इन अवरोधों को ये युद्ध में अच्छे हाथ दिखाने वाले (आर्य) तलवार के धक्के (टल्ले) दे कर हटाने लगे।

काली हास करिकरि मृडहिं मनावें मौज,
आली तास गावैं त्यों उताली रास करिकरि।
डाकिनि विरूप त्रास करिकरि ताकैं भीरू,
बीरन रिझावैं बीर बीरनास करिकरि।
जास बिसवाल लै हुलास धरि आसपास,
कंकादिक क्रीडत पलास आस करिकरि।
होदन में पूरि चहुं कोदन में भूखे भूत,
ओदन में गोदन गिनावें ग्रास करिकरि॥३२॥

रण क्षेत्र में इतने वीरों का नाश देख कर कालिका प्रसन्न हो हँसने लगी। महादेव वीरों के मूँड मिलने से मौज मनाने लगे। कालिका की दासी

सखियाँ घूमर ले कर नृत्य करती हुई आनन्द से गाने लगीं। डाकिनियाँ अपना भयंकर रूप धर कर डराने के लिए कायरों को ढूँढ़ने लगी। वीर अपने वीर शत्रुओं का नाश कर बावन वीरों (देवी के बावन गण जौ भैरव भी कहलाते हैं) को रिझाने लगे। ऐसे संहारक वीरों का विश्वास कर मन में हर्षित होते हुए गिद्ध आदि माँसाहारी पक्षी आसपास ही इस आशा में मंडराने लगे कि उन्हें खाने को खूब सारा माँस हाथ लगेगा। होदों में मृत वीरों का माँस भर कर चारों दिशाओं से भूखे प्रेत आ एकत्रित हुए जो भोजन में एक एक भेजे (मष्तिष्क) का एक एक ग्रास करते हुए उन्हें गिनते जाते हैं।

टारे पंचसहस्त्र प्रबीरन सहित सूधे,
डारे बाजि बूँदीपति ब्यूह बिधिके बनाव।
पानिप की पोत लै पधारे आजि अर्णव में,
जवन जे जारे कोप बाडव दुसह दाव।
झारत प्रतल तेग बेग यों बढत आगैं,
भागें गज गंडक बराह न सहत घाव।
जोरि खास बारा सिंह संभरके पूगत ही,
पूगो डर पैं डर जो बाबर पैं बघवाव॥३३॥

अपने पक्ष के पाँच हजार वीरों को टाल कर बूँदी के राजा ने शेष शत्रुसेना पर अपने घोड़े यों डाले मानो विधाता की तरह ऐसी व्यूह रचना कर रहे हों कि इन्हें बचा कर शेष सभी को मारना है। पराक्रम का जलपोत ले कर हाड़ा युद्ध रूपी समुद्र में उतरा उसने वहाँ जाते ही अपने क्रोध के बड़वानल से यवनों को जला कर खाक कर दिया। वह (केसरी सिंह) अपनी हत्थल रूपी तलवार मारते हुए आगे क्या बढ़ा कि हाथी, गेंडे और सूअर जैसे बड़े-बड़े शत्रुवीर उसके घाव नहीं सह सकने से भागते नजर आए। महाराणा के खास जोड़ीदार असली केसरी सिंह रूपी चहुवान के पहुँचते ही उसकी सिंहगंध (सिंह के शरीर की गंध) से बाबर की सेना रूपी हरिणों का झुंड डर कर भाग खड़ा हुआ।

रान रु दिवान ए कुटुंबी आध सीरी उभै,
सीसोद रु हाडे हठी हालिक बडे बिधान।

हेति हल राजी बाजी बैलन गरिष्ट गदा,
कोटिसन कीनें सिर डैलन कचरघान।
लागैं लेत खेत नर खेत प्रेत टीडी टार,
बोई रजपूती बीज सोनित सलिल थान।
पीतखार कुल्या सनि सींचि निपजाये नीकैं,
कत्त नके दत्तन चक्रत्तन के खलहान॥३४॥

इस घनाक्षरी छंद में रूपक अलंकार के सहारे कवि कह रहा है कि महाराणा और दीवान (बूँदी का राजा जिसने यह खिताब इसी युद्ध में महाराणा से पाया) ये दोनों बांधव हैं जो आधे-आधे हिस्से के साझेदार हैं। इनकी सेना के सिसोदिया और हाड़ा वीर इनके खेती करने वाले हाली (नौकर) है। युद्ध में प्रयुक्त शस्त्र रूपी हल हैं, घोड़ों की पंक्तियाँ जैसे बैलों की जोड़ियां हैं। बड़ी बड़ी गदाओं रूपी चांवरें (खेत के ढेले तोड़ने के उपकरण) हैं जिनसे शत्रु वीरों के मस्तक रूपी ढेले पीसे जा रहे हैं। इस रणभूमि रूपी खेत में प्रेत रूपी टिड्डियों को टाल (हटा) कर राजपूती का बीज बोया गया है और वह खेत रक्त रूपी पानी वाली पीलीखान वाली नहरों द्वारा सींचित किया गया। इससे वीरता की अच्छी फसल लहलहा उठी है। पकने पर इसे तलवार रूपी हंसिया (दांतली) से काट कर चकता के वंश वाले यवनों को गोल-गोल फैला कर खलिहान में ला डाला। चक के दूसरे अर्थ प्रभुत्व से अर्थात हंसियों से काट कर प्रभुत्व रूपी खलिहान में ला डाला है।

अैसे घोर समय कठोर असि बाढ झारि,
ओरओर रोर यों मचात अति जोरदार।
तोरि खासबारा द्रुम दुर्जन बिछोरि बेग,
जोरि तेगधारा ज्यों बघूल प्रतिकूल पार।
दैकैं पीठि रान मान दैकैं अवसान ही कों,
पहुंच्यों दिवान भुज पान पवमान चार।
देखत व्है दीन बहराम सेख कादर से,
बादर से बिद्रुत बिलानैं द्रुत दिल्लीवार॥३५॥

ऐसे आपतकालीन कठिन समय में अपनी तलवार के प्रहारों से चारों

ओर जोरदार 'बचाओ-बचाओ' का शोर मचवा कर वह दुर्द्धर्ष वीर चक्रवात की तरह अपने विरोधियों (शत्रुओं) के सुरक्षा व्यूह रूपी बाड़े की बाड़ तोड़ कर वहाँ खड़े दुर्जन शत्रुओं रूपी झाड़ियों को अपने वेग से उखाड़ता हुआ आगे बढ़ा। वह महाराणा को पीछे छोड़ता हुआ युद्ध का अन्त करने चला। वह बूँदी का राजा (दीवान) अपने भुजबल से चारों ओर तूफान उठाता बढ़ा (दूसरे अर्थ में अपनी भुजाओं के सहारे वह पवनचारी बढ़ा) जिसे देख कर दीन हो कर आर्त्त पुकार करते हुए बहराम खान और शेख कादर खान जैसे दिल्ली वाले बादल जिन्होंने रणभूमि को छा रखा था शीघ्र ही विलीन हो गए।

कादर कमाल बहराम से भजत भज्यो,
बाबर करी तजि बिडौजा सन जैसें जंभ।
मंदर व्है अर्णव अनीक मथि डार्‍यो रत्न,
बिजय निकार्‍यो मुख मिच्छन उतार्‍यो अंभ।
आगैं लै अनीक यों अनीक कर्‍यो अर्जुन लों,
बित्तर्‍यो सहस्रपंच बीबिन को बिप्रलंभ।
रान बिरुदायो आनि दुस्सह दिवान छक्यो,
घुम्मत जो पायो रनअंगन को जयखंभ॥३६॥

अपने पराक्रमी योद्धाओं कादरखान, कमालखान और बहराम खान को भागते देख कर बाबर स्वयं भी अपना हाथी छोड़ कर यों भागा जैसे इन्द्र को देख कर जंभासुर भागा था। बूँदी के इस राजा नारायणदास ने मंदराचल पर्वत की तरह शत्रुओं के समुद्र का मंथन कर विजय रूपी रत्न निकाला जिसे देख कर म्लेच्छों के मुँह का नूर (आब, पानी) उतर गया। शत्रुसेना को अपने आगे (सामने) ले कर उसने महाभारत के अर्जुन की तरह युद्ध किया और पाँच हजार शत्रुओं की बीवियों को उनके पतियों को मार कर विप्रलंभ (वियोग) का फल बाँटा। महाराणा सांगा ने आ कर रणांगन में घूम-घूम कर घाव खाने वाले दुस्सह घायल दीवान की सराहना की ओर बूँदी के इस राजा नारायणदास को 'युद्धक्षेत्र का विजयस्तंभ' का विरुद दिया।

निम्म हर तारागढनाह जो नृसिंह सूर,
सोयो सूरसज्जा सूर सत्रह के प्रान हरि।
रंग हरपाल हर भीम दस पारि नव,
रंग हर गो भरत सोलह कों संक करि।

डूंगर के बंस अवतंस यों खजूरीपति,
अमर अमीर आठ खंडे खेल खेत परि।
गंग थिरराज बंसी बारह बिदारि नाक,
पहुंच्यो निसंक नाक नाकबाम बाम धरि॥३७॥

बूँदी के तारागढ़ का स्वामी और निम्मदेव हाड़ा का पौत्र वीर नृसिंह इस युद्ध में बहादुरी के साथ लड़ता हुआ सत्रह शत्रुओं को मार कर रणशय्या पर सोया। वह हरपाल हाड़ा का वंशज भीमसिंह धन्य है जिसने रणभूमि में दस यवनों को ढहाया और नवरंग पोता भरतसिंह जब युद्ध में मर कर परलोक गया तो अकेला नहीं गया अपने साथ सोलह शत्रु योद्धाओं को भी ले गया। खजूरी पुर का स्वामी अमरसिंह जो डूंगरसिंह के वंश का मुकुट था वह अपनी तलवार से आठ यवन मीरों के टुकड़े कर स्वयं टुकड़े-टुकड़े हो कर युद्धभूमि में गिरा। थिरराज हाड़ा का वंशज गंगासिंह बारह शत्रुओं को काट कर जब स्वर्ग पहुँचा उस समय निडरों का गौरव कहलाने वाला वह अकेला नहीं था उसकी वामांगी अप्सरा उसके साथ थी।

गोर गिरधर को तनूज तैसे तीन हनि,
देवसुत चावोरा नृसिंह पर्‌यो बीस पारि।
कूरम प्रताप पर्‌यो एकादस भजि सुत,
सल्हको प्रमार बलराज मर्‌यो नव मारि।
संकर अनुज सोढा भक्खर छ सांधि सूतो,
नेतसुत दहर मुकुंद झर्‌यो दस झारि।
रट्ठउर धीरसुव बीरम चउन चूरि,
चालुक बिहारी पर्‌यो दुर्जन दसक दारि॥३८॥

गिरधर गौड़ का बेटा अपने तीन दुश्मनों को मार कर, तो देवदत्त का पुत्र नृसिंह चावड़ा बीस यवनों को रणभूमि में गिरा कर गिरा। कछवाहा प्रतापसिंह ग्यारह शत्रुओं को तो प्रमार सल्ह का पुत्र बलराज नौ को मार कर मरा। शंकर सोढा का छोटा भाई भाखरसिंह छह को ले मरा। दहड़ वंशीय नेतसिंह का वीर बेटा मुकुंद दस को काट कर कटा। राठौड़ धीरसिंह का पुत्र बीरम राठौड़ सात शत्रुओं का चूरा कर और चालुक्य बिहारीसिंह युद्ध में

दुर्जनों के दशक को विदीर्ण कर स्वयँ विदीर्ण हुआ।

भीमनाती स्याम प्रतिहारहु बहुन बाढि,
जद्दव सुमेरुनाती अर्जुन अनेक हनि।
चालुक समाननाती सूर सिवराज गिर्‌यो,
बारह बिनासि बिनु सीसहु कृतांत बनि।
संहरि कितेक सूर सूरनसयन सूतो,
बिक्रम भदोरे चहुवानन को मूर्द्धमनि।
दहिया प्रताप सरबहिया करन एते,
बुंदीक प्रबीर रहे खेत रसबीर खनि॥३९॥

प्रतिहार भीमसिंह का पौत्र शत्रु पक्ष के कई योद्धाओं को मार कर तो यादव सुमेरसिंह का पौत्र अर्जुन अनेक प्रतिपक्षी वीरों के प्राण ले कर मरा। चालुक्य समानसिंह का वीर पौत्र शिवराज बारह शत्रु यवनों को काटने के बाद स्वयँ मस्तक रहित साक्षात यमराज हो कर कई शत्रुओं का संहार करता हुआ वीर शय्या पर सोया। भदोरिया चहुवान वंश का मुकट विक्रमसिंह, दहिया प्रतापसिंह, सरबहिया कर्णसिंह जैसे बूँदी के योद्धा जो वीररस की खान थे भी इस युद्ध में खेत रहे।

बंसीपति सारन तनैं कै छत छक्क लगि,
सेव सुत मेव के सरीर लगे छत च्यारि।
नारबद अर्जुन नै घाय चउ पाये ताके,
भ्रात लघु भीम नैं पचीस गज इक्क पारि।
तासों लघु पूरन प्रघात पंच पाये तिम,
दासीसुत सत्तल बच्यो बपु छ छत धारि।
चंुड वारे नाती नगराज रु. उदय वारे,
नाती कुंभकर्ण पाये छ छ हि बिजय बिथारि॥४०॥

बंसीपुर के स्वामी सारणदेव के पुत्र ने वीरता से लड़ते हुए अपने शरीर पर छह घाव खाये और सेव हाड़ा के पुत्र मेव को चार घाव लगे। नरबद हाड़ा के पुत्र अर्जुन ने चार घाव खाये पर उसके छोटे भाई भीमसिंह ने अकेले शत्रुओं के पच्चीस हाथी गिराये। इससे छोटे भाई पूर्णमल्ल ने पाँच प्रहार

अपने शरीर पर झेले और दासी पुत्र सातल छह गहरे घाव खा कर भी बच रहा। चूंडा के पौत्र नगराज और उदयसिंह के पौत्र कुंभकर्ण जैसे विजयी योद्धाओं ने अपनी काया पर छह-छह घाव सहे।

सीसउद अमर पिनाती हरि कै छ छत,
पित्थल बघेल नाती संभु के घट छ घात।
संकरके नाती भट्टी भीम कै प्रहार पंच,
लागे नव बंसीधर नाती कूर्म नंद गात।
सैंगर त्रिबिक्रमके नाती दीप दैह दुव,
पाये गोर गोवर्धन सुंदरके सूनु सात।
दहिया प्रतापसुत स्याम हुकै सात सर,
बहिया करन भ्रात दीप कै दस दिपात॥४१॥

सिसोदिया अमरसिंह के पड़पौत्र हरिसिंह के छह घाव लगे, वहीं बघेला पृथ्वीराज के वंशज शंभुसिंह ने छह प्रघात जेले। भाटी शंकर सिंह के पौत्र भीमसिंह ने पाँच और बंशीधर कछवाहा के पौत्र नंदसिंह के चार घाव लगे। त्रिविक्रम सैंगर के पोते दीपसिंह की काया पर दो घाव लगे तो सुन्दरदास गौड़ के पुत्र गोवर्द्धन ने सात घाव खाये। दहिया प्रतापसिंह के पुत्र श्यामसिंह के भी सात घाव लगे पर सरबहिया कर्णसिंह के भाई दीपसिंह के दस घाव लगे।

अैसै ही सपिंड असपिंड असगोत्र बीर,
रानके मरे त्यों परे घायन घनैं घुमाइ।
अज्ज दल द्वै हू असि झारि थकिहारे पै,
दयो जय दुलभ धर्म इतहि सहाइ आइ।
कादर कमाल बहराम से भजत भज्यो,
बाबर बलापति सों लै हय गय बिहाइ।
सिबिर की सामग्री गई रहि अनेक यातें,
बाबर के बाजे बजे रान दरवाजे जाइ॥४२॥

इसी प्रकार महाराणा सांगा के सपिंड भाई, कुटुंबी बांधव, सगोत्री

और दूसरे अन्य सिसोदिया वीर भी मरे और कुछ घायल हो कर रणभूमि में गिरे। आर्य राजाओं के दोनों दल अपनी तलवारों से प्रहार करते थक हारे पर इन्होंने धर्म की रक्षा करते हुए दुर्लभ विजय पाई। कादर खान, कमाल खान और बहराम खान जैसे यवनों के पराक्रमी योद्धा रणभूमि से भाग छूटे और बूँदी के राजा (अरावली के स्वामी) नारायणदास के आगे बादशाह बाबर भी अपना हाथी छोड़ कर घोड़े पर चढ़कर भागा। शत्रुसेना की सारी सामग्री पीछे शिविरों में ही छूट गई। इस छूटे हुए सामान में बाबर की सेना के नगाड़े भी थे जो बाद में महाराणा के चित्तौड़गढ़ दुर्ग के दरवाजे पर बजे।

इत के सहस्त्र च्यारि सोये सूरतल्य तंहं।
पंद्रह सै रान के दिवान के सतपचीस।
पातसाह वारे पंचसहस्त्र प्रबीर झरे,
बुंदीपति बिजय निदान कीनों जगदीस।
बंधव सपिंड पंच सुभट चउद्दह रहे,
रन बलापति के बीर इक ऊनबीस।
याही क्रम आठ आठ घायन घुमाये आप,
सप्ति सह पाये त्यों प्रहार च्यारि ओ चालीस॥४३॥

इधर के पक्ष वाली सेनाओं के चार हजार वीर रणशय्या पर सोये इनमें से डेढ़ हजार महाराणा की सेना के ओर शेष ढाई हजार वीर बूँदी के राजा की सेना के मारे गए। बादशाह बाबर की सेना के पाँच हजार यवन सैनिक मारे गए। बूँदी का पराक्रमी हाड़ा राजा नारायणदास विजय का कारण बना अर्थात् उसके बल से विजय मिली। इस युद्ध में हाड़ा राजा के पाँच सपिंड बांधवों सहित चौदह सामन्त खेत रहे और उन्नीस प्रमुख वीर मारे गए। इसी क्रम में राजा के आठ सपिंड भाई तो आठ अन्य घायल हो कर रणभूमि में गिरे और स्वयं बूंदी के स्वामी ने अपने घोड़े सहित चवालीस प्रहारों के घाव खाये।

दोहा

क्रम मोहन कुलजैत्र कुल, देव रु राघवदास।
आये भजि हड्डे उभय, या रन तें जिय आस॥४४॥

क्रमशः मोहन और जैत्रसिंह हाड़ा के वंशज देवराज और राघवदास ये दोनों हाड़ा रणभूमि से जीवित रहने की आशा में भाग आये।

षट्पात्

घुम्मत छकि घमसान नृपहिं नरजान रान धरि।
सब घायल तिम सोधि स्वगृह लैगो हित अनुसरि।
हायन प्रति उपहार किय जु दैनों सु द्विगुन किय।
पाटव आये प्रभुहिं द्रंग सहसत्थ सिक्ख दिय।
पठयो न कुमर अर्जुन तदपि बाबर सन हुव इम बिजय।
निजभटन आइ बुंदिय नृपहु हुलसि दिन्न गज गाम हय।।४५।।

इस भीषण घमासान में घायल हो कर घूमते हुए बूँदी के राजा नारायणदास को महाराणा सांगा पालकी में बैठा कर अपने घर लाये। इस तरह और भी दूसरे घायलों को ढूँढ कर महाराणा चित्तौड़गढ़ ले कर आये। फिर महाराणा ने अपनी ओर से प्रतिवर्ष दिये जाने वाले नजराने को भविष्य के लिए दुगना कर देने का निश्चय किया और स्वयं की सीमा तक बूँदी के राजा को पहुँचाने के लिए आया। यद्यपि बाबर के साथ हुई इस भिड़ंत में विजय हो गई थी तब भी महाराणा ने हाड़ा कुमार अर्जुन को बूँदी नहीं भेज कर अपने यहीं पर चित्तौड़गढ़ रखा। इसके बाद राजा ने बूँदी आ कर युद्ध में दिखाई वीरता के कारण प्रसन्न हो कर हाथी-घोड़े और जागीरें पुरस्कार में दीं।

दोहा

कति नव दिन यह रन कहहिं, जंपहिं कतिनव जाम।
च्यारि जाम कति जन चवहिं, कोहु होहु रनकाम।।४६।।

गो लुट्टत भजतहु मुगल, बुंदिय देस बिगारि।
तट चम्मलि नरबद तहां, रहिय खेत रचि रारि।।४७।।

अहमदपुर मंडू अधिप, अतिप्रसन्न सुनि एस।
दिय बाबर प्रति संधिदल, दब्बन अज्ज प्रदेस।।४८।।

पठयो उत्तर मुगलपति, दै दोउन दलदूत।
आवहु तुम चित्तोर अब, पावहु कटक प्रभूत।।४९।।

बुंदिय गढ पुनि करहु बस, हैं अब हमहु सहाय।
उभय बंटि तुम लेहु इक, इक हम जो घन आय।।५०।।

कुछ लोगों का कथन है कि यह युद्ध नौ दिन तक चला पर कुछ लोगों की मान्यता है कि नौ दिन नहीं बल्कि नौ प्रहर में यह समाप्त हो गया। कुछ लोग इसे मात्र एक दिन का अर्थात् चार प्रहार का ही मानते हैं। यवनों की सेना जब वापस लौटी तो वह रास्ते में पड़े बूँदी की सीमा के गाँवों में लूटपाट करती हुई गई। इसे रोकने को चंबल नदी के तट पर हाड़ा नरबद ने मुकाबला किया जिसमें वह मारा गया। मांडू और गुजरात (अहमदाबाद) के बादशाहों ने जब यह सुना तो वे प्रसन्न हुए और उन्होंने अपनी ओर से बाबर को इस बात का संधि प्रस्ताव भेजा कि हम आप मिल कर इन आर्यों के प्रदेश दबा सकते हैं। यह जान कर इन दोनों को बाबर ने दूतों के हाथ पत्र भेज कर कहलवाया कि आप लोग एक भारी सेना को सज्जित कर चित्तौड़गढ़ पर चढ़ आएँ। इसके बाद बूँदी को अपने अधिकार में करेंगे। मैं आप लोगों के साथ हूँ एक देश आप दोनों आधा-आधा बाँट कर रख लेना और एक देश जो अधिक आमदनी वाला होगा उसे मैं अपने हिस्से में लूँगा।

इतिश्रीवंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे पंचम राशौ वीतिहोत्र-वसुधेश्वर बीज्यवर्णनबीजहड्डाधिराडस्थिपाल वंश्यानुवंश्यविहितव्या-ख्यानावसरव्याहार्यबुन्दीवसुधेश्वरहड्डाधिराण्नारायणदास चरित्रेबाबर दिल्ली द्रङ्गादानहड्डाधिराडिक्काभिधयवननिपात समयशकसूचन, पुनः स्वपत्नीसमाचिकारयिषुराणास्वीकृताब्दि कोपायनसामग्रीसहितपंचसहस्र पृतनाप्रधानस्वंसनाभिशूरबूँदीप्रस्थापन प्रतिश्रुतोपायनकियद्दिनदर्शिता-नेककौतुकदत्तोचितदेयनरेन्द्रसहायीकृतकुमारार्जुन सार्थसदौहित्रद्वय सुताप्रतिप्रस्थापन सशपथसाहसदत्तराजपुरपत्तनप्रधानपंचषष्टिसहस्र मुद्रायपट्टसगौरवसाधितबुन्दीशानुमतसमाकारिततदीयसर्वजनराणातदर्जुन कुमारस्वाश्रितीकरण समभिषेणितमालव गौर्जरमहीशम्लेच्छद्वय चित्रकूट-वेष्टन शीर्षोद्दसमाहूतसप्रसभसार्ध सैन्यबुन्दीस्थापितमध्याऽसनुजनरबदो पेतस्वीयकुमारसूर्यमल्ल सौप्तिकसनिदानबहिर्न्यस्तबलदल युद्ध्यमान-सौभाण्डिचित्रकूटप्रविशन।

श्री वंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण की पंचम राशि में अग्निवंशी चहुवान वंशवर्णन के कारण हड्डाधिराज अस्थिपाल के वंश और वंश की शाखाओं की कथा बनाने के समय के वचनों में बूँदी के भूपति नारायणदास के चरित्र में बाबर का दिल्ली नगर लेना और हड्डाधिराज का इक्का नामक

यवन को मारने के समय के संवत् की सूचना करना, फिर अपनी स्त्री को बुलाने की इच्छा वाले राणा को अपने स्वीकार किये हुए वार्षिक नजराना की सामग्री सहित पाँच हजार सेना के प्रधान अपने सपिण्ड भाई शूर को बूँदी भेजना, नजराने को स्वीकार करके कितने ही दिन अनेक उचित कौतुक दिखाकर राजा का सहाय के लिए कुमार अर्जुन को देकर दोनों दोहितों सहित पुत्री को भेजना, अपनी सौगन के साथ हठ पूर्वक रायपुर नगर के साथ पैंसठ हजार रुपयों का पट्टा देकर बूँदी के राजा की सलाह से उसके सब लोगों को बुलाकर उस अर्जुन कुमार को राणा का अपना आश्रित बनाना, युद्धयात्रा करके मालवा और गुजरात के बादशाह दोनों यवनों का चित्तौड़ को घेरना, सिसोदिये के बुलाने पर हठपूर्वक आधी सेना सहित अपने मंझले भाई नरबद सहित अपने कुमार सूर्यमल्ल को बूँदी में रखकर रतिवाह के लिए आधी सेना बाहिर रखकर युद्ध करते हुए सुभांड के पुत्र का चित्तौड़ में जाना, दिल्ली के बादशाह की सहायता की अवज्ञा करके दोनों राजाओं का एक महीने तक तोपों की घात से युद्ध करना, अपनी सहाय के लिए दिल्लीश की युद्धयात्रा सुन कर अपने दोनों पक्षवाले वीरों को पैदल लेकर सीसोदिया और चहुवान दोनों भूपतियों का दोनों शत्रुओं की सेना पर रतिवाह पटकना, दिल्लीश को अपनी सीमा तक आया हुआजान, सन्मुख जाकर उचित नजराना करके राजा के छोटे भाई नरबद का उसका बड़प्पन रखना, अचानक रतिवाह युद्ध से हार कर थोड़े साथ से घोड़ों पर चढ़ कर दोनों यवनों का भागना, मांडूपति के सचिव को मार कर अठारह घाव पाकर आयुष्य के बल से कुमार अर्जुन का युद्ध में पड़ना, नरबद के पुत्र पूर्णमल्ल का ढक्कू के पुत्र पूर्णमल्ल के प्रारम्भ किये हुए गुप्त छल से बूँदीश के मारने के उपाय को निष्फल करना, बूँदीश के दो वीरों को मारने वाले गुजरात के सेनापति और अनेक शत्रुओं को मारने वाले बूँदी के राजा के छोटे भाई नृसिंह इन दोनों शत्रुओं का परस्पर के प्रहार से मारा जाना, परलोक भेजे हुए शत्रुओं की सख्या सहित कितने ही वीरो के मारे जाने और कितने ही वीरों के घायल होने की सूचना करना, बूँदी के राजा को उपालम्भ देकर अपनी सेना को बुलाकर महमूद सहित मुदाफर के गये बाद शत्रुओं के घायलों को भेजकर अपने घायलो को लाने वाले दोनों राजाओं के लिए मार्ग मे विजय सुनकर

प्रसन्न हुए बाबर का खिल्लत और फरमान भेजना, उनको चहुवान का ग्रहण करना और सीसोदिये का अनादर करना सुनकर भीतर क्रोधित हुए बाबर का वापस दिल्ली जाना।

समवमतदिल्लीशस हायनृपद्वयै क मासाऽवधिनालीयन्त्र-प्रघातप्रणयन श्रुत स्वसहायदिल्लीशाभिषेणनपद्वीकृतपक्षद्वय प्रवीरशीर्षोह् शाकम्भर ज्याजानिजकुट सपत्नयुग सैन्योपरिसौप्तिकसम्पातन समवगतस्वसीमावधिसमागतदिल्लीशाभिमुखप्रस्थितनिवेदितोचितो-पहारनृपाऽनुजनरबद तद्गौरवसाधन सहसासौप्तिकसमरपरास्त-स्तोकसार्थसादीभूतयवनयुग पलायन निपातितमण्डूपतिसचिवप्राप्त-ऽष्टादश प्रघातसायुर्बलकुमाराऽर्जुन रंगपतन नारबदपूर्णमल्ल ढक्कू-सुतपूर्णममल्लप्रारब्धप्रच्छन्नच्छलबुन्दीशमारणोपायनिष्फलीकरण प्रतिघाति तबुन्दीभटद्वय गौर्जरसेनानी सहसंहतानेकसपत्नबुन्दीशानुजनृसिंह द्रोहिद्वय परस्परप्रहारपरासुमहानिद्राविधान, परलोकप्रहितपरसङ्ख्यासहितकियत्प्र-वीरप्राणप्रहाण कियद्भटप्राप्तप्रहार प्रख्यापन दत्तनृपोपालम्भसमाहूतस्व-सैन्यसहमहमूद मुदाफर गमनानन्तरप्रेषितसजीवितपरप्रभिन्नसमानीतस-प्रहारस्वीयनृपद्वय निमित्तसरणिश्रुतजयप्रसन्नबाबर पटपत्र प्रेषण शाकम्भर तत्समादानसहशीर्षोह्ना नादरणश्रवणान्तःपुरुष्टबाबर दिल्लीप्रतिगमन।

कुमार अर्जुन के नैरोग्य होने तक चित्तौड़ मे रहकर बिना संतान युद्ध में मरे हुए अपने छोटे भाई नृसिह के अर्थ ब्राह्मण को बीस हजार रुपए देकर बड़प्पन सहित अपने नगर में आकर सुभांड के पुत्र का विजय करने वाले वीरों का सत्कार करना, सालाना खिराज माँगने पर महाराणा के किये हुए हँसीपूर्वक अनादर को जान कर अपनी सेना को सज्जित कर सीमा तक आये हुए बाबर के सन्मुख बूँदीश को मना करने पर भी उसके विरुद्ध बूँदीश का सहाय होना और उसकी सहायता से युद्ध की इच्छावाले राणा संग्राम सिंह का युद्धयात्रा करना, पील्याखाल (नाले) के प्रदेश में आर्य और म्लेच्छों की दोनों सेनाओं में युद्ध का आरम्भ होना, बाबर की सेना रूपी समुद्र की पराक्रम रूपी लहरों के बढ़ने के समय गढ़ का आश्रय लेने के लिए भागने की इच्छा वाले दीवान पदवी को धारण करने वाले महाराणा का युद्ध में हाड़ा राजा के पीठ पीछे होने के लिए हाड़ा राजा का प्रतिज्ञा करना, सिसोदिया का

अपनी सूचना करने वाले अर्थात् राजा के चिह्न रूप चमरों को झाला जाति वाले अपने श्रेष्ठ विशेष वीर के अर्थ देना, बूँदी के राजा से शत्रु की सेना को रुकी हुई देख कर राणा का भागने और नहीं भागने के संदेह करते समय परीक्षा किये हुए पाँच हजार वीरों सहित युद्ध करते हुए बूँदीपति का दिल्लीश की सवारी के हाथी के समीप व्यूह रचे हुए मुख्य म्लेच्छों के समूह का मर्दन करना, कादर, कमाल और बहराम आदि पीठ के वीरों का भागना देखकर डेरों की सब सामग्री को छोड़कर घोड़े पर चढ़कर बाबर का भागना, घोड़े सहित चवालीस घावों से घूमते हुए मूर्च्छा के पूर्वरूप वाले मत्त बूँदी के राजा के समीप आकर स्तुति करके राणा का राजा को बोध कराना, सुभांड के पुत्र के पाँच सपिण्ड भाई और चौदह उमरावों का मारा जाना, आठ भाई और आठ उमरावों के शरीर पर घाव लगने की गणना करना, मेवाड़ के स्वमी के भाई और उमरावों के समूह के मरने और घायल होने वालों के नाम और संख्या नहीं जानने के कारण सामान्य कल्पना की सूचना करना।

कुमाराऽजुर्न पाटवावधिचित्रकूटस्थितनिष्प्रजमृधमृतस्वानुजनृसिंह निमित्तद्विजदत्ताऽयुतद्वय द्रम्मसगौरवस्वपुरसमागतसौभाण्डि जयसाधक-सुभटसत्करण विज्ञातराणाकृतनर्मसूचितवार्षिक वसुमार्गणतिरस्कार-ससैन्यसन्नद्धसीमावधिसमागतबाबरा ऽभिमुखवर्जनविपरीतबुन्दीन्द्र-सहायसङ्ग्रामसोत्कण्ठराणासंग्रामसमभिषेणन पीतकुल्यप्रदेशम्मिलितार्य म्लेच्छ वरुथि नीजकुट समाघातसमारम्भण बाबर ब्रलवारिधिविक्र मवेलावृद्धिवे लादुर्गाश्रयचिकीर्षुप्रदुद्रूषुराणादीवानोपपदप्रधनप्रष्ठी भूतहड्डुपार्थिवप्रतिश्रवण शीर्षोद्दस्वसूचकचामरझल्लजातीयस्ववीर-वर्यविशेषार्थवितरण प्रेक्षितबुन्दीपुरपृथ्वीपुरन्दरप्रणीतपर पृतनाप्ररोध-राणापलायना पलायन द्वापरपुरस्सरपरीक्षितपंचसहस्त्र प्रवीरोपेतयुद्धय-मानबुन्दीपति दिल्लीपति सिन्धु रसमीपव्यूढवाटमुख्यम्लेच्छमंडल-मर्दनदृष्टकादर कमाल बहराम प्रमुखपृष्ठप्रवीरप्रद्रवत्यक्तसर्वशिबिर-सम्भारसप्तिसमारुढबाबर विद्रवण समीपसमागतराणास्रघोटक-चतुश्चत्वारिंश द्घातघूर्णमानमोहपूर्वरुपमत्तबुन्दीबासवबिरुदविबोधन सौभाण्डिसनाभिबान्धवपंचक सामन्तचतुर्दशक वीरस्वापविधान बान्धवा-

ऽष्टक सामन्ताष्टक पुद्गलप्रघात संगतिसंख्यान मेदपाटाधिराजबन्धु भट वर्गमरण क्षतप्रापण नाम संख्या ज्ञाननिदानसामान्यकल्पनासूचन समरसंस्थितबुन्दी चित्रकूट दिल्ली भटसंख्यानिगदनमोहहन वंशीय-देवराज जैत्र वंशीयराघवदास हड्डुद्वय प्रधनचाकित्यपलायनप्रकटन नृपसहायोपकारनम्र शीर्षोद्दसप्रसभस्वस्थानीयसमानीतसर्वप्राप्त-प्रहारप्रवीरपाटवसाधनानन्तरनियतपूर्ववार्षिकवस्तुजातद्विगुणोंपहार-प्रेषणप्रतिज्ञान अर्जुन वर्जितस्वस्थानीयसमागतबूँदीवसुधेन्द्रमृध-मृतशूरसन्त तिसहसर्वसामन्तसत्करण त्रि धालेखज्ञाननिदानसंग्राम समयसीमासन्देहसमर्थन पलायनपथप्राप्तबूँदीवशवर्त्तिवसुधा विभाग-विप्लवविदधानबाबर वरुथिनीविग्रहनृपाऽनुजनरबद निपातसंक्षेपसूचन श्रुतैतदभीष्टप्रसन्नगौर्जर मालव म्लेच्छराजजकुट सन्धिदलदिल्लीपुरप्रेषण स्वीकृतसन्धि साहाय्य प्राप्तप्रतिपत्रबाबर यवनयुग राज्यद्वय विप्लव-विधित्सनमष्टाविंशो मूयखः ॥२८॥ आदितः पंचसप्तत्युत्तरैकशत-तमः ॥१७५॥

युद्ध में बूँदी, चित्तौड़ और दिल्ली के वीरों की संख्या कहकर मोहन के वंश वाले देवराज और जैत्रसिंह के वंश वाले राघवदास दोनों हाड़ाओं का युद्ध से चकित होकर भागने को प्रकट करना, सहाय करने के उपकार से सिसोदिया राणा' का नम्र होकर हठ पूर्वक राजा को अपने स्थान पर लाकर सब घायल वीरों का इलाज कराने से नैरोग्य हुए बाद प्रथम नियत किये हुए सालाना वस्तुओं को दुगुना करके भेजने की प्रतिज्ञा करना, अर्जुन को छोड़कर अपने स्थान पर आये हुए बूँदी के भूपति का युद्ध में मरे हुए वीरों की संतान और सब उमरावों का सत्कार करना, तीन प्रकार के लेख जानने के कारण युद्ध के समय की मर्यादा में संदेह का समर्थन करना, भागते समय मार्ग में आई हुई बूँदी की भूमि में उपद्रव करने वाली बाबर की सेना के युद्ध में राजा के छोटे भाई नरबद के मारे जाने की संक्षेप से सूचना करना, यह अनुकूल वृत्तान्त सुनकर प्रसन्नता से गुजरात और मालवे के दोनों यवनों का मिलाप का पत्र दिल्ली भेजना, उस मेल को स्वीकार करके सहाय के लिए बाबर का उत्तर का पत्र पाकर दोनों यवनों को चित्तौड़ और बूँदी दोनों राज्यों में उपद्रव करने की इच्छा करने का अट्ठाईसवाँ मयूख समाप्त हुआ। और आदि से एक सौ पचहत्तर मूयख हुए।

प्रायो ब्रजदेशीय प्राकृत मिश्रित भाषा

दोहा

रन तजि पीरेखार तैं, मुरि बाबर प्रतिमग्ग।
लुट्टे नृपके आढ्य लखि, आये जे पुर अग्ग॥१॥
प्रथम मुकामहि पथ प्रजा, होत लूट लखि हानि।
नरबद प्रति बुंदियनगर, आक्रंदन किय आनि॥२॥

पीलेखाळ नामक स्थान पर हुए युद्ध को छोड़कर जब बाबर अपनी सेना सहित वापस दिल्ली लौट रहा था। तब रास्ते में पड़े बूँदी राज्य के नगरों को धनाढ्य समझ कर उसने लूटा। बूँदी राज्य की सीमा में बाबर के दल का प्रथम पड़ाव होते ही वहाँ की प्रजा ने जब लूटपाट से अपनी हानि होती देखी तो प्रजा ने बूँदी जा कर नरबद हाड़ा के समक्ष आर्त्तपुकार की।

षट्पात्

प्रचुर प्रजा पुक्कार सरन रविमल्ल कुमर सुनि।
काका प्रति इम कहिय प्रथम नृप संग न लिय पुनि।
सल्ल यहहु सहि रहहिं प्रथित तोतो कातरपन।
अप्पन दोउ न अधिप गिनहिं जिन्ह टारि लयो गन।
हैं बीर जदपि काका कहिय गढ रच्छक नृप रक्खि गय।
तुम लाल रहहु पट्टप तरुन हम रन हेरत बृद्ध बय॥३॥

बहुत सारे प्रजाजनों का राजकुमार सूर्यमल्ल ने अपने दरबार में क्रंदन सुना तो उसने जा कर अपने काका नरबद से कहा कि एक तो राजा (हाड़ा नारायणदास) मुझे वहाँ युद्ध में साथ ले कर नहीं गए। मुझसे कायरपन का यह कांटा अब और नहीं सहा जाता जिस नाम से मुझे प्रसिद्ध किया जा रहा है फिर क्या कारण है कि राजा हम दोनों को टाल कर शेष सभी को साथ ले गए अर्थात् वे हमें निश्चय ही कायर जान कर नहीं ले गए। काका ने समझाते हुए कहा। मेरे लाल! तुम अभी जवान हो और राज्य सिंहासन के पाटवी होने से हकदार हो। यह तो मैं हूँ जो इस बुढापे में युद्ध कार्य ढूँढता फिरता हूँ।

तुम सुपुत्र कुलतिलक पाइ तरुनत्व प्रवेसहि।
बिनु नृप सासन बीर उचित चढन न नय एसहि।

कारोभुजग कुमार तदपि सज्ज्यो नरबद तब।
प्रजावती ढिक पहुंचि सोहु बुल्ल्यो नेवेदि सब।
ओवरे मध्य कछु मिस अटकि करि प्रतिभू रट्ठोरि कंहं।
दैधर्म सपथ कुमरहिं बिदित तिम नरबद हुव सज्ज तंहं॥४॥

बेटा! तुम तो सपूत हमारे कुल के तिलक हो। यौवनावस्था में तुम्हारा नया नया प्रवेश हुआ है। फिर बिना राजा की आज्ञा के किसी भी वीर को युद्ध में जाने की नीति भी विरोध करती है। वह काला भुजंग (सर्पदंश के बाद उत्पन्न इस कुमार का यह संबोधन हो गया था) तब भी अपने काका के साथ युद्ध में जाने को सज्जित हुआ। इसके बाद वह अपनी माँ राठौड़ रानी के पास गया और उनसे जा कर पूरी बात कही। अपनी इच्छा बताई। एक कमरे में किसी बहाने आ कर उसने अपने कुमार को वहाँ बंद कर राठौड़ रानी ने कहा कि हे देवर! आप इसे धर्म की शपथ दे कर रोकें! इसके बाद नरबद आप युद्ध में जाने को सज्जित हों।

रोकि जननि रट्ठोरि गदित निज सोंहं द्वार गत।
कारो अतिगर कुमर रहित फन पटकि कोप रत।
सज्जि सबय भट सत्थ कलह नरबद प्रयान किय।
सहंसमल्ल जिहिं सजत दासिकुमरहु निवारि दिय।
जनु लियउ जानि निहचै निधन इम नरेस मध्यम अनुज।
गढलज्ज अप्पि तरुनन गयउ भिरि रन परन दिखान भुज॥५॥

कुमार सूर्यमल्ल को वहाँ रोक कर रानी अपने महल के द्वार से भीतर चली गई। वह अत्यंत विषधारी काला भुजंग कुमार जैसे अपना फन पटक कर रह गया। तभी हाड़ा नरबद ने अपनी उम्र के योद्धाओं को साथ ले कर युद्ध के लिए प्रयाण किया। उसके साथ जाने को दासी पुत्र सहसमल भी सज्जित हुआ पर उसे भी नरबद ने मना कर दिया। मानों नरबद हाड़ा ने निश्चय ही मरना जान कर ही ऐसा किया हो। इस तरह राजा का मध्यम अनुज नरबद दुर्ग की लज्जा रखने का दायित्व जवानों को सौंप कर युद्ध में शत्रुओं का अपनी भुजाओं का पराक्रम दिखाने रवाना हुआ।

पट्टनि सन दिस पुब्ब वार चम्मलितट आवत।
कुसक घट्ट उपकंठ पर्यो बाबर दल पावत।

समय रत्ति तस सीस दुसह नरबद सौप्तिक दिय।
गरद छबीनां गंजि पर्‍यो उप्पर संगरप्रिय।
बज्जिक कृपान सहसा विखम अद्धी रजनि अनेह इम।
मंडिय बजार खुलि मृत्यु के जगरी इत अतिकोप जिम॥६॥

पाटण से पूर्व दिशा में बढ़ते हुए हाड़ाओं का यह दल जब चम्बल नदी के तट पर पहुँचा तो उन्हें वहाँ घाट के समीप बाबर दल पड़ाव डाले हुए नजर आया। नरबद ने अपने साथियों सहित रात्रि के समय उन पर धावा बोला और रणरसिक नरबद रात्रि में पड़ाव पर पहरा देते चौकीदार प्रहरियों पर पिल पड़ा। आधी रात के समय जब सेना सो रही थी कि अचानक इस तरह तलवारें बज उठीं। कुपित हो उस जागे हुए कवचधारी नरबद ने ऐसा युद्ध किया मानों मृत्यु की मंडी का बाजार ही खोल दिया।

भिरत छबीना सुभट प्रथम छकि लोह गये पर।
मरत हनत धसि मांहिं परे जुज्झत बढि पद्धर।
जानि परिधिदल जुरत सत्रु पुब्बहि सचेत हुव।
त्रिसहस्त्रन चढि तुरग समुह झेल्यो सुभांड सुव।
भट पंचसतन नरबद अभय पुब्ब हि छकि तंहं झरि पर्‍यो।
बिनु सीस बरस बावन बयहु कलह अद्ध घटिका कर्‍यो॥७॥

प्रहरियों का पहला दल जो भिड़ने आया था वह घाव खा कर रणभूमि में गिर पड़ा। हाड़ा वीर वहाँ नहीं रुके वे मरते मारते सीधे शिविर में प्रवेश कर गए और वहाँ भीतर जूझने लगे। चौकीदार प्रहरियों के भिड़ते ही शिविर में सोये शत्रु जाग कर सचेत हो चुके थे। इसलिए उनमें से तीन हजार योद्धा अपने घोड़े पर सवार हो सुभांडदेव के पुत्र का सामना करने आ गए। अपने पाँच सौ सैनिकों के साथ निर्भय नरबद हाड़ा पहले ही घायल हो भूमि पर गिर पड़ा। उस बावन वर्ष के योद्धा नरबद ने अपना सिर कट जाने पर भी आधी घड़ी तक युद्ध किया।

कियउ पुब्ब संकेत पुरी पट्टनि हाकिमप्रति।
सैरिभ बहु रनसमय आनि ढिग तुम सचेत अति।

बलि तिन्ह शृंगन बंधि देहु प्रजराइ पलित्ते।
जोरि कहत जवनेस बिमन जानिय अब बित्ते।
परदल असेस नरबद परत चिंति बहुरि भय चढि चलिय।
मुगलान नतो इतकों मुररि बुंदिय धुव बेढैं बलिय॥८॥

नरबद ने पहले यहाँ से गुजरते समय पाटण के हाकिम से कह दिया था कि तुम बहुत सारी भैंसों को लड़ाई के समय हाँक कर इधर लाना। भैंसें काली होने से रात में दूर से नजर नहीं आएगी फिर तुम उनके सींगों पर जलती हुई मशालें बांध कर हाँकना। जिससे ऐसा लगे कि हाड़ाओं की सेना आ रही है। उसने वैसा ही किया। बादशाह बाबर ने जब यों चलती हुई मशालें देखी तो मन ही मन उदास हो कर सोचा कि अब मारे गए। शत्रुओं की सेना ने नरबद के पड़ते ही जब यह नजारा देखा तो भयभीत हो कर भाग चली। यदि ऐसा नहीं होता तो शत्रु सेना बूँदी को आकर अवश्य घेरती।

इहिं रन नरबद अडर पर्यो हनि जवन पचीस न।
बिनु सिर पुनि खट बढ्ढि पत्त सुरपुर निबाहि पन।
हत्थाउत हम्मीर पर्यो संहरि अरि पंद्रह।
तिम घुग्घल हर तेज मिच्छ नव मारि महामह।
लक्ख रु कुबेर हल्लू कुलज तिम अनुपम क्रम बंधु त्रय।
करि छक्क त्रिक रु दसकन कदन भये सुरन मिलि बीतभय॥९॥

इस युद्ध में निर्भय वीर नरबद हाड़ा पच्चीस यवन शत्रुओं को मार कर रणभूमि में मस्तक कट जाने पर गिरा और कबंध हो कर भी वह छः दुष्टों को मार कर वीरता निभाता हुआ स्वर्गलोक को गया। पन्द्रह यवनों को मार कर हत्थावत हम्मीरसिंह पड़ा। इसी तरह घुग्घल हाड़ा का पौत्र तेजसिंह अपने नौ शत्रुओं को मार कर मरा। हल्लू, लाखन और कुबेर सिंह ये तीनों अनुपम बांधव क्रमशः दस, छह और तीन शत्रुओं को समाप्त कर निर्भय वीरों की तरह परलोक गए।

खज्जूरीपति खेम पर्यो खट गेरि कदन प्रहि।
रन लालाउत राम बच्यो बपु घाय अट्ठ बहि।

मुक्कल नरबद कुमर समर उबर्‌यो इक छत सहि।
पीछैं तैं यहं पहुंचि बन्यों बंटक दस अरि दहि।
तोमर प्रताप झल्ला रतन उभय मुख्य अरि प्रान अहि।
सतपंच परे बुंदिय सुभट रन सह छतसत जियत रहि॥१०॥

खजूरी गाँव का जागीरदार खेमसिंह अपने छह यवन शत्रुओं को युद्ध रूपी कुएँ में गिरा कर रणभूमि में गिरा। लालावत रामसिंह इस भिड़ंत में अपनी काया पर आठ घाव झेल कर जीवित बचा। नरबद का पुत्र कुमार मोकल हाड़ा एक गहरा घाव खा कर बच गया। यह कुमार तो अपने पिता के बाद बूँदी से रवाना हो कर हिस्सा कराने वाले की तरह पहुँचा था जिसने आते ही दस शत्रुओं का खात्मा किया। तंवर प्रतापसिंह और झाला रतनसिंह दोनों शत्रुओं के प्राण सोखने वाले सर्पों ने कई यवनों को प्राणविहीन किया। इस भिड़ंत में बूँदी के कुल पाँच सौ योद्धा रणभूमि में कट कर गिरे जिनमें से मात्र सौ घायल जीवित रहे।

दोहा

अक्खय कुल खटपुर अधिप, नरबद बैर निहारि।
स्वांत मुदित संग्राम सुत, भो किखि मरत इभारि॥११॥

रक्खत होंसहि राज्य की, प्रथम जिट्ठ पन पाइ।
पहु मार्‌यो संग्राम पुनि, यह बैरहु अधिकाइ॥१२॥

जनकबैर गुरुता जुग हि, उर सल्लहिं जिम एस।
हनन नृपहिं चित्तत रहत, इक्खत छित्र असेस॥१३॥

सो इम नरबद निधन सुनि, बलि घायल बुंदीस।
होत अभीष्ट प्रहृष्ट हुव, संचत अघ भर सीस॥१४॥

निरखहु हाहा राम नृप, ऐसी बत्तन अज्ज।
बरतैं मिच्छन हुकम बस, अचिरज बढत अकज्ज॥१५॥

खटपुर का स्वामी जो अक्षयसिंह का वंशज और संग्रामसिंह का पुत्र था और नरबद हाड़ा से वैर पालता था। यह नरबद के मरने पर जिस तरह सिंह के मरने पर बंदर खुश होता है उसी तरह मन ही मन प्रसन्न हुआ। पहले जो बूँदी का पाटवी होने से राज्य का राजा बनने की आशा रखता था और

नहीं बन सका इस बात से खफा था फिर ऊपर से राजा नारायणदास ने उसके पिता संग्रामसिंह को मार डाला। इससे उसके मन में इनके प्रति दुगुनी घृणा थी और दुगना वैर दफन था। इन दोनों कारणों से उसके मन में बूँदी के राजकुल वाले हाड़ा कांटे की तरह चुभते थे। वह मन ही मन राजा को मारने के बारे में निरंतर सोचता रहता और किसी उपयुक्त अवसर की तलाश में था। जब उसने सुना कि नरबद इस भिड़ंत में मारा गया और राजा नारायणदास पीली खाळ वाले युद्ध में घायल हुआ है तो वह अपने सिर पर पाप का बोझ बढ़ाता हुआ मन ही मन खुश हुआ। हे राजा रामसिंह! हाय! देखिये आर्य लोग ऐसे कारणों से ही यवनों के मातहत हो कर उनकी आज्ञा मानने को विवश हैं। इसमें किसी को आश्चर्य हो तो यह व्यर्थ की बात है।

षट्पात्

नरबद को इत निधन सुनत बुंदियपुर सोचहिं।
कारेकुमरहिं कछु न रम्य भोगहु मन रोचहिं।
माता चउ सह कुमर मंत्रि सुभटन यह मंत्रिय।
स्रवते घायन सुपहु तिमहि बत भट छत तंत्रिय।
परिहैं जु सुद्धि चित्तोरपुर असुभ ततो भावी अटल।
यातैं बिगुप्त रक्खहु यहै नृप आवनलग बुद्धिबल॥१६॥

चम्बल के तट पर नरबद के मारे जाने से पूरे बूंदी नगर में शोक फैल गया। काले कुंवर (कुमार सूर्यमल्ल) को भी मन में बहुत दुख हुआ। चारों माताएँ, सारे कुमार, मंत्री, सामन्तों ने मिल कर यह मंत्रणा की कि अभी इस खबर को गुप्त रखा जाए क्योंकि राजा अभी अपने ताजा घावों वाला है और दूसरे उमराव भी घायल हैं वे सभी उपचाराधीन है। फिर यह अशुभ खबर चित्तौड़गढ़ पहुच गई तो अनर्थ हो जाएगा। भावी (भवितव्य) अटल है हम क्या कर सकते हैं। पर यह तो हमारे हाथ में है कि हम राजा के ठीक हो जाने तक इस खबर को गुप्त रखें और इसे फैलने न दें।

दोहा

यह प्रबंध जनपद अखिल, भयो प्रजाप्रति भाखि।
सुहि कहाइ उत रान सन, रन सु गूढ लिय राखि॥१७॥

अर्जुन लग घायल इम सु, रक्खी गोपित रान।
किय मुक्कल इक छत बिकल, बुंदिय प्रेतबिधान॥१८॥

स्वपति अंत बुंदिय सुनत, नरबद की जुग नारि।
कछवाही जद्दोनि किल, ज्वलन दये बपु जारि॥१९॥

अखिल होत पटुकल्प उत, भूप त्वरा करि भौंन।
आवन लग्गो याहि तैं, जबहु असुभ जान्यौं न॥२०॥

यहहि हेतु गिनि अर्जुन हिं, सिक्ख न दिय सीसोद।
इक छत चिर रहि पाहुकै, मिट्यो निद्वि करि मोद॥२१॥

प्रजा को भी आगाह कर पूरे राज्य में ऐसी ही व्यवस्था की गई कि इस बात को राजा से गुप्त रखा जाए। यही बात चित्तौड़गढ़ के राणा सांगा से कहलवाई कि वे भी इसे गुप्त ही रखें। राणा सांगा ने भी यह बात घायल कुमार अर्जुन को नहीं बताई। इतना अवश्य बताया कि किसी अशुभ प्रेत बाधा के कारण कुमार मोकल को एक घाव लगा है और वह घायल है। इधर बूँदी में नरबद की दोनों कछवाहा और यादव वंशीय रानियों ने अग्नि में अपना शरीर जला कर अपनी ईहलीला समाप्त की। कुछ दिनों के निरंतर उपचार से जब सभी घायल निरोग होकर स्वस्थ हो गए तब राजा ने शीघ्रता से घर जाने की ताकीद की। वह जब वहाँ से रवाना हो कर आने लगा तब भी उसे इस घटित अशुभ घटना का इल्म नहीं हुआ। इसी कारण से महाराणा सांगा ने कुमार अर्जुन को चित्तौड़गढ़ से आने नहीं दिया फिर अभी उसके शरीर का एक घाव ऐसा था जो ठीक होने का नाम ही नहीं ले रहा था। जो कई दिनों के बाद कठिनाई से ठीक हुआ।

नगर आइ जान्यों सु नृप, बल्लभ अनुज बिनास।
जुग भ्रातनके सोक जुत, भो बिसिनी हिमभास॥२२॥

द्विज अयुत हिं भोजन दयो, अयुत हिं रुप्पय अप्पि।
प्रजावतिन हित तिन्ह तियन, मंडन सिचय समप्पि॥२३॥

बदिय कुमर अवरोध बिच, मिस करि अटक्यो मोहि।
काका लै सबयन कियउ, जुज्झि मरन रन जोहि॥२४॥

मुगलराज रन मोरिकैं, भानुराज कुलभान।
आयो इम जय उल्लसत, दृढ जस बज्जि दिवान॥२५॥

जोगी इक कोउक जवन, यह उपपद दिय अग्ग।
जिमहि रान आये बजत, सिद्धन बचन निसग्ग॥२६॥

सत्थ नृपति के हड्डु सब, सज्जि गये रनसूर।
बुंदिय कतिक निदेस बस, प्रथित रहे बलपूर॥२७॥

राजा नारायणदास ने अपने नगर में पहुँच कर सुना कि उसका प्रिय छोटा भाई नरबद इस संसार मे नहीं रहा। अपने दोनों भाइयों के शोक में राजा हेमन्त ऋतु में पाला पड़ने से कुम्हलाती कमलिनी जैसा हो गया अर्थात् कुम्हला गया। राजा ने इन भाइयों का क्रियाकर्म करवा कर दस हजार ब्राह्मणों को भोजन कराया और उन्हें दस हजार रुपयों की दक्षिणा दी। रानी प्रजावती ने भी उन ब्राह्मणों की स्त्रियों को इस अवसर पर आभूषण और वस्त्र बांटे। इसी समय जनाने में कुमार सूर्यमल्ल ने अपनी माता से कहा कि आप ने मुझे बहाना बना कर कमरे में बन्द कर दिया था। इसीलिए काकाजी अपनी उम्र के योद्धा साथ ले कर युद्ध में मरने के लिए गए। मुगल बादशाह को रणभूमि से भगा कर भानुराज चहुवान के कुल का सूर्य राजा नारायणदास इस प्रकार विजय पा कर उल्लसित हो लौटा और इस दीवान ने सुयश के नगाड़े बजवाए। पूर्व में किसी यवन फकीर ने यह दीवान का उपटंक दिया था उसी के आधार पर मेवाड़ के महाराणा दीवान कहलाते आए हैं। इसकी दूसरी कथा भी प्रचलित है। इस हाड़ा राजा के साथ सभी वीर हाड़ा योद्धा सज्जित हो कर युद्ध में गए थे। बूँदी के इस राजा के निर्देश पर इन बलवानों ने अपने प्राण गँवाते हुए भी अपने शत्रुओं को काटने में कसर नहीं रखी।

चुंड उदय कुल अवधि चढि, सबहि मरन गय संग।
पै खटपुर पलटे प्रतिम, रह्यो पृथक रुचि रंग॥२८॥

नरबद को यातैं नृपति, अधिक पटा सु उतारि।
कुछ ग्रामन खटपुर गयउ, वाके बस अनुसारि॥२९॥

छिद्र तकत पुब्बहि छली, अब अनिष्ट हुव एह।
सो परबस जात न सह्यो, इक्खत अहित अनेह॥३०॥

छतनजुत्त अरु हीनछत्त, मृतन तनय सनमानि।
ग्राम बिभूखन बाजि गज, अधिप दये हित आनि॥३१॥

क्रम मोहन कुल जैत्र कुल, देव रु राघवदास।
बच्छोला कोटा बसति, आये भजि जिय आस॥३२॥

बच्छोला कोटा सु बिभु, बूँदी आतहि बेर।
छिन्नै दुव हि महीप छम, दंडयन नीति न देर॥३३॥

हाड़ा चूंडा और उदयसिंह के वंशज आपदा की इस घड़ी में सभी अपने स्वामी के साथ रणभूमि में मरने गए पर एक खटकड़पुर का स्वामी विरोध के कारण इन सभी से पृथक रहा। इसी कारण से बूँदी के राजा ने इसकी अधिक आमदनी वाली जागीर को घटा दिया। इस कटौती में खटकड़पुर के कुछ गाँव वापस ले लिये गए। वह खटकड़पुर का स्वामी तो पहले ही अवसर की प्रतीक्षा में था ही अब शत्रुता का यह तीसरा कारण भी उसके मन में बस गया पर परवश होने के कारण वह अपने अहित को देख कर भी इस समय विरोध में कुछ बोल नहीं सका। राजा ने युद्ध में घायल हुए थोड़े घायल हुए और जो मारे गए उन सभी सुभटों के पुत्रों को बुलवा कर सम्मानित किया। उन्हें गाँव, आभूषण, घोड़े, हाथी के पुरस्कार दे कर राजा ने उनका रुतबा बढाया। क्रमशः मोहनसिंह और जैत्रसिंह के वंशज देवराज और राघवदास जो रणभूमि से भाग आए थे और वर्तमान में वे अपने कोटा और बच्छोलापुर के निवास स्थान पर थे। बच्छोला ओर कोटा जैसे वैभवशाली नगरों को चित्तौड़गढ़ से बूँदी लौटते समय समर्थ राजा ने उनसे छीन लिया और नीति के अनुसार उन्हें दंड देने में देरी नहीं लगाइ।

अर्जुन आतहि करि अरज, पीछें अवसर पाइ।
नृपतैं दोउ न धाम निज, दिन्ने बहुरि दिवाइ॥३४॥

अर्जुन के सोदर अनुज, पाये घाय पचीस।
जो चिरकरि हुव स्वस्थ जब, सुपहु किन्न बख्सीस॥३५॥

करउर पुर गज जयकलस, निज तुरंग मृगडान।
खासपट्ट इक मनिखचित, अप्पिय मिलि चहुवान॥३६॥

पुनि मुत्तिन भुज पुञ्जिकैं, बहुत सिराह्यो बीर।
कहिय भीम मो लखत किय, चंद्रहास गज चीर॥३७॥

अर्जुन सुनि उल्लघ उत, करि जनकोचित कर्म।
बुंदिय आयउ रीतिबंस, धारत लौकिक धर्म ॥३८॥

महिप ताहि हिय लाइ मिलि, मैं नरबद इम अक्खि।
पूजे भुज गौरव प्रथित, रीतिकथित हित रक्खि ॥३९॥

कुछ दिनों के बाद कुमार अर्जुन ने अच्छा अवसर देख कर राजा से निवेदन किया कि ये दोनों नगर उन्हें वापस मिलने चाहिए। इस तरह कह कर उन्हें अपनी जागीरें वापस दिलवा दीं। इस युद्ध में कुमार अर्जुन के छोटे भाइयों ने पच्चीस घाव खाये थे। वे जब कई दिनों के बाद वापस स्वस्थ हुए तो राजा ने उन्हें जागीरें बख्शी। करउर पुर नामक गाँव, जयकलश नामक हाथी और स्वयँ की सवारी का मृगडाण नामक घोड़ा, मणियों से जड़ित सिरपेच आदि मिलने पर राजा ने दिये। इसके बाद उस वीर भीमसिंह की भुजाओं की मोतियों से पूजा की। इस वीर की सराहना करते हुए राजा ने कहा कि इस वीर भीमसिंह ने मेरे देखते रणभूमि में अपनी तलवार से हाथी को चीर कर गिराया था। कुमार अर्जुन ने स्वस्थ होने पर अपने पिता हाड़ा नरबद के क्रिया कर्म संपन्न किये और फिर बूँदी आ कर सारे लौकिक रीति रिवाज के अनुसार वांछित कर्म किये। राजा ने तब इस कुमार अर्जुन को ह्रदय से लगा कर कहा कि हे कुमार! आज से मैं तुम्हारा नरबद हूँ अर्थात् पिता हूँ। इसके बाद कुमार की भुजाओं की भी राजा ने स्नेहपूर्वक ऊपर कही रीति के अनुसार मोतियों से पूजा की और उसका गौरव बढ़ाया।

दिय पट्टनि पुर अरु द्विरद, निज दलथंभन नाम।
खास बाजि पट भूखन रु, इक चामर अभिराम ॥४०॥

कर मुत्तिन पुज्जि रु कहिय, अब रहिये सुत अत्थ।
लहिये राज्य बिलास बहु, बहिये सुख भरि बत्थ ॥४१॥

दल रानां पठयो तदनु, जंहं सपथन लिखि जाल।
इक्क बेर पुनि अर्जुन हिं, भेजहु मिलन भुवाल ॥४२॥

जो परबस चित्तोर जब, अर्जुन पठयो ईस।
न दयो रान सु आन पुनि, सपथ भार धर सीस ॥४३॥

राजा ने कुमार अर्जुन को तब पाटण की जागीर, एक दलथंभन नामक

हाथी, खास सवारी का घोड़ा, आभूषण, वस्त्र और एक चँवर प्रदान कर सम्मानित किया। स्वयँ के हाथों से पूजा करने के बाद कुमार से राजा ने कहा बेटा! अब से आप हमारे साथ यहीं रहिये और राज सुख के भोग का आनन्द लीजिये। इसके थोड़े दिनों बाद महाराणा सांगा ने एक पत्र लिख कर भिजवाया जिसमें तरह तरह से शपथ दिलवाते हुए लिखा कि हे राजा! एक बार कुमार अर्जुन को आप मिलने के लिए चित्तौड़गढ़ अवश्य भेंजे। हाड़ा राजा ने भी तब मेवाड़ को कमजोर जान कर और वक्त की नजाकत देखते हुए कुमार अर्जुन को चित्तौड़गढ़ भेज दिया। वहाँ से राणा सांगा ने उसको सौगंध पर सौगंध दिला कर वापस बूँदी नहीं आने दिया वहीं अपने पास रखा।

जवनागम ध्रुव जानिकैं, उचित भीर हिय आनि।
नृप सम्मति लै अर्जुन सु, तत्थ रहिय जस तानि॥४४॥

प्रबल बध्यो इत जोधपुर, मालदेव महिपाल।
लिन्नें जिहिं अजमेर लग, बहु गढ कटक बिसाल॥४५॥

इत चालुक रैवत अचल, सरबहिया रन सूर।
करन नाम बितरन करन, कविन करन दुख दूर॥४६॥

इधर जोधपुर के राजा मालदेव ने प्रबल हो कर अपने राज्य का विस्तार आरंभ किया। उसने अपनी विशाल सेना की सहायता से अजमेर तक के सारे दुर्गों पर अपना अधिकार कर लिया। सरबहिया चालुक्य जो रैवतगिरि नामक पर्वत का स्वामी था युद्ध में पराक्रम दिखलाने वाला वह कर्ण अपने नाम रूप महाभारत के कर्ण की तरह वदान्यता का पूरा प्रदर्शन करते हुए अपने आश्रित कवियों का दारिद्र्य दूर करने वाला हुआ।

षट्पात्

याके कुल हुव अग्ग जई जसराज अतुल जस।
दुर्जनसल्ल उदार तिमहिं बिक्रांत भयउ तस।
बिजय तास हुव बीर धीर रन दान धुरंधर।
वाके हुव नृप एह करन जग कित्ति बिसद कर।
कैवर्त्त बिदित याके कुमर ताकै नवघन होहि तिम।
ए भूप खट हि रैवत अचल जुरन दैन हुव कर्ण जिम॥४७॥

इस सरबहिया कुल में पूर्व में अतुलनीय यश वाला जयी जसराज हुआ। इसके एक वीर पुत्र दुर्जनसाल नामक हुआ जो अपने पिता की तरह प्रसिद्ध था। इस दुर्जनसाल के आगे विजयसिंह जैसा धीर वीर पुत्र जन्मा जो वीरता और वदान्यता दोनों क्षेत्रों में धुरंधर था। इस शृंखला में विजयसिंह के यह राजा कर्ण जन्मा जिसने संसार में अपनी कीर्ति का प्रसार किया। इसके कुमार कैवर्त जन्मा जिसके आगे नवघन हुआ। इस प्रकार ये छह ही राजा रैवत पर्वत की तरह युद्ध और दान में कर्ण की तरह अचल रहने वाले हुए।

दोहा

इनमें अनुपम कर्ण यह, हुव इहिं समय महीस।
जगद्देव पीछैं जसहिं, सहभट जिहिं दिय सीस॥४८॥

सत्तसई मिलि कविन की, कहुं जावत इक काल।
बालेसा संभर बिजय, भिंट्यो सरनि भुवाल॥४९॥

पर इन सभी राजाओं में कर्ण विशेष हुआ जो इस समय वहाँ का राजा था। इसी का वंशज बाद में जगदेव हुआ जिसने कंकाली नामक एक भाट स्त्री को अपना मस्तक स्वयँ के हाथों काट कर दान दिया और उसकी इस शौर्य परंपरा को उसके सामन्तों ने भी निभाया। एक बार सात सौ चारण कवि मिल कर एक साथ कहीं जा रहे थे कि उन्हें रास्ते में विजयसिंह नामक बालेसा चहुवान मिला।

षट्पात्

बासर कछु नृप बिजय सुकवि रक्खे अति हितसह।
ब्याह सनहु अति बढत मन्त्रि अभिमत किन्नों मह।
दुव दुव निज पटु दास पास रक्खिय इक इक प्रति।
थुक्कहिं ओडत हत्थ किन्न स्वागत अनेह कति।
जिनमांहि रत्ति कति मूढ जगि बुल्ले कत्थनबीर व्है।
मच्छरी मांहिं भासत मनहुं सरबहियन को सीर व्है॥५०॥

इस चहुवान राजा ने कुछ दिन तक सारे कवियों को स्नेहपूर्वक रखा। राजा ने अपने एक विवाह के अवसर को बहुत बड़े उत्सव के रूप में

आयोजित किया। उसने इन सभी चारण कवियों में से प्रत्येक कवि की सेवा में अपने दो दो चतुर सेवक नियुक्त किये। जिन्होंने इन कवियों को मुहावरे के अनुसार अपनी हथेली पर थुकवाया। उनके स्वागत में कोई कमी नहीं रखी। इतने आराम और सम्मान के साथ ठहरे इन कवियों में से एक कथन वीर चारण ने कहा कि यह राजा इतना सदाशयी है इससे ऐसा लगता है मानों इस चहुवान में सरबहियों का मिश्रण हो गया हो।

बिजय अग्ग यह बत्त दई प्रातहि कहि दासन।
संभर कुप्पि रहस्य जबहि बिस्वस्त बुल्लि जन।
अक्खिय ताहि उदंत सुनत सुत्तन इम अक्खहु।
देवी कंहं बलि दैन पुष्ट इन्ह करत अहो पहु।
अैसो न कोहु भासत अधिप सिर इन्ह संटै सत्तसत।
अप्पि रु उबारि चारन इते रक्खहिं नाम दयानुरत॥५१॥

राजा विजय के सेवकों ने प्रात:काल अपने स्वामी से जा कर यह बात कह सुनाई। ऐसा सुनते ही राजा ने अपने विश्वासपात्र लोगों को एकान्त में बुलाकर उन्हें ऐसा निर्देश दिया कि वे जा कर जहाँ ये कवि लोग सोते हैं यह बात प्रचारित करें कि यह राजा अपनी देवी के आगे बलि चढ़ाने के लिए इन कवियों को पुष्ट कर रहा है। फिर इस समय में ऐसा कोई राजा नजर नहीं आता जो इन कवियों के सात सौ मस्तकों के बदले में सात सौ मस्तक दे कर इन चारणों को दया में प्रीति रखते हुए मरने से उबार ले।

इमहिं बत्त तिहिं अनुग कपट तंद्रित निस किन्नी।
जगत हुते तिन्ह जोहि लीन मंचन सुहि लिन्नी।
इम अभीष्ट आदर हु बनन लग्गे सब दुर्बल।
राजद्वार तब रुद्ध छितिप तिन्ह किय कृत्रिम छल।
हव बत्त प्रकट तब इम कहिय संटि देह जन सत्तसय।
तजि दैहिं जियत तोतो तुमहिं भनित बिनां सु टरै न भय॥५२॥

इस तरह की कपट से सनी बात राजा के लोगों ने सोते हुए कवियों के बीच कही। इन सोते हुए कवियों में से एक दो के कानों में यह बात पड़ी। इसके बाद राजा की पूरी आवभगत और सेवा के चलते कवि दुबले होने

लगे। इधर राजा ने एक दिन कृत्रिम छल का सहारा ले कर राजमहल के द्वार बंद करने का आदेश दिया। जब यह बात प्रकट हुई तो राजा ने कहा कि हाँ, मुझे कोई आपकी एवज में सात सौ मस्तक सौंप दे तो में आप लोगों को जीवित छोड़ सकता हूँ। यदि नहीं तो जो बात आपने सुनी है उसका भय नहीं मिटेगा।

सुनत बज्ज बच सबन पाइ भय मंत्रि परस्पर।
कहिय निकासहु कतिक नियत जे भ्रमि आनैं नर।
हे बहु पुत्रन सहित रक्खि तिनके सुत संकट।
बाहिर कढ्ढे बिजय खुल्हि खिरकी चारन खट।
भुव बलय तेहु हरि भटकि मिले तदपि न इते मरन।
दस बीस मिलैं जिनतैं सु दुख न टरै बिनु तितनैं नरन॥५३॥

राजा के ऐसे वज्र वचन सुन कर सभी चारण कवि भयभीत हो कर आपस में मंत्रणा करने लगे। उन्होंने आखिर यह तय किया कि हम में से कुछ लोगों को यहाँ से बाहर निकलना चाहिए। जो बाहर सब जगह घूम कर ऐसे आदमी लाए जो हमारे लिए अपना मस्तक दे सके। इनमें से कुछ चारण कवि जिनके एक से ज्यादा पुत्र थे, उन्होंने अपने पुत्रों को वहाँ रख कर इस जमानत के आधार पर बाहर निकलना माँगा। राजा विजय चहुवान ने तब छः चारणों को खिड़की खोल कर बाहर जाने दिया। पूरी पृथ्वी (अर्थात् देश) का चक्कर लगा कर वे चारण हार गए तब भी उन्हें सात सौ मरने वाले नहीं मिले। दस बीस अवश्य मिले उनसे यह दुःख टलने वाला नहीं था क्योंकि इसके लिए पूरे सात सौ मस्तक चाहिए थे।

हेरत नर बारहठ इक्क जूनांगढ आयो।
रैवतपति नृप करन पुच्छि कारन सब पायो।
भाखिय चालुक भटन लखहु बालिस बालेसन।
हनत चारनन हाइ उचित भूपन अघ एस न।
जो रुचत भनत अद्धय सुजस सब अप्पन चलि दैहिं सिर।
आश्रय करैं जु अधिपति उहां को न करैं बसबर्त्ति किर॥५४॥

इस कठिन समय में ऐसे व्यक्ति ढूँढता हुआ एक बारहठ जूनागढ़

आया। उससे सरबहिया राजा कर्ण ने पूछताछ कर पूरी बात जान ली। उसने यह जानते ही अपने चालुक्य सामंतों से कहा कि मूर्ख बालेसों को देखो कि वे चारणों को मारने पर तुले हैं क्या एक अच्छे राजा को ऐसा पाप करना चाहिए। अब आप में से जो अपना सिर दे कर अद्वितिय सुयश पाना चाहता हो वे चलें। इस पर उन सुभटों ने जवाब दिया कि जहाँ स्वामी किसी का सहारा बनने की सोचें वहाँ भला उसके सेवक उसके कार्य को कैसे मना कर सकते हैं।

सरबहिया सतसत्त टारि भट तब पत्तो तंहं।
बसुधागृह बालेस पिहित थप्पिय काली कंहं।
इक्क इक्क तंहं आनि बह्वि अज सकल बचाये।
न मिले जोलों निखिल अधर मृत्युहि गिनि आये।
चालुक बचाइ इम सतसत्त ब्याहि स्वसा करन हिं बिजय।
दिय सिक्ख सदन सह चारनन नृप संभर निष्णात नय॥५५॥

तब राजा कर्ण सरबहिया ने अपने योद्धाओं में से सात सौ वीरों को छाँटा और उन्हें ले कर वहाँ पहुँचा। जहाँ एक कच्चे घर में कालिका की मूर्ति की स्थापना कर एक चारण के बदले सिर देने वालों में से एक एक कर वहाँ लाया जाता पर वहाँ उसकी जगह एक बकरा काट कर उसे आगे निकाल दिय जाता। इस प्रकार परीक्षा लेते हुए विजय बालेसा ने बकरे काट कर सभी को बचा लिया। जिसका नाम पुकारा जाता वह प्रत्येक चालुक्य वीर यही सोच कर नीचे मंदिर में आता कि उसे मरना है। चालुक्य राजा ने इस प्रकार सात सौ चारणों को मरने से बचाया तब विजय बालेसा चहुवान ने कर्ण सरबहिया से अपनी बहिन ब्याही फिर सभी चारण कवियों को अपने अपने घर उस नीति-निपुण चहुवान राजा ने रवाना किया।

दोहा

सरबहिया अैसी असह, करन करी इहिंकाल।
द्वार पताका दान की, जास तन्यो जस जाल॥५६॥

काय तज्यो जब इहिं करन ईस्वर कवि तंहं आइ।
महाभक्त इष्टहिं सुमिरि, जो लिय बहुरि जिवाइ॥५७॥

कैवर्त्त हु याको कुमर, हुव जब सुपहु समत्थ।
सठ कोकिलपुरपति सचिव, तिहिं लैगो छलि तत्थ॥५८॥

कुल प्रमार संखुल कुमति, नाम अनंत नरेस।
करि मच्छर कारा दयो, इम बुल्लि रु तिहिं एस॥५९॥

उक्क नाम केवट्ट के, बहिनीसुत कुल बाल।
निजमातुल आन्यों निलय, कलि संखुलकुल काल॥६०॥

इस कलियुग के समय में भी कर्ण सरबहिया ने ऐसा दुर्लभ कार्य किया। उसने अपने घर के द्वार पर दान की पताका फहराई और अपने सुयश का जाल फैलाया। जब इस कर्ण सरबहिया का आकस्मिक निधन हुआ तो ईसरदास बारहठ नामक कवि वहाँ आया और उस महाभक्त चारण कवि ने अपने इष्टदेव को याद कर इस सरबहिया को पुनः जीवित कर दिया। इसका पुत्र कुमार कैवर्त (कैवाट) जब बड़ा हो कर राजा बना तो उसे कोकिलपुर के राजा का दुष्ट मंत्री कपटपूर्वक बुला ले गया। जहाँ प्रमार जाति की सांखला शाखा के अनंतदेव नामक राजा ने घमंडपूर्वक उसे अपने यहाँ इस तरह बुला कर कैद में डाल दिया। ऊका नामक केवाट सरबहिया के भानजे ने युद्ध कर सांखलों का नाश किया और अपने मामा को कैद से छुड़ा कर घर लाया।

हन्यों अनंतहु जिहिं पिहित, जिम हल्लू तिम जाइ।
सो बिस्तर छोर्‍यो सु पहु, प्रथित कथा सब पाइ॥६१॥

केवट्ट हु हनि जवन कलि, बपुतजि किय दिव बास।
नवघंन हुव तस सुत नृपति, यहहु ख्यात इतिहास॥६२॥

सरबहियनकै सो सुजस, को करिहै चिथिकंत।
जो पिक्खहु प्रभु राम जग, अर्क प्रथम उग्गंत॥६३॥

इत जड्डेचक भुज अधिप, याहि समय ढिग आस।
सो जद्दव नृप भार सुव, जसा नाम जग जास॥६४॥

तासहु बीर उदारता, अखिल दब्बि हुव अग्ग।
जगप्रसिद्ध नृप राम जस, अब लग सुजस उदग्ग॥६५॥

इस वीर ऊका ने वहाँ जा कर छिपे हुए अनंतदेव को मार कर वैसा ही कार्य किया जैसा हाड़ा हल्लू ने मंडोवर जा कर किया था। हे राजा रामसिंह! मैं इस प्रसिद्ध कथा को विस्तारपूर्वक नहीं कह रहा हूँ क्योंकि सभी उसे जानते हैं। इस सरबहिया कैवाट ने यवनों से युद्ध लड़कर रणभूमि में अपना

शरीर त्यागा और स्वर्गलोक में जा निवास किया। इस के नवघन जैसा प्रसिद्ध पुत्र हुआ जो इतिहास में प्रख्यात है। हे राजा रामसिंह! इन सरबहियों के सौ सुयश पूर्ण वृत्तान्त हैं। उन्हें मैं यदि बताने बैठूँ तो यही कहूँगा कि उनका यश सूर्योदय से पूर्व ही उदय हो जाता है। इसी समय भुज देश में जाड़ेचा राजा जसराज हुआ जो यादव राजा भारमल का पुत्र था। जिससे पूरा संसार आशा लगाये रहता था। इसके भी वीरता और उदारता के गुणों को दबा कर जो आगे निकल गया वह और कोई नहीं बूँदी का राजा रामसिंह है जिसका सुयश अभी भी गर्व से अपना सिर उठाए हुए है।

इतिश्रीवंश भास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे पंचम राशौ वीतिहोत्र-चतुर्बाहुमद् बीज्यवर्णनबीजहड्डाधिराडस्थिपाल वंश्यानुवंश्यविहित-व्याख्यानाऽवसरव्याहार्यबुन्दीनरेन्द्रनारायणदास चरित्रे पलायमानबाबर विलुण्टितप्रजापूत्कारप्रकुपितमिषा वरोधावरुद्धकुमारमिहिरमल्लसज्जित-सवयस्कसुभटबाबर वाहिनीविहितसौप्तिकृतघटिकाऽर्द्ध रुण्डरण-महीपमध्यमा नुजनरबद वीरतल्पस्वपन मृधम्रियमाणबूँदीशसोदर्य सना-भिबान्धवनरबद हम्मीर तेजसिंह लक्षधीर कुबेरा ऽनुपम क्षेमराज प्रभृतिप्रह-तपतिपक्षप्रवीरसंख्यान निपातितानेकबाबर वीरतोमरप्रताप मंकुवाण-रत्नसिंह विशिष्टबुन्दीबीरपंचशती महानिद्रासमादान सनाभिभ्रातृरामसाहि पश्चात्प्रधनप्राप्तकुमारमोत्कल मुख्यशूरशतक पुद्गलप्रहारप्रापण पूर्व-प्रेरणाप्रबुद्धपट्टनिपुरप्रधानप्रमुखप्रकृतिजनसंगरसमीपसमानीत सैरिभवृन्द-विषाणबद्धप्रदीप्तप्रकाशमिथ्यामनीषानिश्चितनिकटाग तप्रत्यनीकानी-किनीनिर्भरसम्पातसाध्वससंत्रस्तसैन्यबाबर विद्रवण।

इतिश्री वंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण की पंचम राशि में अग्निवंशी चहुवान वंशवर्णन के कारण हड्डाधिराज अस्थिपाल के वंश और वंश की शाखाओं की कथा बताने के समय के वचनों में बूदी नरेन्द्र नारायणदास के चरित्र में भागे हुए बाबर द्वारा लूटी हुई प्रजा की पुकार से कोपे हुए कुमार सूर्यमल्ल को किसी बहाने जनाना में बन्द कर अपनी समान अवस्था के वीरों को सजकर बाबर की सेना से रात्रियुद्ध करके आधी घड़ी तक धड़ से युद्ध करके राजा के मंझले भाई नरबद का मारा जाना, युद्ध में मरने वाले बूँदीश के सगे और सपिण्ड भाई नरबद, हम्मीर, तेजसिंह, लखधीर, कुबेर, अनुपम और खेमराज आदि से मारे हुए शत्रु के वीरों की गणना, बाबर के अनेक वीरों को मारकर तंवर प्रताप, झाला रत्नसिंह आदि बूँदी के पाँच सौ वीरों का मारा

जाना, सपिंड भाई रामशाह और पीछे से युद्ध में प्राप्त हुए कुमार मोकल आदि सौ वीरों का घायल होना, पहले की प्रेरणा से सावधान हुए पाटण के हाकिम आदि राज्य के लोगों के युद्ध के समीप भैंसों के समूह को लाकर उनकी सींगों से मशाले बांधकर जलाने से प्रकाश होने के कारण बूँदी की भ्रम में शत्रु सेना को समीप आई हुई जानकर पूर्ण प्रहार के भय से डरी हुई सेना और बाबर का भागना।

प्रभुपुद्गलप्रभूतप्रहणप्रहारप्राप्तिपुरस्सरनिर्द्धारितनरबद निधननृपसनाभिषट्पुरनाथनरबद महत्तवमात्स टर्यानुमोदन सबुन्दीवास्तव्यविशिष्टविदितैतदुदन्तसमनुष्ठितच्छोकमातृचतुष्टय सम्मतिसंगतसचिव सुभट समुपेतपट्टपतिकुमारसूर्यमल्ल परिकरोपेतप्रभुप्राप्तपिण्डप्रघातप्रचुरपीडाप्रसारप्ररोधप्रयोजनकहड्डुवती मेदपाटजनपदजकुट प्रघणपितृव्यकपरलोकप्राप्तिप्रधानबूँदस्थक्षतैक विकलचतुर्थ कुमारमोत्कल स्वपितृपरासुताप्रणेयसपर्याप्रणयन कार्मी यादवी नरबद दयिताद्वन्द्व देहदहन प्रहारपीडा पटुकल्पवृहन्नारबद वर्जितपरिवारोपेतनिजनगरागतनिशामितनरबद निपातनरेन्द्रनारायणदास निजानुजनिधननिमित्तप्रत्येक द्रम्मैक दक्षिणादानसहितसम्भोजितायुत महीसुरमिथुन पट परिस्कार प्रसादन कुमारमिहिरमल्ल पितृव्यकपटप्रापिताऽवरोधस्वावरोधसमर्थन राणाकुलपूर्वपुरुषात्युत्तमदीवानोपपदप्राप्ति-निदानयाथाश्रुत्यसूचन हड्डाधिराजस्वसपर्यापर्याप्रतीपपट्टपतित्वमुधाभिमानशाव्यपृथग्भूतषट्पुरेशसांग्रामिनरबद वशवर्तिसगौरवग्रामादि प्रत्यब्दप्रवर्द्धमानस्वापतेयाऽऽप्रचुर प्रान्तपरिच्छेदन सौभाण्डिस म्परायस्वजयसाधकसक्षता ऽक्षत संस्थितसन्तान संबसथ सिन्धुरा ऽऽदिसामग्रीसत्करण।

स्वामि नारायणदास के शरीर में पहले ही बहुत सारे घाव लगने से और फिर नरबद के मारे जाने से राजा के सपिंड भाई खटकड़ के पति नरबद का अपने बड़े होने की मत्सरता के कारण प्रसन्न होना, बूँदी के निवासी लोगों के साथ यह शोक का वृत्तान्त जानकर सचिव और उमरावों के साथ चारों माताओं की सलाह से पाटवी कुमर सूर्यमल्ल का परगह सहित स्वामी के बहुत घावों से पीड़ित होने के कारण काका के मारे जाने का वृत्तान्त हाड़ोती और मेवाड़ इन दोनों देशों में नहीं फैलने देकर उस वृत्तान्त को बाहर के द्वार पर ही रोकना और बूँदी में एक घाव से विकल चौथे कुमार मोकल का अपने मरे हुए पिता की कर्त्तव्य सेवा करना अर्थात् उत्तर क्रिया करना,

कछवाही और यादवी नरबद की दोनों प्यारी स्त्रियों का सती होना, घावों की पीड़ा से नैरोग्य होकर नरबद के बड़े पुत्र को छोड़कर परिवार सहित अपने नगर में आये हुए राजा नारायणदास का नरबद को मरा सुनकर अपने भाई के मरने के निमित्त प्रत्येक स्त्री सहित ब्राह्मण को एक एक रुपया दक्षिणा और वस्त्र भूषण देना, कुमार सूर्यमल्ल का काका के कपट से जनाना में कैद होने का समर्थन करना, राणा के पुर्वजों में से किसी पुरुष को अति उत्तम महात्मा (फकीर) से दीवान पद प्राप्त होने का कारण जैसा सुना तैसी सूचना करना, हड्डाधिराज का अपनी सेवा के विरुद्ध पट्टपति होने के मिथ्या अभिमान की मूर्खता से जुदे हुए खटकड़ पुर के पति संग्रामसिंह के पुत्र नरबद के आधीन के बड़प्पन के साथ ग्राम आदि में सालाना बढ़ते हुए धन की पैदाइश वाले बहुत प्रान्तों को छीनना, सुभांड के पुत्र का युद्ध में विजय करने वाले घायल और बिना घायल तथा मरे हुओं की संतान का ग्राम, हाथी आदि सामग्री से सत्कार करना।

पुनरर्ज्जुन दासाय मानपलायितदेवसिंह राघवदास बन्धुयुग्म धामवत्सोला कोटा समाहरण समयपुर पीलु प्रमुखो प्रहारप्रसादित-प्राप्तपाटवनारबद भुजाऽर्चन नथैवप्राप्त पाटवबुन्द्यागतचामरा धिकप्राक् सूचितसामग्रीप्रसादितनारबद ज्येष्ठकुमारार्जुन पाणिपूजन मिलनभिषदत्तदलराणा स्वसहायार्थपुनरर्जुन चित्रकूटप्रत्याव्हान योधपुरराज राष्ट्रकूटमालवदेवस्वविक्रमबलाजमेर द्रङ्गांद्येनकप्रान्तपरिच्छेदन कथित-स्तोककुलपुरुषक्रमवीर वदान्य त्वक्षरवधिक चालुक्य रैवतराज कर्म बालेश चाहुवाणविजयस्कन्धावारद्वारह ठसन्दोहसंस्थास्थानस्वसमेत-स्वकीयसुभटसप्तशतीं शिःप्रदान संरक्षितसर्वजीवितावतरणवीरता-विशेषविस्मितबोलेश विजयपरीक्षितसत्त्वशरवधिककर्णार्थभगिनी-विवाहन तन्मरण समयसमागतकलिकालभागवतमूर्द्धमणिद्वारह-ठसुकवीश्वरकर्णप्रत्युज्जीवनप्रथन कोकिलपुरपतिशङ्खुलप्रामारा-नन्तराजस्वस चिवकपटानायितनिगडित बालवंश्यतद्भागिनेयोक्क-समुद्धतसमानीत कर्णिकै वर्तभाविम्लेच्छमृधमरणसहिततन्नन्दन-नवघनभावितासूचन तत्समयसमीपसम्भूभुज नगरभूपजड्डेचकयादव-भारमल्लतनययशोराजासाधारणरण वित‹ग वीरताविख्यापन मकोनत्रिंशो मयूखः ॥२९॥ आदितः पट्सप्तयुत्तरैकशततमः ॥१७६॥

अर्जुन की सेवा करने वाले भागे हुए देवसिंह और राघवदास दोनों भाइयों के ग्राम वत्च्छोला और कोटा छीनने के समय ग्राम हाथी आदि सामग्री देकर घाव मिटने पर नरबद के पुत्र के भुजों को पूजना, इसी प्रकार घाव मिटने पर बूँदी में आये हुए नरबद के पुत्र अर्जुन को चमर अधिक देकर ऊपर सूचना की हुई सामग्री देकर उसके भुज पूजना, मिलने के बहाने से पत्र देकर अपनी सहाय के अर्थ राणा का फिर अर्जुन को चित्तौड़ बुलाना, जोधपुर के राजा राठौड़ मालदेव का अपने पराक्रम और सेना से अजमेर नगर आदि अनेक प्रान्तों को अपने आधीन करना, थोड़ी सी पीढ़ियाँ कहकर वीरता और वदान्यता से रैवतगिरि के राजा सरबहिया सोलंकी कर्ण का बालेसा जाति के विजय नामक चहुवान की राजधानी में आकर चारणों के समूह के नाश के स्थान में अपने सहित अपने सात सौ वीरों के मस्तक देना, उन सबको जीवित रखकर दान और वीरता की विशेषता से विस्मित होकर बालेसा विजय का धैर्य की परीक्षा करके कर्ण को अपनी बहन ब्याहना उस करण के मरने के समय आये हुए कलिकाल के हरिभक्तों में शिरोमणि बारहठ चारण ईसरदास का करण को फिर से जिलाने का विस्तार करना, कोकिलपुर के पति सांखला शाखा के प्रमारराज अनंत के सचिव का कर्ण के पुत्र कैवाट को कपट से ले जाकर कैद करने पर बाल वंशवाले उसके भानजे ऊका का उसको छुड़ाकर वापस लाना और करण के पुत्र केवाट का आगे आने वाले यवमों के युद्ध में मरने सहित उसके पुत्र नवधन के आगे आने वाले समय में होने की सूचना करना, उसी समय के समीप होने वाले भुज नगर के राजा जाड़ेचा यादव भारमल्ल के पुत्र जसराज का जन्म और उसके समान अन्य की वीरता और दान नहीं होने की सूचना करने का उनतीसवाँ मूयख समाप्त हुआ। और आदि से एक सौ छहत्तर मयूख हुए।

प्रायो ब्रजदेशीय प्राकृत मिश्रित भाषा

दोहा

इक रन हुव आनर्त इत, याही समय समीप।
जामिज मातुल जुज्झि जुग, परे सुनहु अवनीप॥१॥

हे राजा रामसिंह! इसी समय में आनर्तदेश (काठियावाड़) में एक अजीब युद्ध हुआ जिसमें एक मामा और भानजा आपस में लड़ते हुए मारे गए।

षट्पात्

अल्पहि ग्रामन अधिप इक्क हल्ला जसवंतह।
जिहिं ब्याहिय निज जामि महिप झल्लहिं अतीव मह।
ताकै हुव इक तनय भयउ सोपै जब भूपति।
मातुलगृह तब मिलन गयउ संबंध रक्खि रति।
बनिजार कढत निज सीम बिच दुंदुभि सुनि पित्थल बदिय।
चर जाहु सुद्धि आनहु चपल किहिं सठ बंब बिराव किय॥२॥

कुछ ग्रामों का स्वामी एक हाला जसवंत सिंह था जिसने अपनी बहन का विवाह बड़ी धूमधाम से झाला कुल में किया। जब यह झाला राजा बना तो इसके एक पुत्र उत्पन्न हुआ। वह बालक अपने ननिहाल गया क्योंकि स्नेह संबन्धों के कारण बुलाया गया था। एक दिन हाला ठाकुर के गाँव की सीमा में से होकर बनजारे की बालद (बैलों की कतार जिन पर सामान लादा जाता है) गुजरी। अपनी सीमा में नगाड़े बजने की आवाज जब ठाकुर के छोटे भाई पृथ्वीराज ने सुनी तो उसने अपने दूत को बुलाकर कहा कि जाओ जाकर खबर लाओ कि यह किस मूर्ख ने हमारी सीमा में नगाड़े बजाने की ध्वनि कर धृष्टता की है।

सुनि मातुल जसबंत अनुज पित्थल निदेस यह।
जुब्बनबस जामेय अनखि पुच्छिय सह आग्रह।
अक्खिय पित्थल अत्थ बंब अप्पन इक बज्जत।
कै बज्जत करदायि सत्थ ब्यापारिन सज्जत।
हसि झल्ल कहिय बज्ज्यो ममहु कहिय हल्ल तुम हम इक हिं।
भानेज भनय वर्जहु बलि न निबहैं क्यों तब पैज नहिं॥३॥

अपने मामा ठाकुर जसवंतसिंह से छोटे मामा को दिया हुआ जब यह आदेश सुना तो अपनी यौवनावस्था के जोश में भानजे ने आग्रहपूर्वक पूछा कि आपने ऐसा आदेश क्यों दिया? इस पर पृथ्वीराज ने कहा इस गाँव में एक अपना नगाड़ा ही बजता है या फिर किसी कर देने वाले व्यापारी बनजारे का जो यहाँ से गुजरे। इस पर झाला भानजे ने कहा कि फिर मेरा नगाड़ा भी तो

बजा था। इस पर हाला ने कहा कि हम तुम दोनों तो एक ही हैं। यह सुन कर भानजे ने कहा कि आप अपने से बलवान को ऐसा करने से नहीं रोकते फिर आपकी प्रतिज्ञा क्यों नहीं निभे अर्थात् निभ जाती है।

प्रसभ बाद बढि परिय बदत इम बत्त दुव हि दिस।
अक्खिय जामित आत मैंहु जुज्झन न अन्य मिस।
बज्जत अैहैं बंब रुद्ध तुम करहु जित्ति रन।
जंपि इम रु गृह जाइ सज्जि आयउ साहस सन।
बरज्यो सु आत हल्लन बहुत बालिस न रुक्यो मत्तबय।
कलि करन नास मातुल कुलहिं गज सिर दुंदुभि देत गय॥४॥

इस प्रकार के हठपूर्वक संवाद से विवाद बढ़ गया। दोनों पक्ष अपनी अपनी बात पर अड़ गए। इस पर झाला भानजे ने कहा कि लो अब मैं नगारा बजाता हुआ आऊँगा और अन्य किसी कारण से नहीं युद्ध करने को आऊँगा तब मेरा नगाड़ा बजवाना बंद कर देना। इतना कह कर वह झाला शीघ्र ही ननिहाल से अपने घर आया और अपने दल को सज्जित कर वापस ननिहाल पहुँचा। उसे आते हुए हाला क्षत्रियों ने बहुत रोका। उसे ऐसा न करने के लिए समझाया पर वह मूर्ख भानजा अपनी योवनावस्था के जोश में टस से मस नहीं हुआ। वह तो युद्ध में अपने ही मामा के कुल का नाश करने को अपने हाथी पर नगाड़ा बजवाता हुआ आया।

कति दिन पुव्बहि स्वकुल निपुन नारिन के निरखन।
उच्चतुंग इक अट्ट रहिय हल्लन आगम रन।
एकादसि उपवास लघुहि पारन प्रभात लहि।
जुरे जोद्ध हित जंग अरिन मारन उम्हात अहि।
जसवंत अनुज पित्थल जहाँ हल्ल अपारन संग हुव।
तिहिं जानि मग्ग अग्रज तरजि पठयो पच्छो भोज्य भुव॥५॥

कुछ दिन पूर्व ही अपनी स्त्रियों के लिए आसानी से युद्ध देखने के लिए गाँव में एक ऊँची बुर्ज रण में सदैव अगुआ रहने वाले हालाओं ने बनवाई थी। उस दिन द्वादसी की तिथि होने से शीघ्र ही एकादशी के उपवास का पारणा खोलने का छोटा आयोजन था। शत्रुओं पर प्रहार करने के लिए

फन साधे भुजंग रूपी योद्धा युद्ध के लिए सन्नद्ध थे। जसवंतसिंह हाला के छोटे भाई ने तो उपवास भी नहीं खोला था पर वह भी साथ हो लिया। इस पर उसके बड़े भाई ने डांट कर रास्ते ही से उसे वापस घर भेजा कि पहले भोजन करने जाओ।

अट्ट तियन इम चविय इक्खि ता कंहं मुरि आवत।
कोन सुहागिनि कहहु पोत चूरी बल पावत।
पुनि जब गोचर परत देखि भाउज निज देवर।
अक्खिय भलभल इक्क राम रच्छक रक्खिय घर।
सो असह सुनत पित्थलप्रिया अवधि गम्य आई उतरि।
बुल्लिय कठोर अब कति बरस कढ्ढन मन कुल त्रास करि॥६॥

पृथ्वीराज को वापस लौटते देख उस बुर्ज से देख रही घर की स्त्रियों ने मसखरी पूर्वक कहा कि यह कौन तिमणिये (सुहागिनों के गले का गहना) और चूड़े के बल से खिंचा हुआ युद्ध से विमुख हो कर चला आ रहा है? थोड़ी देर में जब पृथ्वीराज आगे आया तो उसकी भाभी की नजर उस पर पड़ी तो उसने व्यंग्य के स्वर में कहा भले-भले रामराखा किसी एक को तो घर की रखवाली के लिए रखा है। यह बात वहीं उपस्थित पृथ्वीराज की पत्नी को खल गई। वह बुर्ज से उतरकर अपने पति के सम्मुख ड्योढी तक गई। अपने पति को देखते ही कहने लगी थोड़ी-सी मन में मजबूती रखो। अब उम्र के और कितने बरस निकालने हैं। कुल पर लांछन लगा कर (कायर हो कर) थोड़े और जी भी लिये तो उससे क्या होगा?

पारन कारन पित्थ बुल्लि आवन जावन बलि।
भामिनि कर कछु भोज्य जिम्मि जावत सहअंजलि।
अग्रज तिय प्रति अरज किन्न जग जस हमरो करि.
जागृवि पीछैं जरहु अप्प हल्लन कुल उद्धरि।
दै इष्ट सपथ तिहिं देवर सु कथित सु अग्रजको हु कहि।
पहुंच्यो प्रबीर निज सत्थ पंहं लैन असिन कर बेर लहि॥७॥

पृथ्वीराज ने कहा नहीं मुझे तो उपवास (पारणा) खोलने के लिए बड़े भाई ने भेजा है। मैं तो वापस जाने के लिए आया हूँ। उसकी पत्नी ने जल्दी

ही उसे अपने हाथों भोजन करवाया। भोजन के बाद हाथ धोते हुए उसने अपनी भाभी से कहलवाया कि थोड़ी देर में जब हमारे कुल का सुयश (वीरता के साथ लड़ कर युद्ध में काम आने पर) हो आप भी अग्नि में प्रवेश कर हमारे हाला कुल का उद्धार करना। इस पर भाभी ने भी उसे इष्टदेव की सौगंध दिला कर कहा कि यह बात अपने बड़े भाई से भी कह देना। यह सुन कर पृथ्वीराज सीधा वहाँ पहुँचा जहाँ हाला योद्धा रणभूमि में जाने के लिए अपनी-अपनी तलवार उठा रहे थे।

दुंदुभि झल्लहु द्विरद रक्खि दल दल तिहिं रक्खन।
अप्पन रच्छक अद्ध पिल्लि चाहिय परपक्खन।
जंपिय तंहं जसवंत बंब मैं जाइ बिदारत।
पित्थल अक्खिय प्रभुहिं निजन छत क्यों सु निहारत।
जसवंत चविय जामेयको बंब मिलत फुट्टो बजैं।
तो होइ सफल मिलिबो न तो लिय सु लाल संधा लजैं॥८॥

उधर झाला भानजे ने हाथी पर रखा नगाड़ा बजवाया और अपने आधे आधे दल को दो भागों में विभक्त किया। आधे दल को अपनी रक्षा में तैनात कर शेष आधे दल को बढ़ा कर सामने वाले शत्रुओं को हटाने का निर्देश दिया। इसी समय जसवंतसिंह हाला ने कहा मैं जा कर नगाड़ा फोड़ आता हूँ। इस पर उसके छोटे भाई पृथ्वीराज ने कहा स्वामी! हमारे रहते आप यह क्यों करेंगे? जब जसवंत ने अपने भानजे से कहा कि मिलने की अवस्था में नगाड़ा फूटा हुआ बजता है तभी मिलना सफल होता है नहीं तो हे लाल! प्रतिज्ञा लज्जित होती है।

स्वीकरि पित्थल सोहि अप्प दुंदुभि पर आयउ।
अद्ध भटन जसवंत चहत भानेज चलायउ।
तकत अट्ट कुलतियन बिखम धाराहर बज्जिय।
पहुंचत मातुल पहिल गहिल दुंदुभि ध्वनि गज्जिय।
क्रम करत हल्ल झल्लन कतल गंजि कटक जब गम्यगय।
भानेज भनिय मातुल मिलत बंब सुनहु सूचन बिजय॥९॥

यह सुनते ही पृथ्वीराज नगाड़े की ओर बढ़ा तभी आधे दल को

भानजे ने मामा के दल पर चढ़ाई करने को कहा। उधर गाँव में बुर्ज से सभी स्त्रियाँ विषम शस्त्रों का चलना देखने लगी। नगाड़े के पास अपने मामा के पहुँचने से पहले भानजे झाला ने उसे ओर जोर से बजवाया। आसपास उसकी ध्वनि की गूंज प्रसारित कर दी। क्रमशः हाला और झालाओं के दलों में तलवारें चलीं जब तक मामा को जहाँ पहुँचना था अर्थात् नगाड़े के पास पहुँचने पर भानजे ने कहा कि मामा! सुनो! यह नगाड़ा विजय की सूचना कर रहा है।

इती कहत अंतरहि बंब पित्थल उत बेधिय।
समनंतर कहि सुनहु सु जय जसवंत निसेधिय।
इम द्वै ही दिस असिन भये बटके बटके भट।
बंबु सु भिन्न बताइ हल्ल झल्लहु लिय संकट।
बचिगो सु झल्ल कतिजन बदहिं कहहिं द्वैहि कुल नास कति।
अट्टतैं उतरि जे पुनि जरे प्रमदाजन पहिचान पति॥१०॥

भानजे के इतना कहते ही पृथ्वीराज ने नगाड़े को फोड़ डाला। इतने में हाला दल का नगारा बज उठा तब जसवंत सिंह ने कहा कि भानजे। सुन यह नगाड़ा तेरी विजय का निषेध कर रहा है। इस प्रकार थोड़ी ही देर में दोनों पक्षों के वीर तलवारों से कट कट कर गिरने लगे। नगाड़े को फोड़ कर हालाओं ने झालाओं को घेरे में लिया। कुछ लोग कहते हैं कि झाला (भानजा) बच गया था और कुछ लोगों की मान्यता है कि नहीं, दोनों कुलों का नाश हो गया। इसके बाद बुर्ज से स्त्रियाँ उतर कर नीचे आई और अपने-अपने मृत पति का शव पहचान कर उसके साथ जल मरीं।

जरी तब न जसवंतनारि वह बैन निबाहन।
बिपति बाहुजा बेस गूढ अभिमत अवगाहन।
रोहड़िया बारहठ धन्व हरिभक्त धुरंधर।
ईश्वर कवि तस अैन आइ सेये जिम अनुचर।
तस परखि सत्व चिरकरि चतुर कुल थल मनगुन आनि कवि।
कविता सुवृत्त सतसत्त करि छिति रक्खिय कुल हल्ल छवि॥११॥

पर जसवंतसिंह हाला की पत्नी अपने देवर के वचन को निभाने के लिए उस समय नहीं जली। वह क्षत्रियों की विधवा स्त्रियों (विधवा होने पर

पहनती हैं) जैसा वेष पहन कर अपने मन में छिपी इच्छा का अवगाहन करने को मारवाड़ में रोहड़िया बारहठ इसरदास के जो हरिभक्ति में धुरंधर था के घर आई और वहाँ सामान्य सेविका की तरह कवि के घर की सेवा करने लगी। तब कवि ईसरदास ने पूरी घटना को उसके स्थल सहित मन में कई दिनों तक रमाया और इसके बाद श्रेष्ठ सात सौ छन्दों में (बावन कुंडलिया ही उपलब्ध हैं) इसका वर्णन कर पृथ्वी पर हाला क्षत्रियों की सुन्दर छवि चित्रित कर उनके कुल की कीर्ति को अक्षुण्ण बनाया।

मालदेव इत महिप माढ धर जानि कनीमनि।
मह सह जैसलमेर बरन तिहिं पत्त मत्त बनि।
उमानाम छवि अतुल सुपहु भट्टिय तनुजा सो।
ब्याहिय निरत कबंध सुनत तस सुजस कथा सो।
भट्टी नरेस बुल्ल्यो भवन दूजी निस आगम दुलह।
अति पान करि सु गो तंहं अबुध स्मर बढाई कछु बिधि असह ॥१२॥

इधर राठौड़ राजा मालदेव माढ (जैसलमेर की धरती माढ कहलाती है) देश की एक कन्या रत्न से विवाह करने पूरी धूमधाम के साथ मदमस्त हो कर गया। उमा नामक यह भाटी राजा की बेटी अनिंद्य सुन्दरी थी। मालदेव ने भी किसी के मुँह से उसकी सुन्दरता का वर्णन सुना था और तभी से वह उससे ब्याह करने की इच्छा में निमग्न था। दूल्हे के जैसलमेर पहुँचने की दूसरी रात में भाटी राजा ने जलसे में उसे आमंत्रित किया। गोठ में अच्छी मात्रा में मद्यपान कर मतवाला राजा अपने शरीर में असह्य काम वासना संवर्द्धित कर तुरन्त राजमहल में सोने को गया।

गो कबंध रतिगेह जात अल्पहि कछु जामिनि।
एक रमन मधुअंध कमन चाहत ढिग कामिनि।
स्वसुरसद्म सुंदरिन लाल बहुकाल लडायउ।
कानि तिन्हहु तजि कूर गान ऊढागम गायउ।
उलटी सलज्ज वे तिय उठिय मालइ मन घेर्यो मयन।
ऊढा समीप बहुजन उचित सजव भेजि बुल्लिय सयन ॥१३॥

मिलनरात्रि के दिन राठौड़ राजा थोड़ी रात ढलने पर कामांध हो कर

महल में पहुँचा। शराब के नशे में मतिअंध हो कर वह तुरन्त अपनी सुन्दर कामिनी के संग रमण करना चाहता था। अब और सब्र करना उसके वश की बात नहीं थी। महल में जाते ही जनाना की स्त्रियों ने इस सद्य विवाहित दूल्हे को रमाते हुए (राजस्थान में एक प्रथा के अनुसार स्त्रियाँ सवाल जवाब करती है, पहेलियाँ पूछती है इसे रमाना कहते हैं) बहुत देर तक लाड़ लडाया। परन्तु राजा ने अपनी लज्जा छोड़ कर नवोढ़ा दुल्हन के पास जाने का राग अलापा। यह देख कि मालदेव के मन को कामदेव ने आ घेरा है सभी उठ कर चली गई तब राजा ने अपनी नवोढा के पास नाजर और दासियों को भेज कर सोने के लिए तुरन्त बुलवाया।

बर हिं कहाइय बरनि अधिक न बिलंब नाथ अब।
सजि आवत संगार सोहु कछु खिल बनिगो सब।
तिहिं न परत कल तदपि जानि भेजत जनपैं जन।
अंतरंग अनुचरिय धरम धीरज पठई धन।
जिहिंनाम भारमल्लिय जुवति सो दासिय गुन रूप सह।
न बिलंब आत दुलही नृपहिं इम बुल्लिय करजोरि यह॥१४॥

इस पर दूल्हे को दुल्हन ने कहलवाया कि हे नाथ! अधिक विलम्ब न करते हुए मैं शीघ्र ही आ रही हूँ। बस तनिक देर में मैं अपना शृंगार पूरा कर लूँ। दुल्हन के ऐसा समाचार कहलाने के बाद भी राजा को कल न पड़ी उसने फिर हरकारे पर हरकारा बुलाने भेजा। तब दुल्हन ने अपनी एक अंतरंग दासी को भेजा कि थोड़ी देर राजा का मन बातों से बहलाए रखना तब तक मैं आ रही हूँ। इस दासी का नाम भारमली था जो स्वयं भी गुणवती, जवान और अत्यन्त रूपवती थी। उसने आते ही हाथ जोड़ कर राजा से निवेदन किया कि अब और अधिक देर नहीं, राजकुमारी आ ही रही है।

बो बो करि जिम बस्त जोहि पकरिय कबंध जंहं।
संबेसन बिधि समय तास दुलहीहु गई तंहं।
निज दासी सह निरतबरहिं लखि गहि कटु बानिय।
याहि उचित अब अप्प भनिय सिंहनि भटियानिय।

चढ़िबो जु भ्रातसज्जा उचित तो चढ़िहों तावक तलप।
किंकरी रमन बिनु मोह कढि क्योंन जाहु अगनित कलप॥१५॥

पर 'बो-बो' स्वरों में बोलते कामान्ध हुए बकरे की तरह राजा ने उस दासी को पकड़ लिया और जल्द ही उसके साथ रतिक्रिया करने में संलग्न हो गया। ठीक इसी समय नई दुल्हन शृंगार कर वहाँ पहुँची। उसने जब अपने दुल्हे को इस तरह अपनी ही दासी के साथ निरत देखा तो वह कुपित हो कर सिंहनी की तरह बिफरती बोली कि हे राजा! अब आप के लिए यह दासी ही उचित है। मेरे लिए तो अब आपकी सेज पर चढ़ना भाई की सेज पर चढ़ने जैसा हो गया। आप जैसे इस दासी के पति, के बिना, चाहे जितने कल्प निकल जाएँ, मुझे कोई चिन्ता नहीं।

इम भटियानिय अक्खिय मुरी सिंहनि प्रतिमंदिर।
बिक्ख सु दुल्लह बिरस चकित कामुक रहिगो चिर।
सिक्ख समय कुमरी सु लगी नन जान धवालय।
बहु बासर रहि बाद माल मन किय बिखाद मय।
बलि आसकरन निज बारहठ ईस्वर सुकवि पितृव्य यह।
अवरोध बलज पठयो अधिप समुझावन नय धर्म सह॥१६॥

भाटी वंशीय रानी इस तरह बोल कर गरजती हुई सिंहनी की मानिन्द वापस अपने महल में चली गई। इस तरह अचानक रस में भंग देख कर वह कामुक राजा बहुत देर तक चकित सा रह गया। जब विदा का समय आया तो भाटी रानी ने अपने पति के घर जाने से मना कर दिया। वह जोधपुर जाने को तैयार नहीं हुई। बहुत दिनों तक अपने विषाद भरे मन के साथ मालदेव जैसलमेर ही रुका रहा। थोड़े दिनों बाद राजा ने अपने बारहठ कवि ईसरदास बारहठ के काका आसा (आसकरण) रोहड़िया को जनाना महल की ड्योढी पर भेजा यह कह कर कि आप जा कर भाटी रानी को धर्म और नीति के दाखिले दे कर अच्छी तरह समझाएँ और उसे जोधपुर चलने को राजी करें।

बदिया उमा बारहठ अप्प आये समुझावन।
अब स्वीकृत तो अवस जोधद्रंगहु सहजावन।
पै मैं किय जो सपथ सो न लोपैं नृप संतत।
चलिबो तब ध्रुव उचित बदहु तुम इष्टसपथ बत।

सुनि आइ सुकवि नृप लिय सपथ अप्प सपथ दिय जाइ उत।
चुक्किहो धर्म तो तिहिं चविय दैहों तुम सिर प्रान द्रुत॥१७॥

भाटी रानी उमादे ने कहा कि बारहठ जी आप समझाने आए हैं इस लिए आपके समझाने पर (आपकी बात को नहीं टाल सकने के कारण) मैं जोधपुर आपके राजा के साथ जाने का प्रस्ताव स्वीकार तो करती हूँ पर आप मुझे इस बात के लिए आश्वस्त करें कि मैंने जो प्रतिज्ञा कर रखी है कि मैं उस राजा की सेज पर नहीं चढूँगी। मेरी इस प्रतिज्ञा को आपके राजा निरंतर निभाने देंगे। यदि आप अपने इष्टदेव की सौगंध उठाकर मुझे इसका आश्वासन दें तो मैं पक्का चल सकती हूँ अन्यथा नहीं। इस पर आसा रोहड़िया ने राजा के समक्ष रानी की शर्त रख कर राजा से शपथ ली कि मैं उसकी प्रतिज्ञा में अवरोध नहीं डालूँगा। इसके बाद आसा बारहठ ने रानी को शपथपूर्वक कहा कि आपकी प्रतिज्ञा रहेगी। यह सुन कर भाटी रानी उमादे ने कहा कि यदि मेरी प्रतिज्ञा के सत्य धर्म में चूक हुई तो मैं आप के ऊपर शीघ्र ही प्राण दे दूँगी।

दोहा

बदिय उमा प्रति जनक बलि, गमन करहु पतिगेह।
हे पुत्री नहिं तो हमहिं, अब हनिहै नृप एह॥१८॥
उमा कहिय मरिबे उचित, भट्टी कुल मम भ्रात।
संग देहु जो पंचसत, तो जैहों उत तात॥१९॥

इसी समय उमादे के पिता भाटी राजा ने आ कर कहा कि बेटी! जाओ अपने पति के घर जाओ। यदि पुत्री के पति का मामला नहीं होता तो मैं अभी राजा को यहीं मार चुका होता। पर क्या करें मजबूरी है। इस पर उमादे ने कहा कि हे पिता! आप जो मरने को मंगल समझते हों ऐसे पाँच सौ भाटी कुल में जन्मे बाँधव योद्धा मेरे साथ भेजें। मैं वहाँ जाने को तैयार हूँ।

षट्पात्

स्वकुल तिमहि लहि सत्थ पत्त दुलहीहु जोधपुर।
दुलह कढ्ढि कति दिवस धर्म लुप्पन धारी धुर।
जिमहि अचानक जाइ नारि छलबल नियराई।
गोखद्वार बपु गेरि उमा लखतहि भुव आई।

बहु घेर गिरत अंकुस बिथरि बचि बैठी तल आयुबल।
चढि गोख लखि सु रहिगो चकित छवी प्रकट दिखात छल॥२०॥

इस तरह वह दुल्हन उमादे अपने साथ पाँच सौ भाटी बांधव योद्धा ले कर जोधपुर आई। दूल्हे ने भी थोड़े दिनों का अवकाश रखा पर अन्ततः अपने धर्म का लोप करने की ठानी। एक दिन राजा जनाना महल में जा कर छल-बल से रानी के समीप हुआ। यह देखते ही तुरन्त भाटी रानी उमादे ने झरोखे से अपना शरीर भूमि पर ला पटका अर्थात् वह झरोखे से लपककर नीचे कूद गई। पर घेरदार लंहगे में हवा भर जाने से वह धीरे गिरी और आयुष्यबल भी शेष था इसलिए मरने से बच गई। राजा मालदेव ने जब उसे झरोखे में चढ़ते देखा तो सोचा कि मुझे डराने को रानी छल कर रही लगती है।

दोहा

उद्ध निरखि बुल्लिय उमा, स्वामी गिरते संग।
तो कहुं हठ छुटतोहु तकि, अपर जन्म दुहुं अंग॥२१॥

झरोखे से नीचे पड़ी उमादे ने ऊपर देखते हुए कहा कि हे स्वामी! यदि आप भी मेरे साथ गिरते तो संभव है मेरा हठ छूट जाता। हम दोनों मर कर नया जन्म लेते तो कदाचित फिर मेरी प्रतिज्ञा नहीं रहती। पर ऐसा न हुआ।

षट्पात्

प्रतिसारादिक प्रसरि उमा महलन पुनि आइय।
अवहित तब सन अधिक लगी रहिबे भय लाइय।
बलि पठाइ बारहठ सपथ अघ लैन सिखायउ।
अघ झेलत छल इक्खि नृप रु चामर निकसायउ।
पति जानि इम सु केरैं पर्यो तकि पिउहर जैबोहि तब।
किंकरी सोहि बुल्लि रु कहिय इक करि चलन उपाय अब॥२२॥

कनात आदि तान कर पर्दा किया और जिसकी ओट में उमादे वापस अपने महल में आई। इस घटना के बाद तो मन में प्रतिज्ञा टूटने का भय बसा कर अपने पति से सावधान रहने लगी। थोड़े दिनों के बाद राजा ने फिर से आसा बारहठ को सिखा कर भेजा कि जा कर कहना कि राजा उस पाप की अंजली को स्वीकारने को तत्पर हो कर आए हैं। इसके बाद दोनों का छल

देख कर भाटी रानी उमादे ने राजा और उस झूठे बारहठ को महल से निकलवा दिया। रानी ने यह देख कर कि उसका पति इस तरह पीछे ही पड़ गया है अपने पीहर जाने का मन बनाया। उसने अपनी उसी दासी भारमली को बुला कर कहा कि अब यहाँ से जैसलमेर जाने का उपाय करो।

अप्पन कथन अधीन सूर भट्टिन पंचहि सत।
यातैं कोउक अत्थ लखहु रट्ठोर मरन मत।
जिहिं मंगै सु जितोहि अत्थ अप्पहिं सखि अप्पन।
जु इक संग व्है जाइ सरनि निबहै अबिध्न सन।
मिलि पिहित स्वामि सामंत मन क्रम लखि हारिय किंकरिय।
कुल जैत्र कुंप चंपा दिकन रोकि लोभ नृपतैं डरिय॥२३॥

रानी ने आगे कहा कि अपने कहने में पाँच सौ भाटी योद्धा तो हैं ही अब तुम यहाँ से किसी एक राठौड़ योद्धा को जो मरने मारने को तैयार हो उसे अपने साथ चलने के लिए मनाओ। वह जितना भी धन माँगे वह मैं उसे देने को तैयार हूँ। सखी यदि एक कोई ऐसा राठौड़ वीर हमारे साथ हो जाए तो हमारा रास्ता निर्विघ्न कट जाएगा। भारमली ने तब राजा से चुपके कई सामन्तों से बात की। वह उनका मन टटोलते-टटोलते हार गई। जैतावत, कूंपावत और चंपावत आदि सभी राठौड़ वीर अपने लोभ को रोक कर राजा से डरते हुए मना कर गए कि वे धन देने पर भी साथ नहीं जा सकते हैं।

नगर कोटरा नाह तुरग पंचास अधिप तंहं।
बग्घ कबंधज बीर कहिय अभिमत दासी कहं।
मंगी सुहि दै मोहि जोहि रानी बस जानत।
तो अबिघ्न मग तुमहिं मुरों पहुँचाइ प्रमानत।
स्वीकार किय सु रानी हु सुनि कछु मिस बाहिर बेग कढि।
संक्रमिय सज्ज परिकर सहित चलिय बग्घ तस भीर चढि॥२४॥

वहाँ कोटड़ा नगर का स्वामी जो पचास घोड़ों का स्वामी था अर्थात् जिसके अधीन पचास सवार योद्धा थे। उससे जा कर भारमली दासी ने कहा कि हे बाघा राठौड़! रानी की ऐसी इच्छा है। यदि साथ चलने को राजी हो जाओ तो रानी तुम्हें धन देगी। इस पर बाघा कोटड़िया ने कहा कि मैं तैयार हूँ

पर मैं माँगू वह मुझे मिले और वह देना रानी के वश में है। मुझे धन नहीं चाहिए। यदि मेरी शर्त मंजूर हो तो मैं आप सभी को निर्विघ्न जैसलमेर पहुँचा कर आऊँगा। रानी ने शर्त मंजूर कर ली। यह सुन कर वह वीर किसी बहाने से गढ़ के बाहर निकला और अपने साथियों सहित रानी का सहायक बन कर चला।

दोहा

रोध कियैं निहचैं मरन, मन्न्यों नृप तसमात।
सबन प्रबोधित सहिरह्यो, जो न निवारिय जात॥२५॥

इत जैलसमेर सु उमा, बिसन लगी तंहं बग्घ।
नृप हुव जिहिं दासी निरत, वह मंगिय अति अग्घ॥२६॥

अक्खि अदेयहु सुहि उमा, अप्पिय संधा इक्खि।
गृहलैं तंहं मुरि बग्घ गय, सबलन सन रन सिक्खि॥२७॥

चूँकि रानी जिद्दी है इसलिए बलात् रोकने पर मर जाएगी। इस प्रकार सभी के समझाने पर राजा मान गया और उसने रानी का जाना सहन कर लिया। इधर जब रानी का कारवाँ जैसलमेर में प्रवेश करने लगा तब बाघा ने कहा कि रानी जी, अब मैं अपनी शर्त के अनुसार मांगता हूँ कि आप मुझे उस दासी को दें जिसके साथ राजा मालदेव प्रीतियुक्त हुआ था। मैं बहुत सम्मान के साथ आपसे यही चाहता हूँ और यह आपके अधिकार में है। इस पर रानी ने कहा कि वह तो अदेय है नहीं दी जा सकती। पर रानी को तुरन्त अपना दिया हुआ वचन याद आ गया और उसने भारमली को दे दिया। जिसे ले कर उसने वहीं से अपने साथी वीरों को विदा कहा और बाघा सीधा अपने घर कोटड़ा आ गया।

करि इम जातहि कोटरा, आयु बग्घ निज अल्प।
मन्नि लग्यो धन उद्धमन, करि धाटिन निधि कल्प॥२८॥

स्व जस भारमल्लिय सहित, गायक जनन गवाइ।
जो नृपसन चाहत जुरन, जोधपुर न मन जाइ॥२९॥

करन बन्यों बितरन कविन, सरन मरन सब कोहि।
पहु दल बहु प्रिय पाहुनैं, जानि लखत मग जोहि॥३०॥

राठौड़ बाघा ने अपने पुर कोटड़ा पहुँचते ही अपनी आयु को अल्प

बना लिया। वह खूब धन खर्च करने लगा और धन जुटाने के लिए डाके डालने लगा। वह धाड़वी (डाकू) अपनी प्रिया भारमली और स्वयँ के यश गीत गायकों से सुनने लगा। अपनी धुन में मस्त रहते हुए उसका मन ही नहीं हुआ कि उसे वापस जोधपुर जा कर राजा का साथ देना चाहिए। कवियों को दान देने में कर्ण जैसा बन कर वह राजा के सभी अपराधियों को जो उसकी शरण में आते उन्हें निशंक शरण देने लगा। इस पर राजा के सिपाहियों का दल जब दोषियों को पकड़ने आता तो उनसे भिड़ने के लिए भगोड़ों को अपना प्रिय अतिथि गिन कर वह उनकी राह तकता रहता।

षट्पात्

पतनी उत पहुँचाइ सोहि दासिय लैगो सुनि।
मालदेव महिपाल धक्यो अति रीस सीस धुनि।
चिंतत चढन बिचारि कित्र बिन्नति आसकरन।
जा बुल्लत आजाइ रचहु क्यों तस नास करन।
महिला गइ सु कवि केहि मत कविहि सहायक बग्घ किय।
याकेहि भेद हुव सर्व इम लंपट नृप दृढ जानि लिय॥३१॥

राजा मालदेव ने जब सुना कि वह बाघा राठौड़ ही मेरी पत्नी रानी उमादे को पीहर पहुँचाने गया और वहीं दासी भारमली को भी ले गया है तो मालदेव क्रोध में बावला हो गया उसने तुरन्त बाघा के कोटड़ा पुर पर चढाई करने की योजना बनाई। यह देख कर आसा (आसकरण) बारहठ ने विनती की कि हे राजा! वह हमारे बुलाने से यहाँ आ जाएगा। फिर उसका नाश करने की आप क्यों सोच रहे हैं ? यह सुन कर राजा ने सोचा कि मेरी पत्नी गई वह भी इसी कवि (आसा बारहठ) की राय से गई और बाघा की सहायता करने वाला भी यही है। इसी की शह पर यह सारा कुछ हुआ है ऐसा उस लंपट राजा ने पक्का मान लिया।

बितथ हिं ऋत गिनि बदिय पारि दुखन चामर पर।
बग्घ जु आत बुलात ब्रजहु बुल्लन अप्पहि अर।
वह दासी सह आनि करहु मम हुकम तंत्र किर।
नतो रहहु मरु नांहिं चहहु अन्यत्र बास चिर।

बिपरीत संमुझि इम नृप बदत बारहठ सु गो तंहं बिमन।
सुनि बग्घ आइ ताके समुख आदरि लैगो आयतन॥३२॥

झूठ को सत्य समझ कर और पाप झेलने में भी झूठा गिन कर राजा ने कहा कि बाघा बुलाने से आ जाता हो तो फिर आप ही उसे बुलाने के लिए शीघ्र जाओ और उसे दासी सहित यहाँ ला कर मेरी आज्ञा के अधीन बनाओ। यदि आप यह न कर सके तो अपने रहने का ठिकाना कहीं अन्यत्र कर लेना क्योंकि फिर आप मारवाड़ देश में नहीं रह सकेंगे। राजा को ऐसा कहते देख आसा बारहठ ने मन ही मन समझ लिया कि राजा खफा हो गया। यद्यपि यह उसके स्वयँ के मन के विपरीत बात थी तब भी वह बेमन से बाघा को बुलाने को कोटड़ा गया। उधर जब बाघा ने सुना कि आसाजी बारहठ आ रहे हैं तो वह कवि के स्वागत में चलकर उसके सामने आया और उन्हें प्रे आदर के साथ अपने घर ले गया।

दोहा

बग्घहिं अक्खिय बारहठ, मरुधर रक्खिय मोहि।
तो दासीजुत चलहु तंहं, कथित मद्धि नृप कोहि॥३३॥
परि पायन दंपति प्रनमि, अक्खिय आये अप्प।
तो चलिहैं हम मरन तंहं, दैहैं तजि रन दप्प॥३४॥
संघर भारमल्ली सहित, क्रीड़ा सुख कछुकाल।
करनदेहु बग्घहिं सुकवि, मन्त्रि काल महिपाल॥३५॥
इहिं आनैं हुव मास इक, पुनि दुव थाटि निपात।
अब आवत गुनगोरि इम, तीज दसेरा तात॥३६॥

आसा बारहठ ने जाते ही बाघा राठोड़ से कहा कि यदि आप चाहते हैं कि मैं मारवाड़ में रहूँ तो शीघ्र ही आप इस दासी भारमली के साथ जोधपुर चलिये। ऐसा ही राजा का आदेश है। यह सुनते ही दोनों स्त्री (भारमली) पुरुषों ने कवि को प्रणाम किया और कहा कि आप स्वयँ आये हैं। इसलिए मैं युद्ध करने का दर्प छोड़ कर आपके साथ जा कर मरने को तैयार हूँ। पर हे सुकवि! इस सुघड़ भारमली के साथ मुझे थोड़े दिन तो मनभावन क्रीड़ाएँ कर लेने दीजिए। बाघा ने आगे निवेदन किया कि मुझे पता है कि वह राजा

मालदेव मेरा काल है। आप देखिये अभी तो इस भारमली को लाये कुल एक माह की अवधि बीती है फिर इतने समय में मैंने दो डाके ही डाले हैं। सामने गणगौर का पर्व है और इसी तरह तीज और दशहरा भी आने को है। हे तात! थोड़ा यह तो विचार करें।

गीति

दृढ इम बितवत दिष्टहिं, कर्मध्वज भूप दुहुन सुनि कुप्यो।
उत रक्ख्यो कवि इष्टहिं, पानिहु थुक्कत प्रसारि दंपति ही॥३७॥
कतिक कहत मासहि कति, अक्खहिं कति सार्द्धअब्द कछु अग्गैं।
गत होत काल निज गति, तनु छोरिय बग्घ मृधु मुमूर्षु तहां॥३८॥
मरतहि सु भारमल्ली, चलन तस सत्थ गोख नढि चल्ली।
बिटपीतैं किख बल्ली, मरि बिरहभीरू महिलन मतल्ली॥३९॥
सज्जत सज्जत सेना, भो बहु हेतुन बिलंब भूपति को।
वह बारहठ अनेना, मरतहि सो बग्घ गो न पुनि मरु में॥४०॥
जब मालदेव मरिहै, जैसलमेरहि उमा सु सुनि जरिहै।
कुल दोहु अनघ करिहै, तस अंसुक गहि तथा धवहु तरिहै॥४१॥

इस प्रकार समय बिताने का समाचार जब मालदेव ने सुना तो वह राठौड़ राजा आसा बारहठ और बाघा कोटड़िया दोनों पर बेहद कुपित हुआ। उधर कोटड़ा में बाघा और भारमली अपने प्रिय अतिथि कवि आसा बारहठ को बहुत ही जतनपूर्वक रखते। वे उसे अपनी हथेली पर थुकवाते अर्थात् उसकी सेवा में कोई कसर नहीं रखते। कुछ लोगों का कहना है कि इस तरह कुछ माह की अवधि बीती और कुछ का कहना है कि इस तरह डेढ़ वर्ष व्यतीत हो गया। कुछ भी हो काल अपनी गति से गुजर रहा था कि युद्ध करने की इच्छा रखने वाले इस रणरसिक बाघा ने शरीर त्याग दिया। बाघा के मरते ही भारमली सहगमन करने की सोच कर झरोखे से कूद पड़ी जैसे वृक्ष पर चढ़ी कोई लता सूख कर गिरे। इस तरह वह विरह से डरने वाली स्त्रियों में आदर योग्य भारमली अपने प्रेमी बाघा के मरते ही मरी। राजा मालदेव सेना सज्जित करता ही रह गया। उसकी व्यस्तता के कारण उसे कोटड़ा पर चढ़ाई करने की फुरसत नहीं मिल पाई। वह निर्दोष कवि आसा बारहठ भी बाघा

राठौड़ की मृत्यु के बाद मारवाड़ की भूमि में वापस लौटकर कभी नहीं आया। जब राजा मालदेव की मृत्यु हुई तो यह खबर सुन कर उमादे भी जैसलमेर में जल मरी। उसने अपने पीहर और ससुराल दोनों कुलों को पापरहित किया। उसके आंचल को पकड़ कर उसका पति भी तर गया अर्थात् उसका भी उद्धार हो गया।

दोहा

अग्गैं कवि कुल परपुरुख, निपुन पिठ्ठहव नाम।
कुंभरान की कोटि तजि, धीर चलिय जब धाम॥४२॥
अधिप गोर अजमेर के, बच्छराज सुनि बत्त।
बाधनवारे सह बिदित, तिनहि अब्ज दिन तत्त॥४३॥

पूर्व में वर्णित कवि (ग्रंथकर्ता सूर्यमल मीसण) का पूर्व पुरुष पीठवा मीसण महाराणा कुंभा का करोड़ पसाव (पुरस्कार) छोड़ कर अपने घर चला गया था। जब इस घटना की चर्चा अजमेर (श्रीनगर) के राजा बच्छराज गौड़ ने सुनी तो उसने पीठवा मीसण को घर से बुला कर बांदनवाड़ा की जागीर सहित अरब पसाव प्रदान किया।

षट्पात्

पाइ अब्ज पिठ्ठहव बरस छ नवति जॉरठ बय।
रहि बाधनबारे हि दियउ तजि देह महादय।
सुत तस हुव गृहसूर सुकवि महसूर तास सुत।
जुग हि पिठ्ठहव जियत हुव सु तिन्हकाल अनल हुत।
आनंद जबहि महसूर सुव किय प्रपितामह मृत्यु कृत।
सुत हुव तदीय मिश्रन सुकवि कर्मानंद बिसिष्ट बृत॥४४॥

इस कवि पीठवा मीसण ने अरब पसाव प्राप्त करने के बाद बांदनवाड़ा में ही रहना आरंभ किया जहाँ छ्यानवे वर्ष की आयु में अपनी वृद्धावस्था को छोड़ कर वह दयालु परलोकवासी हुआ। पीठवा के गृहसूर नामक पुत्र जन्मा और गृहसूर के सुकवि महसूर मीसण जैसा पुत्र हुआ पर इन दोनों पिता पुत्र की मृत्यु पीठवा के जीवनकाल में ही हो गई। काल रूपी अग्नि इन दोनों के होम हो जाने के बाद महसूर के पुत्र आनन्द ने अपने प्रपितामह पीठवा की

अन्त्येष्टि क्रिया की। इसी आनन्द के मीसण शाखा में विशेष चरित्र वाला सुकवि करमानन्द जन्मा।

दोहा

उभय महा हरिभक्त ये, भये जनक सुत भूप।
बिहित भक्ति जिनकी बिदित, अज्जहु जग अनुरूप॥४५॥
कोटि तजी सुनि जनककी, रायमल्ल जब रान।
बुल्लिय कवि आनंद बलि, दै दल प्रीति निदान॥४६॥
तबहु न गय आनंद तंहं, पुत्र निजहु पठयो न।
तिमतिम आग्रह अधिक तकि, भूपहु बिरत भयो न॥४७॥

हे राजा रामसिंह! ये दोनों पिता पुत्र आनन्द और करमानन्द मीसण बड़े हरिभक्त हुए। इन दोनों की भक्ति की प्रसिद्धि आज भी जगत में विद्यमान है। चित्तौड़गढ़ के महाराणा रायमल ने जब यह सुना कि पीठवा ने करोड़ पसाव लेना स्वीकार नहीं किया था जब महाराणा कुंभा उसे यह देने लगे तब उन्होंने उसके वंशज कवि आनन्द को पत्र लिख कर अपने यहाँ बुलवाया। इस स्नेह निमंत्रण को न आनन्द ने स्वीकार किया न उसके पुत्र करमानन्द ने तब महाराणा ने और अधिक आग्रह किया। इस पर भी कोई नहीं गया तब भी महाराणा प्रीति छोड़ कर उनसे विरक्त नहीं हुआ।

षट्पात्

इष्ट सपथ लखि उचित दियउ जब रायमल्ल दल।
इक्खि सु तब आनंद बिक्खि सीसोद प्रसभ बल।
निज सुत कर्मानंद तनय अभिदान लुंब तस।
सो पठयो बय सिसुहि जानि रानहिं आग्रह जस।
अति अग्घ सिसुहु रक्ख्यो अधिप जिहिं पुर उंटोलाव जुत।
छब्बीस सहंस कर दम्म छम पहु सासन अप्पिय प्रनुत॥४८॥

महाराणा रायमल ने तब अपने इष्टदेव की शपथ दिलवाते हुए फिर से पत्र भिजवाया। सिसोदिया राणा के इस हठ को देखते हुए आनन्द मीसण ने अपने पुत्र करमानन्द के पुत्र लुंबा को बालक अवस्था मे होने पर भी चित्तौड़गढ़ भिजवाया। महाराणा ने पूरे सम्मान के साथ इस बालक का

सत्कार किया और उंटोलाव (कदाचित यह उंटाला होगा जिसका वर्तमान में नाम वल्लभनगर है) नामक गाँव की जागीर और छब्बीस हजार रुपए उसे समर्थ राजा ने प्रदान किये।

सौराष्ट्री दोहा

गहत पट्ट संग्राम लुंब सुकवि जुब्बन लहत।
आस महत उपयाम, प्रहत पाप आये पितर॥४९॥

जब चित्तौड़गढ़ की राजगद्दी को संग्रामसिंह ने ग्रहण किया उस समय तक लुंबा जवान हो गया था। इसी के विवाह के अवसर पर पाप का नाश करने वाले अर्थात् उसके भक्त पिता बारात में आए।

गीतिः

सुत कर्मानंद सहित, नत्ती लुंब हि बिबाहिबे नव बै।
मग महिपन करत महित, आनंद हु भक्ति साव हित आये॥५०॥
जयमल्ल भ्रात हनि जब, लघुसुत संग्राम जनक पट्ट लयो।
तेहु पिता सुत दुव तब, कहि पापी रान तैं मिले न कृती॥५१॥
लुंब हिं बिबाहिकैं लहु, उभय हि सर्वस्व दै द्विजन अपनों।
पुनि साप अनुग्रह पहु, बिचरन लग्गे सतीर्थ सुभ बसुधा॥५२॥
अवधूत बेस अैसें, तनुतनु करत हुव कष्टतर तप कैं।
जुग कर धारत जैसें, तात रु तनुजात साव हित तुलसी॥५३॥
मग्ग गति सतत प्रनमत, बदरीप्रभु बिक्खि पुब्ब ओर बले॥५४॥
देखि जुग हि जगदीस हिं, पत्ते दक्खिन परिक्रमत पुहवी।
इम रामेस्वर ईसहिं, अर्च्चि प्रतीची दिसाहु मुरिआये॥५५॥

अपने पुत्र करमानन्द सहित नववय पौत्र लुंबा को ब्याहने के लिए जब आनन्द मीसण आए तब रास्ते में पड़े सारे राज्यों के राजाओं ने इस भक्त कवि की पूजा की। वृद्धावस्था होते हुए भी पुत्र की पितृभक्ति के कारण उन्हें आना पड़ा। इधर चित्तौड़गढ़ में अपने बड़े भाई जयमल को मार कर उसका छोटा भाई सांगा राजगद्दी पर बैठा था इसलिए चित्तौड़गढ़ के इस नये महाराणा

संग्रामसिंह को पापी समझ कर इन भक्त पिता-पुत्र दोनों ने मिलना उचित नहीं समझा। अपने पौत्र लुंबा के विवाहोपरान्त दोनों पिता पुत्र आनन्द करमानन्द ने अपनी सारी सम्पत्ति ब्राह्मणों को दान में दे दी फिर राणा सांगा को शाप दे कर उन्होंने इस बात का प्रायश्चित करने के लिए कि चित्तौड़गढ़ से जागीर लेना क्यों स्वीकार कर लिया सारे तीर्थों की यात्रा करने का निश्चय किया। इसके बाद कठिन तप साध कर पिता पुत्र दोनों ने अपने हाथों पर तुलसी उगाई और इस स्थिति में कनक दंडवत करते हुए पहले उत्तर दिशा में गए। अपने शरीर और मन (इन्द्रियों) का दमन करते हुए उन्होंने बद्रीनाथ धाम की यात्रा की फिर वहाँ से पूर्व दिशा में मुड़े। वहाँ जगन्नाथ धाम का दर्शन कर दोनों पृथ्वी की (देश की) परिक्रमा सी करते हुए दक्षिणा दिशा में गए। वहाँ रामेश्वर तीर्थ में स्नान कर दोनों ने पश्चिम दिशा की ओर प्रयाण किया।

प्रभु द्वारकेस पिक्खन, जनपद आनर्त गोन किय जबही।
ईस्वर कवि सम इक्खन तिन्ह पथ परिगह सहित मिले तीजे ॥५६॥

प्रभु मम पूर्ब पितामह, दुस्सह तप कष्टमें बढैं द्वै ही।
इक्खन सब सम आमह, आसोक बढैं अनिच्छ ईस्वर ही ॥५७॥

सुंडा पलादि संगति, ईस्वर कै इक्खि करि तस अवज्ञा।
मेटि मग सहगमन मति, अग्गैं पीछैं चले रहत वे हू ॥५८॥

द्वारावति घटिकादुव, पहिलैं मिश्रन पिता रु सुत पहुँचे।
हित बाहनकरि गत हुव, तदनंतर ईस्वर हु सभोग तहां ॥५९॥

सुनि प्रभु अवसर मिश्रन, द्रुत प्रनमत प्रथम दर सहित दोरे।
निजमंदिर पहुँचत नन, अब अवसर नातको सुनी ऐसैं ॥६०॥

जो सुनि दुव मुरिजावत, आवत ईस्वर मिले समुह इनकों।
बुल्ले न अब बतावत, अवसर यातैं चलहु बहुरि ऐहैं ॥६१॥

ईस्वर अक्खिय आवहु, दोउ न दरसन कराइ हम दैहैं।
चल्ले त्रय तब चावहु, दुहुं भक्तन बिनु समै लखन दृढभो ॥६२॥

प्रभु द्वारिकाधीश के दर्शनार्थ जब वे आनर्त के जनपद (काठियावाड़) में आए तब उन्हें रास्ते में छोटे-बड़े सभी को एक नजर से देखने वाले

समदृष्टा भक्त कवि ईसरदास बारहठ अपने परिकरों सहित मिले। हे राजा रामसिंह! मेरे उन पूर्वजों ने दुस्सह कष्ट उठा कर कठिन तपस्या को साधा था। तब तीनों इकट्ठे हो गए जिनमें सभी सुख दुख को तो समान समझने वाले थे पर एक ईसरदास अनिच्छा (इच्छाओं से रहित) में बढ़ कर थे। ईसरदास की मद्य मांस भक्षण की प्रवृत्ति देखी तो उन्हें अवज्ञापूर्वक पीछे छोड़ कर दोनों मीसण पिता पुत्र आगे बढ़ गए। साथ साथ चलना छोड़ कर कभी वे ईसरदास से आगे निकल जाते। कभी जान बूछकर पीछे रह जाते। इस तरह चलते हुए ये पिता पुत्र आनन्द करमानन्द ईसरदास से दो घड़ी पहले द्वारिकापुरी में पहुँचे। वहाँ पहुँच कर उन्होंने अपने वाहन छोड़ दिये और पैदल-पैदल भगवान के दर्शन को गये। इसके बाद ईसरदास भी द्वारिका पहुँचा। दोनों मीसण पिता पुत्र प्रभु के दर्शन हेतु दौड़े पर निज मंदिर तक पहुँचते-पहुँचते दर्शन बन्द हो गए। यह सुन कर मन में मलाल लिये वे वापस मुड़े तभी मन्दिर के बाहर ईसरदास उन्हें सामने आता हुआ मिला। उन्होंने ईसरदास से कहा अब दर्शनों का समय खत्म हो गया, चलो थोड़ी देर बाद वापस आएँगे। इस पर ईसरदास ने कहा कि नहीं बाहर क्यों जाते हो। आओ मेरे साथ मैं तुम्हें दर्शन करवाता हूँ। यह सुन कर तीनों साथ-साथ उत्साह पूर्वक मंदिर के भीतर की ओर चले। इस समय दोनों पिता पुत्र ने मन में सोचा कि बिना समय दर्शन कैसे होंगे।

पहुँचत खास बलज पर, दरसन प्रभु देहु ईस्वर कहत यों।
उग्घरि अहो अर अरर, हुव दरसन सबन तबहि श्रीहरि को॥६३॥

इक्खि सु आनंद इम रु, कर्मानंद दुव ईरखा करिकैं।
तनु अपनी छुट्टैं तिम, गाध दुलभ सिंधु झंपि झंपि गिरे॥६४॥

जलनिधि अंतर जावत, दोउन इक द्वारका तहां दीसी।
मधु बै सूल्य जिमावत, ईस्वर को मूर्ति सुहि तंहहु इक्खी॥६५॥

पवन ढुरावत पद्मा, ताहि व्यजन कर लियें निहारि तहां।
श्री दुग्धोदधिसद्मा, आसव उपदंस देत अवधारे॥६६॥

मच्छरता रु भजन मद, तप कष्टसहत्व छोरि दुव तबही।
प्रभु दंपति पंकज पद, परे सजातीय को हुलसि प्रनमैं॥६७॥

जंपिय प्रभु दंपति जंहं, मिश्रन तुम द्वै हि भक्त प्रिय मेरे।
किन जानहु ईस्वर कंहं, नरत्व मति उज्झि मोसन न न्यारो॥६८॥
याही को कुल अबतैं, दहन तपी छाप इह जनन दैहैं।
ते जात्रा फल तबतैं, लहि जैहैं भक्तलोक मम तुमलों॥६९॥
त्वंता हंता हित सन, तवता ममता कहां कहि इतीसी।
इन कोंहुं कराइ असन, दंपति सुतलों बिसासि सिक्ख दई॥७०॥

निज मंदिर के खास द्वार के पास पहुँचने पर ईसरदास ने कहा कि प्रभु! दर्शन दो! आश्चर्य की बात कि शीघ्र ही मंदिर के दरवाजे खुल गए और श्रीहरि के दर्शन हो गए। यह देख कर आनन्द और करमानन्द दोनों ईर्ष्या से भर उठे और अपना शरीर त्यागने के लिए अगाध समुद्र में कूद पड़े। दोनों को जल के भीतर एक नई द्वारिका नजर आई जहाँ उन्हें भगवान की मूर्ति ईसरदास को मद्य और मांस खिलाती हुई दिखाई दी और पास में लक्ष्मी खड़ी थी जो अपने हाथ के पंखे से हवा कर रही थी। जिस प्रभु का घर क्षीर का समुद्र हो उसे ईसरदास को खार भंजना (उपदंस) और आसव देते देखा। तो उन दोनों ने द्वेष वश तपस्या का कष्ट सहना छोड़ दिया। ये दोनों तब प्रभु दंपति के चरणों में गिर गए और सजातीय ईसरदास को प्रसन्न हो कर नमस्कार किया। तब प्रभु दंपति ने कहा कि तुम दोनों मीसण हमारे प्रिय भक्त हो पर तुम्हें मनुष्य बुद्धि छोड़ कर देखना चाहिए यह ईसरदास हमसे अलग नहीं है। अब से यहाँ द्वारिका में ईसरदास के वंशज ही अग्नि में तपा कर तीर्थ यात्रियों को मेरी छाप लगाएंगे। इसी छाप के आधार पर भक्त लोग यहाँ की यात्रा का फल ले कर जाएंगे। तू और मैं का भेद यह तेरा मेरा इस ईसरदास के नहीं है इतना कह कर परमेश्वर और लक्ष्मी ने उसे अपने पुत्र की तरह भोजन करवाया और पुचकार कर विदा किया।

तंहं ईस्वर हु कतिकहत, बुल्ले बास्तविक मायिक न बिरचे।
मुद्रा निजनाम महत, दै कर तिनकोंहु सिक्ख प्रभु दिन्नी॥७१॥
चहुवान पिप्प खिच्चिय, आनी तिम छाप ईस्वर हु आनी।
मध्य जलधि दृग मिच्चिय, उग्घारत त्रय हि बाहिर अबिक्खे॥७२॥
पहु राम तत्थ पर्या , ईस्वर कुल छाप दैन की अबहू।

चिंतहु भक्तन चर्या, इष्ट सपर्या कहा करें न अहो ॥७३॥
दै पातसाह दरही, मंगहि जब लक्ख चारनन मुद्रा।
सहिहै यह ईस्वर ही, बहि तबसों दंड जातिके बदलै ॥७४॥
अवधि नवचंद्र वारी, टारीहु जिहिं रोकि चंद्रहिं नटारी।
जो दम भरैंहिं जारी, होनदयो चंद्र तास बलिहारी ॥७५॥
जयमल्ल हिं हनि मदजुत, प्रभुहुव संग्राम रान तब पीछैं।
संभव खिन अटत ससुत, पत्त द्वारवति मिश्रन तपस्वी ॥७६॥

कुछ लोग ऐसा भी कहते हैं कि ईश्वर ने सद्‌रूप ही ईसरदास को अपने पास बुला लिया था क्योंकि वह वास्तविक (नैसर्गिक) तत्वों का बना था कोई माया से रचा हुआ नहीं था। उसे परमेश्वर ने अपने नाम की मुद्रा दे कर रवाना किया। पूर्व में जिस प्रकार खीची शाखा के पीपा चहुवान नामक भक्त ने प्रभु से छाप पाई थी उसी प्रकार अब ईसरदास बारहठ ने पाई। समुद्र में गिरते समय आंख मींची थी और पलक खुलते ही वे तीनों समुद्र से बाहर थे। हे राजा रामसिंह! वहाँ द्वारिका में इसी ईसरदास के वंशज आज भी तीर्थ यात्रियों के छाप लगाते हैं। आप भक्तों के आचरण का स्मरण करो क्योंकि अपने इष्ट की सेवा क्या नहीं दिला सकती है। कहते हैं जब बादशाह ने भय दे कर चारणों से एक लाख रुपए मांगे तो इसी ईसरदास ने उस दंड को जाति के बदले स्वयं अकेले धारण किया। इस राशि को जमा करवाने में बादशाह ने नये चन्द्रमा के उगने तक की अवधि दी थी। इस पर उस भक्त ने रुपयों की व्यवस्था नहीं होने तक चन्द्रमा को उगने ही नहीं दिया। जब उसके रुपयों की व्यवस्था हुई तब उसने जमा करवाए। इसके बाद चन्द्रमा का उदय होना वापस शुरू हुआ। वह ईसरदास ऐसा सर्वसमर्थ भक्त था। संभव है चित्तौड़गढ़ में जब अपने बड़े भाई जयमल को मार कर संग्रामसिंह मेवाड़ का स्वामी बना इसी से कुछ पूर्व ही अपने पुत्र सहित यात्रा करते हुए वे दोनों मीस्मण तपस्वी द्वारिका पहुँचे होंगे।

इतिश्रीवंश भास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे पंचम राशौ वीतिहोत्र-वसुधेश्वरवंश्यवर्णनबीजहड्डाधिराडस्थिपाल बीज्यानुबीज्यविहितव्या-ख्यानावसरव्याहार्यबुन्दीनरेन्द्रनारायणदास समयसामीप्यचरित्रेवयोबल-

विपरीतसमात्तसपत्नभावभागिनेय झल्लस्वमातुलहल्ल यशोवत्तिसंह पृथ्वीसिंह सीमाबलात्कारदुन्दुभिवादन प्रतिश्रवण स्वसद्मसमागतसज्जीकृतसर्वसैन्यवारणपृष्ठविद्यमानदुन्दुभिविशिष्टमातुलकुलजिंघासुजामेयमंकुवाणमहीपतत्सीम संक्रमण स्वकुलस्त्रीजनसंगरसंप्रेक्षणार्थप्राङ्निर्मापितैक तुंगाट्टालकविहितपूर्वदिनैकादश्यु पवासप्रातः कृतपारणश्रुतस्वसीमस्वस्त्रीयद्विरदस्थदुन्दुभिदद्दुरसज्जितस्वसुभटसमुपेतहल्लकुलहेलिसोदरद्वय समभिषेणन यशोवर्त्तिसंह प्रस्थानज्ञातानशन तर्जितस्वानुजपृथ्वीसिंह पारणनिमित्तपुनःपस्त्यप्रेषण दूरदृष्टप्रत्यागच्छदेका श्वारप्रधनप्रेक्षणाट्टसमारूढस्त्रीजन परस्पर पृच्छापूर्वक प्रहसन सामीप्यसंगतिप्रत्यभिज्ञानदेवरतदग्रज जोयास्वाभीष्टानुमोदनमतापमानतदट्टावतीर्णपृथ्वीसिंह पत्नीपतिप्रतारण प्रकटितप्रत्यागमनिमित्तसन्निस्थितप्रियापाणिप्राप्तप्रत्यवसेयप्रणीतपारणप्रतिगच्छत्पृथ्वीसिंह स्वाग्रज प्रेरणाप्रणाम निजकुलयशः प्रसारणार्थसेष्टशपथप्रजावतीपावकप्रवेशप्रतिषेधन।

श्री वंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण की पंचम राशि में अग्निवंशी चहुवान वंशवर्णन के कारण हड्डाधिराज अस्थिपाल के वंश और वंश की शाखाओं की कथा बताने के समय के वचनों में बूँदी नरेन्द्र नारायणदास के समय के समीप के चरित्र में अवस्था के बल से विपरीत शत्रुभाव ग्रहण करके भानजे झाला का हाला वंश के क्षत्रिय मामा यशवन्तसिंह और पृथ्वीसिंह की सीमा में बलपूर्वक नगारा बजाने की प्रतिज्ञा करना, अपने घर आकर सारी सेना को सज्जितकर हाथी की पीठ पर नगारा रखकर मामा के कुल को मारने की इच्छा वाले भानजे झाला राजा का उसकी सीमा में जाना, अपने कुल की स्त्रियों के युद्ध देखने के लिये पहिले बनाई हुई एक ऊँची बुर्ज पर पहिले दिन एकादशी का उपवास करके द्वादशी के दिन अपनी स्त्रियों के सहित पारणा करके हाथी पर रखे हुए नगाड़े के शब्द से अपने सुभटों सहित समझकर हालाओं के कुल के सूर्य दोनों भाइयों का युद्धयात्रा करना, यशवन्तसिंह का चलने के समय अपने छोटे भाई पृथ्वीसिंह को बिना पारणा किये हुए जानकर धमकाकर वापस घर को भेजना, वापस आते हुए इकट्ठे सवार को दूर से देखकर युद्ध देखने को बुर्ज पर चढ़ी हुई स्त्रियों का परस्पर पूछने के साथ हँसी करना, समीप आने पर देवर को जानकर बड़े भाई की

स्त्री का अपने अनुकूल अनुमोदन करने से विवश हो अपमान पाकर उस बुर्ज से उतरकर पृथ्वीसिंह की स्त्री का अपने पति को प्रताड़ित करना, वापस आने का कारण जानकर घोड़े पर चढ़े हुए स्त्री द्वारा परोसे हुए भोजन से पारणा करके पृथ्वीसिंह का अपने बड़े भाई की प्रेरणा के मुताबिक अपने कुल का यश फैलाने के लिए इष्ट की सौगन दिलाकर भाभी को अग्नि में प्रवेश करने का निषेध करना।

प्रसभवारिताग्रज सार्द्ध सैन्यहल्लानुज दुन्दुभिदारणार्थतदने कपोपरिपतन, शिष्टशूरविशिष्टभिन्न भेरी स्वानसूचना सोत्कण्ठहल्लहेलियशोवत्सिंह स्वस्त्रीयसमाक्रमण सम्मिलनसमयजामेयनिजविजयदुन्दुभिविरावश्रवणापैशून्यप्रकटनानन्तरज्येष्ठमातुल स्वकनिष्ट भिन्नभेरीभांकारकर्णनार्थस्वस्त्रीय सम्बोधन सैन्यद्वय समापनसमयमंकुवाणमहीपमरणविचिकित्सा विख्यापन दृष्टकलह-कौतुकतत्क्षौमावतीर्णहल्लराजवल्लभा वर्जिततत्कुलसमस्तस्त्री-जनहव्याशनविशन विहितविपन्नबाहुजावेशहल्लेशसहधर्मिणी धन्वधराधामधरमहाभागवतद्वारहठसुकवीश्वर दासदास्यसमनुष्ठान प्रचुरप्रकारपरीक्षितसत्वज्ञातकुल नाम स्थान परिबुद्धतद्वार्दद्वार-हठतत्पतिप्रवीरत्वकीर्तिकाव्यवसुधाविस्तारण योधपुरेशराष्ट्र-कूटराजमालदेवभट्टीयादवभूजानि कन्योमापाणिपीडनप्रमोद-पुरस्सरजैशलमेरगमन द्वितीय निशागमश्वशुरसदनप्राप्तविविध-भैषज्यवर्द्धित्तविश्वकेतुकतिरस्कृततत्रत्यकुलललनालालनपुनःपुनः प्रहितान्तः पुरपरिजनमदनमूढमोहनमन स्कमालदेवस्वोढासमाकारण क्षणधैर्यधारणार्थदुर्लभाप्रेषितस्वान्तरंगभृत्याभारमल्ली सहराष्ट्रकूटराज सप्रसभरहोरमणसमय सहसा समागतकृतभर्तृभर्त्सनयादवी तल्पशयनशपथकरण।

हठ से बड़े भाई को रोककर आधी सेना लेकर हाला के छोटे भाई का नगाड़ा फोड़ने के लिये हाथी पर गिरना, बाकी वीरों के साथ फूटे हुए नगाड़े के शब्द की सूचना से उत्कंठा वाले हालों के सूर्य यशवंतसिंह का अपने भानजे पर बढ़ना, मिलने पर भानजे के अपनी विजय सुनाने वाले नगाड़े के शब्द की सूचना प्रकट करने के पीछे बड़े मामा का अपने भानजे को संबोधन करना, दोनों सेनाओं के नाश होने के समय झाला राजा के मरने में संदेह की सूचना करना, युद्ध के कौतुक को देखकर बुर्ज से उतर कर

हाला राजा की स्त्री को छोड़कर उस कुल की सब स्त्रियों का सती होना, क्षत्रियों की स्त्रियों के विधवावेश को धारण करके हाला राजा की विवाहित स्त्री मारवाड़ में रहने वाले भगवद्भक्त बारहठ सुकवि ईसरदास की सेवा करना, बहुत प्रकार से उसके सत्व की परीक्षा करके जाति, कुल, नाम और स्थान जानकर उसके आशय को जानकर बारहठ ईसरदास का उसके पति की वीरता की कीर्ति का काव्य पृथ्वी पर फैलाना, जोधपुर के पति राठौड़ राजा मालदेव का भाटी शाखा के यादव राजा की कन्या उमा को ब्याहने के लिये आनंदपूर्वक जैसलमेर जाना, दूजी रात्रि के आगम में ससुर के घर जाकर अनेक औषधियों से कामदेव को बढ़ाकर वहाँ के कुल की स्त्रियों के लालन का अनादर करके बारम्बार जनाने लोगों को भेजकर कामदेव से मूढ, मैथुन करने की इच्छा से मालदेव का अपनी दुल्हन को बुलाना, क्षण मात्र धीरज धरने के लिए दुल्हन की भेजी हुई खानगी दासी भारमली के साथ राठौड़ राजा के हठपूर्वक रति करने के समय अचानक आई हुई भटियानी का पति को धमकाकर उसकी शय्या पर शयन न करने की शपथ लेना।

सदनागमना वसरपतिप्रेषितद्वारहठप्रतिश्रुतपितृनिलयनिवास प्रासभ्यप्राणप्रहाण प्रयुक्तपरिणेत्रीप्रबोधन तद्गौरवाङ्गीकृतगृहगमन-प्राणनपर्यन्तबाढ विख्यापितब्रह्मचर्यसञ्जीकृत स्वकुलसुभटपंचशती सार्थकविशप थवचनविश्रब्धवरयित्रीवरवसतिब्रजन विज्ञातविधेय वेलाबाला ब्रह्मचर्यविप्लवविधित्सुवराब्रजनगवाक्षद्वारझंपापातित पुद्गलभूतला गतनिजार्युबलविस्तृत चण्डातकचक्रपुष्टप्राणनस्वास्थ्य-सावधान सोपालम्भनिभालितोर्द्धभीत भर्तृसम्मितस्वसाहसिद्धिसंतुष्टि-परियत्नप्ररुद्धपतिप्रसभोपाययादवीपुनःप्रासादप्रविशन शपथपाप-समादानसमय विनिश्चितद्वारहठव्याजवरवंचनविधूतविश्वासवरयित्री-वरवसतिब्रजनविनिर्णिनीषुस्वीकृत साधकसंकल्पितसमर्पण सहायसमा नीतराष्ट्रकूटव्याघ्रराजपितृप्रहितप्रवीरोपेत यादव्युमासप्रसभपितृप स्त्यप्रविशन प्राप्तप्रार्थितभारमल्लीभृत्यसमूलसमुत्सारितस्वामि सेवन गृहगतबद्धबलव्याघ्रराजस्वस्तवस्थैर्यसाधक धाटिप्रमुखप्रयत्न पुञ्जीकृ-तस्वापतेयसमुत्सर्जन तन्मारणप्रस्थान वारणप्रतीपकार्मध्वजतदानि-नीष्वासकरणप्रेषण वन्दिततच्चरणसभुजिष्यव्याघ्रराजकियत्कालावधि-भोगभुक्तिप्रार्थन समुचितसज्जकुट वियोजनभीरुद्वारहठकथितविधित-

त्रिलयनिवसन कालक्षेपकुपितमालदेवावमतचारणव्याघ्राभीष्टसाधन कथितान्यमतमावधि भुक्तस्तोकभोगमृधमुमूर्षुव्याघ्रराज निकायकाय-हानावसरभारमल्ली झम्पापातमरणानन्तरद्वारहठयोधपुरसीमात्यजन मालदेव भाविमरणश्रवणसमययादव्युमा पितृगृहदेहदहनद्योतन।

घर आने के समय पिता के घर में रहने और बलात्कार करने पर प्राणहानि करने की प्रतिज्ञा सुनकर दुल्हन को पति के भेजे हुए बारहठ का समझाना, उस चारण का बड़प्पन रखने के लिए घर जाना स्वीकार करके जीवन पर्यंत अधिक विख्यात करने योग्य ब्रह्मचर्य से अपने कुल के पाँच सौ वीर भाटियों को साथ लेकर कवि की शपथ के वचनों पर विश्वास करने वाली दुल्हन का दूल्हे के साथ जाना, उचित समय जानकर उस स्त्री का ब्रह्मचर्य बिगाड़ने की इच्छा वाले वर के आने पर झरोखे से कूद कर शरीर से भूमि पर आई हुई अपने आयु बल से फैले हुए गाघरे (लंहगे) के घेर से प्राण और नैरोग्यता पुष्ट रहने से सावधान रहकर ऊपर देखर डरे हुए पति को उलाहना देकर पति के अपने साथ पड़ने में प्रसन्नता प्रकट कर यत्न से पति के बलात्कार के उपाय को रोककर भटियानी का फिर से महलों में आना, शपथ का पाप ग्रहण करने के समय बारहठ का बहाना जानकर पति के ठगने से विश्वास को छोड़कर उस स्त्री का पिता के घर पर जाने का निश्चय करने की इच्छा से कार्य साधने वाले को मनवांछित देना स्वीकार करके सहायता के लिए बाघा राठोड़ को लेकर पिता के भेजे हुए वीरों के साथ यादवी उमा दे का हठ सहित पिता के घर में जाना, प्रार्थना की हुई भारमली को पाकर सेवकपन को और स्वामिसेवा को सर्वथा त्याग कर घर पर आये हुए बाघा का बल बांधकर अपने यश को स्थिर करने वालों को धाड़ा डालने आदि उपायों से इकट्ठा किया हुआ धन देना, उसको मारने के लिये राजा के गमन को रोकने वाले और उसको लाने की इच्छा वाले आशकरण बारहठ को शत्रु मालदेव का भेजना, उसके चरणों को नमस्कार करके पासवान सहित बाघा की कुछ समय तक भोग भोगने की प्रार्थना करना, उचित उत्तम जोड़े का वियोग करने में कायर उस बारहठ का कही हुई अवधि तक उसके घर में रहना, समय बिताने से क्रोधित मालदेव के अपमान से उस चारण का बाघा के अनुकूल साधन करना, कही हुई किसी एक अवधि तक थोड़े भोग भोग कर युद्ध में मरने की इच्छा वाले बाघा के घर में शरीर छोड़ने के समय

भारमली के मकान के ऊपर से गिरकर मरे पीछे बारहठ का जोधपुर की सीमा को छोड़ना, आगे आने वाले समय में मालदेव का मरना सुनकर भटियानी उमा का पिता के घर में सती होने को प्रकट करना।

प्राक्कालत्यक्तराणाकुम्भकर्णदत्तद्रम्मकोटि पस्त्यप्रस्थीयमानस-विनयसमाहूतषण्णवति वर्षवयस्ककविकुलपरपुरुषप्टष्ठभवा र्थगौडा-जमेरराजवत्सराजवर्द्धनवाटपुर शासनमुपेतदशप्रयुत द्रम्मद्रव्यदानभूयो-भरण पुत्रपौत्र प्राणप्रहाणपश्चात्संस्थितप्रपितामहपृष्ठभवौ र्द्धदैहिक-तत्प्रपौत्राऽऽनन्द प्रणयन स्वपुत्रकर्मानन्द सहिताऽऽनन्द महाभागवत-भावविख्यापन स्मृतसवितृसमयोदन्तपुनःपुनर्लिखितश्रेष्ठशपथप्रीतिपत्र सविनयराणाराजमल्लपुरामहाभक्तमिश्रणाऽऽनन्द समाकारण तत्साह ससंकुचितमिश्रणाऽऽनन्द स्वपुत्रबाल्यवयस्क कार्माणन्दिलुम्ब प्रेषण सविनयसत्कृतलुम्बा र्थराणासोष्ट्रोल्लाप पुरषड्विंशतिसहस्र वार्षिक-बलिशासनवितरण राजमल्लानन्तरहताग्रजप्राप्तपट्टसंग्रामसमय लुम्ब पाणिपीडनप्रयोजन प्राप्त महाभक्तमिश्रणसवितृ सुत युग्म भ्रातृघातराणा-मिलनानङ्गीकरण कृतपौत्रोपयामपस्त्यप्रत्यागतद्विजदर्त्तसर्वस्वस्व शयन-समात्तसाधारतुलसीकमहाभक्तमिश्रण सवितृसुतद्वय सप्रणामसर-णिसंक्रमतीर्थप्रस्थापन।

पूर्वसमय में राणा कुम्भकर्ण के करोड़ रूपयों के दान को छोड़कर घर को गमन करने वाले सोलह वर्ष की अवस्था वाले ग्रन्थकर्ता (सूर्यमल) के पूर्व पुरुष पीठवा को विनयपूर्वक बुलाकर उसके लिये अजमेर के राजा गौड़ बछराज का बांदनवाड़ा पुर के शासन (उदक) सहित अरबपशाव देकर फिर भरण पोषण करना, बेटा पोता के मरे पीछे दादा पीठवा के मरने पर परपौता आनन्द का उत्तरक्रिया करना, अपने पुत्र कर्मानन्द सहित आनंद के बड़े भगवद्भक्त होने की सूचना करना, पिता के समय के वृत्तान्त का स्मरण करके फिर श्रेष्ठ शपथ से विनयपूर्वक बारंबार प्रीति पत्र लिखकर राणा रायमल्ल का पहले महाभक्त मीसण आनन्द को बुलाना उस हठ से संकोच न करने मीसण आनन्द का अपने पुत्र बालक अवस्था वाले कर्मानन्द के पुत्र लुम्बा को भेजना, विनय पूर्वक सत्कार करके लुम्बा के अर्थ राणा का ऊंटाला पुर सहित छब्बीस हजार सालाना आमदनी का शासन देना, रायमल्ल के बाद बड़े भाई को मारकर पाट लेने वाले संग्रामसिंह के समय लुम्बा के विवाह का प्रयोजन पाकर बड़े भक्त मीसण पिता और पुत्र दोनों का भाई को

मारने वाले राणा से मिलने से इनकार करना, पोते का विवाह करके लौटने पर घर में आकर ब्राह्मणों को सर्वस्व देकर अपने हाथ में तुलसी के साधारण पोधे को ग्रहण करके महाभक्त मीसण पिता पुत्र दोनों का मार्ग में प्रणाम सहित तीर्थ को प्रस्थान करना।

कृतदिक्त्रय तीर्थप्रत्यक्प्राप्तद्वारकेशदिदर्शयिषुश्रणानन्द कर्मानन्द महाभक्तरोहिडकवीश्वरदास मार्गमिलन मद्य मांसा दिसर्वभोगसंगत्या वमतत्यक्तेश्वरसार्थपूर्वपुरी प्राप्तप्रासादप्रतीहार-प्रतिज्ञातप्रभुप्रेक्षणानवसर प्रतिबलितपितृ पुत्र सम्मुखागच्छदीश्वर प्रत्यानीतद्वय द्वारकेशदर्शन तन्मात्सर्यमुमूर्षुकृतझम्पमितद्रुमग्न मिश्रणयुग्म द्वारकेशदम्पतिशुण्डा शूल्या दिभोज्यमानमहाभक्ते श्वरदास दर्शन प्रभुदम्पति पादपद्मपतितमारित मनोमदभृत्य भावभोजितभक्तयुग समाश्वासन खिच्चि पिप्पराज प्रतिम द्वारहठेश्वरदास प्रभुमतमुद्राबहिरानयवनमतभेदभणन तदवधिसूचितस्व-भक्तेश्वरदास बीज्यजननकरतप्तमुद्रांकनश्रीद्वारकेश्वर समर्पणप्रसादि-तस्वभक्तत्रय वार्धिबहिर्विसर्ज्जन तदर्वागद्यावधिमहाभक्तेश्वरान्ववायजन यात्रासमागतजनतातप्तमुद्रांकनप्रभृतिप्रथन स्वीकृतयवनेन्द्रमार्गितस्व-जातिसम्बन्धिदमद्रम्मलक्ष रुद्धनवचेन्द्रोदयसम्प्रापितसमयसत्यत्वद्वारहठे-श्वरदासस जातीयसाहसस्वापतेयस्वयंसमर्पण भाविताभणन कविकुल-परपुरुषमहाभक्तमिश्रणानन्द कर्माणन्द सवितृ सुतैं द्वय द्वारकागमनसम्भ-वसमयसूचनं .त्रिंशत्तमो मयूखः ॥३०॥ आदितः सप्तसप्तत्युत्तरैकश-ततमः ॥१७७॥

तीनों दिशाओं के तीर्थ करके पश्चिम में जाकर द्वारकाधीश के दर्शन की इच्छा वाले मीसण आनन्द और कर्मानन्द का महाभक्त रोहड़िया बारहठ ईसरदास से मार्ग में मिलना, मद्य, मांस आदि सब भोगों की संगति से अवज्ञा करके ईसरदास का साथ छोड़कर पुरी में पहले पहुँच कर अब दर्शन का समय नहीं है, ऐसे द्वारपाल के कहने से पिता पुत्र दोनों के वापस मुड़ने पर सन्मुख आये हुए ईसरदास के लौटा लाने पर दोनों को द्वारकेश का दर्शन होना, उस मत्सरता से मरने की इच्छावाले समुद्र में कूदकर डुबे हुए दोनों मीसणों का जोड़ा सहित द्वारकेश के हाथ से मद्य पीते और सूला (कबाब) भोजन करते हुए महाभक्त ईसरदास के दर्शन करना, जोड़े सहित प्रभु के

चरण कमलों में पड़कर मन के मद को मारने वाले दोनों भक्तों को सेवकभाव से तृप्त करके सांत्वना देना, पीपा खीची के सदृश बारहठ ईसरदास का प्रभु की इच्छा से छाप बाहर लाने के मतभेद को कहना, उस सूचना की हुई अवधि से अपने भक्त ईसरदास के वंशज मनुष्यों के हाथ से तपी हुई छाप से चिह्नित करने की श्रीद्वारकेश्वर की प्रसन्नता से वह छाप समर्पण कर अपने तीन भक्तों को समुद्र से बाहर निकालना, उस समय से लेकर अब तक महाभक्त ईसरदास के वंश के लोगों का यात्रा के लिए आये हुए मनुष्यों को तपी हुई छाप से चिह्नित करने आदि की प्रसिद्धि करना, बादशाह के मांगे हुए अपनी जाति सम्बन्धी दंड के लाख रुपयों के लिये नवीन चन्द्रमा का उदय होना रोककर रुपये प्राप्त होने के समय सत्यता पूर्वक बारहठ ईसरदास का अपनी जाति के दंड के धन को स्वयं देने का कथन करना, ग्रंथकर्ता सूर्यमल्ल के पुरखा महाभक्त मीसण आनंद और कर्मानंद पिता पुत्र दोनों के द्वारका जाने के समय की सूचना करने का तीसवाँ मयूख समाप्त हुआ। और आदि से एक सौ सतहत्तर मयूख हुए।

प्रायो ब्रजदेशीय प्राकृत मिश्रित भाषा

दोहा

मन्नि भीर बाबर मुगल, मालव गुज्जर मीर।
चित्रकूट बुंदिय चढन, सजे बहुरि जयसीर॥१॥

नारायन बुंदिय नृपति, मिंहन रमन सिकार।
गो ग्रीखम खटपुर गिरिन, अल्पहि भटन उदार॥२॥

आवर्ता मेध्या उभय, तटिनिन अंतर तत्थ।
कतिदिन रहि बन केसरिन, सातन किय बल सत्थ॥३॥

मेटि गवादिन दुख महत, करि निर्भय कांतार।
बुंदिय किय प्रस्थान बलि, परिकर अल्प प्रकार॥४॥

अक्खय सुत संग्राम वह, समरकंद के संग।
मार्‍यो जब बुंदिय महिप, रक्खि बिरुद कुल रंग॥५॥

सुत नरबद संग्राम को, अरिपन तब सन आनि।
छिद्र लखत मारन छितिप, मुख्य भाव निज मानि॥६॥

मालवा (मांडू) और गुजरात (अहमदाबाद) के मीर, मुगल बादशाह बाबर को अपने साथ मान कर चित्तौड़गढ़ और बूँदी पर आक्रमण करने के लिए सज्जित हुए। विजय में साझेदारी रखने वाले दोनों मीर इसके लिए उतावले थे। इधर बूँदी का हाड़ा राजा नारायणदास सिंहों की शिकार पर निकला। वह उदार राजा ग्रीष्म ऋतु के समय में खटकड़पुर की पहाड़ियों में अपने कुछ ही सरदारों के साथ गया। आवर्त्ता और मेध्या इन दोनों नदियों के बीच का मैदान उसने इस कार्य के लिए चुना। कई दिनों तक वहाँ ठहर कर राजा ने अपने बल से वन में केसरी सिंहों को मारा। वहाँ चरने जाने वाली गायों आदि जानवरों के दुःख मिटा कर और वन्य प्राणियों को निर्भय कर (सिंह मारने से) राजा ने वापस अपनी राजधानी बूँदी की ओर प्रयाण किया। इस समय उसके साथ गए हुए थोड़े परिकर ही साथ थे। अक्षयसिंह के पुत्र संग्रामसिंह हाड़ा को इस राजा ने समरकंद के साथ अपने कुल की वीरता की मर्यादा का पालन करते हुए मारा था। इसी समय से संग्रामसिंह का पुत्र नरबद हाड़ा राजा से मन ही मन शत्रुता रखने लगा था। उसने मन में निश्चय कर रखा था कि अपने पिता को मारने वाले इस शत्रु राजा को उचित अवसर मिलते ही मारना है। उसका यह एक ही ध्येय रह गया था।

षट्पात्

स्वल्पहि परिकर सहित जानि बुंदिय नृप जावत।
अप्पन हद आखेट स्वामि क्रीड़न न सुहावत।
गुढानाम जंहं ग्राम भिल्ल सह रन निवासभुव।
खल तंहं दुरि इक लाख हड्डु नरबद ब्यवहित हुव।
नरनाथ आत सहसा निकट बिकट घात तुपकन बिरचि।
चढि तदनु अद्रि जीवन चहिय बालिस रहिय पलाइ बचि॥७॥

राजा को इस तरह अपने थोड़े रक्षक, सेवकों के साथ बूँदी की ओर जाते जान कर उसने अपनी जागीर की सीमा में राजा का इस तरह अनाधिकार शिकार खेलने से खफा हो कर गुढा नामक गाँव में जहाँ भीलों की बस्ती थी वहाँ से थोड़ी आगे अवस्थित घाटी के रास्ते पर एक नाले में नरबद हाड़ा छिप कर बैठ गया। राजा के समीप आते ही अचानक उसने बंदूक से ताबड़तोड़ हमला किया और तुरन्त ही वह दुष्ट पहाड़ पर चढ़कर वहाँ से सुरक्षित भाग लिया।

दोहा

इक गोलिय महिपाल उर, प्रखर गई कढि पार।
तबहि दुरग पिल्ल्यो तुरग, कुप्पि उरग अनुकार॥८॥

राजा की छाती में एक गोली लगी जो सीने के पार निकल गई। राजा ने घायल होते ही उस दुर्गम स्थल में कुपित सर्प की तरह क्रोधित हो कर अपने घोड़े को उस ओर बढ़ाया।

षट्पात्

सुपहु घाय छकि सुभट पिक्खि निज अट्ठ गये परि।
सहसा तुपकन सलक इक्क करि भजत भीत अरि।
सय धरि आयस संगि प्रहत हंकिय नरबद पर।
वह बिहस्त प्रिय असुन उच्च जिमतिम लैगो अर।
न निहारिय थल सु हयगम्य नृप दूरहि सक्ति प्रहार दिय।
लखि अहित निंब इक ओटि लिय कासृदल तरु बेध किय॥९॥

घायल राजा नारायणदास ने देखा कि उसके साथ वाले परिकरों में से आठ वीर घायल हो कर भूमि पर गिर पड़े हैं और इस तरह बन्दूक से हुए अचानक हमले से डर कर एक वीर वहाँ से भाग लिया है। राजा ने तुरन्त लोह निर्मित बरछी अपने हाथ में उठाई और नरबद को मारने के लिए उसका पीछा किया। वह नरबद अपने प्रिय प्राणों की रक्षा करने को व्याकुल हो कर शीघ्र ही पहाड़ की चोटी पर चढ़ गया। राजा ने नीचे से यह देख कर कि इस दुर्गम राह से घोड़ा नहीं जा सकेगा थोड़ी दूरी से अपनी बरछी फैंकी। हाड़ा नरबद ने यह देख कर एक नीम के पेड़ की ओट ली। राजा द्वारा फैंकी गई बरछी नीम के पेड़ के तने को आधा बेध गई।

तुपक चली इततैंहु भीत नरबद खल भज्जत।
ताके संगिय तीन लुट्टि गोलिन गय लज्जत।
बरछी अवहित बाहि मूर्छ हुव तदनु महीपति।
सिबिका धरि हयतैं सु सुभट लाये जव संगति।

पंथहि परासु हुव हड्डपहु तक्कहु नियति प्रतीप तिम।
गज जत्थ गिरहिं तत्थ न गिरहिं अत्थ गिरहिं छलघात इम ॥१० ॥

उस दुष्ट नरबद ने भयभीत हो कर भागते समय इसी आड़ से बंदूक दागी। उसके साथ तीन और साथी थे जो बंदूक छुटते ही वहाँ से भाग छूटे। उधर हाड़ा राजा बरछी चला कर वहीं मूर्छित हो गया। तब राजा के सेवकों ने आकर राजा को घोड़े से उतार कर पालकी में सुलाया और उसे ले कर तेज गति से बूँदी की ओर चले। रास्ते में ही राजा गत प्राण हो गया। नियती का क्रूर और उल्टा कृत्य देखिये कि जहाँ युद्ध में हाथी गिरते रहे वहाँ तो यह वीर हाड़ा राजा नहीं गिरा पर यहाँ छलपूर्वक की गई इस घात से निष्प्राण हो गिर पड़ा।

केदारेस्वर निकट बिमन तिम रहि अपबादन।
होत नगर हाकार सुद्धि पठई प्रासादन।
रानी त्रिक रट्ठोरि रहित सज्जिय उज्जल रस।
इक्क भुजिष्या इतर दयित दासी एकादस।
द्वै सज्ज संग इम पंद्रह हि जाइ मुदित नृप सह जरिय।
कारे कुमार द्वादस दिनन कथित सर्व समुचित करिय ॥११ ॥

केदारेश्वर मंदिर के निकट ही पूरा साथ उदास हो गया। सभी ऐसे राजा की हत्या करने पर उस नरबद हाड़ा की निंदा करने लगे। राजा की मृत्यु की खबर जब महलों में भेजी गई तो महलों के साथ पूरा नगर हाहाकार कर उठा। राठौड़ रानी को छोड़ कर तीनों रानियों ने सहगमन करने के लिए शृंगार किया। एक पासवान के अतिरिक्त राजा की प्रिय ग्यारह दासियां भी तैयार हुई। इस प्रकार कुल पन्द्रह स्त्रियाँ हँसते-हँसते जा कर राजा के साथ जल मरीं। काले कुमार (कुमार सूर्यमल) ने पूरे बारह दिनों का शोक रख कर पूरे विधिविधान सहित सारे अन्त कर्म किये।

दोहा

पट्ट पिता को समय पर, कारो पाइ कुमार।
हड्डुन नृप रविमल्ल हुव, हड्डुवती दुखहार ॥१२ ॥
सक बसु दृग पंद्रह समय, भो नारायण भूप।
ससि बसु तिथि इक्का हनि, सुरक्खिय जस अनरूप ॥१३ ॥

बा हि बरस जित्ते उभय, मालव गुज्जर मीर।
बाबर सों दूजे बरस, बिजय लह्यो प्रतिबीर॥१४॥
सकचउ बसुतिथि मित समय, आगम बिधि अनुसार।
असित जेठ तजि देह इम, गो नृप त्रिदस अगार॥१५॥

अपने मृतक पिता का उत्तराधिकार पा कर कुमार सूर्यमल बूँदी का राजा बना जो पूरे हाड़ोती प्रदेश का दुःख हरने वाला था। विक्रम संवत् के वर्ष पंद्रह सौ अट्ठाईस में इस राजा नारायणदास का जन्म हुआ और विक्रम संवत् के वर्ष पन्द्रह सौ इक्यासी में उसने चित्तौड़गढ़ में यवन इक्का को मारा। इसी वर्ष में मांडूपति और गुजरात के मीर की सम्मिलित सेना को हरा कर विजय प्राप्त की। इससे अगले वर्ष अर्थात् पन्द्रह सौ बयासी में बाबर को भगा कर पीलाखाल के युद्ध में अपने पक्ष को विजयी बनाया। विक्रम संवत् के वर्ष पन्द्रह सौ चौरासी के आगमन के समय ज्येष्ठ माह के शुक्ल पक्ष में अपनी देह त्याग कर यह राजा स्वर्गलोक को गया।

षट्पात्

सु सुनि रान संग्राम कलित जय त्रय उपकृत कहि।
सोचि समय हुव सुद्ध रुद्ध मंगल वादन रहि।
सदन रक्खि मह शून्य अदन गुरु बदन अनुष्ठित।
पुनि पुनि प्रकट पयंपि हड्डुभूपति अपुब्ब हित।
जय लहित गंजि दिल्लीस जय हायन प्राभृत द्वि गुन हुव।
सो सब पठाइ टीका सहित दिय बुंदिय भट भेजि दुव॥१६॥

बूँदी के राजा, अपने प्रिय संबंधी और स्नेही मित्र हाड़ा नारायणदास की मृत्यु का समाचार जब चित्तौड़गढ़ के महाराणा संग्रामसिंह को विदित हुआ तो तीन-तीन युद्धों में सहायता कर विजय दिलवाने वाले इस वीर के शोक में उन्होंने मांगलिक बाजे बन्द करवाए। अपने राज्य में कोई उत्सव नहीं होने दिया। स्वंय को श्रेष्ठ भोजन के सुख से शून्य किया। बार बार हाड़ा राजा के चित्तौड़गढ़ पर किये गए उपकारों को याद किया। पिछले वर्ष जब

हाड़ा राजा ने दिल्ली के बादशाह बाबर को हरा कर भगाया था तभी से चित्तौड़गढ़ की ओर से प्रतिवर्ष दिया जाने वाला खिराज दुगुना कर दिया गया था। इसी हिसाब से सभी कुछ सामग्री नये राजा के टीका सहित अपने मंत्रियों के साथ बूँदी भिजवाई।

बारन दुव चउ बाजि उभय असि चटित मुट्ठि इम।
सिरुपेच रु सिरुपाव तून कार्मुक दुव दुव तिम।
कोस रहित करवाल दुव रु कट्टार रहित दुव।
द्वि गुन उपायन बिदित हड्डनृप पंहं पठात हुव।
इम संग बहुरि टीका उचित इक इक गज सिरुपाव अरु।
इक मनिन भूखन रु हय उभय पठये कहि हित में न परू॥१७॥

महाराणा द्वारा खिराज रूप भेजी सामग्री में दो हाथी, चार घोड़े, दो तलवारें जिनकी मूठ पर जड़ाव का काम हो रखा था, दो सिरपेच, दो सिरोपाव, दो धनुष-तूणीर सहित, दो तलवार की खाली म्यानें और दो कटार की खाली म्यानें थी। पहले प्रतिवर्ष भेजे जाने वाले नजराने से सभी दुगुनी तादान में भिजवाये। इनके अतिरिक्त राजा के तिलक समारोह हेतु एक हाथी, एक सिरोपाव, एक रत्न जड़ित आभूषण, और दो घोड़े महाराणा ने हित में गांठ नहीं होती ऐसा सोच कर भिजवाये।

दोहा

त्रय बारन सिरुपाव त्रय, त्रय भूखन छ तुरंग।
जुग जुग प्रत्याकार जिम, खग्ग रु चाप निखंग॥१८॥
सामग्री हितपत्र सह, यह सब नृपहिं निवेदि।
गये रान सामंत गृह, खल अहित न मन खेदि॥१९॥

इस प्रकार कुल तीन हाथी, तीन सिरोपाव, तीन आभूषण, छह घोड़े, दो दो म्यानें और इसी तरह दो तलवार, दो धनुष दो तूणीर की यह सामग्री बूँदी के राजा के पास राणा सांगा ने उमरावों के हाथ भेजी। दुष्ट शत्रुओं के मन में खेद उपजाने वाली सामग्री ले कर सिसोदियों का दल बूँदी गया।

षट्पात्

महीरमन रविमल्ल छत्र धरतहि सासन छम।
खटपुरपति सिर खुल्लि कटक केतन किय संकम।
भजि नरबद गय भीरू भूप लुट्टिय तस वैभव।
इक गज सत्तरि असव हेति धन सहित जिताहव।
अवसेस लेत निवसथ अखिल काकासुत अर्जुन कथन।
रक्खिय सु इक्क खटपुर रिपुहिं पुहवि छिन्नि लिय खिल प्रथन॥२०॥

शासन करने में समर्थ राजा सूर्यमल हाड़ा ने छत्र धारण करते ही सबसे पहला कार्य यह किया कि खटकड़पुर के स्वामी पर अपनी ध्वजवाहिनी सेना चढ़ाई करने के लिए सज्जित की इसकी खबर पाते ही कायर नरबद वहाँ से भाग छूटा तब इस राजा ने उसकी संपति को लूट लिया। एक हाथी, सत्तर घोड़े, शस्त्र और धन इस विजयी राजा ने अपने अधिकार में किया फिर अपने काका के बेटे अर्जुन के कहने पर राजा ने एक खटकड़पुर को छोड़ कर नरबद के अधिकार वाले शेष सारे गाँवों की जागीर जब्त कर ली और अपने शत्रु को इस प्रकार निर्बल बनाया।

दोहा

जंपिय अर्जुन खलहिं जब, नरबद मांगहिं न्याय।
तस मनुजन भोजन तदपि, रक्खन समुचित राय॥२१॥
यातैं खटपुर रक्खि इक, निलय आइ नरनाह।
परिपंथक सारंगपुर, सुनि किय सज्ज सिपाह॥२२॥
पाइ जवन सारंगपुर, मखन नाम निज मित्र।
जाइ दुरिय नरबद जहाँ, चरन ढुंढि किय चित्र॥२३॥

अर्जुन हाड़ा ने कहा कि वह दुष्ट नरबद उसके साथ हुए अन्याय का रोना रोयेगा इसलिए हे राजा! हमें उसके परिजनों के गुजारे के लिए कुछ तो प्रबन्ध करना पड़ेगा। इसके लिए आप खटकड़पुर की जागीर तो इन्हीं के रहने दो। अपने भाई अर्जुन की सलाह पर यह एक गाँव जब्त करना छोड़ कर राजा बूँदी लौटा। यहाँ आते ही राजा ने अपने शत्रु सारंगपुर के स्वामी पर आक्रमण करने के लिए सेना को सज्जित किया क्योंकि मखन खां नामक

अपने यवन मित्र की शरण में नरबद जा छिपा था और राजा के हलकारों ने उसके वहाँ होने के विचित्र समाचार दिये थे।

षट्पात्

मिहिरमल्ल महिपाल सुद्धि सुनतहि हंकिय सजि।
बढिय हक्क दिस बिदिस बंब मर्दल निसान बजि।
पहुँचत दूत पठाइ बिहित नय मखन प्रबोधिय।
हम पहिलैं तकि हितहि सिद्ध आगम फल सोधिय।
यातें गहाइ तुम देहु अरि कै अब पगमंडहु कलह।
यह सुनि कहाइ पठई जवन सरनागत मम प्रान सह॥२४॥

हाड़ा राजा सूर्यमल्ल यह खबर सुनते ही युद्ध के लिए तैयार हो कर चला। गर्जना करती हुई सेना चारों ओर नगाड़े, मादल (वाद्य विशेष) और निसान बजाती जब वहाँ सारंगपुर के पास पहुँची। राजा ने अपने दूत भेज कर नीतिपूर्वक मखन खां को कहलवाया कि हम अपने साथ तुम्हारा भी हित चाहते हैं नहीं तो दूसरा विकल्प सोचा जाएगा। इसलिए तुम या तो मेरा शत्रु मुझे सौंप दो अन्यथा युद्ध करने को घर से निकलो। राजा के इस तरह के प्रस्ताव के जवाब में पठान ने कहलाया कि मेरी शरण में आया हुआ मुझे अपने प्राणों से अधिक प्रिय लगता है।

मखन रक्खि निजमित्र लरन आयउ इम संलपि।
कलि कराल करवाल धार चल्लिय दु ओर धपि।
मिलतहि पूरनमल्ल हड्डु बेधिय नबाब हय।
गिरत बाह भजि गयउ खान छप्पन पहुँचे खय।
दुव लगिय भूप छत्तिय प्रदर त्रय छत पूरनमल्ल तनु।
सामंत मेव छ रु चउ सहिय नव छत लहिय दलेल ननु॥२५॥

यह कहलवा कर पठान मखन खां लड़ने को आया कि मुझे आपका प्रस्ताव स्वीकार नहीं, मैं तो अपने मित्र की हिफाजत करूँगा। उसके आते ही दोनों ओर से तलवारें चलीं। विकराल भिड़ंत हुई। दोनों दलों का आमना सामना होते ही थोड़ी देर में पूर्णमल हाड़ा ने नवाब पठान मखन खां के घोड़े को काट डाला। अपने वाहन के गिरते ही वह खान भाग खड़ा हुआ और इस

झड़प में उसके छप्पन साथी मारे गए। शत्रु पक्ष की ओर से चलाए गए दो तीर राजा सूर्यमल को लगे और पूर्णमल के शरीर पर तीन घाव लगे। सांवतसिंह और मेव हाड़ा को क्रमशः छह और चार घाव लगे और दलेलसिंह ने पूरी वीरता के साथ निश्चय ही नौ घाव अपनी काया पर झेले।

दोहा

हय तैं गिरि नृप कै असह, मर्म भिदत हुव मोह।
आनि सम्हारत बंधु इक, दल्यो अरिन भ्रम द्रोह॥२६॥

पंद्रह भट इतकै परत, बपु छकत धरत दुबीस।
मित्र सहित भजिगो मखन, तजिगो लखन छतीस॥२७॥

पुनि लुट्टि सु सारंगपुर, चढे हयन चहुवान।
जवन बिभव लै सब जई, आये पुर अतिमान॥२८॥

आयो बुंदिय अर्जुन हु, सोक असह खिन सोधि।
पच्छो रान सु दै सपथ, बुल्ल्यो नृप सु प्रबोधि॥२९॥

जवन मखन सन पाइ जय, रानां गौरव रक्खि।
पठयो अर्जुन भ्रात पहु, उचित सहायहि अक्खि॥३०॥

अर्जुन जातहि देर उत, हुव मिच्छन रन होन।
मालव गुज्जर साह मिलि, गंजन पुनि किय गोन॥३१॥

राजा इन असह्य तीरों के लगते ही मूर्च्छित हो कर घोड़े से गिर पड़ा तभी आकर एक बंधु ने राजा को संभाला जिसे शत्रुओं ने राजा के भ्रम में मार गिराया। हाड़ा पक्ष के पन्द्रह योद्धा मारे गए और बाईस वीर घायल हो कर गिरे। उधर वह मखन खां अपने मित्र सहित वहाँ से भाग कर मनुष्य के छत्तीसों लक्षण छोड़ गया अर्थात् मनुष्यता त्याग कर पलायन कर गया। सारंगपुर को तब लूट कर लौटने के लिए चहुवान घोड़ों पर सवार हुए। यवन का सारा वैभव लूट कर वह विजयी सेना पूरे मान के साथ बूँदी गई। इसी समय राजा नारायणदास की मृत्यु पर शोक व्यक्त करने के लिए अर्जुन हाड़ा चित्तौड़गढ़ से आया। आते ही उसने बूँदी के स्वामी से कहा कि मुझे वापस चित्तौड़गढ़ शीघ्र ही लौटना होगा क्योंकि महाराणा सांगा ने शपथ दिला कर

आने दिया है। उन्होंने जब यह सुना कि आपने यवन मखन खां से विजय पाई है तो इस गौरव के अवसर पर मुझे महाराणा ने यह कह कर भेजा कि संभव है आपको मेरी सहायता की आवश्यकता पड़े। इधर हाड़ा अर्जुन के जाने में देर लगी अर्थात् उसी समय म्लेच्छों से युद्ध की संभावना बढ़ गई। मालवा (मांडू) और गुजरात के शाहों ने मिल कर फिर से चित्तौड़गढ़ पर आक्रमण के लिए प्रयाण किया।

षट्पात्

सजि लहि बाबर सैन मीर महमूद मुदाफर।
आये सह बल असह प्रथम चित्तोर लैन पर।
दै कुंडल लवनोद द्वीप जंबुव गरदायउ।
मंदर अग किमु मथित प्रथित बासुकि पलटायउ।
इम बैठि दुरग अंत्यज उभय रचि छ मास तोपन रचन।
कछु हानि न गिनि कुहकन कियउ घुम्मन गढ बारुद धक॥३२॥

अपनी-अपनी सेना को सज्जित कर मीर महमूद और मुदाफर ने बाबर की सेना को अपने साथ किया। तीनों दलों को मिलाने पर बनी भारी सेना के साथ वे चित्तौड़गढ़ को लेने निकले। उन्होंने वहाँ आ कर चित्तौड़गढ़ के दुर्ग को यों घेरा जैसे जंबूद्वीप के चारों और क्षार समुद्र का घेरा है या मंदराचल पर्वत्र के चारों ओर वासुकि नाग आ लिपटा हो। इस तरह उन दोनों म्लेच्छों ने छह माह की अवधि वाला घेरा अपनी तोपों के साथ लगाया। अपनी सेना की अधिक हानि न हो इसलिए दूर से ही दुर्ग को बारूद के धमाकों से ढहाने की सोची।

पिहित संधिला पृथुल खलन गढ अधर खनाइय।
इक्क बुरज तर अवधि अवनि अंदर वह आइय।
कुतू निकर सोर सन सघन ता बिच द्रुत दट्टिय।
अवसर दिय अंगार फार फैलत गिरि फट्टिय।
बीथी सु गूढ गत जिहिं बुरज, सहसा वह उड्डुत समय।
रविमल्ल भ्रात संध्या रचत गहि असि नग्गिय गगन गय॥३३॥

यवन शत्रुओं ने गढ़ के नीचे एक ओर एक बड़ी गुप्त सुरंग खोदना

शुरू की धीरे-धीरे उन्होंने उस सुरंग को इतना गहरा कर लिया कि वह दुर्ग की एक बुर्ज के ठीक नीचे तक पहुँच गई। इसके बाद पीपों के समूह में बारूद भर कर उसे विस्फोट से उड़ाने की योजना के अनुरूप उन्होंने उसमें पलीता (आग) लगाया। शीघ्र ही भयंकर धमाके के साथ पहाड़ फट गया। इस सुरंग के अगले मुँह पर विस्फोट से दुर्ग की वह बुर्ज उड़ गई और इसी समय बूँदी के राजा सूर्यमल का भाई अर्जुन इसी बुर्ज में अपनी संध्या के जप तप में बैठा था। वह तुरन्त अपनी नंगी तलवार के साथ ही आकाश में उड़ गया।

ताहि बुरज सिर तबहि इक्क आयत सिल उप्पर।
कृत्य नियत निज करत हड्डु प्रातहि कुल्लहन हर।
उडत अट्ट पर उडत सिला उप्पर नरबद सुत।
तजि जप कड्ढिय तेग बेग बैरिन करि बिद्रुत।
घन धूम सबन भासत घटा बिज्जु दृगन मुंदत बढिय।
कै रक्तबीज चट्टन कलह कालिय मुख रसना कढिय॥३४॥

इस बुर्ज में रखी हुई एक चौड़ी शिला पर प्रतिदिन वह हाड़ा कुल्हन का वंशज अर्जुन अपनी संध्या का जप किया करता था। नीचे सुरंग में जब विस्फोट हो कर पहाड़ ऊपर की ओर फटा तो यह बड़ी शिला भी उड़ी और उस पर ध्यानमग्न हाड़ा नरबद का पुत्र अर्जुन भी उछल कर गिरा। अचानक इस धमाके के कारण वह जप छोड़ कर उठा और तुरन्त अपनी तलवार से उसने गड़बड़ी करने वाले शत्रुओं को वहाँ से भगाया। फिर वह वहाँ छाये सघन धूम्र को चीरता हुआ ऐसा लग रहा था मानों अपने विद्युत रूपी नेत्रों को मूंदती हुई कालिका ने राक्षस रक्तबीज को चट करने के लिए युद्ध में अपने मुंह से लाल जीभ निकाली हो।

नरबद अंगज निधन उडत बारूद लहत इम।
पद्धर होतहि पंथ तंहं न अट्टाल चिन्ह तिम।
सुनत रान संग्राम अधिक बुंदिय आसान हिं।
बहुल सोक सह बदिय धारि हिंगुलु लग ध्यान हिं।

अग्गैं नृसिंह अर्जुन अबहि हड्डे सिर चित्तोर हुव।
बुंदीस आदि घायन बहुन धीर परिग बहु बंधु धुव॥३५॥

हाड़ा नरबद का पुत्र इस तरह बारूदी विस्फोट में पलरोकवासी हुआ वहाँ जाने के इतने लंबे और सीधे रास्ते पर अपने पदचिह्न नहीं मांडते हुए वह उड़ कर पहुँचा। जब यह खबर महाराणा सांगा ने सुनी तो उन्होंने कहा कि बूँदी का यह एक अहसान और हो गया। उन्होंने अत्यन्त शोक संतप्त स्वर में कहा कि हाड़ा हिंगलु से लगा कर नृसिंह हाड़ा और अब यह अर्जुन हाड़ा का बलिदान चित्तौड़गढ़ के लिए हुआ। घायल होने वालों की संख्या तो और अधिक है उसमें स्वयं बूँदी के राजा रहे हैं। ऐसे क्षत्रियों का बंधुत्व भाव तो आदरणीय है ही।

सोचि इम रु संग्राम मंडि मरनहिं स्व सत्थ सह।
ताही मग करि तबहि बज्र सम परिग भयावह।
कछुक बिंब रवि कढत मारि खग्गन बल मिच्छन।
गहिय मुदाफर गज्जि रहिय महमूद भज्जि रन।
दिल्लीय सहाय न बन्यों दुहु न कछु आवस्यक बीज करि।
रुपि खेत रान लहि जय दुलभ पति मंडुव-लायउ पकरि॥३६॥

ऐसा कह कर महाराणा सांगा ने भी अपने साथियों सहित युद्ध रच कर तब मरने का निश्चय किया और वीरों की राह पर चल कर वे शत्रु दल पर वज्र की तरह टूट पड़े। सूर्य अभी निकला ही था ऐसे समय में अपनी तलवारों के प्रहारों से म्लेच्छ दल को नष्ट करते हुए उन्होंने मीर मुदाफर को बंदी बना लिया और यह देख कर उसका दूसरा साथी गुजरात का मीर महमूद भाग छूटा। इन दोनों मीरों से भी दिल्ली के बादशाह की कोई सहायता नहीं हो सकी। शायद इसका कोई अपरिहार्य कारण रहा होगा पर यह तय है कि रणभूमि में अपने पांव रोप कर महाराणा सांगा ने मांडूपति को पकड़ लिया और दुर्लभ विजय पाई।

मुदाफर रु महमूद जुग हि पकरे कति जंपत।
किते कहत बहुबेर तजिय गहि गहि सु हि कंपत।

बदत किते त्रय बेर जुग हि गहि गहि छोरे जिम।
पै संग्राम नृपाल अरिन सिर असह तप्यो इम।
दिल्लीस रनहि कछु भय उदय बेर इक्क जान्यों बिदित।
बाहुर्यो बलि म गत बाबर हु मन्नि घाय अहि अर दमित॥३७॥

कई लोगों का ऐसा कहना है कि मुदाफर और महमूद दोनों मीरों को पकड़ लिया था। इसके उलट कई लोग ऐसा भी मानते हैं कि उन्हें एकाधिक बार पकड़ा था। कुछ लोग कहते हैं कि इन दोनों शाहों को तीन-तीन बार पकड़ कर छोड़ा था। कछु भी हो यह तय है कि महाराणा सांगा अपने शत्रुओं पर असह्य रूप से भारी पड़ा। यही कारण है कि मुगल बादशाह बाबर के दिल्लीपति बनते समय अर्थात् मुगलों के आर्यावर्त में उदय काल से ही यह एक वीर राजा खटकता रहा। इसके बाद तुरंत बादशाह बाबर की भी फिर से आक्रमण करने की हिम्मत नहीं पड़ी। इतनी शीघ्र हुई उसकी इस हार से वह मन ही मन घायल हो गया।

दोहा

अनुजय बंब घुराइ इम, चढिय रान चित्तोर।
बरन बुरज गढ के गिरे, दिय बनाइ पृथु दोर॥३८॥

तजिय मुदाफर दंडि तिम, रीझत सुकविन रान।
गज भूखन धन ग्राम गन, दये बिबिध बहु दान॥३९॥

केसरिया हरिदास कवि, मंडनसुत गंहियार।
पहु किन्नों चित्तोर पहु, दै नृपतग्गदि उदार॥४०॥

कविहु राज्य दिन तीन करि, चामर छत्र चलाइ।
कथित अर्घ लहि प्रसभकरि, पच्छो दिय भय पाइ॥४१॥

लज्जित रान सु निट्ठि लहि, बैठो बिमन बहोरि।
किते कहत सुहि सोक करि, छहि मासन गय छोरि॥४२॥

अपनी विजय के नगाड़े बजवाता हुआ राणा सांगा जब वापस अपने चित्तौड़गढ़ दुर्ग पर चढ़ा तो सर्व प्रथम किले की टूटी हुई दीवार और ढही हुई बुर्ज को हाथों हाथ ठीक करवाया। किले की प्राचीर की बड़ी क्षति हुई थी।

इसके बाद मीर मुदाफर से दंड ले कर छोड़ा और इस अवसर पर महाराणा ने रीझ कर अपने सुकवियों को हाथी, आभूषण, नकद रुपयों और गाँवों की जागीर आदि प्रदान की। इन कवियों में मांडन महियारिया का पुत्र हरिदास केसरिया नामक कवि था जिसे महाराणा ने उदारतापूर्वक चित्तौड़गढ़ का राज्य दे कर राजा बनाया। इस कवि हरिदास महियारिया ने भी तीन दिन तक चित्तौड़गढ़ पर छत्र और चंवर धारण कर राज्य किया पर चौथे ही दिन हठपूर्वक यह कह कर कि मुझे बहुमूल्य इज्जत मिल गई अब राज्य तो फिर से आप ही ग्रहण करें राज वापस लौटाया। महाराणा सांगा ने भी अपने दिये हुए राज्य को वापस बहुत संकोच और बेमन से ग्रहण किया। कई लोग यह भी कहते हैं कि इसी दु:ख से महाराणा ने छह माह की अवधि में अपना शरीर त्याग दिया।

पकरि मुदाफर तब सुपहु, आतहि अर्जुन उत्त।
पटा द्वि गुन दै सिसुपनहि, किय सुर्जन जस जुत्त ॥४३॥
डुंगरपुर राउल उदय, माहप कुल सिरमोर।
रान बंधु गुरु याहि रन, गिरयो स्वजय जस गोर ॥४४॥
दुव हुव राउल उदय सुव, जेठो पृथ्वीराज।
तास अनुज जगमाल तिम, जस पट तनन बिजाज ॥४५॥
पित्थल हुव गिरिपुर सुपहु, जिहिं कनिष्ट जगमाल।
इक बग्गड़ लहि सम भयउ, बनि प्रभु बंसबहाल ॥४६॥
अज्ज भ्रात अर्जुन उडन, सुनि रविमल्ल नरेस।
सुर्जन मुख अग्रज सिसुन, बुल्लन बिमन बिसेस ॥४७॥
इम पठयो हड्डुन अधिप, प्रजावतिन प्रति पत्र।
मम अपजस अब मेटिये, आइ ससिसु तुम अत्र ॥४८॥

महाराणा ने जब मुदाफर को बंदी बनाया इस अवसर पर हाड़ा अर्जुन का पुत्र आया उसे महाराणा ने दुगुना पट्टा अर्थात तेरह हजार की जागीर दे कर बाल्यावस्था में ही उसे यश युक्त बनाया। माहप कुल का सिरमोर डूंगरपुर का महारावल उदयसिंह जो महाराणा का बड़ा भाई (डूंगरपुर वाले

बड़े भाई माहप के वंश के और चित्तौड़गढ़ के महाराणा उससे छोटे राहप के वंशज के होने के अर्थ में) था। इस युद्ध में वीरता पूर्वक लड़ता हुआ उज्जवल सुयश कमा कर मारा गया। इस महारावल उदयसिंह के दो पुत्र हुए। उनमें से पाटवी पृथ्वीराज था और छोटा भाई जगमाल था वह भी यशस्वी था। महारावल पिता की मृत्यु के बाद पृथ्वीराज तो डूंगरपुर का उत्तराधिकारी होने से राजा बना और छोटे भाई जगमाल ने उतना ही बड़ा बागड़ प्रदेश अपने आधिपत्य में ले कर बांसवाड़ा की राजगद्दी संभाली। इधर बूँदी के राजा हाड़ा सूर्यमल ने जब यह सुना कि उसका उत्तम बंधु अर्जुन बारूदी विस्फोट में मारा गया तब उसने उदास हो कर उसके पुत्र सुर्जन आदि सभी बालकों को बूँदी बुला लेने की सोची। यह सोच कर राजा ने अपनी ओर से पत्र लिख कर चित्तौड़गढ़ अपनी भाभियों से निवेदन किया कि अब आप लोग बच्चों सहित बूँदी लौट आइये जिससे मेरा अपयश समाप्त हो।

युग्मम्

चहि अर्जुन पत्तिन चउन, आवन किय आरंभ।
हठि रक्खे कहि रान व्है, दृढ जातहि मम दंभ॥४९॥

इक्क तदपि तब जयवत्तिय, इष्ट सपथ अनुसार।
सिक्ख सहित लै सुर्जन हि, आई स्वसुर अगार॥५०॥

महिप जाइ तिनके समुह, अति मह सह गृह आनि।
जंपिय ज्येष्ट प्रजावतिहिं, प्रसू प्रतिम सुत जानि॥५१॥

सुर्जन सह आये सदन, अनुकंपा अति एह।
जगमुख करि कुलपति कुजस, गदत बंधु नरगेह॥५२॥

पजा सहंस पंचास को, हो नरबद बस हंत।
पायउ भ्रात तितोहि पुनि, सह पट्टनि बिलसंत॥५३॥

पत्र मिलते ही अर्जुन हाड़ा की चारों पत्नियाँ बूँदी आने को रवाना हुई पर महाराणा ने उन्हें हठपूर्वक रोक लिया कि इससे मेरी बात चली जाएगी।

तब उनमें से एक जयवती अपने इष्ट की सौगंधपूर्वक यह कहा कि मैं वापस आ जाऊँगी पर हे महाराणा! हमें जाने से न रोकें। इस तरह राणा सांगा से इजाजत ले कर पुत्र अर्जुन सहित वह अपने श्वसुर के घर अर्थात् बूँदी आई। राजा सूर्यमल ने अपनी भाभी के सम्मुख जा कर पूरे सम्मान सहित स्वागत किया और उसे अपने घर लाया। फिर राजा ने चित्तोड़गढ़ जा कर बड़ी भाभी प्रजावती जी से अर्ज किया कि हे भाभी! आप बड़ी भाभी होने से मेरी माता समान है। मुझे अपना पुत्र समझ कर चलिये। इसके बाद राजा सूर्यमल्ल उन सभी को बूँदी ले कर आया। यहाँ आ कर राजा ने कहलाया कि आप मुझ पर अनुकंपा कर सुर्जन सहित पधार गए इससे अब यह जगत मुझे यह अपयश नहीं देगा कि अच्छे राजा बने फिरते हो अपने भाई तो पराये घर में हैं। इतने पर भी खेद की बात यह रही कि नरबद हाड़ा के वंशजों के पास पहले ही पचास हजार की आमदनी वाली जागीर थी और उतनी ही आमदनी की जागीर अपने भाइयों के लिए उस राजा ने बहाल रखी।

भ्रातृज खट इक भ्रातृजा, चउ तुम सानुग चाह।
सदन प्रजावति रहत सब, बिन इते न निर्बाह॥५४॥

याहूँ तैं अब कछु अधिक, गहहु पटा रहि गेह।
किंकर सिर सासन करहु, ग्रासन करहु बिगेह॥५५॥

अग्रज को दिव बास यह, मेरी हानि महंत।
पै पोतन अग्रज प्रतिम, अब दासहि बय अंत॥५६॥

तब अक्खिय गहलोतनी, अबकै सोहं न आन।
बहुरि लाल अैहैं स्वबस, थिर कुलजन जस थान॥५७॥

उभय श्राम रहि कहि इम सु, पुनि चित्तोर प्रविष्ट।
करि अग्गैं सोंह करि, अक्खि सक्खि हरि इष्ट॥५८॥

तदपि रह्यो पहुँचात तंहं, मुद्रा अयुत महीप।
सोंह नियत चिंतन समय, देखत पथ कुलदीप॥५९॥

छह भतीजे, एक भतीजी और चारों अर्जुन हाड़ा की स्त्रियाँ जब अपने सेवकों सहित यहाँ प्रजावती के घर रहने लगे तो उनके निर्वाह के लिए जागीर की आमदनी कम पड़ने लगी। तब राजा ने कहा कि आप लोग दस

हजार की जागीर और लें क्योंकि इतना ही खर्च कम पड़ता है। अब आप इस खर्च में आराम से अपने सेवकों सहित रहिये, पराये घर में रह कर वहाँ का खाना अच्छा नहीं। बड़े भाई का स्वर्गवास हो गया यह तो मेरी बड़ी व्यक्तिगत हानि है परन्तु बालकों के लिए तो अब मैं ही बड़े भाई जैसा हूँ और उम्र पर्यंत रहूँगा। राजा के मुँह से यह सुन कर गहलोत वंशीय भाभी ने कहा कि आप हमें अब इस बार शपथ मत दिलवाना। ओ देवर जी! वापस अपने इस यशस्वी कुल स्थान पर हम अपने आप आ जाएँगी। और दो माह तक बूँदी में रह कर शपथ से बंधे वे सभी वापस चित्तौड़गढ़ लौटे। उनके चित्तौड़गढ़ चले जाने के बाद भी राजा सूर्यमल उन्हें दस हजार रुपए भिजवाता रहा और शपथ के आधार पर यह सोचते हुए कि वे लौटेंगे, वह हाड़ा वंश का दीपक उनकी राह तकता रहता।

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पू के पूर्वायणे पंचम राशौ वीतिहोत्र-चतुर्बाहुमद०बीज्यवर्णनबीजहड्डाधिराडस्थिपाल वंश्यानवंश्यसमाचरित-सूचनावसरसंख्यापनीयबूँदीनरेन्द्रनरायणदास चरमचरित्रे दिल्लीशबाबर साहाय्यसमरसमुत्कमालवगौर्जर यवनेन्द्रयुग्म चित्रकूट बूँदी विप्लव-विचारण सांग्रामिनरबद छद्मघातप्रयोगनिदाघकालकृतषट्पुरपर्वत पुटप्रान्तकियत्कालनिवासहतसिंहादिहिंस्त्रसन्दोहबूंदीप्रतिप्रस्थित स्वल्प-सैन्यहड्डा धिराजगुटिकावेधव्यापादन दृष्टतदघातपति तस्वभटाऽष्टक गुटिकाविद्धसमात्तकालायसकासूकपरिपन्थि पृष्टसमुत्फालितसप्तबूँदी-शतुरगागम्यगतसपत्नोपरिशक्तिप्रक्षेपनिंबार्द्ध बेधन पातितपरपक्षित्रय बुंदीशवीरवर्गतरुवेधान्त रशिबिकासमानीतमूर्छितमहीपमार्गमरण केदारे-श्वरसमीपचण्डा कृपापात्रदासीजनैकादश सहगमन प्राप्तपट्टकुमारसूर्यमल्ल कृतौर्द्धदैहिकहड्डे न्द्रजन्म तद्दिकवेधन यवनराज त्रय क्रमजय संहनन-संहान संवत्सूचन।

श्री वंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण की पंचम राशि में अग्निवंशी चहुवान वंशवर्णन के कारण हड्डाधिराज अस्थिपाल के वंश और वंश की शाखाओं के चरित्र की सूचना के समय प्रसिद्ध करने योग्य बूँदी नरेश

नारायणदास के अंतिम चरित्र में दिल्ली के बादशाह बाबर की युद्ध में सहायता की उत्कंठा वाले मालवा और गुजरात के दोनों बादशाहों का चित्तौड़ और बूँदी में उपद्रव का विचार करना, संग्रामसिंह के पुत्र नरबद का छलघात के प्रयोग से ग्रीष्म समय में खटकड़पुर के पर्वतों में कुछ समय निवास करके सिंहों के समूह को मारकर अल्प साथ सहित बूँदी वापस आते हुए हड्डाधिराज को गोली से मारना, उस घात को और अपने आठ वीरों को पड़े हुए देखकर गोली से घायल नारायणदास का लोह की बरछी लेकर शत्रु के पीठ पर घोड़े को उठाकर आगे घोड़े के जाने योग्य स्थल नहीं देखकर शत्रु के ऊपर बरछी चलाकर नीम के आधे वक्ष को बेधना, तीन शत्रुओं को पटककर बूँदीश के वीरवर्ग से वक्ष को बेधे बाद पालकी में लाये हुए मूर्छित राजा का मार्ग में मरना, केदारेश्वर के समीप चिता पर चढ़े हुए चहुवान राजा के साथ राठौड़ी को छोड़कर तीन रानियों, एक पासवान और ग्यारह कृपापात्र दासियों का सती होना, राजपाट पाकर कुमार सूर्यमल्ल के उत्तर क्रिया किये हुए हड्डेन्द्र का जन्म, इक्के को मारना, तीनों बादशाहों को जीतना और शरीर छोड़ने के सम्वत् की सूचना करना।

श्रुतमत्सरिमहेन्द्र मरणनिर्महनिकायशोकशिथिलराणासंग्रामसिंह दिल्लीशजयसंश्रुतद्वि गुणाब्दिकोपदोपेतनवनृपपट्टोपविशनसम्बन्धिसिंधुरा दिसत्कृतिसम्भारसम्प्रेषण सद्योवप्तृवैरवालनवर्मितवरुथमहीप हेन्द्रमि-हिरमल्ल स्वसाध्वससारंगपुरपलायितसांग्रामिनरबद सर्वस्वसमादान नारबदार्जुन विज्ञप्तिबीजस नाभिसपत्नस्त्रीजनादिनिघसनिर्वाह-निमित्तपत्तैक पद्पुरपत्तनप्रयामतश्रुतशरणीकृतप्रोक्तपुरम्लेच्छमित्रवर्मित बरुथिनी विशिष्ट प्रस्थोय परिसर प्राप्त पृथ्वीमिहिरमल्ल म्लेच्छमित्र-मित्रमार्गण सूचितस्वप्राणसार्थशग्णसमागनसुहत्कसमभिषणितशारंग रेश-म्ले च्छमखनप्रधनप्रवर्तन नारबदपूर्णमल्ल हतहययवनस्व सखिसह-कान्दिशीभवन स्वप्रवीरपंचदश पतनप्रकुपितपाति तपरिपन्थिषद्पंचाश त्कबाणविद्धमर्ममूढत्वपरभ्रमपातितैक स्वबन्धुकनृपा दिबुन्दीवीरप्राप्त-प्रहारसंख्यासूचन विप्लुतवैरिविभववसुधेशसदनागमसमयपौनः पुन्य-

प्रेषितपत्रराणासंग्राम सिंहपुनरर्जुना व्हान दिल्लीशसम्मतिसज्जमत्सरिराज मरणमुदितसंकेतितसमयसमागतवेष्टितचित्रकूटदुर्गश्रामषट्कनि श्चित-नालीयंत्रकलहाकिञ्चित्करत्वमालव गौर्जर यवनेशयुग्म दुर्गपीठाधो-भूमिभागप्रच्छन्ननिमखातसाधितसंधिलापूरितबारूदकुतूपूरप्रज्वालनत-द्वैगवेपमानक्षौमोपरिशिलास्थितस्त्रंसितसन्ध्या जपस्त्रकनिष्कासितकृपाण-नारबदाऽर्जुन कीलालीढसंहनन ह्वान हड्डुहानिमहामर्षोत्कृष्टकौक्षेयकपति-तप्राकारपथप्रस्थितमण्डलाग्र मंदर मथितम्लेच्छ महोदधि प्रद्रावितगौर्जरा भिमानिमहमूद निगडितमालवराजम्लेच्छमुदाफरनिर्घोषितनव जयनिश्शाण राणा संग्रामसिंहयवनयुग कीलनकिंवदंतीबाहुल्य विचिकित्साविख्यापन।

चहुवान राजा के मरने को सुन कर अपने घर को उत्सव से शून्य करके शोक में शिथिल राणा संग्रामसिंह का दिल्लीश के विजय आदि गुणों को [illegible]कर शालियाना दुगुने नजराने के साथ नवीन राजा के पाट बैठने संबंधित हाथी आदि सत्कार की सामग्री भेजना, तुरन्त पिता का बैर लेने के लिए सेना को सजाकर भूपति सूर्यमल्ल का अपने भय से सारंगपुर भागे हुए संग्रामसिंह के पुत्र नरबद का सर्वस्व लेना, नरबद के पुत्र अर्जुन की अरज के कारण अपने सपिण्ड शत्रु के स्त्री जन आदि के भोजन के निर्वाह के कारण एक खटकड़पुर रखकर वापस आते हुए मार्ग में शत्रु के समीप पहुँचकर सूर्यमल्ल का म्लेच्छ के मित्र और अपने शत्रु को माँगना, अपने मित्र और शरणागत को प्राण के साथ देने की सूचना कर युद्ध यात्रा करने वाले सारंगपुर के पति म्लेच्छ मखन खां का युद्ध में प्रवृत्त होना, नरबद के पुत्र पूर्णमल्ल से मरे हुए घोड़े वाले यवन का अपना मित्र सहित भागना, अपने पन्द्रह वीरों के पड़ने से कोप करके छप्पन शत्रुओं को गिराकर बाण के मर्म में लगने से मूढ होने के कारण शत्रु के भ्रम से अपने एक भाई को गिराकर राजा आदि बूँदी के वीरों के घायलों की संख्या की सूचना करना, शत्रु के वैभव को लूट कर राजा के घर आने के समय बारंबार पत्र भेजकर राणा संग्रामसिंह का फिर से अर्जुन को बुलाना, दिल्ली के बादशाह की सलाह से समझकर चहुवान राजा के मरने से प्रसन्न होकर संकेत किये हुए समय पर आकर चित्तौड़गढ़ को घेरकर छह मास तक तोपों के युद्ध से कुछ भी नहीं कर सकने पर मालवा

और गुजरात के बादशाहों का गढ़ की नींव में चुपके से खड्डा खोदकर सुरंग में बारूद के पीपे जलाने के वेग से उड़ती हुई बुरज के ऊपर शिला पर बैठे हुए संध्या करते जप की माला गिरजाने पर तलवार की नोक निकालकर नरबद के पुत्र अर्जुन के शरीर का अग्नि ज्वाला में नाश होना, हाड़ा की हानि के क्रोध से श्रेष्ठ तलवारें निकाल कर गिरे हुए कोट के मार्ग से निकलकर खड्ग रूपी मन्दराचल से म्लेच्छ रूपी समुद्र को मथकर गुजरात का अभिमान छोड़े हुए महमूद को भगाकर, मालवा के बादशाह मुदाफर को कैद करके नवीन विजय के नगाड़े बजवाने वाले राणा संग्रामसिंह का दोनों यवनों को कैद करने की दन्तकथा की अधिकता में संदेह की सूचना करना।

समात्तसाहसस्वापतेयमुक्तमण्डूराजमुदाफरराणास्वविजय-यशोविस्तारकसुकविसंघातविविधोत्सर्जनसमय महिकारद्वारहठहरिदा-सार्थसप्रसभचित्रकूटराज्यदान सप्रकीर्णका ऽऽतपत्र दिनत्रय कृतराज्य-स्वप्रासभ्यसमात्ततदर्थस्वा पतेयद्वारहठहरिदासपुनस्तद्राज्यप्रत्यर्पण राणानारबदाऽर्जुन ज्येष्ठतनूजबाल्यवयस्कसुर्जना ऽर्थपूर्वद्वि गुणआ ब्दिकबलिवसुकपट्टप्रदान मुदाफर ग्रहणैतद्रण राणाकुलज्येष्ठपरपुरुष-माहात्म्यराज बीज्यमुख्यगान्धारजनपद जनेशगिरिपुराधिराजराजकुलो-दयसिंह चारभटतल्पस्वपनसूचन तत्पट्टपपुत्रपृथ्वीराजा नुजसमाक्रान्त-स्वाग्रहजसीमसंहि तसमानदेशकृतवंशकुल्यापुरस्कन्धावारप्राप्तराज-कुलोपटंकजगमाल भ्रातृभिन्नभूपत्वभास्यमानभाविताभणन श्रुतार्जुन-संस्थानशुक्समाकुलप्रजावतीचतुष्क पार्श्वप्रेषितपत्रहड्डाधिराजसूर्यमल्ल समाहूतसुर्जना दिसर्वस्वबन्धुराणारोधन सशपथप्रतिजातप्रत्यागम-राणासम्मतिसानुकूलस्वमुख्यसूनुसुर्जन समुपेतवत्पृष्टप्रसूगु हिल्लपुत्री-जयवती श्वशुरंगहागमन समभिगमनतत्कृतिसहसदनसमातीतप्रसूप्रति-मप्रजावतीप्रतिप्रतिश्रुतपूर्वा धिकपट्टार्पणनरेन्द्रनिलयनिवासानुष्ठा-नप्रार्थन प्रोक्तसनिदानपुनरागममासयुग कृतश्वाशुर्यनिवासमुख्यसूनु समुपेतगुहिल्लपुत्री पुनश्चित्रकूटागमन नरेन्द्रतन्निर्वाहार्थप्रत्यब्दमुद्रायुत तत्पार्श्वप्रेषणप्रख्यान मेकत्रिंशत्तमो मयूखः ॥ ३१ ॥ आदिताऽष्ट-सप्तत्युत्तरैकशततमः ॥१७८॥

बादशाह को पकड़कर धन लेकर मांडू के राजा मुदाफर को छोड़ने

वाले राणा के विजय का यश फैलाने वाले कवियों के समूह को नाना प्रकार के दान देने के समय महियारिया चारण हरिदास को हठ पूर्वक चित्तौड़ का राज्य देना, चमर और छत्र के साथ तीन दिन राज्य करके उसकी कीमत का धन लेकर चारण हरिदास का हठपूर्वक उस राज्य को लौटाना, राणा का नरबद के पुत्र अर्जुन के बड़े पुत्र सुर्जन को बालक अवस्था में पहले से सालाना दुगुनी आमदनी वाले धन का पट्टा देना, मुदाफर के पकड़े जाने वाले इस युद्ध में पूर्व पुरुषों के माहात्म्य के कारण वंश में बड़े बागड़ देश के नरेश डूंगरपुर के राउल उदयसिंह का वीरशय्या में सोने की सूचना करना, उसके पाटवी पुत्र पृथ्वीराज के छोटे भाई जगमाल का अपने बड़े भाई की सीमा को घेरकर बराबर का देश लेकर बांसबहाले (बांसवाड़ा) में राजधानी करके रावल पदवी लेकर भाई से जुदा राजापन से शोभायमान होने की आने वाले समय में सूचना करना, अर्जुन के उड़कर नाश होने को सुनकर शोक में व्याकुल होकर चारों भोजाइयों के पास पत्र भेजकर हड्डाधिराज सूर्यमल्ल के बुलाये हुए सुर्जन आदि सब भाईयों को राणा का रोकना, शपथपूर्वक आने की प्रतिज्ञा करके राणा की सलाह से प्रसन्न होकर अपने पाटवी पुत्र सुर्जन सहित उसकी बड़ी माता गुहिलपुत्री जयवती का ससुर के घर आना, सन्मुख जाकर उसको घर में लाकर माता के समान भाभी को पहिले से अधिक पट्टा देना सुनाकर राजा का घर में निवास करने की प्रार्थना करना, कारण सहित कथन करके फिर आना कहकर दो मास ससुर के घर निवास करके बड़े पुत्र सहित गुहिलपुत्री का फिर चित्तौड़ जाना, राजा का उसके विवाह के लिये उसके पास दस हजार रुपए भेजने की सूचना करने का इकतीसवाँ मयूख समाप्त हुआ। और आदि से एक सौ अठहत्तर मयूख हुए।

प्रायो ब्रजदेशीय प्राकृत मिश्रित भाषा

दोहा

सर बसु तिथिमित तदनु सक, जेठ असित दल जात।
तजिय रान संग्राम तनु, मिच्छन अभय मनात ॥१॥
मीरांपति पुब्बहि मस्यो, कह्यो भोज कुमरेस।
रह्यो जनक गद्दिय रतन, यातैं तदनुज एस ॥२॥

लहि गद्दिय किय रान लहु, पुद्गल दुव इक प्रान।
पूरबिया कुट्ठारपति, पूरनमल्ल प्रधान॥३॥
जनक तास ढक्कू सु जस, बट्टि सभा बुंदीस।
अट्ठ भाग किय अंग के, सठ छुवात तृन सीस॥४॥
पट्ट रहिय संग्राम पहु, जोलों दाव न जानि।
बैर बहोरन बप्प को, पूरन अब सु प्रमानि॥५॥

विक्रम संवत् के वर्ष पंद्रह सौ पचासी के जेठ माह के कृष्ण पक्ष के आधा बीतने के समय महाराणा संग्रामसिंह ने अपनी देह त्यागी तब म्लेच्छों ने अपनी अभय मनाई। मीरां बाई के पति कुमार भोजराज की मृत्यु तो पहले ही हो चुकी थी इसलिए अपने पिता की गद्दी पर उससे छोटा भाई रत्नसिंह बैठा और महाराणा बनते ही वह पूरबिया चहुवान पूर्णमल के साथ इस तरह रहने लगा जैसे दो शरीर पर एक प्राण हों। कोठारिया नामक पुर का स्वामी वह चहुवान महाराणा के प्रधान सलाहकारों में हो गया। इसके पिता ढक्कू चहुवान को बूँदी के राजा नारायणदास ने अपने सिर पर राजसभा के मध्य तिनका रखने के अपराध में मारा था। राजा ने अपनी तलवार के एक प्रहार से उसके आठ टुकड़े कर डाले थे। इसलिए जब तक महाराणा संग्रामसिंह जीवित रहे तब.तक इस चहुवान की दाल न गली पर अब उनकी मृत्यु के बाद स्थितियाँ अपने पक्ष की देख कर पूर्णमल ने अपने पिता का वैर लेने की मन में ठानी।

छिद्र लखत कछु सद्धि छल, मारन नृप रविमल्ल।
हन्यों जनक न सक्यो सु हनि, हेरत अब खिन हल्ल॥६॥
आत दसेरा बिसद इम, आब्दिक जो उपहार।
सबहि मेटि दु हय रु बसन, प्रहित किन्न नव प्यार॥७॥
नृप रक्खन लग्गो सु नन, प्रसू कहिय तब पुत्त।
भानेज न अैसी भनैं, यह किय ढक्कू उत्त॥८॥
जेठी बहिनी जानतहि, सुत दैहैं समुझाइ।
यातैं सुत रक्खहु यह, पुनि सु रहहिं पछिताइ॥९॥

कथित प्रसू रट्ठोरि को, अधिप करि सु उपहार।
रक्खिय तउ रान सु रतन, कृतघन हुव अघकार॥१०॥

अवसर की तलाश में कपटपूर्वक उसने अपने सेवक भेदिये वहाँ बूँदी भेजे जिससे कि राजा सूर्यमल को मारा जा सके। अपने पिता को मारने वालों को वह वापस नहीं मार सकने के कारण अब वह हर समय अवसर की तलाश में रहने लगा। इसी बीच दशहरे का पर्व आया और यह प्रथानुसार प्रतिवर्ष बूँदी खिराज भिजवाने का समय था। पूर्णमल चहुवान ने महाराणा रत्नसिंह से कह कर सारी उपहार सामग्री रोक दी और मात्र दो घोड़े और सिरोपाव भिजवाए। नये बने महाराणा का स्नेह बूँदी के प्रति इस प्रकार प्रकट हुआ। जब महाराणा के लोग इस अल्प उपहार के साथ बूँदी पहुँचे तो राजा सूर्यमल उसे अस्वीकार करने लगा तब उसकी माता ने कहा बेटा! यह हमारे भानजे का कृत्य नहीं निश्चय ही मुझे यह उस ढक्कू के पुत्र की करामात लगती है। मेरी बड़ी बहन को जब यह पता चलेगा तो वह अपने बेटे (महाराणा) को समझा देगी। इसलिए अभी तो इस सामग्री को रख ले। कहीं तुझे बाद में पछताना न पड़े। अपनी मां राठौड़ वंशीय रानी का कहा मान कर राजा ने उस अहसानफरामोश (कृतघ्न) राणा रत्नसिंह की भेंट को स्वीकार किया।

प्रसू थना बोधिय तदपि, भनि तासन हुव भुल्लि।
रिपु भावहिं तिहिं रक्खयो, खलपन प्रकटन ग्वुल्लि॥११॥

मालव गुज्जर प्रथम मृध, हनन छत्र हड्डेस।
किय ढक्कूसुत जो कपट, सो लखि त्वरित असेस॥१२॥

नरबद सुत पूरन निपुन पूरन को वह पाप।
सब निवेदि नारायन सु, अवहित किय जब आप॥१३॥

युग्मम्

सोहि गिनत तबतैं असह, पूरन मन घन पीर।
पठये मारन पूरन हिं, बुंदिय अब दुव बीर॥१४॥

मग हिंडोलिय जात मिलि, घल्लि तुपक धनु घात।
दुरे भजत निस थकि दुव हि, प्रविसि सक्रगढ प्रात॥१५॥

नृप के चर अद्भुत निपुन, वाही अह के अंत।
गदिय सुद्धि दुरि सकर्‌गढ़, है कृतघ्न दुव हंत॥१६॥

इसी समय माता धन्ना ने समझाया तब राजा ने कहा कि उससे भूल हो गई। इसके बाद राजा ने चाहे प्रकट में नहीं जताया पर अपने मन में चित्तौड़गढ़ के प्रति शत्रु भाव ही रखा। मांडू पति और गुजरात के शाहों से हुए युद्ध के बाद गुप्त रूप से हाड़ा राजा को मारने की योजना ढक्कू के बेटे पूर्णमल चहुवान ने बनाई थी उसे जान कर शीघ्र ही नरबद के चतुर पुत्र हाड़ा पूर्णमल ने आ कर राजा नारायणदास को पहले ही सावधान कर दिया कि वह पापी कोठारिया वाला पूर्णमल आपके साथ घात करेगा। इस बात को तब से ही असह्य समझ कर कोठारिया वाला पूर्णमल मन में पीड़ा पाले हुए है। उसने अभी इस समय अच्छा अवसर देख कर अपने दो वीर योद्धाओं को बूँदी पूर्णमल हाड़ा को मारने के लिए भेजा। उन्हें हिंडोली के रास्ते पर जाता हुआ हाड़ा पूर्णमल नजर आ गया। उन दोनों ने छिप कर उस पर बन्दूक दाग दी। भाग्य से पूर्णमल बच गया और वे दोनों भाग खड़े हुए। वे दोनों मेवाड़ी घातक रात भर जब भागते थक गये तो प्रातःकाल उन्होंने सक्रगढ़ में जाकर शरण ली। वे वहाँ जा छिपे हैं यह बात बूँदी के अद्भुत रूप से चतुर हलकारों से छिपी न रही। उस दिन के अस्त होने तक उन्होंनें यह खबर राजा को जा सुनाई कि वे दोनों वध योग्य आपके अपराधी सक्रगढ़ में छिपे हुए हैं।

इती सुनत नृप टारि अर, इक्क सहंस असवार।
ताही निसा के अंत तंहं, पहुंच्यो बरन प्रसार॥१७॥

पठई कहि अध्यक्ष प्रति, पहिलैं घरबिधि पूरि।
हित बुंदिय चित्तोर है, सो पिक्खहु जो सूरि॥१८॥

इहां उभय दुरिबे अधम, पूरन हनन प्रयोग।
करि भज्जत आये कुहक, भोगन निजकृत भोग॥१९॥

ते दुव देहु गहाइ तुम, इक पन लखि दुहु ओर।
नतो रक्खि पबिमय निलय, जय सय मंडहु जोर॥२०॥

हाकि तंहं पहिलो हुतो, नवमंत्री बस नांहिं।
जिहिं भेजे निगडित जुग हि, महिप हड्ड दल मांहिं॥२१॥

इक्क कढ्यो पडिहार अरु, सोढा अपर सु गूढ।
पठये दुव चित्तोर पहु, महा निगड गृह मूढ॥२२॥

यह सुनते ही राजा ने अपने चुनिंदा एक हजार सवार छाँटे और शीघ्र ही उनके साथ सायंकाल से पहले जा सक्रगढ़ को चारों ओर से घेर लिया। राजा ने अपने दूत भेज कर वहाँ के हाकिम से कहलवाया कि अभी तो घर की बात समझ कर यह संदेश ही भेजा है कि आप समझदार हैं आप चित्तौड़गढ़ और बूँदी दोनों राज्यों का हित सोचेंगे और पूर्णमल हाड़ा पर हमला करने वाले यहाँ छिपे हुए दोनों अपराधियों को हमारे हवाले कर देंगे। आप हमारे प्रति अनाधिकार अपराध कर भाग आये उन भगोड़ों को अपने किये की सजा पाने से नहीं रोकोगे। इसलिए आप हमें उन्हें सौंप कर दो में से एक बात चुनेंगे या तो आप वज्रमय घर को सुरक्षित रख लें या फिर शस्त्र हाथों में उठा कर हमारा मुकाबला करें। सक्रगढ़ पर पहले वाला हाकिम था जो महाराणा के उस नये सलाहकार (चहुवान) के वश में नहीं था इसलिए उसने उन दोनों अपराधियों को हाथ बांध कर हाड़ाओं के इस दल के हवाले कर दिया। इन दोनों मेवाड़ी घातकों में एक पड़िहार था और दूसरा सोढा जाति का क्षत्रिय था। बूँदी के राजा ने उन दोनों को मूर्खता से बंदी बना कर चित्तौड़गढ़ भेज दिया ताकि उन्हें उपयुक्त सजा मिल सके।

जानैं रान न तस जननि, तिम ढक्कूसुत तक्कि।
दिय छुराई घातक दुव हि, छमपन मन घन छक्कि॥२३॥

इनहिं सक्रगढ सचिव इत, जुत दल गोठि जिमाइ।
सोपायन पठये सदन, पूरन भय कछु पाइ॥२४॥

सुहि उदंत पूरन सुनत, वह पटु सचिव उतारि।
स्व इतर पठयो सक्रगढ, धक बुंदिय सिर धारि॥२५॥

गदिय रानप्रति सो गुनी, हित तजि हड्डुन हाय।
अब किय टींकादोर इत, बिप्लव पूरन बिधाय॥२६॥

रानहु बालिस मानि ऋत उपालंभ पठयोहि।
कछु अंतर लिपि पत्र करि, लघु अरिभाव लयोहि॥२७॥

ढक्कू चहुवान के पुत्र पूर्णमल ने ऐसी व्यवस्था की कि इस बात की

भनक महाराणा और उनकी माता को नहीं लगे और उसने उन दोनों (अपने ही भेजे वीरों) को अपने समर्थ रुतबे से छुड़वा दिया। इसी चहुवान ने सक्रगढ़ के हाकिम के भेजे दल को अच्छा भोजन करवाया और इन्हीं आदमियों को डर कर उपहार दिये जिससे बात दबी रह जाए। पूर्णमल ने यह सब देख कर बूँदी पर कुपित हो कर तुरन्त ही उस चतुर हाकिम को सक्रगढ़ से हटा दिया और अपने आदमी को वहाँ तैनात किया। यही नहीं बूँदी के हाड़ाओं के विरुद्ध कई बातें झूठमूठ ही महाराणा से जा कही और कहा कि नये राजा के बनते ही उसने टीका दौड़ (राज गद्दी पर बैठते ही शत्रु देश पर धावा करे उसे टीकादौड़ कहते हैं) में अपने इलाकों में लूटपाट मचा रखी है। मूर्ख महाराणा रत्नसिंह ने भी उसकी बातों को सत्य मान कर बूँदी को उलहाना भरा पत्र भिजवाया। इस पत्र की इबारत में हल्का हल्का शत्रुता का भाव भी झलकता था।

निज मातहिं रविमल्ल नृप, दिन्नों छद सु दिखाइ।
खेतू पूरन ओर खिजि, हेतू पन करि हाइ॥२८॥

भगिनी अरु भानेज कै, पठयो सुहि छद पास।
दयो न पहुँचन जो दलहु, पूरन बैर प्रकास॥२९॥

पत्र जब बूँदी पहुँचा तो राजा सूर्यमल ने पढ़ कर उसे अपनी माता को दिखाया। खेतू रानी से पूर्णमल चहुवान के इस कृत्य को भांप कर अपनी बहन और भानजे (महाराणा) को प्रत्युत्तर लिखवा कर चित्तौड़गढ़ भिजवाया पर खेद है कि यह पत्र भी पूर्णमल के हाथ पड़ गया और उसने पत्र महाराणा और रानी माँ तक नहीं पहुँचने दिया जिससे कि वेर भाव बढ़े कम न हो।

दुव सोदर बिक्रम उदय, बदि बूंदियपति बंधु।
भ्रातन बिच पटकी भिदा, अधिपहिं बोरन अंधु॥३०॥

अनुजन कों धीजैं न इम, जामिज हड्ड न जानि।
पूरन बस हुव रान पहु, अधमभाव निज आनि॥३१॥

इत बुंदिय कारे उरग, मिहिरमल्ल महिपाल।
गिनि अंतर चित्तोरगढ़, जानि लयो रिपु जाल॥३२॥

जास जहीरुद्दीन जग, अपर बिदित अभिधान।
इत दिल्लिय बढिगो अतुल, सो बाबर सुलतान॥३३॥

कहुं अज्ज रु अफगान कहुं, पाये हुकम प्रतीप।
बस किन्नों सुहि नियति बल, दिल्ली मंडल दीप॥३४॥

इधर महाराणा रत्नसिंह को उल्टी पाटी पढ़ाते हुए पूर्णमल चहुवान ने कहा कि ये आपके दोनों भाई विक्रमसिंह और उदयसिंह तो बूँदी के राजा सूर्यमल के भाई हैं इसलिए उसका अधिक पक्ष लेंगे। इस प्रकार पूर्णमल ने महाराणा को सिखा कर इन दोनों भाइयों को कुएँ में गिरवाने का षड़यंत्र रचा। कान भर-भर कर महाराणा का पूरा विश्वास अपने छोटे भाइयों पर से उठवा दिया कि ये हाड़ाओं के भानजे हैं और भोला महाराणा भी उसकी बातों में आ कर अपने भाइयों के प्रति अधम भाव रखने लगा। इधर बूँदी में काले सर्प के अंश वाले राजा सूर्यमल ने भी चित्तौड़गढ़ के प्रति आशंका का भाव रखना आरंभ किया यह जान कर कि वे शत्रुता का जाल रच रहे हैं। उधर दिल्ली के बादशाह मुगल बाबर जिसका अवर नाम जहीरुद्दीन भी था का प्रताप और बल अतुलनीय ढंग से बढ़ गया। उसने इस समय कहीं आर्य और कहीं पर अफगानों को अपनी हुक्म अदूली करते पाया तो तुरन्त अपनी समर्थ सेना भेज कर उन्हें दबा कर अपना मातहत बनाया। इस प्रकार दिल्ली मंडल के इस दीपक की ज्योति बढ़ने लगी।

इत बिहार सूबा अधिप, सेरखान बल मज्जि।
देस बंग रुहितास दुव, गहि रु बढ्यो जय गज्जि॥३५॥

पेसावर धर जिहिं प्रभव, कहत सूर जिहिं कोम।
सेरखान सो इहिं समय, जबर पर्‍यो जय जोम॥३६॥

जित्तन तिहिं बाबर जबहिं, बल सजि कियउ बिचार।
जाकै तबहिं असाध्य ज्वर, प्रकट्यो जीवन पार॥३७॥

संबत खट बसु तिथि समय, कलि पहु बिक्रम केर।
रिपु जित्तन मन होंस रहि, बाबर दिय तजि बेर॥३८॥

निधि गुन तिथि संबत जनम, अंदजान लहि एह।
बरस सत्त चालीस बय, दिल्लिय हुव बिनु देह॥३९॥

निज अवसर लहि तस तनय, निपुन हुमांयों नाम।
तब बैठो दिल्लिय तखत, धरत छत्र बल धाम॥४०॥
मुलक प्रदिष्ट बिहार मुख, सूबा जित्तन सोधि।
सज्जत हुव सोपै स्वबल, रिपुषण जुतन बिरोधि॥४१॥
अनुजन जुत याको अनुज, निडर कामरां नाम।
जिहिं काबल पंजाब जुग, दब्बिय बल उद्दाम॥४२॥
मुरि अग्रज सन कामरां, भयो साह यह भिन्न।
तातैं प्रथम बिहार तजि, द्रुत प्रयान उत दिन्न॥४३॥

इसी समय में बिहार सूबा के अधिपति शेरखान ने अपनी सेना को सज्जित कर बंगाल और रुहितास दोनों प्रांतों पर अपना अधिकार कर लिया और वह अपनी विजय पर गर्जना करता हुआ बलशाली बन कर अपने आप को शाह समझने लगा। वह पेशावर की भूमि में उत्पन्न एक ऐसे खानदान का था जिसे बहादुर कहा जाता था। वही शेरखान अभी विजय पर विजय प्राप्त कर विजय के दर्प से भरा था। इसी मानसिकता में उसने बाबर को हराने के लिए अपनी सेना सजाई पर इसी समय असाध्य ज्वर से ग्रस्त हो कर बाबर बीमार हो गया। कलियुग के राजा विक्रम के संवत् के वर्ष पन्द्रह सौ छियासी में बाबर ने अपनी देह त्याग दी। उसे जीतने की चाह उसके शत्रुओं के मन में ही रह गई। विक्रम संवत् के वर्ष पन्द्रह सौ उनचालीस में अंदजान क्षेत्र में जन्मा बाबर अपनी सैंतालीस वर्ष की वय में दिल्ली को सूना कर गया। अपने पिता की मृत्यु के बाद उसका चतुर पुत्र हुमायूँ नामक मुगल दिल्ली के तख्त पर बैठा। दिल्ली की बादशाहत लेते ही इस बलवान मुगल ने बिहार आदि प्रान्तों को फतह करने का निश्चय किया। इसके लिए वह अपनी सेना को सज्जित कर शत्रुओं को हराने के लिए रवाना हुआ पर इसी बीच इसके छोटे भाइयों को साथ ले कर एक छोटा भाई कामरान पंजाब और काबुल के सूबों को अपने बल पर जीत कर निरंकुश हो उठा। इसलिए हुमायूं ने पहले बिहार की ओर न जा कर अपने विरुद्ध हुए कामरान को सबक सिखाने के लिए उधर शीघ्र ही प्रयाण किया।

पाइ बिजय बाबर प्रथम, हन्यो जु इब्राहीम।
सुतको सुत तस इहिं समय, सुन्यों सु दब्बत सीम ॥४४॥

पंजाब हु इम तजि प्रथम, करि लोदी सिर कुच्च।
जीत्यो समर पठान जो अप्प मुगल बल उच्च ॥४५॥

गिरि रैवत जूनांगढ जु, कह्यो नृपति केवट्ट।
सो लोदी तस गय सरन, बिखम दसा भजि बट्ट ॥४६॥

गदत किते रैवत गये, याके संगिय ओर।
सरबहिया रक्खे सरन, जुद्ध करन अति जोर ॥४७॥

पूर्व में बाबर ने जिस इब्राहीम को मार कर विजय प्राप्त की थी उसके बेटे का बेटा अर्थात् पौत्र इन दिनों वापस सिरजोर हो कर दिल्ली के इलाके दबाने लगा था। जब यह समाचार हुमायू को मिला तो उसने कामरान के विरुद्ध पंजाब की ओर जाना स्थगित कर दिया और पहले उसने इस लोदी पर आक्रमण करना उपयुक्त समझा। मुगल हुमायूँ की भारी सेना ने पठान लोदी को तुरन्त ही हरा दिया। पठान यहाँ से भाग कर रैवत गिरि जूनागढ़ के राजा कैवाट सरबहिया की शरण में चला गया। उसने दूसरी ही विषम दिशा ली। कुछ लोग कहते हैं कि इस पठान सहित और लोग भी रैवतगिरि में शरण लेने गए थे जिन्हें सरवहिया राजा ने अपने युद्ध बल के सहारे शरण दी थी।

बाबर सुत सन रन बहुन, जित्ति करन तनूजात।
अंत समर सोयो अधिप, सूरन तलप सुहात ॥४८॥

कति मत जनपद सिंधु के, साह आइ अवसान।
प्रधन हन्यों केवट्ट पहु, जुरि पहिलैं हत जान ॥४९॥

सोलह रानिन जरत सह, निट्ठिन इक्क निहोरि।
प्रसवअवधि रक्खिय पिहित कुलरक्खन बिधि कोरि ॥५०॥

बाहुज इक कुलपति बिदित, हल बसु भुग्गन हार।
देवातू कुल धर्म दृढ, चावोरा हित चार ॥५१॥

तिहिं रक्खी रानी पिहित, गर्भवती सु स्वगेह।
ताकै हुव नवघन तनय, आयैं प्रसव अनेह ॥५२॥

सुद्ध प्रसूता हुव समय, तिजहिं मृत जन मिस जारि।
तिम सिसुवारी निज यिहिं, नृप सिसु दिय निरधारि ॥५३॥

पाले तिहिं द्वै ही पृथुक, इक इक पाइ उरोज।
समय जित्ति पुनि हुव सुपहु, यह नवघन अति ओज ॥५४॥

जित तित तैं नृप बंसि जन, ब्यवहित बेस बुलाइ।
देवातुव भुव लै दई, खग्गन जवन खुलाइ ॥५५॥

मुगल बाबर के पुत्र हुमायू के साथ कर्ण सरबहिया ने युद्ध लड़ा और अन्त समय में वह रणभूमि में वीर शय्या पर सोया। कुछ लोग यह मानते हैं कि अन्त में सिंधु देश के शाह ने आ कर चढ़ाई की थी और उसने युद्ध में राजा कैवाट सरबहिया को मारा था। इस राजा के साथ इसकी सोलह रानियाँ जल मरीं थी पर एक बच रही क्योंकि गर्भवती होने के कारण लोगों ने उसे जलने से रोक दिया और उसे गुप्त रूप से एक जगह पर भिजवा दिया। जिससे वंश बचा रह सके। एक क्षत्रिय जो हल चला कर पृथ्वी से होने वाली उपज से अपना काम चलाता था। वह देवातू नामक चावड़ा शाखा का क्षत्रिय अपने धर्म का निर्वाह करने में दृढ था। उसने इस गर्भवती रानी को अपने घर पर रखा। जहाँ रानी ने समय पर नवघन नामक पुत्र को जन्म दिया। प्रसव के बाद उस रानी को मृत जान कर उन्होंने जला दिया पर इस सद्यजात शिशु को उस चावड़ा देवातू ने अपनी पुत्रवती पत्नी को सोंप दिया ताकि वह उसका भरण पोषण कर सके। चावड़ा की पत्नी ने दोनों बालकों, एक अपने पुत्र और दूसरे नवघन को अपने अलग-अलग स्तन बांट दिये अर्थात् उसने दोनों को एक एक स्तन से दूध पिला कर बड़ा किया। बाद में नवघन बड़ा हो कर प्रतापी राजा बना।

कति खोजहू लग्गो कहत, नवघन जनम निदान।
देवातू तंहं स्वसुत दिय, सारन तस प्रतिमान ॥५६॥

देवातू पीछेहुं दुख, सुनि तस तनया सील।
केहरि नवघन दोर करि, फारयो सिंधुप फील ॥५७॥

जवन सोहु साहहि बजत, जनपद सिंधु जनेस।
देवातू दुहितेस कुल, सो तंहं पत्त असेस ॥५८॥

तुन दुकाल हुव दिनन तिन, यातैं जुत परिवार।
सिंधुदेस गय बसति सह, सह गोधन संभार॥५९॥

देवातू तनया बिदित, सुनि रूप रु बय सोर।
ताहि लैन दल बेढि तिन्ह, जवनराज दिय जोर॥६०॥

भगिनी नवधन भ्रातकों, द्रुत रैवत छद दिन्न।
चढि इक्कहि बंचि सु चल्यो, कटक मेल मग किन्न॥६१॥

राजा बनने के बाद नवघन ने अपने वंश के बांधवों को जो इधर-उधर जा बसे थे उन्हें गुप्त भेस में बुला कर और उस देवातु को भी भूमि प्रदान की जो उसने यवन अधिकार से अपनी तलवार के बल पर अर्जित की थी। कई लोग कहते हैं कि यवनों द्वारा खोजने पर नवघन के जन्म का पता चल गया था पर उस देवातू चावड़ा ने नवघन की एवज में अपने पुत्र सारण को मारने के लिए उन्हें सौंप दिया था। बहुत दिनों बाद इसी देवातू चावड़ा की पुत्री के शील की रक्षा इस नवघन रूपी केसरीसिंह ने सिंधुपति रूपी हाथी को फाड़ कर की थी। सिंधु जनपद का यवन राजा उन दिनों शाह कहलाता था। इधर अकाल पड़ जाने से देवातू चावड़ा की पुत्री के पति का कुल इस जनपद में गया हुआ था। अपने यहाँ पड़े अकाल की विभीषिका का मारा यह परिवार अपना सारा गो धन ले कर वहीं बस गया था। देवातू की कन्या उन दिनों यौवनावस्था में थी और अनन्य रूपवती होने के कारण उसके रूप की चर्चा फैली हुई थी। इसे सुन कर यवन राजा सिंधुपति ने बलात् उसे अपहृत करने के लिए अपनी सेना सहित उसके गाँव को आ घेरा। इस विषम परिस्थिति में उस देवातू की कन्या ने अपने भाई नवघन को गुप्त पत्र लिख कर सहायता की गुहार की। पत्र मिलते ही वीर नवघन अकेला घोड़े पर सवार हो कर गया। यवन दल और उसका सामना मार्ग में ही हो गया।

सिंधु मुलकपति साह कों, मृध करि जातहि मारि।
सह कुटुंब आनी स्वसा, इम तस सील उबारि॥६२॥

सुनहु राम पहु तिहिं समय, बनि अैसी बहु बत्त।
सरबहियन भूपन सुजस, छादित हुव भुव छत्त॥६३॥

सिंधु जनपद के स्वामी उस यवन शाह को इस वीर ने जाते ही युद्ध में मार गिराया और अपनी बहन को उसके परिवार सहित सकुशल वहाँ से निकाल कर नवघन अपने साथ लाया। इस प्रकार नवघन ने अपनी इस बहन के शील की रक्षा की। हे राजा रामसिंह! उस कठिन समय में ऐसी और भी कई घटनाएं हुई। उन सभी में प्रजाजनों की रक्षा कर सरबहिया राजा नवघन ने प्रतिष्ठा और यश अर्जित किया।

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे पंचम राशौ वीतिहोत्र-वसुधेश्वर बीज्यवर्णनबीजहड्डाधिराडस्थिपाल वंश्यानुवंश्यविहितव्या-ख्यानावसरव्याहार्यबुन्दीवसुधावरमार्तण्डमल्ल चरित्रे राणा संग्रामसिंह तनु-त्यागशकसूचन पुरस्सरप्राप्तपट्टराणारत्नसिंहपौर्विकचाहुवाणढक्कूपुत्रपूर्ण-मल्लप्रधानप्रष्ठीकरण तत्कपटप्रपंचप्राप्प्रातीप्यप्रणष्टपितृपालितप्रत्यब्दोपदा-प्रेषणप्रतिज्ञराणाततप्रस्थापनावसरपरिधानतुरगयुग मात्रबुंदीशप्रेषण तदु-पहारातङ्गीकरणसमयज्ञापितपौर्बिक पूर्णमल्लकुकृत्यकार्मध्वजीप्रसवित्राप्र-बोधितमहीमहेन्द्रमिहिरमल्ल स्वल्पप्राभृत स्वीकरण प्राप्तसूप्रोक्तप्रमादोपा-लम्भबहिर्दर्शितबुंदीशबन्धुत्व राणारत्नसिंहद्वैधावस्थान स्मृतपूर्वप्रधन-नारबदपूर्णमल्ल प्रतिहतपितृव्यपृथ्वीशप्रथमन प्रच्छन्नप्रयत्नपरिपन्थिपौर्विक स्वाभिधानसपत्नसंजिहीर्षासावधानच्छद्मघातकबाहुजद्वय बूँदीप्रेषण, रात्रिसमयबुन्दी नगर निःसृतहिंडोलीपुरपद्माप्रस्थिपूर्णमल्ले परिप्रेरितच्छ-द्मप्रहारप्रयोगासिद्धमनोरथपलायिततद्घातकयुगततदुदन्ततत्कालविविक्त-परीक्षितसुभटसहस्त्र समुपेतप्रस्थितप्रातः समयगम्यसीससंगतवाहिनी वेष्टितशक्रदुर्गपुरप्रतिबोधिततत्तद ध्यक्षहड्डाधिराजाततायियुग्म मार्गण तत्पुराध्यक्षस्वशिबिर प्रेषितपरिचितप्रातिहार प्रामार बाहुजबन्धुद्विषद्द्वय बुन्दीश निगडयन्त्रणानुकूल्यचित्रकूटप्रेषण।

श्री वंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण की पंचम राशि में अग्निवंशी चहुवान वंश वर्णन के कारण हड्डाधिराज अस्थिपाल के वंश और वंश की कथा बताने के समय के वचनों में बूँदी भूपति सूर्यमल्ल के चरित्र में राणा संग्रामसिंह के शरीर छोड़ने के सम्वत् की सूचना के साथ उनका राजपाट पाकर राणा रत्नसिंह का पूर्बिया चहुवान ढक्कू के पुत्र पूर्णमल्ल को प्रधान

बनाने की पुष्टि करना, उसके कपट की रचना से विरुद्धता पाकर अपने मरे हुए पिता की पालना की हुई, सालाना नजराना भेजने की प्रतिज्ञा में, उसके भेजने के समय राणा का केवल वस्त्रों सहित दो घोड़ों को बूँदी भेजना, उस नजराने के अस्वीकार करने के समय पूर्बिया पूर्णमल्ल के कुकृत्य को बताने वाली राठौड़ वंशीय माता के समझाने पर महिपति सूर्यमल्ल का उस अल्प नजराने को स्वीकार करना, भूल का उपालंभ माता के कथन से पाकर बूँदीश के साथ ऊपरी मन से सम्बन्ध दिखाकर राणा रत्नसिंह का द्वैधीभाव में स्थित होना, पहिले युद्ध में नरबद के पुत्र (हाड़ा) पूर्णमल्ल का अपने काका राजा नारायणदास का (पूरबिया) पूर्णमल्ल का धोखे से मारने का प्रयत्न प्रकट करने से अपने ही नाम वाले हाड़ा पूर्णमल्ल को मारने की इच्छा में प्रवृत्त पूरबिया चहुवान पूर्णमल्ल का दो क्षत्रियों को बूँदी भेजना, रात्रि के समय बूँदी नगर से निकल कर हिंडोली पुर के मार्ग में प्रस्थान करते हुए हाड़ा पूर्णमल्ल पर छलघात की प्रेरणा करके अपने प्रयोग से मनोरथ को सिद्ध न जानकर उन घात करने वाले दोनों का गुप्त मार्ग से मेवाड़ की सीमा में शक्रगढ़ पुर में प्रवेश करना, यह वृत्तान्त दूतों के कहने से जानकर उसी समय परीक्षा किये हुए हजार वीरों सहित गुप्त प्रस्थान करके प्रभात समय जहाँ जाना था उसकी सीमा के साथ सेना से घिरे हुए शक्रगढ़ के हाकिम को समझाकर हड्डाधिराज का दोनों आततआयियों को माँगना, उस पुर के हाकिम का अपने डेरे में भेजे हुओं को पहिचानकर प्रतिहार और प्रमार दोनों शत्रु और भाई क्षत्रियों को (दोनों अग्निवंशी होने के कारण यहाँ बन्धु लिखा है।) बूंदीश का कैद करने की ताड़ना सहित चित्तौड़ भेजना।

ढक्कूजसप्रसू राणा परोक्षप्रच्छन्नप्रयत्नतद्द्वय मोचनपुरस्सर-शक्रदुर्गपुराध्यक्षदूरीकरण राणाग्रनिवेदितस्वागतसालम्बमुधाकल्पित-तत्प्रधानप्रातीप्य सहितरविमल्ल कृतशक्रदुर्गपुरलुण्टनपूर्णमल्लस्वस्वामि-बुन्दीविरोधीभावन सम्मतसत्यसचिवाक्तराणागौरवह्रासप्राकट्यपूर्व कप्रषितोपालम्भपुत्रबुंदीशनिजमातृनिवेदन प्रतिलिखितभगिनी भागि-नेयो पालम्भजननीराष्ट्रकूटीसम्मतानुसारहड्डेशचि त्रकूटपतिप्रेषित-तद्राणापत्रपूर्णमल्लगोपन विरोधनीयबुन्दीसम्बन्धवर्धितवैमनस्यवि-

योजितबन्धुबुद्धिराणाविक्रमो दय स्वानुजयुग सापत्न्यसम्भावन पृथ्वी-
शपूर्णमल्ल प्रकारप्राचुर्यपरीक्षितपूर्णमल्लपारवश्यपरिवृतपूर्वप्रीति-
पदचित्रकूटपतिपारिपन्थक्यप्रमाण जहूरुद्दीना ऽपर नाममुगलयवनेन्द्रदिल्ली
शबाबरशाह प्राप्तय तीप्यपरिभूतपरप्रान्तप्रभूतप्रतापप्रसारण पेशावरराष्ट्र-
कूलवसतिकसमाक्रान्तबङ्ग रुहितास देशद्वय बिहार जनपदसबाधिकारि-
सूरजातिययवनसेरखान प्राबल्य प्रभुतापार्थिक्यप्रतिज्ञान प्रोक्तशक-
समासमुद्भूततज्जिगीषाप्रतिष्ठा सुप्राप्तासाध्यज्वरदिल्लीश बाबर सूचित-
संवत्समयसंस्थान प्राप्तपितृपट्टहुमायों नामतत्पुत्रकाबल पंजाब प्रभूभूत
स्वानुजकामरान जयसाधनप्रस्थान।

ढक्कू के पुत्र का माता सहित राणा के परोक्ष यत्न से उन दोनों को छोड़ने से पूर्व शक्रगढ़ के हाकिम को दूर करना, राणा के आगे निवेदन किये हुए अपने आने के आधार सहित झूठी कल्पना से उस प्रधान की विरुद्धता सहित सूर्यमल्ल की की हुई शक्रगढ की लूट से पूर्णमल्ल का अपने स्वामी को बूँदी से विरुद्ध करना, सचिव का कहना सत्य मानकर राणा का अपने बड़प्पन के नाश होने के साथ उपालंभ भेजने के पत्र को बूँदीश का अपनी माता को दिखाना, बाद में लिखे हुए अपनी बहन और भानजे को माता की सलाह में उलाहने को हड्डेश का चित्तौड़ के पति के प्रति भेजे हुए उस राणा के नाम के पत्र को पूर्णमल्ल का छिपाना, बूँदी के सम्बन्ध से विरोध करने वाले और वैमनस्यता से बन्धुबुद्धि का वियोग करने वाले राणा का विक्रमादित्य और उदयसिंह दोनों अपने भाइयों से शत्रुभाव रखना, राजा का हाड़ा पूर्णमल्ल पर छलघात कराने आदि बहुत भेदों से परीक्षा कर पूर्बिया पूर्णमल्ल की परवशता में घिरे हुए चित्तौड़ के पति की पहली प्रीति में शत्रुता का प्रमाण करना, यवनेन्द्र दिल्ली का पति जहीरुद्दीन जिसका दूसरा नाम बाबर था उसका शत्रुओं के बुहत से प्रान्त लेकर अपने स्वामित्व के प्रताप को फैलाना. पेशावर के राज्य में बंगाल और रोहितास दोनों देशों को लेकर बिहार देश के सूबा के अधिकारी सूर जाति के यवन शेरखां का प्रबलता से जुदा मालिक होने का ज्ञान कराना, कहे हुए शक सम्बत् में श्रेष्ठ प्रतिष्ठा से उठी है जीतने की इच्छा जिसको, ऐसे दिल्लीश बाबर का असाध्य ज्वर से कहे हुए सम्बत् में देहान्त होना, पिता का पाट पाकर हुमायू नामक उसके पुत्र का पंजाब के

स्वामी बने हुए अपने छोटे भाई कामरान को विजय करने के लिए गमन करना।

तत्समयसाधितमहो पद्रवप्रजाभयस्वाभिमुखाभिषेणिससज्ज-सैन्यहुमायों साहपराजितप्रदतलोदिपठान तत्परिकरा न्यतमैरवतराजशरवधितदिल्लीदंडधर्मधुरन्धररैवतराजकैवर्तपश्चिमप्रधनशूरशय्याशयन पंचदश राज्ञीससजिव्हस्नान समयषोडश्ये कासगर्भा कैवर्तकान्ताचापोत्कट-बाहुजदेवातूपस्त्यप्रच्छन्नप्रसवावधिकालातिवाहन देवात्वायत्तीकृत-समयप्रसूतपुत्रनवघनतद्राज्ञीतर्जनमृत्युमि षभस्मसाद्भवन समुचितसमय-संघीकृतशरवधिकसन्तानदेवातू स्वपत्नीपालितकैवर्तकुल धरनवघ-नार्थरैवतराज्यसमाक्रमण प्राप्तनवघनशुद्धिनिश्चियम्लेच्छमारणार्थ-तन्मार्गणसमयदेवातूस्वसुत समर्पणमतभेदभणन तृणादिदुर्भिक्ष-समयस्वकुटुम्ब वस[illegible] जन गोधन सहसुखनिर्वाहार्थसिन्धुराष्ट्रसीमासंगत-बाहुजाव शेषपत्नीदेवातूपुत्रीस्वशीलभ्रंशसमुद्युक्तसिन्धुराजयवनेन्द्रवाहिनी-वेष्टन वृत्तान्तपत्रप्रच्छन्नरैवतप्रेषण प्रबुद्धपत्रप्रवृत्तिकतत्कालैकाकि-प्रस्थितमार्गसम्मिलितचमूकसिन्धुसंगतमृधमारितम्लेच्छराजन वघ्नस्व-भगिनीचापोत्कटीशीलरक्षण तत्समयचालुक्यबाहुज शरवधिकवंशस-र्वाधिश्लाघासूचनं द्वात्रिंशो मयूखः ॥३२॥ आदित एकोनाशीत्युत्तरैकश-ततमः ॥१७९॥

उस समय में बढ़े हुए उपद्रव और प्रजाभय करके अपने सम्मुख युद्धयात्रा करने सेना के साथ बादशाह हुमायूँ से पराजित हो[illegible]र भागे हुए लोदी पठान का और दूसरों के मत से उसकी परगह का रैवतगिरि के राजा सरबहिया सोलंकी नरेन्द्र कैवाट की शरण लेना, बहुत युद्ध जीतकर दिल्ली की सेना को पराजित करके धर्मधुरन्धर रैवतगिरि के राजा कैवाट का पिछले या पश्चिम के युद्ध में मारा जाना, पन्द्रह रानियों के सती होने के समय सोलहवीं गर्भवती केवाट की स्त्री का चावड़ा क्षत्रिय देवातू के घर में छिपकर बालक होने की अवधि तक रहना, समय पर पुत्र का जन्म होने के बाद नवघन को देवातू के अधीन करके उस रानी का भय से मृत्यु के बहाने से जलना, उचित समय पर सरबहिया क्षत्रियों को एकत्रित कर उस संतान को देवातृ का अपनी स्त्री से पाले हुए कैवाट के कुल को धारण करने वाले

नवघन के अर्थ रैवत के राज्य को लेना, नवघन की निश्चय खबर पाकर मारने को म्लेच्छ के माँगने के समय देवातू का अपने पुत्र को देने के मतभेद का कथन, तृण आदि के दुर्भिक्ष के समय अपना कुटुम्ब, प्रजा, गोधन सहित सुख के लिये सिन्ध राज्य की सीमा में गये हुए किसी क्षत्रिय की स्त्री और देवातू की पुत्री का अपने शीलनाश करने को उद्यत सिन्धुदेश के यवन बादशाह की सेना के घेरने का वृत्तान्त का गुप्त पत्र रैवतगिरि भेजना, पत्र का वृत्तान्त जानकर उसी समय अकेले गमन करने वाले मार्ग में शामिल हुई है सेना जिससे, ऐसे नवघन का सिन्ध देश में जाकर युद्ध में बादशाह को मारकर अपनी बहन चावड़ा के शील की रक्षा करना, उस समय सोलंकी क्षत्रिय सरबहियों के वंश की सबसे अधिक प्रशंसा सूचना करने का बत्तीसवाँ मयूख समाप्त हुआ। और आदि से एक सौ उनासी मयूख हुए।

प्रायो ब्रजदेशीय प्राकृत मिश्रित भाषा

दोहा

इत बुंदिय हड्डुन अधिप, महीरमन रविमल्ल।
बळ्यो सजातीयन बली, सब खुरली अरि सल्ल॥१॥

भुजन भीम कट्टार करि, मारत मत्त मइंद।
रोहत गहि धावत बिरचि, गति हत्तबेग गइंद॥२॥

पटु सब हेतिन तदपि पहु, इषुबिद्या अधिकाइ।
दुव दुव गोलिन दूरतैं, कोउ न बेध्य टिकाइ॥३॥

इधर बूँदी में हाड़ाओं का स्वामी इस समय राजा सूर्यमल था जो सभी क्षत्रियों में बलवान अपने शत्रुओं का काल और शस्त्रविद्या में निष्णात था। जो अपनी बलिष्ठ भुजा में कटार ले कर मस्त सिंहों को मार गिराता था और दौड़ते हाथी को पकड़ कर रोक लेता था। वह यों तो सभी प्रकार के शस्त्र चलाने में प्रवीण था पर धनुर्विद्या में सबसे बढ़ कर था। वह गोली की मारक क्षमता वाली दूरी से दुगुनी दूरी पर लक्ष्य रखवा कर अपने बाण से उसे बेध लेता था।

षट्पात्

भवन किते इक भल्ल स्वप्नकारि याहि दयो सिव।
प्रातहि सूचित प्रांत अप्प सोधिय अभीष्ट इव।

बिनु सर भल्ल सु पिक्खि पुज्जिलिय मुदित महीपति।
इमहि रमत आखेट कहत भल्ल सु पायो कति।
भूखो तदीय अभिधान भनि सर संधि सु रक्ख्यो सरधि।
बहु दूर बेध बिज्झन बनत सुगम भये सब थान सधि॥४॥

कहते हैं कि इस राजा को एक बार भगवान शिव ने स्वप्न में दर्शन दे कर एक भाल (तीर का फलक) दिया। राजा ने प्रातः उठते ही उस स्थान को ढूंढ़ निकाला। जब राजा को उस स्थान पर स्वप्न में दिखा वैसा एक भाल मिला। राजा ने प्रसन्न हो कर उसकी पूजा की और उसे अपने पास रख लिया। कुछ लोगों का कहना है कि राजा को वह भाल शिकार खेलते समय जंगल में पड़ा मिला था। राजा ने उसका नाम भूखा रखा और इसको अपने एक तीर पर जड़ित कर अपने तरकश में रख लिया। इससे राजा बहुत दूर दूर तक बेधन करता और इसलिए उसके लिए सभी स्थान सुगम हो गए।

दोहा

सो सर रक्खैं प्रान सम, अर्यममल्ल अधीस।
सद्धै अर्चन नित्य सह, सद्धन सत्रुन सीस॥५॥

मृगया सह भोजन प्रमुख, रचैं कुतूहल रम्य।
मन महंत रीझ न रुकैं, गिनैं प्रबल सुहि गम्य॥६॥

पहिलै ब्याहे कुमरपन, संभर अरु सीसोद।
निलय प्रमारन श्रीनगर, बहिनी जुग सबिनोद॥७॥

गढ बुंदिय चित्तोर गढ, यातैं सालक आइ।
उभय स्वसा लैगो अमर, पिउहर अवसर पाइ॥८॥

पुनि आगम गुनगोरि पर, बूँदीस हिं तंहं बुल्लि।
प्रकट्यो हित सारंग पहु, खिन खिन नव मह खुल्लि॥९॥

मुदित स्वसुर जामात मिलि, सालक जामिप सत्थ।
मृगया मुख बिलसे बिबिध, तेरह अह मह तत्थ॥१०॥

उस तीर को राजा सूर्यमल प्राण की तरह प्यारा समझ कर यत्नपूर्वक रखता था और नित्य प्रति उसकी पूजा करता था ताकि समय आने पर वह

उसे शत्रुओं पर साध सके। आखेट और गोठ आदि के आयोजनों से कुतूहल पूर्वक वह अपना मनोरंजन करता। वह किसी को अपने आगे प्रबल नहीं गिनने वाला राजा रीझ भी मन मुआफिक करता अर्थात् दान पुण्य में भी वह अग्रणी था। श्रीनगर के प्रमार राजा सारंगदेव के दो पुत्रियाँ थी जिनमें से एक चित्तौड़गढ़ सिसोदिया राणा रत्नसिंह को और दूसरी बूँदी के राजा सूर्यमल को कुमारावस्था में ब्याही थी। सारंगदेव का पुत्र अमरसिंह प्रमार आ कर अपनी दोनों बहनों को पीहर अर्थात् श्रीनगर ले गया। गणगौर के अवसर पर ससुराल श्रीनगर से बूँदी के राजा को बुलावा आया। दामाद राजा के आने पर सात दिनों तक राजा सारंगेदव ने बड़ा उत्सव किया। प्रसन्न हो कर श्वसुर दामाद आपस में मिले। साला और बहनोई दोनों ने मिल कर तेरह दिनों तक खूब शिकार किया और आमोद प्रमोद सहित दिन बिताये।

षट्पात्

अंतहपुर निस इक्क सुपहु लालन बडसस्सुव।
रान रतन रानी सु हड्डु राजहिं भाखतहुव।
तीरन करि लाल तुम सुनें मारत गुरु सिंहन।
हमकों पिक्खन होंस मत्रि असमान कृत्य मन।
सुद्धांत लखन जंहं संभवै तहै सु हलायो तत्थ हरि।
सुनि भूप्र कहिय दूजी निसा अप्प लघहु हत द्विरदअरि॥११॥

एक दिन जनाना से बूँदी के राजा की बडसासू जो राणा रत्नसिंह की रानी थी ने राजा से कहा कि हमने सुना है कि आप तीर से बड़े-बड़े शेरों का शिकार करते हैं। हमारे मन में बहुत चाह है कि हम भी देखें कि आप ऐसा जोखिम भरा कठिन कार्य कैसे करते हैं। राजा ने कहा कि हम इसकी व्यवस्था करेंगे। यह कह कर राजा ने जहाँ तक आसानी से जनाना की स्त्रियाँ जा सकें ऐसे निरापद स्थल तक बकरे आदि बँधवा कर सिंह की बेधड़क आम दरफ्त की आदत डाली। फिर एक रात्रि को राजा ने जनाना में कहलवाया कि कल रात्रि को आप लोग शेर का शिकार देख सकेंगे।

दूजो आवत दिवस भूप लखि उचित कज्ज भुव।
बरजत तिन्ह बूँदीस हठी खातहि दिवात हुव।

सो इक्क हि निस समय बंधि जमबाह बइठ्ठो।
इक कटार चाप इक द्विगुन चउ सर जुत दिठ्ठो।
पठई निहोरि रानी हु पुनि जंहं पति तंहं प्रमदा जनन।
मचि संप्रयोग दंपति मिलत मकरकेतु छल्लिय मनन॥१२॥

दूसरे दिन राजा ने उचित स्थल देख कर जमीन में एक गड्ढा खुदवाया। यह देख ससुराल वालों ने इसे असुरक्षित जान कर मना करवाया पर हाड़ा राजा नहीं माना उसने अपने आराम से बैठने जितना लम्बा चौड़ा गड्ढा खुदवाया (शिकारी के बैठने के लिए मूल बनवाया)। शाम को उस गड्ढे के पास यमराज का वाहन अर्थात् भैंसा बंधवाया और राजा एक कटार और एक दो प्रत्यंचाओं वाला धनुष और मात्र चार तीर ले कर उस गड्ढे में बैठा। जनाना की स्त्रियों ने उसकी पत्नी प्रमार रानी को भी वहाँ भेज दिया यह कह कर कि जहाँ पति हो उसकी पत्नी को भी वहीं होना चाहिए। पास पास बैठते ही कामदेव जागृत हो गया और वे वहीं दड्ढे में रतिक्रिया के लिए संभोगरत हो गए।

कंठीरव तिहिं काल हनन सैरिभ आवत हुव।
सह रति आसन सुपहु प्रदर गोधि सु पावतहुव।
उछटि नटीबट उडंत पर्यो नाहर बिनु प्रानन।
तिम अंतहपुर तियन किन्न संगति दृग कानन।
सीसोदराज रानिय सहित समय निछावरि किय सबन।
आयउ बहोरि बुंदिय अधिप प्रामारिय जुत निडरपन॥१३॥

इसी समय सिंह उस बंधे हुए भैंसे को खाने के लिए आया। यह देख कर रतिक्रीड़ा में रत राजा ने उसी मुद्रा में अपना धनुष उठा कर सिंह के ललाट पर एक तीर मारा। तीर के लगते ही सिंह नट की स्त्री की तरह कलाबाजी खाता हुआ दुहरा हो कर जमीन पर जा गिरा। इस शिकार को जनाने की सारी स्त्रियों ने जो अब तक सुना-सुना करती थीं अपनी आँखों से साफ देखा। शिकार हो जाने की खुशी में सिसोदिया राणा राजसिंह की रानी ने और उसके साथ दूसरी स्त्रियों ने भी राजा पर न्यौछावर (निछरावल) किया। इसके बाद बूँदी का निर्भय राजा प्रमार रानी के साथ वापस बूँदी लौटा।

दोहा

जो नृप बडसस्सूह जब, गय अवसर निज गेह।
कबहु रान हनि सिंह किय, उच्छव दर्प अछेह ॥१४॥

सुहि अवरोधहु रति समय, बदत बिकत्थन बत्त।
प्रामारिहु हसि रीति पटु, अक्खिय पिय अनुरत्त ॥१५॥

तरु सिर रहि लै कर तुपक, सिंह हनत जन सर्व।
कीरति लहत बिसेस करि, गहत तेहु नन गर्व ॥१६॥

स्वमुख कित्ति अपकित्ति सम, इम जताइ हित आस।
सुरतासन सर सिंह बध, कह्यो सकल पति पास ॥१७॥

राजा सूर्यमल की बड़सासू भी कुछ दिन पीहर में ठहर कर अपने ससुराल चित्तौड़गढ़ चली आई। थोड़े ही दिनों बाद राणा रत्नसिंह ने सिंह का शिकार करने के उपलक्ष में दर्प सहित एक बड़ा उत्सव किया फिर राणा जब रात को जनाना महल में आए तो उन्होंने अपनी प्रमार रानी के सामने अपनी बहादुरी का बढ़ा-चढ़ा कर बखान किया कि मैंने कैसे शेर का शिकार किया। प्रमार रानी यह सुन कर मुस्करा दी और प्रीति के लहजे में अपने पति से बोली कि हे महाराणा! पेड़ पर बंधी सुरक्षित मचान पर चढ़ कर और फिर बन्दूक से शिकार कर डालने में क्या बड़ी बात है? इस शिकार में गर्व करने योग्य क्या है? यह तो व्यर्थ में सुयश बटोरना है। फिर स्वयं के मुँह से अपनी ही बड़ाई करना आपको शोभा नहीं देता, नीति ऐसा ही कहती है। इसके बाद रानी ने अपने पीहर में बूँदी के राजा द्वारा जमीन पर रह कर मैथुनरत मुद्रा में एक तीर से सिंह को मारने का आँखों देखा वृतान्त सुनाया।

षट्पात्

पिंड दुव रु इक प्रान रान ढक्कूसुत रक्खिय।
यातें प्रात उदंत एह सचिवहि नृप अक्खिय।
महिपहिं पूरनमल्ल कहिय स्मृत जनकबैर करि।
बन्यों ध्रुवहि व्यभिचार प्रकृति नारिन निलज्ज परि।
स्वामिनी सों हु नटरयो सु सठ पिक्खहु खल अपराध पहु।
मैं सुनी अन्य द्वारहु कुमति बृजिन हट्टु यह किन्न बहु ॥१८॥

उधर दो शरीर और एक प्राण हो रखे ढक्कू चहुवान के पुत्र पूर्णमल से महाराणा ने प्रातः यह वृत्तान्त कह सुनाया। राणा के इस नए मंत्री ने अपने पिता की मृत्यु का वैर याद करते हुए अपने स्वामी को उल्टा भिड़ाया। यह कह कर कि अजीब समय आ गया निर्लज्ज नारियाँ व्यभिचार में अधिक प्रवृत्त हो रही है। वह अपनी स्वामिनी से भी नहीं चूका। इस दुष्ट ने यहाँ तक कह दिया कि मैंने विश्वस्त सूत्रों से सुना है कि बूँदी का वह कुमति राजा तो बेहद व्यभिचारी है किसी को नहीं छोड़ता।

दोहा

जिम दै बसु नाजर जनन, प्रकटि बिजन सुहि पाप।
ऋत किन्नों मन रान के, यह मिथ्या अभिसाप॥१९॥

बत्त जु निस रानिय बदिय, सोहि बनिय हिय सूल।
हित सिक्खहु भावी अहित, करैं नियति प्रतिकूल॥२०॥

इस पूर्णमल ने जनाने के पहरेदार नाजर को भी धन दे कर अपनी ओर मिलाया फिर एकान्त में महाराणा के सामने उसके मुँह से रानी ने पाप किया ऐसा कहलवाया। इस तरह पूर्णमल ने राणा के मन में इस झूठे लांछन को भी सत्य मनवा दिया। अब राणा को अपनी रानी की कही वह शिकार वाली बात याद आई और वह उसके मन में कांटे की तरह खटकने लगी। हित की शिक्षा को भी कभी कभी नियति कैसे उलट कर अहित की बना देती है।

षट्पात्

मारन नृप रविमल्ल रान तब पिहित बिचारिय।
भानु सुकवि सुहि भेद नियत सुनि स्वामी निवारिय।
कहिय रान जिन करहु भानु कवि तुम बिरोध भ्रम।
जुत तिय बुंदिय जात हितहि बर्द्धन हड्डु रु हम।
जो होइ द्रोह तो स्त्रीजनन क्रमन बनैं अरिगेह किम।
संकहु न अप्प उलटी समुझि अग्गहु आवन जान इम॥२१॥

इसके बाद राणा रत्नसिंह ने मन में गुप्त रूप से राजा सूर्यमल को

मारने की ठान ली। इस भेद की बात को जान कर भानु नामक चारण कवि ने स्वामी को ऐसा न करने की सलाह दी। कवि से राणा ने कहा कि यह आपका वहम है मैं तो अपनी रानी सहित बूँदी जा रहा हूँ। इससे हमारे और हाड़ाओं के आपसी संबंध और अधिक दृढ़ होंगे। आप ही सोचें यदि आपस में विरोध होता तो इस तरह स्त्रियों का साथ जाना थोड़े ही संभव था इसलिए आप उलटा सोच कर शंका मत कीजिये। ये आवागमन और आदान-प्रदान आगे भी इसी तरह चलता रहेगा।

दोहा

ढक्कूसुत अक्खिय ढरयो, कवि बय जंहं मतिकज्ज।
बार्द्धक बस तातैं बदत, इम अलीक भ्रम अज्ज॥२२॥

प्रभु निज कवि कुल परपुरुष, इम भुलाइ अतिमान।
सद्धिय रान प्रमारि सह, पुरबुंदिय प्रस्थान॥२३॥

प्रामारिहु अक्खिय पतिहिं, बिधि कछु सुनि सु बिरोध।
हित जो तो लीजै हमहिं, बढन दु दिस हित बोध॥२४॥

सोहु बत्त सुनतहि सचिव, मंतु सु दृढहि मनाइ।
चूरन रानहिं लै चल्यो, पूरन छिद्रहिं पाइ॥२५॥

कहिय रान प्रामारि कंहं, करहु न भ्रम जिम कूर।
ससुख मिलहिं तुम सन स्वसा, सहू हम सन सूर॥२६॥

इम भुलाइ प्रामारि यह, सब ध्वजिनी सजि संग।
आयो निज सीमा अवधि, रचि पूरन छल रंग॥२७॥

पूर्णमल ने कहा कि इस चारण कवि की वृद्धावस्था के कारण बुद्धि ने साथ देना छोड़ दिया है। इसी कारण से झुठे वहम होने लगे हैं। हे राजा रामसिंह! इस तरह मेरे कुल पुरुष की राय को दर्प से भरे महाराणा ने नहीं माना और अपनी प्रमार रानी के साथ बूँदी आने के लिए प्रयाण किया। इस बीच प्रमार रानी ने अपने पति से कहा कि इधर हमने कुछ विरोध बढ़ने की बात सुनी है। हित होता हो तो आप हमें भी अपने साथ ले चलिये इससे दोनों पक्षों में मित्रता और प्रगाढ़ होगी। यह सुनते ही प्रिय सचिव पूर्णमल ने राणा

के मन में उस दोष की बात को ताजा ढंग से फिर बिठलाया और नाश करवाने के लिए इस अवसर को पा कर ले चला। राणा ने अपनी प्रमार रानी से कहा कि कायर की तरह तुम भी वहम पालने लगी। चलो तुम अपनी बहन से मिलना और हम अपने साढू से मिलेंगे। इस तरह बातों में बहला कर महाराणा रत्नसिंह अपनी सज्जित सेना के साथ अपनी चित्तौड़गढ़ की सीमा तक आया और पूर्णमल की कपटपूर्वक चली चाल सफल हुई।

संभर आयो रान सुनि, बल समेत धनबाट।
लंघि समुख गो इक्कलहि, घन हित नृप गिरि धाट॥२८॥

भ्रात सहंस सत्तल उभय, बलि पंचायन बेन।
भट रु सचिव ए चउ भये, संगि इतर रुकि सेन॥२९॥

कोउ न आवहु नृप कहिय, ए चउ तदपि अभीत।
पहुँचे बढि बूँदीस पंहं, फैलावत जस फीत॥३०॥

इन च्यारिन जुत हड्डु इन, सो पंचम निज सीम।
मुदित जाइ रानहिं मिल्यो, भूधव सत्रुन भीम॥३१॥

चोरी जाजम चद्दरिन, प्रसरि बिछोनन पंति।
हुलसि मिले उत्तरि हयन, भूप दुव हि हित भंति॥३२॥

चित्तौड़गढ़ के महाराणा का आगमन सुन कर बूँदी का चहुवान राजा अपनी सेना सहित धनवाड़ा नामक गाँव तक आया। यहाँ से आगे पर्वत की घाटी लाँघ कर पूरे स्नेह के साथ सम्मुख गया। राजा के साथ उसका भाई सहंसमल, सातल हाड़ा, पंचायन और बेन ये चार उसके सामन्त और मंत्री ही थे शेष सारी सेना को वह पीछे छोड़ कर आया था। मेरे साथ किसी को चलने की आवश्यकता नहीं राजा ने कहा पर ये चारों निर्भय वीर मना करने के बावजूद भी बूँदी की प्रतिष्ठा को रखते हुए और उसका यश प्रसारित करते हुए साथ गए। इस तरह साथ में चार जन और पाँचवा राजा स्वयं अपने राज्य की अंतिम सीमा रेखा पर पहुँचे। और वहाँ जा कर महाराणा से मुदित हो कर शत्रुहंता बूँदी का राजा मिला। वहाँ लंबी चौड़ी जाजमें (दरियाँ)

बिछाई गई जिन पर करीने से चद्दर लगाई गई। जहाँ दोनों राजाओं ने अपने अपने घोड़े से उतर कर थोड़ी देर के लिए विश्राम किया।

रानी अक्खिय रान प्रति, मिलि अवसर निस मांहि।
आत समुख बूंदीस इक, निज पर भावकि नांहिं॥३३॥

क्रम जिम जिम रानी करैं, बहिनीपति नुति बत्त।
तिमतिम रान बिलोम तकि, मन्नैं मंतु प्रमत्त॥३४॥

अवसर मिलते ही रात को रानी ने राणा से कहा कि देखा बूँदी के राजा ने यहाँ तक अकेले आकर आपकी अगवानी की है। मुझे तो उनके मन में कुछ भी दुराव नहीं लगता। ज्यों ज्यों रानी अपनी बहिन के पति हाड़ा राजा की प्रशंसा की बातें करने लगीं त्यों त्यों राणा के मन में उल्टी उस अपराध की बात और गहरी उतरने लगी।

षट्पात्

सो आगम मत सोहि प्रकटि रानहु पूरन प्रति।
अरिपन ता सन अधिक मन्त्रि पुनिपुनि बोधन मति।
सीमा पिक्खन स्वीय दिवस दुव देर दिखावत।
आयउ बुंदिय अधिप अतुल राजस उफनावत।
नृपर रान सीम उत्तर निरखि बुंदिय मग पूरब बलित।
मंगली ग्राम आवत महिप हड्डु धरिय पुनि मिलन हित॥३५॥

राणा रत्नसिंह ने अपने मन की गोपनीय बात अपने प्रिय मंत्री पूर्णमल के सामने खोली और अपना मंतव्य दरसाया। पूर्णमल ने अपनी शत्रुता को अधिक सामने न ला कर राणा को ही अधिक प्रोत्साहित किया। महाराणा को यहाँ सीमा प्रदेश का मुआयना करने में दो दिन लगेंगे यह सोच कर हाड़ा राजा वापस बूँदी को लौट आया। महाराणा ने तब तक उत्तर दिशा वाली सीमा का निरीक्षण समाप्त कर लिया था और अब पूर्व दिशा वाली बूँदी से मिलती सीमा की ओर मुड़े। यहाँ मांगली नामक गाँव में पहुँचने पर बूँदी के राजा ने फिर से महाराणा के सामने जाने का मन बनाया।

दोहा

अक्खिय तंहं सामंत इम, समुह जाइ जिम सीम।
पुनि चिंतहु तो हमहिं पथ, भंजि पधारहु भीम॥३६॥
भूपहिं इम न दयो भटन, जिमतिम सम्मुह जान।
आयो बुंदिय अपर अह, रचि दल बिस्तर रान॥३७॥

यहाँ से महाराणा के पास फिर से जाने के लिए हाड़ा राजा के काका सामंतसिंह ने अपने राजा को रोका और कहा कि इस पर भी आप नहीं मानते हैं तो हमें मार कर आप आगे बढ़ें। सामन्तों ने जैसे तैसे कर किसी प्रकार अपने राजा को रोका और महाराणा के सामने नहीं जाने दिया। दूसरे दिन महाराणा अपनी बड़ी सेना के साथ बूँदी पहुँचे।

षट्पात्

लगि मिलान मंगलिय रत्ति प्रातहि प्रयान रचि।
बुंदिय आवत बेर महत मह तब इतैंहु मचि।
सब अनीक निज सज्जि पहुंचि गोपुर बुंदीपति।
पुर में करत प्रवेस मिल्यो रानहिं उदार मति।
सम हय लगाई उभय हि सुपहु लखत नगर सोभा लखित।
हेरंबबेल जंहं तंहं हुलसि किय मुकाम डेरन कलित॥३८॥

गत रात्रि को मांगली गाँव में पड़ाव डाल कर महाराणा ने विश्राम किया और प्रातः प्रयाण किया। बूँदी पहुँचने पर पूरी धूमधाम से महाराणा का स्वागत हुआ। अपनी पूरी सेना को सज्जित कर राजा सेना के साथ नगर में प्रवेश द्वार तक गया और महाराणा के नगर प्रवेश के समय वह उदारमति राजा उनसे मिला। दोनों राजा साथ-साथ घोड़े बढ़ाते हुए आगे बढ़े। अतिथि महारणा ने बूँदी नरेश के साथ इस नगर की शोभा निरखी। जहाँ आजकल बूँदी में गणेश बाग है इस स्थान पर महाराणा का सुन्दर डेरा लगाया गया।

दोहा

आइ निलय पठयो अधिप, सब स्वागत समुपेत।
अह दूजे रानिन उचित, हुव मिलाप अति हेत॥३९॥

रानी महलन रान की, आवत डोढी अंत।
आइ समुख लिय मांहिं वह, सस्सू बहुन सुमंत॥४०॥

हाड़ा राजा ने महलों में आ कर महाराणा के सम्मान में स्वागत सत्कार की सामग्री भिजवाई। दूसरे दिन दोनों पक्षों की रानियों की मुलाकात हुई। जब चित्तौड़गढ़ की रानी बूँदी के जनाना महल में मिलने आई तो ड्योढी तक उनकी अगवानी में सारी सुमतिवंत बहुओं के साथ सासू स्वयं आई।

गीतिः

क्रम झल्ली कछवाही, तिम चंद्राउति पुत्र प्रसू तीजी।
सह प्रामारि सराही, सस्सू अनुगत मिलितउ सवत्ती॥४१॥
जोरि करन नृप जननी, रट्ठोरि प्रसन्न रान रानी सों।
तंहं बुल्ली हिततननी, पावन हुव गेह रावरे प्रविसैं॥४२॥
निज गृह आवत नतिही, करन सदाचार निगम लोक कहैं।
यातैं स्वागत अतिही, विनम्र सद्धि रु समाज सब बैठी॥४३॥
भगिनी मंदिर भगिनी, जाइ बहुरि काल वै बिजन जुग ही।
निजता परता न गिनी, कृत्य परस्पर रहस्य कहन लगी॥४४॥

क्रमशः झाला, कछवाहा वंशीय रानियाँ आई। तीसरी चंद्रावती जो कुमार की माँ थी वह भी प्रमार रानी के साथ आई। ये चारों सौतनें अपनी सासू के पीछे पीछे चल रही थी। राजा की माँ राठौड़ रानी ने हाथ जोड़ कर चित्तौड़गढ़ की महारानी से कहा कि आप जैसी स्नेह फैलाने वाली अतिथि हमारे द्वार आई हैं। पधारें! आपका स्वागत है अपने घर आने वाले मेहमान के लिए शास्त्र और लोक दोनों का कथन है कि उसके आतिथ्य में प्रतिदिन श्रेष्ठ आचरण वाले सदाचार का प्रदर्शन करना चाहिए। विनम्र शब्दों में आगन्तुक को रानी माँ द्वारा अभ्यर्थना करने के बाद सारा स्त्री समाज इकट्ठा हो कर बैठा। थोड़ी देर बाद बड़ी बहन अपनी छोटी बहन के महल में गई। वहाँ दोनों ने एकान्त पाकर आपस में मन की बातें की। अपने और पराये का भेद भूल कर दोनों बहनों ने गुप्त बातें भी कहीं।

रतनेस रान रानी, जिहिं तिहिं बिधि हड्डु हनन मति जानी।
पै इम नहिं पहिचानी, मम सिर अभिसाप आनि यह मानी ॥४५॥
अनुज स्वसा सन अक्खिय, जेठी भगिनी बिरोध बत्त जथा।
पूरनमल्ल बिपक्खिय, सिखये स्वामीहु बेर बुद्धि बहैं ॥४६॥
यातैं लालहिं अक्खहु, ढक्कूसुत मंत्र रान बुद्धि ढब्यो।
रहि बुद्दि जतन रक्खहु, अग्ग जिम न मिलहु भुल्लि एकाकी ॥४७॥

इस समय महाराणा रत्नसिंह की रानी ने कहा कि मुझे किसी प्रकार यह बात पता चली है कि राणा के मन में हाड़ा राजा को मारने का विचार आया। मुझे अभी तक इसका पता नहीं पड़ा कि मुझ पर ऐसा लांछन किसने और क्यों लगाया? इस तरह बड़ी बहन ने छोटी बहन से सारी विरोध उत्पन्न होने की बातें बताईं। मेरे पति उस दुष्ट और हाड़ाओं के पक्के विरोधी पूर्णमल पूरबिया के सिखाये से विरोध में हुए हैं। इसलिए तू अपने पति (लाल से छोटे जामाता का संबोधन है) से कह देना कि ढक्कू के पुत्र ने महाराणा की बुद्धि को अपने कब्जे में ले रखा है। इसलिए आगे से वे सावधान रहें। पहले की तरह अकेले जा कर मिलने का कृत्य भूल कर भी न करें।

पुनि नृप जननी पासहु, प्रांजलि लहि सिक्ख सिबिर यह पत्ती।
तिम रत्ति भेद तासहु, प्रामारी हड्डु भूप प्रति प्रकट्यो ॥४८॥
महिप सु द्रोह न मान्यों, सूचित किय प्रात मात छल सोही।
जब कछु संसय जान्यों, लखि कारन कछु न सोहु मेटि लयो ॥४९॥
सुर्जन मातहु सोही, कोउक बिधि चित्रकूट जानि कथा।
दल पठयो छल द्रोही, भासैं सीसोद करहु न भरोसो ॥५०॥
महिपति तब कछु मन्नी, पैं हेतु बिहीन चित्त न प्रमानी।
छलघातिन मति छन्नी, नहिं जानैं सुर हु तत्थ को नर तो ॥५१॥

इसके बाद चित्तौड़गढ़ की रानी ने अपनी छोटी बहन की सासू से हाथ जोड़ कर विदा माँगी और वह अपने शिविर में वापस आ गई। रात आते ही राजा के सामने प्रमार रानी ने सारा भेद की बातें कह सुनाई पर राजा ने उसकी बातों पर कोई ध्यान नहीं दिया न महाराणा के द्रोह की बात ही मानी

पर प्रात:काल उसे उसकी माँ ने भी जब इसी छल की बात बताई तो अवश्य राजा के मन में थोड़ा संशय उत्पन्न हुआ पर कोई स्पष्ट कारण नहीं दिखाई देने से उसने मन के संशय को मिटा दिया। जब चित्तौड़गढ़ में सुर्जन हाड़ा की माँ को भी कहीं से जब यह बात पता चली तो उसने एक गुप्त पत्र भिजवाया कि चित्तौड़गढ़ के सिसोदिया महाराणा का अधिक भरोसा न किया जाए। उसके मन में कपट है। हाड़ा राजा ने तब थोड़ा इस बात को गंभीरता से लिया पर फिर भी यह समझने में नाकामयाब रहा कि आखिर इस की वजह क्या हो सकती है ? कपटघात करने वालों की प्रपंचबुद्धि को देवता भी नहीं जान सकते हैं फिर आदमी की क्या बिसात।

तब तीजे दिन सेना, महिपति प्रासाद बुल्लि रु जिमाई।
अप्प हु तदनु अनेना, भोजन सह रान मुख्य पंति भज्यो ॥५२॥

पोली नृप प्रसरावैं, भरि ताबिच पलल आदि जो भावैं।
पुट्टलि तस करि पावैं, रदकर्त्तित घेर सेस रहिजावैं॥५३॥

असन करैं संभर इम, साधारन रीति रान सुहिं सद्धैं।
जिम्म उठे रुचि दुव जिम, लै दै तंबोल इक्क पीठि लसे॥५४॥

सीसोद रु साकंभर, जिम्मैं इक थाल द्वै हि नृप जबही।
अवरोध जनहु तब अर, भिरि जालिन रंध्र गूढ लखत भये॥५५॥

लखि जिम्मत कहन लगी, रट्ठोरि सुनाइ सब रीति उभै।
जुग असनहु भिन्न जगी, इतैं नृपति रीति सिंहरीति इतैं॥५६॥

संगति बिनु पसु जैसैं, मोसुत भोजन असाधु मैं मन्यों।
अपटु तजैं यहैं अैसैं, बहुदिन जो संगति रान बनैं तो॥५७॥

इसके बाद राजा ने महाराणा को सेना सहित भोजन के लिए महलों में आमंत्रित किया और भोजन के समय स्वयं वह निर्दोष हाड़ा राजा महाराणा की पंक्ति में साथ ही बैठा। भोजन शुरू हुआ। राजा सूर्यमल की थाली में फुलका परोसा जाता तो वह उसमें मांस आदि भर कर उसकी पोटली बनाता फिर एक हाथ में ले कर दाँतों के घेरे से उसको काट लेता और बीच में से खा जाता और दाँतों से कटा हुआ शेष बच जाता। चहुवान राजा इस तरह

भोजन करता पर महाराणा साधारण सामान्य तरह से खा रहा था। दोनों ने जीमना समाप्त किया तो पान के बीड़े पेश किये गए जिन्हें दोनों राजाओं ने एक दूसरे को पेश किया। जिस समय चहुवान राजा और सिसोदिया राणा एक ही थाल में भोजन कर रहे थे उस समय महल के भीतरी भाग के झरोखों की जालियों से जनाना की स्त्रियाँ उन्हें देख रही थी। इस समय राठौड़ वंशीय रानी मां ने सभी को सुनाते हुए कहा कि देखो तो दोनों कैसे खा रहे है। महाराणा तो राजा की तरह जीम (खा) रहे हैं और हमारा बेटा सिंह की तरह खा रहा है। यह सब संगति का फल है वह सारा दिन जंगल में भटकता है इसलिए इस तरह खा रहा है। इसे थोड़े दिन महाराणा के साथ रहने का अवसर मिले तो यह भी राजा की तरह खाना सीख जाए।

कछु बिधि सोहु कहानी, सिबिरागत रान रैंन सुनिलीनी।
वा महलन पुनि आनी, रानी प्रामारि के जनन जानी ॥५८॥
यामेंहु भेद अैसैं, महीप रतनेस व्यंजना मन्नी।
कुहकन के हिय कैसैं, पैसैं अनुकूल बत्त जंहं परधी ॥५९॥
तिहिं निस भ्रम सु बढात हि, सह पूरनमल्ल सोहि पुनि संधा।
पक्की ठानि प्रभात हि, चढि सिंह मृगव्य हड्डु हनन चह्यो ॥६०॥

धीरे-धीरे यह बात पहले पूरे जनाने में फैली और किसी तरह शाम तक महाराणा के शिविर तक पहुँच गई। चित्तौड़गढ़ की महारानी जब अगले दिन अपनी छोटी बहन से मिलने को उसके जनाना महल में गई तो उसने बताया कि इस बात में भी महाराणा रत्नसिंह ने व्यंग्य का पुट जान कर इसका अर्थ ग्रहण किया है। कपटी मनुष्यों के चित्त में सीधी बात बस ही कैसे सकती है। इस बात ने महाराणा के मन में जलती आग पर घी का काम किया उधर इसी रात को पूर्णमल ने उन्हें और भड़काया। उस वहम को फिर से हरा करते हुए राणा को उसकी प्रतिज्ञा याद दिलाई। महाराणा ने भी अब अपने मन में पक्की ठान कर दूसरे दिन हाड़ा राजा से कहा कि अब शेर के शिकार को चलें।

इतिश्रीवंश भास्करे महाचम्पूक पूर्वायणे पंचम राशौ वीतिहोत्र-वसुधेश्वर बीज्यवर्णनबीजहड्डाधिराडस्थिपाल वंश्यानुवंश्यविहितव्या-

ख्यानावसरव्याहार्यबुन्दीनरेन्द्रसूर्यमल्ल चरित्रेसर्वशस्त्रसाधनसातिरेक-हड्डेशबाणविद्याव्यतिकरविशेषप्रशंसाप्रापण सूचितशितिकण्ठस्वप्न-पाक्षिकहेतुपुरस्सरबुंदीन्द्रवनविहारलब्धकृतबुभुक्षुनामशासंहितशरधिसंर-क्षितभल्लविशेषनित्यावसर सदासमर्चन श्रीनगरराजप्रामारसारङ्गदेव-कुमाराऽमरसिंह चित्रकूट बुन्दीप्राक्कालपरिणायितस्वैभगिनीयुग्म पितृपस्त्य-प्रत्यानयन राजगौरीतृतीया गमोत्सवनिमित्तजामातृमिहिरमल्ल श्रीनगरसमा-कारण विविधविहारादिविनोदविलासिकुलीकथितकौतुकचिकीर्षुणदो-क्षणमार्गणमृगेन्द्रमारणसमुद्युक्तसहधर्मिणीसहितगुप्तनिखातसमुपविष्ट-स्वनुष्टितस्मरसम्प्रयोगासनसुरतसानुकू लस्थितिसमाकृष्टमौर्वीमार्गण-बुन्दीशसमागतसिंहसमाहरण दृष्टै तदद्भुतकर्मसमस्तशुद्धान्तसम्बधिनी-जनसम्भृतावसरजामात्रा दिसम्बन्धसम्बद्धपृथ्वीशोपग्मिहर्घसमुचितस-मुत्तारण तदनन्तरसपत्नीकहड्डाधिराडमिहिरमल्ल स्वस्थानीयसमागमन परिग्रहप्राप्तशीर्षोद्दपत्नीरहोरमणावसर मृगेन्द्रमारणशौर्यस्वयंप्रशंसक स्वामिप्रतिषेधोपदेश पुरस्सररहोरससधर्मिणीसमभियुक्तयथास्थितबुन्दी-शबाणवेधवनराजव्यापादनविक्रमविशेषवर्णन तदीर्ष्याता पताम्यमानप्रात-रुत्थितराणातदुदन्तस्वद्वितीय देहसाचिव्यसीमसम्मतपौर्विक पूर्णमल्लप्र-बोधन संघताभीष्टच्छिद्रसन्तोषितसौविदल्लादिसहम्र्यसमारोपितस्वकीय-स्वामिनी स्वैरत्वढक्कूसुतराणामन एतदभिशापसत्यत्वसमर्थन।

श्री वंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण की पंचम राशि में अग्निवंशी चहुवान वंशवर्णन के कारण हड्डाधिराज अस्थिपाल के वंश और वंश की शाखाओं की कथा बताने के समय के वचनों में बूँदीनरेन्द्र सूर्यमल्ल के चरित्र में सब शस्त्रों के साधन के अतिरिक्त हड्डेश का बाण विद्या के व्यसन में विशेष प्रशंसा पाना, सूचना किये हुए महादेव के स्वप्न में प्रदत या शिकार के कारण बूँदी के राजा को वन में फिरते हुए को भूखा नामक भाल मिला जिसके तीर लगाकर भाथे में रखकर नित्य पूजन करना, श्रीनगर के राजा पंवार सारंगदेव के कुमार अमरसिंह का पहिले समय में चित्तौड़ और बूँदी में ब्याही हुई अपनी दो बहनों को पिता के घर में लिवा लाना, प्रमारराज का गणगौर का उत्सव आने के कारण जामाता सूर्यमल्ल को श्रीनगर बुलाना, नाना

प्रकार के विहार आदि आनन्द भोगने में कौतुक देखने की इच्छा वाली बड़ सासू के कहने से रात्रि के समय वाण से सिंह को मारने में उद्यत विवाहिता स्त्री सहित गुप्त गड्ढे में बैठे हुए कामदेव का अनुष्ठान करके मैथुन करने के सुरतासन में अनुकूल स्थिति पा कर प्रत्यंचा खींचकर वाण से बूँदीश का आये हुए सिंह को मारना, यह अद्भुत कार्य देखकर समस्त जनाना लोगों का समय होने पर जामाता आदि सम्बन्धों की समृद्धि से राजा को बहुमूल्य उचित नजराना करना, इसके बाद स्त्री सहित हड्डाधिराज सूर्यमल्ल का अपने घर आना, राणा की स्त्री का घर आकर पति के साथ रमण करने के समय सिंह को मारने की वीरता को स्वयं प्रकाश करने वाले स्वामी के प्रतिषेध से उपदेशपूर्वक विवाहिता स्त्री के साथ रति समय में यथास्थित बूँदीश का बाण में बेध कर सिंह को मारने के पराक्रम का विशेष वर्णन करना, उस द्वेष के ताप से तपाये हुए राणा का प्रभात में उठकर उस वृत्तान्त को अपनी द्वितीय देह हुए सचिव पूर्बिया पूर्णमल्ल को कहना, इच्छापूर्वक छिद्र पा कर नाजर आदि को धन देकर सहाय में खड़े करके अपने स्वामी की स्त्री के स्वतन्त्रपन में ढक्कू के पुत्र का राणा के मन में इस झूठे दोष की सत्यता का समर्थन करना।

महीपमिहिरमल्ल मारणमनस्कबहिर्दर्शितभानु सुकविवारणा-नुकूल्यसूचितसपत्नीक समागमसौहार्दसारल्यशीर्षोद्दराज्यबुन्दीद्रङ्गागमन श्रुतधनवाट ग्रामतदागमप्रसभस्वपुरस्थापितसमस्तसैन्यैकाकि नरेन्द्रसाहस समिद्धपश्चादनुगतसुभट सचिव चतुष्क सङ्गतराणासहस्वसी मसम्मिलन निवेदितैकाकि बुन्दीशसीमागमसौहार्दसातिरेक समार्जवराज्ञीप्रामारीक्षण-दाक्षणप्रबोधनप्रतीपपौर्विकपूर्णमल्लपापा कृतोपोद्वलितराणातद्वचन-वेणीविचलितवैशारिणस्वभावसमासादन बुन्दीपुरपुरः प्रस्थापितपृथ्वी-शप्रभाकर दृष्टोद ग्दिश्यदे शदिनद्वया नन्तरराणाभंगलीग्रामागमसम-यहड्डेशपितृव्यसामन्त ससाहसपुनरभिजिगमिषुनिजनृपनिवारण द्वितीय दिन गोपुरमिलितपुरप्रविष्टधरणीधवजकूट शिबिरावधिसमागमसमनन्तर-प्रासादप्रत्यागतधराधवमिहिरमल्ल तत्स्वागतसमुचितसम्भारसम्प्रेषण।

मन में राजा सूर्यमल्ल को मारने और बाहर से भानु नामक चारण के

रोकने से अनुकूल स्त्री सहित सुखपूर्वक मित्रता से सरलता की सूचना करने वाले सिसोदिया राणा का बूँदी नगर में आना, उस का धनबाड़े नामक ग्राम में आना सुनकर हठपूर्वक अपने पुर में सारी सेना को रखकर अकेले राजा का साहस बढ़ाकर पीछे से साथ जाने वाले सुभट और सचिव चारों के साथ राणा से अपनी सीमा पर मिलना, बूँदीश के अकेले आने की मित्रता और सीधापन की अधिकता के निवेदन से रात्रि के समय रानी प्रामारी के समझाने के विरुद्ध पूर्बिया पूर्णमल्ल की पाप की चेष्टा से जलते हुए राणा का उस के वचनों के प्रवाह से चलायमान होकर चलना है धर्म जिसका, ऐसे स्वभाव का साधना अर्थात् मन को चंचल करना, बूँदी को प्रस्थान करने वाले राजा सूर्यमल्ल का उत्तर दिशा को देखने के दो दिन बाद द्वार पर मिलकर ग्राम में आने के समय हड्डेश के काका सामंतसिंह का हठपूर्वक फिर जाने की इच्छा वाले अपने राजा को रोकना, दूसरे दिन शहर के द्वार पर मिलकर पुर में प्रवेश करके दोनों राजाओं का डेरों तक बराबर के अंतर से समागम करके राजा सूर्यमल्ल का महलों में वापस आकर उसके स्वागत के लिए उचित सामग्री भेजना।

द्वितीय दिनराज्ञीजनसम्मेलसमुत्सुकप्रामारीप्रासाद प्रवेशसमय-सम्मुखागतष्णुषाचतुष्क सेव्यमानपृथ्वीशप्रसूराष्ट्रकूटी सनति सत्कृति शुद्धान्तसमञ्ज्ञाततत्समानयन स्वोपरिकल्पिता भिशापबोधवर्जित-समवगतसहसहजास्वामिसञ्जिहीर्षुस्वामि स्वान्तसम्भूतावसरकनिष्टा-भगिनीभवनप्राप्तप्रामारीरहस्यतदाकूतप्रकाशन नृपजननीसम्मतप्रासादा-तिवाहितदिवादिष्टप्रामारीप्रतिगमनानन्तर तदनुजाराजकुमारी तदाकूत-केलीनिलयनिशानिश्शलाक नृपनिवेदन रहोराज्ञीकथन प्रातर्जननी-तत्सूचन चित्रकूट स्थसुर्जन प्रसूगुहिल्लपुत्रीजयवती प्रेषितपत्रबाचन विचिकित्सितबुद्धिमर्ममगयमाणमहीपतत्कारणाऽप्रापण तृतीय दिन सहसैन्यसमाहूतशीर्षोद्द प्रासादपंक्तिपरिवेशसिद्धिसमयसहभोजना-सीनशाकम्भर कथितक्रमप्रत्यवसान शुद्धान्तदृष्टहड्डाहृतान्ततेमनाभ्योष-पोट्टलराष्ट्रकूटीसान्तर्व्यङ्ग्यभूपद्वय भुक्तिसङ्गता सङ्ग भावसूचन शिबिर-समागतश्रुतैतदवरोधोदन्त प्रतीपसचिव सहितराणा श्वोमृगेन्द्रमृगयामिष-

हड्डेन्द्रहननबाढ विचारणं त्रयस्त्रिंशो मयूखः ॥३३॥ आदितोऽशीत्युत्तरैकशततमः ॥१८०॥

दूसरे दिन रानियों से मिलने की इच्छावाली प्रामारी के महलों में प्रवेश करते समय सन्मुख आई हुई पुत्र की चार स्त्रियों से सेवन की हुई राजा की माता राठौड़ी का नम्रतापूर्वक सत्कार करके जनाने की सभा में उसको लाना, अपने ऊपर कल्पना किये हुए दोष को नहीं जानकर अवज्ञा के साथ छोटी बहन के पति को मारने की इच्छा वाले पति के मन में वह इच्छा उत्पन्न हुई जानकर अपनी छोटी बहन के महल में जाकर प्रामारी का उस चेष्टा को प्रकाश करना, राजा की माता की सलाह से महलों में दिन बिताकर आज्ञा दी हुई प्रामारी के वापस जाने के अनन्तर उसकी छोटी बहन राजकुमारी का उसके इशारे को क्रीड़ा करने के घर में रात्रि के समय एकांत में राजा से निवेदन करना, रात के समय में रानी का कहना और प्रभात में उस बात का माता को सूचित करना और चित्तौड़ से सुर्जन की माता गुहिल पुत्री जयवती के भेजे हुए पत्र को पढ़कर सन्देहवाली बुद्धि से मर्म को हेरने वाले राजा को उसका कारण नहीं मिलना, तीसरे दिन सेना सहित बुलाये हुए महलों में पंक्ति में परोसगारी की सिद्धि के समय साथ भोजन करने के आसन पर चहुवान का कहे हुए क्रम से भोजन करना, जनाने से देखे हुए हाड़ा से मँगाई हुई वानगियों में फुलकों की पोटली और राठौड़ी का व्यंग्य के साथ दोनों राजाओं के भोजन में सङ्गत और असङ्गत भाव की सूचना करना, डेरों में आकर उस जनाने के वृत्तान्त को सुनकर उलटा सचिव सहित राणा का अपनी सिंह की शिकार के बहाने से हड्डेन्द्र को मारने के दृढ विचार करने का तैतीसवाँ मयूख समाप्त हुआ और आदि से एक सौ अस्सी मयूख हुए।

प्रायो ब्रजदेशीय प्राकृत मिश्रित भाषा

वैतालीयम्

पठयो कहि रान प्रात ही, सुहि मत संभर पैं सिकार को।
खेला इहिं अद्रि ख्यात ही, सिंहन मारन की सदा सुनैं ॥१॥
अप्पन मिलि अज्ज याहितैं, चढि कहुं संभव होइ तो चलैं।
अतिबल बहु केसरी इतैं, कुंजरदारक यों सबै कहैं ॥२॥

सुनि नृप पठये सिकार के, भेदी जन चहुं ओर भाखियों।
बिक्खहु ढिग जो अबार के, अवसर सिंह बलिष्ट व्है इहां ॥३॥
बिचरत झरिग्राम बाग में, बिक्ख्यो तिन इक केसरी बली।
रानहिं मृगयानुराग में तकि दोरे प्रमदी करोल ते ॥४॥

चित्तौड़गढ़ के महाराणा रत्नसिंह ने प्रात:काल अपने दूत भेज कर बूँदी के राजा सूर्यमल से कहलाया कि चलो शेर के शिकार पर चलते हैं। मैं हमेशा सुनता हूँ कि आपने इस अरावली पर्वत में कई सिंहों को मारा है। हम दोनों आज यहीं से घोंड़ों पर चढ़ कर साथ ही चलते हैं। यहाँ लोग बताते हैं कि हाथी मारने वाले बड़े सिंह बहुत हैं। यह सुन कर बूँदी के राजा ने अपने शिकारी सेवकों को इधर-उधर भेजा कि चारों ओर जा कर शेरों की संभावना का पता कर तुरन्त खबर लाओ। जहाँ भी सूचना मिले कि यहाँ इस इलाके में सिंह विद्यमान है, मुझे अंदर खबर करो। इन भेदियों को झाड़ी गाँव के बाग के पास एक केसरी सिंह नजर आया। राणा की शिकार में प्रीति देख कर वे खुश हो कर यह खबर देने को दौड़ते हुए आए।

कछु दिवसन तैं सु केहरी, मनुजन चक्खि लग्योहि मारिबे।
तिहिं दिन लखि ताहि यों त्वरी, उपबन में रु भजे उमंग सों ॥५॥
पठई अरजी नृपाल पैं, जनमारक झरिबेल अज्ज जो।
क्रमनों दिन मध्य काल पैं, तंहं जो होइ बनैं सिकार तो ॥६॥
बुंदीसहु अप्प बाहिनी, सुनि रिपुभाव समस्त ही सजी।
गढ गढ बिजयावगाहिनी, दुर्जन कोप कृसानु दाहिनी ॥७॥

आते ही उन्होंने समाचार सुनाया कि वहाँ एक डाकी शेर है जो नरभक्षी हो गया है उसके मुंह में आदमी के खून का स्वाद लग गया है। हम उस शेर को स्वयं देख कर उमंग से आपको कहने के लिए दौड़े आए हैं। बूँदी के राजा ने अपने आदमियों से ऐसे समाचार जान कर महाराणा के डेरे पर उमंग से अर्ज करवाया कि यदि शिकार करना है तो यह अवसर है झाड़ी बाग में एक नर भक्षी केसरी सिंह की खबर आई है। शिकार करने को इसलिए हमें दोपहर में ही चलना पड़ेगा। इधर राणा के रिपुभाव को देख कर हाड़ा राजा ने अपनी सेना को भी सज्जित किया जो गढ-गढ पर अपनी

विजय की थाह लेने वाली और कुपित हो कर अपनी क्रोधाग्नि में शत्रुओं को भस्म करने वाली थी।

जब ही चित्तोर तैं जथा, दल लिखि सुर्जन की प्रसू दयो।
तब तैं नृप विस्मई तथा, रानां ढिग अवधान तैं रहैं ॥८॥

यातैं सजिकैं अनीकिनी, पठई केहरि सुद्धि रानपैं।
गरमी नहिं जाइ जो गिनी, हरि हनिबे दिन मध्य हंकिये ॥९॥

सुनि रानहु स्वीय सूर जे, सब पृतना सह सीघ्र ही सजे।
पन रन मन गाढ पूर जे, सोलंखी भट सल्ह सूर से ॥१०॥

प्रामारन बंस पट्टवै, बिंझोलीस असोक से बली।
थित मन कुबिरोध थट्टवै, मच्छरि पौर्बिक पूर्णमल्ल से ॥११॥

तिम सज्जित बाहिनी तहां, क्रमि दुव बुन्दिय चित्रकूट की।
जुग धावर बापिका जहाँ, पूरब पंरथ मिले धराधनी ॥१२॥

रविमल्ल रु रैन भीतिसों, मिलि पुच्छी कुसल मांहिं मांहिं त्यों।
पगि बाहिर मोघ प्रीति सों, अंतर रान धरैं अरातिता ॥१३॥

जब से चित्तौड़गढ़ से आया सुर्जन को माता का गुप्त पत्र पढ़ा तभी से हाड़ा राजा थोड़ा मन ही मन राणा से संदेहपूर्वक सावधान रहने लगा था इसलिए उसने पहले अपनी सेना को सज्जित किया इसके बाद महाराणा को केसरी सिंह की खबर भेजी कि हे महाराणा! शेर को मारने के लिए गर्मी की परवाह नहीं करते हुए दोपहर में ही निकलना पड़ेगा। यह सुनते ही महाराणा ने भी अपनी सेना को शीघ्र ही सज्जित होने का निर्देश दिया। रणभूमि में भी जो अपने मन में गाढ़पन (धैर्य) धारण करता था ऐसे सोलंकी सामंत वीर सल्ह से राणा ने तैयार होने को कहा। यह देख कर प्रमार वंश का पाटवी और बीजोलियां का स्वामी अशोक भी तैयार हुआ। और इसी तरह खोटा विरोध करने की स्थिर बुद्धि वाला वह पूरबिया पूर्णमल भी सज्जित सेना के साथ हुआ। इस तरह बूँदी और चित्तौड़गढ़ की दोनों सेनाएँ सज्जित हो कर चलीं। नगर के आगे अवस्थित धारू की बावड़ी के पास दोनों राजा सेना सहित मिले। हाड़ा राजा सूर्यमल ने मिलते ही महाराणा से कुशलक्षेम पूछते हुए पूछा कि आपकी रात्रि तो सुखपूर्वक बीती क्योंकि वह जाहिरा तौर पर तो

प्रीति का प्रदर्शन करने वाला था पर अपने मन में शत्रुता का भाव रखता था।

सम बाजिन जोरि संक्रमैं, अंकित चामर छत्र आदि तैं।
दल घन फन सेसके दमैं, न सहत भार हजार ही नमैं॥१४॥

रानां तंहं संभरीक सों, पुच्छिय सिंह कितीक दूर पैं।
अक्खिय नृप या अनीक सों, थह झरिबेल त्रिकोस थानहै॥१५॥

बत्तैं इम होत बेगही, पत्तै द्वै झरिबाग पास ते।
गरदावन रीति जे गही, निजनिज सासन बाहिनी उभै॥१६॥

दोनों छत्र चँवर धारी राजा घोड़ों पर सवार हो साथ साथ वहाँ से आगे चले। दोनों की सेनाएँ पीछे-पीछे धरती कंपाती बढ़ी जिनके पदाघातों से शेषनाग के हजार ही फन लचक उठे। थोड़ा आगे जाने पर महाराणा ने हाड़ा राजा से पूछा कि यहाँ से वह स्थल कितना दूर है जहाँ केसरी सिंह बताया गया है? इस पर चहुवान सूर्यमल ने कहा इस समय जहाँ सेना चल रही है वहाँ से तीन कोस का फासला समझिये। इस तरह बातों ही बातों में झाड़ी बाग के पास दोनों राजा पहुँचे। अब घेर कर सिंह को एक निश्चित दिशा में निकालने के लिए दोनों राजाओं ने अपनी-अपनी सेना को झाड़ी बाग का क्षेत्र घेरने भेजा।

षट्पात्

पहुँचंत तंहं दुव पहुन दुव हि बेढन पठये दल।
अप्प रहिय इक ओर थप्पि निष्क्रम संभव थल।
भूप बिदित छल भुल्लि स्वीय घेरन पठये सब।
निजन जनाई नांहिं तकी जुहि रान सु पै तब।
इम पिक्खि अलप रच्छक अधिप रान चढ्यो ससचिव द्विरद।
स्वामि को सैंन दिय तंहं सचिव हनन हड्ड यह बेर हद॥१७॥

वहाँ पहुँचते ही दोनों राजाओं ने अपने-अपने दल को शीघ्र भेजा और आगे नहीं जाने योग्य और सिंह के होने के संभावित स्थल के एक ओर महाराणा ने मोर्चा लिया और दूसरी तरफ का क्षेत्र बूँदी के हाड़ा राजा ने संभाला। हाड़ा राजा ने इस समय कपट की बात भूल कर अपने सारे सैनिकों को घेरने के लिए जाने को कहा। इस पर राजा के खास सामंतों ने नहीं जाने

को कहा और राणा की ओर संकेत किया। इस संकेत को पा कर हाड़ा राजा ने थोड़े सामन्तों को वहीं रखा और शेष को भेज दिया। इस समय राणा अपने सचिव पूर्णमल के साथ हाथी पर सवार हुआ। हाड़ा राजा को कम रक्षकों के साथ देख कर पूरबिया पूर्णमल ने महाराणा को संकेत किया कि हाड़ा राजा को मारने का यह सबसे उपयुक्त समय है।

पीलु चढत परपीलु कह्यो नृप सोंहु चढन क्रम।
अक्खिय नृप हय उचित तिम न इहिं खिन तंबेरम।
इच्छत रानहु यहहि बहुरि न कहिय गज बैठन।
सय दब्बिय तंहं सचिव तुपक कर गहत रान तन।
अरु कहिय छत्र यह बेर अब तब नृप दिस फेरिय तुपक।
तब छांहं परत झझक्यो तुरग तक्कन पुब्बहि काल तक॥१८॥

महाराणा रत्नसिंह ने हाड़ा राजा से कहा कि आप भी हाथी पर सवार हो जाइये। इस पर सूर्यमल ने कहा कि मैं घोड़े पर ठीक हूँ। फिर अभी दूसरा हाथी उपलब्ध भी नहीं है। इस पर महाराणा ने कहा जैसी आपकी इच्छा। आगे दूसरी बार इसरार नहीं किया। महाराणा ने बंदूक हाथ में ली इसी समय राणा के सचिव ने अपने स्वामी का हाथ दबा कर फिर से संकेत किया कि यही अवसर है। तब महाराणा ने अपनी बंदूक को राजा की दिशा में किया पर बंदूक की हिलती छाया से हाड़ा राजा का घोड़ा बिदक गया और निशाना लेने से पहले ही दूर चला गया।

हय झझकत नृप हड्ड दिट्ठि सीसोद ओर दिय।
तुपक फेरि निज तरफ हनन तक्कहिं सोधी हिय।
सामंता दिक स्वीय हुते कछु ढिग तिन हेरिय।
प्रभुदिस क्यों लिय तुपक न द्वै रिपुता कहुं नेरिय।
तुरगहिं उडाइ तक्कहिं ततो झटहि टारि लैहैं झटकि।
इत सावधान होतहि अधिप खलन रह्यो अंतर खटकि॥१९॥

घोड़े के बिदकते ही हाड़ा राजा : राणा की तरफ देखा तो क्या देखता है कि वह बंदूक को उसी की दिशा में घुमा कर मारने की सोच रहे हैं। इसी समय राजा के काका सामंतसिंह आदि जो राजा के सामंत राणा पर नजर रखे

हुए थे उन्होंने जब यह देखा तो तुरन्त सोच लिया कि महाराणा यह सब कुछ शत्रुता के वश कर रहा है। यह सोच कर वे अपने घोड़े बढ़ा कर हाथी के पास आ गए ताकि ऐसा प्रयास फिर करने की हालत में घोड़े को कुदा कर बंदूक छीन सकें। इस तरह राजा की सावचेती और उसके सामंतों की सावधानी उन दोनों छलियों के मन में खटकी।

कछु हय झपट कराइ बाम टारि रु दक्खिन बनि।
नृप अक्खिय अब निकट मृगप आगम महिपन मनि।
इहिं अंतर आराम पिट्ठि तासे बजि पद्धर।
बिरचि हक्क रन बढत कढ्यो करिअरि धुत केसर।
प्रकार कुद्दि परतहि पुहवि दुव दिसलखि हुव दल दुगम।
लव चरम अंग बैठक लहि रु समुह अल्प जाने सुगम॥२०॥

हाड़ा राजा ने तुरन्त ही घोड़े को बढ़ाया और हाथी के बाईं ओर से दाहिनी ओर कर लिया और कहा कि हे महाराणा! अब वह स्थल आ गया है। यहीं निकट ही वह मृगपति सिंह है यह समझिये। इसी बीच इस बाग में पीछे की ओर से तासे (वाद्य यंत्र विशेष) बज उठे। हाका शुरू हुआ। इससे सिंह सीधा अपनी अयाल कँपाता हुआ बाग की दीवार से उछल कर भूमि पर आया। जब सिंह ने दोनों ओर आदमी देखे तो क्षणभर को अपनी पूँछ टिका कर बैठा पर कम आदमी देख कर सामने की दिशा में बढ़ा।

बत्तहिं बदत बिलंब रान तंहं तुपक प्रहारिय।
उडि टप्पा मुख अग्ग उपल गुटिका उच्छारिय।
कंकर लग्गत काय धप्यो अभिमुख केसरधर।
भग्गे सामज भीत खाइ बलिबलि अपष्ट खर।
व्है अग्ग कुंत बीरन हनें तंबेरम न रुक्यो तदपि।
धसिगो समीप गिरि घन धवन जवन स्रवन सह चीह जपि॥२१॥

राजा ने बात कही इतनी ही देर लगी होगी कि तभी महाराणा की बंदूक गरज उठी पर निशाना चूक जाने से गोली सिंह के मुँह के पास पड़े पत्थर को लगी और गोली लगने से पत्थर का टुकड़ा टूटकर उछला और सिंह को जा लगा। कंकर के लगते ही वह अयालधारी सीधा राणा के हाथी

की ओर लपका। जिसके भय से हाथी भागा और महावत के बार-बार तीखा अंकुश मारने पर भी नहीं रुका। नीचे साथ चल रहे रक्षकों ने अपने-अपने भाले हाथी को वापस मोड़ने के लिए उसकी सूंड पर चुभाये पर व्यर्थ हाथी नहीं रुका। वह डरा हुआ हाथी तो पास ही पहाड़ी पर उगे हुए धावड़ा के एक घने कांटेदार झुरमुट में चीखता हुआ सीधा जा घुसा।

पैठत खर तरु प्रखर तुट्टि कोनन होदे तक।
पूरनमल्लक पग्घ साख साखन बंधी स्वक।
कुंदे फटि छुटि करन गई तुपकहु दोउन गिरि।
बचे निट्ठि आयुबल चिपे तस पिट्ठि पिट्ठि चिरि।
अध्वहिं मिलें न तंहं जाइ इभ चकित रुक्यो पब्बय चढत।
इत भूप ठहरि दिय पुब्ब इक विसिख सिंह सम्मुह बढत॥२२॥

हाथी के इस तरह अप्रत्याशित वहाँ घुसने से धावड़े के पेड़ों की लगी टक्कर से होदे का एक कोना टूट गया। राणा के खास सलाहकार पूर्णमल की पगड़ी पेड़ पर अटक कर वहीं छूट गई। महाराणा के हाथ की बंदूक का कुंदा टूट गया और हाथी पर सवार दोनों शिकारी नीचे भूमि पर आ गिरे। गिरते समय दोनों की पीठ उस झुरमुट के कांटों से बिंध कर चिर गई पर थोड़ा आयुबल अभी शेष था इसलिए जीवित बच गए। उधर हाथी को आगे रास्ता नहीं मिला इसलिए वह मुड़ कर पास की पहाड़ी पर नहीं चढ़ पाने से वहीं रुक गया। इसी समय सामने उछल कर आते सिंह को हाड़ा राजा ने अपना एक तीर मारा।

दंती भग्जत दरित पत्ति सब बिकल पलाये।
अरु प्राघुन असवार अखिल निज प्रभु पथ आये।
पाइन गहन प्रबेस तरुन पैठे उत्तरि तब।
निट्ठिन तिन रतनेस जियत खोज्यो सपीलु जब।
संभरी इत सु दै इक्क सर सजि पर संहित तुरग तजि।
दिय समुह पैंड इक इक दुलभ भी मनहु जट भेट भजि॥२३॥

हाथी के इस तरह भागते ही डर कर पैदल सैनिक भी भागे और अतिथि के साथ वाले घोड़े पर सवार सामंत भी घोड़ा बढ़ाते हुए उस दिशा में

आए जिधर उनके स्वामी का हाथी गया था। सामने घनी झाड़ियां और पेड़ पा कर वे घोड़ों से उतर कर पैदल ही भागे। बमुश्किल तमाम उन्होंने अपने महाराणा और उसके हाथी को खोजा। इसी समय चहुवान राजा सूर्यमल ने घोड़े से उतर कर अपना दूसरा तीर अच्छी तरह संधान कर सिंह को मारा इसके बाद वह सिंह की ओर अपना एक-एक कदम पूरी निर्भीकता से रखते हुए इस प्रकार बढ़ा जैसे जटासुर से मिलने जाते हुए भीम ने अपने कदम रखे थे।

नरपल रसिक निसंक नरन मारक यह नाहर।
तस उर लगि नृप तीर कढ्यो बिल तैं दर्वीकर।
अधिक क्रुद्ध इत आत अग्ग प्राघुन नापित इक।
पग फुलाइ ब्यग्रपन अफल उचकत तकि त्रासिक।
हरि हनत ताहि तिम पिक्खि पहु स्त्रवन पिट्ठि दै अपर सर।
गति नट मलंगि कट्टार गहि अंतक जिम पहुंच्यो अडर॥२४॥

आदमखोर वह सिंह जो निशंक मनुष्यों के मांस का भक्षण करने वाला था उसे जब हाड़ा राजा का तीर लगा तो वह घायल सिंह कुपित हो कर यों बढ़ा जैसे अपने बिल से गुस्साया साँप निकलता है। वह क्रोध से भरा सिंह जिधर बढ़ा उधर से चित्तौड़गढ़ के मेहमान का एक नाई आ रहा था वह शेर को यों आता देख कर अपनी चाल भूल गया और डर कर एक ही जगह पर रुका हुआ कदमताल करने लगा। तभी हाड़ा राजा ने देखा कि यह शेर अभी इस नाई को मार डालेगा तो उन्होंने तुरन्त एक और तीर मारा और तुरन्त ही नट की तरह कलाबाजी खा कर निडर राजा हाथ में काटर लिये यमराज की तरह उसकी ओर लपका।

पहुँचत पुब्बहि प्रान बिकल नापित हुव बिधिबस।
न मरन तस चहि नृपति तमकि उर दिय कटार तस।
तकि ढिक प्रभु तजि ताहि मृगप मार्यो प्रकोष्ठ मुख।
दई बाहुल दारि रुपी पल कछु र सोन रुख।
दूजो कटार बलि बच्छ दिय जो कढ्ढिय तस प्रान जुत।
सिंहहिं गिराइ नापित स्वसत नृप लिय भुजन उठाइ नुत॥२५॥

राजा सिंह के पास पहुँचा तब तक वह व्याकुल नाई डर के मारे अचेत हो कर वहीं गिर पड़ा। राजा ने यह सोच कर कि शेर कहीं नाई को न मार दे तुरन्त अपनी कटार का एक प्रहार किया। राजा ने उसकी ओर देख कर सिंह के मुँह में कटार मारी जो उसके बहुत सारे दाँतों को तोड़त हुई आगे मांस में घुस कर शेर के पुरे मुँह को लहूलुहान कर गई। कटार का दूसरा प्रहार राजा ने सिंह की छाती पर किया जो प्राण लेकर ही निकला। सिंह को इस तरह मार कर राजा ने सिसकते हुए नाई को अपने हाथों पर उठा लिया।

स्वसत छुरी धरि सयन जयन आयो हे थित जंहं।
मृत वह चंडिल मगहि तदपि निज ढिग रक्ख्यो तंहं।
मेवारे कति मुदित समय कति बीर रिसाये।
सहगज सस्त्र सोधि इनहिं ससचिव लै आये।
कित हड्ड रान आतहि कहिय अक्खिय नृप निजमित्र इत।
जन चय बिछोरि घन स्वसन जिमव्है ढिग कहिय समस्त हित॥२६॥

घबरा कर काँपते हुए नाई को हाथों पर उठा कर वह विजयी राजा पहले जहाँ खड़ा था वहाँ वापस आया। वह नाई तो राह में ही मर गया पर उसकी मृत देह को उठाये आया। इसे देख कर कई मेवाड़ के सैनिक तो खुश हुए और कुछ को गुस्सा आ गया पर वे तब तक हाथी और महाराणा के शस्त्र खोज कर सचिव सहित महाराणा को साथ ले वहाँ आए। महाराणा ने आते ही पूछा वह हाड़ा राजा कहाँ है। इस पर राजा ने महाराणा को घेर कर खड़ी भीड़ को हटाते हुए मेघ की सी गर्जना के सुर में जवाब दिया आपका मित्र यहाँ है।

सेना दुव भट सबन रचिय उपदा उत्तारन।
कुसल परस्पर कहि रु पुच्छि हित प्रकट प्रसारन।
जे नृप हरि लखि जाइ मृतहु दारुन लिवाइ मुरि।
पहुँचत बुंदिय पास उभय बिछुरे नय अंकुरि।
निज सिबिर रान यह बत्त निस बामंगी प्रति सब बदिय।
प्रामारि कहिय यह होत प्रभु कहा बलि रु उपदान किय॥२७॥

दोनों ओर की सेना में उपस्थित सामन्तों ने नजराने किये और निछरावल

की। दोनों राजाओं ने एक-दूसरे के कुशलक्षेम के समाचार पूछे और परस्पर स्नेह प्रदर्शित किया। इसके बाद दोनों राजाओं ने वहाँ जा कर मरे हुए उस दारुण सिंह का निरीक्षण किया और सेवकों को उसे लाने का आदेश दिया। फिर वे बूँदी के लिए रवाना हुए और नगर के पास पहुँचने पर दोनों एक दूसरे को अभिवादन कर बिछड़े। अपने शिविर में पहुँच कर महाराणा ने रात्रि समय अपनी वामा प्रमार रानी से शिकार का पूरा वृत्तान्त कहा। पूरी बात सुन कर रानी ने पूछा कि क्या शिकार होने पर आपने हाड़ा राजा को नजराना और निछरावल की ?

कहिय रान किय कछु न अधिक करिबे पुनि अवसर।
तुमहिं अबहिं जो रुचत कहहु तो करहिं प्रीतिकर।
अक्खिय रानिय उचित नृपत हय सस्त्र निवेदन।
सुपै टारि अब स्वामि धरत किय कोन महाधन।
महि प्रमुख दैन जो होइ मन तो छितिपति नन लैन नय।
खिल रक्खि कहा दैहो सु खलु जु अब दिखावहिं अप्प जय ॥२८॥

इस पर महाराणा ने अपनी रानी से कहा कि किसी उचित अवसर पर कर देंगे पर तुम अधिक आग्रह करती हो तो कुछ नजराना और निछरावल की जा सकती है। इस पर रानी ने कहा कि महाराणा! राजा को घोड़े और शस्त्र आदि का नजराना दिया जा सकता है। इस नजराने को देना टाल कर उन्हें कौन सा महाधन देने वाले हैं आप ? यदि आपके मन में राजा को भूमि आदि देने की हो तो सुन लीजिये नीति कहती है कि यह राजाओं को स्वीकार्य नहीं होती। उसने महाराणा से कहा कि अभी बाकी रख कर निश्चयपूर्वक आप कब देंगे। देना है तो अभी आप दे कर वाहवाही लीजिये।

बलि रानिय इम बदत पुब्ब जिम मन्त्रि प्रतीपहि।
स्वांत कुपित किय सयन कथित तदभीष्ट प्रकट कहि।
इम निस वहहु अतीत होत प्राची लोहित हुव।
आयउ तजि अवरोध भूप रानहु बाहिर भुव।
पति प्रीति हानि रानिय परखि स्वामि सरधि सन पंच सर।
करि अंतरंग दासिय कर रु पठई पिहित उदार अर ॥२९॥

प्रमार रानी ऐसा कह कर पूर्ववत रूठ गई। मन में कुपित हो कर वह सो गई और जो इच्छा थी वह उसने प्रकट कर दी। इस तरह रात्रि व्यतीत हो गई और पूर्व दिशा लाल हुई। महाराणा अपना जनाना कक्ष छोड़ कर बाहर आ गए। उधर बूँदी के महलों में रानी ने यह सोच कर कि दोनों राजाओं में स्नेह कम हो रहा है इसलिए कुछ उपहार का भेजा जाना उचित रहेगा। उसने पाँच बाणों सहित अपने पति का तूणीर ले कर अपनी अंतरंग दासी को बुलाया और उससे कहा ये ले जा कर गुप्त रूप से शीघ्र जा कर वहाँ दे आ।

पति सर अति खर पंच अप्पि दासिय कर अक्खिय।
भल्ल दुलभ ए भेंट रान भेजन कहि रक्खिय।
जे तू अब लैजाइ स्वामि पठये कहि सादर।
राजकुमरि ढिक रक्खि सुमति आवहु मुरि सत्वर।
स्वामिनी कथित सह हेतु सुनि सारिय अंतर ढंकि सर।
जवनिका वाट बाहिर जबहि भृत्या कढिय सलज्ज भर॥३०॥

तीखे फाल वाले अपने पति राजा सूर्यमल हाड़ा के पाँच तीर और तरकश दासी के हाथ में दे कर कहा कि यह दुर्लभ भेंट ले जा कर महाराणा की नजर कर आ। वे पूछें तो कहना हमारे स्वामी ने आपको सादर भेंट करने को भेजे हैं। महाराणा सो रहे हों अथवा वहाँ न हो तो तू मेरी बहन छोटी राजकुमारी के पास अच्छी तरह रख कर वापस शीघ्र चली आना। जैसा मालकिन ने कहा उसे अच्छी तरह सुन कर वह दासी अपनी साड़ी के नीचे छिपा कर वह सामग्री ले गई। वह अपनी स्वामिनी का कहा करने को महाराणा के शिविर की कनात के रास्ते से लजाती हुई भीतर जाने लगी।

रदधावन तंहं रचत रानमंत्रिय बिष्टर रहि।
जवनी बाहिर जात चकित दासिय चितयो चहि।
इत उग्गत रवि ओज बेधि पट भल्ल बताये।
संपा जिम घन सघन प्रबिसि गोपित प्रकटाये।
दिस पुब्ब यह रु वह चरम दिस यातैं लखि चमकत इखुन।
तिम करत गुप्त ढक्कसुतहु गिन्यों धुवहि कछु गूढ गुन॥३१॥

इसी समय अपने दाँत माँजने को महाराणा का वह मंत्री पूरबिया पूर्णमल बाहर चौकी (बाजोट) पर बैठा था। कनात से बाहर निकलती हुई दासी को उसने देख लिया। वह सोच ही रहा था कि यह भला इस समय क्यों आई होगी कि तभी उगते सूर्य की किरणें पड़ने से कपड़े से ढके वे तीर चमक उठे। काले बादलों में जैसे बिजली दमक कर पृथ्वी पर सब कुछ प्रकट कर देती है उसी तरह सूर्य की किरणों ने भेद खोल दिया। पूर्णमल पश्चिम दिशा में था और जाती हुई दासी पूर्व दिशा में इसलिए बिना दासी के दिखाए पूरबिया ने सब देख लिया। इन तीरों को ढका देख कर ढक्कू के पुत्र पूर्णमल ने सोचा कि इसमें निश्चय ही कोई राज की बात छिपी है।

दोहा

भृत्या गोपित भानु के, भानुन दमकत भल्ल।
बुल्लि सहठ लखि सब बदिय, महिपहिं पूरनमल्ल॥३२॥

नृप अति मत्रैं सोहि नर, न गिनैं गुरु लघु नैंक।
तक्कैं हुकम बिलंब तिन्ह, चीरैं गहि प्रभु चैंक॥३३॥

दासी द्वारा ढके हुए तीरों के भाल को सूर्य की किरणों ने प्रकट कर दिया। पूर्णमल ने तुरन्त हठपूर्वक महाराणा को ला कर उन्हें दिखाया और कहा कि किसी समर्थ राजा के लक्षण यही होते हैं कि उसकी आज्ञा को सारे लोग मानते हैं। कोई छोटा हो अथवा बड़ा, जो राजा की आज्ञा मानने में विलम्ब प्रदर्शित करे उसे राजा कुपित हो कर चीर डालता है। इस तरह उस पूरबिया ने महाराणा को चढ़ाया।

षट्पात्

भल्लन चमकत भानु द्विगुन ढंकत लखि दासिय।
बुल्लत होत बिलंब हठी उलटी करि हासिय।
तिहिं गहि लावन तमकि पत्ति निज निडर पठाये।
लज्जा बिगरत लखि रु दासि सर कड्ढि दिखाये।
नर तिन समेत पूरन निकट हठि ताकंहं लै जात हुव।
सहचरी तरजि पुच्छत सचिव हेतु बिजन सब ख्यात हुव॥३४॥

सूर्य की किरणों से चमके उन तीरों के भाल को दासी द्वारा अपनी साड़ी के पल्लू से ढकने की चेष्टा को देख कर उसने दासी को बुलाया तो वह उल्टा हँस कर आगे जाने लगी। इससे कुपित हो कर महाराणा ने अपने निर्भय सेवकों से कहा कि उसे पकड़ लाओ। अपनी लज्जा को अब इस प्रकार बिगड़ते देख कर उस दासी ने वे तीर निकाल कर दिखा दिये। वहीं पास में पूर्णमल खड़ा था उसने वे तीर उस दासी से झपट लिये फिर एकान्त में ले जा कर उस सचिव ने दासी को डाँट-डपट कर पूछा कि यह क्या है? और कहाँ ले जा रही थी? तो दासी ने कारण प्रकट कर दिया।

मनहु रंक दृढमुट्ठि भुम्मि खोदत निधि भासिय।
सुनि कारन इम सकल दै रु लै सर तजि दासिय।
ढिग प्रभु के ढक्कूज उदर पकरैं द्रुत आयो।
बिजन अप्पि ते बान दृढहि ब्यभिचार दिखायो।
समुझे कि नांहिं अक्खिय सचिव मन्त्रि सतनु हडु हिं मदन।
स्वामिनी मिलन संकेत सह सरहि पंच पठये सदन॥३५॥

मानों किसी कृपण रंक को गड्ढा खोदते समय धन मिल गया हो यह हालत उस पूर्णमल की हो गई। उसने दासी से कारण जानने के बाद तीर ले कर उसे वहाँ से विदा कर दिया। इसके बाद वह अपना पेट पकड़े हुए (तुरन्त बात को उगलने के लिए कि यह बात उसके पेट में समा नहीं रही हो, मुहावरे के अर्थ में) ढक्कू पूरबिया का पुत्र महाराणा के पास आया। फिर सभी सेवकों को वहाँ से भगा कर एकान्त में महाराणा को वे तीर दिखलाते हुए कहने लगा कि यह सब कुछ व्यभिचार के कारण है। आप समझे कि नहीं। मैंने आपको पहले भी कहा था, अब आप यह अपनी आँखों से देख लीजिये। ये तीर नहीं है ये तो साक्षात देहधारी कामदेव सूर्यमल है। (कवि ने बहुत सुन्दर ढंग से यह दर्शाया है कि कामदेव और कामदेव के पाँच बाण होने से और यहाँ पाँच बाण मिलने से उसे कामदेव के अर्थ में दर्शाया है) और महाराणा! कामिनी (स्वामिनी) से मिलने के संकेत रूप में ये पाँच बाण यहाँ शिविर में भेजे गए हैं।

अंतरंग अनुचरिय अमुक लै जात गुप्त इम।
चीन बसन चमकात तरजि लिय छन्नि प्रसभ तिय।

दर्पन अंबक श्रवन श्रवन अंबक अवनीसन।
हो कछु संसय हृदय सुपै मिटिगो धुव थीसन।
मिलिगो दमंग बारूद मनु असह रान रिस उप्फन्यों।
गिनि सत्य कुहक सूचक गदित भूप हनन निश्चय भन्यों॥३६॥

बूंदी की प्रमार रानी की अमुक नाम की अंतरंग दासी गुप्त रूप से कुछ ले जा रही थी। वह झीने वस्त्रों के नीचे छुपाई हुई चीज देख ली गई और बाद में डांट कर दासी से वह छीन भी ली गई। इस तरह की बात महाराणा से कही गई पर राजा को कुछ भी दिखाने वाले उसके कान होते हैं राजाओं के कान ही नेत्र होते हैं। महाराणा ने भी कानों से देखा। इसके बाद उसके मन में जो संशय था वह पूरी तरह से उनकी बुद्धि से निकल गया। तब वह इस तरह क्रोध में उफना जैसे बारूद आग लगने पर उफनता है। उस जालसाज पूरबिया की सूचना को ठोस सत्य गिन कर महाराणा रत्नसिंह ने हाड़ा राजा सूर्यमल को मारने का निश्चय किया।

रान कहिय संभरहिं अबहिं रानिय हनि आऊं।
पूरन अक्खिय पुब्ब बचन मम सत्य बताऊं।
तरजि मोहि क्रुद्ध तुम बुझि दासिय बिस्वासहु।
जिम स्वामिनि ढिग जाइ प्रीति अति रीति प्रकासहु।
महलन पधारि दंपति मुदित दै तंहं सीख घटीहि दुव।
निज तिय हि लखहु अनुजा निलय हड्डु सहित च्युत सील हुव॥३७॥

महाराणा ने उस (पूर्णमल) चहुवान से कहा कि मैं अभी जा कर अपनी रानी को मार डालता हूँ। इस पर पूर्णमल ने कहा कि देखा! मेरी पहले कही हुई बात सत्य हुई पर अब आप एक काम कीजिये। उस दासी को बुला कर मुझे उसके सामने आप डाँट लगायें। जिससे उसको विश्वास हो जाए। इसी तरह आप (हमारी) स्वामिनी के पास जा कर झूठ मूठ की प्रीति का प्रदर्शन करें फिर आप सपत्नीक हाड़ा राजा के महलों में पधारें और वहाँ अपनी रानी को दो घड़ी के लिए विदा करें अर्थात् उसे दो घड़ी जनाना महलों में जाने की इजाजत दें। तब संभव है आप अपनी पत्नी को उसकी

छोटी बहिन के महल में हाड़ा राजा के साथ शीलच्युत हुई पकड़ सकें।

मन्त्रि मनन सुहु मंत्र महिप उट्ठिय तिय मारन।
पूरन तब गहि पानि कहिय बैठारि सु कारन।
आगम जिहिं हित अत्थ किम सु बिगरावहु यह करि।
रंचहु पिहित रहै न मोघ स्वामिनि जैहैं मरि।
सो करहु इष्ट बाहुरि निसहि पै पहिलैं छल मारि पर।
इक राज्य अधिक किन लेहु अब ध्रुवहि होहु यहं नीति धर॥३८॥

महाराणा ने उस कुटिल सचिव पूरबिया की सारी मंत्रणा को मान लिया और वे अपनी रानी को मारने के लिए उठे तब शीघ्र ही पूर्णमल ने उनका हाथ पकड़ कर बिठा लिया और कहा नहीं, ह" जिस कार्य के लिए आए हैं उसे ऐसा कर आप बिगाड़ देंगे। काम हो जाने पर वह रानी से भी छि॥ हुआ न रहेगा और वह निश्चय ही अपने प्राण त्याग देगी। यदि न मरे तो यह काम तो आप वहाँ से लौट कर रात में भी कर सकते हैं पर अभी तो जरूरी काम उस दुष्ट शत्रु को मारने का है। इससे आपके अधिकार में एकराज्य और आ जाएगा। हे नीति को धारण करने वाले महाराणा! थोड़ा धैर्य रखें, यह अब शीघ्र ही होगा।

कहिय रान हड्डु कंहं अबहि मारन तो उट्ठहु।
चविय सचिव फल चहहु रहहु सब सहहु न रुट्ठहु।
मृगया छल कछु मंडि अबहि सत्रु हनि आवहिं।
जोजो निज जन जोग्य पुनि सु सोसो फल पावहिं।
जापैं निदाघ तोहू जतन हुव सु मोघ मृगपति हनन।
तजि सोहु बिरल भट कज्ज तकि मंडहु मृगन मृगव्य मन॥३९॥

यह सुनते ही महाराणा ने कहा तो मुझे हाड़ा राजा को तो मारने जाने दो! इस पर उसके सचिव ने राय दी कि यदि आप अच्छा फल चाहते हैं तो यह सब कुछ थोड़ी देर सहन कीजिये इस तरह क्रोधित मत होइये। सब्र से काम लीजिये। अभी मृगों (हरिणों) के शिकार के बहाने जाइये और वहाँ शत्रु को मार कर लौट आइये क्योंकि जो व्यक्ति जिस योग्य है उसे उसका

फल मिलना चाहिए। अभी ग्रीष्म ऋतु थी तब भी व्यर्थ ही सिंह को मारने गए। ऐसा मत कीजिये। अब तो अपने कार्य को अंजाम देने के लिए थोड़े आदमियों को साथ ले कर हरिणों के शिकार का मन बनाइये।

अप्पन साधक इष्ट बहुरि निज सुभट बुलावहु।
कारन पुच्छत न कहि खिज्जि इक हुकम खुलावहु।
स्वभट करे संग्राम जेहि त्रय पुब्ब जनाये।
चहि प्रमार चालुक्य मंत्र सुहि बुझि मनाये।
अज्जलों हुती तिन्ह छन्न यह तिहिं कुमंत्र चरमंग तब।
खिल गूढ रक्खि अक्खिय खलन इष्ट हनन बुंदीस अब॥४०॥

अपना कार्य सुगमता से हो जाए इसके लिए अपने भरोसे के सामन्तों को बुलाइये। वे यदि बुलाने का कारण पूछें तो खीज कर बस उन्हें हुक्म दे दीजिए। पूर्व में महाराणा संग्रामसिंह ने जिन तीन को अपना सामन्त बनाया था उन्हें बुला कर महाराणा ने अपना मंतव्य बताया। जानबूझ कर प्रमार और दोनों चालुक्य सामन्तों को बुला कर महाराणा ने मंत्रणा की और जो सचिव की खोटी सलाह अब तक उनसे गुप्त थी उसका अंतिम हिस्सा बताया। पूरी बात गुप्त रख कर मात्र हाड़ा राजा को मारने की बात उन्हें बताई।

कारन पुच्छत कुप्पि कहिय सासन प्रबु कारन।
तिन परदेसिन तबहि न किय हठ हेरि निवारन।
सल्ह रु सूर असोक कथित सद्धहिं बिन्नति किय।
पुनि पूरन तंहं पाप दलन अरि सुलभ मंत्र दिय।
प्रभु मैं रु हड्डु तीन हि प्रथम चहि मृगव्य एनन चलहिं।
त्रय तुमहु आइ मिलि पंच तब खेल सहज मारहिं खलहिं॥४१॥

जब उन्होंने ऐसा करने का कारण पूछा तो पूर्णमल ने उन्हें डाँटते हुए कहा मालिक का हुक्म ही कारण समझो। इसके बाद इन तीनों परदेसियों अर्थात् अनभिज्ञों ने अधिक जानने का हठ नहीं किया। सामंत सल्ह, सूरसिंह और अशोक तीनों ने पूछा यह कैसे होगा? योजना क्या है यह बताने की विनती की। इस पर फिर से पूर्णमल ने शत्रु का पाप काटने के लिए सुलभ

योजना बताई कि मैं, प्रभु (महाराणा) और हाड़ा राजा हम तीनों ही पहले एक साथ हरिणों के शिकार के लिए प्रस्थान करेंगे। आगे रास्ते में तुम तीनों आ कर मिल जाना। इस प्रकार हम पाँच हो जाएँगे और शत्रु को मारने का खेल सहज ही खेल लेंगे।

थिर पूरन मत थप्पि सु कहि पठई सीसोदहु।
अधिप हड्डु हम अज्ज मृगन मृगया बंछत बहु।
रोप सुजस तुमरोहु मुदित श्रुति नयन मिलावहिं।
पै परिकर अति अल्प रक्खि बिजनन रस पावहिं।
सीसोद भृत्य सासन सुनि सु जाइ कहिय नृप हड्डु जंहं।
रानीहु स्व अघ पूरन रचित तिम गुढहु लिय जानि तंहं॥४२॥

इस तरह पूरबिया पूर्णमल ने महाराणा के मन में पूरी बात स्थापित कर कहा कि अब सेवक भेजिये और कहलवाइये कि हे हाड़ा राजा! हम आज आपके साथ हरिणों के शिकार पर जाना चाहते हैं। आपकी धनुर्विद्या की बड़ी तारीफ सुनी है उसे हम अपनी नजरों से देखना चाहते हैं। हाँ, पर साथ में परिकर कम ले कर चलेंगे जिससे हम एकान्त में साथ रह कर आपके संग-साथ का रस लेंगे। महाराणा के सेवक ने अपने स्वामी की उस आज्ञा को जा कर हाड़ा राजा से निवेदन किया। रानी को पूर्णमल के गुप्त रूप से रचे हुए पाप (लांछन) का पता चल गया।

कोउक नाजर कहिय पाप तिहिंदिन रानिय प्रति।
हेति न दिय ढिग रहन मरन संसय दासिन मति।
इम पतनादिक अटकि गाढ बेढन बैठी गहि।
अनसन धरि तब यहहु रुकी संसार बिरत रहि।
तस अंतरंग दासिय तिमहि पठई कहि अनुजा प्रतिहु।
अवरोध जनन जिहिं दिन इतहु गिनी मनन भावी गतिहु॥४३॥

कदाचित् किसी नाजर ने सारी बात उस दिन रानी को बता दी। महाराणा के सचिव ने पहले से व्यवस्था कर दी थी कि कोई शस्त्र रानी के पास न रखा जाए और रानी के मरने के संशय से दासियों को नजर रखने को कहा गया इसलिए वे रानी को घेरे में ले कर (घेर कर) बैठ गई कि रानी

कहीं कूद कर आत्मघात न कर ले। ऐसे में अन्नजल का त्याग कर और संसार से विरक्त हो कर रानी घेरे में बैठी रही। रानी ने तब अपनी अंतरंग दासी को बूँदी के महलों में अपनी छोटी बहन के पास भेजा। वहाँ महल में भी जनाने की सारी स्त्रियाँ उस दिन भविष्य में होने वाली किसी अनहोनी के कारण चिंतित बैठी हुई थीं।

अघ तोलों नृप एह निजन बुद्धहु प्रकट्यो नन।
अब सुनि चउ आखेट मिलहिं दुव दुव मंत्री मन।
सारन सुत सामंत अप्पि अप्पन द्वितीय थिर।
प्रनमन जननिय पयन क्रम्यों अवरोध मुदित किर।
रट्ठोरि कहिय बंदन रचत सुत हठ तजि मत लेहु सुनि।
मम सपथ तोहु इक दुव मिलि रु पावहु जिन बध कुजस पुनि ॥४४॥

बुद्धिमान हाड़ा राजा ने तब तक सामने वाले पक्ष के कपट को अपने लोगों के सामने प्रकट नहीं किया था। अब जब चारों रानियों ने सुना कि वे दोनों वहाँ आखेट के बहाने दो-दो मंत्रियों सहित मिलेंगे तो वे सभी उदास हो गईं। इसी समय सारणदेव हाड़ा के पुत्र सामंतसिंह के साथ राजा जनाना में अपनी माँ को और बड़ों को प्रणाम करने आया। उसने सभी के चरणों में सिर झुकाया तभी आशीष देती हुई राठौड़ वंशीय रानी माँ ने कहा कि बेटा हठ छोड़ कर मेरी सलाह सुन ले! तुझे मेरी शपथ है मुझे लगता है तुम दोनों मिलोगे और आपस में कट मरने का कुयश लोगे।

करि अश्रुत हित कथित पुत्र दुर्गति मति पावहु।
गहि बय हठ बल गर्व जिन सु मम दुग्ध लजावहु।
एकाकी मरि अजस जस सु मारक हनि जानहु।
करन जोरि नृप कहिय मरन संसय धुव मानहु।
जो होहिं सत्य तो सुत जसहिं रक्खि मरहिं सत्थिन सहित।
तजि पच्छ सोक मुद हिय तनहु इम न गिनहु जीवहिं अहित ॥४५॥

पुत्र! मेरी कही इस हित की बात को अनसुना कर दुर्गति को मत प्राप्त होना। मेरे बेटे अपनी यौवनावस्था के हठ और बल के गर्व में कहीं मेरे दूध को लज्जित न कर बैठना क्योंकि एकाकी मरने में अपयश है। हाँ, यश

तो मारने वाले को भी मार कर मरने में है। इस पर हाथ जोड़ कर हाड़ा राजा सूर्यमल ने कहा कि माँ! मरने में तो आप निश्चय ही संशय जानिये। अव्वल तो मरूँगा नहीं पर यदि भाग्य से यह हो गया तो आप यह निश्चय समझें कि यदि मरेगा आपका बेटा तो यश को उज्जवल रख कर ही साथियों सहित मरेगा। आप यह चिंता और शोक का पक्ष छोड़ कर अपने प्रसन्न हृदय में गर्व धारण करें। इस तरह के अहित की बातें मेरे जीवित रहते न सोचिये।

यह सुनि थप्पलि अंस सिक्ख अप्पिय आसिख सह।
ध्वजिनी जुत भूधनहु सज्जि हंकियतासिख सह।
रानहु परिखद रचिय सबल हड्डु हिं आवत सुनि।
स्वीय सुभट सामंत चाहि समुचित बुल्ले चुनि।
संकेत दियउ ढक्कू सुतहिं स्व पर चलन पंच कि छ सब।
तजि हय प्रकोष्ट बुंदिय पतिहु तंहं गय भटन उपेत तब॥४६॥

राठौड़ रानी माँ ने पुत्र के मुँह से यह सुन कर आशीष देते हुए अपने पुत्र का कंधा थपथपा कर पुत्र को विदा किया। राजा ने भी अपनी सेना सहित सज्जित हो कर अपनी माँ की दी हुई सीख को मन में याद करते हुए प्रयाण किया। उधर महाराणा शिविर में अपनी राजसभा आयोजित कर बैठा था। हाड़ा राजा के आगमन की सुन कर उसने अपने चुने हुए सामंतों को बुला रखा था। संकेत कर महाराणा ने ढक्कू के पुत्र पूर्णमल [illegible]विया से कहा कि हम शत्रु पर चढ़ कर अधिक से अधिक पाँच छह लोग ही जाएँगे। इसी समय ड्योढी पर अपना घोड़ा छोड़ कर बूँदी का हाड़ा राजा अपने सामंतों सहित वहाँ आया।

दोहा

सनति रान आयउ समुख, अवधि लंघि कछु अग्ग।
नमन अनंतर चाप निभ मारक मग्गन मग्ग॥४७॥

इम हड्डु हिं सीसोद अरि, पटतोरन प्रविसाइ।
सह निज निज सुभटन सभा, जुग नृप बैठे जाइ॥४८॥

पान अतर मादक प्रमुख, हुव बाहिर मनुहारि।
अंतर सद्धन इष्ट कों, रान चहत बिनु रारि॥४९॥

सो संभर के सब सुभट, नृप अकथित जानैं न।
भेद सु लहि चउ रानभट, सोधै निजप्रभु सैंन॥५०॥

इत तादिन कछु अग्ग सों, स्वागत नंति सबिसेस।
प्रेम नेम न रह्यो प्रकटि, सद्धिय रान निसेस॥५१॥

विनम्र हो कर महाराणा सभा से उठ कर हाड़ा राजा की अगवानी के लिए नियम से अधिक दूरी तक सामने गया जैसे झुकने के बाद धनुष मारता है उसके सदृश मारने वाला और याचक जरूरत से अधिक झुकते हैं। इसी प्रकार झुक कर महाराणा ने हाड़ा राजा को अपने शिविर में कनात से बनी ड्योढी से प्रवेश कराया। इसके बाद दोनों राजा अपने-अपने सामन्तों के साथ राजसभा में बैठे पान, बीड़ा, इत्र, अफीम, शराब आदि की ऊपरी मन से प्रगाढ़ मनुहारें की गई। युद्ध किये बिना ही अपने अभीष्ट को साधने के लिए महाराणा ने अतिशय विनम्रता का प्रदर्शन किया। इधर चहुवान के सामन्त तो अपने स्वामी के नहीं बताने के कारण कुछ नहीं जान रहे थे, वे अनजान थे और उधर महाराणा के चार सामंत जो पूरी योजना को जानते थे वे अपने स्वामी के संकेत की प्रतीक्षा में थे। उस दिन विशेषकर अगवानी में आगे तक महाराणा का आना, स्वागत में अधिक झुकना आदि की क्रियाओं से स्नेह नहीं झलक रहा था बस महाराणा यंत्रवत सब कुछ निपटा रहे थे।

इतिश्रीवंशभास्करे महाचम्पूके पूवार्यणे पंचम राशौ वीतिहोत्र-वसुधेश्वर बीज्यवर्णनबीजहड्डाधिराडस्थिपाल वंश्यानुवंश्याविहितव्या-ख्यानावसरवक्तव्यबुन्दीवसुधावरमिहिरमल्ल चरित्रेप्रातरवबुद्धत-द्राणानुमतबुन्दी पृथ्वीशप्रस्थापितमृगमाणप्रमितझरिग्रामाराममहामृगेन्द्र-प्रत्यायातमृगयुप्रकरपृथिवीपालयुग प्रोत्सारण सज्जस्वस्वसेनसमुपेत-प्रस्थितप्राप्यप्राप्तप्रदेशनखधरनिस्सारणानुकूलनियोजितानीकिनीद्वय भूमिभुजङ्गोभय स्वामिमतसाधकसमुचितस्थानसमवस्थान गजारूढ-सम्बुद्धसचिवसञ्ज्ञपनराणा बुन्दीश व्यापादनानुकूलानीताग्नियन्त्रछायोद्-

भ्रान्तोत्प्लवनप्रारीप्सुसप्तिसावधानशाकम्भरेशशत्रुदक्षिण पार्श्वपरिवर्तन वाद्यादिकलकलवेलबहिर्निष्कासितलवकालचरमाङ्गोपविष्टसम्मुख-दृष्टस्वल्पजनच्युतराणाग्नियन्त्रगुटिकाभूपातोच्छालितकर्कर कुपित-मृगेन्द्रमारकवर्गोपरिधावन।

इति श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण की पंचम राशि में अग्निवंशी चहुवान वंश वर्णन के कारण हड्डाधिराज अस्थिपाल के वंश और वंश की शाखाओं की कथा बताने के समय के वचनों में बूँदी भूपति सूर्यमल के चरित्र में प्रभात में राणा की सलाह जानकर बूँदी के राजा के भेजे हुए शिकारियों के बताये हुए झाड़ीग्राम के बाग में सिंह के होने का विश्वास कर शिकार खेलने वालों के समूह के साथ दोनों राजाओं का उद्योगी होना, अपनी अपनी सजी हुई सेना के साथ प्रस्थान कर प्राप्त होने वाले प्रदेश में पहुँच कर सिंह के निकालने के अनुकूल दोनों सेनाओं को हुक्म देकर दोनों भूपतियों का शिकार के योग्य स्थान पर ठहरना, हाथी पर चढ़कर सचिव के इशारे से सावचेत हुए राणा की बूँदीश को मारने के अनुकूल लाई हुई बन्दूक की छाया की भ्रान्ति से कूदने की इच्छा वाले घोड़े से सावधान चहुवान का शत्रु के दक्षिण की ओर जाना, वाद्य बजने आदि कोलाहल से बाग के बाहिर निकालते हुए थोड़े समय तक पिछले शरीर से बैठकर सन्मुख थोड़े मनुष्यों को देखकर राणा की बन्दूक चूकने से गोली के भूमि पर टप्पा लगने से उछले हुए कंकर से कुपित सिंह को मारने वालों के समूह पर दौड़ना।

तद्भीतिपलायितावमतनियन्तृननिमित्तनिजनिजनिवेद्योपदा निवेदनानन्तरसमुचितसमुत्तारण विधान पृष्टमिथःकुशलसमानायित-प्रशंसितपरासुपञ्चाननप्रति प्रस्थितपृतनोपेतपृथ्वीशयुग्म स्वस्वसदन-संविशन निशावसर प्रज्ञातप्रशंसापूर्वकपतिप्रोक्तपृथ्वीशसूर्यमल्ल पट्टिशप्रहारपंच मुखपरासुत्वप्रामारीप्रियोपदा दिपृच्छाप्रतीपराणाऽन-नुष्टाननिवेन प्रातःप्राबल्यप्राप्तप्रामारीप्रेष्यापाणिप्रच्छन्नप्रेषितप्रियोपास-ङ्गप्रस्तपृशत्कपञ्चक पूर्णमल्लनिशशालाकनिजनृपनिवेदन पंच बाणप्रेषण-प्रत्ययनिर्णीतनिजमहिलामतमनोहरमार्तमद्मदनमहाराजमिहिरमल्ल मिथ्या-भिशप्तप्रामारीप्रमापणप्रारीप्सुराणापूर्णमल्लप्रोक्तपृथमृषाकल्पितवामीङ्गी-

शीलभ्रंशवीक्षणविलम्बावमनन निवारितत्कालवनिता बूँदीश व्यापाद-नारम्भदृढीकृतस्वल्पसार्थमृगमृगव्यमिहिरमल्ल मारणमन्त्रपूर्णम ल्लप्रयुक्त-राणासमाहूतप्रामार चालुक्य सामन्त त्रय सहि तनिश्शलाकस्वाभीष्ट-सिद्धिनिश्चयन।

उसके भय से सूर्यमल से मिलकर मारे हुए सिंह की प्रशंसा के समय दोनों सेना के उमराओं का नारायणदास के पुत्र (सूर्यमल) की प्रसन्नता के निमित्त अपनी अपनी जानकारी के साथ नजर किये बाद उचित न्यौछावर करना परस्पर कुशलता पूछकर मरे हुए सिंह की प्रशंसा कर सेना सहित वापस प्रस्थान कर दोनों राजाओं का अपने अपने सदन में प्रवेश करना, रात्रि के समय पति के कहने से राजा सूर्यमल की कटारी के प्रहार से सिंह को मारने की प्रशंसा जानकर प्रामारी के पति से नजराना आदि का पूछने पर राणा का नजराना करने का निवेदन करना, प्रभात समय प्रबलता प्राप्त करके प्रामारी की दासी के हाथ से गुप्त भेजे हुए पति के भाथे से प्रशंसा योग्य पाँच बाणों को पूर्णमल का एकान्त में अपने राजा की नजर करना, पाँच बाण भेजने के सबूत से अपनी स्त्री का मत निर्णय करके सुन्दर मूर्तिमान कामदेव रूप महाराज सूर्यमल के मिथ्या दोष से प्रामारी को मारने की इच्छा वाले राणा का पूर्णमल्ल के कथन को सत्य मानकर मिथ्या कल्पना से स्त्री का शील नाश होने को देखने के लिए बिलम्ब करना, उस समय स्त्री को छोड़कर बूँदीश को मारने का आरम्भ दृढ करके थोड़े साथ से हरिणों के शिकार में सूर्यमल्ल को मारने की सलाह से पूर्णमल्ल के कहने से राणा का प्रामार, सोलंकी आदि तीन उमरावों को बुलाकर एकान्त में अपने अनुकूल साधन निश्चय करना।

कारणपृच्छाप्रतीपनिज नियोगनियोजिततत्रय मतमन्त्रिमतमेद-पाटमहीपस्वल्पतमसार्थसहितकुरङ्गाच्छोटनक्रीडाकपटस्वाभिमत-साधनार्थहड्डाधिराजसमाव्हान दूरीकृतशस्त्रादिसंस्थासाधनशुद्धान्त-परिचारिकाजनत दिनविज्ञातसचिवहेतुकमिथ्यास्वशीलभ्रंशाभिशापवि-फलितवपुर्विहा नोपायधृतानशनप्रामारीराज्ञीरक्षण राणासम्मतसिसाधयिषु स्वल्पसार्थमृगमृगव्यरिंसाप्रतिष्ठासुशुद्धान्तसङ्गतनमस्कृतराष्ट्रकूटो पुनः-पुनःप्रबोधितस्वीकृतससपत्नसंस्थानसामन्त द्वितीय तदाच्छोटनचिक्री-

डयिषुसन्नद्धसकलसैन्यसमुपेतबुन्दीशशीर्षोद्दशिबिरसमागमन सीमातिक्रम-सम्मुखागतवहिस्सूचितसातिरेकस्नेहधनुर्नतिधरचित्रकूटराजप्रतिसीरा-प्राकारप्रतोलीप्रवेशितबूँदीशससत्कृतिस्वस्वसामन्तसंघसहितसभासमुप-वेशनंचतुस्त्रिंशो मयूखः ॥३४॥ आदित एकाशीत्युत्तरैकशततमः ॥१८१॥

कारण पूछने के विरुद्ध अपनी आज्ञा से योजित उन तीनों को मन्त्री के मत से मेवाड़ के राजा का बहुत थोड़े साथ सहित हरिणों की शिकार खेलने के मिस से स्वामी की सलाह साधने के लिए हड्डाधिराज को बुलाना, शस्त्र आदि मृत्यु के साधनों को दूर कर जनाने की दासियों का उस दिन सचिव के कारण अपने शील नाश होने के मिथ्या दोष को जान कर शरीर छोड़ने के लिए उपवास करने वाली प्रमारी की रक्षा करना, राणा की सम्मति को साधने की इच्छावाले और अल्प साथ से शिकार खेलने वाले प्रतिष्ठा से जनाने में श्रेष्ठ नमस्कार करने वाले और राठौड़ी से बारम्बार समझाये हुए शत्रु को अपने साथ मारने को स्वीकार करने वाला सामन्त है साथ दूसरा जिसके उस शिकार खेलने की इच्छा वाला, सजी हुई सब सेना के साथ बूँदीश का सिसोदिया के डेरे पर आना, सीमा लांघकर सम्मुख आये हुए बाहर से अत्यन्त स्नेह दिखाने वाले और धनुष के समान नम्रता धारण करने वाले चित्तौड़ के राजा का कनात के कोट के द्वार में प्रवेश करने वाले बूँदीश के सत्कार सहित और अपने अपने उमरावों के समुदाय सहित सभा में बैठने का चौतीसवाँ मयूख समाप्त हुआ और आदि से एक सौ इक्यासी मयूख हुए।

प्रायो ब्रजदेशीय प्राकृत मिश्रित भाषा

दोहा

आदर हड्डुहिं रान इम, मिलि बैठत कृत मोद।
सचिव सैंन दिय सल्ह तंहं, प्रहसन बचन प्रतोद ॥१॥

हो समुचित मृगपति हनन, कल्हि कटक सब कज्ज।
इक्खहु मन हड्डुन अहो, एनन सन भय अज्ज ॥२॥

सम्मानपूर्वक हाड़ा राजा और महाराणा के सामन्त मिल कर बैठे। आपस में मोदपूर्वक वार्तालाप होने लगा। यहाँ महाराणा के सचिव पूर्णमल ने सल्ह को संकेत किया और उसने हँसी-हँसी में अपने वचन का चाबुक

चलाया अर्थात् मजाक के अंदाज में व्यंग्योक्ति का प्रयोग किया। उसने कहा कि कल तो सिंह के शिकार को गए थे इसलिए सेना सहित जाना लाजमी था पर आज देखो कि हाड़ाओं को हरिणों से भी भय लग रहा है इसलिए सेना सज्जित कर आए हैं।

षट्पात्

मृगगन रमन मृगव्य क्रमन पुब्बहि सूचन किय।
चउ कि पंच धनु चतुर लैन सब रैन भै न लिय।
तृनभोजिन भय तदपि अज्ज दृढ हुव हड्डुन उर।
दुव जंहं राघव देव धीर अवसर थंभन धुर।
सिखयें सु नर्म चालुक चवत हसि प्रामार हु कहत हुव।
इहिं बंस संटि पुत्रिन असुन हल्लू सम बहु लहत हुव ॥३॥

हरिणों के शिकार पर चलने के लिए पूर्व में ही सूचित कर दिया गया था कि इसके लिए चार पाँच चतुर धनुर्धारी ही काफी होंगे पर महाराणा रत्नसिंह के भय से सभी को साथ ले आए। इसकी आवश्यकता नहीं पर करें क्या, इन तृण भक्षी हरिणों का भय भी आज हाड़ाओं के दिल में समा गया है। इस अवसर पर सभा में प्रसंगानुकूल बात करने वाले धीर गंभीर राघवदास और देवसिंह भी उपस्थित थे पर महाराणा के सचिव के सिखाये हुए चालुक्य की मजाक पर प्रमार ने उसे संबोधित करते हुए कहा कि इस वंश की क्या पूछते हो। यहाँ तो बेटी दे कर उसके बदले में हल्लू जैसों ने प्राण प्राप्त किये हैं।

दोहा

देव रु राघव हड्डु दुव, आये ए भजि अग्ग।
तकि नृप संग मिलाइ तिन्ह, इम किय हास्य उदग्ग ॥४॥

सल्ह असोक कुनर्म सुनि, सचिव सैन अनुसार।
स्मित प्रहसित अट्टाट्ट सन, परपक्खिन किय प्यार ॥५॥

द्विज कड्डुत ढक्कू दिय, रान हु बदन रुमाल।
तंहं न हसे पर अल्पतम, सूरादिक परसाल ॥६॥

बच्छोला कोटा बसति, देव रु राघवदास।
एह सुनत बुल्ले अनखि, बीर भुजन बल बास॥७॥

यह सुनते ही देव और राघव हाड़ा अपनी जगह से उठ कर आगे आए और उन्होंने अपने राजा की ओर देखा तभी उस पक्ष ने अट्टहास किया। सल्ह और अशोक दोनों ने कुटिल उपहास को सुन कर सचिव के संकेतानुसार अट्टहास न कर मात्र मंद हास्य से काम चलाया। यह बात दूसरे पक्ष को ठीक लगी। हँसने पर दाँत दिखाई न दे जाएँ इसलिए ढक्कू के पुत्र पूर्णमल ने रुमाल निकाल कर अपने मुँह को ढक लिया और ऐसा ही महाराणा ने किया। सामने वाले शत्रु संहारक हाड़ा पक्ष का कोई व्यक्ति थोड़ा भी नहीं हँसा। बच्छोला और कोटा में रहने वाले देवसिंह और राघवदास यह सुनते ही कुपित हो कर बोले कि वीरों का बल उनकी अपनी भुजाओं में निवास करता है।

षट्पात्

कबहु किमहु तजि कलह न व्है कातर प्रबीर नर।
अतिबलता उत अप्प घत्तिरक्खिय काके घर।
सीसोदन कुल सबल तेज राउल तो तक्कहु।
भिरि मंडन सन भजिग प्रचित बिश्वासघात पहु।
पुनि सेनपाल मुंडिय पुरा सर करि किरनादित्य सिर।
संटिय सुता जु तस बर सरन हुव हल्लुव सुहृ बिदित हिर॥८॥

रणभूमि में वीर कभी और कहीं पर कायर नहीं होते हों ऐसी बहादुरी आपके वहाँ किसके घर में पल रही है? सिसोदियों के कुल की सबलता का तेज तो हे महाराणा! वहाँ देखने योग्य था जब वे मंडन से हुई भिड़ंत में विश्वासघात की गर्जना करते हुए भागे थे। यह शूरवीरता उस दिन भी देखने योग्य थी जिस दिन हाड़ा सेनपाल ने पुरा को विजय कर किरणादित्य का सिर मूंडा था और बेटी दे कर हाड़ा राजा हल्लू की शरण गही थी। सब जानते हैं यह प्रसिद्ध बात तो अभी तक सोने की तरह चमक रही है।

दोहा

कुंभ हु तिम हल्लू कुमर, लक्ख रान भय लाइ।
आयउ भजि बुंदिय अरपि, प्रधन चकितपन पाइ॥९॥

महाराणा लाखा से युद्ध में भय खा कर जब हाड़ा हल्लू ने युद्ध से भयभीत हो, भाग कर महाराणा कुंभा को बूँदी अर्पित की थी (यह बात वक्रोक्ति में कही गई है) चालुक्य ने नया प्रसंग जोड़ा।

षट्पात्

जो चालुक कुल अजित कहहु सूकर भुव कैसैं।
पृथु तुमरे परपुरुख जाइ प्रभुता जस जैसैं।
सद्योधारन सचिव निकट अति प्रनति निबाहिय।
अधिप सुधन्वा अर्थ विभा स्वसुता सु बिबाहिय।
भजि पुनि गुमाइ गुजरात भुव बिनु नृपता पीढिन बहुन।
अजमेर प्रांत निबसे अखिल प्रकटिय तंहं इक्क हु पहु न॥१०॥

इस पर हाड़ा पक्ष की ओर से प्रत्युत्तर आया कि यदि चालुक्य अविजित होते तो सूकर क्षेत्र किस तरह उनके आधिपत्य से निकलता और तुम्हारे बड़े पूर्व पुरुषों की प्रभुता और यश कैसे जाता? सचिव सधोधारन के सामने जा कर बड़ी वीरता के साथ ही प्रणाम किया होगा? चहुवान राजा सुधन्वा के सामने बड़ी वीरता से अपनी विभा नामक पुत्री के विवाह का प्रस्ताव रखा होगा? भाग-भाग कर गुजरात की भूमि खोई और बिना किसी नृपत्व के पीढ़ियाँ निकाल दी। यह भी बड़ा वीरतापूर्ण कार्य रहा। वहाँ से भाग कर अजमेर में बसने के बाद हमने अब तक किसी के राजा होने का समाचार भी नहीं सुना।

दोहा

प्रामार न कुल जो प्रबल, पिक्खहु तो जसपंति।
अवधि असोक अमान तैं, अब किन तपहु अवंति॥११॥

बंधु मोहनोत रु बिदित, जैताउत इम जंपि।
उट्ठे दुव अँचत असिन, चित्त हमिन गन चंपि॥१२॥

इक्क इक्क प्रति गहिय अब, इच्छामित तुम आहु।
भय हड्डुन संगर भजन, परखि स्वमत फल पाहु॥१३॥

उठि इम करत बिकोस असि, दुव हड्डुन रिस दिट्ठि।
जिन्ह सामंत दलेल जुत, नृप बैठारिय निट्ठि ॥१४॥

लगे हाथ प्रमारों के प्रबल कुल की सुयश शृंखला को भी देख लिया जाए कि अमान प्रमार से लगा कर अशोक प्रमार तक की पीढ़ियों में से कोई उज्जैन की राजगद्दी पर नहीं बैठा। यदि वीर होते तो वे वहाँ अपनी भूमि पर जा कर राज्य क्यों नहीं करते ? मोहनोत और जैतावत दोनों हाड़ा बंधु इतना कह कर उठ खड़े हुए। उन्होंने अपनी तलवारें निकाल ली जिसे देख कर महाराणा के पक्ष वाले हँसते-हँसते एक दम चुप हो गए। दोनों हाड़ा वीरों ने कहा कि तुम लोगों में से जिसकी इच्छा हो वह एक एक कर आए और युद्ध में भय खा कर भागने वाले हाड़ाओं को परख ले। अपने मत से कही भागने की बात का फल चख ले! क्रोध में खड़े हुए इन दोनों हाड़ा योद्धाओं के हाथों में नंगी तलवारें देख कर तुरन्त स्वयं राजा सूर्यमल और सामन्त दलेल सिंह उठे और उन्होंने बमुश्किल तमाम इन दोनों हाड़ा वीरों को शान्त कर वापस अपने स्थान पर बिठाया।

षट्पात्

पति तारागढ़ प्रथम भनिय जसकर्ण निम्म भव।
अपर गंग अभिधान जु हुव जगबिदित जिताहव।
सुत नृसिंह तस सुमति रहिय हनि बहु बाबर रन।
तास दलेल तनूज कहिय सल्ह रु असोक सन।
जय लहिय रान संग्राम जंहं हड्डु न भयहि निमित्त हुव।
पहिलैं अमरगढ़ के प्रधन भजि कुंभहिं दिय तोग भुव॥१५॥

बूँदी के दुर्ग तारागढ़ के प्रथम किलेदार निम्मदेव हाड़ा का पुत्र जसकरण जिसका दूसरा नाम गंगासिंह था वह कैसा युद्ध जीतने वाला था इसे पूरा संसार जानता है। उसका पुत्र नृसिंह हाड़ा हुआ जो बाबर के साथ हुए युद्ध में कई शत्रुओं को मार कर मरा। इस नृसिंह हाड़ा के पुत्र और बूंदी के सामन्त दलेल सिंह ने तब सल्ह और अशोक से कहा कि क्या आप लोग भूल गए जब अमरगढ़ के युद्ध से भाग कर महारणा कुंभा ने तोगदेव हाड़ा को अपनी भूमि सौंपी थी ?

दोहा

कहिय हरी हरपाल कुल, जज्जाउरपुर जत्थ।
मुगलराज रन भीम मम, तात झरिग भय तत्थ॥१६॥

कित्तिसीह नवरंग कुल, बदिय लाडपुर बास।
पिता भरत मम झरि परत, अतिभय हड्डुन आस॥१७॥

क्रम पित्थल थिरराज कुल, बदिय गंग मम बप्प।
भंजि मुगल तिलतिल भयो, यह पिक्खहु भय अप्प॥१८॥

खेम अनुज सिवसिंह खिजि, कहिय खजूरी के हु।
अमर खेम दिय भजत असु, जनक भ्रात फुट जेहु॥१९॥

तभी हरपाल हाड़ा का वंशज और जोजावरपुर का अधिपति हरिसिंह बोला कि मुगल बादशाह बाबर से हुए युद्ध में मेरे पिता भीमसिंह तलवार से कट कर नहीं भय से मरे होंगे? नवरंग हाड़ा के वंशज लाडपुरा के जागीरदार कीर्तिसिंह ने बात को आगे बढ़ाते हुए कहा मेरे पिता भरतसिंह भी रणभूमि में तलवार से कट पड़े। वे भी शायद भयभीत हो कर कटे होंगे? इसी क्रम में थिरराज के वंशज पृथ्वीराज ने कहा कि मेरा पिता गंगासिंह जो मुगल शत्रुओं को युद्ध में मारते हुए स्वयं रणभूमि में तिल तिल हो कर कटा इसे भी आप भय ही कहेंगे? तभी खजूरी के खेमसिंह का छोटा भाई शिवसिंह खीज कर व्यंग्य के लहजे में बोल उठा कि फिर तो मेरा भाई खेमसिंह और मेरे पिता अमरसिंह ने भागते हुए अपने प्राण छोड़े होंगे? वे युद्ध में मर कर प्रसिद्ध थोड़े ही हुए हैं?

षट्पात्

बुंदियपति बारहठ कहिय सामोर धीर कवि।
भुल्लहु जिन रानभट पिहित रहत न काच रु पवि।
हमरे भटन कहेहि रहे बीरन बाबर रन।
भट इतरहु हम भनत सुनहु मृत तुम सहाय सन।
नगराज गोर गिरिधर तनय तंहं प्रताप कछवाह तिम।
बलराज सल्ह प्रामार सुव अरु दहियाह प्रताप इम॥२०॥

इसी समय बूँदी राज्य के राजकवि धीर सामोर ने कहना शुरू किया। हे महाराणा! बूँदी के उमरावों को भूलो मत क्योंकि योद्धा की पहचान गुप्त नहीं रहती जिस प्रकार हीरे काँच के ढेर में पड़े रह कर भी छिपे नहीं रहते। मुगल बाबर से हुए पीलीखान वाले युद्ध में हमारे बूँदी के कई हाड़ा वीरों ने आपकी खातिर अपने प्राण गंवाएँ हैं। आप को स्मरण नहीं होंगे मैं उन्हें गिनवाता हूँ। नगराज गौड़ जो गिरधर गौड़ का पुत्र था वह मारा गया। कछवाहा प्रतापसिंह, सल्ह प्रमार का पुत्र बलराज और दहिया प्रतापसिंह भी मरने वाले वीरों में थे।

चावोरा रन चतुर सूर नरसिंह देव सुव।
भक्खर संकर भ्रात हेति तिलतिल मोढा हुव।
दहर नेत्र दायाद भयउ बटके मुकुंद भर।
अर्जुन जदुकुल अडर स्याम प्रतिहार पुरस्सर।
सिवराज बीर चालुक असह जोध बिहारीदास जुत।
बीरम कबंध बिक्रम बहुरि संभर भरत भदोर सुत॥२१॥

आपको याद दिलाऊँ वहाँ मरने वालों में देवीसिंह का पुत्र चावड़ा वीर नरसिंह था जो युद्ध लड़ने में चतुर था। सोढा शंकर का भाई भाखरसिंह जो शस्त्रों के प्रहार झेलता हुआ रणभूमि में कटते हुए तिल तिल जितना हो कर गिरा। दहर जाति के क्षत्रिय नेत्रसिंह का पुत्र मुकुन्द सिंह टुकड़े-टुकड़े हो कर युद्ध भूमि पर बिखरा। अर्जुन यादव हो या श्याम प्रतिहार, वे मरने में अग्रणी रहे। वीर चालुक्य शिवराज अतुलनीय योद्धा बिहारीदास के साथ, राठौड़ बीरम और भदोरिया भरतसिंह का पुत्र विक्रम चहुवान वहीं बहादुरी से लड़ते हुए काम आए थे।

दोहा

करन नाम तिलतिल कटिय, सरबहिया अतिसूर।
भज्जत रान सहाय भजि, पारि मुगल बल पूर॥२२॥
बाबर रन इत्यादि बर, सब बुंदीस सिपाह।
सतपचीस सोवत समर, लहिय रान जय लाह॥२३॥

रहे जियत अब ताहि रन, घनैं सुनहु सहि घाय।
पायें तंहं सह बाजि पहु, कलि चउचउ छत काय॥२४॥

वह शूरवीर सरबहिया कर्ण जो रणभूमि में तिल तिल हुआ था और जिसने बलशाली मुगलों की शत्रु सेना को काट कर गिराते हुए रणभूमि से भागते हुए महाराणा की रक्षा की थी। बाबर की फौज से हुई भिड़ंत में बूँदी के ढाई हजार श्रेष्ठ योद्धा वीरशय्या पर सोये तभी महाराणा की विजय हुई। इनके अतिरिक्त मैं आपको याद दिलाऊँ ऐसे कई बूँदी के वीर योद्धा थे जो उस युद्ध में घायल हो कर जीवित रहे। उनमें से एक तो राजा भगवानदास ही थे जिन्होंने घोड़े सहित कुल चवालीस घाव झेले थे।

षट्पात्

तिम नरबद सुत त्रय हि लहिय चउ छत अर्जुन लरि।
प्रतिभट भीम पचीस सहे तदनुज गज संहरि।
पूरन तदनुज पंच छ छत सत्तल कुमार छम।
चउ छत बहि रन रचिय जोध मेव हु जवनन जम।
नगराज चुंड वंसिय निडर कुंभकरन जिम उदय कुल।
बंसिय अधीस सामंत बपु इन तीन न खट खट अतुल॥२५॥

सुकवि धीर सामोर आगे गिनाने लगा। हाड़ा नरबद के तीनों पुत्रों ने अपने शरीर पर घाव खाये उनमें से अर्जुन हाड़ा ने चार और उससे छोटे भाई ने पचीस घाव खाए। यह वही हाड़ा भीम था। जिसने अपनी तलवार से हाथी काट गिराया था। तीसरे छोटे भाई पूर्णमल हाड़ा ने पाँच घाव खाये। समर्थ सातल ने छह घाव झेले। इसी युद्ध में चार घाव खा कर योद्धा मेव हाड़ा मुगलों की सेना पर यमराज की तरह टूट पड़ा था। चूंडा हाड़ा के वंशज नागराज, उदयसिंह के कुल के कुंभकर्ण और बंसीपुर के अधीश सामंतसिंह हाड़ा इन तीनों वीरो ने अपनी काया पर छह--छह घावों की पीड़ा झेली थी।

वस्तुबदनकम्

सुभटबर्ग अब सुनहु हरिय सीसोद अमरहर।
पित्थल नत्तिय प्रतिथ संभु चालुक बघेल बर।

संकर नत्तिय सूर भीम भट्टिय खंडित खल।
गोवर्द्धन तिम गोर बीर सुंदर सुव अतिबल॥२६॥

कथित नंद कुम्म कुल निडर बंसीधर नत्तिय।
सैगर तिक्कम सुतज हठिय दीप हु असंक हिय।

सरबहिया दीप सह स्याम दहिया प्रताप सुत।
रहे नियत तिहिं रारि जोध इत्यादि छतन जुत॥२७॥

हे महाराणा! अब मैं आपके समक्ष उस योद्धा समूह के सदस्यों को गिनवाता हूँ जिनके कारण चित्तौड़गढ़ की विजय हुई। अमरसिंह सिसोदिया का पुत्र हरिसिंह, पृथ्वीराज का प्रसिद्ध पौत्र शंभुसिंह बघेला, शंकरसिंह भाटी का पौत्र वीर भीमसिंह भाटी, और गोवर्द्धन गौड़ का महाबली पुत्र सुन्दरसिंह जैसे दुष्टों का संहार करने वाले वीर उस युद्ध में थे। कछवाहा नंदसिंह जो निडर वीर बंसीधर का पोता था। दीपसिंह सैंगर जैसा मन में निर्भय वीर जो हठपूर्वक युद्ध करने वाले सैंगर टीकम (त्रिविक्रम) का पौत्र था। सरबहिया दीपसिंह और प्रतापसिंह दहिया का पुत्र श्याम दहिया थे। ये सभी ऐसे योद्धा थे जो उस युद्ध में घायल हो कर भी लड़ते रहे।

मालव गुज्जर मीर रुपे यातैं पहिले रन।
दिव सहाय बुंदीस नियत हित तबहु नरायन।
जंहं नृसिंह नृप अनुज पारि महमूद चमूपति।
संकर नेत समेत भयउ तिलतिल जु काच्च भति॥२८॥

बहे घाय नारबद अंग अर्जुन अठ्ठारह।
मंडू सचिव समेत बीर सद्धे अरि बारह।
सारन सुत सामंत सेव तनुजातमेव सह।
निम्माउत्त नृसिंह गंग अंगज जय संग्रह॥२९॥

सामोर कवि धीर आगे कहने लगा कि हे महाराणा! इससे पहले हुए उस युद्ध में जिसमें मालवा और गुजरात के मीरों की सेना चित्तौड़गढ़ पर चढ़ कर आई थी। इसमें भी आपकी सहायता को आगे आने वाला हाड़ा राजा नारायणदास ही था। जिसमें हाड़ा राजा के छोटे भाई नृसिंह हाड़ा ने महमूद

बेगड़ा के सेनापति को रणभूमि में ढहाया था और जो स्वयं शंकरसिंह और नेत्रसिंह के साथ शत्रु की तलवारों के प्रहारों से काँच की तरह टूट कर किरच किरच हो गया था। इस भिड़ंत में नरबद हाड़ा के पुत्र अर्जुनसिंह के अंगों पर अठारह घाव लगे पर जिसने मांडूपति के सचिव सहित बारह शत्रु योद्धाओं को मार गिराया। सारणदेव हाड़ा का पुत्र सामंतसिंह और सेव के पुत्र मेव के साथ निम्माउत नृसिंह और गंगासिंह के पुत्र ने उस युद्ध में अपनी वीरता दिखाई और विजय पाई।

नगर लाडपुर नाह भरत नवरंग पौत्र भर।
भीम देव सुत भीम विदित हरपाल पौत्र पर।
इत्यादिन तिहिं आजि छमन जय सद्धि लहे छत।
बाबर रन रतिवाह मृत रु घायल सुनों ब मत॥३०॥
सुत्तो रन बिनुसिरहु सद्धि नरबद इकतीसन।
हत्थाउत हम्मीर घल्लि पंद्रह कच्चरघन।
तिम घुग्घुल कुल तेज मुगल नव हरि सुत्तो महि।
खज्जूरीपति खेम दहन पानिप छ मुगल दहि॥३१॥

लाडपुरा नगर का अधिपति नवरंगपोता भरतसिंह और देवसिंह का पुत्र भीमसिंह जो हरपाल हाड़ा का वंशज था ऐसे समर्थ योद्धाओं में से थे जिन्होंने घाव पाये पर विजय नहीं खोई। अब मैं आपको बाबर की मुगल सेना पर जिन्होंने रात्रि के समय धावा बोला उस धावे में मृतक और घायलों को गिनवाता हूँ। इस में वीर हाड़ा नरबद शत्रुओं की सेना के इकतीस योद्धाओं को मारने के बाद मस्तक विहीन हुआ था हत्थाउत हम्मीरसिंह पन्द्रह शत्रुओं को पीस कर और घुग्घुल हाड़ा का वंशज तेजसिंह नौ मुगलों के प्राण ले कर वीर शय्या पर सोये। खजूरी नगर के अधिपति खेमसिंह अपने हाथ की तलवार की अग्नि में छः मुगलों को भस्म करने के बाद स्वयं भस्म हुआ।

हल्लू हर त्रय हड्डु लक्ख अनुपम कुबेर लरि।
सुत्ते सूरनसयन कदन खट दस त्रय क्रम करि।

तिम प्रताप तोमर रु रतन झाल्ल आदिक रन।
परे सुभट सतपंच सतक घायल साहस सन॥३२॥
गढ मालव गुजरात दुव हि लग्गे पुनि दुर्जन।
तिहिं रन नरबद तनय पर्‍यो अर्जुन सहाय पन।
अग्गहु हिंगुलु आदि रहिय चित्तोर भीर रन।
तुम भय भाखत तदपि नैंक उपकृत लज्जहु नन॥३३॥

बंवावद के हाड़ा राजा हल्लू के वंशज तीन हाड़ा वीर लाखन, अनुपम और कुबेर क्रमश छह दस और तीन शत्रुओं को मार कर वीर शय्या पर सोये। इनके साथ मरने वालों में तंवर प्रतापसिंह और झाला रत्नसिंह भी थे। इस (रात्रि को बोले गए धावे) में हाड़ा पक्ष के पाँच सौ वीर मरे और सौ योद्धा घायल हुए। चित्तौड़गढ़ पर जब दुबारा मालवा और गुजरात के दुर्जन चढ़ कर आए तो उस युद्ध में नरबद हाड़ा का पुत्र अर्जुन हाड़ा आपकी सहायता करता हुआ मारा गया। पूर्व में भी चित्तौड़गढ़ की सहायता करने में हिंगुलु हाड़ा ने अपने प्राण न्यौछावर किये थे। हे महाराणा! इतना होने पर भी आप कहते हो कि हाड़ा भयभीत होने वाले हैं। आप अपने ऊपर किये इनके अनेक उपकारों से तनिक लज्जित भी नहीं होते।

नारायन जिहिं नेह असह मारिय इक्का वह।
तुम हड्डुन भय तदपि गदत हो धूर्त कदाग्रह।
बारू चारन बैर लियउ तैसो साहस लहि।
तुम हड्डुन भय तदपि बदत कृतघन कुनर्म बहि॥३४॥
अत्थहि जो आखेट तुमहु क्यों सब संगत तब।
हनन गृहहु निज रीति कहहु एकाकि नृपन कब।
तदपि हास्य अति तनिय प्रहत चालुक प्रामारन।
गिनि अश्रुत कवि गदित स्वामि सचिवन सूचन सन॥३५॥

राजा नारायणदास ने जिस स्नेह के कारण उस अतुलनीय बलवान इक्का को मारा। उसे भूलकर धूर्तता धारण करते हुए दुराग्रह पूर्वक आप उन्हें कायर बता रहे हो। बारू चारण का वैर जिस साहस के साथ लिया वैसा

साहस करते हुए कृतघ्न की तरह हाड़ाओं को डरपोक कह कर उनका मखौल उड़ा रहे हो। यह सब क्या है ? यहाँ आपको शिकार पर आना था ? तो महाराणा! आपको इतनी सेना साथ लाने की कहाँ आवश्यकता थी। फिर यह तो बताओ कि आपके घर में अकेले शिकार खेलने की रीत ही कहाँ है इस पर भी इन चालुक्य और प्रमारों के साथ उन्होंने हँसना बंद नहीं किया। सुकवि धीर सामोर की बात को अनसुना करने के लिए वे महाराणा और उसके कुटिल सचिव के संकेत पर हँसते रहे।

षट्पात्

अति कुनर्म नृप अनखि कहिय सल्ह रु असोक कंहं।
तंहं हो कोन द्वितीय जनक मारिय ढक्कू जंहं।
चहि हड्डुन चाकित्य प्रबल सीसोद परक्खहु।
पीढिन हित प्रातीप्य रुचित तो उचित न रक्खहु।
मन क्रुद्ध अधिक इम कहि मिहिर भिन्न बिरचि निज मुख्य भट।
स्व सपथ उपेत अक्खिय सबन बहुत मैंहि इक्क हु बिकट॥३६॥

इस मखौल उड़ाती हँसी से खिन्न हो कर क्रोध के सुर में राजा ने ललकारते हुए अशोक और सल्ह से कहा कि उस समय वहाँ कौन दूसरा था जब मेरे पिता ने ढक्कू पूरबिया को मारा था। वे अकेले ही थे। अगर हाड़ाओं का भय और कायरता प्रबल सिसोदिया परखना चाहते हों तो परख लें। पीढ़ियों से चले आ रहे आपसी हितों के सम्बन्धों को रखना अब आप उचित नहीं समझते हैं, तो न रखें। क्रोधित मन से इतना कह कर सूर्यमल ने अपने मुख्य वीर सामन्तों से एक तरफ हो जाने का कहा। वे जब एक ओर एकत्रित हो गये तो हाड़ा राजा ने शेष रहे महाराणा के लोगों को ललकारते हुए कहा कि मैं शपथपूर्वक यह कहता हूँ कि आप सभी के लिए मैं अकेला ही काफी हूँ!

दोहा

मो मारन हत्या मिलहिं, इक्क हु मो ढिग आत।
न रुकत लैहों छिन्नि निज, बास देस बसु ब्रात॥३७॥

क्है द्रोहहि जो रान हिय, मर्यो सुनहु जो मोहि।
सफल करहु तब सूरता, रिपुन मग्ग सब रोहि ॥३८॥
पिहित बत्त जानी जु पहु, अबहु भटन अक्खी न।
नृप सपथहु न गिने नतो, थपि संगहि अनधीन ॥३९॥
पुब्ब कथित सुभटन तदपि, महिप सु निट्ठि मनाइ।
सूचिय मैं रान रु सचिव, को भय अटत कहाइ ॥४०॥

मुझे मारने को बढ़ कर मेरे पास आने वाला अपनी हत्या का पुरस्कार मेरे हाथों पाएगा। मैं तब प्रतीक्षा न कर उसका देश, धन समूहऔर इस जगत में निवास करने के लिए आवश्यक प्राण छीन लूंगा। यदि महाराणा के मन में मेरे प्रति तनिक भी द्रोह है तो वे मुझे मरा देखें अर्थात् उन्हें मेरी सौगंध है वे अपने मन की निकाल लें। वे आगे आएं और अपनी वीरता का प्रदर्शन कर हम शत्रुओं के मार्ग को अवरुद्ध करें अर्थात् हमें आगे बढ़ने से रोकें। हाड़ा राजा को जो महाराणा और उसके सचिव के छल कपट की गुप्त बात पता चली उसे राजा ने आगे अब तक अपने सामन्तों को नहीं बताया था। यदि ऐसा होता तो हाड़ा सामन्त अपने स्वामी को सौगंध की परवाह न करते हुए अपने आप ही यह छूट ले लेते और अपने राजा के साथ मरने मिटने को आ खड़े होते। इसके बादा हाड़ा राजा ने अपने सामन्तों को बमुश्किल तमाम वहाँ साथ नहीं चलने के लिए मनाते हुए कहा मैं महाराणा और उसका सचिव हरिणों की शिकार पर जाएँगे। हमें वहाँ जंगल में घूमते हुए किसका भय है ?

षट्पात्

निट्ठि सु निजन मनाइ आइ चल्लहु नृप अक्खिय।
सिबिरहु ब्यवहित सूचि रान सज्जहि सब रक्खिय।
सह परिकर दुव सुपहु चलिय इम मृग मृगव्य चढि।
तापी सरिता तीर पहुंचि उतरे निवास पढि।
व्यवहार मध्य आन्हिक बिरचि आतप कछु टारिय असह।
तंहं रान त्रय हि पठये पिहित सल्ह रु सूर असोक सह ॥४१॥

बड़ी कठिनाई से अपने लोगों को मना कर हाड़ा राजा महाराणा के पास आ कर बोला कि आइये, चलें! अपने शिविर में सभी को गुप्त सूचना कर महाराणा ने भी अपनी सज्जित सेना को रोका पर अपने परिकरों को अवश्य साथ लिया। इसके बाद दोनों राजा हरिणों की शिकार पर चढ़े। तापी नदी के तट पर पहुँच कर अपने अपने घोड़ों से उतरे। वहाँ ग्रीष्म ऋतु की दुपहरी को टालने के लिए थोड़ा विश्राम किया और दिन के तीसरे प्रहर में दिन की असह धूप के थोड़ा कम हो जाने पर वन में निकले। पहले महाराणा ने अपने तीन विश्वासपात्र योद्धाओं को अग्रिम भेज दिया था।

दोहा

तिन प्रति अक्खिय रान तुम, मिलहु हमहिं प्रतिमग्ग।
जानैं भ्रमहु न कोहु जन, इम जावहु त्रय अग्ग॥४२॥
औसैं पिहित पठाइ इन्ह, लै पूरन कंहं लार।
अधिप चले गरजत उभय, सद्धन त्रय हि सिकार॥४३॥
निज निज परिकर रोध नृप, जुग हि अतिक्रमि जात।
जलधर चर हयभृत्य जन, संगहि क्रमिय छ सात॥४४॥

पूर्व निर्मित योजना के तहत सल्ह, सूरसिंह और अशोक तीनों महाराणा के इन योद्धाओं को आंगे जंगल के रास्ते पर इन लोगों के लौटते वक्त मिलना था। महाराणा ने उन्हें यह कह कर आगे रवाना किया था जिससे किसी को शक न हो। इन तीनों को खानगी रूप में आगे भेज कर महाराणा ने अपने साथ पूर्णमल को लिया। तब वहाँ से आगे दोनों राजा और पूर्णमल तीनों शिकार के लिए निकले। दोनों राजा अपने अपने सामंतों को तो पीछे ही छोड़ आये थे। अब ये दोनों निर्भय महीप शिकार यात्रा पर चले। कुछ पीने का पानी साथ में लिए जलधारी नौकर, व्यक्तिगत सेवक और घोड़ों के चरवादार इस प्रकार छह सात नौकरों का समूह अवश्य साथ था।

षट्पात्

इक बाहुज कछु अवम हुल्ल जातिक कुंपाव्हय।
निज दायज नृप जननि संग लाई जुहि तासय।

जलधारक यह जाहि बदैं मातुल बुंदीसहु।
भेदी सहचर भो जु तदिन सायुध तुंदीसहु।
भट गिनि सु रान बिहसि रु भनिय जुग हिं बहुत इक पास जल।
बहुजनन बिघ्न मृगया बनहिं सुनत मुर्‍यो संभर सबल॥४५॥

इनमें से एक क्षत्रिय, कुछ हूल जाति के अवम (नीच वर्ण के) लोग और कूंपा नामक हजूरिया (चाकर) था जो हाड़ा राजा की माँ के साथ अतिरिक्त दहेज (दायजवाल) के रूप में उसके पीहर से साथ आया था। इस कूंपा को इसी कारण से राजा मामा कह कर बुलाता था। यह कूंपा जलधारी सेवक के रूप में यहाँ उपस्थित था और यह सारा भेद जानने वाला था। बड़े पेट वाला यह कूंपा आप अपने कपड़ों में छिपा कर शस्त्र भी साथ लाया था जो आसन्न खतरे के समय काम आ सके। उसे योद्धा मान कर महाराणा ने हँस कर कहा कि ये दो ही बहुत हैं जिनमें से एक जलधारी है क्योंकि अधिक आदमियों के होने से बोलचाल और पदचाप के कारण हरिण बिदक जाते हैं। यह सुन कर साथ वाले सेवकों की संख्या देखने को चहुवान राजा पीछे मुड़ा।

मुरि तस सम्मुह महिप मिलत अक्खिय मामा मुरि।
जंहं निजभट तंहं जाहु वहहु बुज्झिय तब अंकुरि।
कछु अंतहपुर कलह अज्ज जाहु न प्रभु इक्कल।
तदपि दूर नृप ताहि मोरि आयउ मन निर्मल।
गिनिये न नियत अंतर गहन जक्खमूल तुलसी जहाँ।
पुब्बहि दिवाइ गर्ता प्रचुरतर निम्मल रखिय तहां॥४६॥

ज्योंही राजा ने पीछे देखा कि उसके कूंपा मामा ने धीमे स्वर में कहा जहाँ अर्थात् जिधर आपके सामन्त है आपको उसी दिशा में रहना चाहिए। कूंपा ने चलते चलते थोड़ा रुक कर कहा कि आज जनाने में कलह है सो प्रभु! आप अकेले मत रहो। यह सुन कर हाड़ा राजा थोड़ी दूरी रखते हुए दूसरी दिशा में चला गया पर वह निर्मल मन वाला थोड़ी देर में फिर से इधर आ गया और कहने लगा कि महाराणा! इसे मेरा नियतन दूर जाना नहीं सोचा जाए मैं तो उधर जो हमने पहले बहुत सा‹ खड्ढे खुदवाये थे उस अड़क तुलसी वाले क्षेत्र को देखने गया था। यह स्थान हरिणों के रहने का उपयुक्त स्थान माना जाता है। वहाँ हरिण अवश्य होंगे हाड़ा राजा ने सफाई दी।

बिमतहि अंतर बिपिन भूप पूरन हय भेजिय।
रहि मृग घेरन रान तुरग थित रय उत्तेजिय।
तत्थ मिले वे त्रय हि बदत मृगयाहि बिहारन।
भनिय रैन संभरहि ए हु अद्भुत धनु धारन।
तुम कहहु तो ब रक्कैं त्रिकहिं कै दुव कै इक वा कतिक।
रावरे भटहु बुल्लहु रमन मृगया धनु कोबिद मतिक ॥४७॥

पूर्व मंत्रणा के अनुसार महाराणा और पूर्णमल जो घोड़ों पर सवार थे। मृगों को घेरने का बहाना बना कर उन्होंने अपने घोड़ों की गति बढ़ाई। घनी झाड़ियों के पार उन्हें आगे वे तीनों महाराणा के विश्वासपात्र सेवक शिकार में घूमने का बहाना करते हुए मिल गए। उन्हें देखकर महाराणा ने चहुवान राजा से कहा कि ये तीनों अच्छे धनुर्धर हैं। आप कहो तो तीनों को और आप कहो तो दो को अन्यथा एक को साथ ले लें। इसी प्रकार आपके भी जो अच्छे धनुर्धर हों और शिकार करने में प्रवीण हों उन्हें बुला लीजिये।

दोहा

तब निश्चित छल जानि तिन्ह, आनि द्विगुन उच्छाह।
निजन बुलावन ह्रीत नृप, वे रक्खिय कहि वाह ॥४८॥

अरु चिंतिय तुपक न इहां, करैं जु पुब्बहि काम।
सरन बिद्ध हनिहों सहज, गर्तन घातक ग्राम ॥४९॥

नियतिहि जो उब्बन न दै, सत्थी इक तउ साध्य।
इम असोक निजगर्त नृप, बैठन लिय बल बाध्य ॥५०॥

सोहू रान प्रत्युत समुझि, कज्ज स्वमत अनुकूल।
बैठारे पंच हि बिहसि, मंडि त्रिगर्तन मूल ॥५१॥

हाड़ा राजा को मन में पूरा शक हो गया कि अब ये लोग छल घात करेंगे। वह वीर उससे दुगुना उत्साहित हो गया। अपने शिकारियों को बुलाने में लज्जा महसूस करते हुए बोला नहीं ये ही बहुत हैं आप इन तीनों को साथ ले लीजिये। इसी समय राजा सूर्यमल ने मन में विचार किया कि इन लोगों के पास बन्दूक तो है नहीं जो पहले ही मेरा काम तमाम कर डाले, ये मुझे

बाणों से बेधने को उद्यत होगें तो इस उबड़-खाबड़ खड्डों वाली भूमि में मैं इन्हें सहज ही बेध डालूंगा। भाग्य ही जो उठने न दे तो क्या किया जा सकता है फिर भी महाराणा ने सावधानी बरतते हुए उन तीनों विश्वासपात्रों में से एक को अपने साथ ले लिया। उन्होंने अशोक को हाड़ा राजा की ओदी (शिकार में बैठने को बनाया गया गड्ढा) में साथ बैठने को बाध्य किया। महाराणा के मन में फिर भी तसल्ली नहीं हुई तो उन्होंने अपने सोचे हुए कार्य को अंजाम देने के लिए पास ही तीन ओदियाँ अतिरिक्त बनवाई और कुटिल हँसी हँसते हुए उन तीनों को भी बिठा लिया।

इक गर्ता थकी बे भये सोदर सल्ह रु सूर।
तिम दूजी ढक्कू तनय, पूरन इक अघपूर॥५२॥

उभय रहे तीजे अवट, संभरनृप रु असोक।
रान निजन अभिमत रचन, सूचित छल सालोक॥५३॥

जिन कारो यह जानिलै, बध पहिलैं छल बत्त।
तिम इंगित साकूत तकि, रान चलिय छल रत्त॥५४॥

रान चलन खिन सेनरचि, जु किय असोक जनाइ।
कहियत वह अग्रिम किरन, जिम नृपतें सर जाइ॥५५॥

एक ओदी में दोनों सहोदर सल्ह और सूरसिंह बैठे। दूसरी ओदी में ढक्कू के पुत्र पूर्णमल्ल पूरबिया को बिठाया जो पापी विचारों से पूर्ण था। तीसरे खड्डे में अर्थात् तीसरी ओदी में राजा सूर्यमल्ल के साथ अशोक को बिठाया। फिर महाराणा रत्नसिंह ने अपने सोचे हुए काम को अंजाम देने के लिए अपने लोगों को छलपूर्वक आँख से संकेत दिया। यदि वह काला अर्थात् राजा सूर्यमल वध से पूर्व यह जान लेता कि छली महाराणा अपने अभिप्राय को किस चेष्टा (संकेतपूर्वक गुप्त रीति से) से पूरा करने जा रहा है अर्थात् क्या चाल चल रहा है तो स्थिति दूसरी बनती। कपटी महाराणा ने अशोक को संकेतपूर्वक बता दिया कि क्या करना है। हे राजा रामसिंह! अब हाड़ा राजा के बाण कैसे और क्या करते छूटे इसे मैं (ग्रंथकर्ता) अगले मयूख में कहूंगा।

इतिश्रीवंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे पंचम राशौ वीतिहोत्र-वसुधेश्वर बीजव्याख्यानबीजहड्डाधिराडस्थिपाल वंश्यानुवंश्यविहित-

वर्णनवेलाव्याहार्यबुन्दीश्वसुधावासवब्रध्नमल्ल चरित्रेराणाकृतकप्रीति-सादरसभासमुपवेशितबुन्दीसमक्षपूर्णमल्लप्रेरितचालुक्यसल्ह प्रामाराऽशोक हड्डु कुलमृषाचाकित्यकु नर्मकरण प्रत्यक्षश्रुतस्वपलायनव्याख्यातशीर्षोद्द चालुक्य प्रामार वंशत्रया ऽनेकपूर्वपुरुषकातर्ययुयुत्सानिष्कोषितनिस्त्रिंशस स्फोटनसमुत्थितवत्सोला कोटा वसतिबूँदीशबन्धुदेव सिंह राघवदास स्वस्वयोधनसमर्थशीर्षोद्दसामन्तसङ्घसप्रतारणसमाव्हान नृप सामन्त सहायससाहसममाश्वासना संरुद्धप्रत्युपवेशिततद्वन्धुयुग्म तारादुर्गाध्यक्ष-निम्माउत दलेलसिंह बाबर रणराणासहायस्वजनकनृसिंह मरणसूचनापुर-स्सरप्रपितामहतोगा ऽमरदुर्गसङ्गरवीरनिद्रा निदानकस्वकुलकल्पितभीति-परिहासकप्रतारण तत्कथनानुकृतिप्रख्यापितपरकुलकार्तघ्न्यहरपालपौत्र हरिसिंह नवरङ्गपौत्र कीर्तिसिंह थिरराजपौत्र पृथ्वीसिंह खार्जूरिक शिवसिंह हड्डु चतुष्टय सङ्ग्राम सहायसूचितसङ्ग्रामस्वस्वसवितृसंस्थानसमर्थना-सहेतुकव्यञ्जितवशविजयपरिहासकपरपक्षप्रागल्भ्यप्रोत्सारण।

श्री वंशभास्कर महाचम्पू के पूवार्यण की पंचम राशि में अग्निवंशी चहुवान वंश वर्णन के कारण हड्डाधिराज अस्थिपाल के वंश और वंश की शाखाओं की कथा बताने के समय के वचनों में बून्दी की भूमि के इन्द्र सूर्यमल के चरित्र में राणा के किये हुए प्रीति के आदर से सभा में बैठे हुए बूँदीश के सन्मुख पूर्णमल की प्रेरणा से सोलंकी सल्ह और प्रामार अशोक का हाड़ाओं के कुल के झूठे कायरपन की खोटी हँसी करना, प्रत्यक्ष अपना भागना सुनकर सिसोदिया, सोलंकी और प्रामार तीनों वंश के पुरुखों का कायरपन विख्यात करके युद्ध के लिए खड्ग निकाल कर भुज ठोंक कर उठे हुए बत्सोला और कोटा के रहने वाले बूँदीश के भाई देवसिंह और राघवदास का अपने अपने युद्ध के समर्थ सिसोदिया के उमरावों के समूह को ताड़ना सहित बुलाना, राजा को सामन्तसिंह की सहायता से हठपूर्वक आश्वासन के साथ रोककर उन दोनों भाइयों को वापस बिठाना, और तारागढ़ के अध्यक्ष निम्माउत दलेलसिंह का बाबर के युद्ध में राणा के सहाय अपने पिता नृसिंह के मरने की सूचना के साथ दादा तोग का अमरगढ़ के युद्ध में मारे जाने के कारण अपने कुल झूठे डरने के इतिहास की ताड़ना करना, उस कथा का अनुकरण कर शत्रु के कुल की कृतघ्नता प्रसिद्ध करके

हरपाल के पोते हरिसिंह, नवरंग के पोते कीर्तिसिंह, थिरराज के पोते पृथ्वीसिंह, खजूरी के शिवसिंह चारों हाड़ाओं का संग्रामसिंह की सहायता बताकर युद्ध में अपने अपने पिताओं के मारे जाने के समर्थन के कारण वंश की विजयता जानकर परिहास करने वाले शत्रुओं की प्रगल्भता को उड़ाना।

तदनन्तरप्रतिरण राणासहायव्याख्यातबुन्दीशबन्धु वीर वर्गमरण क्षतप्रापणहड्डा धिराजद्वारहठकविधीरसजातीयबारूवैरबिबालयिषुक्षेत्रल कुमारसमरसंस्थानसूचनासहितस्वस्वामिकुलोत्कर्ष परपक्षापकर्ष याथातथ्यसमर्थनासम्भावतचालुक्य प्रामार प्रभृतिमहीपहासक भर्त्सन तथापि स्वामी सचिव प्रेरणा प्रवृद्धप्रागल्भ्यसल्लहा शोका हंपर्विकोप-हासैधमानमन्युमहीपमिहिरमल्ल ढक्कू मारणादिदृष्टान्तदृढीकृतशौर्य-परीक्षणप्रोत्साहनानन्तरनिश्शलाकनीतनिजवीरवर्गस्वान्तशपथ शासना सहस्वैकाकि गमन स्वीकारण शीर्षोद्दस्वशिबिरजनसावधानसञ्ज्ञा-सूचनानन्तरसपरिकरप्रस्थितातपातपत्रायकतापीतटिनीतटावतरण।

प्रत्येक रण में राणा की सहायता विख्यात करके बूँदीश के सम्बन्धी वीरवर्ग के मरने और घायल होने की हड्डाधिराज के बारहठ कवि धीर सामोर का अपनी जाति वाले (चारण) बारू के बैर लेने की इच्छा वाले कुमार क्षेत्रसिंह की युद्ध में मारे जाने की सूचना सहित अपने स्वामी के कुल की प्रशंसा और शत्रु के पक्ष की कमजोरी की सच्ची समर्थना बताकर सोलंकी और प्रमार आदि बड़ी हँसी करने वालों को डराना, तो भी अपने स्वामी और सचिव (पूर्णमल्ल) की प्रेरणा से बढ़ी हुई प्रगल्भता से सल्ह और अशोक के गर्व सहित हसने से बढ़ा है क्रोध जिसका ऐसे राजा सूर्यमल का ढक्कू के मारने आदि दृष्यन्त को दृढ करके वीरता की परीक्षा के उत्साह करने के बाद अपने वीरों के समूह को एकान्त में रखने के लिए अन्त में अपनी शपथ सहित आज्ञा देकर आप अकेले जाना स्वीकार करना, सिसोदिया का अपने डेरे के मनुष्यों को इशारे से सावधान रहने की सूचना करने के बाद परगह सहित गमन करके धूप की रक्षा के लिए तापी नदी के किनारे उतरना।

गम्यप्रदेशप्रच्छन्नप्रेषित सल्लह शूरा ऽशोक भटत्रय विहितविधेया तिवाहितातपासह्यसमयपुनःपुनरवज्ञातिकान्तस्ववीरविजनव्रजनवर्जन-

वाक्यरत्न रविमल्ल पूर्णमल्ल त्रिकमृगमृगयाप्रस्थानावसरराणावारणानुकूल बुन्दीशससाहससङ्गीभूतसन्नद्धस्वज लधारकहुल्लक्षत्रियकुम्प प्रतिमोटन याक्षमूल तुलसी सीमसम्बद्धमृगयामालसंक्रमसमयप्रतिप्रेषितविसर्जित-वाजिपृथ्वीश पूर्णमल्ल मृगानिनीषुतुरगारूढराणा सहसञ्चरणसङ्केतित स्थानमृगव्यमिषपूर्वप्रेरितचालुक्य प्रामार सामन्त त्रय सम्मिलन स्वकृतत्सङ्गीकरणराणाप्रार्थननिश्चिततच्छलघात समिद्धोत्साहसा-वधानबुन्दीशप्राक् प्रणायितगूढगर्ताप्रदेशप्रापण प्रथमगर्तोपवेशित-चालुक्ययुग्म द्वितीय गर्ताप्रस्थापितपूर्ण मल्ल स्वान्तसंस्थानसङ्गीकृतप्रामारो पेतपृथ्वीशभाकर तृतीय गर्तोपविशन सम्मताऽशोकसाहित्यस्वाभी-मतसाधना नुकूल्यनृगानयनप्रतिष्ट मानराणास्वकीयसामन्तचतुष्क स्वामिष्टसाधनसंज्ञासूचनं पञ्चत्रिंशो मयूखः ॥३५॥ आदितो द्व्यशीत्युत्तरै-कशततमः ॥१८२॥

जाने वाले प्रदेश में गुप्त रूप से भेजे हुए सल्ह, शूर और अशोक से सलाह करके असह धूप को लांघकर बारम्बार अनादर करके अपने प्रिय वीरों को मना करके अकेले चलने के वचन कहने वाले रत्नसिंह, सूर्यमल्ल और पूर्णमल्ल तीनों के हरिणों की शिकार गमन करने के समय राणा के मना करने के अनुकूल बूँदीश का हठ पूर्वक साथ हुए अपने जल रखने वाले हल वंश के क्षत्रिय कूम्पा को वापस भेजना, याक्षमूल और तुलसी की सीमा में शिकार खेलने के क्षेत्र में चलते समय में पूर्णमल्ल के भेजे हुए घोड़ों को भूलकर हरिणों को लाने की इच्छा से राणा का घोड़े पर सवार होकर साथ चलने के संकेत से उस स्थान में शिकार खेलने के बहाने से पहिले भेजे हुए सोलंकी और प्रामार तीनों उमराओं से मिलना, उनको साथ रखने की राणा की प्रार्थना को स्वीकार करके उनकी छलघात को निश्चय जानकर युद्ध के उत्साह से सावधान बूँदीश के पहिले खुदाये हुए छिपे खड्डों के प्रदेश में प्राप्त होना, पहिले खड्डे (ओदी) में दोनों सोलंकियों को और दूसरे खड्ढे में पूर्णमल्ल को रखकर अपने नाश का साथी करके प्रामार सहित राजा सूर्यमल्ल का तीसरे खड्डे में बैठना, अशोक की सम्मति मिलाकर स्वामी के वांछित साधन के अनुकूल हरिणों को लाने में रुके हुए राणा का अपने चारों उमराओं से अपने अभीष्ट साधन के इशारे से सूचना करने का पैंतीसवाँ मयूख समाप्त हुआ। और आदि से एक सौ बयासी मयूख हुए।

प्रायो ब्रजदेशीय प्राकृत मिश्रित भाषा

दोहा

निजभट चउ हड्डुहिं हनन, रक्खि सु कथित त्रिरोक।
चलिय रान तंहं छल चतुर, सूचिय सैंन असोक ॥१॥

महाराणा ने कपटपूर्वक बनाई योजना के अनुसार अपने चार सामंतों को वहाँ तीन होदियों में हाड़ा राजा को मारने के अर्थ बिठा दिया और स्वयं चतुरतापूर्वक अशोक को आँख के संकेत से सब कुछ समझा कर वहाँ से चलता बना।

षट्पात्

भूखे संजुत भल्ल पिक्खि संभर ढिक पंचक।
सूचिय रानहिं सैन रैन प्रामार अलंचक।
चलतबेर चित्तोरस्वामि अक्खिय बूँदीस हिं।
देखन निज सर देहु अप्प जे लिय भजि ईसहिं।
बुंदीस उट्ठि पंच हि बिसिख हयथित रिपुहिं दिखात हुव।
अरु कहिय लब्ध इक भल्ल यह भूखो भखन प्रसिद्ध भुव ॥२॥

होदी में बैठते ही जब अशोक ने हाड़ा राजा के पास पाँच बाण देखे जिनमें महादेव द्वारा प्रदत्त वह विशिष्ट भूखा नामक बाण भी था तो जाते हुए महाराणा को रोक कर संकेत से अशोक ने इसकी सूचना दी। इस संकेत को पाकर रवाना होते हुए महाराणा रत्नसिंह ने बूँदी के राजा सूर्यमल से कहा कि मेरी उस बाण को देखने की इच्छा है जो आपने महादेव की भक्ति से प्राप्त किया था। इस पर हाड़ा राजा ने खड़े हो कर घोड़े पर बैठे महाराणा को वे पाँच ही बाण दिखाये और कहा इनमें से यही वह भूखा नामक बाण है जो शत्रुओं का भक्षण करने के लिए पृथ्वी पर प्रसिद्ध है।

दोहा

पंच हि सर जब पानितैं, बढि ऐंचिय लवबंस।
पहु भूखा कर पल्लवन, दब्बिय रचि संदंस ॥३॥

रामचन्द्र के बड़े पुत्र लव के वंशज सिसोदिया महाराणा ने तब अचानक उन बाणों को झपट कर लेने के लिये हाड़ा राजा के हाथ से खींचे। इस समय हाड़ा राजा ने भूखा नामक बाण को अपनी अँगुलियों के मध्य संडासी की तरह पकड़ लिया।

मनोहरम्

देखन के ब्याज बूँदीपति सों कथन करि,
देखत ही बंचक सराहि सर तूठेलों।
संभर के सयतैं समस्त लैंन लागो अैंचि,
भूखो दाबि राख्यो तब भूपहु अनूठे लों।
पूरब पितामह गंभीरता गहन देखो,
राम छितिपाल न जनाई रीति रुठेलों।
मारन जतन रविमल्ल तैं रतन रान,
लीनैं बान च्यारि एकलव्य के अंगूठे लों॥४॥

देखने का बहाना बना कर बूँदी के राजा सूर्यमल से कह कर उस ठग महाराणा ने बाणों की तारीफ करते हुए उन्हें हड़पना चाहा। चहुवान राजा के हाथ से उसने उन सारे बाणों को खींच कर लेना चाहा तब राजा सूर्यमल ने अपने प्रिय बाण भूखा को अनूठे ढंग से अंगुलियों के मध्य दबा लिया। हे राजा रामसिंह! अपने पूर्वज पितामह की गहन गंभीरता देखें कि उन्होंने इस कृत्य पर अपनी अप्रसन्नता प्रकट नहीं होने दी। उस महाराणा रत्नसिंह का छल देखें कि उसने राजा को मारने के प्रयत्न में राजा से चार बाण इस तरह लिये जैसे गुरु द्रोणाचार्य ने एकलव्य का अंगूठा लिया था।

किरीट:

लै चउ बान सराहत रान कह्यो नृप राखहु जो मन ए बर।
त्योंहि लये लखि तून तदीय हुतैं करखे गहि पुंख उभै सर।
लेत सु जानि दब्यो पय रान तऊ चहुवान निकासि लये कर।
रोध फलैं न बली बल अग्ग इचें हय को त्ररमंग उठ्यो पर॥५॥

चारों बाणों को लेकर महाराणा ने उनकी प्रशंसा की कि बहुत अच्छे

हैं इस पर हाड़ा राजा ने कहा आपको अच्छे लगे तो रख लीजिये। इस पर महाराणा ने रख लिये पर जब राजा ने अपने तूणीर को खाली देखा तो उसने उन बाणों में से दो बाणों का पृष्ठ भाग पकड़ वापस निकालना चाहा। यह देख कर कि कहीं राजा बाण वापस न ले ले महाराणा ने अपने घोड़े को एड़ लगा कर उसे तेजी से आगे बढ़ाया पर हाड़ा राजा ने दो बाण तो निकाल ही लिये। बलवान के बल के आगे अवरोध फलीभूत नहीं होता। लगाम खींचने के कारण बढ़ते घोड़े का पृष्ठ भाग ही राजा के सामने रहा पर हाड़ा राजा ने तब भी बाण झपट लिये।

बदिय जंहं रान बिनु दान लिय बान तंहं चविय चहुवान दुव च्यारि दैकैं।
मारि मन रैन यह बैन करि सैन मृग लैन गय अैन हिय हारि दैकैं।
ए रहिय चूक खिन हेरि तंहं टेरि मिस रान फैरि फैरि मृग घेरि लायो।
स्यामद्युति देहु हनि एहु चलि गेहु अब नेहु फल लेहु बच यों लगायो ॥६ ॥

तब महाराणा ने कहा कि मैंने बिना दिये ही चार बाण ले लिये। इस पर चहुवान राजा सूर्यमल ने कहा कि नहीं चार दे कर दो वापस भी लिये हैं। महाराणा क्या करता? वह मन मार कर राजा को मारने के लिए अपने चार उमराव वहीं छोड़ कर चला। दो बाणों के बलात् वापस जाने से हृदय रूपी घर में हानि की हार दे कर हरिणों को लाने गया। उस समय अपने चार लोग राजा से चूक करने वाले पीछे छोड़ कर महाराणा ने कहा कि मैं आगे जा कर हरिणों को वापस इधर उन्हें घेर कर लाता हूँ पर तुम लोग काले (काला यहाँ हाड़ा राजा का संबोधन भी है और दूसरे अर्थ में काले रंग के हरिणों की प्रजाति वाले मृगों को भी काला ही कहा जाता है) को अवश्य मारना। यदि तुमने ऐसा किया तो वापस घर चलने पर अर्थात् चित्तौड़गढ़ लौटने पर मैं तुम्हें स्नेहपूर्वक इसका फल प्रदान करूँगा। (महाराणा ने यह सांकेतिक भाषा में अपने चारों लोगों से कहा)।

मदनावतार:

सोहि सुनि सूर मृग पूर दृग दूर दिय,
हेरि तस मांहिं सुहि आंहिं कहु नांहिं हिय।

मन्नि तिहिं रंग निज अंग छल भंग मन,
संधि सुहि बान हुव थान अवधान सन॥७॥

महाराणा का यह निर्देश सुन कर हाड़ा राजा सूर्यमल ने दूर तक नजर दौड़ाई पर उसे हरिणों के झुण्ड में कोई काले रंग का हरिण नजर नहीं आया तब उसे मन ही मन शक हुआ कि कहीं यह मेरे काले रंग को सूचित कर कपट से कहा गया वाक्य तो नहीं और ऐसा सोच कर राजा ने अपने उसी बाण अर्थात् भूखा नामक बाण को धनुष पर संधान के लिए चढ़ाया और मन में सावधान हो गया।

प्लवङ्गमः

इम न तज्यो सर अप्प ब्रजत मृग ब्रात पैं,
रहिय रिपुहु तिम रुक्कि ढुक्किय घन घात पैं।
न तजन बान निदान रान इत आइ कैं।
पुच्छिय छलन प्रकार नृपहिं नियराइ कैं॥८॥

पर हाड़ा राजा ने सामने से गुजरते हुए मृगों के झुण्ड पर अपने बाण को चलाया नहीं। यही आचरण शत्रुओं (महाराणा के लोग) ने भी किया उन्होंने भी घात करने पर अपना ध्यान लगा कर बाण नहीं चलाया। जब कोई बाण नहीं चला और मृग सुरक्षित निकल गये तब महाराणा ने कारण जानने के लिए वापस उसी स्थल पर राजा के पास आ कर कपटपूर्वक पूछा बाण क्यों नहीं चलाया?

रुचिरा

भूप भनिय तुम एन असित कहि तीर तजन किम चित्त चहो।
रान कहिय मृग होहि असित इक क्यों न हनिय तुम स्वमत कहो।
बंचि कुहक नृप नैन अधम इम रैन सचिव कंहं सैन दई।
पूरनमल्ल तबहि सर संहित ज्या सु करखि करि कानलई॥९॥

प्रत्युत्तर में हाड़ा राजा ने कहा कि आपने काले (हरिण) को मारने का कहा सो आप मन से किस पर तीर चलवाना चाहते थे? इस पर महाराणा ने कहा कि एक हरिण काला भी होता है आप उसे क्या कहते हैं। इस बारे में

आप की जानकारी क्या है बताइये ? इस प्रकार राजा को वार्तालाप में उलझा कर उसका ध्यान स्वयं पर केन्द्रित किया और इस बीच उस जालसाज रत्नसिंह ने राजा से अपनी आंख बचा कर सचिव पूर्णमल को तीर चलाने का संकेत किया। पूर्णमल ने संकेत पाते ही धनुष पर एक तीर का संधान कर धनुष की प्रत्यंचा को कान तक खींचा।

महाचर्च्चरी

रैन पूरन सैन कैं नृप को स्वबैन भुलात भो इम।
अप्पहू उत कान दै तस बान तान हरैं सुन्यों तिम।
अंखि रानहि टारि सो सुनि मोरि पूरन ओर आनत।
छुट्टि पूरन बान गो चहुवान के हिय प्रान छानत॥१०॥

चञ्चला

भेदि ही चुहान को चुहान को लगंत भल्ल।
मर्म छिन्न होत व्है अगूढ मूढ मित्रमल्ल।
चोट के समान पिट्ठि ओट की दई चपेट।
भीर बीर लिन्न सो असोक किन्न कालभेट॥११॥

सचिव को संकेत दे कर कपटी महाराणा ने हाड़ा राजा को बातों में लगाने का उपक्रम किया। इस समय राजा सूर्यमल ने उधर की होदी की ओर कान दिया तो बाण खींचने की हल्की सरसराहट उसके कानों में पड़ी। महाराणा से अपनी नजर हटा कर जब राजा ने पूर्णमल की ओर अपनी गर्दब मोड़ कर देखने का प्रयत्न किया कि इसी बीच पूर्णमल का तीर चला जो चहुवान राजा के प्राण ले गया। कोठारिया के पूरबिया चहुवान का तीर लगते ही बूँदी के चहुवान राजा सूर्यमल का हृदय बेधन हो गया। मर्मबेधी बाण से मर्म छिदते ही प्रकट में वह सूर्यमल मूर्च्छित सा हो गया पर इससे पूर्व जिस गति से चोट लगी उसी गति से राजा ने ओदी की पीठ पर लगे पत्थरों की ओर अशोक को अपनी पीठ की चपेट से दबोच कर काल की भेंट चढ़ा दिया।

दोहा

(चञ्चरीक द्विभङ्गी लघुत्वे अमृतध्वनि कुण्डलिका संयुक्तपूर्वगुरुत्वे)

टिकिय छिकिय हिय तोहु टुक मोहहिं रोकि महीस।
प्रामार न बाहैं प्रथम इम हुव डसन अहीस।
हीस स्तवन गिरीस स्मृति रु सरीस प्रभुहुव।
तीर प्रहत सरीर स्वक बल बीर प्रतिभुव।
टेक स्थित उरफेट स्फुरित चपेट द्रुत दिय।
रोक स्थल पल ओक स्फुटनअसोक स्फुटि किय ॥१२॥

हृदय बेधित हो गया तब भी उस राजा ने क्षण भर के लिए आती मूर्च्छा को रोक कर कहीं प्रमार अशोक पहले प्रहार न कर दे यह सोच कर वह सर्पराज (काला) उसे डसने को हुआ। हृदय के साथ अर्थात् पूरे मन से महादेव की स्तुति और स्मरण कर वह बूँदी का स्वामी क्रोधित हुआ। तीर से प्रहत शरीर को अपने बल की जमानत दे कर हठपूर्वक उसने छाती की फेट मार कर त्वरा के साथ अशोक को पल भर में खोद कर बनाए हुए घर (ओदी, कब्र) में फटी हुई ककड़ी की तरह बना दिया अर्थात् उसका चूरा कर दिया।

रोला

भूप रान इम भनत दिट्ठि टरतहि पूरन द्रुत।
संधिय सर जो सोहि नृपति हिय बेधि तजिय नुत।
प्रदर कढत हनि पिट्ठि अवट तट सम असोक किय।
करि पुनिसिर धनुकोटि छिकत हिय महिप मोह लिय ॥१३॥

महाराणा और हाड़ा राजा के आपस में वार्तालाप करते समय राजा की नजर चूकते ही पूर्णमल ने शीघ्रता से संधान कर जो तीर चलाया वह उस स्तुति योग्य हाड़ा के हृदय को बेध गया। तीर लगते ही राजा ने अपने पीठ का प्रहार कर होदी की किनारे पर अशोक प्रमार को अपने जैसा बना डाला अर्थात् मरणासन्न कर डाला फिर धनुष की कोटि पर अपना मस्तक टिका कर सूर्यमल मूर्च्छित हो गया।

हरिगीतम्

लखि झुकत भूपहिं सिद्धफल गिनि रान पूरन सों कह्यो।
दिय तोहु बुंदिय सोहु सुनि चल भीरु व्हां बचिबो चह्यो।
न उठ्यो तहां गहि बाहु चालुक द्वै उठे क्रम नीरज्यों।
मुरि बैन बुंदिय दैनसुनि त्रिक हड्डु बेधिय तीर ज्यों॥१४॥

हाड़ा राजा को मूर्च्छित हो कर यों धनुष पर झुकते हुए देख महाराणा रत्नसिंह ने सोचा कि वांछित कार्य सम्पन्न हुआ तब उसने अपने सचिव से प्रसन्न हो कर कहा कि पूर्णमल! सुन, जा तुझे हमने बूँदी का राज्य बख्शा। इसके बाद उन भगोड़े कायरों ने वहाँ से भाग कर जान बचानी चाही। यह सुन कर जब पूर्णमल नहीं उठा तो दोनों चालुक्यों ने जा कर उसकी दोनों बाहें पकड़ कर ओदी से बाहर निकाला और वे उसे पानी की तरह महाराणा की ओर ले जाने लगे। अर्थात् पानी जिस तरह पृथ्वी पर बहता हुआ चलता है इस रीति से उसे घसीटते हुए ले गए। इधर ओदी में मरणासन्न राजा के कानों में जब बूँदी देने के बोल पड़े तो उसने इन बोलों की गति वाले अपने तीन तीर चला कर तीनों को बेध डाला।

(अमृतध्वनि कुण्डलिका संयुक्तपूर्व गुरुत्वे। कलोनदोहा चञ्चरीक द्वि भंगी तदभावे।)

प्रतिभट लखि भान प्रगुन, हान ध्रुव असु हल्ल।
ब्यान प्रम पुनि बाहुर्‌यो, मान क्रम रविमल्ल।
मान क्रम रविमल्ल प्रतिम रु कान श्रमथित।
प्रानव्यय भुवदान श्रवन निदान प्रकुपित।
कान प्रमिति समान क्रमन बितान ज्या बिकट।
बान प्रखर कमान च्युत किय रान प्रतिभट॥१५॥

प्राणों की हानि होते समय परम (उत्कृष्ट) रीति से जब शरीर में बसती वायु के बदलते क्रम से वापस भान होता है ऐसी ही अवस्था में (भान होते ही) शत्रुओं को देख कर राजा सूर्यमल ने सूर्य के चढ़ने के क्रम की तरह श्वास की कमी में अर्थात् टूटते सांसों से श्रम के साथ कान तक बाण खींचा प्राण छूटते समय अपनी भूमि का भूमिदान दूसरे को करते देख कुपित

हो कर तीखे बाण को प्रत्यंचा के साथ तान कर छोड़ते हुए राणा के वीरों को मार गिराया।

घनाक्षरी

सल्ह सूर दोउन उठाइ गहि बाहु दुव।
ढक्कूसुत रोक तैं निकास्यो मुजरे के काज।
तीन हिं बरब्बर मिलान महिपाल देखि।
भूखो भल्ल टारयो सो प्रहारयो चहुवान राज।
फूटि परे तीन अघलीन वे उलटि अैसें,
जैसें जलहीन दीन तलफत मीन पाज।
देखत इन्हैं यों रविमल्ल हिं जियत जानि,
रान भजिजान व्हां बिचारयो मन लाइलाज॥१६॥

सल्ह और सूरसिंह ने जब दोनों बाहों से पकड़ कर चहुवान पूर्णमल को ओदी से महाराणा द्वारा जागीर प्रदान करने के बाद मुजरा करवाने के लिए निकाला। तीनों को एक सीध में खड़े देख कर मृतप्राय हाड़ा राजा ने प्रयास कर तूणीर से अपने प्रिय भूखा नामक बाण निकाल कर चलाया। वे तीनों ही पापी उससे बिंध कर जमीन पर गिर कर तड़पने लगे जैसे पानी से बाहर निकाली हुई मछलियाँ पाल पर छटपटाती है। अपने तीनों विश्वासपात्र वीरों को यों तड़पते देख कर महाराणा ने सोचा कि इसका अर्थ यह हुआ कि अभी तक शत्रु सूर्यमल जीवित है। अत: और कोई उपाय है नहीं इसलिए महाराणा रत्नसिंह ने वहाँ से भाग कर जान बचाने की सोची।

पूरन अंतके आवत स्वास यों रानकों बैन के बान प्रहारयो।
कारों कै बंड हनाइ हमैं भजिकैं तुम जीवन बाढ बिचारयो।
हड्डु बली तजिहै न तुम्हैं जिहिं इक्क हिं अत्र चतुष्टय पारयो।
भान न प्रानन लोभ भजो तऊ रान न याहि तजो बिनु मारयो॥१७॥

उधर पूर्णमल ने मृत्यु को निकट आती देख कर टूटती सांसों के साथ महाराणा को इस प्रकार अपने बचनों का बाण मारा कि हे महाराणा! इस

काले नाग को घायल कर (लोक में यह प्रचलित है कि यदि काले नाग को बांडा (पूंछ काट) कर छोड़ दो तो अवश्य आ कर डसता है अर्थात् काला नाग अपने शत्रु से बैर लिये बिना मरता नहीं) अथवा अंग भंग कर और हमें मरवा कर आपने अधिक जीने का इरादा किया लगता है पर यह बलवान और हठी हाड़ा वीर तुम्हें जीवित छोड़ेगा नहीं जिसने इसी स्थल पर हम चार को मार गिराया है। ज्ञानपूर्वक प्राणों के लोभ से भागो मत और भागना हो भी तो पहले इस अधमरे हाड़ा को मारे बिना छोड़ो मत।

चूड़ाल दोहा

सुनि मुरि हंकिय हड्ड सिर, रान रतन कर कढ्ढि कृपानहिं।
भूप बिहसि लखि तिहिं भनिय, जाहु अवहि तजि नास निदानहिं॥१८॥

यह सुन कर महाराणा भागते हुए वापस मुड़ा और हाड़ा राजा पर अपनी कृपाण निकाल कर बढ़ा। महाराणा ने हँस कर घायल राजा की ओर देख कर मन में सोचते हुए कि यह तो किसी क्षण मर जाएगा, कहा कि जाऊँगा जरूर पर अपने नाश के कारण को छोड़ जाऊँगा। अथवा तब हँस कर हाड़ा राजा महाराणा से बोला कि जाओ! अपने नाश के कारण को छोड़ कर जाओ (जा सकोगे क्या)।

हीरकम्

रानहु तदपि सु रुक्यो न प्रोथिक पुनि प्रेर्‌यो।
जब लिय नृप बान जुग सु इतउत हसि हेर्‌यो।
पिठ्ठि परत दिठ्ठि सरत निठ्ठि डरत संगभो।
सहसर तह वह असोक भासिय जिय भंगभो॥१९॥

महाराणा तब भी न रुका और उसने अपने घोड़े को बढ़ाया। इसी समय हाड़ा राजा ने दूसरा बाण लेने के लिए उसे इधर-उधर संभाला। महाराणा ने पीछे मुड़ कर देखा पर उसकी नजर भी डरते-डरते बढ़ी और राजा पर पड़ी वह बाण ढूँढ रहा था पर उसे मिलता कहाँ से दूसरा बाण तो पीठ के प्रहार से अशोक के जीवन के साथ टूट चुका था।

निसाणी

पुनि हसि इक्क हु बान पहु निज पास न जान्यों।
नियरावत रानहिं निरखि बध छद्म बखान्यों।
बलि अक्खी अबहू बचे करतव्य हु किन्नों।
जाहु जाहु कपटी जियत दृढ मैं असु दिन्नों॥२०॥

हाड़ा राजा ने अपने पास जब दूसरा बाण नहीं पाया तो वह राजा तनिक हँसा और उधर से घोड़े पर चढ़े हुए महाराणा को समीप आते देखा। तब छल कपट से मारे हुए हाड़ा राजा ने अपने कपटी हत्यारे की इस प्रकार मारने पर तारीफ की कि अपना काम भी कर लिया और महाराणा बचे हुए भी रह गए। जाओ जाओ, कपटी हत्यारे जियो, मैंने तुम्हें जीवनदान दिया।

महापद्धतिः

सुनि यहहु रान गिनि जियत सूर, प्रेरिसु हय उप्पर कुपित पूर।
भूपति के मस्तक अग्रभाग, मारिय कृपान कछु झुकि कुमाग।
अलिकास्थि उलटि कटि दृगन आत, पच्छो जमाइ तिहिं पेच पात।
आवतगर्तातट अहित .अंध, बुंदीस गहिय हय जेरबंध॥२१॥

यह सुन कर महाराणा ने सोचा कि यह सूर्यमल तो तत्काल मरने वाला नहीं। अभी बोलने जितने होश में है और जीवित है। तब महाराणा ने कुपित हो कर अपना घोड़ा मोडा और उस ओदी की ओर बढ़ाया जहाँ हाड़ा राजा घायल पड़ा था। पास जाते ही उस कुमार्गी महाराणा ने अपनी कृपाण से झुक कर हाड़ा राजा पर प्रहार किया। कृपाण राजा के ललाट की हड्डी को काटती हुई आँखों के पास आ निकली। तुरन्त सूर्यमल ने अपने कटे हुए सिर के भाग को पगड़ी के पेज की तरह वापस अपने हाथों से जमाया और ओदी के गड्ढे के पास से गुजरत महाराणा के घोड़े के जेरबंध को अंधे से हुए बूँदी के अधिपति ने पकड़ लिया अर्थात् अंधे राजा के हाथ से झपाटा मारने पर घोड़े का जेरबंध हाथ आ गया।

चामरः

आत पानि जेरबंध रानअश्व ओझक्यो।
तास जोर उट्ठि ताहि सत्थ लैन त्यों तक्यो।
बस्त्र जो कटीतटी सु अैंचि बाहुकैं बढ्यो।
चाहुवान गर्त में उतारि रान पैं चढ्यो॥२२॥

अपने जेरबंध में इस प्रकार हाड़ा राजा का हाथ आ जाने से महाराणा का घोड़ा बिदक कर उछला और इस सहारे से हाड़ा राजा खड़ा हो गया उसने महाराणा को पकड़ने के लिए हाथ बढ़ाया कि महाराणा का कमरबंध हाथ में आ गया। उसने झटके से महाराणा को ओदी के खड्डे में खींच कर गिरा लिया और महाराणा की छाती पर चढ़ बैठा।

नाराचः पञ्चचामर इत्येके

कटार टेकि बीर कंठ चीर नाभि लों करी।
इतेक बीच नीरपान बानि रान उच्चरी।
कटार कोन तास सोन तृप्त होन लै कही।
यहैंहिं बारि ओर क्यों चहै डस्यो ब मैं अही॥२३॥

छाती पर बैठ कर हाड़ा राजा सूर्यमल ने महाराणा की ही कटार झपट ली और पलक झपकते में महाराणा को कंठ से लगा कर नाभि तक चीर डाला। तभी महाराणा ने 'पानी पानी' का बोल कठिनाईपूर्वक अपने कंठ से निकाला। इस पर हाड़ा वीर ने उसी की कृपान के कोने पर उसी के शरीर से उसी का रक्त ले कर उसी के मुँह में डालते हुए कहा ले, अपनी प्यास बुझा कर तृप्त हो जा। यहाँ यही पानी उपलब्ध है महाराणा! फिर मुझ काले के डसे को दूसरा पानी क्यों।

चर्चरी

नीर पीवन दूर मंगन में हु चित्र निहारिये।
बाल्य जो दिय दासि पै तस गंध हेतु बिचारिये।
तास अस्त्रहि अक्खि यों रु कटार तैं मुख तास दै।
व्है रह्यो चढि छत्ति पैं जम भैरवादिन हास दै॥२४॥

पानी पीना तो दूर की बात है मुझे तो आपके इस तरह कातर सुर में याचक की तरह माँगने पर ही आश्चर्य है महाराणा! मुझे तो लगता है यह सब कुछ बचपन में दासी द्वारा आपको अपना दूध पिलाने के कारण हुआ है। इस तरह कह कर हाड़ा राजा सूर्यमल ने कटार से उसी के रक्त को महाराणा के मुँह में डाला और स्वयं उसकी छाती पर चढ़ा हुआ साक्षात यमराज हो कर भैरव आदि गणों को प्रसन्न होने का सामान देने लगा।

हरिपदम्

कछु चेतन जुत भूप रान को, लोहित मुच्छन लाइ।
तस धर पर हि रह्यो झुकि जो तब, रिपुसिर सिर हिं लगाइ ॥२५॥

बार-बार मूर्च्छा का दौरा पड़ने के बीच में हाड़ा राजा ने थोड़ा-सा भान होते ही महाराणा का रक्त ले कर अपनी मूँछों पर लगाया और फिर उसी महाराणा के धड़ पर झुक कर उस राजा ने विश्राम के लिए शत्रु के सिर पर अपना सिर टिकाया।

मोहिनीबरवतीत्येके

शुद्ध कनकमय संृखल, प्रभु जुग पाय।
नायक पवि बिच निर्मल, सुरुचि सहाय॥२६॥

महाराणा के अपने दोनों पांवों में जो स्वर्ण निर्मित भारी वजन के लंगर पहने हुए थे। उनमें जड़े हुए निर्मल हीरे उसी तरह अभी भी चमक रहे थे।

राजसवतिका

पूरन बान छिकत हिय जब पहु मारि चपेट असोकहिं मारि।
अवयव फुटित मोह भजि अप्पहु टिकिय अवटतट बोध बिसारि।
देखत कछु अनुचर दूरि दूरहि भजि तिन भनिय हनिय निज भूप।
पुनि त्रिक मारि रान तल पारत अनुचर तसहु भजे अनुरूप॥२७॥

पूरबिया पूर्णमल के बाण से हृदय बिध जाने पर जब राजा ने पीठ की चपेट से अशोक प्रमार को मारा। अपने अंग के इस प्रकार बिध जाने से हाड़ा राजा मूर्च्छित हो कर ओदी की दीवार से टिक कर बेहोश हो गया। उन्हें इस हालत में डर से देख कर एक सेवक दौड़ कर भागते हुए गया और उसने

समाचार दिया कि हाड़ा राजा मारा गया। पर इसके बाद बेहोश हो कर महाराणा के तीनों सामन्तों को मार कर जब अन्त में महाराणा को गिरा कर उसकी छाती पर चढ़ बैठा तो महाराणा का सेवक भी हाड़ा राजा के सेवक की तरह वहाँ से अपने स्वामी के मरने की खबर देने भागा।

सौराष्ट्री दोहा

अनुचर तिनमें एक, रान कृपापात्र जु रहैं।
बलि जिहिं हीनबिबेक, च्युतअसु गिनि भूखन चहैं ॥२८॥

महाराणा के सेवकों में से एक जो महाराणा का बड़ा कृपापात्र था। उसी विवेकहीन सेवक ने अपने स्वामी को मरा हुआ देख कर उनके गहने लेनें चाहे।

आर्या गाथा

तिहिं आइ अवट अंतर सृंखल कढ्ढन छुयो चरन प्रसर्यो।
स्वंत भनिय तब संभर, त्रिक में इक बचि छुवत तनुकों ॥२९॥

इसके लिए वह इस ओदी के खड्डे में उतरा और महाराणा के पाँवों के लंगर खोलने के लिए उनके पसरे हुए चरण को छुआ। इसे देख कर हाड़ा राजा ने मन में सोचा कि उन तीन सामंतों में से ही एक बच रहा लगता है जो मेरे शरीर को स्पर्श कर रहा है। मरणासन्न राजा को अपनी अर्द्धचेतनावस्था में ऐसा महसूस हुआ।

गीतिः

ऊंधेहि रान उप्पर, मरनदसा ज्यों चरन निज समेट्यो।
तंहं बढि छुवत कृपनतर, बच्छहि लत्ता प्रहार करि बेध्यो ॥३०॥

महाराणा के धड़ पर औंधे मुँह गिरे हुए हाडा राजा ने मरणासन्न अवस्था में ही अपने पाँव को सिकोड़ा और आगे बढ़ कर उस कृपणतम सेवक के छूते ही उसकी छाती पर अपनी लात मारी।

आर्यागीतिः

पादाग्र उर पइट्ठो, अंगुट्ठ कढ्यो सु तोरि बंस उतैं यों।
दुर्जन पर जिम दिट्ठो, रन टुड्डुर पाय घत्ति संभर नामी ॥३१॥

हाड़ा राजा ने लात इतनी जोर से मारी कि उसके पाँव का अंगूठा उस सेवक की छाती में घुस गया। राजा ने अपना पाँव वापस सिकोड़ा तब वह अंगूठा उसके पंजर से निकला पर तब तक उसका अंगूठा उस सेवक की रीढ़ की हड्डी को तोड़ चुका था। इस समय हाड़ा राजा उस दुर्जन महाराणा पर इस तरह नजर आया मानों वह प्रसिद्ध चहुवान युद्ध की विजय का लंगर पहने हुए हो।

उद्गीतिः

अद्ध घरी बितयों हि रानपरहिं प्रान छोरि रह्यो।
जावत इक्क घटिका जिम, सह नृप सत्त हि डरे रहे सूनैं ॥३२॥

आधी घड़ी की अवधि बीतने तक वह मृत हाड़ा राजा महाराणा के धड़ पर ही पड़ा रहा। यही नहीं एक घड़ी तक राजा सहित सातों मृतक वहीं पर सूने पड़े रहे।

उपगीतिः

एकाकि मरनवारी, पहुँची इत सुद्धि जब पहली।
मन्त्रि जरन प्रामारी, उठी सु सस्सू खिझि अहोरी॥३३॥

एक अकेले राजा सूर्यमल के मरने की जब पहली खबर नगर में पहुँची तो यह सुन कर प्रमार रानी जल मरने के लिए उठी तो खीज कर उसकी सास ने उसे रोक दिया अर्थात् उसे जलने नहीं दिया।

वैतालीयम्

रट्ठोरि कह्यो बहू रहो, न कुरजपूत सु संग होन को।
इहिं पय में सिंहनी अहो, पालिय ताहि लजाइ जो पर्यो॥३४॥

राठौड़ी रानी माँ ने तब अपनी बहू को कहा कि बेटा! अक्षत्रियत्व के संग सहगमन का कायदा नहीं। ऐसे कायर के साथ जो अकेला ही मारा गया हो क्या जलना? अरे! वह मेरा पुत्र राजा सूर्यमल मुझ सिंहनी के दूध को लज्जित करता हुआ मारा गया। मैंने उसे ऐसा करने से रोका था अर्थात् मैंने पहले ही उसे कह दिया था कि अकेले मर कर मेरे दूध को मत लजाना। अपने शत्रु को मार कर मेरा दूध उज्ज्वल करना।

औपच्छन्दसिकम्

दीसत रहिगो जु दुद्ध दासी, पायो तासहि अंस पोतता में।
कहि इम निज दुग्ध की निकासी, धारा कुट्टिम ग्राम में गडी जो॥३५॥

आगे कहने लगी मुझे लगता है बचपन में इसे एक बार मेरी दासी ने अपना स्तनपान करा दिया। मैंने उसे उगलवा तो दिया था पर कुछ अंश इसके पेट में रह गया दिखता है। यह कहते हुए रानी मां ने अपने दूध की धार निकाली जो सामने वाली दीवार के पत्थर में जा घुसी।

आपातलिका

पहु मातुल कुंप कह्यो जो, पहिलैं उत पहुंच्यो नृपपैं सो।
रिस बस गिनि दूर रह्यो जो, लखि अरि पैं बिरुदावन लग्गो॥३६॥

राजा जिसे मामा कह कर बुलाता था वह सेवक कूंपा खबर लगते ही सर्वप्रथम उस स्थल पर पहुँचने वालों में से था पर गुस्से में होने से उसने दूर से ही देखा (गुस्से में इसलिए कि शिकार से उसके स्वामी ने महाराणा के कहने से वापस भेजा था, साथ नहीं रखा) कि मेरा स्वामी तो शत्रु पर सवार है। यह देख कर वह अपने स्वामी हाड़ा राजा को जोश दिलाने लगा।

मामत्राकम्

जब बूँदीस अनसु दृढ जान्यों, तब ढिग जाइ रुदन घन तान्यों।
स्वप्रभु अरि उर परहि सुहायो, इम थुरमां तिहिं छबिहि उढायो॥३७॥

पर जब उसे पता चला कि हाड़ा राजा तो मृत है तब वह आगे ओदी के समीप जा कर खूब रोया पर जब उसने देखा की स्वामी शत्रु को मार कर मरा है तो उसने स्वामी के शव पर दुशाला ओढ़ा कर उसे ढाँप दिया।

विश्लोकः

इहिं अंतर परजन कति आये, रानहि गहि भजिबे बतराये।
हुल्ल कहिय यह छबि खिन हैही, इतके सबैहु इहां लखि लैही॥३८॥

इसी समय शत्रुओं के कई सेवक भी वहाँ भागते हुए पहुँचे। उन्होंने आते ही महाराणा रत्नसिंह का शव ले कर भागने की सोची। इस पर उस हुल्ल (हूल) जाति के कूंपा ने कहा, खबरदार! मेरे स्वामी की यह छवि मैं

तुम्हें बिगाड़ने नहीं दूगा जब तक हमारे सारे लोग इसे अच्छी तरह देख न लें। (महाराणा का शव जो हाड़ा राजा के नीचे दबा हुआ था उसे निकालने पर वीर राजा सूर्यमल की यह मुद्रा वाली छवि खराब होती जिसमें वह अपने शत्रु की छाती पर सवार था।)

वानवासिका

रुकत न तदपि सु गहि असि रुठ्ठो, बपु तिलतिल करि प्रहरन बुट्ठो।
रन कुंप परत उठाइ रानां, खलजन बहु भजि गये खिसानां ॥३९॥

इस चेतावनी के बाद भी जब शत्रु सेवक नहीं माने और आगे बढ़ने लगे तो वह अपनी तलवार निकाल कर शत्रु सेवकों पर टूट पड़ा। अन्तत: वह भी शस्त्रों की वर्षा के मध्य अकेला बहादुरी से सामना करते हुए अपना शरीर तिल तिल कटवा कर स्वामी के साथ गया। इस कूंपा के कट कर गिरते ही खिसियाये हुए शत्रु सेवक महाराणा का शव ले कर भागे।

चित्रा

सिबिरजन हु इत भजत हि सुनिकैं, लुटि गय कतिकति खललिय लुनिकैं।
रान तियहु जंहं जरन बिचार्‍यो, नगर जनन तस बिघन बिचार्‍यो ॥४०॥

इधर से इन महाराणा के सेवकों को जब भाग कर आते देखा तो शेष जो शिविर में थे वे भी भागने लगे। इन में से कई सैनिकों को तो हाड़ा योद्धाओं ने गुस्से में आ कर काट डाला। महाराणा की रानी ने जलने का विचार किया पर नगर निवासियों ने विघ्न पैदा कर उसे यहाँ ऐसा नहीं करने दिया।

सामान्योपचित्रा

अक्खिय निज सस्सू हिं बहूर्‍यों, जैठी भगिनी इष्ट बनैं ज्यों।
जिम पुरजन ढिग तास न जावैं, रक्खि इम रु उच्छाह रचावैं ॥४१॥

यह सुन कर हाड़ा राजा सूर्यमल की पत्नी प्रमार रानी ने तब अपनी सासू माँ से निवेदन किया कि यदि आंज्ञा दे दें और थोड़ी सहायता करें तो मेरी बड़ी बहन की इच्छा पूरी हो जाएगी। रानी माँ की आज्ञा हो जाएगी तो नगरजन फिर उसके पास नहीं जाएँगे विघ्न करने के लिए। इस आज्ञा का

पालन करते हुए वे रानी माँ के कहने पर उछाह भी दिखा सकते हैं अर्थात् मेरी बड़ी बहन को पूरी धूमधाम के साथ सती होने की आप आज्ञा दें।

विशेषोपचित्रा

जतन कियउ रट्ठोरिहु जैसैं, निजसूत नास सुन्यों तंहं तैसे।
सब मृति सुद्धि यहै जब आई, बंटिय बहु रट्ठोरि बधाई ॥४२॥

अपनी बहू के कहने पर सासू माँ ने ऐसा ही प्रबन्ध किया पर जब अपने पुत्र की मृत्यु के साथ वहाँ उपस्थित सभी शत्रुओं के नाश की खबर आई तो राठौड़ रानी माँ प्रसन्न हुई और उसने बधाई में गुड़ मिठाई आदि का वितरण करवाया।

सामान्यकुलकम्

सह खट रिपु सुत मरत सुनतही, अन्य निजहिं गिनि सीस धुनतही।
तनयबधून चविय खेतु तब, इच्छहु संग जु होहु भली अब ॥४३॥

सारे छह शत्रुओं और एक अपने पुत्र के मरने का सुनते ही राठौड़ रानी माँ ने अफसोस जताते हुए परायों को भी अपना गिन कर शोक प्रकट किया। इसके बाद राठौड़ रानी खेतू ने अपनी बहुओं को सुना कर कहा कि अब यदि तुम्हारी इच्छा हो तो अग्नि में प्रवेश के लिए स्वतंत्र हो क्योंकि मेरे पुत्र ने सुक्षत्रियत्व का प्रदर्शन किया है।

विशेषपादाकुलकम्

पै हम लखहिं जरहु ह्यां पुत्री, तुम पिय छ अरि हनैं अतनुत्री।
क्रम इम पुनि शृंगारहु कीजै, दइत रु निज हित यह सब दीजै ॥४४॥

पर शर्त यह है कि हे प्रमार रानी! हम तुम्हें अग्नि प्रवेश करते हुए देखेंगे। हे वीर बहू! तेरा कवच रहित पति छह छह शत्रुओं को मार कर मरा है। इसलिए अच्छी तरह क्रमशः पूरा शृंगार करो। सारे गहने पहनो। फिर उन्हें अपने पति और अपने लिए दान में दे देना।

त्रिभङ्गी

सस्सू बच यों सुनि प्रासादहि पुनि दारू चिता चुनि कूट करी।
चंद्राउति टारिय यह सतवारिय जंहं पहु प्यारिय त्रय हि जरी।

जंहं जग जस तारन प्रचुर प्रकारन बहुद्विज बारन दान दयो।
तिनही तदनंतर ब्रध्न प्रसू बर पुत्र बिरह परलोक लयो ॥४५॥

सासू माँ के ऐसे वचन सुनते ही महलों के अन्दर ही काठ के ढेर से चिता बनवाई और उसमें चन्द्रावती को छोड़ कर राजा सूर्यमल की तीनों पुत्रवती रानियाँ अपने प्रिय पति के साथ जल गईं। इस अवसर पर जगत में सुयश फैलाने वाले ब्राह्मणों को कई प्रकार के दान के साथ हाथियों का दान भी दिया गया। इसके बाद राजा सूर्यमल की माता राठौड़ रानी भी अपने श्रेष्ठ पुत्र के शोक में परलोकवासी हुई।

तोमरः

कलि तापिका नदि कूल, सुनि भो इतैं हिय सूल।
रन रान के बहु बीर, भिरि व्हां रहे पति भीर ॥४६॥

अपने राजा की हृदय विदारक मृत्यु की खबर सुनते ही उधर तापी नदी के तट पर युद्ध मच गया। हाड़ा योद्धाओं के हाथों महाराणा के कई वीर इस भिड़ंत में मारे गए।

हनुमत्फालः

सामंत कीरतिसीह, इम हरि दलेल अबीह।
इन चउन लहि घन घाय, किय मृतक बहु अरि काय ॥४७॥

बूँदी राज्य की तरफ से हाड़ा सामन्तसिंह, कीर्तिसिंह, हरिसिंह और दलेलसिंह इन चारों योद्धाओं ने पूरी वीरता के साथ लड़ते हुए अपने शरीर पर कई घाव खाए पर इस घमासान में उन्होंने शत्रु वीरों का नाश किया।

उद्धुरः

दुव तंहं देव राघवदास, निज बल रान भट करि नास।
तिल तिल अंग धारन तुट्टि, लिय दिव जाइ सुर सुख लुट्टि ॥४८॥

इस अवसर पर दोनों साहसी वीरों राघवदास और देवसिंह ने अपने बाहुबल के सहारे शत्रु महाराणा के कई उमरावों को नष्ट किया। इन दोनों ने पूरी वीरता के साथ लड़ते हुए रणभूमि में तिल तिल रूप कट कर स्वर्गलोग में जाकर देवताओं का सुख लूटा।

वेताल:

इन्ह आदि बारह बीर बुंदिय के रहे रनरंग।
इक देव बीर जयंतिका किय व्हां अमस्तक अंग।
दिल्लीस के रन दग्ग लग्गिय सो असेस उडाइ।
रन देव राघव यों रहे खल केक खग्गन खाइ॥४९॥

इन दोनों वीरों सहित इस भिड़ंत में बूँदी के हाड़ा पक्ष के कुल बारह वीर रणभूमि में खेत रहे। इंन में भी देवसिंह ने भीषण मारकाट मचा कर मस्तकहीन हो लड़ते हुए विजय पाई। दिल्ली के बादशाह बाबर के साथ हुए युद्ध से भाग आने का जो कायरता का लांछन देवसिंह पर लगा था उसे उसने पूरी तरह धो डाला और उसी प्रयत्न में वह राघवदास के साथ अपनी देह पर कई तलवारों के प्रहार झेल कर मरा।

कलहंस:

भट रान के इकबीस प्रान बिनां भये, पहु रान संजुत पंच व्हां पहिलैं हये।
जुग सेन के नृप नास जान तरी जुरे, मृत तत्थ सत्रह रानके भजतैं मुरे॥५०॥

इस युद्ध में उधर वाले महाराणा के पक्ष के इक्कीस सामन्त प्राण वीहिन हुए। महाराणा सहित पाँच तो वहीं तापी नदी के तट पर शिकार खेलते मारे गए। दोनों सेनाएँ अपने अपने स्वामियों के नाश को जान कर जहाँ भिड़ी वहाँ महाराणा के सत्रह योद्धा युद्धभूमि से मुड़ कर भागते हुए मारे गए।

कलापिनी

सामंत आदि चतुष्क संजुत बीस जे।
बपु घाय पाइ बचे बली बिजई बजे।
गत प्रान नृप जंहं सुभट बुंदिय के गये।
भल रीति दाहन भूप को करते भये॥५१॥

हाड़ा राजा के काका सामंतसिंह सहित चार योद्धाओं को मिला कर कुल बीस योद्धा जो घायल हो कर भी जीवित बचे वे ही विजयी कहलाए। बूँदी के राजा सूर्यमल ने जहाँ पर अपने प्राण निशेःष किये वहाँ पर जाकर हाड़ा योद्धाओं ने अपने स्वामी का अच्छी तरह दाह संस्कार संपन्न किया।

झम्पताल:

इक दास चउ भट जे अरी, तिनकीहु दहन क्रिया करी।
सह कुंप तेरह सत्थ के, अरि दहिय सत्रह अत्थ के।।५२।।

राजा सूर्यमल के शव के अतिरिक्त जो वहाँ और मरे थे उनकी भी अन्त्येष्टि क्रिया की। इनमें एक सेवक कूंपा और चार महाराणा के सामन्त थे। इस प्रकार हाड़ा पक्ष के कूंपा सेवक सहित तेरह और शत्रु पक्ष के सत्रह योद्धाओं की कुल तीस चिताएँ सजा कर सभी का सम्मान के साथ दाह संस्कार हुआ।

सम्प्लुता

रनभू छुराइ रु रान कों, कति लै भजे गतप्रान कों।
जिन्ह चम्मली तट जातही, चुनि कट्ठ दाहन की चही।।५३।।

उधर रणभूमि से छुड़ा कर महाराणा के शव को जो उनके सेवक ले कर भागे थे उन्होंने चम्बल नदी के तट पर काठ की चिता बना कर महाराणा का दाह संस्कार करना चाहा।

किरीटिनी

पर तीर राघव की प्रजा तिनकी तुपक्कन।
जंहं दाह तेहु दये भजाइ धुजाइ थक्कन।
जिन भज्जि चम्मलि नानतें बिच रान जारिय।
हठि चित्रकूट गये सबै इम धर्म हारिय।।५४।।

पर इसकी भनक पड़ते ही क्रोध पगी राघवदास हाड़ा की प्रजा बन्दूकों सहित उलट पड़ी। प्रजाजनों ने आ कर महाराणा के सेवकों को वहाँ से खदेड़ दिया और अपनी सीमा में महाराणा का दाह संस्कार नहीं होने दिया। तब महाराणा के सेवक वहाँ से भाग कर चम्बल नदी और नान के मध्य किसी जगह पर महाराणा रत्नसिंह के शव को जला कर हठपूर्वक अपने धर्म की हानि झेलते हुए चित्तौड़गढ़ लौटे।

कर्पूरः

इत हुव गनेस आराम अब, जंहं सु रान रानिय जरिय।
संभर प्रसूहि उपहार सब, क्रमसह तंहं प्रेषित करिय।।५५।।

हे राजा रामसिंह! अभी जहाँ पर गणेश बाग अवस्थित है उसी स्थान पर महाराणा रत्नसिंह की प्रमार रानी ने अग्नि प्रवेश किया था। इस अवसर पर वांछित सारी सामग्री चहुवान राजा सूर्यमल की वीर माता राठौड़ रानी ने महलों से भिजवाई थी।

कुंकुमः

पहिलैं कहीहु नृप की प्रिया त्रय हि जरी महलन तिम।
जिन्ह लखि मरी सु नृप की जननि, गोख तेंहि गिरि वह इम।।५६।।

हे राजा रामसिंह! मैंने पहले बताया था कि राजा सूर्यमल की तीन रानियाँ महलों में ही अपनी चिताएँ बनवा कर जली थी उन्हें देख कर राठौड़ रानी माँ ने भी अपने पुत्र के शोक में महल के झरोखे से कूद कर अपनी इहलीला समाप्त की।

चतुष्पदी

चिति पर तिन्ह चौरा प्रासादहि, प्रभु राम बन्यों इम राजैं।
जिहिं पत्थर पय पटक्यो नृपजननी छबि तंहं तासहु छाजै।
अवसर पर अर्चन अबहु प्रथित पन हड्डुन इन तिन व्हैही।
जब ऊढजनी जन निवासत निलयन दुहुंन नमत तब द्वैही।।५७।।

हे राजा रामसिंह! रानी माँ की अंतिम क्रिया भी महलों में ही की गई। इस प्रकार चारों चिताएँ जहाँ जली थी उसी स्थान पर महलों में मंदिर बनाया गया। वह अभी भी विद्यमान है। जिस दीवार के पत्थर पर राजा की माँ राठौड़ रानी ने अपने दूध की धार डाली थी उस पत्थर की शोभा भी आज जस की तस है। आज भी समय समय पर उस पत्थर की पूजा करने का प्रचलन हाड़ाओं में है। बल्कि राजगद्दी पर बैठते ही राजा इस पत्थर को पूजने जाता है। इसी तरह नई दुल्हन विवाह के पश्चात बूँदी के महलों में निवास करने आती है तब दूल्हा-दुल्हन को जा कर इस पत्थर की पूजा अर्चना

करनी पड़ती है।

उपदोहा

सबन नृप सु रविमल्ल सुत, किय सुरतान जु कुमति।
जान्यों सिसुपन जांहिं जब, सद्धहि कुल क्रम सुमति ॥५८॥

सभी ने मिल कर तब राजा सूर्यमल के पुत्र सुरतान को राजा बनाया जो कुमतिवान था। जिसे देख कर बचपन से ही सभी ने यह जाना था कि यह अपने कुल की परम्परा के अनुसार सुमतिवान होगा।

वसन्ततिलकम्

सो चित्रकूट सुनि अर्जुन अंगनाहू।
श्री सुर्जनादि सुत सप्तक लै रु साहू।
छन्नैंहि निष्क्रमि सबै तिहिं सोक छाई।
बूँदीहि आवत भई वह भू बिहाई ॥५९॥

जब राजा और महाराणा के मरने की खबर अर्जुन हाड़ा की पत्नी ने सुनी तो सुर्जन आदि अपने सातों पुत्रों को लेकर कर वह श्रेष्ठ स्त्री गुप्त रूप से चित्तौड़गढ़ से निकल आई। जब वहाँ सभी ओर शोक छाया हुआ था वह मेवाड़ की भूमि को छोड़ कर बूँदी आ पहुँची।

इन्द्रवज्रा

पाई नही पट्टनि ही लही जो, माटुंद तैं पुब्ब पटा मही जो।
सोही मिली तोहु इहां सुहायो, पृथ्वीस तैसो सुरतान पायो ॥६०॥

इसे यहाँ आ कर पूर्व में प्राप्त माटुंदा की जागीर नहीं मिली जो पचास हजार की आमदनी वाली थी। उसकी जगह उसे पाटण मिली। उसने जो मिला उसमें संतोष कर लिया क्योंकि बूँदी की राजगद्दी पर अभी सुरतान बैठा था।

उपेन्द्रवज्रा

बिमात बंधू उत रानवारो, नरेस भो बिक्रम नीतिन्यारो।
बनैं न जासों महिपत्व बत्तैं, घनों नसा देह प्रमाद घत्तैं ॥६१॥

उधर चित्तौड़गढ़ में महाराणा रत्नसिंह की विमाता का पुत्र विक्रमादित्य मेवाड़ की राजगद्दी पर बैठा जो नीति से इतर अर्थात् अनीति पर चलने वाला

था। जिसमें राज्य करने की कोई अर्हता नहीं थी। वह निरन्तर अफीम के नशे में चूर रहने वाला प्रमादी था।

उपजातिः

भानेज जो अर्जुन को अभागी, रहै सदामत्त अफीम रागी।
सु रान व्है ऊंघन कों सराहैं, चित्तोर को राज्य न जाहि चाहैं ॥६२॥

वह अभागा विक्रमादित्य जो अर्जुन हाड़ा का भानजा था सदैव अफीम के नशे से प्रीति रखने वाला होने से हमेशा नींद निकालना ही पसंद करता था और मेवाड़ राज्य की प्रजा उसे राजा के रूप में पसन्द नहीं करती थी। अर्थात् वह अत्यन्त अलोकप्रिय राजा था।

मञ्जुभाषिणी

जिहिं काल भूप रविमल्ल जन्मभो, गुन तर्क पंद्रह प्रमान साक भो।
श्रुति नाग भूत ससि भूपता भई, गज अठ्ठ बान महि पैं तनू गई ॥६३॥

बूँदी के हाड़ा राजा सूर्यमल का जन्म विक्रम संवत् के वर्ष पनद्रह सौ तिरसठ में हुआ और उसने पन्द्रह सौ चौरासी के वर्ष में बूंदी का राज सिंहासन पाया। उसने मात्र चार वर्ष तक राज्य किया और विक्रम संवत् के वर्ष पन्द्रह सौ अठासी में अपना शरीर त्याग दिया।

केकिरवम्

बय अब्द चोबीस भयो जबै ही, सुरतान बैअठ्ठ समा सबै ही।
सह रान व्हां सो अरि पंच सत्थी, हनि यों पर्यो हड्डुमइंद हत्थी ॥६४॥

जिस समय राजा सूर्यमल चौबीस वर्ष की अवस्था को प्राप्त हुआ उस समय हाड़ा सुरतान की उम्र आठ वर्ष की थी। इसी समय अपने पाँच शत्रु रूपी हाथियों को मार कर हाड़ा रूपी वह सिंह मर गया।

सुदन्तम्

इत नैर आमैर कुलोभ अग्रनी, भगवंतसिंहाभिध आहि भूधनी।
मुगलेस सेवी सुत भारमल्ल को, भगिनी सुता आदिन ईप्सु भल्ल को ॥६५॥

इधर आमेर नगर में कुलालचियों में अग्रणी भगवंतसिंह (दास) नामक कछवाहा राजा हुआ जो मुगलों की सेवा में रहने वाले राजा भारमल

का पुत्र था और अपनी बहन बेटियों की भलाई नहीं चाहने वाला हुआ अर्थात् वह अपनी बहन बेटियों को यवनों से ब्याहने वाला था।

द्वितीय रुचिरा

थरैं यहै कथित पुरी अधीसता, कुलोभमें मनहिं लगाइ कीसता।
अजोग्यहू बढन उपाय आदरैं, कहैंहिगे अवसर जो यहैं करैं ॥६६॥

यह जो इस कथित पुरी अर्थात् आमेर पर राज करता है वह कुलोभ में पड़ कर निर्ल्लजता में मन लगाता है। वह हर तरह से अयोग्यता को बढ़ाने का उपक्रम करने वाला हुआ। आगे उचित अवसर पर हे राजा रामसिंह! मैं उसे कहूँगा।

इति श्रीवंशभास्करे महाचम्पूके पूवार्यणे पंचम राशौ वीतिहोत्र-वसुधेश्वर बीज्यव्याख्यानबीजहड्डाधिराडस्थिपाल वंश्यानुवंश्यविहित-वर्णनवेलाव्याहार्यबूँदीवसुधावासवब्रघ्नमल्ल चरित्रे राणाकर्तृकसूर्यमल्ल प्रमापणप्रयोजनकराणीय वीर चतुष्टयगतस्थापनपूर्वक हिरणाकालनार्थ-गमनारंभः सूर्यमल्लीय पंचबाणेभ्यो राणस्य च्छलेन बाणद्वय लाभः, राणाकर्तृ कवारद्वयहरिणानयनेपि कृष्णहरिणाभावात्सूर्यमल्लस्य बाणा-मोचनम् राणेंगितिप्रेरितपूर्णमल्लबाणेन सूर्यमल्ल वक्षोभेदनम् सूर्यमल्ल कर्तृ-कट्टारिप्रजिहीर्षुपृष्ठस्थराणीय भटाऽशोकप्रमारप्रमापणमू मूर्च्छितोत्थित-सूर्यमल्ल कर्तृकमेकबाणेनसल्हसूरेत्याख्यचालुक्यद्वय मारणपर्वकपूर्णमल्ल मूर्छनम्, पूर्णमल्लप्रेरणाद्राणेनमूर्छितसूर्यमल्ल खड्गप्रहारः, मूर्च्छितोत्थित-सूर्यमल्लकर्तृनिपातनपूर्वकंसानुचरराणाप्रमापणम् सूर्यमल्ल राणामरण-श्रवणात्तत्तद्राज्ञीनां सूर्यमल्ल मातुश्च मरणम् सूर्यमल्लराणादाहश्चेत्याख्यान-युक्तष्षट्त्रिंशो मयूखः ॥३६॥ आदितः त्र्यशीत्युत्तरैकशततमः ॥१८३॥

श्री वंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण की पंचम राशि में बूँदी के भूपति सूर्यमल के चरित्र में राणा को मारने वाले सूर्यमल को मारने के प्रयोजन में राणा के चार वीरों को औदियों में बैठाने आदि हरिणों को निकालने के लिये राणा के जाने का आरंभ करना, सूर्यमल्ल के पाँच बाणों में से राणा का छल

कर दो बाण लेना, राणा को मारने वाले सूर्यमल का दो बार हरिणों के लाने पर भी काले हरिण के नहीं होने के कारण बाण नहीं छोड़ना, राणा के संकेत से पूर्णमल्ल के बाण से सूर्यमल का हृदय भेदन होना, सूर्यमल को कटारी से मारने की इच्छा वाले पीछे बैठे हुए राणा के उमराव अशोक प्रमार को मारना, मूर्छा से उठकर कटे हुए सूर्यमल्ल का एक बाण से सल्ह और सूर नामक दो सोलंकियों को मारना, पूर्णमल्ल की प्रेरणा से राणा का मूर्छित सूर्यमल्ल पर खड्ग का प्रहार करना, मूर्छा से उठकर मारने वाले को पटकने आदि अनुचर सहित राणा को मारना, सूर्यमल और राणा का मरना सुनकर अपनी अपनी रानियों और सूर्यमल्ल की माता का मरना, सूर्यमल और राणा के दहन करने की कथा का छत्तीसवाँ मयूख समाप्त हुआ। और आदि से एक सौ तिरासी मयूख हुए।

इतिश्रीमदखिलमहीभृन्मुकुटमल्लीमाल्यमकरन्दमद्यमत्तमिलिन्द-मुखरितचरणचिह्निताऽऽरातिचूडबूँदीपूर्विलासिनीविलासिचाहुवाण-चूडामणिभारतीभागधेयहड्डोपटङ्किमहाराजाधिराजरावराजेन्द्र श्रीरामसिंहदेवाऽऽज्ञप्तगीर्वाणगिरादिषड्भाषावेशसुभ्रुभुजङ्गकाव्याऽकपारकर्णधारवीर-मूर्तिचक्रिचरणारविन्दचञ्चरीकचारुचमत्कृतचेतनचारणचक्रचण्डांशु-चण्डीदानात्मजमिश्रणसुकविसूर्यमल्लीविहित वंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे रावसूर्यमल्ल चरित्रसमयसमानाऽधिकरणकोदन्तवर्णन पंचमो राशिस्समाप्तः ॥५॥

श्रीमान् सब राजाओं के मुकुटों में रहे हुए मोगरे के पुष्प संबन्धी मकरन्द (पुष्परस) रूप मद्य में मस्त हुए भ्रमरों से शब्दायमान चरण करके चिह्न युक्त किये हैं शत्रुओं के मस्तक जिन्होंने, बूँदी पुरी रूपी स्त्री के विलासी, चहुवानों के शिरोमणि, सरस्वती है भाग्य में जिनके अथवा सरस्वती से कर लेने वाले अर्थात् पूर्ण विद्वान, जीवन्मुक्ति मार्ग में चलने वाले, हाड़ा पदवी वाले चहुवान महाराजाधिराज महारावराजेन्द्र श्रीरामसिंह देव की आज्ञा से संस्कृत भाषा आदि छह भाषा रूपी गणिकाओं के पति, काव्य रूपी समुद्र के कैवर्तक (खेवटिये) शरीर वाले चारण वंश के सूर्य, विष्णु भगवान के

चरणारविन्द के भ्रमर, सुन्दर चमत्कारिक बुद्धिवाले चारण गण के सूर्य चंडीदान के पुत्र मिश्रण (मीसण) शाखा के श्रेष्ठ कवि सूर्यमल्ल के रचे हुए वंशभास्कर नामक महाचम्पू के पूर्वायण में राव सूर्यमल के चरित्र के समान समय वाले वृत्तान्त वर्णन की पंचम राशि समाप्त हुई।